पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि
३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी
ए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब
लगेगा।

व्याससूत्रभाषाभाष्यम् ॥

श्रीपण्डितताराचन्द्रेण वर्मणा निर्मितम् ॥

मुन्शी बालमुकुन्द, ठाकुरदास औरदीवानसिंहजी
की सहायता से छपा ॥

बाबू अविनाशीलाल की आज्ञानुसार पण्डित
हरिशङ्कर ने काशीआर्य्ययन्त्रालय कर्णघण्टा मे
छापा ॥

जिन महाशयोंको लेनाहो जिला बदाऊं परगने
दातागञ्जमौजे पापर पण्डित ताराचन्द्रशास्त्री
केयहांसे मगालेवें ॥

सन १८८२

और सब शास्त्रों के व्याख्यान नागरी मे छपने को
हैं पचास ५० ग्राहक होने से शीघ्र छपेंगे
संख्या के दाम नहीं चाहिये

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ व्याससूत्रभाषाभाष्यमारभ्यते ॥

भाषयाभाष्यतेभाष्यं ताराचंद्रेणवर्मणा ।
लोकानामुपकाराय ब्रह्मसूत्रेषुसुस्फुटम् ॥ १ ॥

उत्थानिका ॥

अपौरुषेय वाक्य वेद है यह उसका सामान्य लक्षण मीमांसक मत से है सो मन्त्र और ब्राह्मण इन दो भागों से द्विविध है मन्त्र भाग त्रिविध है। क्रतुकारक द्वारा द्रव्य देवता का प्रकाशक वाक्य विशेष मन्त्र है यह मन्त्र का सामान्य लक्षण है। और जो गायत्र्यादि छन्दों में रचा पादवान् सो ऋग्वेद है। जैसे अग्निमीले इत्यादि गीति और छन्दों से युक्त साम है जैसे अग्निमीडे इत्यादि प्रायः छन्द और गीति से रहित यजुर्वेद के मन्त्र हैं इषेत्वादि और यजु में सम्बोधन रूप भी मन्त्र हैं। जैसे अग्नि दग्नी न्विहरभो इत्यादि यद्यपि जैमिन्यादिने जे लक्षण तीनों वेदों के विशेष पृथक् २ कहे हैं तथापि शावरभाष्य प्रातिशाख्यादि से प्रकट है कि जे लक्षण मिथो व्यभिचारी हैं तिस से उन तीनों का यह एक लक्षण अव्यभिचारी है कि जिसको अध्यापक कहे कि मैं ऋक् या यजुः या साम को पढ़ाता हूं और अध्येता कहे कि मैं ऋक् या यजुः या साम को पढ़ता हूं ॥

विधायक वाक्य ब्राह्मण है जैसे अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्ग काम इत्यादि कहीं २ कठिनार्थ मन्त्रों के अर्थ का भी बोधक ब्राह्मण है, सो ब्राह्मण भी त्रिविध है। विधि नामक १ अर्थ वाद नामक २ विध्यर्थ वाद शून्यरूप ३ प्रवृत्ति निवृत्ति का बोधक वाक्य भी ब्राह्मण है। और निन्दास्तव ऐतिह्य आदि से युक्त भी है, जो कि वेद कर्म सङ्कर्षण ज्ञान इन तीन की चर्चाओं से पूर्ण था सोही कर्मकाण्डियों ने यज्ञ में तीन प्रयोगों की सिद्ध के लिये ऋगादि नामों से विभक्त किया है यज्ञ में हौत्र अर्थात् होता नाम ऋत्विज् के योग्य कर्मोपयोगी वेद से विभाग का नामहौत्र प्रयोग और ऋग्वेद है दूसरा भाग आध्वर्यव है जो कि अध्वर्यु नाम ऋत्विज् के कर्मोपयोगी वेद था सो आध्वर्यव और यजुः कहाता है तीसरा औद्गात्र अर्थात् उद्गाता नाम ऋत्विज के कर्मोपयोगी वे[द] औद्गात्र और साम नाम से कहा है। इसी से इनका ना[म] वेदत्रयी भी है इस तो कहि छुटे ऋग्यजुः साम का मूलार्थ ब्रह्मा और यजमान इन दो के कर्मोपयोगी तीनों वे[द] साधारण हैं। तिस्से इन दोके कर्मों के निमित्त से चौथ[ा] और पचमा भाग न किया गया है अग्निहोत्रादि हयमेधान्त यज्ञों में होता अध्वर्यु २ उद्गाता ३ ब्रह्मा जे चार ऋत्वि[ज] और पचमायजमान इन पांच के बिना यज्ञ नहीं हो होता है।

मैत्रावरुण १ अच्छावाक २ ग्रावस्तुत् ३ होता ४

इन चार का नाम होतृगण है वे तन में इनके गां[व] हैं उनका बांटमन्वादि के दाय भाग में प्रकट है॥

प्रतिपस्थाता १ नेष्टा २ उन्नेता ३ अध्वर्यु ४

इसका नाम अध्वयुगण है॥

प्रस्तोता १ प्रतिहर्त्ता २ सुब्रह्मण्य ३ उद्गाता ४ यह उद्गातृगण है ॥

ब्राह्मणाच्छंसी १ अग्नीध्र २ पोता ३ ब्रह्मा ४ यह ब्रह्मगण है ॥

और कौषीतकि शाखा में एक सदस्य नाम ऋत्विज् को भी कहिके सत्तरह ऋत्विज् कहे हैं किसी ने यजमान को मिला के सत्तरह पूरे किये हैं और किसी ने उपद्रष्टा नाम एक अन्य कहके अठारह ऋत्विज् कहे हैं और किसी ने यजमान और पत्नी इन दो को मिलाके बीस पूरे किये हैं यह चर्चा कात्यायनादि के श्रौतसूत्रों से है। श्रुति। प्लवा ह्येतेऽदृढ़ायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्म। एतच्छ्रेयोयेभिनन्दन्तिमूढाजरामृत्युंतेपुनरेवापियन्तीति ॥ अर्थ। विनाशी और अनित्य फल के अर्जन में लगे हैं ऋत्विजादि उक्त अठारह इससे सब विनाशी और अनित्य है ॥

गर्भाधान १ पुंसवन २ सीमन्तोन्नयन ३ जातकर्म ४ नाम निरूपण ५ निष्क्रमण ६ अन्नाशन ७ कर्णवेध ८ चौलकर्म ९ उपनयन १० स्नान ११ विवाह १२ अन्त्येष्टि १३ देवयज्ञ १४ पितृयज्ञ १५ भूतयज्ञ १६ नरयज्ञ १७ अतिथियज्ञ १८ वेदव्रतचतुष्टय १९ अष्टका २० पार्वणश्राद्ध २१ श्रावणी २२ आग्रायणी २३ प्रौष्ठपदी २४ चैत्री २५ आश्वयुजी २६।

ये सात पाक यज्ञ कहाते हैं ॥

अग्न्याधान २७ अग्निहोत्र २८ दर्शपौर्णमास २९

आग्रायणेष्टि ३० चातुर्मास्य ३१ निरूढ़पशुबन्ध ३२
सौत्रामणी ३३

जे सात हविर्यज्ञ कहाते हैं चिरस्वर्गार्थ अर्थात् बहु
काल लों स्वर्ग में रहिने के लिये करते हैं ॥

अग्निष्टोमेत्युत्पत्ति ३४ अत्यग्निष्टोम ३५ उक्थ्य ३६
षोडशी ३७ वाजपेय ३८ अतिरात्र ३९ आप्तो
र्याम ४०

जे सात सोमसंस्था हैं ॥

इनको अर्थी समर्थ विद्वान् अपर्युदस्त साधारण मनु
कर सके हैं और अश्वमेध विश्वजित् सर्वमेधादि यज्ञों
विशेष मनुष्य कर सके हैं ॥

सब भूतोंपर दया । दाक्षिण्य । क्षान्ति । अनुसूया । शौ
अनायास । मङ्गलाचार । अकार्पण्य । अस्पृह ॥ ये आठ
त्मगुण कहाते हैं ॥

उक्त चर्तालीस संस्कारों से जैमिन्यादि कर्ममीमांस
मुनि मुक्ति मानते हैं विप्रादि को न कि शूद्रादि कि ॥

और दक्षिणाग्नि, गार्हस्पत्याग्नि, आहवनीयाग्नि,
तीन अग्नि से ही तीनो वेदों के यज्ञादि कर्म होते हैं ॥

और चौथा अथर्ववेद उक्त तीन अग्नियों से रहित
यज्ञों से शून्य है । शान्ति और पुष्टिकर्मार्थ और शत्रु के
धार्थ और साधुओं के सुखार्थ अथर्वाङ्गिरस आदि मुनियों
रचा है ॥

त्रेताग्निरहितोथर्ववेदोयज्ञविवर्जित

शान्तिपुष्टिकरीदुष्टहरःशिष्टसुखावहः॥

इस आप्तवाक्य से कर्म एक आमुष्मिकफलार्थ हैं। जैसे होमादि। एक ऐहिकफलार्थ हैं। जैसे कारीरी यज्ञादि। एक ...तफलार्थ हैं। जैसे चित्रेष्ट्यादि॥

...र मुनियों ने अपनी परिभाषा में इनही कर्मों को ...कर्म कहा है परन्तु वेदमंत्रों में कृष्यादि कर्म भी इति ...यता के साथ ही पढे हैं।

इन्द्रःसीरपतिरासीदित्यादि

। यहां समु... ...ना चाहिये कि कृष्यादि कर्मों को साधारण मनुष्य भी कर ... हैं इससे उनका नाम लौकिककर्मधरा है। और लौ... ...कर्मों के विधायक मन्त्र पारस्करादि के ग्रन्थों में देखलो ...कुटे हम तो पूरापूरासफलकर्मकाण्ड का वृत्तान्त वेद में ... सङ्कर्षण नाम काण्ड है संकर्षणकाण्ड उपासनाकाण्ड ...ण्ड जे एकार्थवाची शब्द हैं। इस काण्ड का प्रयोजन ... एकाग्रता है तिससे मुक्ति मुख्य प्रयोजन है ...

...त्योमधु

इत्यादिश्रुति भी इस में प्रमाण हैं॥

तीसरा ज्ञानकाण्ड है कि जिसमें सारा वेद समुद्र में नदियों सा घुमा जाता है यही व्यास मत है॥

ज्ञान से और भक्ति से जो कर्म किया जाता है सोही वीर्यवत्तर होता है इससे ज्ञान और भक्तिकाण्ड जे दोनों कर्मकाण्ड के शेष हैं और केवल कर्मकाण्डही शेषी है यह मत कर्मठों का सिद्धान्त है॥

कर्मों से मन को शुद्ध कर फिर शुद्ध मन से ईश्वर को

जानके उसकी भक्ति करे ऐसे कर्म और ज्ञान दोनों म[illegible] काण्ड के शेष हैं और मध्यकाण्ड शेषी है यह मत शांडिल्य[illegible] दि भक्ति शास्त्रकों का है। प्रथम कर्म की विधि जानके फि[illegible] कर्म से विरक्त कर्मों के पास उपासना है उसको करे [illegible] हो सक्ता है और इस में सत्पुरुषों का विश्वास [illegible] और ज्ञान से भक्ति कही थी सो ठीक नहीं है क्योंकि [illegible] कारोपास्य ईश्वर का वेदन भक्ति का शेष होने से [illegible] निराकार असङ्ग उदासीन अकारक पूर्णकाम को जान[illegible] र्त्ता किसी करण से किसी कर्म को आचरण नहीं करे[illegible] यदि देह से विलक्षण नित्य उपनिषत् कहता है तदा सो[illegible] साक्षात्क अकर्त्ता आदि के कहने से अधिक नहीं कह सकें[illegible]

इससे गर्भाधानादि से शुद्ध और उपासना से स्थिर [illegible] पुरुष को स्वात्मानन्दादय ज्ञानही शेषी है इसी व्यास[illegible] व्यवस्था में विवाद निवृत्ति है। वेद।

नान्यःपन्थाविद्यतेऽयनायेत्यादि [illegible]मीमांसा
शेषाभ्यांपूर्वकाण्डाभ्यांशेषकाण्डेनशो[illegible] ॥
कर्मोपासनविज्ञानकाण्डैर्वेदास्त्रिकांडिन[illegible]

वेदान्तभाग न अर्थवाद न विधि न विधि अर्थवाद से [illegible] न्य है अभय और अशोकफल का दाता है अनुष्ठान के विनाइ[illegible]

वेदान्तभागोनोवादोनविधिस्तोभयेतरः।
अभयाशोकफलदोनिरनुष्ठापकत्वतः॥

सारसंग्रहः ॥

चतुर्विधो वेदः सर्वः प्रवचनादिभिः ।
नानेकशाखावान् कर्मकांडेषुभेदवान् ॥
कांडे ब्रह्मबोधित्वे करूपतयास्थित :
सर्वत्र चार्थोवै सूत्रव्यासप्रकाशितः ॥

कर्मकाण्ड के भेद से अनेक शाखा हैं वेद की और ज्ञा-ण्ड में एकही रूप वेद है लौकिक कर्मशास्त्रीय मोक्ष-ीय त्रिविध साक्षि सिद्ध व्यवहार है विधिनिषेध पर श्रु-: कर्मशास्त्र है। उभय शून्यप्रत्यग्ब्रह्म पर मोक्षशास्त्र वे-ाक्य हैं ॥

इस बात के निश्चयार्थ एक व्याप्ति कहता हूं कि जो मत ं मिथो विरुद्ध नहीं हो और सर्व वेदसंमत हो सोही बुद्धिमान् को मान्य ग्राह्य उपास्य है और ऐसा न कर्म-डन कि संकर्षणकाण्ड किन्तु ज्ञानकाण्ड है नित्य निर्वि-निःसंगादि के बोधन से ॥

दाङ्ग ... है कि छन्दः गायत्र्यादि वेद के पाद हैं १ कल्प सूत्र हाथ हैं २ ज्योतिष नेत्र है ३ निरुक्त कान शिक्षा नाक है ५ व्याकरण मुख है ६ उदात्तादिस्व-ा सिखाने के लिये पाणिनि ने पञ्चखण्ड में शिक्षा रची ा सब वेदों में साधारण है और हर एक शाखा के उ-शादि पाठ शब्दादि की सिध्यादि के बोधार्थ जे ग्रन्थ रचे उनका नाम प्रातिशाख्य है। मुनियों ने कर्मों के भे-कल्पसूत्र रचे हैं ॥

आश्वलायन ने ऋग्वेद में हौत्र प्रयोग के लिये कल्प रचे हैं न्त्वार्थ द्योतक हैं ॥

सांख्यायन ने यजुर्वेद में आध्वर्यव के लिये कल्प औ
धायन आपस्तंब कात्यायन तुलायन लाट्यायन आदि
साम के औद्गात्रादि के प्रयोगार्थ कल्प सूत्र रचे हैं उक्त री
ति से कल्प सूत्र त्रिविध हैं ॥

पाणिनि ने आठ अध्याय में व्याकरणके सूत्र रचे हैं इ
पर वार्तिक कात्यायन ने और भाष्य पतञ्जलि ने रचा है

यास्कने निरुक्ति तेरह अध्याय में रची है ॥

जर्फरी तुर्फरी इत्यादि शब्द मन्त्रों में पढ़े हैं उनके
के बोधार्थ क्योंकि जिस मन्त्र का अर्थ नहीं जाना है उ
जप या उस से कर्म करने में कुछ भी फल नहीं होता

और निघण्टु पांच अध्याय में रचा है । वेद में जो
वतादि शब्द आये हैं उनके पर्याय के बोधक शब्दों से ।

पिङ्गल ने आठ अध्याय में छन्द रचा है जिस में
त्यादि सात छन्दों का निर्णय है ॥

भानु ने दर्श पूर्णमासादि काल के बोधार्थ ज्यो
रचा है जिसके चालीस श्लोक हैं ॥

वेद के छः अङ्गो की चर्चा हो चुकी ॥

फिर व्यास जी ने उस भूम वृत्तान्त वेद का सार
युक्ति और उक्ति सहित चार अध्याय में निचोड़के वर
है उसका नाम वेदान्त शास्त्र है । अध्यायों के नाम ।
ला समन्वायाध्याय, दूसरा अविरोधाध्याय, तीसरा साध
ध्याय, चौथा फलाध्याय है ॥

उक्त चार अध्यायों में सोरहे पाद हैं उनका अर्थ स

यह है कि पहिले अध्याय के पहिले पाद में बचनों से स्पष्ट कहा है इससे स्पष्ट पाद है दूसरा अस्पष्ट पाद है कि शाण्डिल्योपासना वाक्य में मनोमयादि धर्म जीव सोपाधिक ब्रह्म के समान कहिने से १ तीसरा ज्ञेय है ज्ञेय ब्रह्मही है दहरादि उपासना के बिचार से ३ इब तीन पादों से वाक्यों का विचार पूरा किया है चौथे पाद में अव्यक्त आज्यादि सन्दिग्ध पदों के अर्थ का निर्णय किया है इससे पद चिन्ता पाद है ४ ॥

फिर दूसरे अध्याय के पहिले पाद में वेदान्त के साथ जो सांख्यादि स्मृतियों का विरोध था उसका निवारण किया है इस से स्मृति पाद है और दूसरे पाद में सांख्यादि मत दूषित किये हैं २ इस से तर्क पाद है और तीसरे में पांच महाभूतों के कहिनेवाली श्रुतियों में और तोता और जीव के कहिनेवाली श्रुतियों में जो कलह थी सो निवारदी है इस से भूत पाद है और चौथे से लिङ्ग देह की श्रुतियों में भी सुमति करवा दी इस्से लिङ्ग पाद है फिर तीसरे अध्याय के पहिले पाद में जीव के आने जाने के विचार से वैराग्य का वर्णन किया है इससे वैराग्य पाद है दूसरे में त्वं और तत् इन दो पदों के अर्थ का निर्णय किया है इस से तत्वं पदार्थ शोधन पाद है। तीसरे में सगुणविद्या और सगुणोपसंहार किया है और निर्गुणब्रह्म अपुनरुक्त पदों का उपसंहार किया है। ३ इस से गुणोपसंहार पाद है। चौथे में निर्गुण ज्ञान के लिये संन्यास और यज्ञादि बहिरङ्ग साधन और शमादि अन्तरङ्ग हैं इससे अन्तरङ्ग बहिरङ्ग साधन पाद है अर्थात् कर्म शून्य विद्या

पुरुषार्थ का मुख्य साधन है । चौथे अध्याय के पहिले पाद में वेदान्त के श्रवणादि से और सगुण या निर्गुण ब्रह्म की उपासनादि से ब्रह्म का साक्षात्कार होने पर जीवस्थूल युक्तही पाप पुण्य के नाश से मुक्त कहा है । इस से जीवन्मु पाद है और दूसरे में म्रियमाण जीव के निकरने का कहा है। इससे उत्क्रान्ति पाद है तीसरे में मृत सगुणवे उत्तर मार्ग से जावेगा । इस से ब्रह्मप्राप्ति पाद है । चौथे सगुण ब्रह्मवेदी को सत्यलोक में ठौर मिलेगी और निर्गुण ह्मवेदी को विदेह कैवल्य होगी । इस से ब्रह्मलोक पाद यह संक्षिपार्थ है ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

जिज्ञासाधिकरण १

जिस में पांच वस्तु हों सो अधिकरण है । विषय वाक्य अर्थात् श्रुति या स्मृति उदाहरण के लिये होवें १ फिर सन्देह होवे २ फिर सङ्गति होवे ३ फिर पूर्व पक्ष होवे ४ फिर सिद्धान्त होवे ॥ ५ ॥

अध्याय का नाम समन्वयाध्याय है। और पाद का नाम स्पष्ट लिङ्ग पाद है ॥

अथातोब्रह्मजिज्ञासा ॥ १ ॥

अथ मङ्गल आरम्भ आनन्तर्य पश्चात् का बाचक है इन में से आनन्तर्यार्थक यहां पर गृहीत है नकि अधिकारार्थ ब्रह्मजिज्ञासा के अनधिकार्यत्व से अतः शब्द हेतु बाचक है। ब्रह्म चित्सत् मोद स्वरूप है। जिज्ञासा। जानने की इच्छा है जैसे पूर्वकाण्ड में अथातोधर्म जिज्ञासा इस सूत्र से अभ्युदय के अर्थ धर्मही जिज्ञास्य कहा है तैसेही उत्तर काण्ड में उक्त सूत्र से ब्रह्महो निःश्रेयस के अर्थ जिज्ञास्य कहा है। और वेदही अग्निहोत्रादि हयमेधांत श्रेयः के साधन यज्ञों के फल को बिनाशी कहिता है। वेद। यथेहकर्मचितोलोकःक्षीयतएवमेवामुत्रपुण्यचितोलोकःक्षीयतइति

और वेदही ब्रह्मज्ञान का अनन्त फल परम पुमर्थ को कहिता है। वेद। ब्रह्मविदाप्नोतिपरमित्यादि । फिर कौन सा

बुद्धिमान् प्राप्त बड़ा फल छाड़के थोरे चयी में फंसेगा। इस से ब्रह्मही जानने योग्य है। वेद। तद्विजिज्ञासस्वेत्यादि॥

अथवा जिज्ञासा विचारः कर्त्तव्यः। कर्त्तव्य शब्द सूत्र में डालना चाहिये। और जिज्ञासा शब्द विचार में रूढ़ या लाक्षणिक है यह चिन्ता यहां नहीं की है क्योंकि ग्रन्थ बड़े के डर से। खुलासा साधनचार की सम्पत्ति से भूत ब्रह्म अखण्डार्थ परमेश्वर की जिज्ञासा है जैसे कर्म काण्ड में भव्यधर्म की जिज्ञासा है साधन। नित्य और अनित्य वस्तु का विवेक करना। जैसे सत् मोद अनन्त ब्रह्म नित्य है। और दृश्य जड़ परिछिन्न प्रपञ्च अनित्य है इहामुत्रार्थ विराग। इस लोक के भोग राज्य स्त्री आदि सब चयी हैं और परलोक के भी स्वर्ग वैकुण्ठ इन्द्र आदि देवों के लोक में निवास अमृतपानादि सब चयी हैं जैसे लौकिक सब उद्यमों का फल चयी है तैसे वैदिक सब कर्मों का फल चयी है। भावार्थ, परस्त्री वेश्यादि के भोग को सूकरी कूकरी का सा भोग जान छोड़ना और छल बल से पर राज्य धनादि भोग को विष मिले अन्न के वमन सा या सूकर कूकर काक की विटसा जान छोड़ना और स्वर्ग सुखार्थ पशु वधादि वैदिक कर्म भी उक्त से हैं इसी का नाम इहामुत्र फल भोग विराग है और जोकिसंन्यासादि का उपदेश है सो केवल गृहाश्रम उजार मठ बसाने के लिये है जो वृद्धत्व में संन्यास कहो तो जवानी में मरा नरकही को गया क्योंकि संन्यास बिना न ज्ञान और न ज्ञान बिना मुक्ति है। तो सिद्ध हुआ कि बच्चे को ही ईश्वर का ज्ञान सिखावे कर्म उपासना के काल में इसी में उस श्रुति का तात्पर्य है जो ब्रह्म-

चर्यादि से संन्यास को दिखाती है ॥

आत्मा वा अरेद्रष्टव्यः। इस में आत्म दर्शन फल के लिये वेदान्त वाक्यों का ब्रह्म में तात्पर्य के निर्णयानुकूल विचार का विधान है। और विचारविधायक वाक्य विषय हैं और ब्रह्म विचारात्मक शास्त्र आरम्भ है या अनारम्भ है यह सन्देह है फिर विषय और प्रयोजन के अभाव से अनारम्भ है संदिग्ध वस्तु विचारार्ह है और ब्रह्म तो असन्दिग्ध है यदि सन्देह है तदा क्या ब्रह्माकार से या आत्माकार से है ॥

पहिले पक्ष में। सत्यंज्ञानमनन्तं ब्रह्म। इस मन्त्र से ब्रह्माकार का निश्चय है और दूसरे पक्ष में अहं प्रत्यय से आत्माकार का भी निश्चय है। यदि अध्यस्तात्म विषयक अहं प्रत्यय कहो सो नहीं अध्यास के अनिरूपण से तिमर प्रकाश सा अत्यन्त विरुद्ध स्वभाव चिज्जड़ जीव देह का शुक्ति में रजतसा परस्पर तादात्म्याध्यास निरूपण को शक्य नहीं है तिस से अभ्रान्त श्रुति और अहं प्रत्यय करके निश्चित ब्रह्म संदिग्ध नहीं है तो विचार का विषय भी नहीं है ॥

और हम प्रयोजन भी नहीं देखते हैं। उक्त रीति से ब्रह्मात्मा के निश्चय में मुक्ति देखने से तिस से न ब्रह्म विचारार्ह है और न कि शास्त्र आरम्भ है यह पूर्व पक्ष है। शास्त्र आरम्भ है विषय प्रयोजन के होने से। वेद और अहं प्रत्यय दोनों विप्रतिपन्न हैं तिस से ब्रह्म सन्दिग्ध है अयमात्मा ब्रह्मेति यह वेद असङ्ग ब्रह्म को आत्मा कहता है अहं मनुष्य ऐसो अहं प्रत्यय देहादि के तादात्म्याध्यास से आत्मा को बताता है और जो तुम ने कहा था कि अध्यास दुर्निरूप्य है सो ही अद्वयवाद में अलङ्कार है तिस से संदिग्ध ब्रह्म

विषय है और ब्रह्म के निश्चय से मुक्तिरूप प्रयोजन भी है ॥ तमेवविदित्वेति तद्वैतत्पश्यन्नृषिर्वामदेवःप्रतिपेदे अहंमनुरभवंसूर्यश्चेत्यादि यह विद्वदनुभव भी प्रयोजन में प्रमाण है इस से प्रयोजन सिद्ध है तिस से वेदान्त वाक्यों के विचार द्वारा ब्रह्म विचारार्ह है। इस से शास्त्र भी आरम्भ है यह सिद्धान्त पक्ष है ॥

और विप्रतिपन्नों की विप्रतिपत्तिनिरासार्थ ब्रह्म जिज्ञास्य है जैसे देहमात्र चैतन्य विशिष्ट आत्मा प्राकृत जन और लोकायतिक मानते हैं अन्य इन्द्रियों को चेतन आत्मा मानते हैं अन्य मन आत्मा मानते हैं विज्ञानमात्र क्षणिक आत्मा बौद्ध मानते हैं। शून्य आत्मा शून्यवादी मानते हैं। देहादि से भिन्न कर्त्ता भोक्ता संसारी कोई मानते हैं भोक्ताही है केवल नहि कर्त्ता है ऐसा कोई मानते हैं। इन से भिन्न जड़ बोध रूप कोई मानते हैं सर्वशक्तिमान ईश्वर कोई मानते हैं जीव का और अकर्त्ता साक्षी का ईश्वर आत्म स्वरूप है यह वेदान्त मत है वृहधातु से ब्रह्म पद सिद्ध है ॥

शम १ दम २ तितिक्षा ३ उपरति ४ समाधान ५ श्रद्धा ६ इनका नाम शमादिषट्क है ज्ञान का श्रवण मनन ध्यान शम है बाहिर भीतर की इंद्रियों को निषिद्ध वस्तु से हटाना दम है वेदविहित कर्मों को न करना उपरति है। हिम तप्त आदि जोड़ों का सहना तितिक्षा है। या अज्ञान लोभ मोह काम क्रोधादि से बचना। सुज्ञान द्वारा सब ठौर से मन को थाम के ज्ञान से वर्त्तना ज्ञान का सुनना समाधि है। बुद्धि से निश्चित वस्तु में विश्वास श्रद्धा है। मुक्ति की इच्छा मुमुक्षा है। फिर जिस में उक्त वस्तु हैं वही वेदान्त का

अधिकारी और प्रमाता है ॥

श्रुति । आत्मा वा अरे द्रष्टव्यःश्रोतव्योमन्तव्योनिदिध्यासितव्यश्चेति । अर्थ । आत्मदर्शनरूप फल के लिये श्रवणादि तीनहीं कहे हैं न कि संन्यासादि लिङ्ग धारण करना । संन्यास के लिङ्गों से भी सब दुःख दुर्निवार है । तिस से ब्रह्म जानन योग्य है । सर्वतःप्राग्भूमानंविजानीयात् ब्रह्मज्ञानायविचारः कर्तव्य इतिसूत्रस्यश्रौतोऽर्थः संपद्यते इति ॥

———✻———

(जन्माद्यधिकरण ॥ २ ॥)

जन्माद्यस्ययतः ॥ २ ॥

जन्म । उत्पत्तिः । आदि । प्रभृतिः । अस्य । स्थूल सूक्ष्म प्रपञ्चस्य । यतःकारणात् । भवतितद्ब्रह्मेतिसौत्रोऽर्थः । अन्यसंस्कृतमधिकृत्य विश्वोद्भवादिहेतुर्ब्रह्मेति । भाषा । प्रत्यक्षादि प्रमाणों से उपस्थित जो प्रपञ्च है तिसका जन्म स्थिति भङ्ग जिस कारण से है वही ब्रह्म है और यास्क मुनि ने भी महाभूतों का लक्षण नहीं कहा है किन्तु ब्रह्महो का कहा है। वाक्य । जायतेऽस्तिवर्द्धतेविपरिणमतेऽपक्षीयतेनश्यतीति । ब्रह्म का निर्णायक वेद । आनन्दाद्ध्येवखल्विमानि भू*तानिजायन्तेआनन्देनजातानिजीवन्ति आनन्दंप्रयन्त्यभिसम्विशन्तीति । भाषा । मोद रूप ब्रह्म से सब प्राणी जन्मते हैं और उसी से

*प्राणिनोव्योमादयोवा

जीते हैं और मरके सब उसी में घुसेंगे और ऐसीही यजुर्वेद के तैतिरीय शाखा की भी स्रुति है ॥ यतोवाइमानिभूतानिजायन्तेयेनजातानिजीवन्तियत्प्रयन्त्यभिसंविशन्तीतितद्विजिज्ञासस्वतद्ब्रह्मेति । इन स्रुतियों से व्यास जी ने उक्तसूत्र रचा है । इसका भी अर्थ पहिली स्रुति के तुल्य है ॥

———*○*———

(शास्त्रयोनित्वाधिकरण ॥ ३ ॥)

शास्त्रयोनित्वात् ॥ ३ ॥

शास्त्रस्यऋगादेर्वेदस्ययोनिःकर्त्ता । तस्यभावःशास्त्रयोनित्वन्तस्मात्शास्त्रयोनित्वात् । वेदनिर्मातृत्वादित्यर्थः । भाषा । वेद का बनानेवाला ईश्वरही है ॥

अथवा शास्त्रं । वेदः । योनिः । मूलम्प्रमाणंयस्मिन्तस्यभावःशास्त्रयोनित्वंतस्मात् । वेदमूलप्रमाणसिद्धत्वंतस्माद्ब्रह्मास्तिविश्वकारणमितिशेषेणार्थः । भाषा । जो परमेश्वर विश्व का कारण है उस में अशेष विशेष का बोधक वेदही प्रमाण है न कि अनुमानादि कर्तमात्र के बोधक होने से और दृष्टान्त के लिये लोक में सर्वज्ञादि गुण विशिष्ट न देखने से ॥

ऋग्वेदादि को या वाणी मात्र को ऋग्वेद का मन्त्र नित्य बोधन कर्त्ता है । जैसे वाचाविरूपनित्ययेत्यादि । अर्थ । हे विश्वरूप वाणी नित्य है । तिससे तू नित्य वेदवाणी से ही स्तुति को करे यही प्रार्थित है ऋषि को । नित्य वाग्वेद है

* यत्प्रियमाणानि ।

और ऋग्यजुः सामादि के पुरुषसूक्तादि मन्त्रों ने कहा है कि ऋगादि का कर्त्ता ईश्वर है। जैसे। अस्यमहतोभूतस्यनिश्वसितमेतदृग्वेदोयजुर्वेदःसामवेद इत्यादि। जैसे निश्वास अप्रयत्न सिद्ध है तैसेही ब्रह्म से ऋगादि अप्रयत्न सिद्ध हैं॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचःसामानि यज्ञिरे इति॥ इस में यज्ञशब्द वाच्य ब्रह्म से ऋगादि का जन्म स्पष्ट कहा है। और नित्यबोधकमन्त्र प्रतिकल्प में एकरूप वेद रहिते हैं या प्रवाहरूप नित्यका बोधक हैं या चिरकालस्थायी वेदों को कहिते हैं जैसे सोमपान है मन्त्र सोमपान से चिरकालस्थायी मुक्ति को जताता है॥ मन्त्र। अपामसोमममृता अभूवन्नित्यादि। और कर्म से जन्य स्वर्ग को गौण अक्षयत्व बोधवत् वेद की नित्यता है। जैसे। अक्षय्यंहवैचातुर्मास्ययाजिनंसुकृतंभवतीति। सब विश्व की व्यवस्था के अवभासक वेद का कर्ता ब्रह्म सिद्ध हुआ तिससे सर्वज्ञ भी सिद्ध है। पहिले श्रुति से ब्रह्म को सुने फिर अनुमान से मनन करे फिर अनुभव से साक्षात्कार करे इससे ब्रह्मवेदैकमेय है और अनुमानादि सब प्रमाण वेद के अनुवादकही हैं। यतोवाइमानीतिसत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति। जो दो वाक्य बिषय हैं इन में श्रुत ब्रह्म का लक्षण घटता है या नहीं घटता है यह संशय है। नहीं घटता है कैसे नहीं घटता है॥

सुनो। क्या जन्मादि ब्रह्म का लक्षण है या सत्यादि नहीं है। पहिला पक्ष। जन्मादि जगत् के हैं इससे उसका ब्रह्म से सम्बन्धही नहीं है। दूसरा पक्ष भी नहीं है यदि लोक में प्रसिद्ध सत्यादि को स्वीकार करो वो तदा सत्यादि भिन्नार्थ बादी होने से अखण्ड ब्रह्म की सिद्धि नहीं होगी औ

अप्रसिद्ध सत्यादि लक्षण के योग्यही नहीं है । तिससे ब्रह्म का तटस्थ लक्षण और स्वरूप लक्षण दोनों नहीं हैं यह मत समझो जो मैं कहिता हूं सो समझो जन्मादि जगन्निष्ठ हैं तो भी ब्रह्म में कल्पना से जन्मादि के कारण सम्बद्ध है इसी का नाम तटस्थ लक्षण है लोक में जैसे जो सांप है सो माला है तैसेही जो जगत् कारण है सो ही ब्रह्म है ऐसे कल्पित वस्तु से ब्रह्म का लक्षण शक्य है । और जैसे लोक में पिता भ्राता जामाता सुतादि शब्द भिन्नार्थ बाची हैं तो भी उनका एक चैत्र में पर्यवसान होने में कुछ विरोध नहीं है तैसेही लोक प्रसिद्ध भिन्नार्थ बाची सत्यादि शब्द अखण्ड ब्रह्म में पर्यवसायी होने से स्वरूप लक्षण की सिद्धि है इससे दोनों लक्षण सिद्ध हैं ॥

मन्त्र । अस्यमहतोभूतस्यनिःश्वसितमेतदृग्वेदोयजुर्वेदःसामवेदइत्यादि । तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचःसामानियज्ञिरेइत्यादि मन्त्रों से उक्त सूत्र रचा है । भावार्थ० । मन्त्रों में ईश्वर को सावयवमान प्राणी की सास के निकरने के तुल्य वेद का जन्म कहा है और किसी ढब से सास नहीं घटेगी ।

और कोई कहिते हैं कि याज्ञवल्क्य ने शाकल्य से पूछा कि मैं तुम से उस पुरुष को पूछता हूं जो उपनिषत् से जाना जाता है क्योंकि ब्रह्म में रूप रसादि नहीं हैं इससे इन्द्रियां उसको नहीं जानसक्ती हैं और लिङ्ग और सदृश उस का कोई नहीं है इससे अनुमान और उपमान भी उसको नहीं बता सक्ते हैं फिर यही सिद्ध हुआ कि ब्रह्म केवल वेदही से जाना जाता है । यद्यपि उस में अनुभव अनुमानादि भी प्रमाण हैं तथापि पहिले श्रुति से सुने पीछे उन से मनन न क-

है। श्रुति॥

तन्त्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामीतिनावेदविन्मनुतेतंबृहन्तमित्यादि। अर्थ। विद्यावान् बड़े ईश्वर को जानता है न कि संन्यासादि लिङ्गधारी बाह्य चिन्ह धरने से। इससे ब्रह्म वेदैकमेय है॥

(समन्वयाधिकरण॥ ४॥)

तत्तुसमन्वयात्॥ ४॥

तु शब्द पूर्व पक्ष की निवृत्ति के लिये है। तत्। ब्रह्म साक्षात्परम्परयावासमस्ताम्नायप्रतिपाद्यमस्तीति ब्रह्म में केवल वेद प्रमाण है क्योंकि सब वेद साक्षात् या परम्परा से ब्रह्म का ही प्रतिपादन कर्त्ता है। जैमिनि मीमांसक मानते हैं कि वेद में जीव के प्रकाशक वाक्य कर्त्ता को और ब्रह्म प्रकाशकवाक्य देवता को और सृष्टि प्रकाशकवाक्य यज्ञ की सामग्री सब वस्तु को कहिते हैं तिससे वेदान्त कर्म का उपयोगी होके सार्थक होगा और ब्रह्म परमानेसे अनुष्ठानमें नहीं आवेगा उससे निरर्थक होगा। तिससे वेदान्त कर्त्ता देवता साधनके प्रतिपादक हैं व्यास वेदान्ती मानता है कि सब वेदान्त वाक्य ब्रह्महो को कहिते हैं और न कर्त्ता आदि को जिससे वे कर्म का अङ्ग होके रहें क्योंकि वेदान्त सब प्रकरणों से वेद में पृथक् पढ़े हैं। और ब्रह्म के निश्चायक छह चिन्ह हैं। जैसे। सदेवसौम्यदमग्रआसीदिति। ऋग्वेद में। एकमेवाद्वितीयं। यजुर्वेद में। आत्मावाइदमेकएवाग्रआसीन्नान्यत्किञ्चनमिषत्सईक्षतलोकानुसृ-

जा इति । सइमान्लोकानसृजेति । तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरमनन्तरमवाह्यमयमात्माब्रह्मसर्वानुभूःब्रह्मैवेदमस्तम्पुरस्तादिति छांदोग्य के छठे अध्याय मे इहां से आरम्भ कर । ऐतदात्म्यमिदंसर्वंतत्सत्यंसआत्मातत्वमसीति । यहांलो उपक्रमोपसंहार नाम एक चिन्ह है १ वार २ एक बात कहिना अभ्यास नाम दूसरा चिन्ह है २ । जैसे । तत्त्वमसि, यह उपदेश नौ बार है । वेद के विना अन्य प्रमाणों से ब्रह्म नहीं जानाजाता है यही अपूर्व नाम चिन्ह है ३ । एक के जानने से सब जाना जाता है यह फल नाम चौथा चिन्ह है सृष्टि १ स्थिति २ लय ३ प्रवेश ४ नियमन ५ जे पांच अर्थ वाद नाम चिन्ह है ५ । जैसे मट्टी के घटादि सब विकार झूठे हैं फिर मट्टीही सच्ची है यह दृष्टान्त है इसी को उपपत्ति नाम छठा चिन्ह कहा है ६ इन छहो चिन्हों से वेदान्त का तात्पर्य केवल ब्रह्म में ही है॥

और यह शङ्का भी मत करो कि वेदान्त अनुष्ठान में न आने से निष्फल हैं क्योंकि जब मनुष्य सांपसी रस्सी देख डरता कांपता भागता खड़ा रहिता है तब उससे कहे कि यह सांप नहीं है किन्तु रस्सी है यह सुन भय छाड़ सुखी होता है तैसेही वेदान्त भी सब अनर्थ की निवृत्ति के लिये हैं । वुह यह कि जीवबद्ध कर्त्ता भोक्ता संसारी है । और इसकी निवृत्ति है कि जीव शुद्ध मुक्त है और बंन्धन औपाधिक है आत्मा वाअरेद्रष्टव्यः । यआत्माअपहतपाप्मासोन्विष्टव्यःसविजिज्ञासितव्यः । आत्मेत्येवोपासीत आत्मानमेवलोकमुपासीतब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतीत्यादि ॥

जब तक देह है तब तक सुख दुःख का तारतम्य नहीं छुटता है । श्रुति । नहवैसशरीरस्यसतःप्रियाप्रिययोरपहतिर-

स्तीति। अशरीर को सुख दुःख नहीं है। श्रुति। अशरीरस्वावसन्तन्नप्रियाप्रियेस्पृशत इति। अभयंवैजनकप्राप्तोसितदात्मानमेव।वेदहंब्रह्मास्मीतितस्मात्तत्सर्वमभवत्तचकोमोह:क:शोक:-एकत्वमनुपश्यत इति।

ऋग्मन्त्र:। तयोरन्य:पिप्पलंस्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योभिचाकशीतीति। अर्थ। प्रमाता और साक्षी के बीच बुद्धि के सङ्ग ही से कल्पित कर्तृत्वादिमान् कर्म फल को भोक्ता है वुही शुद्ध साक्षी रूप से प्रकाशता है। यजुर्मन्त्र:। सपर्यगाच्छुक्र: स आत्मा पर्य्यगात् व्याप्त: शुक्रो दीप्तमान् अकाय: १ लिङ्गशून्य: १ अव्रण: अक्षत: अस्नाविर: शिराविधुर: अनश्वरोवास्थूलदेहशून्य: शुद्ध: रागादि मलशून्य: अपापविद्ध: पुण्यपापाभ्यांशून्य: इतिमन्त्रपदार्थ:। इससे जो जैमिनिने कहाथा कि वेद यज्ञके अर्थ है और जो यज्ञार्थ नहीं है सो अनर्थक है सो झूठ है। आम्नायस्यक्रियार्थत्वादानर्थक्यमतदर्थानामिति दृष्टोहितस्यार्थ: कर्मावबोधनंनामेतिभाष्यञ्च॥

और एक देशीइ यों मानता है कि यद्यपि वेदान्त ब्रह्म बोधक हैं तदापि ब्रह्म में वेदान्तों का पर्यवसान नहीं है तो क्या है कि परोक्ष से ब्रह्म को कहिके पीछे प्रत्यक्ष प्रतिपत्ति को कहिते हैं जैसे पहिले श्रवण से परोक्ष ज्ञान कहके पीछे मननादि से अनुभव ज्ञान प्रत्यक्ष कहा है। तिससे प्रतिपत्ति के विधाता वेदान्त हैं यह पक्ष भी सच्चा नहीं है। प्रतिपत्ति विधि के असम्भव से कर्म करने को अकरने को अन्यथा करने को पुरुष तन्त्र है जो शक्य है। और शास्त्र तो अनुष्ठेय के शासनार्थही नहीं नियत है किन्तु सिद्ध वस्तु के शंसन से भी शास्त्र की सिद्धि है और यह भी नहीं कहि शक्ते हो कि

शाब्दज्ञान के जन्मे पीछे अनुभवात्मक मननादि विधान है। जैसे तू दशमा है इस में शब्दही अपरोक्षानुभव ज्ञान का जनक होने से शाब्द बोध से पहिलेही असम्भावनादि की निवृत्ति कीर्य व्यापार रूप कहे तत्त्व मननादि के विधान से क्योंकि शब्द से भी प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। जैसा कि यह एक दृष्टान्त है कि जुह्न घरभूला ऋत्विक् जिधर तिधर खोजता था व्याकुलता से फिर दूसरा बोल उठा कि जुह्न वुह धरी है कुशों पर तभी उसको शब्द से प्रत्यक्ष हुआ जुह्न का और चिन्ता कपूर्सी उड़ गई तैसेही तत्वमस्यादि वेदांत हैं कर्मकाण्ड में भव्य धर्म जिज्ञास्य है और ब्रह्मकाण्डमे भूत नित्य निर्वृत्त ब्रह्म जिज्ञास्य है यह वै लक्षण्य है ॥

यद्यपि ध्यानचिंतनमानस है तद्यपि करने को अकरने को अन्यथा करने को पुरुषतन्त्र है। और ज्ञान प्रमाणजन्य फिर प्रमाण जैसी वस्तु है तैसी ही ऊंची चौड़ी लम्बी बतावेगा इससे ज्ञान करने अकरने अन्यथाकरने को शक्य नहीं है केवल वस्तुतन्त्र है नचोदनातन्त्र नकि पुरुषतन्त्र तिससे ज्ञानमानस है तोभी उसको बड़ी वैलक्षण्य है ॥

और शाण्डिल्य के मत में ब्रह्म की उपासना के लिये वेदान्त वाक्य हैं साभी सच्च नहीं है क्योंकि उपासना को मुक्ति में कारण न होने से लोक में उपासक मुक्त न देखने से जैसे राजसेवक है। वेद भी ज्ञानहीं से मुक्ति दिखाता है। तमेव विदित्वेति ऋग्यजुर्मन्त्र है और उपासना की विधि का अङ्ग मानने में कोई प्रमाण नहीं है। सार तो यह है कि वेदान्त वाक्य न कर्म के अङ्ग और नकि भक्ति का अङ्ग हैं किन्तु केवल वेदप्रमाणक स्वतन्त्र ही हैं ब्रह्मवेदान्तवाक्यसमन्वय से सिद्ध

है और जब तक ईश्वर का निश्चय नहीं है तब तक प्रमाण चाहिये। तिससे तत्वमसीत्यादि वेदान्त ब्रह्म के निश्चायक हैं॥

—*○*—

(ईक्षत्यधिकरण। ५॥)

ईक्षतेर्नाशब्दं। ५॥

नास्ति वेदो मानं यस्मिन्तदशब्दं। वादिभिः कल्पिताः पदार्था विश्वनिदानभूता वेदमानशून्या भवन्तीति भावार्थः॥ भाषा। जो सांख्य ने अचेतनप्रधान विश्वनिदान माना है सो नहीं हो सक्ता है। क्योंकि वेदान्तों में न सुनने से और जो वेदान्तों में विश्वनिदान सुना है सो सांख्यकल्पित प्रधान नहीं हो सक्ता है। क्योंकि ईक्षण सुनने से। ईक्षण जड़ प्रधानमें नहीं हो सक्ता है। अचेतनप्रधान सर्वज्ञ नहीं हो सक्ता है और चेतन सत्व के उत्कर्षद्वारा सर्वज्ञ हो सक्ता है साक्षी निमित्त से भी प्रधान में ईक्षण नहीं कल्प सक्ते हो जैसे अग्निनिमित्त से लोहे से दाह है क्योंकि जिस निमित्त से उसमें ईक्षण है सोही विश्वनिदान है॥ वेद। छान्दोग्य के छठे अध्याय में पढ़ा है कि। सदेवसोम्येदमग्रआसीत्। एकमेवाद्वितीयं ब्रह्मेति यहां से पढ़ा कि। तदैक्षतबहुस्यांप्रजायेयेति तत्तेजोऽसृजतेति यहां तक एक प्रकरण है इस ऐक्षत शब्द से उक्त सूत्र रचा है। और षोड़शकलपुरुषों की सृष्टि मे भी चेतनही विश्वनिदान कहा है। जैसे सईक्षांचक्रे सप्राणमसृजत तस्मादेतद्ब्रह्मनामरूपमन्नंच जायते। और मन्त्र भी देहके वि-

नाही ईश्वर से सृष्टि बताते हैं ।

न तस्य कार्यं करणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते ।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकीज्ञानबलक्रिया च ॥
अपाणिपादो जवनो गृहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः ।
सवेत्तिवेद्यंनचतस्यास्तिवेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषंमहान्तमिति ॥
नोकर्ष्यंवत्सपन्मात्रमनित्यफलत्वादिति ॥

गौणश्चेन्नात्मशब्दात् ॥ ६ ॥

जो ईक्षण श्रुतिसे सुना सो गौण नहीं है जैसा कि तेज जलका ईक्षण है किन्तु नामरूप को करनेवाली देवता आत्म शब्दसे चेतन जीवको कहती है गौणी श्रुतियां । तत्तेजऐक्षत ता आप ऐक्षन्त इत्यादि । गौण का लौकिक दृष्टान्त यह है । जैसे खाट कोठा पीढी बोलते हैं ॥ श्रुति । अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणीति । सयएषोणिमैतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति । इस में चेतन ही श्वेतकेतुको आत्मा कहा है नकि जड़प्रधानको ॥

तन्निष्ठस्यमोक्षोपदेशात् ॥ ७ ॥

ब्रह्मसंस्थस्य पुरुषस्य मुक्तिकथनात् । विश्वनिदानके साथ जिस जीव का तादात्म्य ज्ञान है उस की मुक्ति है । तरति शोकमात्मविदिति । अर्थ । ईश्वर का जाननेवाला मृत्यु को तरता है और तत्त्वमसीति इस वाक्य से भी पिता ने श्वेतकेतु को विश्वनिदान के साथ अभेदही उपदेश किया है । भावार्थ । जैसे स्वर्गाद्यर्थिको अग्निहोत्रादिहयमेधान्त साधनों का उपदेश है तैसेही मुमुक्षु को भी आत्मा का उपदेश है यही युक्त है । जैसे अन्ध को ग्राममें पहुंचाने के लिये दुष्टवर्ड-

की पूछ यमादी तैसे भी श्वेतकेतु को उपदेश नहीं है पुरुषार्थहान से ॥

हेयत्वावचनाच्च ॥ ८ ॥

तैतिरीय शाखा में देह प्राण मन बुद्धि आनन्द इन पांच में पहिले की अपेक्षा से आगे२ श्रेष्ठ२ समुझ आनन्दमय पर विश्राम किया है तिस्से जाना गया कि आनन्दमय आत्मा है तैसेही यहां पर और कुछ न कहिने से आत्माही ग्राह्य रहा। जैसे मूज में सींक छिपी होती है तैसेही आत्मा अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनन्दमय इन में छिपा है। कारण के जानने से सब कार्य जाना जाता है। जैसे एक मट्टी का घड़ा देखने से सब मट्टी के घड़े जाने गये कि मट्टी के बिकार अनित्य है और मट्टीही सत्य है। तिससे सत् शब्द वाच्य आत्मा है न कि प्रधान है। सदेव सौम्य इत्यादि से ॥

स्वाप्ययात् ॥ ९ ॥

स्वस्मिन्नप्ययोलयस्तस्मादिति ॥

ब्रह्मही में सब का लय कहा है तिससे भी प्रधान बिश्वनिदान नहीं है। सो ते पर सब चेतनो का लय होता है जिसमें सोही चेतन बिश्वनिदान है। श्रुति। प्राज्ञेनात्मनासम्परिष्वक्तोनवाह्यंकिञ्चनवेदनांतरमिति यत्रैतत्पुरुषःस्वपितिनामसतासौम्यतदासम्पन्नोभवतिस्वमपीतोभवति तस्मादेनंस्वपीतीत्याचक्षतेस्वंह्यपीतोभवतीति। जिस में सब चेतनों का लय है सो ही चेतन विश्व निदान है न कि प्रधान। सवाएषआत्माहृदितस्यैतदेवनिरुक्तंहृदयमितितस्माद्हृदयमिति आपएवतदशितन्नयन्तेतेजएवतत्पीतन्नयतइतिच ॥

गतिसामान्यात् ॥ १० ॥

जैसे नेत्रादि इन्द्रियां रूपादि में समान गति से वर्त्ते हैं तैसे सब वेद ब्रह्म को ही जगकारण कहते हैं। न तार्किकों के समान भिन्नर कारण है। यथाग्नेर्ज्वलतःसर्वादिशोविस्फुलिङ्गाविप्रतिष्ठेरन्एवमेवैतस्मादात्मनः सर्वेप्राणायथायतनंविप्रतिष्ठन्तेप्राणेभ्योदेवादेवेभ्योलोकाइति तस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसम्भूतइति आत्मनएवेदंसर्वमिति आत्मनएषप्राणोजायतइति। कहीं चेतन विश्वनिदान है कहीं जड़ प्रधान कहीं अन्य है। ब्रह्म हि रूपही जाना जाता है ॥

श्रुतत्वाच्च ॥ ११ ॥

वेद से उपादान करण कर्त्तादि सब का कारण चेतनही सुना है। नतस्यकश्चित्पतिरस्तिलोके नचेशितानैवचतस्यलिङ्गं सकारणंकरणाधिपाधिपो नचास्यकश्चिज्जनितानचाधिप इति यह श्वेताश्वतराणां मन्त्रोपनिषत् है। द्वासुपर्णाविति इस मन्त्र की व्याख्या में किसी ने जीव ईश्वर लिये हैं और पैंगीने बुद्धि जीव लिये हैं। पैङ्गीरहस्यब्राह्मणेनान्यथाव्याख्याता अन्नाविति सत्वक्षेत्रज्ञौ सत्वक्षेत्रज्ञशब्दयोरन्तःकरणशारीरपरतयाप्रसिद्धत्वात्तत्रैवव्याख्यातत्वात् ॥ तिससे सिद्ध हुआ सर्वज्ञब्रह्म विश्वनिदान और नकि जड़प्रधान या अन्य कोई ॥

———*○*———

(आनन्दमयाधिकरण । ६ ॥)

———*———

आनन्दमयोभ्यासात् ॥ १२ ॥

प्रथम सूत्र से ब्रह्म शब्द सर्व सूत्रों में लिया है वही सा-ध्य होने से तैत्तिरीय में देह प्राण मन बुद्धि आनन्द जो पांच क्रम से पढ़े हैं इन में सब से पीछे आनन्दमय पढ़ा है सोही ब्रह्म है क्योंकि बार२ आनन्दमय पढ़ने से । और आनन्द शब्द से जो आनन्दमय का बहुबार वर्णन है सोही अभ्यास है ॥ श्रुतिः तैत्तिरीया । अन्नमयं प्राणमयं मनोमयं विज्ञानम-यं तस्माद्वा एतस्माद्विज्ञानमयादन्यो अन्तरआत्मा आनन्दमय इति । इसमें संशय है कि आनन्दमय परब्रह्म है या अन्नम-यादिवत् ब्रह्म से अन्य है ॥ अभ्यास में श्रुति । तस्यैषएवशा-रीरआत्माय:पूर्वस्येति रसोवैस: रसंह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति कोह्येवान्यात्क:प्राण्याद्यदेष आकाशआनन्दो न स्यात् । एष ह्येवानन्दयाति सैषानन्दस्य मीमांसा भवतीति एतमानन्दमय मात्मानमुपक्रामति ॥ आनन्दंब्रह्मणोविद्वान्नबिभेति कुतश्चनेति आनन्दोब्रह्मेति व्यजानादिति । विज्ञानमानन्दं ब्रह्मेति एत-स्यैवानन्दस्यान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्तीति । वेद । तस्य प्रियमेवशिर:मोदोदक्षिण:पक्ष: प्रमोदउत्तर:पक्ष: आनन्दआत्मा ब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठेति । वेद में पक्षिरूपकालंकार से सुगमबोधा-र्थब्रह्म दिखाया है इस में निरुपाधि आनन्दमय पांच अङ्गों से कहा है । चहींती वस्तुके देखने से जो सुख है सो प्रिय है उसीका लाभ मोद है २ उसीका भोग प्रमोद है ३ सुषुप्ति आदि में भासमान जो अज्ञानोपहित सुख सामान्य सो आ-नन्द है ४ आनन्द निरतिशय पूंछ है ५ उपासनार्थ निरुपाधि ब्रह्मके ही शिरादि पांच अङ्ग कल्पना किये हैं इससे संसारी नहीं है किन्तु चिन्मय ब्रह्म है फिर चिन्मय के तात्पर्य से अ-भ्यास किया है और प्रियादिअङ्ग औपाधिक हैं तिससे ईश्वर

आनन्दमय है यह एक का मत है । अन्यमत का वर्णन यह है कि ब्रह्म क्या आनन्दमय का अवयव है या प्रधान है। लोकमें पुच्छशब्द अवयवको कहिता है तिससे पूछ आनन्दमय का अवयव है सो नहीं है क्योंकि पूछ पशु का अवयव नहीं है किन्तु लांगूलही है फिर आनन्दमय में पूछ का सम्भवही नहीं है इससे पूछ के मुख्यार्थ को छाड़ लाक्षणिकार्थ आधार लिया है तिससे जीव का आधार ब्रह्म मुख्यवर्णन किया है और भी निगमन श्लोक में ब्रह्मशब्द का अभ्यास है ॥

असन्नेवसभवतिअसद्ब्रह्मेतिवेदचेत् अस्तिब्रह्मेतिचेद्वेदसन्तमेनन्ततोविदुरिति ब्रह्मविदाप्नोतिपरमिति। यह ब्रह्मका उपक्रम भी अनुकूल है। यहां पर मनुष्यादि की आनंद से आगेर को सौगुनी आनन्द बड़के ब्रह्मानन्द है उस में सब आनन्द का अन्त है ॥

विकारशब्दान्नेतिचेन्नप्राचुर्यात् ॥ १३ ॥

आनन्द शब्द के आगे जो मय शब्द है सो बिकार बाचक नहीं है किन्तु प्राचुर्य अर्थात् बहुत अर्थ का बाचक है। जैसे अन्नमय यज्ञ और पशुमय घर और नारीमय नर इन में बहुत अन्न पशुवाला घर और बहुत स्त्री प्रियनर है। तैसे आनन्दमय यहांपर है तिससे बहुत अर्थमें मयट् है नकि विकार में ॥

तद्धेतुव्यपदेशाच्च ॥ १४ ॥

आनन्द का हेतु ब्रह्मही है। ब्रह्म से अन्य में आनन्द के लेश पहुंचते हैं। एषह्येवानन्दयाति। ब्रह्मही आनन्द कराता है। जैसे। लोक में जो अन्य को धनी कर्त्ता है सो उससे अ-

धिक धनी समझा जाता है ॥

मांत्रवर्णिकमेवचगीयते ॥ १५ ॥

इससे भी आनन्दमय परही आत्मा है कि । ब्रह्मविदाप्नोतिपरमिति । यहां से उपक्रम कर । सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति इस मन्त्र में जो प्रकृत ब्रह्म था सो ही सत्यज्ञान अनन्त शब्दों से निर्णीत है । यस्मादाकाशादिक्रमेणस्थावरजङ्गमानिभूतान्यजायन्तयच्चभूतानिसृष्ट्वातान्यनुप्रविश्यगुहायामवस्थितंसर्वान्तरंयस्यविज्ञानायान्योन्तरआत्माअन्योन्तरआत्मेति । इस में मान्त्रिक ब्रह्मगाया है । अन्योन्तर आत्मानन्दय इति । यह मन्त्र और ब्राह्मण की एकार्थता युक्त है । आनन्दमय से अन्य आत्मा नहीं कहा है यह भार्गवी वारुणी विद्या है तिस से आनन्दमय पर आत्मा है ॥

नेतरोनुपपत्तेः ॥ १६ ॥

आनन्दमयके प्रकरणमें सुना है कि एक ने बहुतकी इच्छा से विश्वसृजा है सो यह काम जीव का नहीं है तिससे जीव आनन्दमय नहीं है अथवा आनन्दमय का मुख्य वर्णन नहीं है क्योंकि ब्रह्म वेदी ब्रह्म को प्राप्त होता है और जो ब्रह्म असत् जानता सो असत् ऐसे आगे पीछे के सन्दर्भके विरोध से संसारी जीव या प्रधान आनन्दमय नहीं है किन्तु ईश्वरही है । श्रुति । सोकामयतबहुस्यांप्रजायेयेतिसतपोतप्यत्सतपस्तप्त्वाइदंसर्वमसृजतयदिदङ्किंचेति । अर्थ । जो कुछ कार्य है सो सब ईश्वर ने देख के रचा है ॥

भेदव्यपदेशाच्च ॥ १७ ॥

रसोवैस:रसंह्येवायंलव्ध्वानन्दीभवतीति । अर्थ । जीव ब्रह्म के लाभ से आनन्द होता है वहां प्राप्य ब्रह्म और प्रापक जीव है यह भेद का कहिना है अविद्या कल्पित देह कर्ता भोक्ता विज्ञानात्मा से ईश्वर अन्य है । जैसे खड्गधारी मायावी सूत्र पर चढ़ आकाश को जाता दिखाता है और परमार्थ से मायावी भूमिही पर खड़ा है और जैसे व्योम घटादि उपाधि से भिन्न अनुपाधि अन्य है तैसेही जीव ब्रह्म का भेद है ॥

कामाच्चनानुमानापेक्षा ॥ १८ ॥

कामना सुनने से सांख्य सम्मत अचेतन प्रधान आनन्दमय या विश्वनिदान नहीं है । और न कि जीव आनन्दमय है । सोकामयतवहुस्यांप्रजायेयेति अथवा कामआनन्द है फिर आनन्द को दृष्टान्त और आनन्दमय को पक्ष और प्रधान साध्य है फिर आनन्दमय प्रधान है आनन्दवत् । ऐसे अनुमान की सम्भावना भो सम्भव नहीं हो सक्ती है क्योंकि वेद में प्रधान या जीव को आनन्दमय कहिनेवाला वाक्य न होने से ईक्षतेनाशब्दं इससे निरस्त प्रधान का फिर निरास प्रपञ्चार्थ हो है ॥

अस्मिन्नस्यचतद्योगंशास्ति ॥ १९ ॥

इस आनन्दमय के प्रकरण में जीव का योग आनन्दमय ब्रह्म के साथ वेद उपदेश कर्त्ता है इससे उपचार का इच्छा से भी आनन्दमय वाक्य का अर्थ प्रधान या जीव नहीं है । श्रुति । यदाह्येवैषएतस्मिन्नदृश्येनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयेऽभयंप्रतिष्ठांविन्दतेथसोऽभयङ्गतोभवति यदाह्येवैषएतस्मिन्नुदरमन्त-

रंकुरुतेयतभयम्भवस्यतीति । अर्थ । तादात्म्य से ईश्वर को दे-खि सो देखना परमात्मा के ग्रहण से बनता है न जीव या प्रधान के ग्रहण में तिससे आनन्दमय परमात्मा है न कि विज्ञानात्मा । श्रुति । सवाएषपुरुषोन्नरसमयस्तस्माद्वाएतस्मा-दन्नरसमयादन्योन्तरआत्माप्राणमयस्तस्मादन्योन्तर आत्मावि-ज्ञानमयइति । अर्थ । यहां पर भी विकारार्थ की परम्परा से आत्मा अर्द्ध जरतीय है ॥

च हेतु में है जिससे आनन्दमय को आनन्द का सम्बन्ध वेद ने उपदेश किया है । तिससे उपासना के लिये भी आन-न्दमय प्राधान्य नहीं है । और आनन्द प्रचुर कहिने में दुःख अल्प भी मत समझो अद्वितीय से । श्रुति । रसंह्येवायंलब्ध्वा-नन्दीभवतीति ॥ ——*——

(हिरण्यमयाधिकरण ॥ ७ ॥)

——*——

अन्तस्तद्धर्मोपदेशात् ॥ २० ॥

परमेश्वरस्यधर्माइहोपदिश्यन्तइति सौत्रोनुवादः ॥ छांदोग्यके प्रथमाध्यायमें उद्गीथउपासनाओं के बीच गौण उपास्योंका उप-देशकर फिर मुख्य उपास्यका उपदेश किया है वुह यहकि सूर्य के बीच मे हिरण्मय पुरुष है और ऋग्, साम उक्थ, यजुः, जो ब्रह्मधर्म हैं और ब्रह्म सब पापों से मुक्त अद्वितीय ईश्वर कहा है । यह अर्थ इन श्रुतियों से लिया है कि । सैवर्क्तत्सा-मतदुक्थन्तद्यजुस्तद्ब्रह्मेति उदेति ह वै सर्वेभ्यः पाप्मभ्यइति । अथयएषोन्तरादित्येहिरण्मयः पुरुषोदृश्यते इत्य ादि मेस इ

संशय है कि विद्या कर्म की अतिशय से बड़ा होके सूर्यादि में प्राप्त उपास्य कहा है या नित्य सिद्ध ईश्वर है फिर रूपी सुनने से संसारी है न कि ईश्वर नीरूप से निरूप का रूप उपासना के लिये मान लिया है। अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययमिति इस श्रुति से। और ईश्वर अपनी सत्ता से ही निराधार ठहिरा है। सभगवःकस्मिन्प्रतिष्ठितइति स्वेमहिम्नीति। इस वाकोवाक्य रूप श्रुति से। निर्विकार और अनन्त है। आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः इस श्रुतिसे। कभौर बिकारोंसे भी कहा है। सर्वकामःसर्वगन्धःसर्वरसइत्यादि श्रुति से। तात्पर्यार्थ है कि जो बाहिर गन्ध रसादि देखते हैं सो सब ईश्वर की सत्ताही है और न कि मृदु द्रुत कठिनादि वस्तु कुछ ही है तिससे ईशही सूर्य और नेत्र के बीच उपदिष्ट है॥

भेदव्यपदेशाच्चान्यः॥ २१॥

जो सूर्य में है उससे ईश्वर अन्य है इस भेद से सूर्य आधार और ईश्वर आधेय जान पड़ता है यह अर्थ इस श्रुति से लिया है कि। यआदित्येतिष्ठन्नादित्यादन्तरोयआदित्योनवेदयस्यादित्यःशरीरंयआदित्यमन्तरोयमयत्येषतेआत्मांतर्याम्यमृतइति। तिससे हिरण्मय ईश्वर है और न कि जीव देवतादि॥

(आकाशाधिकरण॥ ८॥)

आकाशस्तल्लिङ्गात्॥ २२॥

छान्दोग्य में शालावत्व नाम महर्षि ने प्रवाहण नाम रा-

जा से पूछा कि हे भगवन् जो सब का आधार और कारण है आप उसे हमें बताइये फिर उसने कहा कि आकाश है। अब क्या आकाश शब्द से जो भूतों में गिना आकाश सो है या ब्रह्म है यह संशय है। भूताकाश नहीं है क्योंकि आकाशही आकाश का कारण नहीं हो सक्ता है और ब्रह्म शब्द के बदले में आकाश शब्द इस हेतु से कहा कि ब्रह्म व्योम दोनों अनन्तता में बराबर हैं और वेद से आकाश शब्द ब्रह्म में और लोक से पांच भूतों में प्रसिद्ध है। यह अर्थ इस श्रुति से लिया है कि । अस्यलोकस्यकागतिरित्याकाश इति होवाचसर्वाणिहवाइमानिभूतान्याकाशादेवसमुत्पद्यन्तेआकाशं प्रत्यस्तंयंत्याकाशोह्येवेभ्योज्यायानाकाशःपरायणं इति ॥

पृथिवी अन्तरिक्ष दिव और सब लोकों से बड़ा है। श्रुति। ज्यायान्पृथिव्याज्ज्यायानंतरिक्षाज्ज्यायान्दिवोज्यायानेभ्यो लोकेभ्यः इति। कर्म फल देने को ईश्वरही समर्थ है ॥

श्रुति ॥ विज्ञानमानन्दंब्रह्मरातेर्दातुःपरायणमिति। आनन्त्य ब्रह्म का चिन्ह है। सएषवरोवरोयानुद्गीथःसएषो नन्त इति। श्रुति। ऋचोअक्षरेपरमेव्योमन्यस्मिन्देवाअधिविश्वेनिषेदुःसैषाभार्गवीवारुणीविद्यापरमेव्योमन्प्रतिष्ठिता इति। ईश्वर में ऋचा वेदही प्रमाण हैं। छान्दोग्य ॐकंब्रह्मखंब्रह्मेति। वृहदारण्य है कि खंपुराणमिति। अग्निरधीतेनुवाकं। इस में जैसे अग्नि शब्द लड़के का वाचक है तैसेही आकाश शब्द के पर्याय खादि शब्द भी ब्रह्महो को कहिते हैं आकाशोवैनामरूपयोर्निर्वहितातेयदन्तरातद्ब्रह्मेति। और भी अन्तवत्व दोष से शालावत्य पक्ष की निन्दा कर कुछ अनन्त कहिने की इच्छा से व्योम का ग्रहण किया है इसे सिद्ध हु-

आ कि आकाश शब्द से ब्रह्महो कहा है न कि भूताकाश ॥

———*○*———

(प्राणाधिकरण ॥ ९ ॥)

अतएवप्राणः ॥ २३ ॥

अतः । ब्रह्मलिङ्गादेव प्राणपद वाच्यं ब्रह्मास्ति आकाश वाक्य के अगिले वाक्य में प्रस्तोता नाम ऋत्विज् ने उषस्ति से पूछा कि प्रस्ताव नाम साम के भाग का देवता कौन है उसने उत्तर दिया कि प्राण है। सो क्या मुह के भीतर आता जाता वायु है या ब्रह्म है। लोक में सास को हो प्राण कहिते हैं तिससे वुही है यह मत कहो क्योंकि प्राण सोते पर सब इन्द्रियों के लय का स्थान है फिर प्राण के लय का स्थान कौन है इससे जो सब को लय का स्थान है सो ही ब्रह्म है। लोक से प्राण शब्द सास में रूढ है। और वेद से ब्रह्म में है और प्राण शब्द ब्रह्म परमाने से सर्व शब्द के अर्थ का सङ्कोच और व्यभिचार भी नहीं रहा है और सब भूतों में घुसना निकरना यह ब्रह्म का चिन्ह भी बना रहा। यह अर्थ इन से लिया है कि कतमासादेवतेतिप्राणइतिहोवाचसर्वाणिहवाइमानिभूतानिप्राणमेवाभिसम्विशन्तिप्राणमभ्युज्जिहते-सैषा देवता प्रस्तावमन्वायत्तेत्यादि यदावैपुरुषःस्वपितिप्राणं तर्हिवागप्येतीत्यादि सयदाप्रवुध्यतेप्राणादेवाधिपुनर्जायन्तेइत्यादि। अर्थ। स्वापकालमें प्राण वृत्ति कालय नहीं है और इद्रिय वृत्तियों का लय है और प्रबोध में इन्द्रिय वृत्तियों का उदय है जे लय उदय प्राण को ब्रह्म बताते हैं और ब्रह्म

कहने की इच्छा से ही प्राणोंका प्राण कहा है । श्रुति । प्राणस्यप्राणंप्राणबन्धनंहिसोम्यमनः इत्यादि । तिससे ब्रह्महो प्राण शब्द से कहा और न कि सास ॥

(ज्योतिरधिकरण ॥ १० ॥)

ज्योतिश्चरणाभिधानात् ॥ २४ ॥

ज्योतिः ब्रह्म कुतः पादकथनात् इत्यर्थः ।

छान्दोग्य के तीसरे अध्याय के बीच गायत्री विद्या में हृदय के छिद्रकी उपासना कहके कहा कि द्युलोक से परे प्रकाशमान वस्तु ब्रह्म है क्योंकि पहिले गायत्री खण्ड में एक पाद उसका सब भूत और तीन पाद अमृत रूप द्युलोक में कहे हैं ऐसा चार पाद ब्रह्म कहा है फिर वुही ब्रह्म प्रकृत है और ब्रह्मही का पद् शब्द से अनुकर्ष किया है तिससे ज्योतिः परब्रह्म है और नकि सूर्यादि यहां ज्योतिः शब्दार्थ ज्ञान है यह अर्थ इन श्रुतियोंसे लिया है कि । अथयदतःपरोदिवो ज्योतिर्दीप्यतेविश्वतःपृष्ठेषुसर्वतः पृष्ठेष्वनुत्तमेषूत्तमेषुलोकेष्विदं वावतद्यदिदमस्मिन्नन्तःपुरुषेज्योतिरिति । शांडिल्य विद्या में भी ब्रह्महो ज्योतिः शब्द से कहा है । श्रुति । ब्रह्मतस्मादिहज्योतिरिति । और कार्यों में भी ज्योतिः शब्द कहा है । श्रुति येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धइति वाचैवायंज्योतिषास्तेमनोज्योतिर्युषतामिति तमेवभांतमनुभांतिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभाति तदेवज्योतिषांज्योतिरायुर्होपासतेमृतमिति मन्त्र एतावानस्य महिमाततोज्यायांश्चपूरुषः पादोस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवीत्यादि ॥

छन्दोऽभिधानान्नेतिचेन्नतथाचेतोर्पण निगदात्तथाहिदर्शनम् ॥ २५ ॥

छन्दो वृत्तं अभिकथनात् न इति चेत् यदि न तथा चेत: चित्तं अर्पणं समाधानं निगदात् उक्तः तथाहि दर्शनं गायत्र्याख्यछन्दाद्वारेण तदनुगते ब्रह्मणि चित्तसमाधानमनेनब्राह्मणवाक्येननिगद्यतेइत्यर्थ: । गायत्री नाम छन्द के कहने से ब्रह्मज्योति: नहीं है सो मत कहो क्योंकि गायत्रीद्वारा ब्रह्म में चित्त लगाने के लिये कहा है। जैसा कि ऋग्वेद में देखा है कि ऋग्वेदी ब्रह्म को बड़े उक्थ में मन न करते हैं तैसेही गायत्री में जानो । यह अर्थ इससे है कि ।

यथैतंह्येवबह्वृचामहत्युक्थ्येमीमांसते । एतमग्नावध्वर्यव: । एतंमहाव्रतेछन्दोगा इत्यादि । कर्मठ आग में उपासते हैं । यथा अग्निमीलेपुरोहितमित्यादि ऋग्वेदे । अग्निमीडे इत्यादि साम्नि च । याज्ञिक यज्ञ में । जैसे । यज्ञोवैम इस श्रुति से ऐसेही अन्य ठौर जानो । इससे ज्योति: शब्द से ब्रह्महो कहा है नकि छन्द ॥ गायत्रीवाइदंसर्वंभूतंयदिदंकिंचेति यथा सर्वंखल्विदं ब्रह्मेति । गायत्रीशब्द से साक्षाद्ब्रह्म कहा है सख्या की बराबरी से जैसे छह अक्षर के पदों में गायत्री चतुष्पदा है तैसे ब्रह्म भी चतुष्पात् है इस पक्ष में ब्रह्महो कहा न कि छन्द: ॥

भूतादिपादव्यपदेशोपपत्तेश्चैवं ॥ २६ ॥

भूत पृथिवी शरीर हृदय जे चार पाद और वाक् प्राण जे दो मिला के गायत्री वर्णन की है यह भी कहिना ठीक

नहीं है क्योंकि गायत्री एक छन्द का नाम है फिर वह सब भूतों का आदि नहीं हो सक्ता है इस लिये गायत्री में घुसा चेतन सब कार्यों का कर्त्ता सम्भव है यह अर्थ इससे लिया है कि । भूत पृथिवी शरीर हृदयानिसैषाचतुष्पदाषड्विधागायत्री-तियद्वैतद्ब्रह्मेति पञ्चब्रह्मपुरुषाइतिचसुषुम्निषुब्रह्मपुरुषाः । हृदयमें चार ओर चारछिद्र हैं और एक ऊपर है यही ब्रह्म पुर श्रुतिने ध्यानार्थ कहा है ॥

उपदेशभेदान्नेतिचेन्नोभयस्मिन्नप्यविरोधात् ॥ २७ ॥

श्रुति में भेद कहा है तिससे ब्रह्म नहीं है किन्तु ज्योतिः है यह मत कहो क्योंकि एक वस्तु में भी भेद कहने से ब्रह्म में विरोध नहीं है । जैसे लोकमें आकाशका कल्पित भेद से भेद कहते हैं कि वृक्ष के आगे से पक्षी उड़ा और वृक्ष में से भी ध्यन है तैसेही द्युलोकसे और द्युलोक में कहा है । इन से यह अर्थ लिया है कि परोदिवः । अमृतन्दिवि । इन में पहिली पञ्चमी विभक्ति और दूसरी सप्तमी है किसी मत से गङ्गामें घोषके तुल्य लाक्षणिक दिवि आधार ब्रह्म का है सम्बन्ध असम्बन्धका भेद है यही भेद है ऐसे अविरोधसे ब्रह्मही ज्योतिश्शब्द से कहा है और न कि सूर्यादि ॥

(प्रतर्दनाधिकरण ॥ ११ ॥)

प्राणस्तथानुगमात् ॥ २८ ॥

प्राणः ब्रह्म अनुगमात् बोधनात् ॥

कौषीतकी में इन्द्र और प्रतर्दन के सम्बाद से जाना गया कि इन्द्र ने प्रतर्दन से कहा कि तू मुझ से वर मांग फिर उसने कहा कि मनुष्य को जो हित तम होवे सो मुजि को दे। फिर इन्द्र ने कहा कि मैं प्राण हूं और प्रज्ञात्मा हूं और जो प्राण है वुही आयुः है और जो आयुः है वुही अमृत है और जब तक देह में प्राण रहिता है तब तक आयुः है इस से तू मेरी उपासना कर। फिर इन्द्र के वाक्य में प्राण शब्द से ब्रह्म कहा है न कि प्राण वायु मात्र न देवतात्मा और इन्द्र का अहङ्कार और जीव कहा है। क्योंकि वाक्य में आगे पीछे देखने से प्राण शब्द का वाच्य ब्रह्म माने में हिततम वर आदि और आनन्द अजर अमर आदि का सम्बन्ध सम्भव हो सक्ता है तिससे प्राण पद वाच्य ब्रह्म है। यह अर्थ इससे लिया है कि प्राणोस्मिप्रज्ञात्मा।तंमामायुरमृतमुपास्वेति। अथखलुप्राणएवप्रज्ञात्मेदंशरीरंपरिगृह्योत्थापयतीति नवाचंविजिज्ञासीतवक्तारंविद्यात् अन्तेचसएषप्राणएवप्रज्ञात्मा।नन्दोजरोमृतइत्यादि ॥

नवक्तुरात्मोपदेशादितिचेदध्यात्मसंबन्धभूमाह्यस्मिन् ॥ २९ ॥

वक्तुः इन्द्रस्य आत्मो॰ स्वोपदेशात् प्राणो न ब्रह्म इति चेत् न अध्यात्मसम्बन्धस्य हिततमत्वादिलिङ्गस्य भूमाबाहुल्यं अस्मिन् अध्यायेस्तीतिपदार्थः ॥ अवागमना इस श्रुति से। भाषा इन्द्र ने अपनी उपासना नहीं करने को कही है आत्मयोग से और इस प्रकरण में ब्रह्म के बहुत चिन्ह है जैसे अयमात्माब्रह्मसर्वानुभूरित्यादि, इससे ब्रह्म का उपदेश करा

है नकि देवता का । यह अर्थ इससे लिया है कि जो मांविद नहवैतस्यकेनचकर्मणालोकामीयन्तइ यादि । जैसा मेरा लोम भी नहीं नष्टहुआ ब्रह्म बोधसे तैसा तेरा भी नाश नहीं है ॥

शास्त्रदृष्ट्यातूपदेशोवामदेववत् ॥ ३० ॥

जैसे तत्व मसीति इस शास्त्र को देख वामदेव ऋषि ने ऋग्वेदमें कहा कि मैंही मनु और सूर्य और कक्षीवान् हुआथा तैसेही इन्द्र ने कहा कि जो मैं ज्ञानरूप हूं तू उसको उपासना कर। यह अर्थ इससे लिया है कि अहम्मनुरभवं । इस ऋग्वेदके सूक्तसे वामदेव का मनोर्थ प्रकट है ॥

जीवमुख्यप्राणलिङ्गान्नेतिचेन्नोपासात्रैविध्यादाश्रितत्वादिहतद्योगात् ॥ ३१ ॥

जीवलिङ्गात्मुख्यप्राणलिङ्गात्त्रिविधोपासनंजीवोपासनं १ मुख्यप्राणोपासनं २ ब्रह्मोपासनं ३ जीवश्चमुख्यप्राणश्चतयोर्लिङ्गान्नप्राणोब्रह्मेतिचेत्न कुतःलिङ्गानांप्रतीकत्वेनब्रह्मोपासायोक्तेः भाषा। जीव और मुह की वायु इन्द्रियादि के चिन्ह प्रकट हैं इससे प्राण ब्रह्म नहीं है यह मत कहो क्योंकि बुद्धिप्राणादि उपाधियों के भेद से पृथक् २ ब्रह्म की ही उपासना के लिये कहे हैं इससे यह अर्थ लिया है कि सएषप्राणएवप्रज्ञात्मानन्दएषलोकपालइत्यादि ब्रह्म धर्म है। तिससे प्राण पद से प्रज्ञही कहा है और न कि मुह की वायु और इन्द्रियां और जीव इह इस अध्याय मे लिङ्ग विद्यमान होने से नप्राणेनना पानेनमर्त्योजीवतिकश्चन इतरेणातुजीवन्तियस्मिन्नेताउपाश्रिताविति श्रुतेः । आश्रितत्वात् जिस ब्रह्म मे धरे प्राणापान

हैं उसी से जीते हैं ॥

अथवा प्राण धर्म से प्रज्ञा धर्म से ब्रह्म धर्म से जो त्रिविध उपासन उपाधि दो के भेद से कहा सो एकही इष्ट है तिससे सिद्ध हुआ कि यह ब्रह्म वाक्य है ॥

इति श्रीयुगलताराचन्द्रवर्मणा कृतब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादः पूर्णः ॥

दूसरा अस्पष्टपाद है ॥

(मनोमयाधिकरण । १ ॥)

सर्वत्रप्रसिद्धोपदेशात् ॥ १ ॥

लोकेवेदेचप्रसिद्धमनोमयस्यकीर्तनमस्तीति ।

जो ब्रह्म सब वेदान्तों में प्रसिद्ध है सोही मनोमयादिधर्मों से शांडिल्य विद्या में उपासना के लिये उपास्य कहा है न कि जीव इन से यह अर्थ लिया है कि सर्वंखल्विदंब्रह्मतज्जलानितिशान्तउपासीत सक्रतुंकुर्वीतमनोमयःप्राणशरीरोभारूपइति । असङ्ग ब्रह्म पर वाक्य । अप्राणोह्यमनाःशुभ्रइति । सगुण पर वाक्य । अथखलुक्रतुमयःपुरुषोयथाक्रतु*रस्मिंल्लोकेपुरुषोभवति तथेतःप्रेत्यभवति ॥

विवक्षितगुणोपपत्तेश्च ॥ २ ॥

जो उपासना में उपादेय गुण सत्य सङ्कल्पादि कहे हैं ते परब्रह्म में युक्त हैं तिमसे मनोमय ब्रह्म है और न कि जीवादि । यअपहतपाप्मासत्यकामःसत्यसङ्कल्पइत्यादि । इससे उपास्य पर उपदिष्ट है ॥

---

* सङ्कल्प या ध्यान है ॥

अनुपपत्तेस्तुनशारीरः ॥ ३ ॥

और जीव में सत्य सङ्कल्पादि गुणों का असम्भव है तिससे मनोमयादि धर्मों से उपास्य नहीं है ॥ श्रुति । यत्कारणं सत्यसङ्कल्पआकाशात्माऽवाक्यनादरोज्यायान्पृथिव्याइत्यादि । जो गुणजीव में सम्भव नहीं है अवाकी इन्द्रियशून्य इत्यर्थः यद्यपि जीव ईश्वर दोनो देह में हैं तोभी जीव केवल देहही में है अन्यत्र वृत्ति के अभाव से और ईश्वर सर्वव्यापक सर्वत्र है जैसा कि ऋग्मन्त्र है । द्वासुपर्णा । ईश्वरविषयक वाक्य ज्यायान्पृथिव्याज्यायानन्तरिक्षादिति आकाशवत्सर्वगतश्चनित्य इत्यादि । तु शब्द निश्चयार्थ है ॥

कर्तृकर्मव्यपदेशाच्च ॥ ४ ॥

श्रुतिः । एतमितःप्रेत्याभिसंभवितास्मीति । एतं मनोमयादि गुणयुक्त उपास्य आत्माही प्राप्य कहा है । अभिसम्भवितास्मीति । शारीरं अर्थात् उपासकं । कर्तृत्वेन । अर्थात् प्रापक कहा है । प्राप्त होता है उपास्य उपासक भाव भी भेदमें बन सक्ता है इससे शारीर मनोमयादि गुणयुक्त नहीं है ।

शब्दविशेषात् ॥ ५ ॥

विभक्ति के भेद से मनोमयादि द्वारा जीव से अन्यही उपास्य है । यथा व्रीहिर्वायवोवाश्यामाकोवाश्यामाकतंडुलोवैवमयमन्तरात्मन्पुरुषोहिरणमय इति । इसमें शारीर आत्माका वाचक शब्द सप्तम्यंत है । जैसे अन्तरात्मनिति । और इस से अन्यपुरुष प्रथमान्त मनोमयादि विशिष्ट आत्मा का वाचक है जैसे पुरुषोहिरण्मय इत्यादि इससे दोनो का भेद है ॥

स्मृतेश्च ॥ ६ ॥

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुनतिष्ठतीति। इससे भी हृदय में जीव से अन्य ईश्वर उपास्य है॥

अर्भकौकस्त्वात्तद्व्यपदेशाच्चनेतिचेन्ननि-चाय्यत्वादेवंव्योमवच्च ॥ ७ ॥

अर्भकं वाल्यं अल्पंवा ओको नीडं हृत्स्थानं निचाय्यत्वा-देव हृत्पुण्डरीके द्रष्टव्यः वा उपास्यः व्योमवत् यथा सर्वगत-मपि सत् व्योमसूचीपाशाद्यपेचयार्भकौकोऽणीयश्चव्यपदिश्यते इति। एवमेव ब्रह्मापि। धानयव से भी छोटा कहा है। अ-णीयान्व्रीहेर्वायवाद्देति। आराग्रमात्र इति इश्वरही जीव यहां कहा है जैसे सब पृथिवी का पति अवधिपति कहाता है। वालक के हृदयसा और धान जो से छोटा इत्यादि उपाधि-यों के भेद से ब्रह्मउपासना के लिये कहा है नकि स्वरूप से जैसा अनन्त व्योम घटाकाशमठाकाशादि से छोटासा कहा है। इससे एषमेआत्मान्तर्हृदय इति॥

संभोगप्राप्तिरितिचेन्नवैशेष्यात् ॥ ८ ॥

सर्वगतब्रह्म का सब प्राणियों के हृदय में संवन्ध से और चेतनरूप से और एकत्व से और शरीर के अभेद से सुख दुःखादि की प्राप्ति सम्यक् हो अन्य संसारीके न होने सेना-न्यतोस्ति विज्ञातेति इससे। फिर सोपाधिक माने से उपाधि धर्म दुःखादि की प्राप्ति न होगी क्योंकि उपाधि बिम्ब में न-हीं होती है तिससे ब्रह्म में भोग की गन्ध भी नहीं है जीव ब्रह्म का भेद मिथ्याज्ञान से और सत्यज्ञान से अभेद है इस से। अनश्नन्नन्योभिचाकशीति। कर्त्ता भोक्ता धर्माधर्मसाधन सुख दुःखादिमान् एक है और दूसरा अपहतपाप्मादिमान् है

इसविशेष अर्थात् भेदसे जो सम्बन्ध मात्रहीसे कार्य होता है तो व्योमादि को भी दाहादि होना चाहिये। सर्वगतता ने कात्म वादी को भी उक्त चोद्य परिहार समान है और जो शास्त्र जीव पर की एकता कहते हैं वे एकता के द्वारा संयोग की निवृत्ति भी करते हैं। जैसे, तत्वमसि, अहंब्रह्मास्मीत्यादि। जैसे, किसी ने व्योम को मलिन कहा तो क्या वह मलिन-होसक्ता है तिससे वेद में जीव उपास्य नहीं कहा है किन्तु-ब्रह्मही तैसे मिथ्या ज्ञानसे भोग और सम्यक् ज्ञानसे ऐक्य है यही विशेष है तिससे ईश्वर में भोग गन्ध भी नहीं कल्प सक्ते हो॥

——*○*——

(अत्ताधिकरण॥ २॥)

——*——

अत्ताचराचरग्रहणात्॥ ९॥

कठवल्ली में सुना है कि जिसके ब्राह्मण क्षत्रिय भात और मृत्यु दाल है वुह जहां है उसको कौन ऐसे जानता है कि ईश्वरही सर्व भक्ता है क्योंकि, अग्निरन्नाददृति, इस श्रुति से और लौकिक प्रसिद्धि से अग्निही सर्वात्ता है अथवा तयोरन्य इस श्रुति से अत्ता जीव है न कि ईश्वर है यह मत कहो क्योंकि अनश्नन्निति इस श्रुति ने कर्म फलका भोग वारण किया है न कि विकार संहार तिससे विकारमात्र का संहार ईश्वर मेंही है यस्यब्रह्मचक्षत्रञ्चोभेभवतओदनः मृत्युर्यस्योपसेचनंकइ-त्यावेदयत्रसइति। लोक वेदमें अग्निजीव ईश्वर तीनों भक्षक प्रकट हैं अग्नि जीव सबके भक्षक नहीं हैं असम्भवसे और ईश्वर कर्म फलों को छाड़ सब स्थावर जङ्गम विकार जात का

भक्षक संहर्ता है॥

प्रकरणाच्च ॥ १० ॥

ईश्वर जन्म मरण रहित है इस प्रकरण से संहर्त्ता ईश्वर ही है। यह अर्थ इससे लिया है कि नजायतेम्रियतेवाविपश्चितेत्यादि। और प्रकृतही का ग्रहण न्याय्य है। और दुर्विज्ञानत्व भी परमात्मा का लिङ्ग है। कइत्थावेदयत्रसःइत्यादि इससे अत्ता ईश्वरही है॥

(गुहाधिकरण ॥ ३ ॥)

गुहांप्रविष्टावात्मानौहितद्दर्शनात्॥ ११ ॥

कठवल्ली में सुना है कि सुकृत का फल नर देह है और वुही परब्रह्म की प्राप्ति का स्थान है विद्या शमादि के सम्भव से। फिर देह में या हृदय में ब्रह्म जीव ठहिरे हैं और कर्म फल के पाता है और न कि बुद्धि जीव हैं। जड़ और अजड़ के विरोध से जड़ बुद्धि सुकृत पान नहीं कर सक्ती है चेतन क्षेत्रज्ञ कर सक्ता है एक छत्री अन्य अछत्री इनको देख कह शक्ते हैं कि छत्री चलते हैं उपचार से। जैसे तैसे जीव पाता और ईश अपाता दोनों सङ्ग से पाता कहे हैं तिससे जीव ईश हैं या जीव पीता ईश पिवाता है। छाया और आतप की नाई। और जीव हृदय में प्रत्यक्ष से और ब्रह्म श्रुति से दिखाता है। गुहाहितङ्गह्वरेष्टंपुराणंयोवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन्। आत्मानमन्विछगुहांप्रविष्टमिति। जैसे। लोक में इस गौ का दूसरा लायो यह कहिने से न घोड़ा

या भैंसा लाता है किन्तु गौ ही लाता है तिससे चेतन जीव ब्रह्म सम स्वभाववाले हैं और न कि विषम स्वभाववाले जड़ चेतन बुद्धि जीव हैं । ऋतंपिबन्तौसुकृतस्यलोके । गुहांप्रविष्टौपरमेपरार्द्धे छायातपौब्रह्मविदो वदन्तिपञ्चाग्नयोयेचत्रिणाचिकेताइति ॥

विशेषणाच्च ॥ १२ ॥

जीव मार्ग के पार पहुंचानेवाला प्रापक है विष्णु का स्थान पहुंचनके योग्य प्राप्य है फिर इस प्राप्य प्रापकभावसे दोनों विशेषण हैं और ईश्वरही की महिमा जानके शोकसे छुटता है श्रुति सोध्वन:पारमाप्नोतितद्विष्णो:परमंपदमित्यादि। इससे सिद्ध हुआकि गंता और गंतव्य दोनों चेतन जीव ब्रह्मही हैं और न कि जड़ चेतन बुद्धि और जीव है और पैंगीरहस्यब्राह्मणमेंद्वासुपर्णा । इसका अर्थ बुद्धिजीव कहा है न कि जीव ईश्वर इससे ऐसे मन्त्र इस अधिकरण के योग्य नहीं है ॥

(उपकोसलाधिकरण ॥ ४ ॥)

अन्तरउपपत्तेः ॥ १३ ॥

छांदोग्य के चौथे अध्याय में सत्य काम नाम गुरु ने उपकोसल नाम शिष्य से कहा कि जो आंख में पुरुष दिखाता है सो अमृत अभय ब्रह्म है क्योंकि अमृतादि गुणों का सम्भव ब्रह्म मे हो है और न कि छाया जीव देवता में है। इससे यएषोन्तराक्षिणिपुरुषोदृश्यतेएषआत्मेतिहोवाचैतदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति । इससे अन्तर ईश्वर उपपन्न है। एतंहि-

सर्वाणिवा*मान्यभि?संयन्ति एषउएव ??वामनीरेषहिसर्वाणि-वामानिनयंतिएषउ एव**भामनीरेषहिसर्वेषुलोकेषुप्रभातीति ईश्वर है ॥

स्थानादिव्यपदेशाच्च ॥ १४ ॥

ईश्वर के स्थान रूप नामादि कल्पना से बहुत कहे हैं तिससे नेत्र में ईश्वर है । श्रुति । य:पृथिव्यांतिष्ठन्नित्यादि । नामधरने में और रूप में । श्रुति । तस्योदितिनामसहिरण्यश्मश्रुरित्यादि ॥

सुखविशिष्टाभिधानादेवच ॥ १५ ॥

जो सुख रूप ब्रह्म पहिले वाक्य में कहा था उसी को नेत्र में उपासना के लिये कहा है तिससे नेत्राधार ईश्वर है । पहिला वाक्य । प्राणोब्रह्मकंब्रह्मखंब्रह्मेति । ऐसा अग्नि का वाक्य सुनके उपकोसल ने कहा कि जाना मैं ने प्राण ब्रह्म है और कं और खं को नहीं जाना है । उत्तरवाक्य यद्वावकंतदेवखंयदेवखंतदेवकमिति ॥

जो ख शब्द विशेषण क शब्द का न होता तो क शब्द का अर्थ विषयेंद्रियजन्यसामय अर्थात् बिनाशी सुख होता और जो क शब्द ख शब्द का विशेषण न होता तो ख शब्द का अर्थभूताकाश होता और इतरेतर विशेषण से सुखात्मक ब्रह्म कहा है और गार्हपत्यादि । अग्नि अपनी २ महिमा को कहिके फिर कहा कि हे सौम्य तुम से अग्नि विद्या और आ-

* कर्मफलानि ॥ ? उत्पद्यन्ते ॥

?? कर्मफलदाता ॥ ** सर्वार्थप्रकाशक ॥

त्मविद्या का उपसंहार कर पहिले कहे ब्रह्म को ही जताती हैं यथा पुष्करपलाशआपोनश्लिष्यन्तेएवमेवंविदिपापकर्मन-श्लिष्यत इति । क सुख का नाम निरुक्ति में है ॥

श्रुतोपनिषत्कगत्यभिधानाच्च ॥ १६ ॥

जो सगुण ब्रह्मोपासक है उसको जो गति श्रुति में प्रसिद्ध है तिसका इस सूत्र में चिन्ह कहा है यह सूत्रार्थ है। अथोत्तरेणतपसाब्रह्मचर्येणश्रद्धयाविद्ययात्मानमन्विष्यादित्यमभिजायन्ते एतद्वै प्राणानामायतनमेतदमृतमभयमेतत्परायणमेतस्मान्नपुनरावर्तन्त इति । अथ यदुचैवास्मिञ्छव्यं कुर्वन्ति यदुचनार्चिषमेवाभिसंभवति इस उपक्रम से आदित्याच्चन्द्रमसं चन्द्रमसोविद्युतं तत्पुरुषोऽमानवः स एतान्ब्रह्मगमयति एषदेव पथाब्रह्मपथ एतेन प्रतिपद्यमाना इमं मानवमावर्तं नावर्तन्त इति । सारार्थ । सगुणब्रह्मज्ञानी अर्चिरादि मार्ग से ब्रह्मलोक में जाता है तिससे भी नेत्र में ईश्वरही है। इससे । तेर्चिषमभिसंविशन्तीति । और नकि कोई उपासक उपासना के काल में अन्य पुरुष को बैठाके अक्षिपुरुष की उपासना करता है तिससे अक्षिस्थब्रह्म निश्चित है ॥

अनवस्थितेरसंभवाच्चनेतरः ॥ १७

और छायात्मा देवता जीव इनमें से एक का भी आंख में संभव नहीं है क्योंकि दूसरे पुरुषके समीप के विना आंख में छायापुरुष नहीं रहि सक्ता है । और अमृतादिगुणोंका भी छाया में संभव नहीं है और मरण नाश सुनने से देवता भी नहीं है अमर चिरकाल रहने से हैं ऐश्वर्य ईश्वराधीन है न स्वाभाविक है जैसा कि । भीषास्माद्वातः पवते भीषोदेतिसूर्यः

भीषास्मादग्निश्चेन्द्रश्चमृत्युर्धावति पञ्चमः इति मन्त्रवर्णं से और अविद्या से जीव में समत्व भयत्व आरोपित है तिससे जीव भी नहीं है और अमृतादि गुणों का जीव में ठिकाना नहीं है तिससे उसकी उपासना की क्या चर्चा है। भव्यं सेवेत बुद्धिमान् इस न्याय से भी अचिन्त्य ईश्वरही उपास्य कहा है तिसस ईश्वरही अचिन्त्यस्थान जानो। यह उपदेश प्ररोचनार्थ है

(अन्तर्याम्यधिकरण ॥ ५ ॥)

अन्तर्याम्यधिदैवादिषुतद्धर्मव्यपदेशात् ॥ १८ ॥

अन्तर्यामी परात्मा अधिदैवादिषु पृथिव्यादिषु भवितुमर्हतिकुतः तत् तस्य परात्मनःधर्माणांगुणानांव्यपदेशात्कथनात् भाषार्थः, बृहदारण्य के पचये अध्याय में याज्ञवल्क्य ने उद्दालक से कहा कि पृथिव्यादि में अन्तर्यामी ईश्वर है क्योंकि पृथिवी में रहिता है पर उसको पृथिवी नहीं जानती है फिर ज्ञान और अमृतादि गुणों का उसी में सम्भव है। इससे यइमञ्चलोकंपरञ्चलोकंसर्वाणिभूतानियोंतरोयमयति । फिर कहा कि यःपृथिव्यांतिष्ठन्पृथिव्याअन्तरोयंपृथिवीनवेदयस्यपृथिवीशरीरं यःपृथिवीमन्तरोयमयत्येषतेआत्मांतर्याम्यमृतइत्यादि। ऐसे वाक्यों में न कि अधिदैवादि का अभिमानी देवता या योगी याअपूर्वसंज्ञा है किन्तु परमात्मा है अन्तर्यामी अमृतत्व गुण से ॥

नचस्मार्तमतद्धर्माभिलापात् ॥ १९ ॥

कपिलादि की स्मृति से सिद्ध प्रधान अन्तर्यामी नहीं हो सकता है क्योंकि द्रष्टा श्रोतादि गुणों के कहिने से फिर प्रधान में उन गुणों का असम्भव है गौण भी नहीं है मुख्य के संभव होने से गौण मानना अनुचित है। इससे, अदृष्टोद्रष्टा ऽश्रुत:श्रोताऽमतोमन्ताऽविज्ञातोविज्ञातेति। यद्यपि प्रधान में अदृष्टत्वादि व्यपदेश संभव है तथापि द्रष्टृत्वादि व्यपदेश संभव नहीं है क्योंकि उनने प्रधान अचेतन माना है ॥

शारीरश्चोभयेपिहिभेदेनैनमधीयते ॥ २० ॥

कारव और माध्यं दिन जे दोनों जीव से अलग ईश्वर को पढ़ते हैं तिससे जीव भी अन्तर्यामी नहीं है और न प्रधान है किन्तु अन्तर्यामी ईश्वर है। कारव योविज्ञानेतिष्ठन्निति माध्यन्दिन: यआत्मनितिष्ठनात्मानमन्तरोयमयतीति। अणु से अणु और महान् से महान्, पृथिवी व्योमादि सब वस्तु में अन्तर्यामी को कहिने से परात्माही सर्वव्यापक है। अन्तर्यामी है। और न कि विज्ञानमय शारीर है ॥

——

(भूतयोन्यधिकरण ॥ ६ ॥)

अदृश्यत्वादिगुणकोधर्मोक्तेः ॥ २१ ॥

मुण्डक में जो भूतों का कारण सुना सो ब्रह्म है सर्व-

श्यादि गुणों के कहिने से। यहां योनि निमित्तोपादान कारण का नाम है। श्रुति। अथपरायययातदक्षरमधिगम्यते यत्तद्द्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षु:श्रोत्रन्तदपाणिपादं नित्यंविभुंसर्वगतंसुसूक्ष्मंतदव्ययंयद्भूतयोनिंपरिपश्यन्तिधीराइति। अथर्व। अपर ऋगादि विद्या है कर्म के बोधन से और ब्रह्म बोध से परब्रह्म विद्या है। अद्रेश्यं अदृश्य है। प्रधान पक्ष में तीसरी प्रधानविद्या भी कहिनी चाहिये थी। यह ब्रह्मविद्या अथर्वा नाम जेठे बेटेसे कही थी। यहां भूत योनि प्रधान और जीव है जैसे मकरी से जाला और पृथिवी से औषधि और देह से केशलोमादि होते हैं तैसेही प्रधान से भूतों का जन्म है यह ठीक नहीं है क्योंकि ईश्वरही भूतयोनि धर्मयुक्त सुना है। य: सर्वज्ञ:सर्वविद्यस्यज्ञानमयंतप: तस्मादेतद्ब्रह्म नामरूपमन्नंचजायते इति। तिससे अदृश्यादि गुणी ईश्वर ही भूतयोनि है॥

प्लवाह्येतेऽदृढायज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्म्मएतच्छ्रेयोयेभिनन्दन्तिमूढाजराम्रत्युन्तेपुनरेवापियंतीति। विरक्त को पर विद्या में अधिकार है जैसे परीक्ष्यलोकान्कर्मचितांब्राह्मणोनिर्वेदमायान्नास्त्यकृत:कृतेनेति। स्थूल पृथिवी दृष्टान्त है तैसे दार्ष्टान्तिक भूत योनि स्थूल नहीं मानते हैं॥

विशेषणभेदव्यपदेशाभ्यांचनेतरौ ॥२२॥

इतश्चपरेशएवभूतयोनिर्नशारीर:प्रधानंचेति॥

जीव भूतों का कारण नहीं हो सकता है क्योंकि अमूर्त पुरुष बाहिर भीतर इत्यादि विशेषणों से व्यापक ब्रह्मही कहा है न कि परिच्छिन्न जीव। इससे दिव्योह्यमूर्त:पुरुष:स-

वाह्याभ्यन्तरोह्यजःअप्राणोह्यमनाः शुभ्रइति । और प्रधान भी भूतों का कारण नहीं हो सक्ता है क्योंकि प्रधान से भूतों का कारण अलग कहा है । इससे अक्षरात्परतःपरइति अक्षरं अव्याकृतं नामरूपबीजशक्तिरूपं भूतसूक्ष्ममीश्वराश्रयन्तस्यैवोपाधिभूतंसर्वस्मात्‌विकारात्परोयअविकारस्तस्मात्परतःपर इतिभेदेनव्यपदेशात्परमिहविवक्षितन्दर्शयतीतिसंस्कृतमाश्रितम् ॥

रूपोपन्यासाच्च ॥ २३ ॥

भूतयोनिका रूप सब विश्व कहा है तिससे भूतयोनि ईश्वरही है । इनसे । पुरुषएवेदम्विश्वङ्कर्मेति अग्निर्मूर्द्धाचक्षुषीचन्द्रसूर्यौदिशःश्रोत्रेवाग्विवृत्ताश्चवेदावायुःप्राणोहृदयम्विश्वमस्यपद्भ्यांपृथिवीह्येषसर्वभूतान्तरात्मेति । आग सिर नेत्र चन्द्र सूर्य दिशा कान वाणी वेद वायु प्राण हृदय बिश्व पाद पृथिवी जिसकी सोही सब भूतों का अन्तरात्मा है । मन्त्र । हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रेभूतस्य जातः पतिरेकआसीत्‌सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवायहविषाविधेम ॥

वृत्तिकार मत में यह रूप का कथन नहीं है किन्तु जायमान प्रपञ्च का बर्णन है आगे पीछे सृष्टि का बर्णन है तिससे बीच में भूतयोनि के रूप का वर्णन अनुचित है । इससे एतस्माज्जायतेप्राणोमनःसर्वेन्द्रियाणिचखंवायुर्ज्योतिरापःपृथिवीविश्वस्यधारिणीति । आगे पीछे । तस्मादग्निसमिधोयस्यसूर्यइत्यादि । अतश्चसर्वाओषधयोरसाश्च । यह अन्त में कहा है इस पक्ष में सर्व रूपोपन्यास ईश्वर कीप्रतिपत्ति के लिये है ॥

——*⊂⊃*——

(वैश्वानराधिकरण ॥ ७ ॥

वैश्वानरःसाधारणशब्दविशेषात् २४

वैश्वानरःसर्वात्मपुरुषइत्यर्थः ॥

छान्दोग्य से वैश्वानर विद्या में वैश्वानर की उपासना सुनी है यस्त्वेतमेवंप्रादेशमात्रमभिविमानमात्मानंवैश्वानरमुपास्ते। संशय जाठराग्नि या भूताग्नि या भूताग्न्यभिमानी देवता या शरीर या परमेश्वर वैश्वानर है आत्मा और वैश्वानर दोनों साधारण शब्द हैं वैश्वानरशब्द तीन में साधारण है आत्मशब्द दो में साधारण हैं तो भी विशेष है ॥ सब पापों की हानि सुन्ने से। प्राचीनशालसत्ययज्ञेन्द्रद्युम्नजनबुडिल इन पांच ने उद्दालक से पूछा उसने मने करा तो छहाने अश्वपति कैकेय राजा से पूछा उसने सब की परीक्षा कर द्यु सूर्य वायु गगन वारि पृथिवी इन को कहा तो उसने सब की निन्दा कर ईश्वर बताया था तिससे ईश्वर वैश्वानर है ॥

स्मर्यमाणमनुमानंस्यादिति ॥ २५ ॥

जो स्मृतियों से सुधि दिया गया रूप ईश्वर का सो बोधक लिङ्ग है। द्यांमूर्द्धानंयस्यविप्रावदन्तीत्यादि। अर्थ। ब्राह्मण द्युलोक को सर्वात्मक पुरुष का सिर कहिते हैं। खंवैनाभिं चन्द्रसूर्यौचनेत्रेदिशःश्रोत्रेविद्धिपादौक्षितिञ्च । सोऽचिन्त्यात्मा सर्वभूतप्रणेता । यस्याग्निरास्यंद्युमूर्द्धाखंनाभिश्चरणौक्षितिः। सूर्यश्चक्षुर्दिशःश्रोत्रेतस्मैलोकात्मनेनमः इत्यादि स्मृति पहिले अपना मूल भूत वेद का अनुमान कराते हैं फिर ईश्वर को ही वैश्वानर बताते हैं ॥

शब्दादिभ्योंतःप्रतिष्ठानाच्चनेतिचेन्न-तथादृष्ट्युपदेशादसंभवात्पुरुषमपिचैनमधीयते ॥ २६ ॥

संस्कृतमधिकृत्य । वैश्वानराग्निशब्दादिभ्यः अन्तः अन्तरस्थानात् न वैश्वानरईश्वरः इति चेन्न कुतः तथादृष्ट्युपदेशात् । जाठरे ईश्वर दृष्ट्युपदेशात् असंभवात् द्युमूर्द्धत्वादेर्जाठरेसम्भवाभावात् एनं पुरुषं अधीयते पठन्ति वाजसनेयिनइतिशेषिणार्थः येतुपुरुषविधमपीतिसूत्राङ्गम्पठन्तितेषामेषोर्थः केवल जाठरपरिग्रहेपुरुषेऽन्तःप्रतिष्ठितं केवलंस्यात्नपुरुषविधत्वमिति शब्दः वैश्वानरशब्दानपरेसंभवतिअर्थान्तरेरूढत्वात् तथाग्निशब्दः सएषोग्निर्वैश्वानर इत्यादि पुरुष के जाठर में भी सुना है पुरुषेंतःप्रतिष्ठितंवेदेति और मूर्द्धैवसुतेजा यहां परमात्मा वैश्वानर है । तो यह निर्णय कैसे होगा क्योंकि दोनोंमें विशेष भान हो तो परमेश्वर वैश्वानर हो न जाठर अथवा भूताग्नि का सम्बन्ध सर्वत्र है तिससे वह है । जैसे योभानुनापृथिवींद्यामुतेमामाततानरोदसीअन्तरिक्षमिति नतथादृष्ट्युपदेशादिति शब्दादि कारणों से परमेश्वर का निषेध युक्त नहीं है पर दृष्टि जाठर वैश्वानर में कही है । जैसे । मनोब्रह्मेत्युपासीत् अथवा जाठर उपाधिवाला ईश्वर देखने को कहा है । जैसे । मनोमयःप्राणशरीरोभारूपइत्यादि असम्भवात् द्युमूर्द्धैवसुतेजा इन विशेषणों का जाठर में असम्भव है जाठर मानने से केवल पुरुष के भीतर ठहिरा न पुरुष और वाजसनेयि वैश्वानर को पुरुष पढ़ते हैं । सएषोग्निर्वैश्वानरोय त्पुरुषः स

योहैतमेवमग्निम्वैश्वानरम्पुरुषविधम्पुरुषेंतः प्रतिष्ठितम्वेदेति । ईश्वर तो भीतर बाहिर सब हो सक्ता है ॥

भावार्थः । वैश्वानर अग्नि शब्दादि के भीतर रहिनेवाले को कहिते हैं तिससे वैश्वानर ईश्वर नहीं है सो नहीं है किन्तु पेट की आग में ईश्वर बुद्धि कही है और जो पेट की आगही वैश्वानर है तो उसमें द्युलोकादिका सिरादि अङ्ग होना सम्भव नहीं है और वाजिसनेयिशाखावाले वैश्वानर को पुरुष पढ़ते हैं सूत्र में आदि शब्द से हृदय को अग्नि चेता का कल्पन है । श्रुति । सएषोग्निवैश्वानरइत्यादि ॥

अतएवनदेवताभूतंच ॥ २७

द्युमूर्द्धत्वादिकल्पनादेवेत्यर्थः देवता आदित्यः भूतं भौमाग्निरितिपदार्थः । भाषा । उक्त हेतु से सूर्य और आग वैश्वानर नहीं हो सक्ते हैं क्योंकि उन में आत्मा का असम्भव होने से ॥

साक्षादप्यविरोधंजैमिनिः ॥ २८ ॥

पहिले जाठराग्निप्रतीक वा जाठराग्न्युपाधिक ईश्वर उपास्य कहा था अबतो दोनोंसे मुक्त साक्षात्परमेश्वर उपास्य है इस में कछु बिरोध जैमिनि नहीं मानते हैं योगवृत्तिसे ॥

अभिव्यक्तेरित्याश्मरथ्यः ॥ २९ ॥

जो हृदयादि स्थानों में वितीभर ईश्वर श्रुति से अभिव्यक्त सुना है सो स्थानकी अपेक्षा से अभिव्यज्यमान है और न कि स्वरूप से । क्योंकि अतिमात्र होने से । और उपासकों के कल्याणार्थ प्रादेशमात्र परिमाण कहा है यह आश्मरथ्य का मत है ॥

अनुस्मृतेर्बादरिः ॥ ३० ॥

जो ईश्वर अप्रादेश मात्र है उसको प्रादेशमात्रअनुस्मरणके लिये कहा है श्रुति ने जैसे सेर से तोले धान सेरभर कहाते हैं तैसे ईश प्रादेशमात्र हृदय कोअपेक्षा से है ॥ यह बादरि का मत है ॥

सम्पत्तेरितिजैमिनिस्तथाहिदर्शयति ॥ ३१ ॥

सम्पत्तेरुपास्तेरित्यर्थः ब्राह्मण प्रादेशमात्रमिहवैदेवाःसुविदिताइत्यादि ॥ सिर से ठोडी तक अङ्गों में अपने अङ्गोंपर हाथ धर२ राजा ने प्राचीनशालादि से वैश्वानर कहा है सो उपासनाके लिये प्रादेशमात्र ईश्वर कहा है सर्वशाखा प्रत्यय से यह जैमिनि का मत है ॥

आमनन्तिचैनमस्मिन् ॥ ३२ ॥

संस्कृतमाश्रित्य जावालामूर्द्धचिवुकान्तरालेपीश्वरंपठन्ति भाषाभणिति । जावालसिर और ठोडीके बीच ईश्वर के द्युप्रभृति सब अङ्गों की कल्पना करते हैं यह उपास्य श्रवणादि से सव्य है । अविमुक्तवद्ध जीव के स्वरूप में और ध्यानादि से मन रोकने के लिये और उपासकों को ब्रह्मलोक में पहुंचाने के लिये ईश विमान है मान के वियोग से। और सब विश्व का कारण होने से अभिमिमीता है । श्रुति । यएषोनन्तोव्यक्तआत्मासोविमुक्तेप्रतिष्ठित इत्यादि ॥

श्रुति का अर्थ लिखता हूं सो विमुक्त किस में स्थित है उत्तर । वरणा और नासी के बीच में स्थित है । फिर कौन

बरणा और कौन नासी है। उत्तर सब इन्द्रियों के पापों को बारण करे सो बरणा और नाश करे सो नासी है। फिर पूछा कि इनका स्थान कहां है। उत्तर। भौंह और नाक की सन्धि है सोही द्युलोक और पर की संधि है तिससे युक्त है परमेश्वर में वितीभर का सुनना इति। तिससे वैश्वानर और अग्नि दोनों शब्द ईश्वरही के बाचक हैं॥

इति श्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणा कृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये प्रथमाध्यायस्यद्वितीयःपादःपूर्णः॥

———*○*———

तीसरा ज्ञेयलिङ्गपाद॥

(द्युभ्वाद्यधिकरण॥ १॥)

द्युभ्वाद्यायतनंस्वशब्दात्॥ १॥

संस्कृतमाश्रित्य। द्यौश्चभूश्चद्युभुवौस्तस्तावादिर्यस्यतदिदंद्युभ्वादि तस्यायतनमाधारो ब्रह्मास्तिकुतः स्वशब्दादात्मशब्दादित्यर्थः। भाषार्थ। मुण्डक से सुना है कि जिस आधार में द्युलोकादि सब बस्तुधरी है उस आत्मा को जानों और सब अनात्मतर्कादि विद्याओं को छाड़ो क्योंकि वे मुक्ति का कारण नहीं है फिर सब का धार ब्रह्म है ब्रह्म बाचक आत्मशब्द कहिने से। इससे यस्मिन्द्यौःपृथिवीचांतरिक्षमोतंमनःसहप्राणैश्चसर्वैस्तमेवैकंजानथआत्मानमन्यावाचोविमुञ्चथामृतस्यैषसेतुरिति। सेतु यहां पर ब्रह्म या अर्थान्तर है अर्थान्तरस्मार्त प्रधान है ब्रह्म अनन्त अपार सुन्ने से धारणार्थक है न

कि पारवान् है षिञ् बन्धन कर्मा धातु से सेतु बना है और वायुर्वैगौतमतत्सूत्रंवायुनावैगौतमसूत्रेणायञ्चलोकःपरश्चलोकःसर्वाणिचभूतानिसंदृ*ब्धानिभवन्तीति। इससे विश्व का विधारक वायु कहा है। जीव सब का भोक्ता है। इससे भोग्य पात्र का स्थान है। छान्दोग्य में ब्रह्म स्थान सुना है कि तन्मूलासोम्येमाःसर्वाःप्रजाःसदायतनाःसत्प्रतिष्ठाइति। एक रस है ब्रह्म न कि वृक्ष सा बहु विधज्ञेय है। जैसे। मृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यतीति। ऐक्य प्रपञ्च के विलापनार्थ है न कि अनेक रूप रस ब्रह्म कहिने के अर्थ है। जैसे, सर्वंखल्विदंब्रह्मेति। ब्रह्म स्वरूप जताने के लिये श्रुति है कि जैसे, नोन का ढेला भीतर बाहिर एक रस है तैसेही ब्रह्म सर्वत्र ज्ञानघन है। श्रुति। सयथासैंधवघनोऽनन्तरोऽबाह्यःकृत्स्नोरसघनएवैवं वा अरेयमात्मानन्तरोऽबाह्यः कृत्स्नः प्रज्ञानघनः इति। और सेतु शब्द से सांख्य प्रधान लेते और वेदान्ती अनन्त अपार ब्रह्म लेते हैं। अन्य मत में एक का ज्ञान आत्मज्ञान है और वाग्विमोचन अमृत का साधन हैइससे द्युभ्वादि का स्थान ब्रह्म से अन्य है॥

मुक्तोपसृप्यव्यपदेशात् ॥ २ ॥

मुक्तैरुपसृप्यंप्रत्यक्त्वेनप्राप्यंयद्ब्रह्मतस्याचोक्तेरितिसूत्रार्थः ॥

भाषा। जिससे रागद्वेषादि शून्य मुक्त ब्रह्म को ही प्राप्त होता है तिससे आत्म शब्द ब्रह्मवाचक है और न कि प्रधानादि। श्रुति। विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तःपरात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यमिति। अर्थ। ज्ञानी नाम रूप से छुट के सब से श्रेष्ठ

* ग्रथितानि॥

ब्रह्म को पहुंचता है। श्रुति॥

यदासर्वेप्रमुच्यन्तेकामायेस्यहृदिश्रिताः अथमर्त्योमृतोभवत्यत्रब्रह्मसमश्नुतेइत्यादि। श्रुतियों से मुक्त का जाना ब्रह्म मेंही सुना है न कि प्रधान में कहीं किसी से। कामा अर्थात् स्वर्गादि सुख फले का अथवा निषिद्ध विषय से बनेका वायु में मुक्त की प्राप्ति के लिये कोई शब्द नहीं है तिससे वह भी द्युभ्वादि का स्थान नहीं है। तमेवधीरोविज्ञायप्रज्ञांकुर्वीतब्राह्मणःनानुध्यायाद्बहूंछब्दान्वाचोविग्लापनंहितदिति। ज्ञान का प्रतिबन्धक कर्मकाण्डादि से विमुख हो तन्त्रपुराणेतिहास से भी हाथ धोवे जो काल धन खोने को ही है। भूमा।

नानुमानमतच्छब्दात्॥ ३ ॥

अनुमानंप्रधानंतस्यवाचेनस्यप्रतिपादकः शब्दःतच्छब्दःनतच्छब्दोऽतच्छब्दःतस्मात्॥

अचेतन को कारण और आधार कहिनेवाला वेद में कोई शब्द नहीं है। और चेतन को कहिनेवाला बैशेषिक हेतु है तिससे आत्मशब्द का अर्थ प्रधान नहीं है। श्रुति। यःसर्वज्ञःसर्वविदिति॥

प्राणभृच्च॥ ४ ॥

न पिछिले सूत्र से इस सूत्र में लिया है। यहां आत्मशब्द जीव का वाची नहीं है सर्वज्ञादि गुणों के असम्भव से यद्यपि प्राणभृत् विज्ञानात्मा चेतन है तथापि उपाधि से परिछिन्न है इससे द्युभ्वादि का आधार नहीं हो सक्ता है और न कि वाय्वादि सूत्रात्मा है॥

भेदव्यपदेशाच्च॥ ५ ॥

प्राणभृत् मुमुक्ष ज्ञाता है और आत्मशब्द वाच्य ब्रह्मज्ञे-य है इस भेद के उपदेश से ब्रह्म सब का आधार है और न कि प्राणभृत् तमेवैकंजानथआत्मानमित्यादि ॥

प्रकरणात् ॥ ६ ॥

प्रस्तावात् ॥

ईश्वर का प्रकरण है कि हे भगवन् किस एक के जाने से सब जाना जाता है इस उपक्रम से और ब्रह्मवेदी ब्रह्म है इस उपसंहार तक ब्रह्म का प्रकरण है तिससे यहां आत्मा ब्रह्म है और न कि जीव है। श्रुति। कस्मिन्नुविज्ञातेसर्वमिदं-विज्ञातं भवतीति। ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतीति। परमात्मा के जा-ने से सब जाना जाता है न कि केवल प्राणभृत् के जाने से सब जाना जाता है॥

स्थित्यदनाभ्यांच ॥ ७ ॥

द्युभ्वाद्यातन के प्रकरण में स्थिति और भक्षण कहा है। तयोरन्यःपिप्पलमिति। इससे कर्म फल भोग कहा है। अ-नश्नन्नन्योभिचाकशीति। इससे अन्य ईश्वर उदासीन कहा है। फिर वे ईश्वर और क्षेत्रज्ञ हैं अन्यथा अप्रकृत आकस्मिक असंबद्ध वाक्य और इस मन्त्र के व्याख्यातापैंगीउपनिषत्का-रने*सत्व और क्षेत्रज्ञ कहे हैं। फिर सत्वादि उपाधि का अभिमानी प्रतिदेह भिन्न२ है तिससे वुह स्थान नहीं हो स-क्ता है। और सत्वोपाधि से प्राणभृत् भी घटादि छिद्रवत् औ-पाधिक है फिर सिद्ध हुआ कि भूम विश्वाधार है। गुहांप्र-

*बुद्धि

विष्टाविति । इस सूत्र से ही यहां अर्थ पूरा हो चुका था फि-
र प्रपञ्चार्थ यहां कहा है ॥

(भूमाधिकरण ॥ २ ॥)

भूमासंप्रसादादध्युपदेशात् ॥ ८ ॥

संस्कृतमाश्रित्य । वहोर्भावोभूमालक्षणयाबहुत्व, गुण को धर्मी । परमात्मैवकुतःसम्यक्प्रसीदत्यस्यामवस्थायामिति । संप्रसादः सुषुप्तिः तस्यांसंप्रसादावस्थायांस्थितःप्राणोलक्ष्यते संप्रसादात्प्राणादधिउपरिप्राणोपासनं निरस्यब्रह्मरूढसत्यशब्देन-पृथगुपक्रमादित्यर्थः ॥

प्राण भूमा है या परमात्मा भूमा है सर्वत्र यही बीज है कि किसका उपादान न्याय्य है और किस का हान संशय में प्राणोवाआशायाभूयानिति । इससे प्राण भूमा है । श्रुतंह्येव-मेभगवद्दृशेभ्यस्तरतिशोकमात्मविदितिसोहंभगवःशोचामितं-माभगवांच्छोकस्यपारन्तारयत्विति । इस प्रकरण में परमात्मा भूमा कहा है । तस्मैमृदितकषायायतमसःपारंदर्शयति-भगवान्सनत्कुमारः तमःशोकादि का हेतु अविद्या है । भाषा छान्दोग्य के सतये अध्याय में सनत्कुमार ने नारद को वाक् मन नामादि प्राणांत बहुत तत्वों का उपदेश आगे र कर अन्ति में प्राणही भूमा कहा था । तिससे जाना जाता है कि प्राण और भूमा का भेद नहीं है तिमसे प्राणही भूमा है और प्राणोपासक सत्यबादी है और जो सत्यवादिता है सो ही भूमा है । यह मत कहो । क्योंकि । सत्य बदन में हेतु प्रा-

गापासन था सो श्रुति ने तु शब्द से निवृत्त कर और जो मुख्य सत्यवदनमें ब्रह्म हेतु है उसका सत्य शब्द से पृथक् ग्रहण किया है और जानने के लिये महोपक्रम में परमात्मा कहा है। इससे। तरतिशोकमात्मविदिति। भूमात्वेवविजिज्ञासितव्यइति। भूमानंभगवोविजिज्ञासइति। यत्रनान्यत्पश्यतिनान्यच्छृणोतिनान्यद्विजानातिसभूमा। अथयत्रान्यत्पश्यत्यन्यच्छृणोत्यन्यद्विजानातितदल्पमित्यादि। एषतुवाअतिवदतियःसत्येनातिवदतीति। कोई कोसत्य कहिनेसे सत्य बचन इष्ट है और कोई को, सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति। इस मन्त्र से ब्रह्म इष्ट है सत्य शब्द से॥

श्रुति प्राणाग्निकोजागरण सुषुप्ति मे दिखाती है। प्राणाग्नय एवैतस्मिंपुरेजाग्रतीति सुख भी सुनाती है यत्रैषदेवःस्वप्नान्नपश्यत्यथयदेतस्मिंछरीरेसुखम्भवतीति। अमृत भी प्राण को कहती ह। प्राणोवाअमृतमिति। जैसे। चक्र की नाभि में अराधरे हैं। तैसे। प्राण में सब धरा है। यथावाअरानाभौसमर्पिताएवमस्मिन्प्राणेसर्वंसमर्पितमिति। प्राण पिता माता भ्राता स्वसाआचार्य और प्राणही सब का कर्त्ता है तिससे प्राण भूमा है। यह मत कहो। भूमा परमात्मा है।

श्रुति में सत्य पद से परब्रह्म कहा है। सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति। तैसेही बोधित नारद से विज्ञानादि साधनों की परम्परा द्वारा भूमा कहा है। फिर जो प्राणसे अधिवक्तव्य प्रतिज्ञात था वुही भूमा कहा है। इस प्रकरण में प्राण आत्मा नहीं विवक्षित। क्योंकि प्राण मुख्य वृत्ति से आत्मा नहीं हो सक्ता है। परमात्मा के ज्ञान बिना और ज्ञानसे शोक नहीं छूटता है। नान्यःपन्थाविद्यतेऽयनायेति। ब्राह्मण प्राण का

स्थान आत्मा को कहता है। आत्मनःप्राणः। प्रकरण की पूर्ति तक भूमा ही का अनुकर्ष है। सभगवःकस्मिन्प्रतिष्ठित इतिस्वेमहिम्नीत्यादि ॥

धर्मोपपत्तेश्च ॥ ९ ॥

जो धर्म भूमा में सुनते हैं ते परमात्मा में युक्त होते हैं। जैसे, आपही आप देखता सुनता जानता है जो सहज धर्म द्वैतके निषेधसे पर में सम्भव हैं और सुषुप्ति में सुखरूप आत्मा ही कहा है। इससे, एषोऽस्यपरमानन्दएतस्यैवानन्दस्यान्यानिभूतानिमात्रामुपजीवन्तीति। सामय सुख के निरास से ब्रह्मही भूम सुखरूप कहा है अद्वय मत में द्वैत में भूम सुखवत् ब्रह्म है और जैसे भूमा में दर्शनादि व्यवहार का निषेध श्रुति ने किया है तैसेही परमात्मा में भी है। यत्रत्वस्यसर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकम्पश्येदिति। तिससे अद्वैत पर भूमा है॥

सामय सुख निराकरण कर ब्रह्मही निरामय सुख भूम दिखाती है। यो वैभूमेति यो वैभूमातदमृतमिति। यहां परम कारण अमृत है विकारों में आपेक्षिक अमृतत्व है अतोन्यदार्तमिति। सत्यत्व स्वमहिमप्रतिष्ठितत्वमवंगतत्वसर्वात्मत्व- जो सुने धर्म परमात्मामें घटते हैं न और में तिससे भूमा परमात्मा है॥

———

(अक्षराधिकरण ॥ ३ ॥)

———

अक्षरमंबरान्तधृतेः ॥ १० ॥

अक्षर वर्ण है या ईश्वर है। यह संशय है यह विश्व ॐ-

कार है ॐकार एवेदंसर्वमित्यादि। तिससे अक्षर वर्ण हैं यह मत कहो क्योंकि ब्रह्म की प्रतिपत्तिका साधन ॐकार है। तिससे उसका स्तव है तिससे नित्य और व्यापि अक्षर ब्रह्म है। और न कि लोक सिद्ध प्रणवादि वर्ण हैं क्योंकि बृहदारण्य के पचये अध्याय में गाया है कि याज्ञवल्क्य ने गार्गी से कहा कि अक्षर में ब्रह्मवादी स्थूलाणु ह्रस्वादि विश्व के सब धर्मों का निषेध करते हैं और इस अक्षर में अव्याकृत धरा है और धरादि व्योमान्त का धारक है सन्दंश रीति से अन्य प्राणीका भी धारक है तिससे अक्षर ब्रह्म है। श्रुति। कस्मिन्नु खल्वाकाश ओतश्च प्रोतश्चेति सहोवाचैतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणा अभिवदन्त्यस्थूलमनणवह्रस्वमिति। एतस्मिन्खल्वक्षरेगार्ग्याकाश ओतश्च प्रोतश्चेति। अक्षरंब्रह्मकुतःपृथिव्यादिव्योमान्तधारकत्वात्॥

साचप्रशासनात्॥ ११॥

साचव्योमान्तधृतिःपारमेश्वरमेवकर्मकुतःप्रशासनादिति। श्रुति। एतस्यवाक्षरस्यप्रशासनेगार्गिसूर्याचन्द्रमसौविधृतौतिष्ठतइति। यह धरना घड़े में घी की नाईं प्रधानादि का नहीं सम्भव है किन्तु चेतन को शासन रूप सम्भव है॥

अन्यभावव्यावृत्तेश्च॥ १२॥

प्रधानादिभ्योभेदाच्च॥

तद्वाएतदक्षरंगार्ग्यदृष्टंद्रष्टश्रुतंश्रोत्रमतंमन्त्रविज्ञातंविज्ञात्रिति। इससे अदृष्टत्वादि प्रधान में सम्भव हैं और द्रष्टृत्वादि का कहिना सम्भव नहीं है अचेतन से जैसे नान्यदतोस्ति द्रष्टृ इत्यादि न शरीर है उपाधि के निषेध से। जैसे, अवाग-

मन इत्यादि । प्रधानादि जड़वर्ग से शासिता अक्षर भिन्न है तिससे अक्षर ब्रह्म है । द्रष्टृत्वादि अचेतन में नहीं सम्भव है नान्यदतोऽस्तिद्रष्टृनान्यदतोऽस्ति श्रोतृनान्यदतोऽस्तिमंतृनान्यदतोऽस्तिविज्ञातृ इति । इससे आत्मभेदका प्रतिषेध है सोपाधिक शरीर भी अक्षरका अर्थ नहीं है। अचक्षुष्कमश्रोत्रमवागमन। इससे उपाधिमत्ताका प्रतिषेध है शरीर निरुपाधिक होताही नहीं है तिससे परब्रह्माक्षर है यही निश्चय है ॥

(प्रणवाधिकरण ॥ ४ ॥)

ईक्षतिकर्मव्यपदेशात्सः ॥ १३ ॥

परएवायंसम्यग्दर्शनविषयभूतकर्मत्वेनव्यपदिष्टःसएवेहपरपुरुषपदाभ्यामभिध्यातव्यः। प्रश्नोपनिषत् में सुना है कि जो ॐ इस अक्षर से पर पुरुष का ध्यान कर्ता है सो साम से कमलासन के लोक में पहुंचाया जाता है। इस में ध्येय वस्तु हिरण्यगर्भ नाम अपर ब्रह्म या परब्रह्म है इस संशय से अपर ब्रह्म प्राप्त है कमलासन लोक की प्राप्ति फल सुनने से इससे कहा कि परब्रह्म ध्येय है जिस उपासना से ब्रह्मलोक प्राप्त उपासक सब जीव समष्टि रूप से और हिरण्यगर्भ से भी श्रेष्ठ सब प्राणियों के हृदय के ईशान को देखता है। फिर यो द्रष्टव्य है सो हि परमात्मा है और उसका पर और पुरुष इन दो शब्दों से कथन है तिससे ब्रह्मही ध्येय है। श्रुति। यःपुनरेतत्त्रिमात्रेणोमित्येतेनैवाक्षरेणपरं पुरुषमभिध्यायीत सतेजसिसूर्येसम्पन्नःससामभिरुन्नीयतेब्रह्मलोकमिति। सएतस्माज्जी

वघना*त्परात्परंपुरिशयंपुरुषमीक्षते स कर्त्ता पुरुषं कर्मं ईक्षते-क्रिया ईक्षदर्शनांकनयोःधातुः । इस में जीव घन शब्द से को-ई ब्रह्मलोक लेते, कोई विषयेन्द्रियों से पर जीव घन लेते हैं जीवों का संघात वही होने से, कोई मूर्ति जीव लक्षण जी-व घन कहिते हैं ॥

एतद्वैसत्यकामपरञ्चापरञ्चब्रह्मयदोंकारस्तस्माद्विद्वानेतेनैवायतनेनैकतरमन्वेति । इस मे सगुण निर्गुण ब्रह्मध्यातव्य कहे हैं । सूत्रयोजना ॐकारेणोधेयःसपरएवात्मावाक्यशेषेईक्षणी-यत्वोक्तेरत्रचश्रुतिप्रत्यभिज्ञानात्सएवायमिति । कोई ब्रह्म को जीव घन कहते हैं जीव समूह उस में रहने से । इससे परे परमात्मा ईक्षण कर्म है वही ध्यातव्य है परन्तु पर पुरुष परमात्माही है पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिरितिश्रु-तेः । जैसे, सर्प त्वचा से छुटता है तैसे परब्रह्म के ध्यान से सब पाप छुटते हैं । यथापादोदरस्त्वचाविनिर्मुच्यतएवंहवैसपाप्मनाविनिर्मुक्तइत्यादि । परके ध्यान से ब्रह्मलोक देश में परिछिन्न फल कैसे होगा ऐसा होगा कि ॐकार द्वारा पर ध्यान से ब्रह्मलोक फल फिर सम्यग्दर्शनोत्पत्ति इस क्रम से मुक्ति होगी । जीवघनः मूर्तिर्जीवलक्षणोघनो जीवघनः सैं-धवखिल्यवत् यःपरमात्मनो जीवरूप खिल्यभावः उपाधिकृतः परश्चविषयेन्द्रियेभ्यः सोत्रजीवघन इति कोई मत से पहिले है ॥

———*○*———

(दहराधिकरण ॥ ५ ॥)

———

*अल्पपिराडात्

दहरउत्तरेभ्य: ॥ १४ ॥

दह्रोमब्रह्मास्तिकुत:वाक्यशेषगतहेतुभ्य: ॥

जो दहरमें दहराकाश सुना है सोक्या भूताकाश याविज्ञानात्मा यापरमात्मा है। एकमें उपमानोपमेयभाव अयोग्य है तिससे भूताकाश दहर नहीं है काल्पनिक भेद मानना बिना निर्बाहकी रीति है। आकाश और ब्रह्म पर इन दोसे आकाश शब्द दोनों का बाचक है तोक्या भूताकाश दहर या पर है। जो भूताकाश पर है तो उस में अपहत पाप्मादि गुणों का सम्भव नहीं है। श्रुति। एषआत्मा अपहतपाप्माविजरोविमृत्युर्विशोकोविजिघत्सोपिपास:सत्यकाम:सत्यसङ्कल्पइत्यादि। और ब्रह्मपुर से क्या जीवब्रह्म है उसका पुर है या परब्रह्म का पुर है। जैसे, राजापुर के एक देश में रहिता है तो भी राजपुर कहाता है तैसेही मन उपाधिवाला जीव है। ब्रह्मपुर से ब्रह्ममुख्य है। श्रुति। सएतस्माज्जीवघनात्परात्परंपुरिशयंपुरुषमीक्षतेसवाअयंपुरुष:सर्वासुपूर्षुपुरिशयइत्यादि ॥

भावार्थ। छांदोग्य के अठये अध्याय में सुना है कि देह ईश्वर की प्राप्ति का स्थान है इससे देह ब्रह्मपुर है फिर पुर में छोटा घरसा देह के बीच हृदय में कमल है उसी में दहराकाश है वह आकाश ब्रह्म इन हेतुओं से जाना गया कि जितना आकाश है उतनाही हृदय में आकाश है तिससे दहर ब्रह्म है और न कि व्योम है इन से यह अर्थ लिया है कि अथयदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरेदहरंपुण्डरीकंवेश्मदहरोस्मिन्नंतराकाशस्तस्मिन्यदन्तस्तदन्वेष्टव्यंतद्वावविजिज्ञासितव्यंइत्यादि सब्रूयाद्यावान्वाअयमाकाशस्तावानेषोन्तर्हृदयआकाशउभेस्मिंद्यावापृथिवीअन्तरेवसमाहितेइति। दहराकाश उक्तहेतुओं से ई-

श्वर है। तद्यथेहकर्मचितोलोकःचीयतएवामुत्रपुण्यचितोलोकः चीयते। इससे सब कर्मोंका फल अन्तवाला कहिके फिर दहराकाश का अनन्त फल सूचन करा। अथयइहात्मानमनुविद्यव्रजन्त्येतांश्चसत्यान्कामांस्तेषांसर्वेषुलोकेषुकामचारोभवतीति इन उक्त हेतुओं से परमेश्वर दहराकाश है ॥

गतिशब्दाभ्यांतथाहिदृष्टंलिङ्गम् ॥ १५ ॥

उत्तर हेतुवोंका प्रपञ्च सुनो सोते पर जीव हृदयके आकाश में जाते हैं यह गति कही है और ब्रह्मलोक यह शब्द कहा है इन से प्रकृत दहर कहके फिर जीवों को दहरप्राप्ति कही है यह अर्थ इससे लिया है। कि इमाःसर्वाःप्रजा-अहरहर्गच्छन्त्यएतंब्रह्मलोकन्नविन्दन्तीति। ब्रह्मलोक पद से ब्रह्मही लोक है यही अर्थ समुझना और न कि ब्रह्म का लोक क्योंकि सर्वगत ब्रह्म के लोक का सम्भव न होने से ब्रह्मलोक सुषुप्ति है न कि पद्मासन का लोक सत्यलोकाख्य कार्य ब्रह्मलोकको जीव मरे बिना नहीं जासक्ता है॥

आगे के हेतुसे दहर परमेश्वर कहा था वे उनके प्रपञ्च अब करते हैं सुषुप्ति में सब जीव ब्रह्म में जाते हैं। सतासोम्यतदासम्पन्नोभवतीति। जो षष्ठी समास होती तो ब्रह्मलोक शब्द कमलासन लोक को कहता यहां तो कर्मधारय समाससे ब्रह्मही लोक कहा है क्योंकि सब सत्यलोकको नहीं पहुचि सक्ते हैं॥

धृतेश्चमहिम्नोऽस्यास्मिन्नुपलब्धेः ॥ १६ ॥

सर्वेश्वरादि गुण और सर्व का धारण ईश्वर में सम्भव है नकि जीव में तिससे ब्रह्म दहर है। महिमा, एषसर्वेश्वरएष-

भूताधिपतिरेषलोकपालइत्यादि । श्रुति अथयआत्मासमेतुर्वि-धृतिरेषांलोकानामसंभेदा*येति ॥

अथयआत्मासमेतुर्विधृतिरेषांलोकानामसम्भे*दायेति ॥

प्रसिद्धेश्च ॥ १७ ॥

रूढेश्च ॥

वेद से दहरात्मा में आकाश शब्द रूढ है और लोक से व्योममें फिर लोकरूढि वेदरूढि से वाधित है और आकाश नामरूपका निर्वाहक है। इससे, आकाशोवैनामनामरूपयो-र्निर्वहितासर्वाणिहवाइमानिभूतान्याकाशादेवसमुत्पद्यन्त इति

इतरपरामर्षात्सइतिचेन्नासम्भ-वात् ॥ १८ ॥

जीव के चिन्हों से भी दहर को जीव नहीं कहि सक्ते हो जीव परामर्श में । श्रुति । अथयएषसम्प्रसादोस्माच्छरीरात्समु-त्थायपरंज्योतिरुपसम्पद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतइत्यादि । और जीव में कहीं आकाश शब्द नहीं सुना है तिससे दहर ब्रह्म है । इससे, यआत्मापहतपाप्मेत्यादि यआत्मासमेतुर्विधृतिरि-ति जीवोदहरपदवाच्योभवितुमर्हति कुतःजीवपरामर्शात् नेदं-समीचीनंकुतोयतःजीवोनदहरपदवाच्योभवितुमर्हतिअपहतपा-प्मत्वादिगुणशून्यत्वादिति ॥

यदिएषआत्मापहतपाप्मेत्यादि। वाक्य शेष करके ईशका ग्रहण करोगे तो । इतरस्य । जीव का भी वाक्य शेष से प-रामर्श होगा । जैसे । अथयएषसंप्रसादोस्माच्छरीरात्समुत्थाय-

---

*असङ्कराय ॥

परंज्योतिरूपसंपद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतेसउत्तमपुरुष इत्यादि एषआत्मेतिहोवाचेति ॥

———*◯*———

(अक्षिपुरुषाधिकरण ॥ ६ ॥)

उत्तराच्चेदाविर्भावस्वरूपस्तु ॥ १९ ॥

उत्तरवाक्यात् तुशब्दोनार्थे । कोई पारमार्थिक जीवरूप मानते हैं। दहर विद्या के आगे प्रजापति विद्या में इन्द्रविरोचन प्रजापति के सम्बाद से सुना है कि जो नेत्र में पुरुष दिखाता है सो जीव है और उसकी उपाधि छूटनेसे उस में अमृतादि गुण भी हो सक्ते हैं सो नहीं है क्योंकि प्रजापति वाक्य में तात्पर्य से ब्रह्म स्वरूप कहा है और न कि संसारी स्वरूप। जैसे। ब्रह्मदशा के नहीं प्रगट होने से जाग्रत्स्वप्न सुषुप्तिमान्संसारी कहाता है तैसे ही ब्रह्मदशा प्रकट होने से अपहत पाप्मादिमान् उत्तम पुरुषादि शब्दोंसे कहा है यह निर्दोष है। श्रुति। यएषोक्षिणिपुरुषोदृश्यतेएषआत्मेतिहोवाचेत्यादि ॥

यआत्मापहतपाप्मा है वुही ढूंढ़न जानन योग्य है। फिर यएषोक्षिणिपुरुषोदृश्यतेसआत्मा एतंत्वेवतेभूयोनुव्याख्यास्यामीति यएषस्वप्नेमहीयमानश्चरत्येषआत्मातद्यत्रैतत्सुप्तःसमस्तःप्रसन्नःस्वप्नंनविजानात्येषआत्मा। इनसे जीवही कहा है अवस्थाओं के भेद से। एतदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति। अर्थ। उक्त वाक्यों से जीवमें ईश धर्मों का सम्भव है। तिससे। दहरोस्मिन्नन्तराकाश इस वाक्य से जीव कहा है यही कोई कहता है उससे कहा

जाता है कि आविर्भूतस्वरूपस्त्विति तु शब्द पक्ष व्यावृत्ति के लिये है उत्तर वाक्य से भी यहां जीव की शङ्का का सम्भव नहीं है। आविर्भूतंस्वरूपमस्य त्याविर्भूतस्वरूपः। अक्षिपुरुष उदशराव में दिखाता है यह शरीरात्मवाद है जीवका पारमार्थिक स्वरूप तत्वमसीत्यादि से है और उपाधि कल्पित नहीं है जौलौ स्थाणु में पुरुष बुद्धि द्वैत लक्षण अविद्याको न दूर करे है तौ लौ कूटस्थनित्य दृक् स्वरूप आत्मा को न जानेगा तावतही जीव की जीवत्व है। अहंब्रह्मास्मीति। श्रुति सिखाती है कि तू देह इन्द्रिय मनबुद्धिका संघात और संसारी नहीं है किन्तु सत्य चैतन्यमात्र रूप है नासित्वंदेहेन्द्रियमनोबुद्धिसङ्घातोनासिसंसारोकिन्तर्हितद्यत्सत्यंसआत्माचैतन्यमात्रस्वरूपस्तत्त्वमसीति। तब तो नित्यादि स्वरूप आत्मा को जानिके देहाभिमान छाड़ कूटस्थ होता है। सयोहवैतत्परंब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति। वही जीव का शुद्ध रूप है। हेमादिक्षारादि से लोक में शुद्ध होते हैं यह कूटस्थ आपही आप कैसे शुद्ध होता है और नक्षत्रादि सौर से दिन में छिपे रात्रि को स्वरूप से प्रकट होते हैं। तैसे। आत्मचैतन्यनित्यज्योति का किसी से अभिभव संभव नहीं है असङ्ग से व्योम सम है जैसे। शुभ्र स्फटिक में शौक्ल्य विवेक से और उपाधि से नीलिमादि है जब विवेक से नीलादि अलग जाने तब स्फटिक रूप से निष्पन्न हुआ। अशरीर मन्त्र वर्ण से। अशरीरंशरीरेष्विति। शरीरस्थोपिकौंतेय। अनाविर्भूत स्वरूप भी विवेक विज्ञान के अभाव से विवेक विज्ञान से आविर्भूत स्वरूप कहते हैं। नहिखल्वयमेवंसंप्रत्यात्मानंजानात्ययमहमस्मीतिनो-एवेमानिभूतानीति। यह सुषुप्ति में विज्ञान के अभाव को

दिखाती है विज्ञाता का निषेध नहीं करती है। विनाशमे-वापीतोभवतिनहिविज्ञातुर्विज्ञातेर्विपरिलोपोविद्यतेऽविनाशित्वादिति । श्रुति । एकएवपरमेश्वरःकूटस्थोनित्योविज्ञानधातुरविद्ययामाययामायाविवदनेकधाविभाव्यतेनान्योविज्ञानधातुरस्तीति ॥

अन्यार्थश्चपरामर्शः ॥ २० ॥

जीवस्यब्रह्मबोधार्थउपन्यासइत्यर्थः ॥

जो दहरवाक्य के शेष में जीव का परामर्श दिखाया था अथयएषसंप्रसादइत्यादि । सो जीव परामर्शार्थ है और न कि जीव स्वरूप पर्यवसायी है किन्तु परमेश्वर स्वरूप पर्यवसायी है । संप्रसाद शब्द वाच्य जीव जागरितव्यवहार में देह पञ्जर का अध्यक्ष होके जागरित बासनादि सेवता है और स्वप्न में नाड़ीचर होके अनुभव कर थका शरण चाहता है फिर इन दो देह के अभिमानों से उठके सुषुप्ति में आकाश शब्दवाच्य पर ज्योतिर्ब्रह्मको प्राप्त होके फिर जीव ज्ञान छाड़ । परंज्योतिः रूप निष्पन्न होता है इससे अपहतपाप्मादि गुणी उपास्य है इस लिये जीव परामर्श है । भावार्थ । जीव को ब्रह्म जतानेके लिये सम्प्रसन्न कहा है । इससे, यएषसम्प्रसादइति ॥

अल्पश्रुतेरितिचेत्तदुक्तम् ॥ २१ ॥

जीव आराग्रसम है तिससे उस में अल्पत्व सम्भव है सो नहीं है किन्तु श्रुति ने ही अल्पत्व दूर करी है । श्रुति । यावान्वाअयमाकाशस्तावानेषोहृदयआकाशइति । भावार्थ । दहर छोटा है और ब्रह्म बड़ा है तो बड़े के ग्रहण से छोटा छुटि जावेगा सो नहीं है किन्तु उपासना के लिये बालक के

हृदय के तुल्य कहा है अर्भकौकस्त्वादिति इस सूत्र में। इससे, दहरोऽस्मिन्नंतराकाशइति। यह अधिकरण भी दहर के भीतरही लिखने योग्य था। व्यास जी का॥

(अनुकृत्यधिकरण ॥ ७ ॥)

अनुकृतेस्तस्यच ॥ २२ ॥

तस्यच इससे श्लोक का चौथा पाद सूचित है ॥

नतत्रसूर्योभातिनचन्द्रतारकंनेमाविद्युतोभांतिकुतोयमग्निः तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभातीति। जिसके भान से सबका भान है और जिसके अभान से सब का भान नहीं है वह क्या तेजोधातु और प्राज्ञआत्मा है। तैजस चन्द्र तारकादि तैजस भाभस्कर से भासमानदिनमेंनहीं भासते यह प्रकट है तैसेही सूर्य सहित चन्द्र तारकादि जिस में नहीं भासते हैं सोपि तैजसही है अनुकरण समान स्वभाववाले में देखा है। जैसे। जानेवाले के पीछे जानेवाले को अनुजानेवाला कहते हैं तिससे तेजो धातु है यह मत कहो क्योंकि प्राज्ञआत्माही है कैसे अनुकृतेरनुकरणमनुकृतिः अनुमान प्राज्ञ के मानने से बनाता है। भारूपःसत्यसङ्कल्प इत्यादि श्रुति। और कोई तेजो धातु नहीं जिसके भान से सूर्यादि का अनुभान होवे। दीप दीप के पीछे नहीं भासता है भिन्न स्वभाव में भी अनुकरण है। जैसे। तप्तोयःपिंडअग्नमनुकृति अग्निदहंतके अनुदहती है भौम रज वायु वहन्तअनुवहती है। अन्यच। तद्देवाज्योतिषांज्योतिरायुर्होपासतेमृत-

मिति । इससे भी प्राप्त कहा है तेजसेज्योतिर का प्रतिघातक है । जैसे सूर्यादि की ज्योति सत्तारूपजाति की अभिव्यक्तिका निमित्त है । तैसे । इस सब के नाम रूप क्रिया कारक फल जात की अभिव्यक्तिका निमित्त ब्रह्म ज्योतिः सत्ता है । फिर हिरण्मयेपरेकोशेविरजंब्रह्मनिष्कलं तच्छुभ्रंज्योतिषांज्योतिस्तद्यदात्मविदोविदुरिति यतोयदुपलभ्यतेतत्सर्वंब्रह्मणैवज्योतिषोपलभ्यते ब्रह्मतुनान्येनज्योतिषोपलभ्यतेस्वयंज्योतिस्त्वात् येनसूर्यादयस्तस्मिन्भायुः ब्रह्मह्यन्यद्यनक्तिनतुब्रह्मान्येनव्यज्यते आत्मनैवायंज्योतिषास्ते अग्रह्योनहिगृह्यतइति ॥

अपिचस्मर्यते ॥ २३ ॥

नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावक इत्यादि स्मृतियोंमें उक्त श्रुतियों का अर्थ दिखाया है तिससे तत्पदार्थ ब्रह्महै ॥

(अङ्गुष्ठमात्राधिकरण ॥ ८ ॥)

शब्दादेवप्रमितः ॥ २४ ॥

कठवल्ली से सुना है कि अंगुठा के समान देह के बीच पुरुष है सो क्या विज्ञानात्मा या परमात्मा है परमात्माअनन्त है तिससे अंगुठामात्र परिमाण नहीं हो सक्ता है और औपाधिक जीव का हो सक्ता है सो नहीं है क्योंकि भूत भावी सब विश्व का ईशान कहिने से ब्रह्म है । इससे । अंगुष्ठमात्रःपुरुषोमध्यआत्मनितिष्ठति तथांगुष्ठमात्रःपुरुषोज्योतिरिवाधूमक इत्यादि अन्यत्रधर्मादन्यत्राधर्मादन्यत्रास्मात्कृत कृताद-

न्यत्रभूताच्चभव्याच्चयत्तत्पश्यसितद्वदेतिशब्दादेवाभिधानश्रुतेरीशानःपरमेश्वरोस्ति ॥

हृद्यपेक्षयातुमनुष्याधिकारत्वात् २५

सर्वगत ईश का हृदय में स्थान की अपेक्षा से अंगुष्ठमात्र कहा है। जैसे। वंश पर्व की अपेक्षा से गगन वितोभर कहा जाता है अखमा तो अतिमात्र ईश अंगुष्ठ मात्र नहीं हो सकता है ईशान पद से प्रभु को छोड़ और का ग्रहण योग्य नहीं है शङ्का हर एक प्राणी के हृदय एकसे नहीं हैं इससे अंगुष्ठमात्र नहीं बनता है। उत्तर, मनुष्याधिकारत्वादिति। शास्त्र समान है तो भी उसके अधिकारी मनुष्यही हैं। फिर। शक्तअर्थी अपर्युदस्त उपनीत। इन तीनसे तीन वर्ण का यज्ञमें अधिकार है शूद्र को नहीं है। शूद्रोयज्ञेनवक्लृप्त इति। पर्युदाससे। पश्वादि को शास्त्रादि सामग्री न होने से इन्द्रादि देवों को इन्द्र के निमित्त द्रव्य त्याग के अयोग से ऋषियों को आर्षेय वर्ण में ऋष्यन्तर के अभाव से। मुमुक्षु को चित्त शुद्धिके लिये शमस्नानादि में अधिकार है न वैदिक कर्म कामोंमें शुद्ध चित्तों को मुक्ति के लिये उपनिषद के सुन्न में अधिकार है न वैदिक कर्म में। सुश्रुत से। शूद्र को भी उपनयनाध्ययन प्राप्त है फिर स्वर्ग सबको इष्ट है तो मनुष्य जातिको वैदिक कर्ममें अधिकार है इस शङ्का के निवर्तन में। वसंतेब्राह्मणोऽग्नीनादधीतग्रीष्मे राजन्यःशरदिवैश्यः। इमसे तीन को पाया। जो मनुष्यों के लिये शास्त्र है तो उनके हृदय की अपेक्षा से अंगुष्ठमात्र परमात्माकहा है जैसे। सआत्मातत्वमसि। इमसे संसारी सत् को ब्रह्म कहा तैसे संसारी सत् अंगुष्ठमात्र को ब्रह्म कहा है। वेदान्तवाक्य

दो प्रकार के हैं कोई परमात्मस्वरूप के निरूपक हैं कोई विज्ञानात्मा के साथ ऐक्य के बोधक हैं तो कोई अंगुष्ठमात्र नहीं है। अंगुष्ठमात्रःपुरुषोन्तरात्मासदाजनानांहृदयेसंनिविष्टः तंस्वाच्छरारात्प्रहेत्मुंजादिवेषीकांधैर्येणतंविद्याच्छुक्रममृतमिति ॥

———*○*———

(देवताधिकरण ॥ ६ ॥)

तदुपर्यपिवादरायणःसम्भवात् ॥ २६ ॥

वाढं। शास्त्र मनुष्यों का है परन्तु मनुष्यों का ही नहीं है। क्योंकि ब्रह्मविज्ञान में नियम नहीं है मनुष्यों से ऊपर देवादि को भी अधिकार है क्योंकि अर्थि आदि अधिकार कारण उनको भी सम्भव हैं विषय का सुख सामय सातिशय अनित्य देख मोक्ष सुख निरामय निरतिशय नित्य जान मुक्ति के अर्थी देव हैं मन्त्र अर्थ वादों से विग्रहवाले हैं तिससे सामर्थ्य भी है उपनयन वेद पढ़ने के लिये है और उनको वेद स्वयंप्रकाशित है। तिससे निषेध भी नहीं है। एकशतंहवैवर्षाणिमघवाप्रजापतौब्रह्मचर्यमुवाह भृगुर्वैवारुणिःवरुणंपितरमुपससारअधीहिभगवोब्रह्मेत्यादि। जो कर्म में अनधिकार के कारण कहे थे उनका विद्या में प्रयोजन हो है। जैसे। इन्द्र को इन्द्र की पूजा के लिये दूसरा इन्द्र नहीं और ऋषि को वरण के लिये दूसरा ऋषि नहीं है। जैसे। भृगु को दूसरा सगोत्र भृगु वरण के लिये नहीं है। विद्या में इन्द्रादि को इन्द्रादि के लिये कछु कर्तव्य नहीं है। तिससे देवादि को ब्रह्म विद्या में अधिकार है इसका कोई बाधक न

ही है देवों के अंगुष्ठमात्र में कछु विरोध नहीं है ॥

विरोधःकर्मणीतिचेन्नानेकप्रतिपत्ते- र्दर्शनात् ॥ २७ ॥

जो रूपवान देव मानों तो ऋत्विक् की नाईं इष्यकर्म का अङ्ग होना चाहिये तो विरोध है। स्वरूप से इन्द्रादि का यज्ञ में अङ्ग भाव न देखा न सम्भव है बहुत यज्ञों में युगपत् एक इन्द्र के स्वरूप की अनुपपत्ति है यह विरोध नहीं है। क्योंकि एक देव के युगपत् अनेक स्वरूप का संभव है। वैश्वदेव शस्त्र में शस्यमान देव कितने है यह शाकल्यने याज्ञवल्क्य से पूछा तो उसने उत्तर दिया कि निविन्नामशस्य मान देवों की संख्यावाचक शब्द तीन सौ साठि तीन सहस्र संख्या कही है और संख्येय स्वरूप की पृश्न में महिमा। नोविभूतयःसर्वेदेवाएषांत्रयस्त्रिंशद्देवानांअताष्टौवसवःएकादशरुद्राद्वादशादित्याइन्द्रःप्रजापतिश्चतित्रयस्त्रिंशदेवदेवास्तेपिषसांअग्निपृथिवीवायूवन्तरिक्षादित्यदिवांमहिमानस्तेपिषट्सुदेवेषुअन्तर्भवंतीति षट्देवास्त्रिषुलोकेषु त्रयश्च द्वयोरन्नप्राणयोर्द्वौचैकस्मिन्प्राणे हिरण्यगर्भे अन्तर्भवत इति दर्शितमित्यर्थः। कतिदेवाइतिपृष्ठेत्रयश्चत्रीचशतात्रयश्चत्रीचसहस्रेतिचनिरुच्यकतमेते। इस पृछा में। महिमानएवैषामेतेत्रयस्त्रिंशत्त्वेवदेवाः। यह कहती श्रुति एक एक देव के युगपत् बहुरूप को दिखाती है फिर त्रयस्त्रिंशतों को भी षट् आदिमें अंतर्भावक्रम से कर फिर कतम एक देवइति प्राणइति। सब देवों को प्राणैक रूपता दिखाती है फिर उसी प्राण को युगपत् अनेक रूप दिखाती है। अणिमाद्यैश्वर्यों से योगियों के युगपत्

अनेक शरीर स्मृतियों ने दिखाये हैं। आत्मनोवैशरीराणीति। फिर जो योगी की ऐसी दशा होती है तो आजानसिद्ध देवों का क्या कहिनी चाहिये। एक एक देव अपने को बहुत रूप बनाके युगपत् बहुत यागों में अङ्ग होगा। उसको कोई न देखेगा अन्तर्धान से। कहीं एक भी विग्रहवान् बहुत का युगपत् अङ्ग नहीं हो सकता है। जैसे। एक सेवक बहुत प्रभुयों की सेवा नहीं कर सक्ता है या बहुत घरों में एक युगपत् नहीं खा सक्ता है कहीं एक भी विग्रहवान् बहुत का अङ्ग हो सक्ता है। जैसे। एक राजा या मूर्ति बहुत नमस्कार कर्त्ताओं से नमस्कार किया जाता है। तैसेही विग्रहवती एक देवता को उद्देशकर बहुत अपने२ द्रव्य को युगपत् फेंकते हैं। इससे विग्रहवती देवता है तो भी कुछ कर्म में विरोध नहीं है॥

शब्दइतिचेन्नातःप्रभवात्प्रत्यक्षानुमानाभ्यां ॥ २८ ॥

देही देव मानेसे कर्ममें कछु विरोध नहीं तो भी। शब्दे। अर्थात् वेद में है क्योंकि देहादि के योग से मनुष्य सम जनन मरणादिवाला अनित्य होगा। तो नित्य शब्द का नित्यार्थ के संग नित्य सम्बन्ध से वैदिक शब्द प्रमाण ठहिरा था उसके सङ्ग विरोध होगा। यह नहीं क्योंकि अतःप्रभवात्। वैदिकशब्दों से देवादि सब जग होता है। कैसे वसुरुद्र आदित्य विश्वदेव मरुत जे अर्थ जन्म हेतु से अनित्य हैं तो इनके वाचक वैदिक शब्द भी अनित्य हैं यह लोक सिद्ध है। जैसे जब चैत्र के पुत्र जन्मा तब उस का नाम मैत्र धरा जाताहै तैसे वैदिकवस्वादिनामधरे गयेहैं द्रव्य गुणकर्मों की

व्यक्ति जन्मती है न आकृति फिर आकृति के सङ्ग शब्द का सम्बन्ध है न व्यक्ति के सङ्ग ।

क्योंकि व्यक्तिअनन्त है तिससेसम्बन्धकी सिद्धिअसम्भव नहीं है। व्यक्तिजन्म में आकृति का जन्म नहीं । तिससे वह नित्य है इससेकुछ बिरोधनहींहै देवोंकीआकृतिमन्त्रार्थवादसेप्रसिद्ध है और सेनापति के समान इन्द्रादि शब्द स्थान विशेष के वाचक हैं तो जो उस स्थान पर पहुंचा वही इन्द्र है । कैसे जाना कि शब्द से जग जन्मा है । प्रत्यक्षानुमानाभ्यां श्रुतिस्मृतिभ्यां श्रुति स्वतः प्रमाण है स्मृति अपनी प्रामाण्य के लिये श्रुति की अपेक्षा करती है। वे दोनों शब्द से सृष्टि बताती हैं॥ एतइतिवै । यह मन्त्र वर्ण है अन्यछन्दोग ब्राह्मण है प्रजापतिर्देवानसृजतासृग्रमितिमनुष्यानिन्दवइतिपितॄंस्तिरःपवित्रमितिग्रहानाशवइतिस्तोत्रं विश्वानीतिशस्त्रं अभिसौभगेत्यन्या प्रजाइति श्रुतिः समनसावाचम्मिथुनंसमभवदित्यादि असृग्रं रुधिर मनुष्य इन्दु पितर तिरः पवित्रः ग्रहा आशु गीतिरूप विश्वः शस्त्रा सौभग सर्वत्रसौभाग्ययुक्त जो स्मारक हैं समनसावाचंत्रयींमिथुनंसमभवत् । मन वाणी की मिथुन कर्त्ता था मन से त्रयी प्रकाशित सृष्टि को देखता था । स्मृति अनादिनिधनानित्यावागुत्सृष्टास्वयंभुवा आदौ वेदमयी दिव्यायतःसर्वाःप्रवृत्तयइति । यह सम्प्रदाय प्रवर्त्तक देखा जो अर्थ किया चाहते उसका वाचक शब्द पहिले स्मरण कर फिर उस अर्थ को करते हैं यह तो हम तुम सबको प्रसिद्ध है तैसेही प्रजापति के मन में सृष्टि से पूर्व वैदिक शब्द प्रगट हो गये पीछे से उनके अर्थानुसार सृष्टि सृजी है। श्रुति । सभूरितिव्याहरन् सभूमिमसृजतेत्यादि । कैसे शब्द से सृष्टि सृजी है स्फोट से

वा वर्ण से। वर्ण और ध्वनि से स्फोट अर्थात् अर्थबोधक शब्द पृथग् है उससे जग रची। स्फोटही शब्द का अर्थ है। तेव-र्णाएवतुशब्दइति भगवानुपवर्षः—
ते प्रत्यभिज्ञा से नित्य हैं दो गोशब्द कहे हैं नकि दो गोशब्द हैं उदात्तादि भेद ध्वनि से हैं नकि वर्ण से इससे उदात्तादि सालम्बन हैं अन्यथा निरालम्बन होवेंगे गबुद्धि समस्तवर्ण विषयक है अनेक एक बुद्धि विषय है जैसे सेना वन पंक्ति द-शशतादि। यदि समस्त वर्ण एक बुद्धिविषयपद होवे तो जा-रा राजा कपि पिक इन में पदविशेष की प्रतिपत्ति न हो। चींटी की पंक्ति से वर्णों में भी पदबुद्धि होती है वर्णवादी को कल्पना लघु है स्फोटवादी को दृष्टहान अदृष्टकल्पना गुरु है तिससे नित्य शब्द से देवादिव्यक्तियों का प्रभव है यह अवि-रुद्ध है॥ भगवानुपवर्ष तो वर्णोंही को शब्द मानते हैं अतिरिक्त नसे अनुभवमें न आनेसे। ते वर्ण नित्य है जैसे मूड़ पीछे वेही केश हैं इस प्रत्यभिज्ञा से। अनेक में एक बुद्धि। जैसे पंक्ति वन दशशतसहस्रइत्यादि। तैसे वर्णोंमें है। जैसे क्रमा-नुरोधिनी पिपीला पंक्ति एक धीजनिका है। तैसे वर्ण भी हैं कपिपिकइत्यादी। स्फोट में गौरव वर्ण में लाघव है वर्ण स्फोटके व्यञ्जक स्फोट अर्थका व्यञ्जक है यह गौरव है। ध्वनि पक्ष में भी यही है वर्ण में नहीं है वर्ण पक्ष में सृष्टि होना अनहोना है जात नष्ट होनेसे। तिससे नित्य शब्द में देवादि देह का प्रभव है यह अविरुद्ध है॥

अतएवचनित्यत्वम् ॥ २९ ॥

नियताकृतेर्देवादेर्जगतोवेदशब्दप्रभवत्वात्वेदशब्देनित्यत्व-म् प्रत्येतव्यमिति सोऽर्थः यज्ञेनवाचःपदवीमायन्तामन्ववि

न्दनृषिषुप्रविष्टामिति ॥

यास्किको ने पूर्व सुक्रत से ऋषियों में स्थित वेद भाषा को पाया था यह मन्त्र वर्णार्थ है वेद ब्रह्मवत् कूटस्थ नित्य नहीं है और न कि मृदादिवत् परिणामी नित्य है किन्तु पारिभाषिक नित्य है ॥

समाननामरूपत्वाच्चावृत्तावप्यविरोधोदर्शनात्स्मृतेश्च ॥ ३० ॥

संसार अनादि है सब व्यवहार स्वापप्रबोधवत् हैं स्वाप में व्यवहार पुरुषांतर में रहिते हैं वे प्रबोधमें होते हैं महाप्रलय में सब व्यवहार के लोप से जन्मान्तरवत् कल्पान्तर में अनुसन्धान अनुचित है ईश्वर को अनुग्रह से मान लो । जैसे । प्राकृत जनों में ज्ञानैश्वर्यादि को तारतम्य है । तैसे देवादि में है लीन भो शक्ति अवशेष होती है अन्यथा आकस्मिक हो जो चराचर को देह के समान देवादि देह भो सन्तत जन्म मरण से अभिधान अभिधेय अभिधातृ अभिधीनिका व्यवहार के अनाश से सम्बन्ध नित्य द्वारा शब्द में विरोध दूर हो सक्ता है जब तो तीनों लोक नाम रूप छाड़ निर्लेप नाश हुये फिर न अन्य होते हैं तब विरोध न दूर हुआ इससे समान नाम रूपत्वादि कहे हैं संसार अनादि है स्वप्न प्रबोध सम प्रलय प्रभव है स्वाप और जागर प्रलय और प्रभव श्रुति से सुने हैं। यदासुप्तःस्वप्नमित्यादितदेनंवाक्सर्वैर्नामभिःसहाप्येतिचक्षुःसर्वैः रूपैःसहाप्येतिश्रोत्रंसर्वैःशब्दैःसहाप्येतिमनःसर्वैर्ध्यानैःसहाप्येति सयदाप्रतिबुध्यतेयथाअग्नेर्ज्वलतः सर्वादिशोविस्फुलिङ्गाविप्रतिष्ठरन्नेवमेवैतस्मादात्मनः सर्वेप्राणायथायतनंविप्रतिष्ठंतेप्राणेभ्योदेवादेवेभ्योलोकाइति । महाप्रलय में तो ईश्वर की कृपा से

हिरण्यगर्भादि को कल्पान्त का व्यवहार ज्ञान पड़ता है प्रा-
कृतों को जन्मान्तर का अनुसंधान नहीं देखते हैं वैसे उनको
भी न होता होगा यह मत कहो । स्वप्नरादि में प्राण स-
मान है तो भी ज्ञानका भेद है । तैसे हिरण्यगर्भादिमें ज्ञानै-
श्वर्यादि की अभिव्यक्ति भूयसी है । श्रुति । योब्रह्माणंविद-
धातिपूर्वं योवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मैतं हदेवमात्मबुद्धिप्रका
शम्ममुचवैंशरणमहं प्रपद्ये इति । जिसने कल्पादि में
ब्रह्मा को बनाके उसकी बुद्धि में वेदों को आविर्भाव किया
तिस देव को जो महावाक्य से बुद्धि में प्रकाशमान है उस
निःश्रेयसरूप को हम पहुंचे इत्यर्थः । स्मरन्तिचशौनकादयो-
मधुछन्दःप्रभृतिभिऋषिभिर्दाशतय्योदृष्टाः इति । अर्थ । ऋग्वे-
द के दश मण्डल हैं उनको ऋचः दाशतय्यः कहाती हैं ।
प्रतिवेदं चैवमेवकाण्डर्ष्यादयः स्मर्यंते और वेदों में भी का-
ण्डसूक्त मन्त्रों के दृष्टा बौधायनादिने कहे हैं । श्रुति । यो-
हवा अविदितार्षेयच्छन्दोदैवताब्राह्मणेन मन्त्रेणयाजयतिवाध्या
पयतिवास्थाणुंवर्छतिगर्तंवाप्रतिपद्यतेतस्मादेतानिमंत्रे मंत्रेवि-
द्यादिति आर्षेय ऋषियोग गायत्र्यादि अग्न्यादि विनियोगय
त्तानि स्मृति तेषांये हिंसा ॥ जो लीन होता है उस
के संस्कार शेष रहते हैं वुही जन्मता है यह न मानो तो
आकस्मिकजगजन्मगा । श्रुतिं । स्वोपादानेलीनकार्यरूपाशक्ति
सुमहान्यग्रोधस्तिष्ठतिग्रन्ब्तस्यसौम्येति । इससे अविद्या तत्कार्य
से अन्य शक्ति नहीं है वही संस्कार है आत्माविद्यैवनःशक्ति-
रितिसिद्धांतःसमाननामरूपत्वाच्चावृत्तावपि महासर्गमहाप्रलय
लक्षणायांजगतोभ्युपगम्यमानायांनकश्चिच्छब्दप्रामाण्यादिविरो
धः सूर्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् दिवंचपृथिवींचांतरि

चमथोखरिति । जैसे । सूर्यादि पहिले भ्रमते थे । तैसे । अब भी भ्रमते हैं अग्निर्वाअकामयत अन्नादोदेवानांस्यामितिसएत मग्नयेकृत्तिकाभ्य:पुरोडाशमष्टाकपालंनिरवपदिति । अर्थ । भावीष्टि से यजमानने अग्नि अन्नाद अग्नि मै हूं इस कामना से कृत्तिका नक्षत्राभिमानी देवताग्नि के लिये आठ कपाल में हवि: पचनीय धरा था इस नक्षत्रेष्टि में जोअग्निनिरवपत और जिसके लिये निरवपत् है तो दोनोंके समान नाम रूप हैं ऐसी श्रुति उदाहरण यहां है ॥

मध्वादिष्वसम्भवादनधिकारंजैमिनि: ॥ ३१ ॥

जो अधिकार देवोंके ब्रह्म विद्यामें माना था उसको जैमिनिनहींमानताहैक्योंकि मध्वादिष्वसंभवात् कैसेअसौवाव-आदित्योमधु मनुष्यतोआदित्यमेंमधुकाअध्यासकरउपासनाकरसक्तेहैं औरदेवनहींकरसक्ता क्योंकिआदित्यकैसेऔरआदित्यकीउपासनाकरसक्ताहै पुनश्चादित्यव्यपाश्रयाणिपञ्चरोहितादीन्यमृतानीत्युपक्रम्यवसवोरुद्राआदित्यामरुत:साध्याश्चपञ्चदेवगणा:क्रमसेतत्तदमृतमुपजीवन्तीत्युपदिश्यसयएतदेवममृतंवेदवसूनामेवैकोभूत्वाग्निनैवमुखेनैतदेवामृतंदृष्ट्वातृप्यन्तीत्यादि जैवस्वादिकोअमृतउपासतेहैं तेउनकीमहिमापातेहैं औरवस्वादिकौनऔरअमृतोपजीवीवस्वादिकोजानेऔरकिसअन्यवस्वादिकीमहिमाकोपावे आदिपदार्थ तथाग्नि:पादोवायु:पाद:आदित्य:पादोदिश:पादोवायुर्वासम्वर्गआदित्योब्रह्मेत्यादेशइत्यादितथेमावेवगौतमभरद्वाजावयमेवगौतमोयंभरद्वाजेत्यादि ॥

ज्योतिषिभावाच्च ॥ ३२ ॥

जोज्योतिर्मण्डलद्युस्थानरातिदिनचलतादिखाताहै जगकोप्रकाशताहै उसमेंसूर्यचन्द्रशुक्रज्यादिशब्दलोकप्रसिद्धिऔरवाक्यशेषसेकहेजातेहैं नज्योतिर्मण्डलकोहृदयादिवाविग्रहचेतनताअर्थेत्यादिकायोगकहिसक्तेहैं मृदादिकेतुल्यसबअचेतनहैं अग्निवायुभूमिजलादिशब्दअचेतनकेवाचकहैं लोकस्वतन्त्रप्रमाणनहीं अविचारितविशेषप्रमाणप्रत्यक्षादिसेअर्थलोकमेंप्रसिद्धहै इतिहासपुराणभीमनुष्यरचितहैं वेभीअपनेमूलश्रुतिकोचाहतेहैं अर्थवादभीविधिकेसङ्गस्तुतिनिन्दाकेलियेहैं मन्त्रभीअनुष्ठानकालमेंअनुष्ठेयअर्थकेस्मरणकरानेवालेहैं वज्रहस्तःपुरन्दरःमन्त्र सोरोदीत्यर्थवादःउक्तदेवोंकोदेहीजतानेसेंपृथग्प्रमाणनहीहैं पार्थगर्घ्यसेविग्रहोहविषां भोगऐश्वर्यंचप्रसन्नताफलप्रदानमित्येतत्पञ्चकंविग्रहादिकमिति तिससेदेवादिकोअधिकारनहीं ॥

भावन्तुवादरायणोस्तिहि ॥ ३३ ॥

तुनापूर्वपक्षोवार्यते ॥

सर्वत्रसबकोअधिकारनहींतोभीजहांजिसकोअधिकारहै तहांतिसकोउसकीनिवृत्तिनहींहोसक्तीहै जैसेराजसूयादिमेंब्राह्मणोंकोअधिकारनहीहै तोक्यादर्शादिवाजपेयादिमेंभीउसकोअधिकारनहींहै क्योंकिकर्मएकहीहै तैसेमधुविद्यादिमेंदेवोंकोअधिकारनहोनेपरभीब्रह्मविद्यामेंउनकोअधिकारहै देवोंकोब्रह्मविद्याअधिकारसूचकवेदहै तद्योयःइत्यादिविद्यमानवादप्रतीतिशरणोंसेआश्रयणीयनकिगुणवादआदित्यादिशब्दचेतनावन्तऐश्वर्यादियुक्तदेवकोकहतेहैं सुब्रह्मण्यार्थवादमें मेधातिथ्येमेषेति

सेधातिथिंहबाएकायनमिन्द्रोमेषोभूत्वाजहारेति ज्योतिरादिभीयथेष्टएश्वर्ययोगसेअनेकविग्रहग्रहणकीसामर्थ्यरखतेहैं मृदादिकेचेतनअधिष्ठाताहैं मृदब्रवीदापोब्रुवनिति ज्योतिरादिभीभूतधातुअचेतनऔरचेतनलोअधिष्ठातादेवतासेहैं चित्तमेंआरोपकेलियेविग्रहहै यस्यैदेवतायैहविर्गृहीतंस्यात्तांमनसाध्यायेद्वषट्करिष्यन्निति मन्त्रजपसेदेवतानिकटआताबोलताहै योगसूत्र स्वाध्यायादिष्टदेवतासंप्रयोगइति योगमाहात्म्यश्रुति पृथिव्याप्यतेजोनिलखेसमुत्थिते*पञ्चात्मकेयोग?गुणप्रवृत्ते नतस्यरोगोनजरानमृत्यु:प्राप्तस्ययोगाग्निमयंशरीरमिति अबदेवोकाविग्रहादिमन्त्रादिसेबोऽर्थित्वादिसेब्रह्मविद्यामेंअधिकारबोक्रममुक्तिआदिसबबने ॥

———*⬭*———

(शूद्राधिकरण ॥ १० ॥)

शुगस्यतदनादरश्रवणात्तदाद्रवणात्सूच्यतेहि ॥ ३४ ॥

छांदोग्यकेचौथेअध्यायकीसंवर्गविद्यामेंसुनाहै किजानश्रुतिनामराजासहस्रगायादिभेंटकेलियेलायाफिरहंसनामऋषिनेउसकाअनादरकिया तिस्से बहुशोकितहोकेरैक्वनामऋषिकेपासआयाफिरउसउपायनको रैक्वनेदेखाऔरकहाकिहेशूद्रजानश्रुतेतूजोसहस्रगायादिसामानलायाहै सोजोगायेंलड़कियोंकिसमहैंतूइनकोदेमुजिकोप्रसन्नकरपढ़ाचाहताहै इसरैक्ववाक्यसेजानागयाकिशूद्रभीविद्याकाअधिकारीहै सोनहींहै क्योंकिशोकयोगसेरैक्वनेजानश्रुतिकोशूद्रकहाथा औरनकिजातिसे शूद्रथ

*धारणयाजिते ? अणिमादि

व्हशूद्रजातिमेंरूढ़है औरजानश्रुतिमेंयौगिककहाहै शोककेयोग
सेजिसकेयहीअर्थउसगाथामेंसूचितहै श्रद्धासेदानत्वादिविशेषण-
क्षत्रियमेंहीघटतेहैं श्रुतिअहहारेत्वाशूद्रतवैवसहगोभिरस्त्विति
कं?वरएनमेतत्सन्तंसयु*ग्वानंरैक्वमिवात्थेति यहहंसवाक्यहै श्र
द्धादेयोबहुदायीबहुपाक्यआसेतिसुचमभिद्रुद्राववशुचावाभिदुद्र-
वतेजानश्रुतिनामराजानिदाघकालकीरातिमेंप्रासादतलेसोता
था उसकेअन्नदानादिसेतुष्टऋषिगणउसकेहितार्थमालाकारहं-
सरूपहो।उसकेऊपरआयेउनमेंसेपिछिलाहंसआगेचलनेवालेए-
कहंससेबोलाकिहेहेसुनयनतुमक्योंनहींदेखतेहोजानश्रुतिकाते
जस्वर्गमेंपहुंचाहै वहतुमकोजलावेगाआगेमतजाओफिरआगे-
केहंसनेउत्तरदियाकिदूसदीनविद्याहीनकोअरेक्यारैक्वकेसमान
कहतेहो रैक्वतोब्रह्मिष्ठहै उसकातेजकोईनहींसहिसकताहै और
दूसअनात्मज्ञकातोकुछभीतेजनहींहै हंस मेरेवाक्यसेखिन्नराजा
शकटलिंगसेरैक्वकोजानविद्यावान्होगायहीहंसोंकाअभिप्राययथा
उनकेअनादरवचनसुनिराजाकोशोचहुआ वुहीशोचरैक्वनेशूद्र-
शब्दसेसूचनकियाथा इसवैदिककहानीकातात्पर्ययहहै किजो
धनीधनयज्ञमंदिरआदिमेंउठातेहैं उसकाकछुभीफलनहींहै जो
विद्यामेंलगातेवुहसर्वत्रप्रकाशताहै ॥

क्षत्रियत्वगतेश्चोत्तरत्रचैत्ररथेनलि-ङ्गात् ॥ ३५ ॥

सम्वर्गविद्याकेआगेअभिप्रतारीचैत्ररथकेसाथजानश्रुतिपढ़ा

? कंउअरेइतिछेदः ॥
* शकटी ॥

है फिरसङ्गसेक्षत्रियजानाजाताहै नकिशूद्र श्रुति अथहशौनकं चकापेयमभिप्रतारिणंचकाक्षसेनिंपरिविष्यमाणौब्रह्मचारीबिभिक्षइति ऐतेनवैचित्ररथंकापेयाअयाजयन्निति प्रायःसमानवंशकेयाजकहोतेहैं यहपहिलीबातथी समानान्वयानांचप्रायेण समानान्वयायाजकासन्तितस्माच्चैत्ररथिर्नामैकःक्षत्रपतिरजायतइससेक्षत्रीथा तौअभिप्रतारीकेसङ्गसमानविद्यासेकहनेसेजानश्रुतिभीक्षत्रीथा क्षत्तासूतःतस्यरैक्वान्वेषणायप्रेषणं अन्नगोदानादिकञ्चजानश्रुतेःक्षत्रियत्वेलिङ्गम् ॥

संस्कारपरामर्शात्तदभावाभिलापाच्च ॥ ३६ ॥

विद्यापढ़नेकेलियेउपनयनादिसंस्कारसुननेसे शूद्रविद्यापढ़नेकाअधिकारीनहींहै औरस्मृतिसेशूद्रकोसंस्कारकानिषेधहै स्मृति नशूद्रेपातकंकिंचिन्नचसंस्कारमर्हतीति तंहोपनिन्ये अधीहिभगवइतिहोपससाद ब्रह्मपराब्रह्मनिष्ठाःपरंब्रह्मान्वेषमाणा एषहवैतत्सर्वंवक्ष्यतीतितेहसमित्पाणयोभगवन्तंपिप्पलादमुपसन्नाइतिवतान्होनुपनीयैवेति इससे उपनयन का उपदेशकहा है परवैश्वानरविद्यामेंराजानेऋषियोंकोबिनाही उपनयविद्यापढ़ाईथी ऋषोन्राजानुपनीयैवविद्यामुवाचेतिश्रुति ॥

तदभावनिर्धारणेचप्रवृत्तेः ॥ ३७ ॥

गाथा जाबालगौतमकेपासपढ़नेकोगयातोउसनेउससेपूछाकितेराकौनसागोत्रहै यहप्रश्नसुनिउसनेउत्तरदियाकिमैंनहींजानताहूं इससत्यकहिनेसेनिश्चयकियाकियहब्राह्मणहै फिरउसकोशूद्रनहींजानाऔरउपनायाऔरवनमेंलकड़ियोंकेलिये

भेजिदियाथा इसगौतमकेवर्त्तावसेवुहशूद्रनहींथा श्रुति किइशेचो सीतिगौतमउपनेतुमनुशासितुंचप्रवव्रतेनैतद्ब्राह्मणो विवक्तुमर्हतिसमिधंसौम्याहरोपत्वानेष्ये नसत्यादगादितिश्रुतिलिङ्गसेनत्यवानसिसत्यन्त्वं ॥

श्रवणाध्ययनार्थप्रतिषेधात्स्मृतेश्च ॥ ३८ ॥

जोशूद्रवेदकोसुनेतोउसकेकानमेंसीसायालाखतपाकेभरदे जोउच्चारणकरेतोजीभकाटदे जोअर्थजानेतोहृदयकोभेदनकरदे स्मृति अथाहास्यवेदमुपशृण्वतस्त्रपुजतुभ्यांश्रोत्रप्रतिपूरणमुदाहरणेजिह्वाच्छेदोधारणेहृदयभेदइत्यादि गौतमस्मृतिहै और शूद्रवेदकोनसुनेनपढेन अर्थजानेन अनुष्ठानकरे श्रुति य?द्युहवाए तत्श्मशानंयच्छूद्रस्तस्माच्छूद्रसमीपेनाध्यतव्यं औरविदुरादिजो पहिलीजातिकीसुधिसेहुयेथे नकिविद्यापढ़केतिससेशूद्रको वेदकाअधिकारनहींहै किन्तुमुक्तिकेलियेस्मृतिपुराणेतिहासादिपढ़लेऔरभारतमेंहैकि ब्राह्मणकोआगेबैठाकेफिरचारोवर्णोंकोसुनावे इससे केवलब्राह्मणहीवेदकाअधिकारीनिकत्ताहै नकिअन्यकोईश्रावयेच्चतुरोवर्णानिति तिससे वेदपूर्वकशूद्रकोअधिकारनहींहै यहस्थितहै किसीकेमतसेस्मार्तनिषेधहै नकिवैदिकऔरकिसीकेमतसेगर्भाधानादियज्ञकर्मोंपयोगीवेदमेंशूद्रकोअधिकारनहींहै ईश्वरज्ञानोपयोगीमें है और वाजसनेयशाखाके-२६वेंअध्यायमेंहै कियथेमांवाचङ्कल्याणीमावदानिजनेभ्योब्रह्मराजन्याभ्यांशूद्रायचार्यायस्वायचारणायइति ईश्वर कहिता है किजैसेमैंहितवाणीमनुष्यकेलियेकहिताहूं वैसेब्राह्मणक्षत्रियवै

? पादयुक्तंसंचरिष्णुरूपं ॥

प्यशूद्रदासादिकेलियेकहा औरअरगाइसपदकाअर्थमहीधरनेश
वुकहाहै औरऔरोंनेम्लेछादिकहाहै तैसेहीमनुष्यमात्रकेलि
यवेदकाकहा औरमतक्रिपाआइसोअर्थकामनुनेप्रकारान्तरसेप्र-
कटकियाहै किनीचादप्युत्तमाविद्येति जोकिनीचकोविद्यान-
हींहै तोउस्से विद्याकाग्रहणकाविधानव्यर्थहै व्यवस्था निषेधवा-
क्योंकातात्पर्यकर्मबोधकवेदकोनहींसुनानेमेंहै क्योंकिशूद्रभीउ
त्तमकर्मकरदास्यकर्मसोनिवृत्तहोगा तिससेसबकेलियेदिव्यभा-
षाहै ॥

(कम्पनाधिकरण ॥ ११ ॥

कम्पनात् ॥ ३९ ॥

कठवल्लीसेसुनाकिविश्वकाकम्पकप्राणहै सोक्यावायुहै या
वज्रहै याब्रह्महै फिरवायुवज्रनहींहोसक्तेहैं क्योंकिअनन्तजो
नफलसुन्नेसे तिस्से प्राणशब्दवाच्यब्रह्महै औरबुहीअन्तर्यामीभय
काकारणहै औरआगजराातासूर्यधूपदेताइन्द्रवज्रउठातावायु
लतामृत्युमारताहै जेपांचकामईश्वरकेभयसेहोतेहैं वायुजवज
लहोताहै तबविद्युत्स्तनयित्नुवृष्टिवज्रहोतेहैं श्रुतिमेंवायुबे
सेअमृतफलसुनाहै वायुरेवव्यष्टिर्वायुःसमष्टिरपपुनर्मृत्युंजयति
यएवंवेदेति इसमेंब्रह्मसिद्धान्तसूत्रसेबाहिरशङ्करसम्मतहै यदि
दंकिञ्चजगत्सर्वंप्राण*एजतिनि?सृतंमह'द्भयंवज्र;मुद्यतंयएतत्
दुरमृतास्तेभवन्तीति ईश्वरसे अन्यत्र अमृतत्वश्रवणआपेक्षिक
वायौहिपर्जन्यभावेनविवर्त्तमानेविद्युत्स्तनयित्नुवृष्ट्यशनयोवि
वर्तन्तइत्याचक्षतेआगेपीछेतोब्रह्मका निर्देश है बीचमेंवायुके

---

* स्पन्दते ॥ ? उत्पन्नं ॥

' एजृकम्पने ॥ ; वायुजलसेवज्रबनाहै ॥

जानसक्ते हैं आगे तदेवशुक्रं तद्ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते तस्मिंल्लोकाः स्थिताःसर्वे तदुनात्येतिकश्चनेति यहांब्रह्मनिर्दिष्टहै जगत्सर्वंप्राण एजतीति प्राणशब्दभीआत्मवाचीहै जैसे प्राणस्यप्राणमिति ए- जनकर्त्ताभीईशहै नवायुमात्र नप्राणेननापानेनमर्त्योजीवति कश्चन इतरेणतुजीवन्तियस्मिन्नेतावुपाश्रितौइत्यादि पीछेभी ब्रह्मनिर्दिष्टहै नवायु भयादस्याग्निस्तपतिभयात्तपतिसूर्यः भ- यादिंद्रश्चवायुश्चमृत्युर्धावतिपञ्चमइत्यादि जैसे भयभीतजनराज शासनमानतेहैं किवज्रउद्यतमेरेहीशिरपरपरेगा तैसेअग्निवायु सूर्यादिसबजगतब्रह्मभयसेडरनियमसेअपनेरकामकरतेहैं इससे भयानकवज्रोपमितब्रह्महै अमृतत्वफलसुनेसेब्रह्म है तमेवविदि त्वेति जोवायुविज्ञानसेअमृतत्वसुनावुहआक्षेपिकहै अतोन्य- दार्त्तमिति इसनेवाय्वादिसबआर्तकहेहैं आत्मासे ॥

——*○*——

(ज्योतिर्दर्शनाधिकरण ॥ १२ ॥)

ज्योतिर्दर्शनात् ॥ ४० ॥

छांदोग्यकीप्रजापतिविद्यामेंसुनाहै कि ज्योतिःरूपहोता- है साक्षातमोक्षतेजहै यापरब्रह्महै औरनाडीखण्डमें अथयत्रै तदस्माच्छरीरादुत्क्रामत्यथैतैरेवरश्मिभिरूर्ध्वआक्रमतइति इस- नेमुमुक्षुकोसूर्यकीप्राप्तिकहीहै तिससेज्योतितेजहै सोनहींहैज्यो तिपरब्रह्महै क्योंकि दर्शनात् यआत्मापहतपाप्मासोन्वेष्टव्योविजि ज्ञासितव्यश्चेति इसप्रतिज्ञासे एतंत्वेवतेभूयोनुव्याख्यामीति- औरइसअनुसन्धानसे अशरीरंवावसन्तंनप्रियाप्रियेस्पृशतइति इससेअशरीरतीर्थज्योतिकी सम्पत्ति कहिने से और ब्रह्म भाव- से अन्यत्रअशरीरनहींहोसक्ता है परंज्योतिःसउत्तमःपुरुष इन-

विशेषोंसे औरगतिउत्क्रांतिकहिनेसे सूर्य कीप्राप्ति कहीहै और
आत्यन्तिकमुक्तिमेंगतिउत्क्रान्तिनहींहैं उपसंपत्तिअर्थात्तौनदे-
हसेपृथक्शुद्धत्वंपदार्थजीवकोब्रह्मबोधकादृढ़है तिससेज्योतिर्ब्र-
ह्महै श्रुति एषसम्प्रसादोस्माच्छरीरात्समुत्थायपरंज्योतिरुपसम्प
द्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतेसउत्तमःपुरुषइति योवेदेदञ्जिघ्राणीति
सआत्मेत्यादि घ्राणप्रेयइनकासाक्षीजोघ्राताहै सोही
आत्माहै मेघरूपकसेजीवकेपहिचाननेकीरीति मेघविद्यासेसु-
नाहैकि जैसेमेहपहिलेअदेहक्रमसे व्योमवायुअभ्रविद्युत्मेंरहि-
ताहै फिर ग्रीष्ममें सूर्यकीधूप सेपृथक्गगनसेजानपड़ताहै फिर
वर्षामेंमेहरूपसेप्रकटहोताहै फिरजोवायुनेउड़ायातोअभ्रमेंलौ
नहुआ नहींतोजहांकहींवर्षगया तैसेहीजीवसर्वत्रमिलासादे-
हमेंप्रकटहोकेउपासनासेअर्चिरादिपथद्वारासूर्यकेऊपरहोकेका-
र्यब्रह्मकोपहुंचकेमुक्तहोताहै इसीकानामक्रममुक्तिहै जोयहभी
नहुई तोजन्मतामरतारहिताहै ॥

———*◯*———

(आकाशाधिकरण ॥ १३ ॥)

आकाशोऽर्थान्तरत्वादिव्यपदेशात् ॥ ४१ ॥

छांदोग्यसेसुनाहै किआकाशविश्वकेनामरूपकानिर्वाहक
है वहजिससेपृथक्है याउसकेभीतरहै सोआकाशमरणशून्यई-
श्वरप्रत्यागात्माहै औरनकिव्योमहै जड़होनेसेफिरजड़नियाम-
कनहींहोसक्ताहै कथञ्चित्अवकाशदानसेव्योमभीनामरूपका-
निर्वाहकहोसक्ताहै लोकमेंनियन्ताचेतनदेखनेसेफिरअचेतन-
व्योमनियम्यरीतिकोक्याजानेगा तिससेवुहनियन्ताहोगा और
सुनाहै किआकाशब्रह्मअमृतआत्माहै तिससेनिरंकुशकर्त्ताब्रह्म

है नकिव्योम श्रुति आकाशोवैनामनामरूपयोर्निर्वहितातेय-
दंतरातद्ब्रह्मतदमृतंसआत्मेत्यादि ब्रह्मवादकेहीचिन्हहैं आका-
शस्तल्लिङ्गादिति इससूत्रसेयहअधिकरणगतार्थहै पृथक्योगव्य-
र्थहै ॥

———*⌒*———

(विज्ञानमयाधिकरण ॥ १४ ॥)

सुषुप्त्युत्क्रांत्योर्भेदेन ॥ ४२ ॥

बृहदारण्यसेसुनाहै किलिङ्गदेहमयस्थूलदेहसेपृथक्है औ-
रनेत्रादिइन्द्रियांयाप्राणादिवायुयाअन्त:करण इनसेपुरुषभिन्न
सिद्धहै इसठवस्थूलदेहइन्द्रियप्राणवायुअन्त:करणऔरअन्त:कर
णकीवृत्त्यादिकासाक्षीपुरुषज्योतिकहाहै सोहीलिङ्गदेहकेअध्या
ससेलिङ्गदेहकेसमानइसलोक और परलोकमें फिरताघूमता है
सोक्यासंसारीयाअसंसारीहै फिरयहांविज्ञानमयजीवहै क्योंकि
ज्योतिर्ब्राह्मणमेंऔरशारीरब्राह्मणमेंआदिमध्यअन्तिमेंसंसारही
काविस्तारकहाहै जैसे आदिमेंदोनोंलोकोंमेंफिरनाऔरमध्य
में संप्रसाद१ स्वप्नान्त२ बुद्धान्त३ इनतीनअवस्थाकाविस्तार
औरअन्तिमेंआत्माब्रह्मविज्ञानमयादिउपाधिसेसंसारीही कहा
है तिससेजीवहै सोनहींहै क्योंकिजीवकहिनेकेयोग्यनहींहै य
हंबुद्धिसिद्धहोनेसे जैसे मैंजीवहूं फिरजीवक्योंगाया सुनो पहि
लेप्राणादिउपाधियोंसेभिन्नकहाहै बीचमेंअवस्थातीनसेरहित-
दिखाया अन्तिमेंजीवकेस्वरूपकाअनुवादकरजीवहीकोब्रह्मक
हाहै ब्रह्मअन्यप्रमाणोंसेनहींजानाजाताहै तिससेइसप्रकरण-
मेंब्रह्मकहानकिजीव श्रुति कतमआत्मेतियोयंविज्ञानमय:प्रा-
णेषुहृद्यन्तर्ज्योति:पुरुष:ससमान:सन्नुभौलोकावनुसंचरतीति प्रा
सईशहै सर्वज्ञरूपप्रज्ञाकेनित्यअवियोगसेसुषुप्तिमेंजीवप्राज्ञआ-

र्गकेपारविष्णुपदकौनहै इसश्राकांक्षामेंइन्द्रियादिसेपरेपरमा-
त्माकोपरमपदकहाहै इन्द्रियेभ्यःपराह्यर्थाअर्थेभ्यश्चपरम्मनःमन-
सस्तुपराबुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परःमहतःपरमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः-
परःपुरुषान्नपरंकिञ्चित्साकाष्ठासापरागतिरिति रथकल्पनामेंजो
इन्द्रियादिहयादिभावसेग्रहणकरेथे तेयहांइन्द्रियमनबुद्धिआदि
समानशब्दहैं अर्थभीइन्द्रियहयोंकेगोचरकहेथे तेहीयहांइन्द्रि-
योंसेपरकहेहैं इन्द्रियाणांग्रहत्वंविषयाणामतिग्रहत्वमितिश्रुतः
पुरुषपशुकोबांधतेहैंतिससेग्रहइन्द्रियांहैं फिरविषयविनाइन्द्रि
यांकुछनहींकरसक्तीहैं तिससेतेविषयअतिग्रहहैं अर्थात्ग्रहसेश्रे
ष्ठहैं यहबृहदारण्यकाअर्थहै विषयसेपरेमनहै क्योंकिविषयेन्द्रि
यव्यवहारकामूलमनहै भोग्यमात्रबुद्धिपरचढ़भोक्ताकोपहुंचता
है बुद्धिसेपरेरथीमहानात्मा कोजानोंभोक्ता भोगसामग्रीसे पर-
होताहै महान्हैक्योंकिस्वामीहै अथवामनोमहान्मतिर्ब्रह्मा-
पूर्बुद्धिःख्यातिरीश्वरःप्रज्ञासंविच्चितिश्चैवस्मृतिश्चपरिपठ्यत इति
श्रुतिः । योब्रह्माणंविदधातिपूर्वंयोवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मैइति
श्रुतिः मननशक्तिव्यापिनी भावि निश्चय ब्रह्मा है आत्माभो-
गाश्रय तात्कालिकनिश्चयकीर्तिशक्ति नियमनशक्तिनैकालिक
निश्चय मास्वत्अभिव्यंजिकाचिदध्यस्तातीतसर्वार्थग्राहिणीसम-
ष्टिबुद्धिरित्यर्थः यहहिरण्यगर्भकीबुद्धिहै हिरण्यगर्भप्रथमजपुरुष
कानामहै वहीसबबुद्धियोंकीपराप्रतिष्ठाहै वहीमहान्आत्मा-
यहांकहाहै वहीपहिलेबुद्धिकेलेनेसेलेचुकेहैं इससेहिरुक्उसका
ग्रहणनहीं किया है वहभीहमारीबुद्धियोंसेपरहैपूर्वोक्तछहइन्द्रि
यादिमेंशरीरएकशेष है शरीरेन्द्रियमनोबुद्धिविषयवेदनासंयुक्त
अविद्यावाले भोक्ता का देहादि की रथादि रूप कल्पना से संसा
रमुक्तिकहकेप्रत्यगात्मब्रह्म की गति यहां विवक्षित है किन्तु एष

सर्वेषुभूतेषुगूढोत्मानप्रकाशते दृश्यतेत्वग्र्ययाबुध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिरिति इस्से वैष्णव परम पददुर्बोधदिखाकेसुबोधार्थयोगकोदिखाताहै यच्छेद्वाङ्मन*सीप्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानआत्मनिज्ञानमात्मनिमहतिनियच्छेत्तद्यच्छेच्छांतआत्मनीति अर्थ वागादिबहिरीसबइन्द्रियोंकाकर्मछोड़मनमेंमनकोभीविषयोंमेंदोषदेखबुद्धिमेंराखे जैसेसुरूपकुरूपविवाहितस्त्रीमेंरतिरूपवतीवारियोषामेंअरति: बुद्धिकोभीमहान्आत्माभोक्तामेंअथवाअग्र्याबुद्धिमेंसूक्ष्मतासेधरे महान्आत्माकोशांतपरमपुरुषमेंजोपराकाष्ठाहै उसमेंरोके ऐसेआगेपीछेदेखनेसेप्रधानकाअवकाशनहीं शरीरअव्यक्तहै ॥

सूक्ष्मन्तुतदर्हत्वात् ॥ २ ॥

सूक्ष्मसेकारणविवक्षितहै सूक्ष्मअव्यक्तशब्दकेयोग्यहोनेसे यद्यपिस्थूलदेहअव्यक्तशब्दकावाचकनहींहै तथापिस्थूलदेहकेआरम्भकभूतसूक्ष्मशब्दकेयोग्यहैं प्रकृतिपदविकृतिमेंदेखनेसे जैसे गोविकारदूधमेंगोप्रकृतिकाप्रयोगहै तैसेही अव्यक्तकेकहिनेसे व्यक्तयोग्यतासेसमुझागयाहै श्रुति तद्धेदंतर्ह्यव्याकृतमासीदिति अर्थ यहविश्वपहिलेव्याकृतनामरूपसेभिन्नथाफिरव्याकृतनामरूपकोछोड़केबीजरूपअव्यक्तशब्दाहैंथा श्रुति गोभि:श्रृणीतममत्सरं अर्थ यहांगायसेसोमकोमिलानेमेंतात्पर्यनहीं है किन्तुगायकीविकृतिदूधमेंहै ॥

तदधीनत्वादर्थवत् ॥ ३ ॥

जोयहजगतअनभिव्यक्तनामरूपवीजात्मकप्रागवस्थअव्यक्तश

* दैर्घ्यंछान्दसं ॥

व्दाहंमानोतोवुद्धोप्रधानकारणवादश्राया क्योंकिइसजगकीप्रा-
गवस्थाप्रधानतासेमानीहै हमतोजगकीस्वतन्त्रप्रागवस्थाकाको
ईकारणनहींमानतेहैं परन्तुईश्वराधीनजगकीप्रागवस्थामानते
हैं उसकेविनाईशसृष्टिनहींकरसक्ताहै वोशक्तिशून्यकीप्रवृतिअ-
सिद्धहै मुक्तोंकापुनर्वन्धनहींहोता क्योंकिविद्यासेवीजशक्तिजर
नेसे अविद्यारूपावीजशक्तिअव्यक्तशव्दवाच्यपरमेश्वराश्रयामाया
मयोमहासुषुप्तिहै जिसमेंस्वरूपबोधशून्यजीव सोतेहैं वहीअ-
व्यक्तहै कहींआकाशशव्दसेकहा जैसे एतस्मिन्खल्वक्षरेगार्ग्या-
काशओतश्चप्रोतश्चेति कहींअक्षरशव्दसेकहा जैसे अक्षरात्परत:
परइति कहींमायासूचनकरी मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुम-
हेश्वरमितिमंत्र वहमायाअव्यक्तअनिर्वचनसेहै जोहिरण्यगर्भ-
कीबुद्धिमहान्है जोजीवमहान्है तोभीजीवभावअव्यक्तकेआ-
धीनहोनेसेमहत्सेपरअव्यक्तयहकहाहै अन्यकहतेहैंकिदेहदोहैं
एकस्थूलदूसरासूक्ष्म स्थूलकाग्रहणनहीं क्योंकिदृष्टउपायोंसेसु-
शोध्यहै परसूक्ष्मदु:शोध्यहोनेसेउसकायहांग्रहणहै यहसत्यनहीं
है क्योंकिशुद्धिकाबोधकआख्यातनहोनेसेविष्णुकापरमपदकौन
है इसविवक्षासेइससेपरेवहउससेपरेवहफिरपुरुषसेपरेकुछनहीं
कहायहपक्षरहोमेराकुछविगाड़नहींहै आनुमानिककेनिराससे

ज्ञेयत्वावचनाच्च ॥ ४ ॥

सांख्यनेप्रधानकेज्ञानसेमुक्तिमानीहै गुणपुरुषान्त*रज्ञान
नात्कैवल्यमिति सोनहींहै क्योंकिवेदमेंमुक्तिऔरऐश्वर्यकेलिये
प्रधानकीउपासनानहींकहीहै कहींअणिमादिकेलियेभीप्रधान

* भेद ॥

ज्ञेयकहाहै विभक्तिविशेषप्रतिपत्तयेप्रधानंज्ञेयमिति यहांतोके वलअव्यक्तशब्दहै नज्ञातव्यवाउपासितव्यकहाहै वेदकेविनाव- तायेंकेसेमुक्तिकेलियेउसकाज्ञानकरसक्तेहैं मेरेमतमेंविष्णुनाम पदएकज्ञेयहै उसकेदर्शनार्थअव्यक्तशब्दसेशरीरकाउपन्यासहै ॥

वदतीतिचेन्नप्राज्ञोहिप्रकरणात् ५

अत्राहुश्चसांख्या:ज्ञेयत्वावचनादितीदमसिद्धंकथंश्रूयतेहिउ त्तरत्राव्यक्तशब्दोदितस्यप्रधानस्यज्ञेत्ववचनं ॥

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययन्तथारसंनित्यमगन्धवच्चयत् अना- द्यनंतंमहत:परंध्रुवन्निचाय्यतंमृत्युमुखात्प्रमुच्यतेइति अर्थ वह- मृत्युसेबचताहै जोअव्याकृतकोउपासनाकर्त्ताहै निचाय्यपदसे प्रधानवेदमेंज्ञेयउपास्यकहाहै सोनहींहै क्योंकिनिचाय्यपदसे प्राज्ञपरमात्माहीकहाहै प्राज्ञकामहाप्रकरणहै।नसेपुरुषान्नपर: किञ्चित्साकाष्ठासापरागति एषसर्वेषुभूतेषुगूढात्मानप्रकाशतेइ ति इनसेआत्माहीदुर्ज्ञेयकहाहै नकिप्रधानयच्छेद्वाङ्मनसीप्राज्ञ इससेईश्वरहीकेज्ञानार्थसंयमविहितहै नकिप्रधानार्थ औरमृ- त्युसेवचनायहफलसांख्यकोभीप्रधानमात्रकोउपासनासेइष्टनहीं है किन्तुचेतनात्मविज्ञानसेमृत्युसेवचताहै यहीसांख्यकोभीइष्ट हैऔरसबवेदांतोंमेंअशब्दादिधर्मप्राज्ञहीकेकहेहैं नकिप्रधानके तिससेप्रधानज्ञेयऔरअव्यक्तशब्दवाच्यनहीं है ॥

त्रयाणामेवचैवोपन्यास:प्रश्नश्च ॥ ६ ॥

काठकमेंहैकि सत्वमग्निंस्वर्ग्यमध्येषिमृत्योप्रब्रूहितंश्रद्दधा नायमह्यंयहप्रश्नअग्निकेवारेमेंहै येयंप्रेतेविचिकित्सामनुष्येऽस्ती त्येकेनायमस्तीतिचैकेएतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाहंवराणामेषवर—

स्तृतीयइति यहजीवकेवारेमेंप्रश्नहै अन्यत्रधर्मादन्यत्राधर्मादन्
त्रास्मात्कृताकृतात् अन्यत्रभूताच्चभव्याच्चयत्तत्पश्यसितद्वदइत
दि यहप्रश्नपरमात्माकेवारेमेंहै प्रतिवचन लोकादिमग्निन्तमु
वाचतस्मै यादूष्टकायावतीर्वायथावेति यहअग्निकेवारेमें हन्तं
इदंप्रवक्ष्यामिगुह्यं ब्रह्मसनातंयथाचमरणंप्राप्यात्माभवतिगौत
म योनिमन्येप्रपद्यन्तेशरीरत्वायदेहिनःस्थाणुमन्ये तुसंयन्तियथ
कर्मयथाश्रुतमिति जीवकेवारेमें नजायतेम्रियतेवाविपश्चिदि
ईशकेवारेमेंयहांप्रधानकेवारेमेंनप्रश्ननउत्तरहै वापनेनचिकेत
नामी बेटे कोमृत्यु केपास भेजाउसनेउसेतीनवरदियेनचिकेतने
भीप्रथमवरसेवापकीसौमनस्यदूसरेसेअग्निविद्यातीसरेसेआत्म
विद्यामांगी जीवप्राज्ञसेअन्यनहींहै इससेपृष्टव्यकेभेदसेप्रश्नक
भेदनहींहै तत्वमसीति यहांभीअन्यत्रधर्मादित्यादिप्रश्नकाप्रति
वचननजायतेम्रियतेवेतिजननमरणकेनिषेधसेशारीरपरमेश्वर
काअभेददिखायाहै स्वप्नजागरितकोदेखनेवालेजीवकेमहत्वा
भुत्वविशेषणहैं उसीकाशोकमननसेदूरहोताहै इससेभीप्राज्ञ
अन्यजीवनहींदिखायाहै यथास्वप्नान्तंजागरितांतंचोभौयेनानु
पश्यतिमहांतंविभुमात्मानंमत्वाधीरोनशोचतीतिकिञ्चजीवप्रा
ज्ञकेभेददर्शनकाअपवादहै तथाग्रेयदेवेहतदमुत्रयदमुत्रतदन्वि
हमृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यतीति जीवहै वानहीं इ
स प्रश्न के पीछे नचिकेत को पुत्रादि अनेक कामनाओं से मृत्यु
नेलुभायानचिकेतयदानचलातदाउसकेअर्थमृत्यु नेअभ्युदयनि
श्रेयसकाविभागविद्याअविद्याकाविभागदिखायातोजानाकि
हविद्याकामहै नइसकोबहुकामलोलुपकरसक्तेहैं यहकहिपि
मृत्यु उसकीवो उसकेप्रश्नकीप्रशंसाकरबोला तंदुर्दर्शंगूढमनु
प्रविष्टंगुहाहितंगह्वरेष्ठम्पुराणं अध्यात्मयोगाधिगमेनदेवंमत्वाधी

रोहर्षशो।कोजहातीति इससेभीजीवप्राज्ञका।अभेदविवर्चितहै प्रथमदेहादिसेभिन्नआत्माकोअस्तितापूछी फिरउसकोअसंसारितापूछताहै जोलोअविद्यानहींछूटतीहै तोलोधर्मादिविषयकजीवकोजीवत्वनिवृत्तनहींहै अविद्याकोनिवृत्तिमेंप्राज्ञहीहै तत्वमसीसि अविद्यामेंवाअविद्याकेदूरहोनेमेंवस्तुकाकुछविशेषनहींहोताहै जैसे अन्धेरेमेंपरीरस्सीकोअहिजानखड़ाहोजावे कांपे भागे वा उसकोअन्यकहेकि यहअहिनहींपररस्सीहै वहयहसुनअहिभयकम्पपलायनछोड़ताहै फिरअहिधीकेआनेजानेकालमेंरस्सीवस्तुकाकुछविशेषनहुआ अग्निजीवब्रह्मकल्पनायुक्तहैं प्रधानकल्पनामेंनवरदाननप्रश्न नप्रतिवचनहै यहवैषम्यहै ॥

महद्वच्च ॥ ७ ॥

जैसेसांख्यनेमहच्छब्दका।अर्थप्रथमजसत्तामात्रकहाहै औरवैदिकोंनेआत्माकहाहै तैसेहीसांख्यसेअव्यक्तशब्दप्रधानमेंप्रयुक्तऔरवैदिकोंसेअव्याकृतप्रथमजसत्तामात्रमेंप्रयुक्तहै तिससेअव्यक्तशब्दवाच्यसूक्ष्मवपुःनकिप्रधानहै श्रुति बुद्धेरात्मामहान्परः महांतंविभुरात्मानं वेदाहमेतंपुरुषंमहांतमित्यादि इससेआनुमानिकप्रधानशब्दनहींहै ॥

——*○*——

(अजाधिकरण ॥ २ ॥)

चमसवदविशेषात् ॥ ८ ॥

सोमरसपीनेकेलियेयज्ञमेंकाठकापात्रचमसकहाहै अजामेंकां इसमन्त्रमेंरोहित रजः रञ्जनसे शुक्ल सत्व प्रकाशनसे कृष्णतमः आवरणसे इनतीनोंकीसाम्यावस्था।अवयवधर्मोंसेकहो

रोहितशुक्लकृष्णा नजन्मवहअजाहै मूलप्रकृतिरविकृतिः इ
वचनसेजोअजाशब्दकोरीरूढहैहो।वुहरूढियहांमाननयोग्यन
हींहै विद्याकेप्रकरणसे वहांअजावहुतमहदादिप्रजासुखदुःख
मोहयुक्तकोजन्मतीहै उसीप्रकृतिको एक अज पुरुष प्रीति
सेवकहोकेअनुसोताहै उसकोअविद्यासेप्राप्तहै।केमैंसुखीदुःखी
मूढ़हूं इसअविवेकसेसंसारीहोता है फिरएकअन्यअजपुरुषवि
वेकज्ञानीकृतभोगापवर्गप्रकृतिकोछोड़ताहै इत्यर्थः तिससे
कापिलोंकीकल्पना।वेदमूलहैयहमतकहो। मेराकहिनासुनो य
हमन्त्रसांख्यवादमेंनहींनइसकोउत्साहहैकि किसीकोस्वतन्त्रव
दठहिरावे सर्वत्रकिसीनकिसीकल्पनासे अजादि सम्वाद की
सिद्धिहोनेसेसांख्यवादहीयहांइष्टहै इसमेंकारणकाअभावहै
समवत् यथाह्यर्वाग्बिलश्चमसऊर्ध्वबुध्नः इसमन्त्रमेंस्वतन्त्रता
सहनामयहचमसहै यहइष्टवाक्यनहीं क्योंकिसर्वत्रभीजिसवि
सोढवसेअर्वाग्बिलादिकल्पनासिद्धहोनेसे ऐसेहीइसमेंअजाश
ब्दसेप्रधाननहींलेसक्तेहैं चमसकानिश्चायकयहवाक्यशेषहैइद
च्छिरएषह्यर्वाग्बिलश्चमसऊर्ध्वबुध्नइति यहांकौनअज।जाननयो
ग्यहै कहिताहूं ॥

ज्योतिरुपक्रमात्तुतथाह्यधीयतएके ९
तुनावधार्यते ॥

कौनअजाहै इसकाउत्तरवाक्यशेषहै एकेशाखीछान्दोगा
यदग्ने रित्यादिवेतेजजलअन्नजानेजातेहैं रोहितादिशव्दसाम्य
से रोहितादिशव्दरूपमेंमुख्यऔरगुणचयमेंभाक्तहैं तेजोवन्न*ल
क्षणाद्रव्यरूपाअजालेनाउचितहै नरञ्जनादिसत्वादिगुणयोगसे

* भक्तय ॥

गुणवयलचणा जैसेछान्दोग्यशाखामेंप्रधानकाग्रहणनहींहै तैसे-हीश्वेताश्वतरमेंभीमायाकेप्रकरणसेप्रधानकाग्रहणनहींहै तैसे यहांब्रह्मवादीकहतेहैं किंकारणंब्रह्मेति इसउत्थानमें तेध्यानयोगानुगताअपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निरूढामिति इसउपक्रममें पारमेश्वरीशक्तिजगविधायनीसुनीहैवाक्यशेषमें मायांतुप्रकृतिं विद्यान्मायिनंतुमहेश्वरमिति अन्य: योयोनिंयोनिमधितिष्ठत्ये-कइति इनमन्त्रोंमेंईशशक्तिहीकहीहै नस्वतंत्राअजानामी प्र-करणसेवहीदैवीशक्तिअव्याकृतनामरूपा पहिलेनामरूपकीअव स्थामेमन्त्रनेकहीहै मायाहीअजाहै कैसे तेजजलअन्नइनतीन-रूपोंसेअजात्रिरूपाजानसक्तेहैं नतेजोअन्नरूपामेंअजाशब्दरूढहै नवायौगिकहै इसकाउत्तर ॥

कल्पनोपदेशाच्चमध्वादिवदविरोध: १०

यहअजाशब्दअजाकृतिनिमित्तकनहींनताक्याहै चराचर कीयोनितेजोअन्नरूपकीकल्पनासेउपदेशहै जैसे लोकमेंयहच्छा-सेकोईअजारक्तशुक्लकृष्णवर्णहो बहुवर्करासमानरूपवर्करउस कोकोईअजसेवेहै कोईउसकोभोगकरछोड़ताहै इसढबभूतों कीप्रकृतितेजोअन्नलक्षणात्रिवर्णाचराचरजगकोअपनेसमानज-न्मतीहै अविद्वान्इसेभोगताहै विद्वान्त्यागताहै मध्वादिवत् जैसे असमधुआदित्यकोमधु वोअधेनुवाणीकोधेनुअन्गिनद्युलो कादिकोअग्निकल्पनाकरीहै तैसे अनजाकोअजाकल्पाहै ति-ससेतेजोअन्नमेंअजाशब्दकाप्रयोगविरुद्धनहींहै याहच्छिकशब्दहै अन्नसेयहांपृथिवीलीहै तिससेतेजोअन्नरूपाहीप्रकृतिअजाहै औ रनसांख्यप्रियप्रधानहै । जनेछागसुतनानारूपा तिमिजलतेज-धरावहुरूपा ॥

(पञ्चजनाधिकरण ॥ ३ ॥)

नसंख्योपसंग्रहादपिनानाभावादति रेकाच्च ॥ ११ ॥

बृहदारण्यकेछठेअध्यायमेंसुनाहै किजिसमेंपञ्चपञ्चजनऔरव्योमस्थितहै तिसहीआश्रयकोआत्माअमृतब्रह्ममानकेमैंविद्वान्अनन्तजीवाहूं यस्मिन्पञ्चपञ्चजनाआकाशश्चप्रतिष्ठितस्तमेवमन्यआत्मानंविद्वान्ब्रह्मामृतोमृतमस्मीति भाषिकनामशतपथब्राह्मणस्वरविधायकग्रन्थमेंस्वरितोनुदात्तोवेति इससूत्रसेजोमन्त्रमेंअनुदात्तपरस्वरितथा सोब्राह्मणग्रन्थमेंउदात्तहै यहअपवादमानाहै यहांअनन्तोदात्तस्वरपारिभाषिकहै ॥

द्विपञ्चशब्दसेपञ्चसंख्याकाविषयरापञ्चसंख्यासुनीहै तेपञ्चपञ्चकवर्गसेपचीसहुये इनपचीससंख्याओंनेपचीससंख्येयपदार्थोंकोबुलालिया इससेसांख्यमतमेंपचीसतत्वसिद्धहुई मूलप्रकृतिरित्यादि अर्थसांख्योक्तसंख्यासुननेसेप्रधानादिवैदिकहैं यहआशामतकरो क्योंकि नानाभावात् पचीसतत्वतोनानाहैंपञ्चज्ञानेन्द्रिय पञ्चकर्मेन्द्रियइनदशमेंपञ्चकदोहैं पञ्चतन्मात्रामेंपञ्चस्थूलप्रकृतिहैं तोभीआत्माआकाशपृथक्कहाहै तिससेसत्वरजतममहत्अहङ्कारपञ्चकतंव्यहै मनचारभूतजेपञ्चहैं इससेपचीसकेवीचऔरसंख्यानहींहै परपञ्चशब्दजनशब्दकेसङ्गसमस्तहै पञ्चजनइनदोनोंकोसमासनमानकेपचीसकीसंख्यापूरीकरीहैब्राह्मणस्वरएकपदकानिश्चायकहै प्रकटार्थकारनेतोपाठकप्रसिद्धअन्तोदात्तस्वरपारिभाषिककहाहै इसव्याख्यानकोकल्पतरुकारनेदूषितकरकहाकि अन्तानुदात्तंहिसमाम्नातारःपञ्चजनशब्दमधी-

यतेइति पाठकप्रसिद्धिरसिद्धेति तथाचपञ्चपञ्चजना इतिमावि कांतोदात्तःस्वरःयस्मिन्पंचपञ्चजनाइत्यन्तानुदात्तोब्राह्मणस्वरः इतिविभाग तैत्तिरीयकप्रयोगसेएकपदस्वरविभक्तिहै आज्यत्वां त्वापंचानांपंचजनानांदेवविशेषाणांयन्त्रायधर्चायगृह्णामोत्या- ज्यग्रहणमन्त्रशेषःदेवतांकेकर्ममेंयन्त्रवदवस्थितंशरीरन्तदेवधर्त्त- इहामुत्रभोगाधारंतस्मैतस्याविकल्पार्थमिति योजनोक्तिःसमा- ससे नआवृत्तिनवीप्साहै वोवीप्साकेनहे।नेसेपञ्चकदोकाअ- सम्भवहै तिससेपचीसकोसंख्याअसिद्धहै अतिरेकाच्च पचीसतत्व सेअधिकआत्माआकाशदोहैं तोसत्ताईसतत्वहैं आत्माप्रतिष्ठा- काआधारकहाहै आत्माचेतनजोपचीसमेंसमागयातोवहआ धारवोआधेयकेयोग्यनहोगापृथक्मानेसेतत्वकीसंख्याअधिक- होगो वहतुमकोइष्टनहीं तैसे आकाशमेंभोजानो संख्याहोसु ननेसेवहुतसुनेपचीसतत्वोकोकैसेपकडतेहो जनपदतोउनमेंरू ढनहीँहै दिक्संख्येसंज्ञायां इससूत्रसेसंज्ञामेंपञ्चशव्दकोजनश- व्दकेसङ्गसमासहै तोपञ्चजनशव्दकेचित्पञ्चजननामोमेंरूढहै ते केतेहैं इससेपञ्चकहैं जेकोईपञ्चजननामहैंतेपञ्चहैं यथासप्तर्षयः सप्तइति कर्मधारयसमासहै पञ्चतेजनाइति नकिपञ्चपञ्चवोज कहिनेसेपचीसवीजकोनाईं यहांसमाहार ॥

प्राणादयोवाक्यशेषात् ॥ १२ ॥

वेसंज्ञोप्राणादिपांचवाक्यशेषसेप्रकटहैं प्राण१ चक्षुः२ श्रो- त्र३ मन४ अन्न५ श्रुति प्राणस्यप्राणमुतचक्षुषश्चक्षुरुतश्रोत्रस्य- श्रोत्रमुतान्नस्यान्नंमनसोयेमनोविदुरिति यस्मिन् इसमन्त्रसेआ- गेकेमन्त्रमेंप्राणादिपञ्चब्रह्मस्वरूपनिरूपणकेअर्थनिर्देशकरेहैं त- होपञ्चजनवाक्यशेषसेप्राप्तहैं क्योंकिसमीपहे।नेसेफिरकैसेहुआ

प्राणादिमेंपञ्चजनशब्दकाप्रयोगतुमहीकहोतत्वोंमेंकैसेहुआ पञ्चजनशब्दकाप्रयोग हमतोसजातीयश्रुतिसेप्राणादिलेतेहैं नतुमहारेतौरपरविजातीयस्मृतिसेकल्पिततत्वोंकोजनसम्बन्धसे प्राणादिभीजनहैं जनवाचीपुरुषप्राणोंमेंकहाहै तेवाएतेपञ्चब्रह्मपुरुषाः इसमेंप्राणोहमातेत्यादिचब्राह्मणं जैसे अश्वकर्णादृच्चमें वोउद्भित्यागमेंरूढहैं तैसे पञ्चजनप्राणादिमेंरूढहैनयोगिकहै प्रसिद्धशब्दकेसङ्गअप्रसिद्धकाअर्थप्रसिद्धकेवारेमेंसमुझाजाताहैयथोद्भिदायजेतपशुकामःयूपंछिनत्तिवेदिंकरोति प्रसिद्धार्थप्राणादिशब्दोंकेनिकटप्रयुक्तपञ्चजनशब्दसेप्राणादिकनिश्चितहैं किसीनेदेवपितरगन्धर्वअसुरराक्षसजेपांचकहेहैं अन्यनेचारवर्णनिषादपञ्चमजेकहेहैं क्वचिच्चयत्पांचजन्ययाविशेति अर्थ पांचजन्ययाप्रजयाविशतीतिविट् तयाविशापुरुषरूपयेन्द्रस्याह्वानाथैघोषाःसृष्टाइतियत्तद्युक्तंघोषातिरेकेणेन्द्राह्वानायोगादिति इसश्रुतिकेअनुसारप्रजामात्रकेग्रहणमेंभीकुछविरोधनहींहै ॥

ज्योतिषैकेषामसत्यन्ने ॥ १३ ॥

इससेतद्देवाज्योतिषांज्योतिरित्यादि देवाउपासतइतितिससेप्राणादिपञ्चजनशब्दसेकहेहैं औरनकिपचीसतत्वकीसंख्यामें होमाध्यन्दिनोंकीशाखामेंपञ्चजनशब्दप्राणादिमें क्योंकिवे अन्नशब्दकोप्राणादिमेंपढ़तेहैं काण्वशाखामेंतोअन्नशब्दप्राणादिमेंनहींपढ़ाहै फिरकाण्वकेमतमेंप्राणादिपञ्चपञ्चजनकैसेहोंगे इसकाउत्तरहैकि यस्मिन्० इसमन्त्रसेपूर्वकेमन्त्रमेंब्रह्मरूपनिरूपणकेअर्थज्योतिशब्दपढ़तेहैं तद्देवा इसमन्त्रमें जैसे षोडसीग्रहणाग्रहणकाविकल्पहैइच्छाभेदसे तैसे शाखाभेदसे ज्योतिशब्दकाअन्नशब्दसेविकल्पहै ॥

(कारणत्वाधिकरण ॥ ४ ॥)

कारणत्वेनचाकाशादिषुयथाव्यपदिष्टोक्तेः ॥ १४ ॥

हरएकवचनसेसृष्टिअन्यर कहीहै आत्मनआकाशःसंभूतः इससेआकाशादिसृष्टिकही तत्तेजोसृजतेति इससेतेजआदिक ही सप्राणमसृजतप्राणाच्छ्रद्धामिति इससेप्राणादिकी है सइमान्लोकानसृजताम्भोमरीचिर्म*रमापइति इससेक्रमहीनलोकों काजन्मकहा यहक्रमविचित्र है छांदोग्य में असत्पूर्व सृष्टि पढ़ी है असद्वाइदमग्रआसीत्ततोवैसदजायतेति असदेवेदमग्रआसीत्तत्सदासीत्तत्समभवदितिच कहींअसद्वादकादूषणकरसत्पूर्वसृष्टि कीप्रतिज्ञाकी तद्वैकआहुरसदेवेदमग्रआसीदिति यहकहिफिर कहाकिहेप्रियदर्शनयहकैसेहोगा कुतस्तुखलुसोम्यैवंस्यादितिहोवाच कथमसतःसज्जायेतेति सदेवसोम्येदमग्रआसीदिति कहीं स्वयं’कृतिकाजगकीप्रक्रियाकही तद्धेदंतर्ह्यव्याकृतमासीत्तन्नामरूपाभ्यामेवव्याक्रियतइति ऐसेबहुविधविरोधसेऔरवस्तुमेंविकल्पकीअनुपपत्तिसेवेदान्त वचनजगके कारणके निश्चयपर नहीं-योग्यहैं स्मृति और न्याय की प्रसिद्धि से जगकारणप्रधानकाग्रहणन्याय्यहै सोमतशोचोसृज्यमानगगनादिमेंविगानहै तोभीस्रष्टामेंकिञ्चिद्विगाननहींहै कैसे यथाव्यपदिष्टोक्तेः सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति तदात्मानंस्वयमकुरुते तस्माद्वाएतस्मादात्मनःआकाशःसंभूतःआकाशाद्वायुःवायोरग्निरग्नेरापअद्भ्यःपृथिवीपृथिव्याओषधयःओषधिभ्योन्नंअन्नाद्रेतारेतसःपुरुषःसवाएषपुरुषोन्न

---

* मर्त्यलोकइत्यर्थः ॥ ’ अकर्तृकासृष्टिः ॥

रसमय: तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतिहै बहुस्यांप्रजायेति अपनेकोब हुतहोनाकहनेसेसृष्टिकास्रष्टासेअभेदकहाहै इदंसर्वमसृजतय दिदंकिञ्चति यहवाक्यसबजगकीउत्पत्तिकेपहिलेअद्वितीयस्रष्टा कोकहताहै जैसे यहतैत्तिरीयमेंब्रह्मकारणकहाहै तैसे छान्दो ग्यमेंहै सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतदैक्षतबहुस्यांप्र जायेयेति तत्तेजोसृजतेति तथात्मावाइदमेकएवाग्रआसीन्नान्य त्किञ्चनमि* षत्सऐक्षतलोकानुसृजाइति यहऐतिरेयब्राह्मणहै॥

ऐसेवाक्यकारणनिरूपणपरअविरुद्धार्थहैं तोभीकार्यमेंवि रोधदेखतेहैं कहींगगनपूर्व कहींतेज:पूर्वसर्गकहाहै ताकार्यके विरोधसेकारणब्रह्मसबवेदांतोमेंअविरुद्धनहींहोसक्ताहै यहन योग्यहै क्योंकिस्वप्नसृष्टिकीप्रतिअहंकोअन्यथाजानकेसोहं इस प्रत्यभिज्ञासेद्रष्टामेंभीनानात्वपहुंचेगा श्रुतिसृष्टिकोअपनीरी तिसेक्योंकहतीहैं इससेसमुझागयाकिउनकातात्पर्यसृष्टिकहने मेंनहींनकोईसृष्टिसेबंधापुरुषार्थदेखतेहैंवासुनतेहैं नकल्पसके हैं उपक्रमवोउपसंहारसेजहांरब्रह्मविषयवाक्यहैं उनकेसङ्गमि लकेकामकरतीहै श्रुतिदिखातीहै किसृष्टिआदिप्रपञ्चब्रह्मबो धार्थहै अन्नेनसोम्य?शुङ्गेनापोमूलमन्विच्छाद्भि:सोम्यशुङ्गेनतेजो मूलमन्विच्छतेजसासोम्यशुङ्गेनसन्मूलमन्विच्छसन्मूला:सोम्येमा: प्रजा:यहसामहै अर्थ जैसे घटमृत्तसेभिन्ननहींहै तैसे कार्यकारण सेभिन्ननहींहै यहीजतानेकेअर्थसृष्टिकाप्रपञ्चसुनायाहै ब्रह्मवो धाधीनतोफलसुनतेहैं ब्रह्मविदाप्नोतिपरं ॥

समाकर्षात् ॥ १५ ॥

कारणविषयविरोधकानिरोधसुनोअसद्वाइदमिति निरा

? कार्येणलिंगेन ॥

* सव्यापरं ॥

त्मककारणनहीं किससेजाना असन्नेवसभवत्यसद्ब्रह्मेतिवेदचेद
स्तिब्रह्मेतिचेद्वेदसन्तमेनन्ततोविदुः इससेअसद्वादकानिषेधकर
अस्तिस्वरूपब्रह्मवाह्यअन्नमयादिकोशोंकीपरम्परासेप्रत्यगात्मा-
कानिर्धारणकर फिरसोकामयतेतिउसीप्रकृतिकासमाकर्षणक
रफिरसृष्टिकोउसीसेकहकेतसत्यंयहीकहीपूराकरफिरउसीप्रकृ
तअर्थमें असद्वाइदं जोइसमन्त्रमेंनिरात्मकमानोतोअन्यकेसा
माकर्षणमेंअन्यकेउदाहरणसेअसम्बन्धवाक्यहोजावेगातिससेस
त्पदव्याकृतनामरूपकाबोधकहै उत्पत्तिकेपहिलेनामरूपप्रकट-
नथा नकिनरशृङ्गसमतुच्छथा लोकमेंअसत्मेंकुछजन्मानदेखनेसे
इसअपेक्षासेमत्होब्रह्मअसत्केसमानथायहउपचारहै तित्तिरि
श्रुतिमेंसूत्रकोजोड़अवछान्दोग्यमेंजोड़तेहैं असदे तत्सदासीदि
तिसमाकर्षणसेजोअत्यन्तअभावमानोतोतत्सदासीदिति किस
कासमाकर्षकरताहै तद्वैके यहांएकशाखीनहींहै किन्तुअनादि
संसारचक्रस्थवेदवाह्यहैं क्योंकि होममेंविकल्पहोताहै नवस्तु
मेंअसम्भवसे तिससेश्रुतिग्रहीतसत्पक्षकीदृढ़ताकेलियेमन्दमति
योंसेजोकल्पितअसत्पक्षथा उसकाकथनकरनिराकरण कराहै
तद्वेदन्त इममेंभीबिनाअध्यक्षकर्त्ताकेजगरचनानहींकहीहै क्यों
किसएषइहप्रविष्टआनखाग्रेभ्यः इममेंभीअध्यक्षकाव्याकृतका-
र्यमेंअनुप्रवेशकासमाकर्षणहै जोनिरध्यक्षव्याकरणमानोगेतोस
इसशब्दसेकार्यमेंअनुप्रवेशीकौनसमाकर्ष कियाजावेगा न कोई
सुनतेताहैं चेतनकादेहमेंअनुप्रवेशजोदेहमेंप्रविशहै वहचेतनहै
कहां पश्यंश्चक्षुःशृण्वश्छ्रोत्रंमन्वानोमनइत्यादि श्रुतिभी साध्य
क्षजगकीव्याक्रियादिखातीहै तेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरू
पेव्याकरवाणीति व्याक्रियते यहकर्मकर्त्तामेंलकारहै ईश्वरव्या
कर्त्ताहोनेपरभीसौकर्यकीअपेक्षासेकहाहै जैसे लूयतेकेदारःस्व

यमेवेतियहांकाटनेवालेकेहोनेपरभीकहाकिखेतआपही कटता है अथवाकर्ममेंलकारहै तोकर्त्ताकाअर्थसेआक्षेपकरप्रयोगहोता है य-थागम्यतेग्रामः यहांभीकर्त्ताअर्थाक्षिप्तहै ॥

(षोडशकलाधिकरण ॥ ५ ॥)

जगद्वाचित्वात् ॥ १६ ॥

योवैबालाकेएतेषांपुरुषाणांकर्त्तायस्यवै*तत्कर्मसवैवेदित-व्यइति जीव मुख्यप्राण ईश वाक्यशेषमें अथास्मिन्प्राणएकधा भवतीति आदित्ये पुरुषश्चन्द्रमसिपुरुषः इनकाभीप्राणकर्त्ताहै आदित्यादिवाप्राणावस्थाविशेषहैं कतमएकोदेवइतिप्राणइति सब्रह्मेत्याचक्षतेइत्यादि यस्यमहिमानःसर्वेदेवाः त्यत्परोक्षशा-स्त्रैकवेद्यहै जीवकेभीधर्माधर्मलक्षणकर्महैं यस्यवैतत्कर्मेति वा लाकिऔरअजातशत्रुदोनोंएकसोतेपुरुषकेपासगयेउसकोराजा नेकहाकिहेबृहत्पांडुरवासःसोमराजन्इससम्बोधनसे सम्बोधन कियापरतोभीवहसम्बोधननसमुझातोजानाकिअभोक्ताप्राणा-दिसम्बोधननजाननेसेअनात्माहैं फिरराजानेयष्टिघातसेउसको उठाकेभोक्ताजीवकाबोधवालाकिकोकराया तिससेलोकमेंउठ नाजीवलिङ्गहै तद्यथाश्रेष्ठीस्वैर्भुङ्क्तेयथावास्वाःश्रेष्ठिनंभुञ्जन्त्येवमे वैषप्रज्ञात्मैतैरात्मभिर्भुङ्क्तेएवमेवैतआत्मानएनमात्मानंभुञ्ज-न्तीति अर्थ जैसे गृहीभृत्यादिकाकमायाखाताहै भृत्यादिउस-केउपजीवीहैं तैसे जीवभीभोगोपकरणआदित्यादिप्रकाशसेभो गताहै वेभीहविर्ग्रहणादिसेजीवकेउपजीवीहैं इससेभीजीवका लिङ्गभोक्तृत्वहै प्राणभृत्जीवभीप्राणहीहै अबतोसिद्धहुआकिमु

* परिस्पन्दकर्महै

ख्यप्राणवीजीवइनदोमेंसेअन्यतरकाग्रहण नईशका यहन ईश है उपक्रमसे सृषावैखलुमासम्बदिष्ठाब्रह्मतेब्रवाणीति ईशसे अन्यस्वतन्त्रकर्त्तानहीं इनपुरुषोंकोईशाधीनकर्तृत्वहै चलनवो अदृष्टवाचकयहांकर्मशब्दनहींहै नउनदोनोंकाप्रकरणहै नशब्द नेकहेहैं एतत्कर्मइमसेपुरुषोंकोनहींकहाहै कर्मशब्दनपुंसकहै औरएकवचनहै तोवहुतपुरुषोंकोनलेसकेगा तोप्रत्यक्षजगत्सर्व नामएतत्पदसेनिर्देशकराहै एतदेवजगत्कर्मयत्क्रियतइति यद्यपिजगत्भीअप्रकृतवोअपठितहै तद्यापिजगकेएकदेशआदित्यादिपुरुषोंकेकहिनेसेसमस्तजगकायहांग्रहणहै जिनसूर्यादिपुरुषोंकोवालाकिनेब्रह्मकहाथा उनकोअब्रह्मठहिराकेसबजगकर्त्तासर्वज्ञईशअविधारितहै ॥

जीवमुख्यप्राणलिङ्गान्नेतिचेत्तद्व्याख्यातं ॥ १७ ॥

जैसेस्वामीसेवकोंसेऔरसेवकस्वामीसेमिथोव्यवहरतेहैं तैसेहीप्राज्ञआत्माजीवात्माओंसेऔरजीवात्माप्राज्ञात्मासेमिथोव्यवहरतेहैं इसढवजीवकेचिन्हसेजीवऔरप्राणकेचिन्हसेप्राणहै औरनकिईश्वर सोमतकहो क्योंकि ब्रह्मकहिनेकीप्रतिज्ञाकेउपक्रमसेऔर सब पापोंसेकुटकेसबसेश्रेष्ठस्वाराज्यआधिपत्यकोपाताहै जोऐसाजानताहै इसउपसंहारसेवाक्यब्रह्मबोधकनिश्चितहै औरयहोबातउपासात्रैविध्य इससूत्रमेंव्याख्यातहै श्रुति ब्रह्मतेब्रवाणिमर्वान्याप्मानोपहत्यसर्वेषांभूतानांश्रैष्ठ्यंस्वाराज्यमाधिपत्यम्पर्येतियएवंवेदेति प्राणएवैकधाभवतीति उपसंहार भोब्रह्मविषयकहै निरतिशयफलसुन्नेसेसर्वान्याप्मनोपहत्यसर्वे

षांचभूतानांश्रेष्ठंस्वाराज्यमाधिपत्यम्पर्यैतियएवंवेदेति ॥

प्राणशब्दभीब्रह्मविषयकदेखाहै प्राणबन्धनंहिसोम्यमनःइत्यादि उपक्रमवोउपसंहारमें जीवलिङ्गभीअभेदकीअभिप्रायसे ब्रह्मविषयकहै ॥

अन्यार्थंतुजैमिनिप्रश्नप्रतिवचनाभ्यामपिचैवमेके ॥ १८ ॥

इसवाक्यमेंयहविवादमतकरो।किजीवपरवाब्रह्मपरहै जिससे जीवकेपरामर्शकोइसमेंजैमिनि ब्रह्म कीप्रतिपत्यर्थ मानताहै किससे प्रश्नप्रतिवचनाभ्यां प्रश्न क्वैषएतद्बालाकेपुरुषोशयिष्टक्वाएतदभूतकुतएतदगादिति ॥

अर्थ हेबालाकि जिससोनेमेंकुछज्ञाननहींरहताहै तैसायहपुरुषकहांसोताहै सोताहुआकिसकेसङ्गएकहोताहै फिरकहांसेनिकलआताहै प्रतिवचन यदासुप्तःस्वप्नंनकञ्चनपश्यत्यथास्मिन्प्राणएवैकधाभवतीत्यादि शयनवोभवनका आधारउठनादिप्राणशब्दवाच्यब्रह्महै ॥

एतस्मादात्मनःप्राणायथायतनंविप्रतिष्ठंतेप्राणेभ्योदेवादेवेभ्योलोकाइति सुषुप्तिमेंपरब्रह्मकेसाथजीवएकताको पहुंचता है फिरजाग्रतमेंपरब्रह्मसेप्राणादिजगजन्मताहै यहवेदांतसीमाहै अपिचैवमेकेएकशाखिवाजसनेयिन इसबालाकिऔरअजातशत्रुकेसम्वादमेंस्पष्टविज्ञानमयशब्दसेजीवकोपढ़केजीवसे भिन्नपरमात्माकोपढ़तेहैं यएषविज्ञानमयःपुरुषःक्वैषतदाभूत्कुतएतदगादिति इसप्रश्नमें प्रतिवचनमेंभी यएषोंतर्हृदयआकाशस्तस्मिन्शेतइति आकाशशब्दपरमात्मामेंप्रयुक्तहै दहरोस्मिन्नन्त-

राकाश इमसे किञ्चसर्वंएतत्रात्मानोव्युच्चरन्तीति इसमेंउपाधि वालेजीवोंकाअन्यसेनिकरनाकहितेहुये परमात्माकोकारणक-हतेहैं ॥

(वाक्यान्वयाधिकरण ॥ ६ ॥)

वाक्यान्वयात् ॥ १९ ॥

वृहदारण्यकेचौथेअध्यायमेंयाज्ञवल्क्यनेअपनीमैत्रेयीनामी भार्याकोआत्मज्ञानकाउपदेशदियाथा ॥

नवाअरेसर्वस्यकामायसर्वंप्रियंभवत्यात्मनस्तुकामायसर्वंप्रियंभवति आत्मावाअरेद्रष्टव्यःश्रोतव्योमन्तव्यःनिदिध्यासितव्यो-मैत्रेय्यात्मनोवाअरेदर्शनेन श्रवणेनमत्याविज्ञानेनेदंसर्वंविदित-मितिविज्ञानात्माकिम्वापरमात्मा।प्रिय शब्द से सूचित है जोभोक्ताआत्माहै उसकेउपक्रमसेविज्ञानात्माजानाजाताहै औरआत्मविज्ञानसेसर्वविज्ञानकाउपदेशहै तिससेपरमात्माजानाफिर पतिस्त्रीपुत्रवित्तादिभोग्यमात्रसवजगत्आत्मार्थप्रियहै इसउपक्रममेंभोक्तात्मासेअन्यनहींकहाहै बीचमेंभीइदंमहत्भूतमनंतमपरंविज्ञानघनएवएतेभ्योभूतेभ्यःसमुत्थायतान्येवानुविनश्यतिन-प्रेत्यसंज्ञास्तीति इसमेंभीविज्ञानात्माहीद्रष्टव्यदिखातीहै फिर विज्ञातारमरेकेनविजानीयादिति इसउपसंहारमेंभीउपदिष्ट-हीविज्ञानात्माकोदिखातीहै अर्थ इदं प्रत्यक् महत् अपरि-छिन्न भूतं सत्य अनन्तं नित्य अपारं सर्वगविज्ञानघनः चिदेक-रसएतेभ्यः कार्यकारणरूपजीजायमानभूतहैं तिनसे साम्येनोत्थायभूतोपाधिकजन्मानुभूयतान्येवभूतानिलीयमानान्यनुस्त्यविनश्यतिऔपाधिकमरणानन्तरं विशेषधीर्नास्तीत्यर्थः यहमत

कहे। ईशकाउपदेशहैकिससे वाक्यान्वयात् आगेपीछेकेदेखने सेवाक्यईशहीकोकहता है यहबातभीकैसेवनेगीजोयामैत्रेयी- कोकहीहै अमृतत्वस्यतुनाशास्तिवित्तेनेति तवउसनेकहाकिमैं जिसधनसेमुक्तनहूं उसकोलेक्याकरूं येनाहंनामृतास्यांकिमहं तेनकुर्यांयदेवभगवान्वेदतदेवमेंब्रूहीति फिर ब्रह्मतंपरादाद्यो न्यत्रात्मनोब्रह्मवेदेतिजोजगकोआत्मासेअन्यत्रस्वतन्त्रदेखताहै उसमृषादेखनेवालेकोवुहीजगश्रेयमार्गसेगिरादेताहै इससेभेद दूरकरसबवस्तुकाआत्मासेअभेदकहाहै इदंसर्वंयदयमात्मेति जैसे दुंदुभिशङ्खवीणादिकीध्वनिमेंविशेषउनकेनहींसमुझपरतेहैं शुक्तिमेरूप्यसमसामान्यसेकल्पितहैं औरउनसेभिन्ननहींहै तैसे आत्माकेभानसेभास्यसवआत्ममात्रनिश्चितहै आत्माकेनामरूप कर्मप्रपञ्चकारणकोकहतीश्रुतिआत्माहीकोबोधकरातीहै अस्य महतोभूतस्यनिश्वसितमेवदृग्वेदइत्यादि जैसे सबजलकाएका यनसमुद्रहै तैसे प्रपञ्चकाएकस्थानईशहै एकायनमनन्तरमवा ह्यंकृत्स्नंप्रज्ञाघनंइति तिससेईशकेदर्शनादिकाउपदेशहै ॥

प्रतिज्ञासिद्धेर्लिंगमाश्मरथ्यः ॥ २० ॥

एककेजाननेसेसबजानाजाताहै इसवैदिकीप्रतिज्ञाकीसि द्धिसेविज्ञानात्माऔरपरमात्माकाअभेदकीर्त्तनमें लिङ्ग है जैसे कटकादिभूषणकार्यरूपसेपृथक् औरकारणहेमरूप से एकही है तैसेहीजीवब्रह्मएकहीहैं लिङ्गं अर्थात्जीवब्रह्मैक्यबोधनं इसआ श्मरथ्यकेमतमेंअभेदहै अस्यचप्रतिज्ञा आत्मनिविज्ञातेसर्वमि- दम्विज्ञातंभवतीति इदंसर्वंयदयमात्मेतिच तस्याःप्रतिज्ञायाः- सिद्धिंसूचयत्येतल्लिङ्गं यत्प्रियसंसूचितस्यात्मनोद्रष्टव्यत्वादिसंकी र्तनंयदिहिविज्ञात्मापरमात्मनोन्यः स्यात् ततःपरमात्मविज्ञा

नेऽपिविज्ञानात्मा नविज्ञातः इत्येकेनविज्ञानेनसर्वविज्ञानंयत्प्रतिज्ञातंतद्दीयेततस्मात्प्रतिज्ञासिध्यर्थंविज्ञानात्मपरमात्मनोरभेदांशेनोपक्रमणमित्याश्मरथ्यआचार्योमन्यते जीवब्रह्मकाभेदाभेद होनेसे अभेदांशकरजीवोपक्रमणप्रतिज्ञासाधकहै ॥

उत्क्रमिष्यतएवंभावादित्यौडुलोमिः २१

जीवदेहादिसेकलुषितऔरज्ञानध्यानोपासनादिसेप्रसन्ननामरूपकोछोड़देहसेनिकरपरमेश्वरकेसङ्गसेएकहोताहै मुक्तिमें अभेदसंसारमेंभेदहैइसऔडुलोमिमतमेंभेदाभेदहै विज्ञानात्मनएवदेहेन्द्रियमनोबुद्धिसंघातोपाधिसंपर्कात्कलुषीभूतस्य ज्ञानध्यानादिसाधनानुष्टानात्संप्रसन्नस्यदेहादिसंघातादुत्क्रमिष्यतः-परमात्मैक्योपपत्तेरिदमभेदेनोपक्रमणमित्यौडुलोमिर्मन्यते संसारदशामेंभेदहै मुक्तिमेंअभेदहै औडुलोमिमतसे इसमेंश्रुतिमानहै एषसंप्रसादोस्माच्छरीरात्समुत्थायपरंज्योतिरूपसंपद्यस्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यतइति कहींतोजीवहीकेआश्रयनामरूपकहेहैं नदीकेदृष्टान्तमें यथानद्यःस्यन्दमानाःसमुद्रेस्तंगच्छन्तिनामरूपेविहायतथाविद्वान्नामरूपाद्विमुक्तःपरात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यमि---ति ॥

अवस्थितेरितिकाशकृत्स्नः २२

परमात्माहीजीवरूपसेअवस्थितहै जैसेरज्जुकासांपरूपसेवस्थानउसीअवस्थितिसेविज्ञानात्माकोद्रष्टव्यकहाहै यहकाशकृत्स्नकामतहै वस्तुसेजीवब्रह्मकाभेदनहींहोनेसे अस्यैवपरमात्मनोनेनापि विज्ञानात्मभावनावस्थानादुपपन्नमिदमभेदेनोपक्रमणमितिकाशकृत्स्नआचार्योमन्यतेब्राह्मणं अनेनजीवेनात्मनानुप्र

विश्वनामरूपेव्याकरवाणीति ऐसेवाक्यपरमात्माका।साचात्जी
वभावमेंअवस्थानदिखातेहैं मन्त्रवर्णश्चसर्वाणिरूपाणिविचिन्त्यधी
रोनामानिकृत्वाभिवदन्यदास्तइत्यादि काशकृत्स्नकेमतमेंअवि
कृतपरमेश्वरजीवहैअन्यनहींआश्मरथ्यकेमतमेंयद्यपिजीवकापर
सेऽनन्यत्वअभिप्रेतहैतथापिप्रतिज्ञाकीसिद्धिसापेचताकेकथनसे
कार्यकारणभावभीकुछअभिप्रेतहैफिरऔडुलोमिमतमेंभेद।भेद
स्पष्टजानाजाताहै इनमेंकाशकृत्स्नमततोवेदानुसारीहै तत्त्वम
सीत्यादिसे ईशज्ञानसेमुक्तिकीसिद्धिहै जीवकोविकारमाननेसेवि
कारसेप्रकृतिकेसाथलयहोनेमेज्ञानसेमुक्तिनसिद्धहै।गौ।उपाध्या
श्रयनामरूपकाजीवमेंउपचारहैजीवकाजन्मकहींअग्निविस्फुलिं
गन्यायसेसुनाहैवहभीउपाध्याश्रयहै जीवस्थूलभूतोंसेनिकलाश्रु
तिनेदिखाकेजीवहीद्रष्टव्यदिखायाहैइसमेंइनतीनोंसूत्रोंकोजो
ड़नाप्रतिज्ञायहप्रतिज्ञाकीथीकिआत्माकेजाननेसेसबजानाजा
ताहै इदंसर्वंयदयमात्मेति नामरूपकर्मसबप्रपंचकाएकसेप्रसव
औरप्रलयवर्णनकियाथा दुन्दुभिआदिदृष्टांतभीकहे औरकार्य
कारणकाअभेदभीकहाइसीप्रतिज्ञाकीसिद्धिसूचनकरातीहै यह
लिङ्गजोमहत्भूतद्रष्टव्यके।भूतोंसेविज्ञानात्माका समुत्थानकह
या यहआश्मरथ्यकामतहै अभेदमेंभीएकविज्ञानसेसबविज्ञान
कोप्रतिज्ञामानतेहैं उत्क्रमिजबजीवज्ञानध्यानकरदेहसेछूटेगात
बस्वच्छहोपरमात्माकेसङ्गएकहोगायहीअभेदऔडुलोमीमानता
है अवस्थि परमात्माहीविज्ञानस्वरूपसेअवस्थितहैयहीअभेदका
शकृत्स्नमानताहैयहतोउच्छेदकाकथनहैअभेदकथनकैसेहोसक्ता
है एतेभ्योभूतेभ्यःसमुत्थायतान्येवानुविनश्यतिनप्रेत्यसंज्ञास्तीति
यहदोषनहीं क्योंसुनो। विज्ञानात्माऔरपरमात्माकाकुछविशेष
नहींइसीअभिप्रायसेविनाशकाकथनहैऔरआत्माकेउच्छेदकोअ

भिप्रायसेनहींहै फिरमैत्रेयीनेमुनिकोपूछाकितुममुझकोइससे
मोहकरातेहोकिज्ञानरूपआत्माकातो ज्ञानकेअभावसेनाशहो-
जावेगा अत्रैवमांभगवानमूमुहन्नप्रेत्यसंज्ञास्तीति नवाअरेहंमोहं
ब्रवीम्यविनाशीवाअरेयमात्मानुच्छित्तिधर्मामात्रासंसर्गस्त्वस्यभव
तीति अर्थ मुनिनेकहाकिकूटस्थनित्यविज्ञानघनआत्माहैइसका
उच्छेदनहींहैपरन्तुभूतवोइन्द्रियोंसेविद्याद्वारा जब असंसर्गहै त-
बसंसर्गसेहुआजोविशेषज्ञानउसकेअभावसेमरेकोसंज्ञानहींरहि
तीयहअर्थकहाथानप्रेत्यसंज्ञास्तीतिइसवाक्यसे विज्ञातारमइत्या
दिजोविज्ञानात्मा।द्रष्टव्यकर्त्ट वाचककर्त्ट शब्दसेकहायावहीकाश
कृत्स्नकेमतसेपरिहर्तव्यहै फिरयत्रहिद्वैतमिवभवतितदितरइतरं
पश्यति इहांसेअविद्याविषयमेंउसीकोविशेषज्ञान का प्रपंच कर
फिरयत्रत्वस्यसर्वमात्मैव।भूत्तत्केनकंपश्येदिति इनसेविद्याविष-
यमेंजोदर्शनादिलक्षणविज्ञानकाअभावकहतीहै फिरभीविषया
भावमेंआत्माकोजानेयहशंकाकरकहाकिविज्ञाताकोकिससे जा
नेतोतोविशेषविज्ञानकेअभावबोधपरवाक्यहै नकेवलविज्ञानधा
तुहीसन्कहाहै अबसबकोयहमाननाचाहियेकिजीवब्रह्मकाभेद
अविद्यारचितनामरूपदेहादिउपाधिसेहै नपारमार्थिकहै अ-
न्य।सावन्योहमहमस्मीतिनसवेदयथापशुःमृत्योःसमृत्युमाप्नोति
यइहन।नेवपश्यतीतिजेभीभेददृष्टिकेभेदकहैं क्षेत्रज्ञपरमात्मा।ऐ
सेनामभेदसेक्षेत्रज्ञपरमात्मासेवोपरमात्मा।क्षेत्रज्ञसेभिन्नहै यही
आत्मभेदमुमुक्षुकोदृढ़है वहनिरर्थकहोजावेगा क्योंविषयभेदमा
ननेसे एकहोआत्मानाममात्रकेभेदसेबहुधापढ़तेहैं किज्ञाविद्या
तज्जबुद्धिरूपायांगुहायांस्थितोजीवोभवतितस्यामेवब्रह्मनिहित-
मिति श्रुति सत्यंज्ञानमनन्त ब्रह्मयो।वेदनिहितंगुहायामिति
जीवस्थानसेअन्यगुहानहींहै नहींब्रह्मसे अन्य गुहा में निहित है

क्यों स्रष्टाही का घुसना जीव सुनने से तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशदिति। ब्रह्म जीव के अत्यन्ताभेद में जीव का स्पष्ट भान से ब्रह्म ही स्पष्ट हो इससे स्पष्टवा अस्पष्ट से दोनों का भेद है यह नहीं है दर्पण में प्रतिविम्ब की स्फुटता है भी पर जैसे विम्ब में स्फुटता नहीं है कल्पित भेदों से विरुद्धधर्मों की व्यवस्था युक्त है भेदाभेदवादी ज्ञानकर्म से कृतकं नित्यं यत्क्रियासाध्यं तदनित्यं इससे बाधित है जो अभेद में भी भेद आग्रह से मानते हैं ते श्रेयोद्वारक जो सम्यग्दर्शन है उसको बाधते हैं कृतक मुक्ति कल्पते हैं न्यायमें नहीं चलते हैं ॥

———※◯※———

(प्रकृत्यधिकरण ॥ ७ ॥)

प्रकृतिश्चप्रतिज्ञादृष्टांतानुपरोधात् २३

प्रकृति घटरुचकादिकों मृत हेमादि जैसे कारण हैं वा निमित्त कुलाल हेमकारादि जैसे कारण हैं तैसे ब्रह्म को कैसो कारणता हो यह विमर्श है ईक्षापूर्वक कर्तृत्व सुनने से केवल निमित्त कारण है स ईक्षांचक्रे स प्राणमसृजतेत्यादि कुलालादि निमित्त कारण में ही ईक्षापूर्वक कर्तृत्व देखा है लोक में अनेक कारकपूर्विका क्रिया के फल की सिद्धि देखी है यहां न्याय आदि कर्त्ता में भी पहुंचाने के योग्य है जैसे राजा वैवस्वतादि ईश्वरों को केवल निमित्त कारणत्व ही है तैसे परमेश्वर को भी केवल निमित्त कारणत्व ही जानने के लिये युक्त है यद्यपि ईक्षा से कर्तृत्व निश्चित है तथापि ब्रह्म प्रकृति नहीं कर्त्ता होने से जो जिसका कर्त्ता है वह उसकी प्रकृति नहीं जैसे घटका कर्त्ता कुलाल जगकर्त्ता से भिन्नोपादान का है कार्य से घट के समान ब्रह्म जगका उपादान नहीं ईश्वर होने से राजा के समान जग ब्रह्म प्रकृति कानहीं ब्रह्म से विलक्षण होने से जो इस प्रकार से है वह तैसा ही कुलाल से

विलक्षणघटसमानहै जग सावयव अचेतन अशुद्ध देखते हैं कारणभीउसकातैसाहीहोनाचाहिये कार्यकारणका समानरूप देखनेसेब्रह्मतोऐसानहींहै निष्कलन्निष्क्रियंशांतन्निरवद्यंनि*रञ्जनमिति तोअबब्रह्मकारणनहींबनाप्रधानहींठोररहाहै ब्रह्मको कारणबतातीश्रुतिनिमित्तकारणमें हो सोरहीउठबैठोप्रधानको धस्मृति तुमतोकहिचुकेअबमेरीसुनो प्रकृतिश्च ब्रह्महीउपादान कोनिमित्तकारणमानोनहींकेवलनिमित्तकारण क्योंकि प्रति-ज्ञादृष्टान्तानुपरोधात् ऐसेश्रौतप्रतिज्ञाकोदृष्टांत इनकारोकन होगी प्रतिज्ञा उततमादेशमप्राक्ष्योयेनाश्रुतंश्रुतम्भवत्यमतंमतमविज्ञातम्विज्ञातमिति दृष्टान्त एककेजानेसेअन्यसबजानाजाताहै वहउपादानकारणकेजाननेसेसबकाजाननासम्भवहै क्योंकि कार्यउपादानेसेभिन्ननहीं लोकमेंनिमित्तकारणकाकार्यसे भेदहै जैसे तक्षाखाटसेभिन्नहै दृष्टान्तभीउपादानकेविषयमें यथासोम्यैकेनमृत्पिंडेनसर्वंमृण्मयंविज्ञातंस्याद्वाचारम्भणंविका--रोनामधेयंमृत्तिकेत्येवसत्यमिति तथैकेनलोहमणिनासर्वंलोह-मयम्विज्ञातंस्यादेकेननखनिकृन्तनेनसर्वंकार्ष्णायसम्विज्ञातंस्यादिति तैसेहीमुण्डकमेंभीपढ़ा कस्मिन्नुभगवोविज्ञातेसर्वमिदम्विज्ञातंभवति यहीप्रतिज्ञा कर यथापृथिव्यामोषधयःसम्भवन्ति यहीदृष्टान्तहै आत्मनिखल्वरेदृष्टेश्रुतेमतेविज्ञातेइदंसर्वंविदितमिति यहप्रतिज्ञाबृहदारण्यमेंहै सयथादुन्दुभेर्हन्यमानस्यनवाह्यान्शब्दान्शक्नुयाद्ग्रहणायदुन्दुभेस्तुग्रहणेनदुन्दुभ्याघातस्यवाशब्दोगृहीतःयहदृष्टांतहै यतोवाइमानीति इससेभीउपा-दानहै जनुकर्त्तुःप्रकृतिरिति इसविशेषस्मृतिसे जैसे लोकमें

* तमःशून्य

त् हैमादिउपादानकारणकुलालहैमकारादिअधिष्ठाताओंकोअ पेक्षाकरकेप्रवर्तेहैं तैसे उपादानसत्ब्रह्मकारणकोअन्यअधिष्ठा ताअपेक्षितनहींहै उत्पत्तिकेपहिलेएकअद्वितीयथाइसनिश्चयसे अन्यअधिष्ठाताकाअभावभीप्रतिज्ञावोदृष्टांतकेनिरोधसेकहाहु आजानो ॥

अभिध्योपदेशाच्च २४

अभीध्यासर्गसङ्कल्पध्यानचिन्तनहै ॥

चैतनकाकार्यकेसाथअभेदहोनासुनाहै तिससेअचेतनअ- णुऔरप्रधानविश्वनिदाननहींहैं अभिध्योपदेशश्चात्मनःकर्तृत्व प्रकृतित्वेगमयति ॥

सोकामयतबहुस्यांप्रजायेयेति तदैक्षतबहुस्यांप्रजायेयेतिवचन मेसङ्कल्पपूर्वजोस्वतन्त्रप्रवृत्तिहै तिससेकर्त्ताजानाजाताहै यहप्र त्यगात्मविषयसेबहुतहोनेकेसङ्कल्पकाप्रकृतिभीजानाजाताहै ॥

साक्षाच्चोभयाम्नानात् २५

जन्मनाशजेदोब्रह्महीसेसुनेहैं तिससेनिमित्तऔरउपादा- नब्रह्महीहै अथवाईक्षणसेब्रह्मकोकेवलनिमित्तहीसमुझाथा जै सेकुम्हारमट्टीकाद्रष्टानिमित्तकर्त्ताहै औरजिससेभूतोंकाजन्महै इसपञ्चमीविभक्तिसेउपादानकाअपादाननामधरकेब्रह्मको प्रक टउपादानकहाहै श्रुति आकाशादेवसमुत्पद्यंतेआकाशंप्रत्यस्तं यन्तीति सर्वाणिहवाइमानिभूतानीत्यादि इनमेसाक्षाद्ब्रह्मही सेउत्पत्तिप्रलयदोनोवेदनेकहेहैं इतश्चप्रकृतिर्ब्रह्मयत्कारणंसा- क्षाद्ब्रह्मैवकारणमुपादायोभौप्रभवप्रलयावाम्नायेते सर्वाणिह- वाइमानिभूतान्याकाशादेवसमुत्पद्यन्तेआकाशप्रत्यस्तंयन्तीति

जोजिससेजन्मताहै वोजिसमेंमिलताहै सोहीउसकाउपादान प्रसिद्धहै जैसे व्रीहियवादिकीपृथिवी साचादिति साचादाका शादेवेति श्रुति उपादानांतरकेअभावकोदिखातीहै प्रत्यक्षमय स्वनोपादानादन्यचकार्यस्यदृष्टः ॥

आत्मकृते:परिणामात् २६

जैसे मृतिकाघटाकारपरिणामतीहै तैसेहीब्रह्मप्रपञ्चाका-रपरिणामताहै और ब्रह्महीप्रपञ्चरूपसेकर्म औरस्वरूपसेकर्त्ताहै जैसेरज्जु,कीसर्पाकारप्रतीतिहै इतश्चप्रकृतिर्ब्रह्मयत्कारणंब्रह्मप्र क्रियायांतदात्मानंस्वयमकुरुतेत्यात्मन:कर्मत्वंकर्तृत्वंचदर्शयति आत्मानं इससेकर्मवो स्वयमकुरुत इससेकर्त्तादिखातीहै पूर्वंसि द्धकर्त्तासेपश्चात्सिद्धकर्मकैसेहोसकेगा परिणामसेकहिताहूं पूर्व सिद्धिसत्आत्माभीविशेषविकारात्मासेआत्माकोपरिणामाताहु आवहीपरिणामीमृदादिविकृतिमेंउपलब्धहै स्वयं इसपदकेग्रह णसेनिमित्तांतरकीनिवृत्तिप्रतीतकरीहै अथवापरिणामादिति पृथक्सूत्रहै उसकायहअर्थहै ब्रह्महीप्रपञ्चरूपविकारात्मासेपरि णामपढ़तेहैं सच्चत्यच्चाभवन्निरुक्तंचानिरुक्तमिति ब्रह्महीकोप्रकृ तित्वहै अर्थश्रुतिकासत्प्रत्यक्षभूततीन त्यत्परोक्षभूतदो निरुक्तं कहिनेकोशक्य कपोतरूपकादिब्रह्महीहुआथा ॥

योनिश्चगीयते २७

वेदांतेषु कर्त्तारमीशंपुरुषंब्रह्मयोनिमिति लोकमेंयोनिशब्द प्रकृतिवाचकप्रसिद्धहै औषधिवनस्पतिआदिकीपृथिवीयोनिहै रक्तादिसेस्त्रीयोनिभीगर्भकाउपादानकारणहै कहींयोनिशब्द स्थानवाचीहै योनिस्तइन्द्रनिषेधिअकारीतिवाक्यशेषात् अर्थ

हैइन्द्रतेरेवैठनेकेअर्थस्थानमेंनेकियाथा यहांतोप्रकृतिवाचीयो निशब्दकाग्रहणहै यथोर्णनाभिःसृजतेगृह्णतेइति इससेब्रह्मप्रकृ तिसिद्धहुआ जैसेईचाकर्त्वकुलालादिनिमित्तकारणोमेंदृष्टहै नउपादानोंमें तैसेलोककेतुल्ययहांनहीं है यहअर्थअनुमानसे- प्राप्तनहीं किन्तुशब्दसेहैफिरजैसाशब्दनेकहावैसाहीयहांहोना- चाहिये शब्दतोईचितोईश्वरकोप्रकृतित्वकहताहै यहीहमक- हितेहैं याकृतिःसाशरीरजन्येतिव्याप्तिविरोधेननित्यकृतिमतो- अनुमानासंभवादतःश्रौतमीश्वरं पचीकृत्यानुपादनत्वसाधनेभ वत्येवोपजीव्ययाप्रकृतित्वबोधकश्रुत्याबाधइत्यर्थः ॥

सर्ववादाधिकरण । ८ ॥

एतेनसर्वेव्याख्याताव्याख्याताः २८

ईचतेइससूत्रसेलेप्रधानकारणवादसूत्रोंसेबार२शङ्काकर२ दूरकरा प्रधानवादकेसाधककुछलिङ्गाभासवेदान्तमेंभीमन्दम- तियोंकोजानपड़तेहैं कार्यकारणकेअभेदसेप्रधानवादवेदांतवा दकेनिकटहै और देवलप्रभृतिधर्मसूत्रकारोंनेस्वस्वग्रन्थोंमेंलि- खाहै इससेप्रधानवादकेनिषेधमेंयत्नबहुतकियाहै औरअखादि कारणवादोंकेप्रतिषेधमेंनहींकियाफिरवेभीतोब्रह्मकारणवादके प्रतिपचीहैंतिससेप्रतिषिद्धव्यहैं उनकेभीसाधकवैदिककुछलिङ्गम न्त्रोंकोथोरे२प्रतिभानहोतेहैंइससेकहाकिबड़ामल्लप्रधानवादथा उसकेमर्दनसेसबअखादिचुद्रवादमर्दितहोगयेहैंवेभीप्रधानसम अशब्दतासेवाशब्दविरोधितासेनिराकृतहैं व्याख्यातपददोबार अध्यायकीपूर्तिकेअर्थपढ़ाहै छांदोग्यमेंजगकारणकेबोधार्थपिता नेपुत्रकोकहाकिइनबटोंकेदानोंमेंसे एककोतोड़उसनेतोड़केक

हाकि हेभगवन्तोड़ामैंने फिरबापनेकहाकितूनेइसमेंक्यादेखा है पुत्रनेकहा हेभगवन्कुछनहींदेखाहै फिरबापनेकहा किअणु कोभीतूनेनहींदेखाहै तानकिञ्चनशब्दसेशून्यवादवास्वभाववाद प्रतीतहोतेहैं अणुशब्दसेपरमाणुवादअसत्शब्दसेअसद्वादअणोर णीयानित्यादिलिंगंद्रष्टव्यं। नकिंचनभगवइति नकिंचनदाअ-सत् इनशब्दोंकाअर्थप्रत्यक्षकेअयोग्यवस्तुहै अणुशब्दकाअर्थसू-क्ष्महैजैसेसबबादप्रधानवादकेतुल्यअश्रौतवोब्रह्मवादश्रुतिसेबाधि तहैं तिससेब्रह्महीपरमकारणहै उसीमेंसबवेदान्तोंकाप्रभावहै यहीसिद्धहै॥ इतिश्रियुक्तताराचन्द्रवर्म्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये प्रथमाध्यायस्यचतुर्थःपादःपूर्णः॥

——*⌒*——

अविरोधाध्यायदूसरा २

स्मृतिपादपहिला॥ १॥

स्मृत्यनवकाशाधिकरण॥ १॥

स्मृत्यनवकाशदोषप्रसंगादितिचेन्नान्यस्मृत्यनवकाशदोषप्रसंगात् १

प्रथमअध्यायमेंसर्वज्ञजगजन्मका निदान निश्चित किया था जैसे घटरुचिकादिकामृत्तिकाआदि दूसरेमेंउत्पन्नजगकानियंटत्वद्वाराब्धितिकानिदाननिश्चितकिया जैसे मायाकामायावीरपसारीजगकोफिरअपनेमेंमिलानेकानिदान निश्चित किया जैसे चतुर्विधभूतोंकेसमुदायकोपृथिवीवही हम सब का आत्मा है यहवेदांतवाक्योंकेब्रह्ममेंप्रतिपादनसेनिश्चितकिया प्रधाना-

दिकारणवादोंका निराकरणकिया अवैदिकहै।जैसे अवतोदूस
रेअध्यायकेप्रथमपादसेसांख्यादिकी स्मृति और युक्तियों के साथ
समन्वयकेविरोधकानिरोधकरतेहैं दूसरेपादमेंसांख्यादिकेआ
गमभ्रांतिमूलहै यहीबातअविरोधकेअर्थकहेंगे तीसरेपादमेंप्र-
तिवेदांतसृष्टिविधायकश्रुतिऔरजीवात्मश्रुतिवोव्योमादिमहा-
भूतोंकाजन्मलयक्रमादिकेकहनेसेअविरोधजतावेंगे चौथेपाद
मेंलिङ्गदेहश्रुतियोंकाअविरोधकहेंगे ब्रह्महीजगकाकारणकहा
था सोअयुक्तहै किससे स्मृत्यनवकाशदोषप्रसङ्गादिति स्मृति
तन्त्राख्या परमर्षिप्रणीता शिष्टोंनेग्रहणकी है जिससेपदार्थकहे
जावेवहतन्त्रहै कपिलादिकीस्मृतियांनिरर्थकहोजावेगीं उनमें
जगकारणअचेतनकहाहै औरमन्वादिकीस्मृतियांतोअग्निहो-
त्रादिधर्मऔरअठारहव्यवहारकेबिधानसेसार्थकहैं अमुकअमु-
ककालमेंउपनयवेदाध्ययनविवाहादिधर्मोंकोकरे कपिलादि-
कीस्मृतियांतोलौकिकव्यवहारमेंसावकाशनहीं हैं वेतोकेवल-
मुक्तिहीकेअर्थरचीहैं जोवेमुक्तिकेअर्थभीनआईं तोव्यर्थहीहैं
तिससे ऐसीव्याख्याकरो किवेदान्तसेविरोधनहो कपिलादि-
भीस्वतन्त्रप्रज्ञअतीन्द्रियार्थज्ञानीथे जनतो प्रायः परतंत्र प्रज्ञ हैं
स्वतन्त्रतासेश्रुत्यर्थनहीं निश्चयकरसक्ते हैं स्मृतियोंकोपकड़केश्रु
तिका अर्थ करते हैं क्योंकिहमारेकरेअर्थमेंलोगविश्वासनकरेंगे
श्रुतिमेंकपलादिकाआर्षज्ञाननिर्दोषकहाहै श्रुतिः ऋषिम्प्रसूत
ङ्कपिलंयस्तमग्रेज्ञानैर्बिभर्त्तिजायमानञ्चपश्येदिति तिससेइनका
मतझूठाअसम्भवनहींकरासक्तेहैं अर्थजिसनेआदिमेंजायमानक
पिलकोजन्माया वो प्रसूतऋषिकाभरणकिया ज्ञानोंकरकेतुम
उसपरमेश्वरकोदेखोइतियोजना तर्कसेभीवेअपने अर्थकोसही
करतेहैं तिससेस्मृतिबलसेवेदान्तव्याख्येयहैं इसआक्षेपकासमा

धानहैनान्यस्मृत्यनवकाशदोषप्रसङ्गादिति जोस्मृत्यनवकाशदो
षसेईश्वरकारणवादपरआक्षेपकरतेहोतो अन्यभीईश्वरवादिनीस्
मृतिअनवकाशितहोजावेगी जैसे आपस्तंबनेपढ़ाहै तस्मात्का
या:प्रभवन्तिसर्वेसमूलंशाश्वतिक:सनित्यइतिअर्थजिससेब्रह्मादि
जन्मेंहैंवहीउपादानहै अपरिणामीकूटस्थऐसेअनेकस्मृतियोंमें-
ईश्वरकारणवोपादानप्रकाशितकिया है जोस्मृतिकेवलसेवो-
लतोथा उसकोस्मृतिसेहीउत्तरयोग्यथा इसलिये अन्यस्मृत्यन
वकाशदोषकाउपन्यासहै परस्परश्रुतियोंकेविरोधमेंश्रुतिसेनि
र्णयहै स्मृतियोंकेपरस्परविरोधमेंक्रमप्रश्रुतिमूल स्मृति प्रमाण है
इतरकल्पश्रुतिमूलस्मृतिप्रमाणनहींहै विरोधेत्वनपेक्षंस्यादस
तिह्यनुमानमिति इसजैमिनिप्रमाणलक्षणसे जैसेश्रुतिकेविनअ
तीन्द्रियार्थकोकोईलभताहै यहसम्भावनाशक्यनहींहै निमित्त
केअभावसे सच्चज्ञानसेकपिलादिसिद्धोंनेस्मृतिरचीहैं इससेप्र-
माणहैं यहभीसच्चनहींहै क्योंकिसिद्धिभीधर्मकेअनुष्ठानकीअपे-
क्षाकरतीहै वहधर्मचोदनालक्षणहै औरचोदनापूर्वसिद्धहै अर्थ
पश्चिमसिद्धहै पुरुषकेवचनाधीनसेश्रुतिकामुख्यार्थछाड़गौणार्थ
कीशङ्काभीनहींकरसक्तेहैं अनीश्वरस्यस्वत:सिद्धौमानाभावाच्च-
जोसिद्धोंकेवाक्यपरस्परविरुद्धहो तोमनुसेनिर्णयकरे सिद्धोंति
होतत्वनिर्णयमेंकारणनहीं सगरकेपुत्रोंकाजलानेवालाकपिल
वासुदेवनामसेस्मृतहै नामतोश्रौतवोपौराणिकदोनोंमेंसमा-
नहै तिससेश्रौतकपिलमतमानो पौराणिककपिलमतछाड़ो
द्वैतवादीथा तिससेसर्वज्ञनथा वासुदेवांशमुनिलोकोंनेभ्रांति-
सेश्रौतकपिलवोसांख्यकर्त्तामानाहै मनुमाहात्म्यमे श्रुति यद्वैकिं
चनमनुरवदत्तद्भेषजमिति मनुस्मृतिभीसर्वात्मत्वदर्शनकीप्रशं-
सासेकपिलमतकीनिन्दाकरतीहै आत्मभेदकोमानताहै कपि-

ल एकात्मबोधिका श्रुति यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतइत्यादि आत्माकेभेदकीकल्पनासे वोवेदानुसारिमनुवचनकेविरोधसेकपिलतन्त्रवेदकेविरुद्धसिद्धिहुआ वेदस्वार्थमेंनिरपेक्षस्वतःप्रमाणहै जैसे रविरूपोंमें स्मृतितोमूलान्तरकोअपेक्षाकर्त्तीवोवक्ताकेस्मरणसेव्यवहितहै यहांविप्रकर्षपरतःप्रामाण्यहै तोझटितिनिश्चायकवेदवाक्यसेविप्रकर्षनिश्चायकस्मृतिकाबाधउचितहै यहभावार्थहै तिससेवेदकेविरुद्धविषयमेंस्मृतिकाव्यर्थहोनादोषनहींहै सांख्य मूलप्रकृतिरविकृतिरित्यादि मनु तस्मादव्यक्तमुत्पन्नमित्यादि ॥

इतरेषांचानुपलब्धेः ॥२॥

लोकवेदमेंइन्द्रियांभौतिकहैं भौतऔषधिसेफिरनैरोग्यदेखनेसेऔरमहदहंकारादिलोकवेदमेंप्रसिद्धनहींहैं जैसेकठोइन्द्रियकाअर्थफिरस्मृतिकल्पनहीसक्तीहै सांख्यस्मृतिजैसेमहदादिमेंप्रमाणनहींतैसे प्रधानमेंभीनहींहै कार्यस्मृतिकेअप्रामाण्यसे कारणस्मृतिअप्रमाणहै यहअभिप्रायहै महतःपरमव्यक्तं यहश्रुतिब्रह्मपरहैनकिसांख्यसंमतमहत्तत्त्वपरहै तिससेकापिलमतश्रौतनहींहै ॥ ——*※*——

(योगप्रत्याख्यानाधिकरण ॥ २ ॥)

एतेनयोगःप्रत्युक्तः ३

अतिदेशसेयोगकानिरासकर्त्ताहै मुक्तिकाउपायवेदमेंयोग कहाहै श्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यइत्यादि त्रिरुन्नतंस्थाप्य समंशरीरमित्यादि अर्थ निदिध्यासनयोगहै तीनिउरशिरग्रीवा इनकोदेहमेंऊंचेराखे युंजीतेतिशेषःत्र्युन्नतमितिवक्तव्येत्रिरुन्नत

मितिपाठश्छांदस: आसनादि बहुतबातेंयोगविधिकीश्वेताश्वेत
रोपनिषद्मेंदेखतेहैं सहस्रोंयोगकेजतानेवाले अर्थ वाद लिङ्ग हैं
तांयोगमितिमन्यन्तेस्थिरामिन्द्रियधारणामिति विद्यामेतांयोग
विधिञ्चकृत्स्नमित्यादि तांधारणां योगीयोगकोपरमतपमानतेहैं
उक्ताब्रह्मविद्याकेध्यानकाप्रकारनचिकेतामृत्युकेप्रसादसेपाकेब्र
ह्मप्राप्तहुआयहीसम्बन्धहैअलगअर्थैकदेशमेंसम्प्रतिपत्तिऔरअर्थै
कदेशमेंविप्रतिपत्तिहैलोकमेसांख्ययोगमुक्तिकेसाधनशिष्टोंनेग्रह
णकरेहैं वोउनकेसाधकवेदभीहैं इससेउनहीकाखण्डनउचित
है नवोढादिस्मृतियोंकावेताकिसीरपशुप्रायपुरुषनेग्रहणकी है
श्रुति: तत्कारणंसांख्ययोगाभिपन्नंज्ञात्वादेवंमुच्यतेसर्वपाशैरिति
अर्थकामनाकाकारणविवेकवोध्यानसेकरकेप्रत्यक्षासेप्राप्तदेवको
जानअविद्यासेवचताहै वेद के विना केवल सांख्य वो योग मार्ग
सेमुक्तिनहींमिलसक्तीहै श्रुतितमेवेति सांख्ययोगदोनोहैतोहैं जो
आत्माकोएकनहींदेखसक्तेहैं सांख्ययोगमिति इसमेवैदिकज्ञा-
नध्यानलेनासांख्ययोगपदोंसे इनकीस्मृतिजोवेदविरुद्धनहींवह
मान्यहै असङ्गोह्ययंपुरुष:इत्यादि इनमेंपुरुषकीशुद्धतासांख्य-
नेनिर्गुणपुरुषकेनिरूपणसेमानीहै अथपरिव्राट्विवर्णवासामुंडो
ऽपरिग्रह: इनश्रुतियोंमेनिवृत्तिनिष्ठायोगीमानतेहैं द्योतकादि-
सबतर्ककोइसीरीतिसेव्यवस्थाहै जितनाअंशश्रुतिविरुद्धहै वही
सर्वत्रहेयहै औरसबउपादेयहै जोकणभुगादिमततत्ववोधोपयो
गीहै तोहीपरन्तुवहतोवेदहीसेहै नावेदविन्मनुतेतंबृहन्तं तं
त्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामीति तान्यपितर्कोपपत्तिभ्यांतत्वज्ञाना-
योपकुर्वंतीति ॥

(तर्काभासाधिकरण ॥ ३)

नविलक्षणत्वादस्यतथात्वञ्चशब्दात् ॥ ४ ॥

ब्रह्मकारणमेंजोस्मार्तआक्षेपथा वहनिवारदियाअबतोतर्क निमित्तआक्षेपकोनिवारणकरतेहैं धर्मकेवलवेदहीसेजानाजा- ताहैक्योंकिअनुष्ठेयहोनेसेब्रह्मतोनिष्पन्नरूपहैतिससेप्रमाणान्त- रकाभीउसमेंअवकाशहैजैसेपृथिवीआदिमें जैसेपरस्परश्रुतिवि- रोधमेंप्रबलश्रुतिसेदुर्बलश्रुतिकाबाधवोसावकाशश्रुतिनिरवका शश्रुतिसेबाधितहैतैसेजोश्रुतिप्रमाणान्तरसेविरुद्धहैवहप्रमाणान्तर केद्वारायुक्तहै युक्तिअनुभवकेपासहै क्योंदृष्टसाक्षात्अर्थकेसमान अदृष्टअर्थकोदिखानेसेफिरश्रुतितोऐतिह्यपरोक्षमात्रसेस्वार्थको दिखातीहैतिससेदूरहै अविद्याकानिवर्तकमोक्षकासाधकअनुभ वावसानब्रह्मज्ञानदृष्टफलकदृष्टहै श्रुतिभीश्रवणसेमननकोकहि तीतर्ककाआदरदिखातीहै श्रोतव्योमतंव्य इससेनैषातर्केणत्य- र्थवाद: फिरआक्षेपतर्कनिमित्तसेपहुंचा नविलक्षणत्वादस्येति । जोतुमनेचेतनब्रह्मजगकाकारणवोप्रकृतिकहाथा वहनहींहोस- क्ताहै कैसे यहविकारकेविलक्षणहोनेसे प्रकृतिभीब्रह्मनहींहैज गअचेतनवोअशुद्धदेखनेसे फिरब्रह्मभीजगसेविलक्षणहै चेतन वोशुद्धसुन्नेसे फिरविलक्षणमेंप्रकृतिविकृतिभावनहींदिखाहै जैसे रुचकादिविकारोंकामट्टीआदिप्रकृतिवोघटादिविकारोंकाहेमा दिप्रकृतिमट्टीकेमट्टीसेहेमकेहेमसेविकारकियेजातेहैं तैसेयहजग अचेतनसुखदु:खमोहसेयुक्तहैअचेतनसुखदु:खमोहरूपकारणका र्यहोनेकोयोग्यहैयहजगप्रीतितापविषादादिहेतुयोंसेवोस्वर्गनर कादिवड़ेवोछोटेप्रपंचसेअशुद्धहै फिरअचेतनजगचेतनकेर्थका- र्यकारणभावसेउपकरणहै समानमेंउपकार्यवोउपकारकनहींहै

जैसेएकदीपदूसरेदीपका चेतनभीकार्यकारणभोक्ताकाउपकार करेगा जैसेस्वामीकासेवककरताहै स्वामीवोभृत्यमेंभीदेहअचेत नांशहीचेतनकाउपकारीहै जोएकचेतनकाबुध्यादिअचेतनभा गसोहीअन्यचेतनकाउपकारवोअपकारकर्ताहैऔरआपचेतनचे तनांतरकाउपकारवोअपकारनहींकर्ताहै निरतिशयात्त्वकर्तार श्चेतनाइतिसांख्यमन्यन्ते चेतनोंकोबड़ाईछुटाईनहींहैतिससेमि थोउपकारकनहींहैं काष्ठलोष्टादिचेतनहैंइसमेंकुछप्रमाणनहीं। लोकमेंचेतनवोअचेतनकाविभागप्रसिद्धहैतिससेब्रह्मसेविलक्षण जगहैतोब्रह्मउसकाप्रकृतिनहींहै एकदेशीमानताहैकिश्रुतिजग- तकोचेतनप्रकृतिककहतीहैतोसबजगचेतनहै—

प्रकृतिकाविकृतिमेंसबचिन्हदेखनेसे चैतन्यकाअभानपरिणा मविशेषसेहोगा जैसे स्पष्टचैतन्यजीवोंकोस्वापमूर्छादिदशामेंचै तन्यकाअभावहै ऐसेहीकाठमाटीआदिकोभीचैतन्यकाअभाव होगा सांतःकरणमेचैतन्यप्रकटहै निरन्तःकरणमेंनहींहै भावः विभावनावोअविभावनाकेविशेषसेरूपादिकेभाववोअभावकर- केकार्यकारणआत्मावोअनात्मामेंचेतनताकीसमानतामेभीशे- षशेषीप्रातिस्वकरूपविशेषसेगौणमुख्यकाविरोधनहोगा जैसे प लसूपभक्तादिसमानपार्थिवपदार्थहैं तोभीहरएककेप्रतिकिसी- नकिसीविशेषसेपरस्परउपकारीहैंऐसेहीयहांभीहोगा चेतनवो- अचेतनकेविभागमेभीविरोधनहोगा चैतन्यकीअभीव्यक्तिवोअ- नभिव्यक्तिसेफिरएकदेशीकेमतकोमानसांख्यनेकहाकि उक्तक- ल्पनासेतुमनेविलक्षणतावारणकिया तोभीशुध्यशुद्धिकावारण नहुआ इससेकहाकितथात्वञ्चशब्दात् लोकमेयहप्रकटनहींकि सबवस्तुचेतनहै केवल*शब्दभक्तोंनेजगचेतनप्रकृतिकसुननेसेउ

* वेदशरण॥

त्ये चाकरीहै सीतो। शब्दहीसेविरुद्धहै शब्दहीप्रकृतिसेविलचणाक
हताहै विज्ञानञ्चाविज्ञानञ्चेति किसीअंशकोअचेतनसुना। कोंचे
तनब्रह्मसेविलचणअचेतनजगसुनाताहै तथात्वंप्रकृतिविलच
णशब्दहीकहितहै ॥

अभिमानिव्यपदेशस्तुविशेषानुगतिभ्यां ५

मृदब्रवीदापोब्रुवन् तत्तेजऐचत ताआपऐचन्तजेश्रुतिभूतों
कोचेतनकहितीहैं तेहेमेप्राणा अहंश्रेयसेविवदमानाब्रह्म जग्मु: ते
हवाचमूचुस्त्वंन:उद्गायेतिजेइन्द्रियोंकोचेतनउसका अर्थ अभि-
मानी उक्तवाक्योंसेभूतवोइन्द्रियोंकोचेतनताकीशङ्कामतकरो।
क्योंकि मृदादि वो वागादि केअभिमानीदेवताचेतनकहिनासुन
नादिचेतनकेयोग्यव्यवहारोंमेंव्यपदेशकियेहैंनकेवलभूतवोइन्द्रि
यांचेतनहैं लोकवेदमेविभागप्रसिद्धकेबोधसेफिरसबकोचेतनमा
नेसेविभागनबनेगायहकैसेजाना विशेषानुगतिभ्यांभोक्ताचेतन
वोभूतवोइन्द्रियांअचेतनयहविभागपहिलेकहिचुकेयहविशेषहै
फिरकौषीतकिप्राणकेसम्बादमेंकरणमात्रकोहीचेतनकीशङ्का दूर
करनेकेअर्थअधिष्ठाताचेतनदेवताशब्दसेविशेषणकरतेहैं एताह
वैदेवताअहंश्रेयसेविवदमानाइति तावाएता:सर्वादेवता:प्राणे-
नि:श्रेयसंविदित्वेतिच मन्त्रअर्थवादादिसेसर्वत्रचेतनदेवताअ
नुगतहै अग्निर्वाग्भूत्वामुखंप्राविशदिति यहश्रुतिकरणोंमेंअ-
नुग्रहाहिकादेवताकोअनुगतदिखातीहै तेहप्राणा:प्रजापतिंपि
तरमेत्योचुरिति तस्मैवलिंहरणमिति प्राणसम्बादमेहै किप्राणा
दिसवइन्द्रियांअपनी२श्रेष्ठत्वनिर्णयकेअर्थप्रजापतिकेपासगईं वो
कहाकिहममेंकौनश्रेष्ठहै उसनेकहाकितुमएकएकनिकलोफिरउ
नेवैसाहीकियापरप्राणकाकुछनविगड़ाप्राणकेजाने से सव मरग

यौं इससेप्राणकोभी सृष्टजानना उसकीआधीनहोरही इसकथासेफल-
यहनिकलाकियहमाटेव्यवहारकेसमानउनकाभीव्यवहार अभि-
मानीकेव्यपदेशकोहढ़करताहै औरतेजकाअधिष्ठाताजोपरदेव-
ताहै सोईअपनेविकारमेंअनुगतहुआकरताहै तिससेभियहहुआ
किक्षित्यादिब्रह्मसेविलक्षणहैं वेविलक्षणहैं जैसेब्रह्मचेतनप्रकृ-
तिकभीनहीं हैं इसआक्षेपकोसमाधिकरताहै ॥

दृश्यतेतु ६

तुशब्दपूर्वपक्षकोनिवृत्यर्थहै एतस्मादात्मनआकाशःसंभूतः
इसमेंचेतनसेजड़जन्महै विज्ञानघनएतेभ्योभूतेभ्यःसमुत्थायेतिइ
समेंजड़सेचेतनकाजन्महै लोकमेंचेतनोंसेविलक्षणकेशनखादि
काजन्मऔरअचेतनगोमयादिसेचेतनवृश्चिकादिकाजन्म देखते
हैं ननु अचेतनहीदेहअचेतनकेशादिकाकारणहै। अचेतनवृश्चि
कादिदेहअचेतनगोमयादिकाकार्यहै इससेभीकुछअचेतनचेतन
काआयतनभावकोपहुंचाहोकुछनहींयहभीयेलक्षणहैयहबड़ापा
रिणामिकस्वभावकाविप्रकर्षहै पुरुषादिकाहोकेशादिका क्यों-
कि स्वरूपभेदसेतैसेगोमयादिकाहोवृश्चिकादिकाहै अत्यन्तसा-
रूप्यमेंप्रकृतिविकृतिभावनहींहोसकताहै जोपार्थिवादिस्वभावपु
रुषादिकाकेशादिमेंहै। गोमयादिवृश्चिकादिमेंअनुवर्त्ततेहै सोब्रह्म
काभीसत्तालक्षणस्वभावआकाशादिमेंभीअनुवर्त्तमानदेखते हैं
फिरब्रह्मवादीसेयहनहींकहिसक्तेहो किजो। चैतन्यसेयुक्तनहीं है
सोअब्रह्मप्रकृतिकदेखाहै वहतोसबवस्तुकोब्रह्मप्रकृतिकमानता
है निष्पन्नब्रह्ममेंरूपादिकेअभावसेप्रत्यक्षादिप्रमाणहोलिङ्गादि
केअभावसेअनुमानादिकाअसम्भवहै ब्रह्मभीधर्मकेसमानकेवल

वेदहीसेजानाजाताहैनैषातर्केणमतिरापनेयाप्रोक्तान्यनैवसुज्ञा
नायप्रेष्ठति कोइावेदकइहप्रवोचत्कुतआजाता कुतइयंविसृष्टिः
अर्वाग्देवाअस्यविसर्जनेनाथाकोवेदयतआबभूवेति इयंविसृष्टि
र्यतआबभूवयदिवादधेयदिनयोअस्याध्यक्षःपरमेव्योमन्सोअङ्ग
वेदयदिवानवेदेत्यादि ऐसेमन्त्रजातवेदकहितेहैं किहमनेसृष्टि
कावहुतरबिचारकियातौभीठीकरनहींजानाकिसृष्टिकैसे हुई
थी परहेअङ्गजोइसकाअध्यक्षहै सोचाहेजानताहो चाहेनजान
ताहोश्रुतिनिजसिद्धईश्वरोंकोभीजगकारणकादुर्बोधदिखातीहैं
वहोतर्कप्रमाणहै जोश्रुतिवोअनुभवसेमिलीहै यहएकमतहै दू
सरेमेंश्रुतिप्रमाणजोतर्कअनुभवसेमिलीहै तीसरेमेंतीनोंस्वतन्त्र
अपने२प्रमेयकेसाधकहैं सोतेजगतेसेंइतरेतरव्यभिचारसेसुषुप्ति
मेंसत्वसंगएकहोताहै ब्रह्मअसंस्पृष्टहै विज्ञानंचाविज्ञानंचाभ-
वदितिअद्वितीयत्वब्रह्मकोअयुक्तहैदेहादिप्रपंचसेयुक्तअवस्थावा
लेजीवकोनिष्प्रपञ्चब्रह्मकेसङ्गऐक्यसंभवनहींवोद्वैतग्राहीप्रमाणों
केसङ्गविरोधसेजैसेचेतनअचेतननहींहोसक्ताविलक्षणतासे तैसे
अचेतनचेतननहींहोसक्ताविलक्षणतासेविलक्षणतातोखंडनक-
री परश्रुतिनेजैसेचेतनकारणकहासोहीग्रहीतव्यहै चेतनशुद्धश
ब्दादिहीनब्रह्मउलटाकार्यहैशब्दादिमत् ॥

असदितिचेन्नप्रतिषेधमात्रत्वात् ७

असद्वादीकहिताकिउत्पत्तिकेपूर्वकार्यअसत्था सोसद्वादी
कोअनिष्टहै यहदोषनहीं क्योंकि प्रतिषेधमात्रत्वात् सत्वकाप्र
तिषेधनिरर्थकहै इसप्रतिषेधकाप्रतिषेध्यनहोनेसेयहउत्पत्तिकेप
हिलेकार्यकेसत्वकोदूरनहींकरसक्ताहै कैसे जैसे अबकार्यकार
णरूपसेसत्है ऐसेहीउत्पत्तिकेपूर्वथा अबभीकार्यकारणकेबिना

स्वतन्त्र नहीं है तैसे ही पूर्वपक्ष श्रुति सर्वं तं परादाद्योऽन्यत्रात्मनः सर्वं वेदेति कार्य सत्यत्व के अभाव में श्रुति है ॥

ब्रह्मसूत्र

अपीतौतद्वत्प्रसंगादसमंजसं ८

स्थूल सावयव परिच्छिन्न अचेतन शब्दादिमत् अशुध्यादि धर्मवाले कार्य का ब्रह्म को कारण माने। तो प्रलय में लय मान कार्य कारण के साथ एक होगया। फिर वह कारण को अपने धर्मों से दूषण करेगा जैसे पानी को नीबकटु करता है ऐसे ही प्रलय में कारण ब्रह्म को कार्य के समान अशुद्धादि रूप होने से ब्रह्म सर्वज्ञ जगत्का कारण यह उपनिषदों का मत संदिग्ध है और भी जो सब जुदा रया वह एक होगया। तो फिर उत्पत्ति में नियम के न होने से यह भोक्ता यह भोग्य है इस विभाग से उत्पत्ति न होगी इससे भी विरुद्ध है और भी प्रलय में कर्माधीन पुनर्जन्म होगा तैसे मुक्तों का भी पुनर्जन्म होगा अथवा अपीति से भी जगकार्य कारण ब्रह्म से विभक्त रहा तो अपीति न हुई और कारण से अव्यतिरिक्त कार्य भी नहीं संभव है इससे औपनिषद् दर्शन अच्छा नहीं है ॥

नतुदृष्टांताभावात् ९

तु एवार्थक है पूर्वशंकितं नैव हमारे दर्शन में किञ्चित् असामंजस्य नहीं है क्यूं दृष्टान्तों से जैसे दीपादि जब मट्टी से बनगके टिबड़ मध्यमधर्म वाले होके फिर जब उसमें मिलते हैं तब अपने धर्म उसमें कुछ भी नहीं मिलाते हैं रुचकादिक भी हेम में मिलने से अपने धर्मों को उसमें नहीं मिलाते हैं पृथिवी का विकार चतुर्विध भूतग्राम पृथिवी में मिलने से उसको अपने धर्मों से नहीं मिलाते हैं तुम्हारे पक्ष का कोई दृष्टांत नहीं है तो अपीति का भी संभव न होगा जो कारण में कार्य कार्य

धर्म सह रहेगा लवणवत् यह तो तुमने बहुत छोटी बात कही कि प्रलय में कार्य अपने धर्मों सहित कारणों में मिलेगा यह स्थिति में भी है कार्य कारणों का अनन्य मानने से इदं सर्वं यदयमात्मा आत्मैवेदं सर्वं ब्रह्मैवेदं-सर्वममृतं पुरस्तात्सर्वं खल्विदं ब्रह्मेति तीनों कालों में अविद्या से आरोपित कार्य वा कार्य के धर्म हैं इससे वे कारणों में नहीं मिलते हैं जैसे मायावी अपनी फैलाई माया से तीन काल में लिप्त नहीं होता है क्यों अवस्तु से ऐसे ही परमात्मा संसार की माया से स्पृष्ट नहीं होता है जैसे एक स्वप्नद्रष्टा स्वप्न में देखी नाना मायाओं से स्पर्श नहीं करता है जाग्रत् सुषुप्ति में स्वप्न से आत्मा का स्पर्श नहीं स्वप्न का उसमें भी स्पर्श नहीं है तीनों अवस्था का एक साक्षी अव्यभिचारी है सो अव्यभिचारी तीनों से कैसे स्पृष्ट होगा परमात्मा का अव*स्था तीन से भाममात्र ही है जैसे रज्जु का सर्पादि भाव से संप्रदायवचन अनादिमायया सुप्तो यदा जीवः प्रबुध्यते ऽजमनिद्रमस्वप्नमद्वैतं बुध्यते तदेति सुषुप्ति समाध्यादि में स्वाभाविक अविभाग प्राप्ति होती है तो भी मृषाज्ञान के दूर न होने से पहिले के समान फिर जगे पर विभाग होता है ऐसे ही यहां भी होजावेगा इमाः सर्वाः प्रजाः सति संपद्य न विदुः सति संपद्यामह इति त इह व्याघ्रो वा सिंहो वा वृको वा वराहो वा कीटो वा पतङ्गो वा दंशो वा मशको वा यद्यद्भवन्तीति जैसे अविभाग ईश में मिथ्याज्ञान से बद्ध विभागव्यवहार स्वप्नवत् स्थिति में देखते हैं तैसे प्रलय में भी मिथ्याज्ञान से बद्ध ही विभागशक्ति का अनुमान होगा मुक्तों का फिर जन्म भी न होगा सम्यक् ज्ञान से मिथ्याज्ञान के वारण से प्रलय में ब्रह्म से भिन्न जगत् रहता है यह पक्ष न मानने से प्रतिषिद्ध है तिससे समंजस औपनिषद्दर्शन है ॥

---

* जगज्जन्मस्थितिविलया ॥

स्वपक्षदोषाच्च १०

प्रधानप्रकृतिकजगमानेपरभीदोषहै शब्दादिहीनप्रधानसे शब्दादिमत्जगकीउत्पत्तिस्वीकारसेविलक्षणकार्यकीउत्पत्तिमानेसेपहिलेउत्पत्तिकेअसत्कार्यवादकाहै।नासमानहै अपीतिसूत्रमेंदोषचारकहेथेवेयहांपरभीहैं जैसेकार्यरूपादिमत्है तैसेकारणप्रधानभीरूपादिमत्हो औकर्मादिइसकेउपादानवोइसकाभोग्यनहोंयहअनियमसमानहै विनाकारणकेनियममेंकारणाभावकोसमतासेमुक्तोंकोभीफिरबन्धहो।गा अथवाप्रलयमेंकुछविभागसेवोकुछअविभागसेरहतेहैं तोजोप्रधानमेंनमिलेतेप्रधानकाकार्यनहोंहैं जेदोषहमकोतुमकोसाधारणहैं तोतुमभीमेरेहीपक्षमेंइनकोक्योंफेंकतेहो। हमतोवेदकेबलसेकथाकरतेहैं इससेउसकानातानटूटैगा ॥

तर्काप्रतिष्ठानादप्यन्यथानुमेयमितिचेदेवमप्यविमोक्षप्रसङ्गः ११

वेदबोध्यअर्थमेंकेवलतर्कसेनझिगड़नाचाहिये वेपुरुषकीबुद्धिसेउत्प्रेक्षाकरीगई हैं तिससेअप्रतिष्ठितहैं क्योंकि उत्प्रेक्षानिरङ्कुशअर्थात्बुद्धिकेआधीनहै किसानेतर्कयत्नसेउत्प्रेक्षाकरीदूसरेनेउसकोतर्काभासकहाहैफिरअन्यनेउसेभी तर्काभास कहा इससेतर्कप्रमाणनेयोग्यनहींहै मतिकेवैरूप्यसेसर्वतीर्थंकरकपिलादोंतर्कादिकापरस्परविरोध देखनेसेइसव्याप्तिवालेतर्ककोध्रुवकहेंगेतिससेअप्रतिष्ठितदोषनहोगा कोईप्रतिष्ठिततर्कनहींहै यहनहींकहिसक्तेहो।तर्ककोअप्रतिष्ठिततातर्कसेहीप्रतिष्ठितहै एकतर्कको अप्रतिष्ठितदेखनेसेअन्यकोभीअप्रतिष्ठत्वकल्पनासेसर्वत

र्क की अप्रतिष्ठा से। नेसे लोकव्यवहार नष्ट होगा भूत वो वर्त्तमान मा
र्गके समान अनागत मार्ग में भी सुख की प्राप्ति वो दुःख की निवृत्ति के
अर्थ प्रवर्त्तमान लोक को देखते हैं श्रुत्यर्थ में विरोध में भी अर्थाभास को
दूर कर सम्यगर्थ का निर्धारण तर्क ही से करते हैं मनु प्रत्यक्षमनुमानं-
चेत्यादि से धर्म वेद सत्यन्त तर्क का अलङ्कार अप्रतिष्ठितत्व ही प्रसिद्ध है
सावद्य तर्क को छाड़ो निरवद्य तर्क को पकड़ो वा पसूढ था तो हम भी-
मूढ होना चाहिये यह कुछ भी प्रमाण नहीं है तिससे तर्क अप्रतिष्ठान
दोष नहीं है अविमोक्षप्रसङ्गः यह मान से भी अविमोक्ष का प्रसङ्ग है
यद्यपि कहीं तर्क प्रतिष्ठित है। तथापि जगत्कारण के विषय में तर्क स्व
तन्त्र नहीं है यह अतिगम्भीर परमानन्द मुक्ति निबन्धन वेद के बिना अ
न्य प्रमाणों से जानने को शक्य नहीं है यह अर्थ रूपादि के अभाव से प्रत्य
क्षादि प्रमाणों का विषय वो लिङ्गादि के अभाव से अनुमानादि का भी
गोचर नहीं है सम्यग्ज्ञान से मुक्ति सब मुक्तिवादी मानते हैं सम्यग्ज्ञा
न स्वरूप है वस्तुतन्त्र होने से जो अर्थ एकरूप है वही लोक में परमा-
र्थ है उसका ज्ञान सम्यग्ज्ञान कहाता है जैसे अग्निःउष्णः इस सम्य
ग्ज्ञान में विरुद्ध भाषण युक्त नहीं है तर्क ज्ञान परस्पर विरुद्ध हैं तिस
से विप्रतिपन्न हैं एक तार्किक ने एक ज्ञान को सम्यक् कहा अन्य ने उस
से उठा दिया फिर अन्य ने उसे उठा दिया तो कैसे अनवस्थित तर्क ज
न्य ज्ञान सम्यक् ज्ञान हो यह भी नहीं कि सब तार्किकों ने एक ता-
र्किक को मुख्य माना हो जिससे उसका मत हम सम्यग्ज्ञान जाने
फिर भूत वर्त्तमान भविष्यत् सब तार्किक मिल के एक देश काल में तर्क-
ज्ञान मुक्ति हेतु निश्चय करने को शक्य नहीं हैं तो एकार्थ बोधिका उन
की मति सम्यग्ज्ञान कैसे हो वेद नित्य सम्यग्ज्ञान का हेतु होने से उ-
सका अर्थ व्यवस्थित है फिर वैदिक ज्ञान की सम्यक्ता तीन काल के ता
र्किकों से दूर करने को शक्य नहीं है इससे सिद्ध हुआ कि औपनिषद ज्ञा

नसम्यग्ज्ञानहै इससेअन्यत्रसम्यग्ज्ञाननहोनेसेसंसारसेमुक्तिन होगीतिससेवेदवोवेदानुसारीतर्कंकेवशसेचेतनजगत्कारणवोप्रकृतिस्थितहै॥

——*◯*——

(शिष्टापरिग्रहाधिकरण ॥ ४ ॥)

एतेनशिष्टापरिग्रहाअपिव्याख्याताः १२

प्रधानकारणवादनिरासेनमन्वादिशिष्टास्वीकृताचखवादिवादानिराकृताद्रष्टव्याइत्यतिदेशार्थः तिससे कोई मत ब्रह्म वादकाबाधकनहींहै वेदानुसारीमनुदेवलादिसेवैदिकदर्शनगुरुतर तर्कयुक्तका उपयोगीसत्कार्यवादआत्मासङ्गादि अंशोंमे ग्रहीत है उससेजोदोषवेदान्तमेदियेथे उनकावारणकिया गौतमादिनेअखवादिवादसेवेदान्तपरआक्षेपकराहै उसकावारणकरतेहैं तुल्यतायहकिअतिगम्भीरजगत्काकारणतर्कसेअग्राह्यहै वोतर्कंकोप्रतिष्ठानहींअन्यथानुमानेअविमोक्षवदविरोधइत्यादिदूषणगौतमादिकेअखवादिवादनिराकरणकारणमेहैं ॥

——*◯*——

(समन्वयबाधाधिकरण ॥ ५ ॥)

भोक्त्रापत्तेरविभागश्चेत्स्याल्लोकवत् १३

फिरभीतर्कबलसेब्रह्मकारणवादपरआक्षेपहै जोभीश्रुतिअपनेअर्थबोधमेंप्रमाणहै तोभीप्रमाणांतरसेउसकागौणार्थहै जैसे मन्त्रार्थवादोंकाआदित्योयूपइत्यादि तर्कभीअपनेअर्थसेअन्यत्रप्रतिष्ठितनहोजैसेधर्माधर्ममेंतर्कादिप्रमाणहोनेसेश्रुतिहैतर्कोनहीं मिटासक्तीअद्वैतकोमिटासक्तीहै फिरकैसेप्रमाणांतरसेप्रसिद्धार्थ

कोअप्रतिबाधतीहै सोकसेभोक्ताभोग्यकाबिभागप्रसिद्धहै भोक्ताचे
तनजीवहै भोग्यशब्दादिहैं जैसे भोक्ताभिन्नभोग्यरोटी होनेको
एकब्रह्मके अभेदसुनने मेंएकत्वकल्पनाहोनेसेएकसे अभिन्नोंके भेद
सेएककोभीभेदहोनाचाहियेतिससेभेदबाधितहै इससेप्रसिद्धभेद
काबाधयुक्तनहींहै जैसे अबभोक्ता भोग्यकाभेददिखाया तैसे
भूतत्रोभाविमेंजानो तिससेभोक्ताभोग्यकेविभागकोप्रसिद्धिकेप्र
भावसेब्रह्मकारणताकानिश्चयअयुक्तहै इसीयुक्तिजालकोकोईवे
दांतीपरफेंकताहै तोवहआगेदृष्टांतदिखाताहै कियालोकवदि
ति विभागमेंरहीउपपन्नमेंबनताहै देखोपानीसेअनन्यहोनेपरभीपा
नीके विकाररूपजोतरङ्गबुदबुदादिकहैं इतरेतरविभागसेइतरेतर-
संश्लेषादिव्यवहारलभताहै इतरेतरभावकीआपत्तिहोनेसेस्वभावे
अन्यहोतेहैं नहीं तो भूतभाविकालोंभोक्तादिविभागाश्रयोंकाअन
त्वाद्वर्तमानकालवदितिविभागोअनाद्यन्ततः उनकोस्वाइतरेत
रभावकीअनापत्तिसे औपानीसे अन्यत्वहै नहींहैएकपानीसेवि
कारोंकामिथोभेदवो उनकेभेदसेभी एकसे अभिन्न कैसेहोंगेइष्ट
मेंअनुपपत्तिनहींहै ऐसेभोक्ताभोग्यकामिथोभेदवोब्रह्माभेदहैभो
क्ताभोग्यकोइतरेतरभावकीआपत्तिनहींहैवोब्रह्मसेअन्यभीनहीं
है यद्यपिओभीभोक्ताब्रह्मकाविकारनहीं क्योंकिजबविकृतसृष्ट
होकार्यकोरचउसमेंघुसगयावुही भोक्तासुनाहै तत्सृष्ट्वातदेवानु
प्राविशदिति तोभीकार्यमेंजोघुसाहै उसकाऔपाधिकविभागहै
जैसे कालकादिनमासादिउपाधिसेऔपाधिकविभागहै ब्रह्मसे
न अन्यत्वमेंभीभोक्ताभोग्यकाविभागसिद्धहुआ समुद्र तरङ्गादि
न्यायसेयहतोमैंकहिचुका लौकिकविभाग का वारण किया पर
मार्थसेविभागनहींहै एकरज्जुमेंदंडस्रग्सर्पादिहैतद्दर्शनसेमुख्य
वारणहै ॥

(आरम्भणाधिकरण ॥ ६ ॥

तदनन्यत्वमारम्भणशब्दादिभ्यः १४

कार्यकारणके अनन्यत्वसे कार्य व्योमादि कारणब्रह्म परमार्थसे कार्यकारण अलग नहीं क्यों आरम्भण वह यहां कि एकके जानेसे सब जाननेकी प्रतिज्ञा करी तो दृष्टांतकी आशा हुई तो कहा कि हे प्रियदर्शन यथा सोम्यैकेन मृत्पिंडेन सर्वं मृण्मयं विज्ञातं स्याद्वाचारंभणं विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यमिति जब एक मट्टी का पिंड परमार्थसे मट्टी जाना तो सब उदञ्चनादि मट्टी ही के जाने गये फिर वे केवल बाणी से ही हैं वस्तुसे बिकार कछु नहीं है नाम झूठे हैं मट्टी ही सच्ची है यही ब्रह्मका दृष्टांत पढ़ा है दूसौवाचारभणशब्दसे व्योमादि दाष्टांन्तिकमें भी ब्रह्मसे भिन्न कार्यजातका अभाव है ॥

फिर तेजजलक्षितिको ब्रह्मका कार्य कहि कि उनको तेजजलक्षितिसे पृथग् अभाव कहते हैं अपागादग्ने रग्नित्वम्वाचारम्भणविकारो नामधेयन्त्रीणिरूपाणीत्येव सत्यमिति भावार्थ है अग्नेतेरा अग्नित्व अपगत है कारणमात्रासे तेजजलक्षितिके रूप तन्मात्रात्मक सत्य हैं वे भी सन्मात्र होनेसे सत् ही शेष रहा आदिशब्दसे वे उदाहर्तव्य हैं जे आत्माको एकत्व कहते हैं जैसे एकविज्ञानसे सबविज्ञान होनेको कोई और गीति नहीं है ऐतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्य स आत्मा तत्वमसि इदं सर्वं यदयमात्मा ब्रह्मैवेदं सर्वं आत्मैवेदं सर्वं नेह नानास्ति किञ्चनेत्यादि प्रतिज्ञाके बलसे जैसे घटकरकादिके व्योमको महाव्योमसे अनन्यत्व जैसे मृगतृष्णाके पानीको ऊषरादिसे अनन्यत्व है दृष्टनष्टस्वरूप जो है सो अनुपाख्य है जो सत्तास्फूर्तिशून्य है सो अनन्य है प्रातीतिक अनित्य है ऐसे ही भोक्ताभोग्यादिप्रपञ्चमात्रका अभाव ब्रह्मसे पृथक् द्रष्टव्य है शुद्धाद्वैत कहा

बभेदाभेदसुनो इससेमृदादिदृष्टांतअनुरूपहोंगे एकात्मब्रह्महै जैसे वृक्षअनेकशाखहै ऐसेब्रह्मभीनानाशक्तिवोपरिणामसेयुक्त है इससेएकत्ववोनानात्वदोनोसचहैं जैसे वृक्षएकवोशाखाना ना जैसे समुद्रस्वरूपसेएकवोफेनतरङ्गादिरूपसेनाना जैसे मट्टीएकवोघटादिरूपसेनाना एकत्वज्ञानसेमोक्षहोगो नानात्वज्ञानसेकर्मकांडवोलौकिकव्यवहारहोंगे इसढबसेभेदाभेदमतमेसबव्यवस्थाबनेगो वोअत्यन्ताभेदमेद्वैतभानबाधहै तुमहाराकहाठीकनहीं क्युं मृत्तिकेत्येवसत्यमिति इसपदसेप्रकृतिमात्रकोदृष्टांतमेसत्यत्वकेनिश्चयसे वाचारंभणशब्दसेविकारमात्रको मिथ्याकहाहै दार्ष्टांतिकमेभीकहांकारणकोसत्यकहाहै ऐतदात्म्यमिदंसर्वंतत्सत्यमिति फिरजीवकोब्रह्मभावउपदेशहै जैसे सआत्मातत्वमसिश्वेतकेतोइत्यादि ज्ञानकर्मसमुच्चयकेअर्थएकत्वनहि किन्तु स्वाभाविक स्वभाव अविद्या है तिससे जीवत्व का वाधकब्रह्मभावहै जैसे रज्वादिवुद्धिसर्पादि बुद्धि की वाधिका है जीवकेबाधसेजीवाश्रितसबस्वाभाविकव्यवहारवाधितहैं व्यवहारकोप्रसिद्धिकेअर्थब्रह्मकेअपरनानाअंशकल्पतेहो ब्रह्मदर्शीकोसबक्रियाकारक फलादि व्यवहारकाअभावदिखातीहै ॥

यत्रत्वस्यसर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकम्पश्येदिति सत्यसंसारमेंजीवकोब्रह्मत्वनहो क्युं भेदाभेदएकत्रएकदाविरोधसेनरहिसकेंगे इससेअसंसारीब्रह्माभेदसदासेहै तोसंसारमिथ्याहीहै तत्वमसोसेब्रह्मात्मभावकीअवस्थाविशेषनहींहै जैसे लोकमेचोरजानशपथलोभूठाहुआ तोजरावोवंधा तैसे नानात्ववादीवंधा हैजोसत्यसन्धहैतोनजरावोछूटिगया तैसे एकदर्शीमुक्तहोताहै इसदृष्टांतसेएकत्वसत्यनानात्वमिथ्याहै जोदोनोसचहैं तो नानात्ववादीकैसेभूठाकहाहै नानात्वकीनिन्दासेएकत्वकोदृढ़

करतीहै मृत्यो:समृत्युमिति भेदाभेदमतमेंजीवकाब्रह्माभेदज्ञा
नसेभेदज्ञानकोनिवृत्तितिससेमुक्तिइष्टहै वहनयुक्तहै भेदज्ञान
कोभ्रमनमाननेसेप्रमाकाप्रमासेबाधनहींहै अविरोधसे तोकैसे-
एकत्वज्ञानसेनानात्वज्ञानकाबाधहै केवलएकत्वहीमाननेसेप्रत्य-
क्षादिप्रमाणनहोंगेनिर्विषयसे जैसेस्थाणवादिमेंपुरुषादिज्ञानहै
फिरविधिनिषेधभीभेदापेक्षहै भेदकेअभावसेउसकाभीअभावहो
फिरमोक्षशास्त्रभीशिष्यशाशिक्षादिकेभेदाधीनहै तोभेदकेअभा
वसेउसकाभीअभावहो फिरकैसेझूठेमोक्षशास्त्रकेकहिनेसे आ
त्मैकत्वसत्य है जैसे किसी ने कहीं धूलिको धूममानवह्निकाअनु
मानकरातहांप्रमेयबाधितहै तिससेभेदाभेदवोभेद पर वेदांता-
दिप्रमाणहैं उत्तर ब्रह्मात्मताविज्ञानसेपूर्वसबव्यवरसचहै जैसे
जगनेसेपूर्वस्वप्नकाव्यवहारसचहै जोलोएकआत्माकोसत्यनहीं
जानताहै तोलोप्रमाणप्रमेयफलादिविकारोंमेझूठीबुद्धिकिसी
कोनहींहोतीहै सबजन्तुविकारोंकोही अहम्मम इसअविद्यासे
अपनाजानतेहैं स्वाभाविकब्रह्मत्वछोड़केब्रह्मत्वबोधसेपूर्वजीव
कोसबलौकिकवैदिकव्यवहारसिद्धहैं जैसे स्वप्नमेंप्राकृतजनछो-
टेबडेनानाविधपदार्थोंकोदेखताजगनेसेपूर्वप्रत्यक्षसमसमुझता
है उसकोउसकालमेप्रत्यक्षाभासनहींजानपड़ताहै तैसे ब्रह्म
ज्ञानसेपूर्वविश्वहै एकहीस्वप्नासबकैसेदेखतेहैं जैसे सबसूर्यको
हस्तमितदेखतेहैं कैसे असत्यवेदान्तवाक्यसेसत्यब्रह्मात्मत्वका
बोधहो नहींरज्जुकेसांपसेकाटामरतावोनहींमृगतृष्णाकेपानी
सेपीनादिअर्थसिद्धहोतेहैं यहदोषनहीं शङ्काविषादिसेभीमरना
दिहैं यहवैद्यकसेहैंसोतेमेअसत्यसांपपानीआदिसेदंशस्नानादि
कार्यदेखतेहैं सोकार्यझूठहै तोसुनोयद्यपिस्वप्नकेद्रष्टाकोस्नाना
दिकार्यझूठेहैं तथापिजगतेकोघटादिकेसमानप्रातिभासिकवो

स्वप्नदृष्टवस्तुकाफ*लसत्यहै अबाध्यमानतासे कोईसोकेउठास्व
प्ननेदेखे स्नानादिकार्योंकोझूठामानताहै तोभीउसकेज्ञानको
झूठानहींमानताहैजोदेहहीकोआत्माजानताहै वहीदेहात्मवा
दीकहिलाताहै यदि स्वप्न के ज्ञान को स्वप्न देह के धर्म मानोगे
तोजोसोकेजगाहै सोहीकहताकिमैंनेतैसास्वप्नदेखाहै यहअ-
बाधितज्ञाननहो इससेदेहभेदमेंभीअनुसन्धानदेखनेसेदेहसे
अन्यअनुसन्धाताहै झूठेस्वप्नमेंसत्यफलकोश्रुतिकहतीहै य
दाकर्मसुकाम्येषुस्त्रियंस्वप्नेषुपश्यति समृद्धिन्तत्रजानीयात्तस्मि-
न्स्वप्ननिदर्शने इत्यादि विषयविनाविषयीज्ञानझूठाहै सत्यमेंमि
थ्याभेदानुगतचैतन्यसेज्ञानसम्भवसे अन्वयव्यतिरेकमेंकुशलोंने
इसस्वप्नसेअच्छावोद्गमसेबुराफलसूचनकियाहै ऐसेचरकादिमें-
अरिष्टनरणसूचकबहुतहैंफिररेखामेंअकारादिकोभ्रांतिसेसत्यअ
कारादिकाबोधदेखाहै असत्यसेसत्यकाजन्मकहनेसेयहसुगतनि
यमभङ्गहुआकियदर्थक्रियाकारितत्सत्यमिति अन्ततसेसत्यकाज्ञा
नकहिनेसेयहव्याप्तिभङ्गहुई यःन्तृतङ्करणागम्यन्तदाध्यं कूटलिङ्गा
नुमितवन्हिवदिति फिरकल्पितवेदांतभीसत्यब्रह्मबोधकहैं इस-
सेतात्विकप्रामाण्यहै फिरआत्मैकत्वकाबोधकअन्यप्रमाणवेदां
तहै इससेपरेकछुनचाहिये जैसे यजेतयहकहनेसेकिंकेनकथं
यहकांक्षाहै तत्वमसिअहंब्रह्मास्मिइसकहिनेसेकछुकांक्षनहींहै
सर्वात्मैकत्वकीअवगतिसेयहअवगतिनहींहोसक्ती यहनहींक-
हिसक्तेहो क्योंकि अवगतिकेसाधनश्रवणादिवेदानुवचनादि
केविधानसे तद्वास्यविजज्ञाविल्यादिसे इसअवगतिकोभ्रांतिवो
अनर्थिकानहींकहिसक्तेहो अविद्यानिवृत्तिफलदेखनेसेवोबाधक

* अवगतिर्द्देतिःवस्तुनःफलंचैतन्यस्यावत्वभिव्यक्तं ॥

ज्ञानकेअभावसेएकात्मावगतिकेपूर्वसबसच्चाझूठालौकिकवैदिक
व्यवहारअबाधितहै जबश्रुतिसेएकात्मतासुनीतबसबप्राचीनभे
दव्यवहारबाधितहो तैसे अनेकरूपब्रह्मकीकल्पनाकारणकाअ
वकाशनहींहै ननु मृदादिदृष्टांतोंसेपरिणामिब्रह्मश्रुतिकोइष्ट
जानाजाताहै लोकमेंमृदादिअर्थपरिणामीदेखनेसेसोनहींप्रिय
सबविकारसेरहितब्रह्मनिरवयवकूटस्थ श्रुति कोइष्ट है सवाएष-
महानजआत्माअजरोअमरोऽमृतोऽभयइत्यादि स्थितिगतिके
समानएकहो ब्रह्मपरिणामिवापरिणामशून्यक्योंनहो कूटस्थ
काइष्टिसेपरिणामबोलयमेंअपरिणामनहोगा जैसे ब्रह्मैकदर्श
नमुक्तिसाधनहै तैसे जगदाकारपरिणामित्वकादर्शनस्वतन्त्रकि
सीकौवाब्रह्मप्राप्तिफलार्थहोतंयथायथोपासतेतदेवभवतीतिश्रुति
प्रमाणनहींहै कूटस्थब्रह्मज्ञानसेमुक्तिसुननेसे सएषनेतिनेतिय
हकहिफिरकहाकिअभयंवैजनकप्राप्तोसीति ब्रह्मप्रकरणमेंसबवि
शेषधर्मसेरहितब्रह्मकेदर्शनहीसेफलसिद्धिहै जीवाक्यअफलसुने
हैं तेब्रह्म दर्शन के उपाय हैं ब्रह्मकोजगदाकारपरिणामित्वादि
फलवत्सन्निधावफलन्तदङ्गमिति वेस्वतन्त्रफलार्थनहींहैं नित्यमो
क्षफलछोड़अनित्यपरिणामिफलमाननाअनुचितहै ब्रह्मविदा
प्नोतिपरमिति श्रुति कूटस्थब्रह्मवादीएकांतसेएकब्रह्ममानताहै
फिरईशितावोईशितव्यकेअभावसेईश्वरकारणकीप्रतिज्ञाका
विरोधहै अबअनन्यत्वकहिनेसे चेतनाविद्यात्मकनामरूपबी
जकेव्याकरणकीअपेक्षासेनित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वरूपसर्वज्ञसर्व शक्ति
ईश्वरसेजगज्जनि स्थिति लय हैं तस्माद्वाएतस्मादात्मनइत्यादि
नअचेतनप्रधानसेवाअ*न्यकिसीसेउक्तप्रतिज्ञासे विरुद्ध नहीं क

*अथवादि ॥

हाहै कैसेनहींकहा आत्माकोअत्यंतएकत्वअद्वैतत्वतोकहाहै
सुनो जैसे नहींकहाहै नामरूपहीबीजअविद्यात्मचिदात्मामे-
लीनथेफिरबीजकाव्याकरणस्थूलासृष्टिहै सृष्टिकीअपेक्षासेईश्व
रत्वादिसेविरोधनहींहै नामरूपकोईश्वरनहींकहिसक्तेहो ज-
ड़तासेईश्वरसेअन्यभीनहींकहि सक्ते हो कल्पितकीप्रथक्सत्ता
वोस्फूर्त्तिकेअभावसे तिससेआविद्यकनामरूपअनिरुक्तसंसार
केबीजहैं सर्वज्ञकेआत्मभूतसेहैं मायाशक्तिप्रकृतिश्रुतिमेंकहोहै
नामरूपईशकेआत्मभूतहैंतोवहजड़होगा यहनहींइनसेअन्यस
र्वज्ञहै आकाशोवैनामनामरूपयोर्निर्वहितातेयदन्तरातद्ब्रह्मेति
श्रुति नामरूपेव्याकरवाणिसर्वाणिरूपाणिविचिन्त्यधीरोनामा
निकृत्वाभिवदन्यदास्तेएकंबीजम्बहुधायःकरोतीति अविद्यासे
करेनामरूपोंकीउपाध्यनुरोधीश्वरहै घटाद्युपाध्यनुरोधीव्योम
केतुल्य वहीस्वात्मभूतघटव्योमस्थानीयअविद्यासेकरेनामरूप-
कार्यकरणसमूहके अनुरोधीजीवनामविज्ञानात्माकोदृष्टहै भा
ष्यमेंनानाजीवनहींकहेहैं बुध्यादिसंघातभेदसेजीवोंकाभेद क
हाहै अविद्यासेबिंवस्थानईश्वरअविद्यासेप्रतिबिंवस्थानजीवए-
कहीहै व्यवहारमेंअविद्योपाधिपरिछेदापेक्षईश्वरकाईश्वरत्वस
र्वज्ञत्वसर्वशक्तित्वहै परमार्थमेंविद्यासेसवउपाधिसेछुटेआत्मा
मेईशिता ईशितव्यसर्वज्ञादिव्यवहारनहींसिद्धहै यत्रनान्यत्पश्य
तिनान्यच्छृणोतिनान्यद्विजानातिसभूमेति यत्रत्वस्यसर्वमात्मै-
वाभूत्तत्केनकंपश्येदिति परमार्थमुक्तिमेंसवकेअभावकोवेदांतक
हितेहैं श्रुतिमेभीईश्वरादिव्यवहारकहाहै एषसर्वेश्वरएषसर्वभू
ताधिपतिरेषभूतपालएषसेतुर्विधारणएषांलोकानामसम्भेदाये
ति सूत्रकारनेपरमार्थकोअभिप्रायसेअनन्यत्वकहा वोव्यहार
कोअभिप्रायहैमहासमुद्रकेतुल्यसेब्रह्मकहाकार्यका अनराकर-

णकरकेस्याल्लोकवदिति तदनन्यत्वमितिउपासनार्थपरिणाम काआश्रयकियाहै प्रत्यक्षादिविरोधदूरकर अनुमान विरोध दूर करतेहैं ॥

भावेचोपलब्धेः १५

कारणकेहोनेपरकार्यलभताहै नकारणकेअभावमेंइससे-भीकारणकार्य अनन्यहैं जैसेमट्टीहोनेसेघटहोताहै वोतन्तुहो-नेसेपटनियमसेअन्यहोनेपरअन्यकीप्राप्तिनहींदेखीहै जैसे घो-ड़ागौसेअन्यगौकाकारणनहींहै ऐसेमृद्घटअन्यनहींहैं कुलाल कारणहोनेसेभीघटनहींलभताहैहोनेपरभीनिमित्तनैमित्तकभा वकेअन्यहोनेसेअन्यकेहोनेसेअन्यकीप्राप्तिनियतदेखीहै जैसे अ-ग्निकेहोनेसेधूमकोउद्दापितअग्निहोनेमेभीगोपघटिकादिमे धू-मदेखनेसे यहमनहींमेराकहासुनोअविच्छिन्नमूल अभ्रलिहदीर्घरू पावस्थधूमकेविनाअग्निकाज्ञाननहींहै तोभीकुछदोषनहीं का-र्यकारणकोसत्तासेसहकृतवुद्धिकार्यकारणकेअनन्यत्वमेहेतु हम कहतेहैं अथवासामानाधिकरण्यवुद्धिग्राह्यहेतुहै क्योंकि मृद्घ-टइससामानाधिकरण्यवुद्धिकेदेखनेसेअग्निधूमयहांमदेखनेसे ए कपटयहप्रत्यक्षतन्तुसेपटकोपृथक्सत्तामेंप्रमाणनहीं है क्योंकि तन्तुकेविनापटनामकुजनहींलभताहै प्रत्यक्षसेतन्तुहीआतान-वितानसंयोगोपट इसप्रत्यक्षसेअनन्यत्वलभतेहैं औरभीतन्तुमें अंशुअंशुमेअवयवहैं जोप्रत्यक्षनहींहैंउनकायहअनुमानहैकार्यंवि मतंकारणादभिन्नंकार्यत्वात्पटवदिति तत्तत्कार्यमेंकारणहीशेष रहताहै इसप्रत्यक्षलाभसेलोहितशुक्लकृष्णातीनिरूपफिरवायुमा त्रआकाशमात्रअनुमेयहैं फिरपरब्रह्मएकअद्वितीयमेसवप्रमाणहैं नप्रधानादिमें ॥

सत्वाच्चावरस्य १६

घटादिमट्टीमेथेतेमट्टीमेलभेसामान्यसे व्यतिरेकसे जो जहांनहींवहवहांसेनहींलभता जैसे सिकतासेतेल तिमसे उत्पत्तिकेपूर्व अनन्यया तोउत्पन्नभीअनन्यहोकारणसेकार्यजाना जाताहै जैसे कारणब्रह्मतीनोंकालमेंसत्वसेपृथक्नहींऐसेहीकार्यजगतीनकालमेसत्वकोनहीं छाड़ताहै फिरसर्वानुस्यूतचिन्मात्रसत्वएकहैतादात्म्यसेघटपटका इससेकार्यकाकारणसेअनन्यत्व है भेदहै एकसत्ताहोनेपरभी ॥

असद्व्यपदेशान्नेतिचेन्नधर्मान्तरेणवाक्यशेषात् १७

श्रुतिक्वचित्उत्पत्तिकेपूर्वकार्यकाअसत्वकथनसेउसको असत्कहतीहै असदेवेदमग्रआसीदिति असद्वाइदमग्रआसीदितिच सुनो उत्पत्तिकेपूर्वकार्यकोअत्यन्तासत्वकोअभिप्रायसेअसत् नहींकहती तोक्याकहतीहै व्याकृतनामरूपधर्मोसेअव्याकृतनामरूपधर्मान्तरकोकहतीहै उसोधर्मसेउत्पत्तिकेपूर्वसत्कार्यकाजो कारणमेअन्यनथा उसकोअसत्व्यपदेशहै यहवाक्यशेषसेजाना-है यहांजोउपक्रममेअसत्पदसेकहासोहिफिरतत्पदसेपरामर्शकरसत्केसङ्गमिलायाअसदव्याकृतनशून्यहै जैसे तत्सदासीदिति असत्कापूर्वपरकालमेंअसम्बन्धसेआसीत्पदभीअयुक्तहोनेसे अ-सद्वाइदमिति यहांभीवाक्यशेषसेअत्यन्तासत्वनहींकहाहै किन्तु नामरूपरहित तदात्मानंस्वयमकुरुतेति इससे ॥

युक्तेःशब्दान्तराच्च १८

युक्तियोंसेभीउत्पत्तिकेपूर्वकार्यकासत्वोअनन्यत्वकारण से

नानाजाताहै वेजैहैं दधिघटरुचकादिकोचाहनेवालेदूधमाटीसो
नादिप्रतिनियतकारणोंकोहीलेतेदेखेहैं यहनहींकिदहीकाअ-
र्थीमाटीवाघटकाअर्थीदूधलेताहै यहतो असत्कार्यवादसे होस
कताहै जन्मकेपूर्वसबकासर्वत्रअसत्वसमानहै तोक्युंदूधहीसेदही
जन्मताहै नमट्टीसे मट्टीसेहीघटजन्मतानदूधसे पूर्वअसत्वतोअ
विशिष्टहै तोभीदूधहीमेदहीकाकछुअतिशयहै नमट्टीमेवोमट्टी
मेकछुघटकाअतिशयहैनदूधमे दूसकहनेपरभीप्रागवस्थातिशय
वालीठहिरी तोभीअसत्कार्यवादकीहानि वो सत्कार्य वाद की
सिद्धिहुई फिरकारणकीशक्तिकार्यकेलियेकल्प्यमाननहींअन्यथा
असतीकार्यकोकरतीहै असत्ववोअन्यत्वकाविशेषनहींहै तिससे
कारणमेलीनकाअकार्यहीअभिव्यक्तशक्तिहै कारणात्मभूतशक्ति
शक्तिकाआत्मभूतकार्यहै फिरभीकार्यकारणकावाद्रव्यगुणादि-
काघोड़ाहाथीके तुल्यभेदनभासनसेतादात्म्यसम्बन्धजानो सम
वायअनवस्थासेदूषितहै समवायनमाननेसेविशिष्टधीकाविछेदहो
सोनमट्टीघड़े कास्वरूपसम्बन्धवनाहीहैतोसमवायकीप्रसिद्धिहैद्र
व्यगुणविशिष्टयहबुद्धिनहैगोसमवायममाननेसे जैसेसमवायसम्ब
न्धान्तरकोनहींचाहता तैसे संयोगभीनहींचाहताहै द्रव्यगुणों
काबाधतादात्म्यसेहै तोउसकीकल्पनाअनर्थकहै किन्तु निष्पा
द्यत्वादयोगुणादूति श्रुतिस्मृत्यादिषुव्यवहारात्इष्टधर्मोगुणाइ
ति परिभाषा जातिविशेषोगुणत्वमिति परिभाषा जैसे अवय
विद्रव्यकार्यकारणअवयवोमेवर्तैहै सोक्यासबमेवाएकएकमेरह
ताहै प्रथममेअनवस्थादूसरेमेएकमेव्यापारहोनेसेअन्यत्रव्यापार
नहो जिसदिनचैत्रमथुरामेथा उसीदिनकाशीमेहै युगपत्अने
कहोनेसेअनेकताहोहै।गो गोत्ववत्नहींहोसक्ताहै प्रत्यक्षनहोने
से जोसबअवयवोंमेअवयवीएकहीघुसाहैवोकार्यकेसङ्गसम्बन्धहै

तोशींगसेचुचोकाछातीसेपीठिकाकामहोसोनहींदेखतेहैंतो जै
सेवेअघरवनमेंरोटीआदिकार्योंकाकर्त्ताहै तैसे गौअवयवीअपने
कार्यदूधादिशींगादिसेकरो द्रव्यनिरूपणसेकार्यअनिर्वाच्यहै जै
से घटचलताहै यहांआश्रयरूपकर्त्ताचलनक्रियाका घट है तैसे
पटजन्मा है यहांजनिक्रियाकेकर्तृत्वकाअनुभवहै दूससेजनिके
कर्त्ताकाजनिकेपूर्वसत्वकहो असत्वकहनेसेक्रियाभीअसत्वहोगी
उत्पत्तिप्रसिद्धहै वहसकर्तृकाहोनेयोग्यहै गत्यादिवत् क्रियाहो
वोअकर्तृकाहो यहीविरुद्धहै घटकीउत्पत्तिका घट कर्त्ता नहीं
किन्तु अन्यकर्त्ताकल्पनाकरो तैसे कपालादिकोंकीउत्पत्तिका
अन्यकर्त्ताकल्पनकरो अन्यकर्तृकाउत्पत्तिमाने सो घट जन्मा है
ऐसेकहिनेसेकुलालादिकारणजन्मेहैं यहीकहाहै। ऐसातोलो
कमेंभाननहींहै औरजन्मकाभानभीनहीं भावकीप्रथमविकार
कानामउत्पत्तिहै कार्यकी उत्पत्तिकारणमेंमिलीहै स्वस्मिन्संज्ञा
समवायोवेतिताकिकाबदन्तिजोजन्मानहींउसकासम्बन्धकैसेक
होगे दोनोंविद्यमानोंकासम्बन्धसम्भवहै नसत्असत्का वाअस
तोंका नरशृङ्गसमसर्वदासर्वत्रकार्यअसत्नहीं किन्तु जन्मकेपूर्व
वोध्वंसकेपीछेअसत्है बीचमेंसत्है असत्काकालसेसम्बन्धनहीं
है तोआगेपीछेकीमर्यादायुक्तनहींहै क्युं अभावनिरूपाख्यहोने
से सत्हीघरखेतोंकीमर्यादालोकमेंदेखीहै अभावकीनहीं प्राग्
सूर्यवर्माकेअभिषेकसेवन्ध्यापुत्रराजाथा ऐसीमर्यादाकरनेसेनि
रूपाख्यवन्ध्यापुत्रराजाहुआथा वोहै वोहोगानहीं जोवन्ध्यापु
त्रकर्त्ताकेयत्नसेपीछेहोगा तोकार्यभीजन्मेगा। कार्यकाअभावभी
कर्त्ताकेयत्नसेपीछेहोगा ॥

सत्कार्यवादीकहताहैकिमैंवन्ध्यापुत्रवोकार्याभावइनदोके
अभावमेंविशेषनहींदेखताहूं क्यों जैसे कर्त्ताकेयत्नसेपीछेवन्ध्या

पुत्रनहींहोगा तैसे कार्यभावभीकर्त्ताकेयत्नसेपीछेनहोगा जो असत्सेसत्नहींहोताहै तोकर्त्ताकायत्ननिरर्थकहो जैसे कोई कर्त्ताप्राग्सिद्धकारणकेस्वरूपसिद्धिके अर्थ यत्न नहीं कर्त्ता है तैसे प्राग्सिद्धवोकारणसेअनन्यकार्यकोस्वरूपसिध्यर्थनकोईयत्नवान् हो कर्त्तासार्थयत्नके अर्थव्यापारकरताहै इसीसेमैंअसत्उत्पत्ति केपूर्वकार्यकाअभावमानताहूं सोनदोषकर्त्ताकायत्नकारणको कार्यरूपव्यवस्थापनकरनेसेसार्थहै कार्यरूपभीकारणकाआत्मा हीहै अनात्माकाआरम्भनहींहै यहकहिचुके भावार्थ सत्कार्य वादमेंकर्त्ताकासार्थयत्नकेअर्थकार्यकीअभिव्यक्तिमानीहै अद्वैत-वादमेंमायासेस्वप्नवत्सबकार्यहै विवेकसेसबअयोग्यहै योग्यहो नेसेद्वैतहोहोगा यही मुख्यसमाधानहै अन्य समाधाननहींहै कारणसेभिन्नअसत्कार्यजन्मताहैयहसमाधाननहींअसत्पक्षमेदो षकहाथा मट्टीमेंपृथुबुध्नादिअवस्थाविशेषनहींदेखा फिरवुहघट मेंदेखा तिससे घटमट्टीसेभिन्नहै विशेषावस्थाहोनेसेहक्षकेसम यहमतकहो विशेषदेखेहीसेवस्तुअन्यनहींहै संकोचितहाथपा-षवेप्रसारितहाथपाववि‍शेषदेखनेसेभीवस्तुअन्यनहींहै सोही कहाहैप्रत्यभिज्ञानसेफिरबापआदिकेदेहकीअवस्थाकेभेदमेंभी-अभेदहै मेरावापमेरीमामेराबेटाइसप्रत्यभिज्ञासे दार्ष्टान्तिकमें मृदादिकेनाशसेघटादिजन्मतेहैं तोजन्मनाशरूपविरुद्धहोने-सेकार्यकारणकाअभेदयुक्तनहींहैदहीघड़ाआदि दूधमट्टीसेयुक्तप्र त्यक्षहैंतिससेनाशअसिद्धहैवटबीजादिसमानअवयवोंसेउपचित अङ्कुररूपगोचरजन्मानमलभतेहैंफिरतेहीअवयवोंकेअपचयदेख नेसेनाशनामपातेहैंअङ्कुरादिमेंबीजादिकेअवयवोंकेअन्वयसेज न्मनाशनहींहैउपचयापचयलिङ्गसेवस्तुभेदकाअनुमानहोनेसेतो असत्सेसत्ववोसत्वसेअसत्वहो तोगर्भवासीवोउत्तानशायीका-

भेद हो फिर बाल्य यौवन स्थविरों में भी भेद हो पित्रादि व्यवहार भी लोप हो कारण का कार्य में अन्वय कहने से क्षणभङ्गवाद भी खण्डित किया जो उत्पत्ति के पूर्व असत्कार्य मानता है उसके कर्त्ता का यत्न- निर्विषय हो अभाव का विषय न होने से जैसे खड्गादि से व्योम का हनन निष्प्रयोजन है समवायिकारणविषय कर्त्ता का यत्न है यह न- हीं है अन्यविषय कर्त्ता के यत्न से अन्य की सिद्धि होगी यह अतिप्रसङ्ग दोष समवायिकारण से कार्य के भिन्न पक्ष में है फिर समवायिकारण जो आत्मातिशय कार्य है तो सत्कार्य सिद्ध है तिससे जो रादिद्रव्य होद ध्यादि रूप में तिष्ठमान कार्य नाम से कहे जाते हैं तो अवसों वर्ष में भी का रण से अन्य कार्य का निश्चय शक्य नहीं है अब मूल कारण ही अन्य कार्य से तिस रचना कार से नटसम सब व्यवहार का ठौर है उत्पत्ति के पूर्व कार्य का कारण से सत्व वो अनन्यत्व युक्ति से जान कहि चुके (श ब्दान्तराच्च) सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयं इति तद्धैक आहुरसदेवेदमग्र आसीदिति इस असत्पक्ष का उपक्षेप कर कहा- कि कैसे असत् से सत् जन्मा है कथमसतः सज्जायेतेति यह आक्षेप क र निश्चय करा है सत्त्वेव सोम्येदमग्र आसीदिति यहां इदं पद से कार्य का उत्पत्ति से पूर्व सत्पद कारण से सामानाधिकरण्य सुनने से सत्व वो अनन्यत्व प्रसिद्ध है यदि उत्पत्ति से पूर्व असत्कार्य हो पीछे से उत्पद्यमा न कारण से समवायि हो तदा कारण से अन्य हो तो वेद प्रतिज्ञा स रोग हो सत्व वो अनन्यत्व को अवगति से वुह्नी प्रतिज्ञा नीरोग है येना श्रुतं श्रुतम्भवतीति ॥

पटवस्त्र १९॥

जैसे वन्ध्या वस्त्र अस्पष्ट जाना जाता है कि वस्त्र है वो कुछ और वस्तु

---

* कारकव्यापार ॥

है यासूद्रादिसेवस्त्रजानलेतो भी अर्थादिभेदनहीं जान सकेगी वही प्रसारितवस्त्र अस्पष्ट वस्त्र ही जाना जाता है जैसे वंधनकालमेंवस्त्र तोजानापरलम्बाचौड़ानजाना वहीप्रसारणकालमेंचौड़ाजानापरवेष्टितसेयहअन्यभिन्नवस्त्र है ऐसनहींजानता है जैसे मशेसेशश तन्त्वादिमेंवस्त्रादिकार्य अस्पष्ट है तुरीवेमकुविन्दादि कर्त्ताकेयत्नोसेस्पष्टजानाजाता है इसीसंवेष्टितप्रसारितपटन्याये सेहीकार्यकारणसेअनन्य है ॥

यथाचप्राणादि २०

जैसे लोकमेंजबतकप्राणपवनहृदयमें होरहिता है तबतक उससेजीवनमात्रहीसिद्ध है अन्यप्राणभेदोंसेप्रसारणादिकार्य भी सिद्धहोतेहैं परन्तुवेसबप्राणादिभेदपवनस्वभावहीहैं नकिपवन सेभिन्नहैं ऐसेविश्वरूपकार्यकारणब्रह्मसेभिन्ननहीं है तिससेस वविश्वब्रह्मकाकार्यऔरब्रह्मसेअनन्य है यहश्रोतीप्रतिज्ञासिद्ध हुई है येनाश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातंविज्ञातमिति ॥

—⁂—

हिताकरणाधिकरण ॥ ७ ॥

इतरव्यपदेशाद्धिताकरणादिदोषप्रसक्तिः २१

स्वानिष्टं निरयादिकंनजनयेत्स्वतन्त्रचेतनत्वादितिन्यायः। चेतनहीजगकर्ता है तोहिताकरणादिदोषउसमेंहोंगे क्युं जीव कोब्रह्मकहाहैश्रुतिने सआत्मातत्त्वमसिश्वेतकेतो अथवाअविकृतपरमात्माकार्यमेंघुसाजीवकहाहै तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशदि

ति फिरपरादेवताजीवकोआत्मशब्दसेकहतीहै वोनहिंब्रह्मसे-
भिन्नजीवकोदिखातीहै अनेन जीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपे-
व्याकरवाणीति तिससेजोब्रह्मकाकर्तृत्वहैसोजीवहीकाहै इस
सेस्वतन्त्रकर्ताहुआतोअपनेकोजोमनोहरहै वुहीकरेगानजन्मम
रणजरानरकरोगादिअनेकअनर्थजालोंकोकोईस्वतन्त्रअपनेअर्थ
बन्धनकाघरबनाकेफिरउसमेंघुसकेबद्धहोयहनहींदेखाहैफिरन-
आपअत्यन्तनिर्मलहुआअत्यन्तमलिनदेहकोआपहीग्रहणकरेग्र-
हणकरीभीदेहकथञ्चित्दु:खदाईहैतोइच्छासेत्यागे वोसुखदाई
कोलेवेस्मरणभीहोकिमैंनेयहजगबिचित्ररचाहै सबलोगअपने२
करेकार्यकास्पष्टस्मरणकरतेहैंकियहकार्यमेराहीकराहैफिरजैसे
मायावीअपनीफैलाईमायाकोविनाश्रमइच्छासेसमेटताहैऐसेही
जीवभीइसफैलीसृष्टिकोसमेटो जीवअपनेदेहकोभीविनाश्रमसे
नहींगिरासक्ताहै ऐसेहितकर्मादिकेअदर्शनसेजगत्कीप्रक्रिया
चेतनसेमाननाअन्याय्यहै ॥

अधिकन्तु भेदनिर्देशात् २२

जीववोईशके अभेदसेजीवगतदोषईशमेपहुंचे वोईशकेसृष्टि
स्थितिसंहारशक्तिसर्वस्मृतित्वादिगुणजीवमेपहुंचेयहलौटपौटहुए
नहींहैक्युंजीवकीसंहारशक्तिअपनेदेहमेरहतपरभीनहींदेखते हैं
सिद्धान्तसेलोकमेंबिम्बप्रतिबिम्बकेतुल्य कल्पितभेद कोमानेसे-
सबधर्मव्यवस्थितहैं अहिताकरणादिदोषब्रह्ममेंनहीं क्युं नित्य
मुक्तस्वभावसेनकुछकर्त्तव्यनपरिहर्तव्यहै वहसर्वज्ञसर्वशक्तहैतो
सबजानकरसक्ताहैजीवऐसानहींहै तोउसमेहिताकरणादिदोष
भीहैंहमतोजीवकोजगकर्त्तानहींकहितेहैं तोदोषकैसेआवेंगेका
हेसेभेदकहिनेसे भेदनिर्देशात् आत्मावाअरेद्रष्टव्य:श्रोतव्योमन्त

व्यो निदिध्यासितव्यः सोन्वेष्टव्यः सविजिज्ञासितव्यः सतासोम्यत-दासंपन्नोभवतिशारीरआत्माप्राज्ञेनात्मनान्वारूढइति यहीक र्त्ताविकर्मादिकाभेदवायनजीवसे अधिकब्रह्मकोदिखाताहै अच्छा अभेदभोकहाहै तत्वमसि तोकैसे विरुद्धभेदाभेदकासम्भवहोगा तुमतोसुधिभूलादो आकाशवोघटाकाशन्यायसेदोनोंकासम्भव वार२स्थापनकरतेआये हैं फिरयदाअभेदअभेदसेआगेपीछेकेनि र्देशसेअभेदवोधितहै तदाजीवकासंसारित्वअपगतहै फिरब्रह्म का स्रष्टृत्वभीअपगतहै सवभेदव्यवहारमिथ्याज्ञानसेरचितसम्य क्ज्ञान सेवाधितहै फिरकहांसृष्टिकहांवाहिताकरणादिदोषहैं अविद्यासेप्रत्युपस्थापितनामरूपकृतकार्यकारणसंघातोपाधि से अविवेकहै तिससेभ्रांति जैसे कर्तृत्वादिबुद्धिकेधर्मोंकाध्यास-आत्मामेहै तैसे देहकेधर्मोंका अध्यासहैवहयहकिजन्ममरणउच्छे दनभेदनादिकाअभिमानहै हिताकरणादिसंसारहै परमार्थन हींहै यह तो वार२ समुझा चुके ज्ञान से आगे स्रष्टृत्वादि धर्मों के वाध से प्राग् कल्पित भेद से सव व्यवस्था की सिद्धि से कुछ भी दोषनहींहै ॥

अश्मादिवच्चतदनुपपत्तिः २३

जैसे एकभूमिसेवड़े मोलकेमणिवज्रवैदूर्यादि मध्यमवीर्य सूर्यकांतादिहीनवीर्यकुत्ताकव्वाउड़ानेकेअर्थवटरादि जैसे एक भूमिमेंवोयेनानावीजोंसेवहुविधपत्रपुष्पफलगन्धरसादिकोवैचि त्र्य चन्दन किम्पाकादि में देखते हैं जैसे एकअन्नरस के रक्तादि केशलोमादिविचित्रकार्यहोतेहैं ऐसेएकहीब्रह्मकेजीवप्राज्ञपृथ-क्त्वोकार्यपृथक्युक्तहैं विकारका वाचारम्भण मात्र से स्वप्न दृश्य भाववैचित्र्यसमहैं इनदृष्टांतोंसेअखण्डमेंजीवईशकोवैचित्र्यवो

ईशकेकार्योंकीवैचित्र्यसिद्धिकीहै तदनुपपत्तिः इससे अन्यकेका
ल्पिताकारणादिदोषकाप्रसङ्गनहींहै ॥

———*⬭*———

(सृष्टिक्रमाधिकरण ॥ ८ ॥)

उपसंहारदर्शनान्नेतिचेत्क्षीरवद्धि २४

उपादानमृदादिनिमित्तदण्डादिअसमवायि संयोगादिके सन्निपातसेकार्यदेखतेहैं जैसेलोकमेंकुलालादिघटादिकेसंग्रहीतसाधनकर्त्तामृत्दण्डचक्रसूत्रादिबहुतकारकोंकेमेलसेघटादिकार्यकरतेदेखेहैं फिरअसहायब्रह्मतुमकोइष्टहै उसकेपाससाधनांतरकुछभीनहींहै तोस्रष्टाकैसेहोसक्ताहै उपाधियोंसेविभक्तब्रह्मकाप्रेरकादिभीसहकारीनहींहै नानाईशकेनहोनेसे तिससे ब्रह्मजगकारणनहींहै यहदोनहींहै जैसे लोकमेंक्षीरजलआपहीदधिहिमरूपसेबदलतेहैं बाह्यसाधनकोनहींचाहतेहैं तैसे शुद्धब्रह्मकारणनहींशवलईश्वरकासहायमायाही है यद्यपिक्षीरादिभीदध्यादिहोनेमेंबाह्यऔष्ण्यादिचाहतेहैं तोकैसेकहतेहोकिबा*ह्यसाधननहींचाहतेहैं यहभीदोषनहींक्षीरआपहीजितनीपरिणाममात्राहोनेचाहेउतनीहीऔष्ण्यादिसेशीघ्रकरायागयाहै यदिक्षीरआपदधिशीलनहोता तदाऔष्ण्यादिसेभीकेवलदधिनहोतानहींदेखेवायुवाव्योमऔष्ण्यादिकेवलसेदधि होतेसहायनहोताभीकुछविकारक्षीरकोहोतो फिरआतञ्चनवीऔष्ण्यादिसाधनोंसेउत्तमदधिभावकोसामर्थ्यप्रकटकराहै शक्तिव्यञ्जकसहायभीब्रह्मकोनहींचाहताहै परिपूर्णहै इससेमायाश

* क्षीरवत् ॥

क्तिकीअपेक्षानहींहै श्रुति नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यतेपरास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभावि की ज्ञानबलक्रियाचेतितोअबएकहीब्रह्मकीविचित्रशक्तियोंकेयोगसेघीरादिवत्‌विचित्रपरिणामउपपन्नहै ॥

देवादिवदपिलोके २५

क्षीरादिअचेतनबाह्यसामग्रीकेविनादध्यादिहो।चेतनकुलालादितोसामाग्रीसहितहीकार्यकरतेदेखतेहैं फिरकैसेचेतनब्रह्मसहायकेविनाबर्तताहै सुनो देवादिवदिति जैसे लोकमेंदेवपितरऋषिवड़े प्रतापीचेतनविनासामग्रीकेऐश्वर्ययोगद्वारासङ्कल्पध्यानहीसेजोपूर्वनहींथे देहघररथादि उनकोरचतेदेखे हैं यहीमन्त्रोअर्थवादवृद्धव्यवहारोंसेप्रकटहै फिरमकरीभीआपहीडोरोंकोसृजतिहै वगुलीभीशुक्रकेविनामेघकीगर्जसेगर्भकोधर्त्तीहै पद्मिनीभीगमनकेसाधनविनाएकतालसे दूसरेतालमेंजमतीहै ऐसेहो।चेतनभीब्रह्मवाह्यसामग्रीकेविनाआपहीजगसृजताहै यदिकहो कि देवादि दृष्टान्त दार्ष्टान्तिक ब्रह्म के समाननहींहैं क्युं देवसेमकरीलोदेहअचेतनहैं फिरवहदेहांतरआदिकोविभूतिकेजन्मानेमेंउपादानहै चेतननहींहै मकरीकोलारछे।टेजोवोंकेखानेसेकड़ीहुईडोराहोतीहै वगुलीकागर्भमेघशव्दसेरहताहै फिरपद्मिनीचेतनकेलेजानेसेतालसेतालकोअचेतन देहहीसेजातीहै जैसे लतापेड़पर पद्मिनीचेतननहींहै जोतालसेतालकोजानेकेअर्थव्यापारकर्त्तीतिससेजेदृष्टान्तब्रह्मकेअर्थअच्छेनहींहैं तिससेकहोकियहवैषम्यदोषभीनहींहै हमकोकुलालादिदृष्टान्तोंसेवैलक्षण्यहीविवक्षितहै जैसे कुलालादिवोदेवादिसमानचेतनहैं तोभीकुलालादिकार्यारम्भमेंवाह्यसाधनकोचाहते

हैं नदेवादि तैसेब्रह्मचेतनभीवाह्यसाधननहींचाहताहै यहहीदेवादिदृष्टान्तोंसेदृष्टहै कुलालसेविलक्षणदेवहैं घटादिकार्यकेकरने में अपने सेअधिकसामग्रीनचाहनेसेदेवसेविलक्षण ब्रह्महै देहकोभीनचाहनेसे तिससेयहएकांतनहींहैकि जैसे एककीशक्तिदेखी तैसे सबकोहोनेकेयोग्यहै यहअभिप्रायहै ॥

——*⊂*——

(परिणामभङ्गाधिकरण ॥ ९ ॥

कृत्स्नप्रसक्तिर्निरवयवत्वशब्दकोपोवा २६

ब्रह्मक्षीरवत्देवादिवत्वाह्यसाधन के विनापरिणमसमानजगत्कारणठहिराथाककुयुक्तिशेषरहीथी उसकाउत्तर (कृत्स्न) परिणामनहींहैविवर्तहै यदिब्रह्मपृथिव्यादिकेसमानसावयवहोगा तोब्रह्मका।एकदेशपरिणमेगा एकदेशस्थिरहोगा फिरनिरवयवसर्वविशेषप्रतिषेधिनीश्रुतिसेसुनाहै निष्कलन्निष्क्रियंशांतंनिरवद्यंनिरञ्जनंदिव्योह्यमूर्त्तःपुरुषःसबाह्याभ्यन्तरोह्यजःइदंमहद्भूतमनन्तमपारंविज्ञानघनएवसएषनेतिनेत्यात्माअस्थूलमन--ग्विति इससेएकदेशकापरिणामसम्भवनहींहै जोकहोकिसबब्रह्मपरिणतहुआतोब्रह्महीनरहा तिससेद्रष्टव्यउपदेशअर्थशून्यहोआत्मावाअरेद्रष्टव्यइतिश्रुतिअयत्नसेदृष्टसेदेखाकार्यकावोकार्यसेभिन्नब्रह्मकोसंभवसेश्रुतिविरोधभीहै अजोमरइति अथवाउक्तदोषोंकीनिवृत्तिकेअर्थसावयवहीब्रह्मजानोतोभीजेनिरवयवकेबोधकशब्दकहेहैं तिनसेविरोधहो फिरसावयवहोगा तोअनित्यहोगा सर्वथायहपक्षयुक्तनहींहै ॥

श्रुतेस्तु शब्दमूलत्वात् २७

मेरेपक्षमेंसबब्रह्मकार्यनहींहोताहै कैसेश्रुतिसे जैसे ब्रह्मसेजग

जन्मसुनाहै तैसे कार्यसेपृथक्ब्रह्मकाअवस्थानभीसुनाहै प्रकृ-
तिवाविकृतिकेभेदसेउपदेशहै श्रुति सेयंदेवतैक्षतहन्ताहमि-
मास्तिस्रोदेवताअनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवा-
णीति एतावानस्यमहिमाततोज्यायांश्चपूरुषःपादोस्यसर्वाभू-
तानित्रिपादस्यामृतंदिवीति फिर ईश का स्थान हृदयकहाहै
सवाएषआत्माहृदीति इस्यसेपृथक्ब्रह्महै यदिसबब्रह्मकार्यही
हो तदासुषुप्तिकाविशेषणभूठहो सतासोम्यतदासम्पन्नोभवती
ति फिरविकृतिब्रह्मसेनित्यसुषुप्तिमेमिलेगी अविकृतब्रह्मकेनर
हनेसे पृथिव्यादिविकारइन्द्रियोंकागोचरहै नब्रह्मकानचक्षुषा
गृह्यतइति फिरब्रह्मवाविकारदोनोइन्द्रियगोचरहो तिससेब्र-
ह्मअविकृतहै निरवयवशब्दकाविरोधनहीं श्रुतिसेनिरवयवजा
नेसेब्रह्मकार्यरूपवापृथक्है तासावयवत्वदुर्वारहै एकनिरवयव
द्विधासत्नहींहोसक्ताहै इससेद्विधासावयवहीहै यहशङ्काविवर्त्त
विनाजानेसेहैब्रह्ममेशब्दहीमूलहैफिरजैसाशब्दकहैतैसाजानो
फिरब्रह्ममेंशब्दहीप्रमाणहै नइन्द्रियादि फिरशब्दब्रह्मकोकार्य
रूपवानिरवयवदोनोकहताहै प्रत्यक्षसेमणिमन्त्रऔषधिआदिकी
देशकालनिमित्तकेवशसेशक्तिविरुद्धबहुतकार्यकेकरनेवालीदेख
तेहैं तोभीउसकोउपदेशकेविनाकेवलतर्कसेनहींजानसक्तेहैं इ
सवस्तुकीशक्तिकायहसहाययहविषययहप्रयोजनवाइतनीशक्ति
है यहनहींजानसक्तेहैं तोअचिन्त्यस्वभावब्रह्मकारूपविनाशब्द
सेकैसेजानेवाशब्दभीकैसेविरुद्धअर्थकोकहसक्ताहै ब्रह्मनिरवयव
परिणामेहैपरसवनहींपरिणमताहैयदिनिरवयवहोतदानपरिण-
मेवाएकदेशसेपरिणमेसवपरिणमे अथवाकिसीरूपसेपरिणमेकि
सीरूपसेस्थिरहैइसरूपभेदकल्पनासेभीसावयवहीहोजहांकर्ममे
भीविरोधहै तहांविकल्पमानेसेविरोधबारणहै अतिरात्रेषोड

शिनंगच्छतीति इसकाअनुष्ठानपुरुषकेआधीनहै यहांतोविक
ल्पमानेसेभीविरोधवारणनहींसम्भवहैक्योंकिवस्तुपुरुषकेआधी
ननहोनेसेतिससेउक्तदोषदुर्घटहैक्युंनिरवयवमेंब्रह्मकोजगकीप्र
कृतिकहितीश्रुतिसेसावयवमेंनिरवयवशब्दसेविरोधवस्तुमेंविक
ल्पअयुक्तहै प्रकारांतरकीप्राप्तिनहींहै तोश्रुतिकीप्रामाण्यदुर्घ-
टहै यहदोषनहींहै अविद्यासेकल्पितनामरूपादिभेदहै जैसे
तिमिरीपुरुषएकचन्द्रकोअनेकदेखताहै तोचन्द्रअनेकनहींहैं
अविद्यासेरचेनामरूपकर वोप्रकटवोअप्रकटरूपकरवोतत्त्वअ-
न्यादिसेअनिर्वचनीयसेपरिणामादिसबव्यवहारोंकाठौरब्रह्मक
हाहै पारमार्थिकरूपसेअपरिणतसबव्यवहारोंसेछुटास्थिरहैअ-
विद्याकल्पितनामरूपकाभेदवाचारम्भणश्रुतिसेहै इससेनिरव-
यवताकाब्रह्मकेसङ्कोपनहींहै वाचारम्भणश्रुतिपरिणामपर-
नहींहै परिणामकेकहिनेमेंफलकाअभावहैनिष्प्रपञ्चब्रह्मसृष्टिके
अनुवादसेकहाहै ब्रह्मज्ञानसेमुक्तिफलहै सएषनेतिनेत्यात्मोप
क्रम्याहाभयम्वैजनकप्राप्तोसीति इससेविवर्त्तवादमेंकुछभीदोष-
नहींहै ॥

आत्मनिचैवम्विचित्राश्चहि २८

परिणामपूर्वकीअवस्थाकानाशअवस्थान्तरकाजन्महै जैसे
दूधकादहीपूर्वरूपकेनाशविनाअवस्थान्तरविवर्त्तहै जैसे शुक्ति
कारजतहोना स्वरूपनाशकेविनाएकमेंअनेकविधसृष्टिकैसेहो-
गोयहविवादनकरनाचाहिये एकहीस्वप्नदेखनेवालोंमेंस्वरूपना
शकेविनाअनेकविधसृष्टिपढ़तेहैं नतत्ररथानरथयोगादूत्यादि
लोकमेंभीमायावीमें देवादिमेंस्वरूपनाशकेविनाविचित्रहाथी-
घोड़ाआदिकीसृष्टिदेखतेहैं तैसे एकमेंस्वरूपनाशकेविनाअने
कविधसृष्टिहोगी यहीमायावादहै ॥

स्वपक्षदोषाच्च २९

प्रधानवादीकापक्षयहांस्वपक्षशब्दसेइष्टहै किनिरवयवअपरिछिन्नशब्दादिहीनप्रधानसावयवपरिछिन्न शब्दादिमान्कार्यकाकारणहैतानिरवयवतासेसवप्रधानहोकार्यहोफिरनिरवयवमाननाविरुद्धहैवेप्रधानकोनिरवयवनहींमानतेहैं सत्वरजतमतीनोगुणनित्यहैं इनकीसाम्यावस्थाप्रधानहै तीनोंगुणअवयवहैं तिनसेसावयवहैगुणोंकीसाम्यावस्थाक्याहैविकारवोसमुदायहैपहिलेमेंवहप्रकृतिनहोगीविकारसे समुदायमेंप्रपञ्चकाअभावहै समुदायतोवस्तुनहींहै तिससेमूलकाअभावहै अथवानिरवयवगुणनानापरिणामोंकीप्रकृतिहैं यहकहेपरभीसवगुणकार्यहुआतोमूलनाशदुर्वारहै ऐसेसावयवतासेउक्तदोषकावारणदुर्घटहैसांख्यकोभीजिससेसत्वरजतममेंसेएकएककोनिरवयवत्वसमानहैफिरइनमेंसेएकएकदोकी सहाय से अपनेरप्रपञ्चका उपादान हैंफिरतुम्हारेपक्षमेंभीदोषसमानहैतोमुझहीकोक्योंपर्य्यनुयोगकरतेहो फिरनिरवयवसाधकतर्ककेआभाससे वोगुणोंकोसावयवमानसेमट्टीकेसमानएकदेशपरिणामसेसवगुणकार्यनहोगातोभीअनित्यादिदोषहोंगे अथकार्यकीविचित्रतासेसूचितशक्तिअवयवहैवहशक्तिब्रह्मवादीकोभीमायिकशक्तिसेसावयवत्वब्रह्मको-तुल्यहैसांख्यकेतुल्यअणुवादीकोभीदोषसमानहैनिरवयवपरमाणुदोकासंयोगव्याप्यवृत्तिवाअव्याप्य वृत्तिहै प्रथमपक्षमेंपरमाणुकाकार्यद्व्यणुकएकपरमाणुमात्रहोसुटाईलम्बाईचौड़ाईनहोअणुकाअणुकेसंगसेऊपरनीचेवोचारोंओरकेघरमें अणुसेअधिकद्रव्यकासंभवनहींहै दूसरेमेंएकदेशकेसंयोगसेनिरवयवकाविरोधहै निरवयवसेसवकार्यमेंघुसगया इससेस्वपक्षमेंदोषसमानहैतोपरपक्षमेंफेंकनयोग्यनहींहैमायावादमेंस्वप्नसदृशसवसामंजस्यहै

इससेअपनेपक्षमेंदोषनहींहै कादरवचनमईश्वरहै किसीनेकिसीसेकहा। कितूचोरजारहैउसनेभीलौटकेकहा। कितूभीचोर जार है इससेसांख्यव्यामदोनोंसमानहैं अशरीरस्यनमायेति इसन्यायसेविरोनहींहैसमन्वयका ॥

सर्वोपेताचतद्दर्शनात् ३०

एकमायाशक्तिमत्ब्रह्म सेविचित्रप्रपञ्चकहाथ। फिरविचित्रशक्तिमत्परब्रह्मकैसेजानतेहो श्रुतिकेकहिनेसे सर्वकर्मासर्वकामःसर्वगन्धःसर्वरसःसर्वमिदमभ्यात्तोऽवाक्यनादरःसत्यकामःसत्यसंकल्पायःसर्वज्ञःसर्वविदेतस्यवाअक्षरस्यप्रशासनेगार्गिसूर्याचन्द्रमसौविधृतौतिष्ठतइति अभ्यात्तः सबओरसेपूर्ण अवाकी वागिन्द्रियसेरहित अनादरःनिष्काम ॥

विकरणत्वान्नेतिचेत्तदुक्तं ३१

शक्तचेतनदेवादिआध्यात्मिककार्यकरणसंयुक्तदेहाभिमानसेकर्तादेखेहैं देहादिकेअभावसेसुषुप्तिमेंनहींदेखेहैं इससेब्रह्मशक्तहैतोभीदेहादिकेअभावसेकर्तानहींसंभवहै वोअदेहकोशक्तिकाभीसंभवनहींहै परादेवता को वेद इन्द्रियादि से रहित कहताहै अचक्षुष्कमश्रोत्रमवामनइति फिरकैसेसर्वशक्तियुक्तकार्यकरणकोप्रभुहै फिरकैसेप्रतिषिद्धहै सबविशेषजिससेहैऐसेब्रह्मकोसर्वशक्तिकायोगसंभवहोगा नेतिनेति सुनोजोयहांकहिनेहै सोपीछेकहिचुकेविकरणजोवकर्तानहींहोसक्ताहैईश्वरकोसंभवहै देवादिवदिति अतिगम्भीरब्रह्मश्रुतिसेजानाजाताहैनतर्कसेसर्वशक्तियोगभीअविद्यासेकल्पितनामरूपादि भेदोंकेकहिनेसेकहाहै अपाणिपादोजवनोग्रहीतापश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः इ

ति यह्वेदअकरणब्रह्मकोसब शक्तिकायोगदिखाताहै कल्पि तशरीरीकोमायाश्रयत्वके अयोगसेनिर्विशेषचिन्मात्रहीमाया-काअधिष्ठानहै कोईकहतेहैंकियहअद्भुतरसकावर्णनहै ॥

नप्रयोजनवत्वात् ३२

जोअभ्रांतचेतनहैसोनिष्फलवस्तुनहींरचताहै यहन्यायहैफि रअन्यरीतिसेचेतनकर्तापरआक्षेपहै लोकमेंबुद्धिपूर्वकारीपुरुषप्र वर्तमानदेखाहैवोनिष्फलवाअपनेप्रयोजनसेरहितप्रवृत्तिकरते नहींदेखाहैतोईश्वरक्योंऐसेबड़ेप्रपञ्चमेंनिरर्थप्रवृत्तिकरताहैलो कमेंयहीप्रसिद्धहै किबुद्धिमान्कीप्रवृत्तिअपनेफलकेअर्थहैइसीको अनुवादिनीश्रुतिसुनो नवाअरेसर्वस्यकामायसर्वंप्रियंभवत्यात्म नस्तुकामायसर्वंप्रियंभवतीति दयालुकीप्रवृत्तिभीपरदुःखदेख-नेसेस्वचित्तमेंजन्मीव्याकुलताकीनिवृत्त्यर्थहै फिरइसछोटेबड़े ज गद्बिंबकेरचेकाफलभीकुछकहो यदिचेतनप्रभुकीप्रवृत्तिस्वार्थके-अर्थकल्पोतोतृप्तप्रभुसुनाहैसोबाधितहोवेप्रयोजनकेअभावसेप्र वृत्तिकाभीअभावहोअथचेतनभीउन्मत्तविवेकाभावसेस्वार्थकेवि नाप्रवर्तमानदेखाहै तैसेप्रभुभीप्रवर्तेगायहीकहोतोईशकोजोस र्वज्ञतासुनीहैसोबाधितहोदयासेभीसृष्टिनहींकहिसक्तेहो क्यों सृष्टिकेपूर्वजीवोंकेनहोनेसे तिससेचेतनमेंसृष्टिअश्लिष्टहै ॥

———※———

(लीलाकैवल्याधिकरण ॥ ९ ॥)

लोकवत्तुलीलाकैवल्यं ३३

स्वबुद्धिमनुरुध्यतुनाक्षेपोनिरस्यते ॥

जैसेतृप्तैषणराजाकोअधिकप्रयोजनकेविनाकेवलखेलकेअ र्थप्रवृत्तिरम्यदेशोंमेंहोतीहैऔरजैसेवाह्यप्रयोजनकेविनानोचेऊ

परकोश्वासस्वभावसेनिकलतीहै तैसेप्रभुकोस्वभावहीसेप्रयोजन
केविनालीलारूपाप्रवृत्तिहैगौतर्कवैाश्रुतिसेप्रभुकोप्रयोजनांतर
सूक्ष्मकाभीसंभवनहींहैवाप्रभुकास्वभाव कालकर्मसेस्थितसा।या
हैप्रभुकोसृष्टिसेकछुफलनहींपूर्णकामत्वकीहानिसेप्रभुऐसीसृष्टि
क्युंरचताकिजिससेअपनेकोकुछफलनहींहैवोऔरोंकोदुःखदाई
है इससेवैठरहनाहीअच्छाहै स्वभावरुकिनहींसक्ताहै जबकाल
धर्मादिसामानहोतेहैं तबसृष्टिनहींरुकिसक्तीहै यद्यपिहमेयहज
गविस्वरचनादुर्घटजानीजातीहैतथापिप्रभुकोकेवललीलाहीहै
अपरिमितशक्तिहोनेसे यदिराजादिकीअल्पप्रवृत्तिकासुखोल्ला
सादिकछुफलकल्पोतथापिप्रभुप्रवृत्तिकाकछुप्रयोजननहींकल्पा
सक्तेहोआत्मकामश्रुतिसेअवव्यवस्थासुनोसृष्टिश्रुतिकीप्रवृत्तिका
निरोधनहींवासर्वज्ञत्वश्रुतिकोउन्मत्ततानहींहै स्वप्नसृष्टिकेस-
मानयहभीसृष्टिमायामात्रहै तिससेफलकीअपेक्षानहींहै फिर
निष्फलसृष्टिश्रुतिव्यर्थनहींहै सफलब्रह्मबुद्धिकेशेषसेअर्थवती
है यहमतभूलोस्वप्नकीउपाधिरातिछोटीहै तिससेवहथोरीदेर
ठहिरताहै औरसृष्टि की उपाधि माया अनन्त है तिससे सृष्टि
अनन्तहै ॥

—*—

(वैषम्यनैर्घृण्याधिकरण ॥ १० ॥)

वैषम्यनैर्घृण्येनसापेक्षत्वात्तथाहिद-र्शयति ३४

फिरभी जैसे हलारकेगाड़ेसेखूटाहढ़गड़ताहै तैसे ईशपरजग
जन्मादिकेहेतुआक्षेपप्रतिज्ञाकेदृढार्थहै कर्मादिसापेक्षईशकोसृ
ष्टियुक्तनहींहै अनीशतासे फिरकर्मनिरपेक्षविषमसृष्टिरचनेसे

पृथग्जनकेसमानरागद्वेषीहै फिरश्रुतिसेईशकास्वकृत्वादिस्व-भावसुनाहै उसकाभीलोपहो निरवद्यंनिरञ्जनमिति जनभी निर्घृणत्वक्रूरत्वकीनिन्दाकरतेहैं वेहोईशमेंदु:खयोगरचनेसे वीसवप्रजाकेनाशसेहैंतिससेईशकारणनहींहै सुनो सापेक्षता सेरचताहै तिससे वेदोषनहीं है जोनिरपेक्षहो ईश सृष्टि रचता तोवेदोषहोतेविषमकानिरपेक्षनिर्मातानहींहै सापेक्षहोवि षमसृष्टिनिर्माताहै क्याअपेक्षितहै धर्माधर्मकहिताहूं जिनको रचेगा उनकेधर्माधर्मकेअनुसारविषमसृष्टिरचेगा इससेईशको यहदोषनहींहै जैसे राजासेवाकोदेखफलदेताहै तोभीउसका ईश्वरत्वनहींजाताहै केवलधर्माधर्मविचित्रसृष्टिनहींकरसक्ताहै ईशकोपर्जन्यकेसमानदेखो जैसेव्रीहियवादिकीसृष्टिमेंमेहसाध रणकारणहै उनकीवैषम्यकेअर्थउनकेबीजमेंअसाधारणशक्तिका रणहै ऐसेहीदेवादिसृष्टिमेंईशकारणहै देवनरपश्वादिकीवैषम्य मेंअनेकजीवोंसेप्राप्तअसाधारणकर्महीकारणहै ऐसेईशसापेक्ष है तोभीउनसेदूषितनहींहै भावार्थ साधारणहेतुअसाधारणहे तुकेविनाकार्यकाकर्त्तानहीं जैसे जलबीजकेविना इससेईशव्य र्थनहींयहनमानोतोजलभीव्यर्थहो यहकैसेजानोकिसापेक्षहोई शछोटेबड़ेमध्यमसंसारकानिर्माताहै (तथाहिदर्शयतिश्रुति:) एषह्येवसाधुकर्मकारयतितंयमेभ्योलोकेभ्यउन्निनीषतएषउएवा साधुकर्मकारयतितंयमेभ्योलोकेभ्योधोनिनीषतइति पुण्योवैपु-ण्येनकर्मणाभवति पाप:पापेनेतिच स्वभावशुभाशुभसेअनेक-कर्ममेंजनप्रवृत्तहै ॥

नकर्माविभागादितिचेन्नानादित्वात् ३५

सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंब्रह्मेति इससेसृष्टि

कोपूर्व अविभागके निश्चयसे कर्म नहीं है जिस कर्म की अपेक्षा से विषमसृष्टिहो पीछेसृष्टिकेदेहादिके विभागकी अपेक्षासे कर्म वो कर्मकी अपेक्षासेदेहादिकाविभागयहइतरेतराश्रयदोषहुआ इससे विभागसेआगेकर्मापेक्षईशप्रवृत्तहो फिरविभागसेपूर्वतोवैचिल्यहेतुकर्मोंकेनहोनेसेआदिसृष्टिकेतुल्यहीहै आदिमेंसृष्टिएकहोपरन्तुबीचमेंविषमकर्मोंकीउत्पत्तिमेंहेतु केअभावसेउत्तरसृष्टिकोभीतुल्यतादुर्वारहै सोनहींहै संसारअनादिहै तिससेयहदोषनहींहै जोसादिसंसारहोतातोयहदोषहोता अनादिसंसारमेंबीजवाअङ्कुरकेसमानबीज हेतुवाअङ्कुर हेतु मत्है इसभावसेकर्मकीवासृष्टिकीवैषम्यप्रवृत्तिविरुद्धनहींहै ॥

उपपद्यतेचाप्युपलभ्यतेच ३६

प्रथमसर्गनहींहै इसमेंक्याप्रमाणहै उत्तर युक्तिवाश्रुतिप्रमाणहै (उपप. संसारकीअनादितासयुक्तिकहै हेतुकेविनासर्गमानमेंज्ञानकर्मदोनोंव्यर्थहो आदिमान्संसारकाअकस्मात्होनेसेमुक्तोंकाफिरजन्महो अकृतकीप्राप्तिहो सुखदुःखादिकीवैषम्यकाकुछनिमित्तनहो ईशभीवैषम्यकाहेतुनहीं निर्दयालुतादिदोषसे अविद्याभीकेवल वैषम्यकाहेतुनहीं एक रूप होनेसे फिरकहोवैषम्यकाहेतुक्याहैसुनो रागद्वेषमोहक्लेशहैं तिनकीइच्छाओंसेकरायेकर्महैं वेधर्माधर्मसेमिश्रहैं फिरधर्माधर्मकीअपेक्षाकर्त्रीअविद्यासुखादिकीवैषम्यकरीहो अविद्याकेसहायसेक्लेशकर्मोंकाअनादिप्रवाहमानो कर्मकेविनादेहवादेहकेविनाकर्मकासम्भवनहींहै इससेइतरेतराश्रयदोषहै अनादिमेंबीजाङ्कुरन्यायसेकुछदोषनहींहै (उपल) श्रुतिसेअनादिसंसारप्राप्तहै सृष्टिको।आदिमेंशरीरआत्माकोजीव शब्दप्राणधारणके निमित्त

कहिनेसे संसार अनादि दिखाती है सादिमेंपूर्वप्रत्यगात्माप्राण धारणनहींहै तोसृष्टयादिमेंप्राणधारणकेनिमित्तजीवशब्दसेश्रुतिकहेगी प्राग्प्रत्यगात्माप्राणनहीं धरे था फिर यह भी नहीं है अनेनजीवेनात्मनेति भावीप्राणधारणनिमित्तसेकहाहै भावी सम्बन्धसेभूतसम्बन्धबलीहै सिद्धहोनेसे भावीसाध्यहै तिससेदुर्बलहै सूर्याचन्द्रमसौधातायथा पूर्वमकल्पयदिति यहमन्त्रभीपूर्वकल्पकोदिखाताहै ॥

———*———

(ब्रह्मप्रकृत्यधिकरण ॥ १२ ॥)

सर्वधर्मोपपत्तेश्च ३७

यन्निर्गुणन्तन्नोपादानंयथारूपमिति ॥

चेतनब्रह्मजगत्काकारणवोप्रकृतिहै इसवेदार्थकेनिश्चयमे परपरविलक्षणत्वादिदोषोंकोफेंकतेहैं अचार्यनेउनसेउसकोबचाया अबपरपक्षकानिषेधवोस्वपक्ष में गृहीत प्रकरण का उपसंहारकर्त्ताहैजिससेकारणब्रह्ममेंउक्तरीतिसेसबकारणधर्मयोग्यहैं सर्वज्ञ सर्वशक्ति महामायब्रह्महै तिससेऔपनिषददर्शनशङ्काहैं नहींहैविवर्त्तकाउपादाननिर्गुणहै अज्ञानकोभ्रमकेअधिष्ठानका प्रयोजकहोनेसे सगुणअव्यापकहै शब्दादिगुणोंमेंनित्यत्वादिभ्रमदेखनेसे जैसे स्वच्छकोमलिनदेखकेकहै कितूनीचहै ऐसेभ्रांत व्यवहारसेनिर्गुणभीप्रकृतिहै ॥

इतिश्रीयुक्ताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये द्वितीयाऽध्यायस्यप्रथमःपादःपूर्णः ॥ १ ॥

———*○*———

तर्कपाद दूसरा २

रचनानुपपत्त्यधिकरण १

रचनानुपपत्तेश्चनानुमानं १

यद्यपि वेदवाक्य ब्रह्मको कहते हैं इससे वेदान्त रचा था न तर्क
वत् केवल युक्तिसे किसी सिद्धांतको साधन वा दूषण को रचा था तथा
पि वेदांत वाक्य की व्याख्याता को चाहिये कि सम्यग्दर्शन के विरोधी
जो दर्शन हैं उनका निराकरण करै इस हेतुसे तर्कपाद रचा है प्रथम-
स्वपक्षस्थापन वेदवाक्य के निर्णय से करा था वही परपक्ष के खण्डन से
पूर्व उचित था यदि मुमुक्षु को मोक्ष का साधन सम्यग्दर्शन विचारार्थ
स्वपक्षस्थापन ही करने को योग्य था क्या परपक्ष के खण्डन से वा पर
द्वेष करने से फल है यह सच है तो सम्यग्दर्शन के व्याज से अच्छों ने सां-
ख्यादिकों तन्त्रों को माना है उनसे उनकी श्रद्धा दूर करने के लिये यत्न है
ऐसा रीति सब मतवादियों में जानो कि मो मूर्ख को सांख्यादि दर्शन
सम्यग्दर्शन के अर्थ उपदेश कर दिया यही अपेक्षा है तैसे सर्वज्ञ ने कहे
हैं इस बड़ी युक्ति से श्रद्धा है इससे उनमें असारता दिखाने के अर्थ यत्न है
इति सूत्र से सर्वधर्मों यहां लों सांख्यादि मतों का खण्डन करा था पि
रकारि के करने से कुछ फल नहीं है क्युंकि वे वेदवाक्यों का अर्थ स्वमत की
दृढ़ता के अर्थ स्वपक्ष के अनुकूल करते हैं वह उनका अर्थ अर्थाभास है स
च नहीं है यही पूर्व करा था अब तो केवल उनकी युक्तियों का ही खण्डन
है यही विशेष है द्वेष वहां है जहां परपक्ष ही के निरास की बुद्धि है तत्व
निर्णय की इच्छा से परपक्ष निरास द्वेष नहीं है जो विकार जिस से अन्वि
त हैं ते उस प्रकृति के हैं इस व्याप्ति से जैसे घटादि भेद माटी के मा
टी से युक्त देखे हैं तैसे सब बाह्य वा आध्यात्मिक भेद सुख दुःख मोह
युक्त सुखदुःखमोह वाले से रचे हैं यहां उपेक्षा ही मोह है सुह वैचि

त्थे इसधातुसे उपेक्षणीयमेंचित्तवृत्तिकेअनुदयसे फिरजोसु
खदुःखमोहमयरूपजातिहै वहत्रिगुणप्रधानअचेतनमट्टीकेसमा
नहै चेतनपुरुषकोमुक्तिके अर्थ विचित्रवोविकाररूपस्वभावसेप्र
वृत्तहै नकिसीचेतनकोप्रेरणासेभ्रमिसेमट्टीसेघटहोताहैफिरम-
ट्टीमेंघटवोमट्टीक्षितिमेंक्षितिजलमें जलतेजमेंलीनहोताहैयहो-
विभागा विभाग इस वैश्वरूप्य का देखा है इन का जहां विश्रा
महैवहीप्रधानहै अबसुनो मैंभीअचेतनअनादित्रिगुणीमायामा
नताहूंजगहेतुफिरलोकमेंअचेतनचेतनके विनास्वतन्त्रकिसीका
र्यकोकर्तेनहींदेखताहूंघरादिसबवस्तुबुद्धिमान्शिल्पिसेकालानु
कूलसुखकोप्राप्तिवोदुःखकीनिवृत्तिकेयोग्यरचेदेखताहूंतैसेपृथि
व्यादिसबबाह्यभोग्यनानाकर्मोंकाफलवो आध्यात्मिकदेहादि-
नानाजातिसेयुक्तवोनानाभांतिकेअङ्गोंकोयोग्यरस्थानोंमेंलगा
केरचनावोनानाकर्मोंकेफलभोगकाठौर वो दृश्यमानइनकोव-
डाहोबुद्धिमान्शिल्पिभीमनसेदेखनेकोशक्यनहींहैतोकैसेजड़र
चेगा लोकमेंविनाचेतनकोप्रेरणासेडौमपत्थरादिकार्यकर्तेनहीं
देखेहैंमृदादिकुलालादिकेसङ्गसेघटादिरूपमेंरचेदेखेहैंतैसेप्रधा
नभीचेतनसेमिलकेकार्यकरो मृदादिकेस्वरूपकोहीउपादानसे
मूलकारणकानिश्चयहै नवाह्यकुलालादिकेसङ्गसेयहनियमनहीं
हैभावार्थमृदादिकेदृष्टान्तमेंदोहैं अचेतनता वोचेतनतायोगफि
रपरिणामअचेतनहीकानियतहै क्युं मृदादिस्वरूपसे अन्तरङ्गहै
चेतन योग नहीं क्युं बाह्य कुलालादि की अपेक्षा से वहिरङ्ग है
तैसेपरिणाममेंभीमूलप्रकृतिका अचेतन से योग है न चेतन के
सङ्ग से पर्वतो वन्हिमान् महानसवत् इस अनुमान से महानस
मेंभी अन्तरङ्गमहानसकोधूमके सङ्ग योग नहीं किन्तु वहिरङ्गव
न्हिकेसङ्गहैइससे अन्तरङ्गनियमकासाधकनहींहैइससेकछुविरोध

नहींपरश्रुतिभीभलामानेगीचेतन कारणबल्की भीतरबाहरकेभे
दोंमेंसुखदुःखमोहका अन्वयनहींहै सुखादिभीतरहीप्रतीतहैंबा
हिरशब्दादिसुखादिरूपसेप्रतीतनहींहैं यदि घड़ें मेंमट्टीकेसमा
नसुखादिशब्दादिमें अन्वितहोतेतो सबको समानसुखादिप्राप्तहो-
तेनहींहै एकहीवस्तुपुरुषोंकीवासनाकेभेदसेकिसीकोसुखवो-
किसीकोदुःखवोकिसीकोमोहरूपदेखतेहैं इससेवस्तुसुखादिरू-
पनहींहै तैसेपरिमाणादिभेदमूलांकुरआदिकासंसर्गपूर्वदेखभी
तरबाहरकेभेदोंकोभीपरिमितहेतुसेसंसर्ग पूर्वक सत्वा सत्वादि
भीपरिमितहेतुसेसंसर्गपूर्वसिद्धहोंगे बुध्यादिकोपरिमितहेतुसे
संसर्गपूर्वसिद्धिमेअनेकसंसृष्ट सत्वादि सिद्धि होंगे एकमेंसंसर्गके
अभावसेब्रह्म सिद्धि न होगीयही सांख्य का भाव है परिमित देश
सेनहीं आकाश का अभाव नहोनेसेकालसेपरिमितनहीं सांख्य
काल को नहीं मानते हैं वस्तुसे न परिमित हैफिर कार्य कारण
काविभागजहांसमाप्तहैवहीप्रधानहैयहनहीं यहांतोमायामेंस-
माप्तिकासंभवहोनेसेयुक्तिःविभागचेतनसेअसंसक्तअचेतनमें मि
लताहै यहव्याप्तिनहींहैसर्वत्रअचेतनमेंचेतनही अधिष्ठातादेखा
है जोपरिमितहैसो अव्यक्तप्रकृतिकहै परिमितगणोमेंव्यभिचार
से सदृशोंकाप्रकृतिविकृतिभावकेदेखनेसेअचेतनविकारकाअचे
तनहीप्रकृतिहैकार्यकीशक्तिसेकारणकीशक्तिकाअनुमानअन्यथा
सिद्धहैचेतनकेआधीनकारणकीशक्तिसेकार्यकीप्रवृत्तिकेसंभवसे
सर्वंकार्यंसुखदुःखमोहात्मकम्वस्तुप्रकृतिकंतदन्वितत्वात्घटवदि
ति सर्वंकार्यंचेतनाधिष्ठिताचेतनप्रकृतिकंकार्यत्वाद्गेहवत् ॥

प्रवृत्ते अ२

रचनाजोहै सोहो रचनाकीसिध्यर्थंप्रवृत्तिक्याहै गुणोंकी

साम्यावस्थातत्वोंकालयहै उसकालमेंकछुकार्यनहींहै क्योंजो
कार्यहै सोप्रलयकहांहै फिरआदि मे समता बिगड़के विषमता
फिरगुणकोईछोटाबोकोईबड़ाएकदूसरेकासहायीहोताहै फि
रमहदादिकार्यहोतेहैं यहीप्रवृत्तिहै इससेनानाकार्यरचनाहै य
हरचनाबोप्रवृत्तिकाभेदहै प्रवृत्तिस्वतन्त्रअचेतनप्रधानकीनहीं
युक्तहै रथादिस्थादि अचेतनचेतनघोड़ेकुलालादिकेबिनाका
र्यमेंप्रवृत्त न देखने से तुमतोअनुमानहीको अपनागढ़बनारहे
हो दृष्टाश्चादृष्टसिद्धि: तोदृष्टान्तकेबिनाअदृष्टार्थकीसिद्धिनहोगी
प्रधानकीप्रवृत्तितोखण्डितहुई भलातुमतोकहो कि एक चेतन
कीप्रवृत्तिसृष्टिमेंकहांदेखीहै यहतोसचहैकिशुद्धचेतनकीप्रवृत्ती
नहींतोकेवलअचेतनकीभीप्रवृत्तिनहीं फिरसृष्टिदेखनेसेचेतना
चेतनकेसम्बन्धसेसृष्टिमेप्रवृत्तिदेखीहै जैसे हयादिचेतनसेयुक्तर
थादिअचेतनकीप्रवृत्तिजड़कीप्रवृत्तिनदेखनेसेअ चेतनयुक्त चेत
नकीप्रवृत्तिनहींदेखीहै सबप्रवृत्तिअचेतनकेआधीनदेखीकहींन
हींअचेतनकेसम्बन्धसेभीचेतनकीप्रवृत्तिदेखी तिससेचेतनसेसृ
ष्टिनहींहै दोनोमतोंकोमुनिमध्यस्थने पूछा कि यहां क्या युक्त है
जिसअचेतनरथादिमेंप्रवृत्तिदेखी उसीकीवुहप्रवृत्तिहै वहांचेत
नहेतुनहींहै यहसांख्यमतअच्छाहै उत जिनचेतनहयादिके
संयोगसेअचेतनकीप्रवृत्तिहै वुहप्रवृत्तिचेतनकीकराईहै यहवे-
दान्तमतअच्छाहै मध्यस्थवाक्यमुनिसांख्यनेकहा कि जिसमेंप्र-
वृत्तिदेखतेहैं वुहउसीकीहै क्योंकि प्रवृत्तिवोप्रवृत्तिकाआश्रयर
थादिदोनोप्रत्यक्षहैं दृष्टाश्रयरथादिहीसेप्रवृत्तिकीसिद्धिहै तोअ-
दृष्टचेतनकीप्रेरणाकोमतकल्पो जैसे प्रवृत्तिकाआश्रयरथादि-
प्रत्यक्षहैं तैसे प्रवृत्तिकाआश्रयकेवलचेतनप्रत्यक्षनहींहै जोआ-
त्माकाप्रत्यक्षनहीं तोउसकीसिद्धकैसे सुनो जीवोदेहरथादिसेवि

लक्षण है प्राणादिमान् दृष्टलिङ्गोंसे इसमेंचेतनकेसद्भावकीसि
द्धि है प्रवर्त्तकत्वनहीं (जीवद्देहःसात्मकःप्राणादिमत्वात्व्यतिरे
कणरथादिवदित्यात्मसिद्धिः) आत्माप्रत्यक्षनहींयहींचार्वाकोंका
भ्रमलिङ्ग है जोदेहसेअन्यात्माप्रत्यक्षहोतातोभ्रमकासम्भवनहं
ता देहहीचेतनवोप्रवृत्तिहै क्योंकि प्रत्यक्षदेहसेप्रवृत्तिवोचेतन
देखनेसेअप्रत्यक्षदेहमेंनदेखनेसे तिससेअचेत नहीं को प्रवृत्ति
प्रवृतिकाआश्रयअचेतनहीहै परन्तुचेतनप्रयोजकहै मैंनहीं
कहताहूं किजिसअचेतनमेंप्रवृत्तिदेखतेहैं वुहउसकीनहींहै कि
वुहउसीकीपरप्रवृत्तिचेतनसेहै यहीकहिताहूं चेतनकेहोनेसेप्र
वृत्तिदेखनेसेचेतनकेनहोनेसेप्रवृत्तिकाअभावदेखनेसे जैसे के
वलआगमेंदाहप्रकाशादिविकारकाठआदिकेआश्रयसेहैं फिर
आगसेहैं तोआगकेसंयोगसेदाहादिदेखतेहैं उसकेबियोगमेंन
हींदेखतेहैं तद्वत् चार्वाककेमतमेभीचेतनदेहअचेतनरथादिक
प्रवर्तकदेखाहै इससेचेतनप्रवर्तकमेंविरोधनहींहै ननु वेदांती
कोदेहादिसंयुक्तआत्माकाभीविज्ञानस्वरूपमात्रकेभेद से विना
प्रवृत्तिनहीं तोप्रवर्तककहांहै यदियहकहोसोनहीं जैसे अय
स्कान्तआपप्रवृत्तिशून्यहै तोभीलोहकाप्रवर्तकहै जैसे रूपादि
विषयआपप्रवृतिसेशून्यभीहैं तोभीचक्षुरादिकेप्रवर्तकहैं तैसे
प्रवृत्तिसेशून्यभीईशसर्वज्ञसर्वगतसर्वात्मासर्वशक्तिहुआ सबका
प्रवर्तकहै यदिएकहीहै तोप्रवर्त्यकेअभावसेप्रवर्तकनहोगानहीं
अविद्यासेकल्पितनामरूपप्रपञ्चहै उसीअविद्यारूपमायासेचि
दात्माकाकल्पितसम्बन्धहै सम्बन्धकोभामर्थ्यसेईशकोअन्तर्या
मित्वादिधर्महैं वस्तुसेएकहै कल्पितद्वैतप्रवर्त्य है तिससेसर्वज्ञ
कारणमेंप्रवृत्तिसम्भवहै नअचेतनकारणमे ॥

पयोऽम्बुवच्चेत्तत्रापि ३

जैसे अचेतनदूधस्वभावहीसेबछरेकीवृद्ध्यर्थप्रवर्त्तताहै और अचेतनजलस्वभावहीसेलोककेहितार्थस्यन्दताहै तैसे जड़प्रधानस्वभावहीसेपुरुषार्थकी सिद्धिकेअर्थप्रवर्तेगा यहअच्छानहींकहाहै जिससेमैंदूधजलकीप्रवृत्तिचेतनसेप्रेरितअनुमान कर्त्ताहूं वादीप्रतिवादीकोप्रसिद्धहै किकेवलजड़रथादिमेंप्रवृत्तिनदेखनेसे श्रुति सबलोककाअन्वितईश्वरसेप्रेरितसुनातीहै (पयोंबुवदिति) यहमेरेपक्षमेंदृष्टान्तथा तुमनेअपनेपक्षमेंजोड़ाहै तिससेव्यभिचारनहीं चेतनगौस्नेहसेदूधकाप्रवर्तकहै बछराचूषिके दूधकोनिकारताहै जलभीनीचेकीअपेक्षासे स्यन्दता है इससे सापेक्षहै युक्तिवाश्रुतिसेचेतनकीअपेक्षासर्वत्रदिखाईहै लोकदृष्टिसेक्षीरवत् शास्त्रदृष्टिसेसर्वत्रईश्वरकीअपेक्षाहै ॥

व्यतिरेकानवस्थितेश्चानपेक्षत्वात् ४

बराबरतीनोंगुणोंकाठहिरनाप्रधानहै गुणोंकेविना प्रधानकाप्रवर्तकवानिवर्तकवाह्यकर्मनहींहै फिर पुरुष उदासीन है तोकभीसृष्टिकीप्रवृत्तिवाकभीप्रलयकीयहयुक्तनहींहै सर्वशक्तिमहामायईशमेंप्रवृत्तिवानिवृत्तिविरुद्धनहींहैं कर्मभीप्रधानरूप अचेतनसेवासदासत्वसेकभी२प्रवृत्तिकानियामकनहींहै ॥

अन्यत्राभावाच्चनतृणादिवत् ५

जैसे घासजलादिनिमित्तनिरपेक्षस्वभावहीसेदूधरूपपरिणमतेहैं औरअनन्तवीजपृथिवीमेंगिरेयागिरायेस्वभावहीसेनीचेकोजड़औरशाखाऊपरकोकरजमतेहैं ॥

तैसे महत्तत्व आदि रूप से प्रधान भी परीणमेगी कैसे जा माकि दूसरे निमित्त के विना घासादि दूध होते हैं दूसरा निमित्त न पानेसे यदि कछु निमित्त मिलता तो यथेच्छ घास आदि ले के उसी निमित्त से दूध बन लेते फिर नहीं बना सक्ते हैं तिससे स्वाभाविक घास आदि का परिणाम है तैसे प्रधान का भी हो यहां मेरी बात सुनो हो घासादि के समान प्रधान का भी स्वाभाविक परिणाम जो घासादि का भी स्वाभाविक परिणाम माना हो फिर नहीं माना है क्युं दूसरा निमित्त मिलनेसे कैसे दूसरा निमित्त मिला है (अन्यत्रा) धेनु की खाई घासादि दूध है वर्द्धादि की खाई घासादि वीर्यादि की तौं होति मसे दूध नहीं है यदि निर्निमित्त ही घास से दूध होता धेनु सा वह्न से भी घासादि दूध हो मनुष्य अपनी इच्छा से दूध नहीं बना सक्ता है इस से निर्निमित्त नहीं है यह भी है कि कोई काम मनुष्य के करने का है कोई दैव के करने का है मनुष्य भी अपने योग्य उद्यम से घासादि द्वारा दूध कर सक्ता है जो बहुत दूध चाहता है वह बहुत घास दानादि धेनु को खवा के बहुत दूध लभता है तिससे तृणादिवत् स्वाभाविक प्रधान का परिणाम नहीं है ॥

अभ्युपगमेप्यर्थाभावात् ६

स्वाभाविकी प्रधान की प्रवृत्ति नहीं है यह ठीक किया तो भी मैं आप ही की श्रद्धा के अनुकूल प्रधान की स्वाभाविकी प्रवृत्ति मानूंगा तो भी दोष है क्युं अर्थाभावात् यदि प्रवृत्ति स्वाभाविकी दूसरे की अपेक्षा से नहीं है तो जैसा कछु सहकारी नहीं चाहती तैसा प्रयोजन भी कुछ न चाहेगा इससे प्रधान पुरुष की अर्थ के सिध्यर्थ प्रवृत्ति है यह प्रतिज्ञा की हानि हो यदि यह कहो कि केवल सहकारी को नहीं चाहती है प्रयोजन को तो चाहती है तो भी प्रधान की प्रवृत्ति का प्रयो-

कूनपृथक्करो भोग वा अपवर्ग वा दोनों हैं यदि भोग है तो कैसा है कूटस्थसुखरूपपुरुषमें कछु अतिशय नहीं धर सक्ते हो अध्यास भी नहीं मान सक्ते हो भोगयुक्त नहीं है फिर प्रधानकी प्रवृत्ति भोग-के अर्थ है सो मोक्षका हेतु विवेकख्याति के न होने से अपवर्ग नहीं मुक्ति के अर्थ भी प्रवृत्ति नहीं क्युं स्वरूपमें अवस्थानरूपमुक्ति स्वतःसि-द्ध है तिससे प्रवृत्ति निरर्थ है फिर शब्दादिभोग भी नहीं है भोगवो-मुक्ति इन दोनोंके अर्थ प्रवृत्ति माने से प्रधानका मोक्ष अर्थात् भोग्य-अनन्त हैं तिससे मुक्ति न होगी जैसे लोग इच्छाकी निवृत्ति के अर्थ कर्ममें प्रवर्त्तते हैं तैसे प्रधान पुरुषकी मुक्त्यर्थ प्रवर्त्तता है यह झूठ है औत्सुक्य इत्यादि अर्थात् इच्छा केवल जड वा चेतन में युक्त नहीं है जड वो निष्फलको होने से यदि पुरुषकी दृग्शक्ति है चिद्रूपसे प्रधानकी सर्गशक्ति है त्रिगुणसे इन दो शक्तियोंको सामर्थ्य दृश्यदृ-ष्टिके बिना निरर्थ है तिससे प्रधानकी सृष्टिमें प्रवृत्ति है तो जैसा दृग्शक्तिका नाश नहीं तैसा सर्गशक्तिका नाश नहीं है फिर संसा-रका भी नाश नहीं फिर मुक्ति भी नहीं है क्युंकि दोनों शक्ति नित्य हैं तो सृष्टि भी नित्य है तिससे प्रधानको मोक्षार्थ प्रवृत्ति अयुक्त है ॥

पुरुषाश्मवदितिचेत्तथापि ७

जैसे सूझता वो लंगडा चलते वो अन्धे पुरुषपर चढके अन्धेको प्रवृत्ति कराता है और जैसे चुंबक आप नहीं प्रवृत्त होता पर लोहे-को प्रवृत्ति कराता है तैसे पुरुष प्रधान की प्रवृत्ति कराता है फिर-सांख्य इसी दृष्टांतसे वाक्युद्धमें खडा हुआ है सुनो दृष्टांत दिये पर भी दोषोंसे छुट्टी नहीं है प्रथम तुमने माना था कि प्रधानकी स्वतन्त्र वृत्ति वो पुरुषका अप्रवर्तकत्व जो दोनों गये यह दोष है कैसे उदासीन प्रधान को प्रवृत्त करावे परिस्पंद प्रयत्न गुण न होने से पंगु भी अन्धेको वचना-

दिसेप्रवृत्तकरातहै पुरुषकेपासप्रवर्तनकायत्ननहीं है निष्क्रिय वोनिर्गुणसे चुंमककेसमानसन्निधिसेप्रवृत्तिनहीं संनिधिनित्य सेप्रवृत्तिनित्यहो प्रधानपुरुषदोनोंव्यापकवोनित्यहैं, तिससेसन्निधिनित्यहोचुंमककोअनित्यसन्निधिसे सुधारखनाआदिअनित्यसन्निधिरूपयत्नहैतिससेसमदृष्टान्तनहीं है पुरुषाश्मवदितिफिर प्रधानजडवोपुरुषउदासीनतोसगप्रधानपुरुषका सम्बन्धकरानेवालानहींतोसम्बन्धअसिद्धहै दृक्दृश्यभी सम्बन्ध चिज्जड्योग्यतारूपसम्बन्धकोनित्यतासेमुक्तिनहोगी सांख्यमतमेंप्रधानपुरुषदोनोंसत्यहैं तिससेविरोधहै वेदान्तिमतमेंपुरुषस्वरूपसेउदासीनवोमायाश्रितप्रवर्तकहै मायाकल्पितहै पुरुषकूटस्थहै इससेदोनोंकाविरोधनहीं यहोअतिशयहै ॥

अंगित्वानुपपत्तेश्च ८

सत्वरजतमगुणवोमुख्यरूपको छाड़साम्यरूपसेस्थितप्रधान है इसदशामेंअङ्गाङ्गिभावसे साम्यरूपकानाशहोतिससेकोटस्थ्यकानाशहै इसडरसेअङ्गाङ्गिभावनहींहैतोसृष्टिकोसिद्धिभीनहीं हैबहुतकालसेसमरहेफिरउनकोवैषम्यकानिमित्तनहीं तोमहदादिसर्गभीनहो बाह्यक्षोभयिताकेअभावसे ॥

अन्यथानुमितौचज्ञशक्तिवियोगात् ९

गुणोंकाअनपेक्षस्वभावछाड़सापेक्षस्वभावका अनुमान करोगे तोअङ्गाङ्गिभावसिद्धहोगा मैंसांख्यने गुणकूटस्थप्रमाणसेनहींसाधेपरकार्यकेवशसे गुणोंकास्वभावसाधाहै जैसे२ स्वभावसेकार्यसिद्धहै तैसा२ स्वभावगुणोंकामानाहै चलगुणवृत्तगुणहैं तिससेसाम्यदशामेंभीवैषम्यकेयोग्यगुणरहतेहैं ऐसेमानेपरभीप्र-

धानकोसमर्थताकेवियोगसेरचनानुपपत्ति आदि दोष बने रहेहैं कार्यकेअर्थप्रधानकोज्ञानशक्तिकीकल्पनामेंब्रह्मवादहै। ब्रह्मवादीनेभीएकचेतनअनेकप्रपञ्चका उपादान माना है फिरनिमित्तकेअभावसेवैषम्यकेयोग्यगुणभी साम्यदशामेंवैषम्यभागीनहे। जोहोतोनिमित्तकेअभावकीसमतासे सर्वदाही वैषम्यभागीहोयहऔरदोषहुआ॥

विप्रतिषेधाच्चासमञ्जसं १०

सांख्यसिद्धांतकभीकुछवो कभीकुछ कहनेसेविरुद्धहै त्वचाएकहीज्ञानेन्द्रियअनेकशब्दादिकोंकाकारणहै त्वचाकर्मेन्द्रियांपांचमनजैसातहैंज्ञानेन्द्रियपांचकर्मेन्द्रियपांचएकमनजोग्यारहइन्द्रियांहैं बुद्धिअहंकारमनजोतीनहैंएकबुद्धिहीवाअन्तःकरणहैतेसेकहींमहत्तत्वसेतन्मात्रसर्गकहा कहींअहंकारसेयहोईइसप्रकारश्रव दिनोश्रुतिसेविरोधहै तिससे सांख्यदर्शनसत्यनहींहैफिरसांख्यनेकहा।कियौपनिषद्भीसत्यनहींहैतप्यतापक* काभेदनमाननेसेतुमतोलोकप्रसिद्धतप्यतापककानाशकर्तेहो एकहीब्रह्मसर्वात्मकविश्वकाकारण मानतेहो उसीके विशेष तप्यतापक कहतेहो।नउससेऔरहैंतप्यतापकयदिएकही चेतनकेदोनोतप्यतापकविशेषहैंतोवहउनसेमुक्तनहींहैफिरतापकीशांतिकेअर्थसम्यग्दर्शनकाउपदेशीशास्त्रनिरर्थहोजैसे वन्हिऔष्ण्यऔप्रकाशसेनिर्मोचनहींहैफिरभीबुद्बुदादिएकही जलकेआविर्भावतिरोभावसेनित्यहैंतोबुद्बुदादिसेजलकाअनिर्मोचसमानहै लोकमेंतप्यतापककाभेदप्रसिद्धहै अर्थअलाभादिसेअर्थीकोतपाताहै तिससे अर्थतापकअर्थीतप्यहैजोअर्थीसेअन्यअर्थनहो जिसअर्थीकाजिसविषयकाअर्थित्वहैउसकाअर्थनित्यसिद्धहै तो नउसकाउसविषयकअर्थि

* तप्यजीव तापकसंसार

त्वहै। जैसेप्रकाशितदियाकाप्रकाशनामार्थनित्यसिद्धहै तोदिया
काप्रकाशविषयकअर्थित्वनहींहैअप्राप्तअर्थमेंअर्थीकीअर्थिताहै।
तैसेअर्थसेअन्यअर्थीहैअभावसेअर्थकाअभावहोजो।हैतोस्वार्थहै।
सोनहींहै अर्थीअर्थदोनोंसंबन्धिपदहैंदोसंबन्धिकासंबन्धहै।नए-
ककालतिससेअर्थीवोअर्थभिन्नहैंतैसेअनर्थवो अनर्थीभीहैंअर्थीको
अनुकूलअर्थवो।प्रतिकूलअनर्थहैफिरकाल२मेंअर्थानर्थसेएकहोसं
बन्धितहैफिरअर्थथोराअनर्थबहुतहै तिससेदोनोंअनर्थहीहैंवही
अनर्थतापकहैतप्यपुरुषएकदोनोंकेसङ्गसंबन्धीहै फिरयदिवेतप्य
तापकएकहीहैं तोमोक्षकी सिद्धिनहींहै तप्यबुद्धिकापुरुषकास्व
स्वामिभावसंबन्धहै संबन्धकाहेतु अनादिअविवेकहै अविवेककी
निवृत्तिकाउपायविवेकहै तिससे नित्यमुक्तपुरुषकीभीकिसीढब
उपचारसेमोक्षकीसिद्धिहैएकहीपरमार्थहै तिससेतप्यतापकभा
वकीअसिद्धीनहींहै यहदोषतोहै। जोएकात्मामें तप्यविषयवो
तापकविषयीहो सोनहींहै एकहीहै जैसेएकहीआगअपनेकोज
लातीवोप्रकाशतीनहींऔष्ण्यप्रकाशादिधर्मोंकेभेदमेंवोपरिणा
ममेंजलानाप्रकाशनाकरतीहै फिरकूटस्थब्रह्ममेंकहांतप्यतापक
भावकासंभवहैफिरकहांहैतप्यतापकभावसुनो क्यूंनहींदेखतेहो
कर्मभूतजोवोदेहतप्यहैतापकसूर्यहैननुतप्ततोदुःखहैवहचेतयि
ताकाधर्महैनजड़देहकाजोदेहतप्ततोदेहकेनाशसेवहआपनष्टहै
फिरउसकेनाशार्थसाधननढूंढनाचाहियेकहिताहूं देहकेअभाव
मेंकेवलचेतनकोतप्तनहींदेखीतुमको भीतप्तविकारकेवलचेत
यितामेंइष्टनहींनदेहवोचेतनकेमेलमेंतप्तहैअशुध्यादिदोषहैमि
जानेसेऔरतप्तकाभीतप्तनहींमानताहोतोकहोतुमकोहोतप्य
तापकभावकैसेहैयदिसत्वतप्यवो तापकरजकहे।तोउनसेचेतन
केसंबन्धकीअसिद्धिहै सत्वकेअनुरोधसेचेतनभीतप्तइवहै तोपर

मार्थसेनहींतप्ताहैयहीप्राप्तहुआ इष्टशब्दकहनेसेतबतोजैसेजल
चन्द्रकाचलनाझूठाहैतैसेतप्तिझूठीहै वस्तुसेपुरुषतप्तिसेरहितहै
इष्टशब्दझूठीतप्तिपरहैतिससेदोषनहींहैइहमतकाहो जैसासांप-
साहैयहकहनेसेजैसासमविषनहींहोताहै वोसांपजैसासाहै यहक
हिनेसेसांपनिर्विषनहींहोताहै इस्से अविद्यासेकगातप्यतापकभा
वहैनपारमार्थिकहैयहीमतोंतोमुमुक्षुकोभीयहीइष्टहैदृक्अथवास
त्यतप्यत्वपुरुषकोमानातोकूटस्थको ह।निसेअनिर्मोक्षहोफिरता
पकरजको नित्यमानेसेदुःखानत्यहो। सत्व वा पुरुषतप्यशक्ति है
तापकशक्तिरजहै वोनिमित्तअविवेकरूपतमहै फिरतमसविल-
सनिमित्तसंयोगस्वामित्व रूपगुणपुरुषकाहै फिर संयोगकोअपे
क्षासेतप्तिहैफिरसंयोगकानिमित्ततमउसकीनिवृत्तिमेंसंयोगकी
निवृत्तिहैतिससेआत्यन्तिकमोक्षयुक्तहै यहनहीं तमकोनित्यमा-
नेसेगुणोंकाहोनाजानावेठिकानाहैतिससेसंयोगकादूरहोनाअ
नियतहैफिरवियोगभीनहोगा तोसांख्यमतमेंअनिर्मोक्षहो औप
निषदमतमेंएकही हैतोबन्धहीनहींहै फिरमुक्तिकेअभावकीशङ्का
काअवसरकहांहै व्यवहारमेंभेदमानेसेतप्यतापकभावबन्धहै उ
सीकोतत्वज्ञानसेनिवृत्तिसिद्धहै इससेकुछचोद्यका अवसरनहीं
है क्रियाप्रधानवादनिरासअवअणुवाद निरासकरताहूं कणाद
कासिद्धान्तहैकिजोगुणकारणद्रव्यमेंहैं वेहीअपनेसमानकार्यद्रव्य
मेंगुणान्तरकोकरतेहैं विसदृशकेजन्यमेंदृष्टान्तहैयानहींहै नहीं
जैसेशुक्लतन्तुसेशुक्लपटकाजन्महै औरशुक्लसेकालापटनहींदेखा
हैतिससेचेतनकोजगकारणमाननेसे कार्यजगमेंभीचैतन्यहोवह
नहींदेखतेहैं तिससे जगकारणहोनेकेयोगचेतननहींहै यहक
णादसिद्धान्तकणादकीरीतिसेहीव्यभिचारीदिखाताहै ॥

सांख्यनेकहाकिजिससविगानसेमेरामतबुराकहतेहोवेदांतोसो

होतुमक्का विगानहै जैसे शतायुर्वैपुरुषः शतेन्द्रियः शतवीर्यः इस
मेंसौइन्द्रियकहनेसेवो अथर्वमेंनवप्राणकहनेसे जैसे नवप्राणान्न
खभिःसंमिमीत इत्यादि ॥

———*◯*———

(वैशेषिकप्रक्रियाधिकरण ॥ २ ॥)

महद्दीर्घवद्वाह्रस्वपरिमण्डलाभ्यां ११

रीतिपरमाणुगुणकालकार्यनहींकरतेजैसेप्रलयमें रूपादिमान्नि
ष्क्रियसंयुक्तरहतेहैंसर्गमेंअदृष्टसेउनमेंकर्महोकेजुड़तेहैंवहीम
र्गहै यदादोअणुद्व्यणुककोबनातेहैं तदाअणुकेरूपादिद्व्यणुकके
रूपादिकोबनातेहैं परमाणुअर्थात्परिमण्डलउसकापरिमाणपा
रिमाण्डल्यकहाताहै वहद्व्यणुकमेंपारिमाण्डल्यनहींबनाताहै
यहीव्यभिचारहै अणुत्ववाह्रस्वत्वदोनोद्व्यणुकके परिमाणकहते
हैंफिरचारद्व्यणुकसे चतुरणुकबनताहै वादोद्व्यणुकोंसेबड़ाच
तुरणुकनहींबनताहै कारणमेंबहुत्व महत्त्वनहींतोकार्यमेंबहुत्व
महत्त्वकहांहै यहीमानोयदाबहुतअणुबहुत द्व्यणुककोवाद्व्यणुक
कोसहितपरमाणुकार्यबनताहै तदपिद्व्यणुककेह्रस्वअणुपरिमाण
आरम्भकनहींहैं यहीव्यभिचारहै प्रकटार्थकारास्तु यद्वाभ्यांद्व्य
णुकाभ्यामारब्धं कार्यं महत्वं दृश्यतेतस्यहेतुः प्रचयोनामप्रशिथि
लावयवसंयोगइतिरावणप्रणीतेभाष्ये दृश्यते इति चिरन्तनवैशे
षिकदृष्टर्दभाष्यमित्याहुः कार्यकापरिमाणकारणकेपरिमाणसे
नहींहै किन्तुकारणकीसंख्यासेहै जैसे परमाणुपरिमण्डलसेअणु
ह्रस्वद्व्यणुकहै महत्वादीर्घत्र्यणुकादिहोतेहैं परिमण्डलनहीं
होताहै जैसेअणुह्रस्वद्व्यणुकमेंअणुद्रव्यनहींजन्मताहै ह्रस्वभीन
हींजन्मताहै यहीव्यभिचारहै महत्दीर्घत्र्यणुकजन्मताहै ऐसेही

चेतनसेअचेतनजगजन्मेगा इससे तुम्हाराक्यागया। द्व्यणुकादि
कार्यविरोधिपरिमाणांतरसेघिराहै इससे कारणकेपारिमाण्ड-
ल्यादिआरम्भकनहींहैं यहमानतेहैं चेतनाकेविरोधिगुणसेज
गआक्रांतनहींहै जिससेकारणकीचेतनाकार्यमेंचेतनाकोनज-
न्मे अचेतनोंकोअचेतन।विरोधीकोई अगुणनहींहै केवलचेत-
नाहीकाप्रतिषेधहै तिससेपारिमण्डल्यादिदृष्टांतसमनहींहै इ-
ससेचेतनाकोआरम्भकताकोप्राप्तिहै यहमतमानो जैसे का-
रणमेंविद्यमानपारिमण्डल्यादिआरम्भकनहींहैं तैसे चैतन्य-
अंशआरम्भकनहींहै उत्पन्नपरिमाणांतरविरोधीहै परिमाणां-
तरकीउत्पत्तिकेपूर्वविरोधनहींहैफिरद्व्यणुकमेंपारिमाण्डल्यआ
रम्भकक्यनहो कार्यगुणकेआरम्भसेपूर्वक्षणभरअगुणरहताहै ऐ
सामानेमें पारिमाण्डल्यादिअणुत्वादिकेआरम्भमेंव्यग्रहोनेसे-
अपनेसमगुणांतरकाआरंभनहींकरताहै परिमाणांतरअन्यहेतु
सेहै द्व्यणुककीवहुततासेत्र्यणुकमेंमहत्वमट्टीकीवहुततासेघड़े
मेंमहत्वहै दोसेरकईसेचारसेरकईकाअतिस्थूलप्रचयनाममह-
त्वहै अवयवसंयोगविशेषमहत्सेउलटाअणुहै किसीसन्निधिसे
कारणकेवहुत्वादिआरम्भकहैं नपारिमांडल्यादियहनहीं द्रव्य
वोगुणकेआरम्भमेकारणकेगुणकैसेथोरिगयेवोथोरेरहिगये एक-
होठिकानेतोथे तिससेपारिमांडल्यादिस्वभावसेअनारम्भकहैं
तैसे चेतनाभीस्वभावसेअनारम्भकदेखो द्रव्यादिविलक्षणोंका
संयोगसेजन्मदेखाहै समजातीयकाव्यभिचारहै विलक्षणका-
र्यकारीद्रव्यदृष्टांतयोग्यहै संयोगगुणकादृष्टांतउचितनहींहै य-
हमतकहो दृष्टांतसेविलक्षणमात्रहीविवक्षितहै द्रव्यकाद्रव्यगुण
कागुणदृष्टांतकेनियममेंहेतुनहींहै कणादनेभी अनियम कहा
जैसे क्षितिप्रत्यक्षव्योमअप्रत्यक्षदोनोंकेमेलमे संयोग अप्रत्यक्षहै

तैसे प्रत्यक्षाप्रत्यक्षपांचभूतोंकेमेलमेंदेहच प्रत्यक्षहै। फिरदेहप्रत्यक्षहैतिससेपांचभूतोंकाकार्यनहींहै गुणसंयोगवोद्रव्यदेहविलक्षणहैं यहीपूर्वसांख्यसेकहा अबवैशेषिकसेकहताहूं वैशेषिककीप्रक्रियाकेभङ्गार्थयहप्रपञ्चहै ॥

अणुवादभङ्गाधिकरण ॥ ३ ॥

उभयथापिनकर्मातस्तदभावः १२

लोकमेंपटादिसावयवतंतुसंयोगसेबनतेहैं उनहींकेसमान क्षित्यादिभीअपनेरसंयोगीद्रव्योंसेबनेहैं जिससे अवयवावयवि विभागछुटाहै वुहीपरमाणुहै फिरबुद्धिसेविभागकार्यकारीनहींहै सबजगसावयवहै तिससेआद्यन्तवत्है ननित्यहै अकारणसेकार्यनहींहोताहै तिससे जगकारणपरमाणुहैं क्षितिजलतेजपवनजेचारसावयवलखतेहैं तिससेचतुर्विधपरमाणुकल्पतेहैं अवयवकेनाशसेअवयवीकानाशहै तौक्षित्यादिकानाशपरमाणुलोविभागहोकेहोगा फिरपरमाणुनिरवयवहै तिससेनविभक्तननष्टहै यहीप्रलयहै नकिपरमाणुकानाशप्रलयहै सर्गमेंवायुकेपरमाणुमेअदृष्टकेआधीनकर्महोताहै वुहीकर्मजिसअणुमेहै उसकोऔरअणुसेजोड़ताहै फिरद्व्यणुकादिसेवायुजन्मताहै ऐसेअग्निजलक्षितिहोतेहैं देहइन्द्रियादिसबजगअणुसेहै अणुकेरूपादिसेद्व्यणुकादिमेंरूपादिहैं जैसे तन्तुरूपपटमेंयहीकाणादमानतेहैं प्रलयमेंविभक्तअणुकासंयोगकर्मापेक्षकहो सकर्मतन्तुकासंयोगदेखनेसेफिरकर्मभीकार्यहै तोकार्यकाकछुनिमित्तभीकहो निमित्तनमानेसेअणुमेंआद्यकर्मनहोगा फिरबिमित्तप्रय

लवाअभिघातादि जैसे प्रयत्नसेदेहमेंचेष्टा वायुकेघातसेपेड़आ
दिकाहिलनाहै तैसे अणुकर्मकेलियेकोईदृष्टनिमित्तहै यानहीं
दृष्टनिमित्तकासम्भवनहीं तोअणुमेंआदिकर्मभीनहींहै प्रलय-
मेंआत्माकागुणप्रयत्नभीनहींहै देहकेअभावसेमनदेहमेंघुसाआ
त्मासेमिलआत्मामेंगुणप्रयत्न को जनता है सबअभिघातादिदृ-
ष्टनिमित्तसर्गकेपीछेहोंगे वेआद्यकर्मकेनिमित्तनहोंगेनहीं बेटा
बापकानिमित्तदेखाहै तिससेआद्यकर्मकासंभवनहींहै अथवा
आद्यकर्मकानिमित्तअदृष्टकहो तोवहआत्मामेंवाअणुमेंहैदोनो
ढवसे अणुमेंकर्मनहींकल्पसक्तेहो अदृष्टअचेतनहोनेसेअचेतनचेत
नकेसहायविना स्वतन्त्रनप्रवर्ततावा नप्रवृत्तिकरताहै यहसांख्य
सेकहिचुकेप्रलयमेंजीवोंकोचैतन्यनहींजन्मा तिससे अचेतनआ
द्यकर्मकानिमित्तनहींहैआत्मसमवायिअदृष्टभीकर्मकाहेतुनहीं
असंबद्धसे यदिकहोकिअदृष्टवान्पुरुषके सङ्गअणुकासंबन्धहैतो
विभुकासंबन्धनित्यहैतोप्रलयभीनहोकादाचित्की प्रवृत्तिकानि
यामकईश्वरहोवहभीनहींक्योंजोज्ञानहै सोदेहजन्यहै तिससे
नित्यज्ञाननहींतोनित्यगुणाईश्वरभीनहींहै जोहैतोसदाहोनेसे
नियामकनहींहैसदाहीसृष्टिहोनेसे तिससे कर्मकाहेतुनियतन
होनेसेअणुमेंआद्यकर्मनहोफिरकर्मकेनहोनेसेकर्मसेबन्धासंयो
गनहोफिरसंयोगकेनहोनेसेसंयोगसेबन्धा द्व्यणुकादिकार्यभीन
हो अणुकाअणुकेसाथसंयोगसवरूपसेवाथोरेसेहै जोसवरूप से
हैतोएकमेंदूसराघुसगयाफैलानहीं तिससे कार्यमोटानहोअणु
हो ऐसादेखतेनहींहैं किञ्चसांशमेंसंयोगका एकांशघुसनादेखाहै
छहदिशाकेभेदसेएकअंशसेअणुकासंयोगकल्पितहैतोकार्यनहो
होतोमिथ्याहोतिससेअणुके कल्पितअंशनहीं कहिसकेहो अव
स्तुसंयोगवस्तुकाअसमवायिनहोनेसे द्व्यणुकादिकार्यनहो जैसे

सर्गमेंअणुकेसंयोगकाहेतुकर्मकासंभवनहींतैसे लयमेंविभागके
अर्थअणुमेंकर्मकासम्भवनहो प्रलयमें नियतअभिघातादिदृष्टवा
धर्माधर्मअदृष्टविभागकेहेतुमहोनेसे क्योंसुखदुःखार्थधर्माधर्मअ
दृष्टहैंसुखदुःखशून्यप्रलयकेजनकनहींहैंइस्से अदृष्टभीविभागमेंहे
तुनहींहै. अणुकेसंयोगविभागकाहेतुकर्मनहोनेसेसंयोगविभाग
काअभावहै फिरउनकेआधीनसर्गप्रलयका अभावहोतिससेअ
युक्तअणुकारणवादहै दृष्टवाअदृष्टकर्मके निमित्तदोनोंपक्षोंमेंक
र्मकाअभावहैतिससेसर्गप्रलयकाभीअभावहैयहसूत्रार्थहै ॥

समवायाभ्युपगमाच्चसाम्यादनवस्थितेः १३

दोअणुसेजन्याद्व्यणुकदोनोंअणुसे भिन्नदोनोंअणुमें समवा
यसेहैइससेभीअणुकारणनहींहैंक्युं साम्यादनवस्थितेः जैसेदो-
अणुसेभिन्नद्व्यणुकअन्यसमवायसंबन्धसेदोअणुमेंसंबद्धहै तैसे स
मवायभीसमवायिसेभिन्नहुआ अन्यसमवायसंबन्धसे समवायि
केसाथसंबद्धहो द्व्यणुकवासमवायकाअणुभिन्नत्वकीसाम्यसे फि
रसमवायकेअर्थऔरसमवायफिरउसके अर्थऔरयहीअनवस्था
हो यदिइनतन्तुमेंपटहैइसतन्तुसहित पटबुद्धिकानियामक सम
वायनित्यसंबन्धहैनअसंबद्धहैनअन्यसंबन्धकोचाहताहैइससेअन
वस्थानहींयहकहोसोनहींसंयोगभी संयोगियोंसेनित्यसंबद्धहैस
मवायकेतुल्यअन्यसंबन्धकोनहीं चाहताहै अर्थान्तरसेसंयोग
अन्यसंबन्धकोचाहैतासमवायभीअर्थान्तरसेअन्यसंबन्धचाहै सं
योगगुणहैतिससेअन्यसंबन्धकोचाहैहै समवायअगुणहैतिससेअ
न्यसंबन्धनहींचाहताहै यहभीनहींकहिनेकोशक्यहै अपेक्षाहेतु
तुल्यहैतिससेमूलनाशिनीअनवस्थादुर्वारहै संयोगगुणहै यहसं-
केततुम्हारातुमहीकोहै फिरअनवस्थासेसमवायनहींतादोअ

गुसेद्व्यगुणकर्मौसमवायसेनहींहै तिससेअणुवादअयुक्तहै ॥

नित्यमेवचभावात् १४

जो अणुकाप्रवृत्तिस्वभावहै तो नित्यप्रवृत्तिसेप्रलयनहोगा १ जो निवृत्तिस्वभावहै तो नित्यनिवृत्तिसेसर्गनहोगा २ उभयस्वभावविरोधसेएककाहोताहीनहींहै ३ ॥

अनुभयस्वभावमेंनिमित्तसेप्रवृत्तिकहो वुहकालअदृष्टादि हैं फिरवेनित्यसन्निहितहैं तोप्रवृत्तिनित्यहो जोकालादिनिमित्तनहीं तोनित्यप्रवृत्तिनहीं ४ इनचारप्रकारसेअधिकस्वभावअणुमेमाननेकीगतिनहींहै तिससेअणुवाद अयुक्त है याअवघटादिहो अवनष्टहो अवठहिरो ऐसीईश्वरेच्छानदेखासोहै तोइसमे नित्यअर्चाहठवोभक्तिवोसाहससेहै नयुक्तिसे ॥

रूपादिमत्वाच्चविपर्ययोदर्शनात् १५

घटादिफूटकेसूक्ष्मरजहो जिसकाफिरविभागनसम्भवहै वुहीचारप्रकाररूपादिमान् अणुरूपादिमान् भूतभौतिकचारप्रकारकेआरम्भकनित्यहैं यहकणादकामानना वेठिकानाहै अणुरूपादिमान्हैं तिससेअणुत्ववोनित्यत्वकाउलटाहो परमकारणकीअपेक्षासेस्थूलत्ववोअनित्यत्वकाणादोंकोइष्टथावुहउलटाहुआ यहकैसे लोकमेदेखनेसेरूपादिमान्वस्तुअपनेकारणकीअपेक्षासेस्थूलवोअनित्यहै जैसे तन्तुकीअपेक्षासेपटस्थूलवोअनित्यहै तैसे अणुरूपादिमान्कणादमानतेहैं तिससेअणुभीकारणवान्हैं तोकारणकीअपेक्षासेस्थूलवोअनित्यहैं फिरजो यहउन्हेंकहाथा किसत्अकारणवत्नित्यहै अणुतोउक्तरीतिसेसकारणहै अनित्यविशेषसेनिषेधकाअभावहै इससेअणुनित्यनहीं-

सिद्धहोताहै जोकछुनित्यवस्तुनहीं तो नित्यशब्दकेसङ्गनञ्कास-
ङ्गनहो फिरअणुकीनित्यताकीअपेक्षानहींहै नित्यपरमकारणअ-
भ्यहै शब्दार्थकेव्यवहारहीसेकिसीअर्थकीसिद्धिनहींहै शब्दबोधा-
र्थकाव्यवहारप्रमाणमूलहै तीसराकारणअविद्याकहा।या अणुमें
हघ्यस्थूलकार्यका प्रत्यक्षसेकारणका अज्ञानअविद्याहै यहकहो
तोद्व्यणुकहीनित्यहो अप्रत्यक्षकारणनित्यमेंहेतुकहनेसेतन्तुकेवि-
भागवानाशसेपटकानाशहै तीसरानाशकाहेतुमहींहै फिरजो-
दोनिरवयवअणुमेंनहींहैं तिससेअणुनित्यहै विनश्यद्वस्तुदोहेतु
कोनहींचाहतीहै परिणामसंयोगसेद्रव्यका जन्ममेंयहहै आरम्भ
मेंयहनियमनहींहै संयुक्ततन्तुसेअन्यपटकोनदेखनेसे तन्तुहीपट
हैं यहीमानोअनुभवसे तबतोअविद्यापरिणामरूपअणुकाका-
लादिकेहेतुसेमूर्त्तावस्थाकातिरोभावहै जैसे घीका आग्निकेसङ्ग
से नासोद्रजोमोव्योमेत्यादिमन्त्रोंसेअणुकानाशसिद्धहै घीपरि
णामीएकहै तिससेविभागकासम्भवनहींहै अणुकाकाठिन्यनाश
मेंविभागसम्भवहै तिससेअणुको रूपादि मानेसे दृष्ट उलटा है
तोअणुवादअयुक्तहै ॥

उभयथाचदोषात् १६

गन्धरसरूपस्पर्शगुणवतीस्थूलपृथिवीहै रूपरसस्पर्शगुणवान्
सूक्ष्म जल है रूप स्पर्श गुणी सूक्ष्मतर तेज है स्पर्श गुणी सूक्ष्म
तमवायुहै जैसेचारभूतबहुलथोरेगुणवान्स्थूलसूक्ष्मसूक्ष्मतर
सूक्ष्मतमतारतम्यसे युक्तदेखते तैसे अणुकेभीथोरेबहुतगुणक-
ल्पतेहोयानहीं जोअणुकेबहुतथोरेगुणमानोतोअणुत्वगया ब-
हुतसेस्थूलहोनेसे स्थूलनहोपरगुणबहुतहोयहनहींकहिसक्ते
हो कार्यमेंगुणोंकीबढ़तीसेस्थौल्यकाकारणदेखनेसे अणुकेसा

थ्या।र्थबहुतथारेगुणानमाने।सबएकएकगुणयुक्त माने। तो तेज मे स्पर्शनहो. जलमेंरूपस्पर्शनहो। पृथिवीमेंरसरूपस्पर्शनहो। क्युंका रणकेगुणकार्यमेंहोनेसे यासबचारगुणव।लेमानेतोजलमेंगन्ध हो। तेजमेगन्धरसहो। वायुमेगन्धरूपरसहोसे।नहींदेखतेहें तिस सेअयुक्तअणुवादहै ॥

अपरिग्रहाख्यात्मनपेक्षा १७

यौतककछ पदार्थ मानते हैं जैसे द्रव्य गुण कर्म सामान्य-विशेष समवाय जेउनकेनामहैं लक्षणवोस्वरूपसेभिन्नरहैं जैसे नर हय शश फिरभेदसेविरुद्धजे।धर्मधर्मीभावमानतेहैं सोनहीं क्युं जैसे शशकुशकाशादिभिन्नोमेएकदूसरेकाआधीनहै तैसे-द्रव्य।दिभिन्नहोनेसेगुणादिद्रव्यकेआधीनहोनेकेयोग्यनहींहैं य घवागुण।दिद्रव्यकेआधीनहैं तो।द्रव्यकेहोनेमेहैं नहोनेमेनहींहैं फिरद्रव्यहीसंस्थान।दिकेभेदसेअनेकशब्दोंसेकहाहै जैसेएकचैत्र अवस्थासेबालवृद्धयुवाशिशुकहाताहै तैसेद्रव्यहैकल्पितभेदसे-अत्यन्ताभेदमेधर्मधर्मीकाअयोगहैअसत्यभेदकेसमान गुणादिका द्रव्यमेंतादात्म्यमानोतो स्वमतछोड़सांख्यमतपकड़ाहै यदिक होकिआगसेअन्यधूमहै सोआगकेआधीनहै सचहै तादात्म्यधूम आगकाहेतुहै भेदज्ञानसेआगधूमका।भेदनिश्चितहै कालाकम्ब ललालधेनुइमसेद्रव्यहीतिस२विशेषसंजाना।गयाहै अग्निधूम केसमानद्रव्यगुणकाभेदनहींजानपड़ताहै तिससे गुणद्रव्यरूप है जैसे गुणद्रव्यरूपहैं तैसे कर्मसामान्यविशेषसमवायभीद्रव्य रूपहोहैं जोगुणोंकीद्रव्यसेभेदमेंभी अयुत सिद्धता से तादात्म्य कीप्रतीतिहै यहकहो तो अयुत सिद्ध क्या है जोअपृथग्देशहै तोपटवोशुक्लअपृथग्देशमेंनहोनेसेशुक्लपटहै यहप्रतीतिनहोअ

यअपृथक्काल अयुतसिद्धकहोतोबामदक्षिणशृंगचुचोंकोभी अयु
तसिद्धिहो अथअपृथग्स्वरूपअयुतसिद्धकहो तो द्रव्यगुणकाआत
भेदहै अर्थात्अभेदफिरगुणद्रव्यमेंतादात्म्यसंबंधितहै यहभ
कागाद्सिद्धांतव्यर्थहै ॥

कियुतसिद्धोंकासंबन्धसंयोगवोअयुत सिद्धोंकासमवायहै कै
कारणकार्यकेपूर्वहै तो अयुतसिद्धनहीं अथकारणपृथग्सिद्ध
तोभीकार्यअपृथक्असिद्धहै एककोअपेक्षासेअयुतसिद्धकार्यका
णमेंसङ्गसमवायहै तोभीपूर्वअसिद्धकार्यकाकारणकेसङ्गसमव
ययुक्तनहीं सम्बन्धदोसेहोताहै अप्राप्तोंकीप्राप्तिसंयोगकहो त
तन्तुपटकाभीसंयोगहो कारणकेसङ्गसेपूर्वकार्यसिद्धमानेसेअयु
सिद्धकेअभावसेकार्यकारणकासंयोगविभागनहोजैसेउत्पन्नअ
यकार्यकाव्योमादिविभुकेसंगसंयोगमानानसमवायमानाहै तै
कारणसे भीसम्बन्धसंयोगहोनसमवायहो संयोगवासमवायस
बन्धिकोछोड़केनरहिनेमेंकछुप्रमाणनहींहै किञ्चसम्बन्धकास
न्धमानेसे अनवस्थानमानेसे असंबद्धकाकोईनियामकनहींतोस
बन्धदुर्वचहै संयोगसमवायदोनोकाज्ञानविनासंबन्धिकेहै वि
ससे दोनोंहैं यहमतकहो एकहीमें अपेक्षासे अनेकज्ञानहोतेहै
जैसे एकहीचैत्रस्वरूपवोसंबन्धिकीअपेक्षासे अनेकहै नरराज
पितापुत्र जैसे एकहीरेखास्थानके भेदसे दशशतादिभेदज्ञान
कोजनतीहै तैसे संबन्धिहीसंबन्धिज्ञानकेविनासंयोगसमवा
ज्ञानयोग्यहै भिन्नवस्तुनहींहैं संबन्धशब्दसे विलक्षण उपलब्धि
ज्ञानद्वारासंयोगसमवायादिजानेजातेहैं फिर संबन्धिकेविन
उनकाअनुपलब्धिसे अभावनिश्चितहै दोअङ्गुलीनिरन्तरमें भि
न्नसंयोगप्राप्तनहींहै समवायकिसीकेअनुभवमेंनहींचढ़ाहै भा
वार्थसंबन्धकासंबन्धिसे भेदनहींतोसंबन्धिसदाहै फिरसदा

स्वरूप ज्ञानहोयहनहींक्योंस्वरूपवोसंबन्धिकीअपेक्षामें भेदकहा
था परापेक्षासेनिरन्तरदशामेंअङ्गुलियोंकासंयोगवोरूपरूपियों
का समवायहै नखतयहीअर्थअणुकेसंयोगखण्डनसे द्व्यणुकादि
सृष्टिकाखण्डनकरा अबअदृष्टआत्ममनकासंयोगखण्डनकरते
हैं जैसे अणुकासंयोगसम्भवनहुआ तैसे निरवयवआत्ममन
काभीसंयोगसम्भवनहींहै क्युं सावयवकेसङ्गसावयवकासंयोग
देखनेसे आत्मावोमनकेकल्पितअवयवमानोगेतोअसत्कीक-
ल्पनामेंसबअर्थंकीसिद्धिहो कल्पनास्वाधीनहै तोनिरवधिप्रभू-
तअर्थं कल्पोवानवा इतमात्रविद्यमानअर्थविरुद्धवाइतनाअविरु-
द्धकल्पनीयहै इसनियममेंकुछहेतुनहींहै वैशेषिककल्पितछह-
पदार्थोंसेअन्यथतवासहस्रअर्थंनहींकल्पनीयहैं यहबाधकहेतु-
नहींहै तिससेजो२जिसको२रुचाहै सो२सिद्धकियाहै कोईकृ-
पालुप्राणिकोबहुदुःखदायीसंसारनहो यहकल्पताहै औरव्यस-
नीसुखोंकाजन्मकल्पताहै इनदोनोंकावारककौनहै।इससेसंयो
गदुष्टहै किञ्चदोनिरवयवअणुसे सावयवद्व्यणुकव्योमइवसंश्लिष्ट
नहीं जैसे एककेखींचनेसेदूसराखिंचताहै तिसकीसिद्धिनहीं
है भाव जैसे घासदोकाठकासंश्लेषहै तैसे व्योमचित्यारिकान
होहै कार्यकारणकाआश्रिताश्रयभावनहोगा इससेसमवायक
ल्पोायहनहींहै वेदान्तीकोप्रकृतिविकृतिकेअभेदसेआश्रयाश्रि-
यिभावमाननाइष्टहै कार्यकारणकेभेदकीसिद्धिमेंआश्रिता-
श्रयभावकीसिद्धिफिरआश्रिताश्रयभावकीसिद्धिमें कार्यकारण
केभेदकीसिद्धिहै तोकूण्डीमेंबेरकेतुल्यइतरेतराश्रयहो।वेदान्ती-
कार्यकारणकाभेदवाआश्रिताश्रयभावनहींमानताहै कार्यको-
कारणहीकासंस्थानमात्रमानताहै कल्पितभेदसे किञ्च परि-
छिन्नअणुका।जितनीछहदिशाहैं तिनकेसङ्गतिसेअवयवोंसेसा

वयवहै जिससेअनित्यहै नित्यजोनिरवयवकागगनहै जिस अवयवको दिग्भेद का व्यवहार तुम कल्पते हो बुद्धिअणुहै इसतरहजो जोसंयोगविभागकेअयोग्यहै सोअणुहै तोब्रह्महोके अणु नामधराहै ब्रह्मसेअन्यकोदिग्विभागकीयोग्यतासेअवयवविभागअवश्यही परमकारणतोस्थूलादिकेनाशकीसिद्धिसे है से द्व्यणुकादिसेक्षितिवस्तुस्थूलतसनाशहोताहै फिरसूक्ष्मसूक्ष्मतरक्षितिजातीयकअणुनाशहोताहै फिरद्व्यणुकभीनाशहोताहै तैसे अणुभीनाशहोताहै क्षितिजातीयकहोनेसे और क्षितिकाअंशहोनेसेसावयवकाअवयवोंकेविभागसेनाशहै निरवयवकानहोनात्वनत् यहमतकाहो जैसे घीसोनादिकोअवयवोंकेविभागबिना अग्निसेसंयोगसेपतलेहोनेसेकाठिनताकानाशहै तैसे अणुभीपरमकारणहोकेमूर्त्तादिकानाशकहोगा मायाकाब्रह्मकेअवयवकेविभागसेअणुहोनेमेंकुछप्रमाणनहीं जिससे भ्रांतिमूलअणुवाद से वेदांतकाअविरोधहै ॥

———※◯※———

(बौद्धाधिकरण ॥ ४ ॥)

समुदायउभयहेतुकेपितदप्राप्तिः १८

वैशेषिकआधावैनाशिकहै परिमाणकेभेदसेदेहादिकोभी-अतरनाशीमाननेसेअयोग्यकहा अबसर्व वैनाशिककामतकहिताहै सुगतमेएकतत्त्वकहाथाउसकाशिष्योंमेअवस्थाकेभेदसेबुद्धिकेद्वारा रानामन्दमध्यमउत्तमबुद्धिवालेशिष्योंकेभेदसेभेदकियाहैवे चारहैं सौत्रांतिक वैभाषिक योगाचार माध्यमिक प्रथमसेदोकोवाह्यार्थकेप्रत्यक्षापरोक्षमेंस्तित्वसम्मतहै सर्वास्तित्ववादीवि-ज्ञानास्तित्ववादीसर्वशून्यत्ववादीवाह्यवोआंतरकोवस्तु मानता

है भूतभौतिक चित्त चैत्य भी पदार्थ हैं भूत क्षिति धातु आदि भौतिक रूपादि नेत्रादि क्षिति आदि के अणु चार प्रकार के हैं समुदाय है अवयवी नहीं है खर स्नेह उष्ण ईरण स्वभाव वाले क्रम से क्षित्यादि परमाणु कट्ठे होते हैं यह बाह्य संघात है ॥

रूप विज्ञान वेदना संज्ञा संस्कार ये पञ्चस्कन्ध हैं विषय-बाह्य हैं सो भी देहस्थ इन्द्रियों से ग्राह्य हैं तिससे अध्यात्म हैं सब व्यवहार के स्थान हैं विज्ञानस्कन्ध चित्त आत्मा कहाता है अन्य चार स्कन्ध चैत्य हैं इनका संघात आध्यात्मिक सब व्यवहार का निर्वाहक है फिर अवयव से अधिक अवयवी अनुपलब्धि से नहीं है वे भी सत् हैं तिससे क्षणिक हैं जैसे बिजुली अच्छा सुनो बौद्ध को दो प्रकार का संघात इष्ट है भूतभौतिक संघात अणुहेतुक १ पञ्चस्कन्धरूप स्कन्धहेतुक है २ इन दोनों में समुदाय की प्राप्ति नहीं है क्युं सर्गादि में अणुओं स्कन्धों का संघात सम्भव नहीं है अचेतन से चित्ताद्यन्वयन अर्थात् विज्ञान भी संघात का हेतु नहीं संघात होकर होने से विज्ञान वा विज्ञान होने से संघात अनुद्भूत है तदाश्रय में तुमने क्षणिक विज्ञान से अन्य चेतन जीव कोई न माना जो संघात का कर्त्ता हो अणु वा स्कन्ध कर्त्ता के बिना आप संघात के अर्थ प्रवृत्त हैं यह मत कहो अनिर्मोक्ष से रागादि जिस में हैं वह आशय अर्थात् सन्तान है इसको आलयविज्ञान सन्तान भी कहते हैं सन्तान सन्तानि विज्ञान से अन्य वा अनन्य है अन्य है तो स्थिरवाद क्षणिक है स्थिर है तो आत्मवाद में तुम पहुंचे क्षणिक का जन्म से अधिक व्यापार नहीं तो अणु आदिकों में कर्म की अर्थप्रवृत्ति नहीं है क्षणिकता के नाश से सन्तान अनन्य है यह पक्ष खण्डित है क्षणिक में क्रम न होने से तिस तिस हेता के अभाव से संघात नहीं है फिर संघात की असिद्धि से संघाताधीन लोक की यात्रा न होगी ॥

इतरेतरप्रत्ययत्वादितिचेन्नोत्पत्तिमा त्रनिमित्तत्वात् १९

यद्यपिभोक्ताभासितासंहताऽस्थिरइनसुगतमतसेनहीं त
थापिअविद्यादिसेकारणकार्यकोक्रमहै तिससे लोकयात्रासि
द्धहै जबअविद्यासिद्धहै तबअन्यकीअपेक्षानहींहै क्षणिकमेंस्थि
रबुद्धिअविद्याहै१ तिससे रागद्वेषमोहसंस्कारहैं२ संस्कारोंसे
गर्भमेंआलयविज्ञानहोताहै३ फिर आलयविज्ञानमेंपृथिव्यादि
चारनामकेआश्रयसेनामहै४ फिररूपश्वेतकाला शुक्ररक्त होता
है५ गर्भस्थकीकललबुद्बुदअवस्थाकोनामरूपकहतेहैं विज्ञानवो
पृथिव्यादिचारवोरूपजोछहजिसइन्द्रियमात्रकेआयतनहैंसोषडा
यतनहैनामरूपइन्द्रियोंकापरस्परसंयोगस्पर्शहैतिससेसुखादिवे
दनाफिरवेदनासेविषयतृष्णातृष्णासेप्रवृत्ति उपादानउपादानसे
जन्महोताहैजिससेसोभवअर्थात्धर्माधर्मादितिससेजातिअर्थात्
हजन्मपंचस्कन्धसमुदायजातस्कन्धोंकापरिपाकजरास्कन्धनाश
मरणहैम्रियमाणकोपुत्रादिकेस्नेहसेअन्तर्दाहशोकहै शोकसेहापु
त्रऐसाप्रलापपरिदेवन।हैअनिष्टकाअनुभवदुःखदुःखसेदुर्मनस्ता
अर्थात्मानसीव्यथा।नअवमानआदिकोभीजोअविद्यादिइतरेतर
हेतुकसौगतमतमेंकहींसंक्षिप्तकहींप्रपञ्चितकहेहैंतेसबकोसम्मत
हैंअविद्यादिहेतुसेजन्मादिजन्मादिहेतुसेअविद्यादिपरस्परहेतु-
हेतुमान्घटीयन्त्रकेतुल्यनित्यआवर्त्तमानहैंतोअर्थसेसंघातसिद्ध
हैयहमतकहो क्योंकिजिससेवेउत्पत्तिहीकेनिमित्तहैं सङ्घातयुक्तहो
जोसंघातकाहेतुहोसोनहींहै इतरेतरकारणमेंअविद्यादिपूर्व२
उत्तर२कीउत्पत्तिमात्रकेहेतुहैं सङ्घातकीउत्पत्तिमेंकछुभीहेतु
नहींहैं अविद्यादिसङ्घातकेविनानहींहोंगे तोसङ्घातकाहेतुकहोय

दावैशेषिकमतमेंनित्यअणुसङ्घातादिंफिरअदृष्टा*अयकर्त्ताभोक्ता
केमाने पर भी सङ्घात हेतु का सम्भव नहीं तदाहि मित्र फिर आ-
णुक्षणिकभोक्तासेरहितसङ्घातकर्त्तासेरहितउपकार्योपकारसेर
हितकासङ्घातकैसेसम्भवहो ज्ञानकेअभावसेयदाअनादिसंसार
मेंनिरन्तरसङ्घातहोतेजातेहैं सङ्घातके आधीन अविद्यादि हैं त
दासङ्घातसेसङ्घातजन्मानियमसेसदृशजन्मोयाअनियमसेसदृश
याविसदृशजन्मो नियमसमानेसेमनुष्यपुद्गलअर्थात्देहका देवबि
र्यंक्नारकादिकोप्राप्तिनहो अनियमसमानेसेभीमनुष्यपुद्गलकभी
क्षणमेंहाथीहोकेदेवबा।फिरमनुष्यहोनियमानियमदोसिद्धांतवि
रुद्धहै जिसकेभोगार्थसङ्घातहोसोस्थिरभोक्ता तुम्हारेमतमेंनहीं
है तोभोगभोगार्थंहोहै सोअन्यसेप्रार्थनीयनहींऔरमोक्षमोक्षा
र्थंहोतोअन्यमुमुक्षुनहो यदिहोमोअन्यसेप्रार्थितहैं तोभोगमोक्ष
काल में भोक्ता स्थिर हो फिर भोक्ता स्थिर माने से क्षणिकत्व ग
या तिससे अविद्यादिइतरेतरजन्मकेहेतुयदिहोतोहोफिरसङ्घा
तकीसिद्धिनहोभोक्ताकेअभावसेभोगवोमोक्ष।दिव्यवहारदुर्घटहो
जोजिसकीइच्छाकर्त्ताहै सोभोगइच्छाकालमेंनहींतोइच्छाव्यर्थ
है यदिहै तोक्षणिकत्वगया कार्यकाजन्मसुगतकोद्विविधइष्टहै
हेत्वधीनकारणसमुदायाधीन अविद्यासेसंस्कारसंस्कारसेविज्ञा
नयहहेत्वधीनकार्यकाजन्महै पृथिव्यादिकेसमुदायसेकार्ययहदू
सराहै तिससेभोक्ताकेअभावसेसङ्घातसिद्धनहींहै ॥

उत्तरोत्पादेचपूर्वनिरोधात् २०

अविद्यादिउत्तर२कीजन्ममात्रमेंहेतुनसंघातकेहेतुकहेथेअव
वेजन्ममात्रकेभीहेतुनहींहैं क्युं सुनो क्षणभङ्गवादीमतहै किउ-

* सहाय ॥

उत्तरक्षणअर्थंकी जन्ममें पूर्वक्षणअर्थ निरुद्ध है इससे पूर्व क्षण हेतु वो
उत्तरक्षणफल यह नहीं कहिसकते हो निरुद्ध*ध्वंसाभाववो निरुद्ध पू
र्वक्षणकी अभावसे उत्तरक्षणका हेतु नहोगा अथ सद्रूपसिद्धपूर्वक्षण
उत्तरक्षणका हेतु यहभी नहीं है सद्रूपका फिरव्यापारकी कल्पनासे
क्षणिकत्वका सम्बन्धहो अथउत्पत्तिसद्रूपका व्यापार है सोभी नहीं
नष्टहेतु होउपादाननहो तैसेघटादिकेकालमें मृदादिकेनहोनेसे
घटादिका जन्मनहीं होतो क्षणिकत्वकी हानि है हेतुस्वभावसे जो
फलउपरक्तनहीं है तोजन्म कहां है स्वभावको उपरागसे। जैसे हेतु
स्वभावफलकेकालसे है तोक्षणभङ्गगया स्वभावोपरागके विनाही
हेतुफल मानो तोसर्व सब हेतुफलकी प्राप्तिसे अतिप्रसङ्ग है किञ्च ज
न्मनाशवस्तुका स्वरूप होय या अवस्थान्तर यावस्त्वन्तरयादर्शनाद
र्शनहो जोपक्षसदनहीं जो जन्मनाशवस्तुका स्वरूप है तोवस्तुशब्द
वोजन्मनाशशब्दपर्यायिहो यदियह विशेष मानो कि जन्मनाशशब्दों
से मध्यवर्तीवस्तुकी आद्यन्तअवस्था कही है इससेभी क्षणिकत्वगया
क्युं आदिअन्तमध्य इन तीन क्षणका वस्तुसे सम्बन्ध होने से अथवस्तु
से जन्मनाश अत्यन्तभिन्न हैं तोवस्तु जन्मनाशसे कुटी शाश्वत हो यदि
वस्तुका जन्मदर्शनवो नाशअदर्शन है तोजे द्रष्टाके धर्म हैं नवस्तुके इ
ससेभी वस्तु शाश्वत हो तिससे सौगतमत अच्छा नहीं ॥

असतिप्रतिज्ञोपरोधो यौगपद्यमन्यथा वा २१

क्षणभङ्गमें नष्टपूर्वक्षण उत्तरक्षणका हेतु नहीं यह कहाथा अब
हेतुके विनाफलका जन्म कहो तोप्रतिज्ञाका नाश हो वह विषयकार
या सहकारिसंस्कार इन चारको पाके चित्तरूपादिविज्ञान है वैसा
चित्तरूप सुखादि जन्मते हैं यह प्रतिज्ञार्थ है जैसे नीलविज्ञानको

* विनाशक ॥

नीलवस्त्वालम्बनज्ञानविषयहै मेनकारणहै अधिपतिप्रत्यय सह कारिप्रत्ययआलोकहै समनन्तरपूर्वप्रत्ययसंस्कारहै यहचारोंका भेदहै यहप्रतिज्ञाश्चानिर्दोषपुरुषमेंहै फिरजन्मनिर्हेतुमानोअनि यमसेसबसबमेंजन्मों अग्रपूर्वक्षणजौलों रहताहै तौलौउत्तरक्ष णका जन्महोवै यहकहोतोभीहेतुफलयुगपत् होतोभीप्रतिज्ञाग ई क्षणिका:सर्वसंस्कारा:आद्यन्तवतोभावाद्व्ययं:वस्तुदोषकहा

प्रतिसंख्याऽप्रतिसंख्यानिरोधाप्राप्तिरवि-च्छेदात् २२

वैनाशिककीअहासुनो बुद्धिबोध्यंत्रयादन्यत्संस्कृतंक्षणिकं चेति अर्थसंस्कृतं उत्पाद्यं बुद्धिबोध्यम् प्रमेयमात्रं त्रयात् तुच्छ-रूपसेअन्यहैं तीनसेहैं प्रतिसंख्याऽप्रतिसंख्यानिरोधावाकाशंचे तित्रयमपिचैतन्द्वस्तुभावमात्रं निरूपाख्यमिति अर्थनिरूपाख्य-निरन्वयि विनाशमात्र नि:स्वरूप फिरकछुचिन्हनहीहै सबवस्तु व्योममेपाइप्रत्यभिज्ञायसत्है बुद्धिपूर्वक:विलविनाशोभावानांप्र तिसंख्यानिरोधोनामभाष्यते तद्विपरीतोअप्रतिसंख्यानिरोधआ वरणाभावमात्रमाकाशमिति अर्थमेंप्रतीपाप्रतिकूलासत्भावअ र्थंको असत् अभावअनर्थकोकरतीहूं इसरूपसेसंख्याअर्थात्बुद्धि प्रतिसंख्याहै इसबुद्धिसेकिसीभावकानाशहै सोप्रतिसंख्यानि-रोधहैजैसेदण्डसेघड़ाकोफोड़ना आपहीसेविनाशीघटादिका अबुद्धिसेजोनाशहैवहअप्रतिसंख्यानिरोधहैजैसेघड़ाकपड़ाधरा धरागलिजाताहै यहसुगतप्रक्रियाहै आकाशकाआगेकहैंगे टी नाशकाअवखण्डनसुनोभावार्थ सन्तानोहैं सन्तान भावोंकाहै तुफलद्वाराप्रवाहहै इसप्रवाहरूपसन्तानमेचरमक्षणक्षणांतरको कर्त्ताआनहींकर्त्ताहै तोचरमरअनहीं सन्तानकोअनाशसे नहींक

त्तोचरमअसत्हैफिरतुमभीवहीसत्मानाजोअर्थक्रियाकारीहै
फिरजोचरमसत्नहींतोपूर्वभीअसत्हैअर्थक्रियाशून्यसेसबसंता
नोंमेंसन्तानियोंकाअविनाशीहेतुफलसेसन्तानकेविनाशकास-
म्भवनहीं उक्तदो नाश सन्तानि में भी नहीं घट कपाल चूर्णादि
दशामेंभीवुद्धिमहोहै इसप्रत्यभिज्ञासेमट्टीकेअन्वयकाअत्यन्तना
शनहीं बीजकाअङ्कुरादि मेंस्पष्टप्रत्यभि ज्ञान नहीं है तोअन्व-
यीकानाशहै यहमतकाहो दृष्टअन्वयीकेअविनाशसेवहांभीअन्व
यीकाअनुमानहै जैसे अङ्कुरादिअन्वयियुक्तहैं कार्यहोनेसेघटा
दिकेतुल्यतिससे दोनोंनिरोधोंकीअसिद्धिहै ॥

उभयथाचदोषात् २३

जोअविद्यादिका निरोध प्रतिसंख्याऽप्रतिसंख्यानिरोधके
भीतरहै वहसपरिकरसम्यग्ज्ञानसेवास्वयमेवहै पूर्वविकल्पमें
निर्हेतुनाशकीहानिहै दूसरेमेंबुद्धकाउपदेशव्यर्थहै (यमनि-
यमाद्य:परिकरा:सर्वंदु:खंक्षणिकमितिभावनोपदेश:) इनदो-
पक्षोंमेंदोषसेयहदर्शनअसमञ्जसहै ॥

आकाशेचाविशेषात् २४

बुद्धमतमेंदोनिरोधकोआकाशजैसोनिरुपाख्यहैं तिनमेंसे
दोकाखण्डनकियाअबनिरुपाख्यआकाशकाखण्डनसुनो व्यर्थ
आकाशकोनिरुपाख्यमानाहै जैसे दोनिरोधवस्तुहैं तैसे आका
शभीवस्तुहै वेदप्रमासेआकाशवस्तुहै आत्मनआकाश:सम्भूतइ-
ति वेदप्रमाणसेतोअनुमानसुनोशब्दकिसीवस्तुमेंहै गुणहोनेसेग-
न्धादिकेतुल्यपृथिव्यादिद्रव्यकेगुणकानसेनहींसुनेजातेहैं तोआ
काशनामद्रव्यउनसेउसगुणकाआधारसिद्धहै किन्तु जोरीकनस

वहीआकाशनहींहै एकपक्षीकेउड़नेसेजोकहैतोअन्यपक्षीकेउड़नेकाठौरनहो जैसे एकघटकेहोनेमेंघटसामान्याभावनहीं तैसेएकपक्षीकेहोनेमेंभीमूर्तद्रव्यकासामान्याभावरूपआकाशनहींहै जिसदेशमेंआवरणाभावहै वहीआकाशहै उसमेंपक्षीचलेगायहमतकहो क्युंकि जोदेशआवरणसेरहितहै वहदेशआकाशवस्तुहै अभावनहींहै किन्तु जोआवरणाभावमात्रआकाशमानोतो सुगतसेविरोधहो जैसे शिष्यनेपूछाकिभगवन्पृथिवीकाआश्रयकौनहै तोउत्तर किपृथिव्यादिकेअन्तमेंवायुहै फिरवायुकाआश्रयक्याइसप्रश्नकाउत्तर किवायुकाआश्रयआकाशहै फिर आकाशकोअवस्तुमानेसेवायुकाआकाशमें ठहिरना सचन होगा प्रश्नपृथिवीभगवन्किंसन्निश्रयापृथिव्यादीनामन्तेवायुःकिंसन्निश्रयः उत्तर वायुराकाशसन्निश्रयइति किंसन्निश्रयआश्रयोऽस्त्विति किंसन्निश्रयाअवस्तुनःशशशृङ्गस्याश्रयस्यादर्शनादितिभावः यहसुगतग्रन्थथापरब्राह्मणकोसोइसकोरचनाथी लोगोंनेदोषसेखोदियाहै किन्तुदोनिरोधवोआकाशयेतीनोंअवस्तुनिरूपाख्य नित्य हैं यह विरुद्ध है नित्यत्व अनित्यत्व वस्तु के धर्महैं तोअवस्तुउनकाआश्रयनहींहै धर्मधर्मिव्यवहारधर्मधर्मीकेहोनेसेहोताहै घटादिवत्अवस्तुहोन निरुपाख्य हो ध्वंसाप्रतियोगित्वाख्यधर्मनित्यत्वहै वह असत् मेंसम्भवनहींहैधर्मीकोअसत्वकैसाशसे ॥

अनुस्मृतेश्च २५

वैनाशिक जैसे सबवस्तुक्षणिकमानताहै तैसे उपलब्धाकोभीक्षणिकमानता अनुस्मृतिदेखनेसेउपलब्धाकोक्षणिकतासम्भवनहींअनुभव उपलब्धिएकार्थहैं अनुस्मृतितोसम्भवहो जोअनुभवऔरस्मृतिकाएकउपलब्धाहो एकदेखेऔरदूसरास्मरणकरे

ऐसानहींदेखाहै जोमैंदेखताथावहीमैंअबदेखताहूं यहज्ञानआ
गेपीछेकेएकद्रष्टाकेबिनाकैसेहोतुम्हाराउपलब्धात्मिकहै ति
ससेज्ञानद्वयकाअनुसन्धाननहो हमकोतोएकअध्यायोमेंदोहीहैं जो
दर्शनस्मरणकाकर्त्ताभिन्नहो तोमैंस्मरणकर्त्ताहूं देखाअन्यनेथा-
ऐसाहो सोऐसाकिसीकोनहींहै औरकादेखामैंस्मरणकर्त्ताहूं न
हीं२ऐसाज्ञानहै तहां२लोगभिन्नकर्त्ताकोदेखतेहैं इससेमुजेकु-
छभीगाड़ानहींहै जैसे मैंस्मरणकर्त्ताहूं वहपहिलेदेखताथा मैं
नेपूर्वदेखाथा यहदर्शनस्मरणोंकाएकही आत्माकोकर्ताबैनाशि
कभीजानताहैतैसेमैंनहींदेखाथाइसनिर्वृत्तआत्माकेपूर्वदर्शनको
नहींछिपासक्ताहै जैसे अग्निकीउष्णतावाप्रकाशकोनहींबाधस
काहै फिरएकहीकोदर्शनस्मरणकेसम्बन्धमेंक्षणिकत्वकुटपरावै-
नाशिककेकरसे तैसे वर्त्तमानदशासेलेमरणपर्यन्तअपनीएक-
कर्तृकाउत्तर२प्रतिपत्तिकोजानता फिरआजन्मसेवर्त्तमानद-
शालोंअतीतज्ञानकाकर्त्ताआपकोसन्धानताहै तोक्षणभङ्गकहि
तेक्युंनहींलजाताहैयदिकहोतुमकिसादृश्यसेउक्तज्ञानहोगाउस
सेकहोकियहसदृशनहींहै सादृश्यदोसेहै फिरक्षणभङ्गवादीदो
सदृशवस्तुकेएकग्राहककोअभावसेसादृश्यसेसन्धान कहिता झू-
ठाहै यदिआगेपीछेकेक्षणोंकीसादृश्यकाग्राहकएकहोतदाएक-
कोदोक्षणमेंरहनेसे क्षणत्वउड़गयासादृश्यज्ञानआगेपीछेकोदोव
स्तुकेज्ञानसे जन्यनहींहै तिससेदोकोसादृश्यकाग्राहकहोक्याहै
कछुविकल्पस्नाकारकोहीवास्वरूपसे प्रकाशताअन्यक्षणसे अस्प
र्शीइससेस्थिरद्रष्टा कोअपेक्षानहींहै यहमतकहो सादृश्यज्ञान-
मेंतीनभासतेहैं जैसे

तिसकेयहसदृशहै३ नहींभासतैतोस्वानुभवविरुद्धहैकिञ्च जोती-
नोपदोंकाअर्थभिन्ननहीं तोउनकाप्रयोगव्यर्थहै सादृश्यइतना-
हिकहिनावसहै अथवस्तुतोतीनभासतेहैं फिरज्ञानसेअभिन्नवा

ध्यनहींहैं यहकहींमतजोतोनोकाएकअभेदज्ञानहै तोपरस्परअभेदहो जोविज्ञानवादी इसकोइष्टमानोतोदोषहै यदातीनवस्तु-ज्ञेयसादृश्यज्ञानसे भिन्नलोकमेंप्रसिद्धहैं फिरस्थायीद्रष्टाकेदृढ़से-उनेनमानेगा तदातत्तदाकारक्षणविज्ञानमियोजड़ेएकधर्मिमें-विरुद्धअनेकज्ञानकेअसम्भवसेस्वपक्षसिद्धिपरपक्षदोषपरीक्षकवी अपनीबुद्धिमेंठहरिंगे इससे यथानुभवज्ञानज्ञेयभिन्नभानवाह्यार्थोंकोसादृश्यजाननाआत्मास्थिरमानो ॥

बाह्यार्थं क्षणिकस्वलक्षणनिर्विकल्पकग्राह्यहै फिरसविकल्पकाअध्यवसेयस्थायित्वसादृश्यादिबाह्यकल्पितभासतेहैं इससे विप्रतिपत्त्यादिव्यवहारहैं यहबाह्यार्थवादहै जोअर्थनिश्चितहै सोहीकहोउससेअन्यकहोतोअपनेकोबहुप्रलापीजतातेहो बिजलीदीतीमक्षणहै तोदृष्टांतकाअभावहै क्ष*णिकअनुमान स्थिर अनुमाताकेबिनासम्भवनहींहैसोहंऐसाकहताहैनतेनाहंसदृशइससेसोहंयहप्रत्यभिज्ञाभ्रमनहींहै कभीबाह्यजड़मेंसोहीयहहोवा उसकेसदृशहोयहांऊहवाधकीइच्छासेहै उपलब्धामेंकभीसन्देह भीनहींहैजैसेसोहूंवाउसकेसदृशहूंजोहीमैंपूर्वदिन मेंदेखताथा सोहीमैंइसदिनमेंस्मरणकर्त्ताहूंइस असन्दिग्ध अविपर्यस्तनिश्चित प्रत्यभिज्ञासेउपलब्धास्थिरहै तिससे अयुक्तवैनाशिकमतहै ॥

नासतोऽदृष्टत्वात् २६

अभावशशशृङ्गतुल्यअत्यन्तअसत्है फिरस्थिरअनुयायिकारणनहीं किन्तु अभावसेभावजन्मताहैनानुपमृद्यप्रादुर्भावादिति जैसे नष्टबीजसेअङ्कुरजन्मताहै तैसे नष्टदूधसेदधिवोनष्टमट्टीकेपिण्डसेघड़ाजन्मताहै यदिकूटस्थकारणसेकार्यकाजन्महो तोनिरतिशयकार्यमेंसक्तहोनेसेसबकार्यएकक्षणमेंहो उत्तरपक्ष

* यत्सत् तत्क्षणिकमित्यादि ॥

मेंकार्यकेअभावसेअसत्हो जोअतिशयकार्यकेक्रमकेअर्थसहका
रीचाहैतोअनवस्थाहो अनपेक्षामेंकार्यकोभीअतिशयकीअपेक्षा
नहीं तिससे सहकारीव्यर्थहै तिससे स्थिरवस्तुकार्यकाजनकन
हींहै सुनो (नास) यदिअभावसेभावहो तोसर्वअसवहो अभाव
कीसमतासेकारणविशेषकाग्रहणव्यर्थहो मर्दितबीजोंकाअभाव
वोतिससेअभावशशशृङ्गादिकेअभावमेंकछुविशेषनहींहै जिससे
बीजसेअङ्कुरदूधसेदहीयहविशेषकारणोंकाओकारणोंकायति
कोंकासार्थहो जोअभावसमानहै तोशशशृङ्गादिसेअङ्कुरादिहो
सोनहींदेखतेहैं तिससेअभावहेतुनहींहै यदिअभावकाकछुवि-
शेषहो जैसे उत्पलादिकेनीलादितहाविशेषसेअभावकोभाव-
त्वहो जैसे नीलसेउत्पलको जैसे शशशृङ्गवस्तुकेजन्मकाहेतुन-
हीं तैसे अभावभीकिसीकेजन्मकाहेतुनहींहै अभावसेभावके
जन्ममेंअभावान्वितहीसवकार्यहो सोनहींदेखतेहैं सववस्तुकी-
भावरूपसेप्राप्तिहै मृदन्वितघटादिकोतन्त्वादिकाविकारकोईन
हींकहिताहै मट्टीकोविकारमट्टीहीसेयुक्तजानतेहैं रूपविनावदले
कूटस्थसेकार्यनहोगातोअभावसेभावकाजन्महै यहनहींकहस-
केहोस्थिररूपसोनादिकुंडलादिकेकारणदेखनेसेफिरजिनबीजों
मेंरूपनाशदेखतेहैं तिनमेंभीनष्टपूर्वावस्थाउत्तरावस्थाकाकारण
नहींहै जैसे जन्मेअङ्कुरादिमेंगयेबीजादिकेअङ्गतेकारणहैं सार
असत्शशशृङ्गादिसेसत्काजन्मनदेखनेसेसत्सेनादिसे सत्काज-
न्मदेखनेसेअयुक्तहै अभावसेभावकाजन्म और चारसेचित्तचैत्त
काजन्मकहतेवाअणुसेभूतभौतिकसमुदायकहतेहैं फिरसमुदाय
होकाड़अभावसेभावकाजन्मकल्पतेहैं इससेसयलोगवैनाशिको
नेव्याकुलकियेहैं ॥

उदासीनानामपिचैवंसिद्धिः २७

यदिअभावसेभावहो तदाअनीहमानकोभीइष्टसिद्धिहोय-भावसुतभसे जैसे किसानखेतनकरे और अन्नहोवेकुलालमट्टी आदिनजोड़ेवेवासनहोवें कोरीतन्तुनतनैपरवस्त्रमिले स्वर्गसुखिनयाहैपरमिलजावें यहनयुक्तहै नकोईमानताहै तिससेअयुक्तहै अभावसेभावजन्महांवोजतन्तुस्पदादिशिथिलविपर्ययरूपहोतेहैं यहतोहमभीमानतेहैं ॥ ———

विज्ञानवादाधिकरण ५

नाभावउपलब्धेः २८

अखण्डनिर्विशेषब्रह्मविज्ञानरूपवाह्यार्थोपादान यहवेदांतहै भिन्नसाकारक्षणिकविज्ञानहै तिससेअन्यअर्थहै यहयोगाचारमतहै यहविज्ञानवादीकहताहै किकोई मन्दधीवाह्यवस्तुकोप्रियारकरताथा उसकेअर्थवाह्यार्थप्रक्रियाकहीहै सुगतकोतोविज्ञानस्कन्धहीइष्टहैइससेश्रेष्ठहैधर्मकीर्तिवाकहैकिदेशनालोकनाथानांसत्वाशयवशानुगाइति इससेविज्ञानहीकल्पितनीलपीतरूपसेप्रमेयहै फिरभासात्मासे मानफलफिरग्रहकात्मासेमानशक्तिकेआश्रयाकारसेप्रमाताहै वाह्यार्थहोनेपरभीबुद्धिमें विनाचढ़ेप्रमाणादिव्यवहारनहींउतरताहै कैसेजाना सबव्यवहारअंतस्थहै विज्ञानसेभिन्नवाह्यार्थनहींहै तिससेज्ञ यज्ञानविनाअरश्चतुल्यहै वाह्यार्थक्याअणुवाअणुपुंजस्तंभादिहोअणुस्तंभादिज्ञानकेपरिच्छेद्यनहींक्युंअणुाभासज्ञानकोअसिद्धिसे स्तंभादिअणुसेअन्यवाअनन्यकहनेकोदुर्बचहैं जोस्तंभअणुपुंजहैतो एकस्थूलस्तंभयहज्ञाननहोपुञ्जतोअसत्हैअवयवीनहींपरजातिगुणकर्मभीनहींजात्यादिधर्मिसे अभिन्नवा अत्यन्तभिन्नहैं तोधर्मिकेतुल्यवोधर्म्यन्तरकेतुल्यधर्मधर्मिभावनहींहै भेदाभेदविरुद्धहैं स्तम्भज्ञानकुड्यज्ञानयहप्रतिविषयपक्षपातअनुभवसेजायमानज्ञानकेविषे

षबिनानहींहैतिससेज्ञानरूपविषयमानो फिरविषयाकारज्ञा-
नहीसेहक्याहै तोवाह्यार्थमाननाव्यर्थहैकिसहोपलंभज्ञानोप-
लम्भचणमेंनियमसेविषयकाउपलम्भहै तिससेभीज्ञानज्ञेयका-
अभेदहै इनमेयहनहींकिएककेअनुपलंभमें दूसरेकाउपलम्भहै
चणिकज्ञानकाअर्थकेसाथसम्बन्धनहीं तो ग्राह्यग्राहक भी नहीं
तिससेअर्थनहीं जैसे स्वप्नमाया मरीचिदकगन्धर्वनगरादिको-
प्राप्तिवाह्यार्थविनाही ग्राह्यग्राहकरूपहै तैसे जागरितगोचर-
भीस्तम्भादिज्ञानहैं ज्ञानाविशेषसे कैसेवाह्यार्थकेबिनाज्ञानको
विचित्रताहै बासनाकीबैचित्र्यसे यहकहाथा सुगतनेअनादि
सन्तानांतर्गतपूर्वज्ञानबासनाहै जैसे बिनोरेरङ्गमे भिजाकेबोने
सेकपास रक्तहोतीहै अनादि संसारमेबीजांकुरकेतुल्यविज्ञान-
वावासनाकाबैचित्र्यपरस्परनिमित्त नैमित्तिकभावसेनिषिद्धन-
हींहै किञ्च अन्वयव्यतिरेकसेजानाकिज्ञानकीवैचित्र्यकानिमि
त्तवासनाहैं स्वप्नादिमेअर्थकेविनातुमहमबेवासनाहेतुसेज्ञान-
विचित्रमानतेहैं फिरविनावासनाकेअर्थहेतुकज्ञानबिचित्रमैंन
हींमानताहूं तिस्से वाह्यार्थकाअभावहैफिरक्षणिकविज्ञानवादी
कामतसुनिनित्य विज्ञानवादीने सूत्ररचाकि नाभाववाह्यार्थ-
काअभावनिश्चितनहींकरसक्तेहो किससे हरएकज्ञानसे वाह्या
र्थप्राप्तहै जैसेस्तम्भकुड्यजोप्राप्तहैउसकाअभावयोग्यनहींहै जैसे
कोईभुंजानभोजनसे तृप्तिमेकहेकि मैभोजनसें तृप्तनहीं तैसे इ
न्द्रियकेद्वाराप्राप्तवाह्यार्थकोकहे किमैनेनपायानसोहैतोउसका
बचनकैसे ग्राह्यहो मैयहनहींकहताकिमैनेकुछअर्थनपाया कि
न्तुज्ञानसे भिन्ननपायाकहोऐसाभीनिरङ्कुशहोनेसे तुम्हारेमुह-
कोपरयुक्तियुक्तनकहातुमनेउपलब्धिकाभेदभीउपलब्धिकेहीव-
लसे अर्थकामानोकोईउपलब्धिकोस्तम्भकुड्यनहींजानताहै ज्ञा
नकाअर्थस्तम्भादिसबजानतेहैं लोकतुम्हारेवचनसे भीवाह्या-

र्थज्ञानसे भिन्न जानते हैं यदन्तर्ज्ञेयं रूपं तद्बहिर्वद्वभासते दूतिवा-
हिरअर्थहै तोवहिर्वत्कहतेहो अन्यथाकिससे वाहिरयहकहोय
हकोईनहींकहता किमित्रवन्ध्यापुत्रवत्भासताहै तिससे जोअ
बाधितभेदका अनुभवहोता तो वहिरिवभासताहै यह युक्तथान
किंबहिर्वत् एवकारयुक्तहै नवत्कारयदिवाह्यार्थकेअसम्भवसे व
हिर्वत्भासताहै यहनिश्चितहै तोयहअच्छानिश्चयनहीं प्रमाणा
धीनसम्भवअर्थात्सत्तानिश्चयहै प्रमाणकेअभावाधीनअसम्भव-
अर्थात्असत्तानिश्चयहै फिरसम्भवपूर्विकाप्रमाणप्रवृत्तिवोअसम्भ
वपूर्विकाप्रमाणप्रवृत्तिहैजोप्रत्यक्षादिमेसे किसीसे जानाजाता
हैसोसम्भवहै जोकिसीसे नजानाजावेसोअसम्भवहैलोकमेसबप्र-
माणोंसेवाह्यार्थसिद्धहैबुद्धमतमेअस्थूलएकविज्ञानस्थूलअनेकस-
मूहालम्बनकाअर्थसे अभेदयुक्तनहींहै स्थूलअनेकहोनेसे समू-
हालम्बनकेनाशमेंविज्ञानमिथोवात्तांनभिन्नहोनेसे अर्थक्षित्वा
दिव्यवहारलोपहो ज्ञानअर्थकेसदृशहै तिससे अर्थनहींयहमत-
कहो क्युं अर्थनहींतोअर्थकेसदृशअसिद्धहै औरअर्थवाहिरहै ज्ञा
नार्थकासहोपलंभउपायोपेयहेतुकहै ननुअभेदहेतुकयहमानो-
जैसे रूपोद्रव्यआलोकसेप्राप्तहै परआलोकसे अभेदनहींहै तै-
से अर्थकाज्ञानसेअभेदनहींहै भेदमेंभीग्राह्यग्राहकनियमसेसि
द्धिहै किञ्च घटज्ञानपटज्ञानइनमें घटपटविशेषणोंकाभेदहै न
विशेष्यज्ञानका जैसे शुक्लगौकृष्णगौशुक्लकृष्णकाहीभेदहै नगो
त्वकाऔरदोसेएककाभेदसिद्धहै औरएकसेदोकातिससेअर्थज्ञा
नकाभेदहै यहीघटादिसेचैतन्यकाभेदहै तैसे घटदर्शनघटस्मर-
ण यहां भी विशेष्य दर्शन स्मरण का भेद है न विशेषण घट का
जैसे क्षीरगन्ध क्षीररस यहां विशेष्य गन्धरस का भेद है न विशे-
षणक्षीरकातैसे अर्थज्ञानकाभेदहै यहवृत्तिज्ञानसेघटादिकाभे

दहै किञ्चदोक्षणिकस्वप्रकाशक्षणिकज्ञानोंको मिथोग्राह्यग्राहक
त्वदृष्टनहीं है तोविज्ञानोंकेभेदकीप्रतिज्ञायुक्तनहीं धर्मिप्रतियो
गियोंकामिथोवाऔरसे अग्रहणमेंभेदग्रहकायोगनहीं फिरधर्मि
प्रतियोगिकेभेदकाग्राहकस्थिरआत्मादोनोंसे मानो ऐसेही पक्ष
साध्य हेतु दृष्टान्तइनकेभेदकेअभावसेक्षणिकअसत् है यहप्रति
ज्ञाभीनयुक्त है स्वलक्षण अर्थ सबसे भिन्न व्यक्ति मात्र सामान्य
अर्थअनेकमेंघुसासामान्यहैअतद्व्यावृत्तिरूपजोप्रयोगयुक्तनहींहैस
बअनेकार्थज्ञानमात्रहैंतोमिथ:वाअन्यसेउनकादुर्ज्ञानहैआगेका
नीलज्ञानवास्यहै पूर्वका नीलज्ञान वासकहै यह प्रयोगनयुक्त
हैवास्यवासकसेभिन्नज्ञाताकेनहोनेसेअविद्योपप्लव अविद्यासेस
म्बन्धितसत्सेनीलइसकानामसत्धर्महैनरशृङ्गयहअसत्धर्महैअमू
र्त्तयहसदसत्धर्महै सत्विज्ञानकोवाअसत्नरशृङ्गकोअमूर्त्तत्वा
दिप्रतिज्ञादुर्लभहैअनेकार्थज्ञानकेसाध्यसेअज्ञानसेबन्धउसकोहै
ज्ञानसेउसकामोक्षहैयहप्रयोगवहअर्थज्ञानसेसाध्यहैसामान्यसेइष्ट
ग्राह्यहैअनिष्टत्याज्यहैफिरशिष्यकोहितोपदेशअनेकज्ञानसाधक
हाहैतिससेप्रतिज्ञातअर्थकीसिद्धिकेलियेग्राह्य ग्राहक भेद मानो
किञ्चयहतोकहोकिविज्ञान२इसअनुभवसेविज्ञानमानातोस्तम्भ
कुड्यइसअनुभवसेवाह्यार्थक्युंनहींमानतेहोजोविज्ञानकाअनुभव
हैतोवाह्यार्थकाभीअनुभवयुक्तहै अथयदिविज्ञानस्वसम्वेदनसेदी
पवत्स्वयंहीअनुभूतहै तैसे वाह्यार्थनहींहै यहकहोतोहेसुगतसु
ततुमनेअप्रसिद्धअत्यन्तविरुद्धस्वात्मामें क्रिया मानी जैसे अग्नि
अपनेकोदहतो है इसकेतुल्यलोकमेंविज्ञानसे भिन्नवाह्यार्थका
अनुभवप्रसिद्धछोड़के अपनेमेंप्रौढ्यादिदिखाईहै यहमतकहो-
अर्थसेभिन्नविज्ञानकाअनुभवनहींएकहीकर्मवोकर्त्ताके विरोध से
यहभीमतकहोकिविज्ञानअर्थऔरअर्थीआपही है अभेदमेंअर्था-

र्थिकासम्भवनहोनेसे जोविज्ञानअपनेस्वरूपसेग्राह्यनहींतोअन-
वस्था है किन्तुदीपकेतुल्यभासकत।सेजोज्ञान का ज्ञानांतरभा
सककल्पोतासमतासेभास्यभासकभावयुक्तनहींफिरकल्पनाव्य-
र्थहै अनवस्थावोसमताझूठहै अनित्यज्ञानजड़है जन्मादिमा-
नतासेघटकेतुल्ययहज्ञानआपसेअपने जन्मादिकाग्राहकअयो-
गसेनहीं इससेग्राहककोचाहनाहै वुहसाक्षिहै फिरसाक्षिको
होनासत्तावोज्ञानस्फूर्त्तिमेंनिरपेक्षहोनेसेअनवस्थानहीं फिरस
मताभीनहींचित्वोजड़कोविषमता से कहो कहां साक्षी स्वयं-
सिद्धहै निरपेक्षसाक्षिकेनहोने सेक्षणिकविज्ञानकेभेदकोअसि-
द्धिसेसोमानो किन्तु जैसे दीपदीपांतरकीअपेक्षानहींकर्त्ता तै-
से विज्ञानविज्ञानांतरकी अपेक्षा नहींकर्त्तायहवक्ताविज्ञानको
अप्रमाणगम्यकहता है स्वयंप्रकाशयहवक्ताज्ञातृशून्यकहताहै-
तैसे ज्ञाताज्ञानअविषयसेपहाड़मेंसोदियोंकीज्योतिकेतुल्यअ-
सत्होविज्ञानहो तिससे साक्षीमानो फिर शाक्य ने कहा कवि
ज्ञानकाविज्ञानसेअन्यज्ञातानहींहै यह सुनि शाक्य का पियारा
वेटाथा वहोतूवेदांतिमें अपनीगोदलेलिया फिरवेदांतीनेकहा
किसोनहींकहताहूं किन्तु अन्यअवगन्ताकेनेनकासाधनदीपा
दिदेखनेसेविज्ञानविज्ञानसेभिन्नवेद्यहै वेद्यहोनेसेदेहवत् इस्से
विज्ञानभास्यहै तोअन्यअवगन्तामेंउसकाप्रथनदीपकेतुल्यमान
ताहूं शाक्यशङ्काअवगन्तासाक्षीकोस्वयंसिद्धतातुमनेउठादी वि
ज्ञानस्वयंप्रकाश यहमेरापक्षतुमनेयुक्त्यान्तरसेलेलिया औरभिन्न
साक्षीपरवेद्यवास्ववेद्यहै पूर्वमेंअनवस्थादूसरेमेंविज्ञानवादहो
भयन्तरसेकहायहमतकहो तुमनेविज्ञान जन्मनाशवाला कहा
ज्ञानज्ञानसेभिन्नवेद्यहै दीपवत् इससे मैनेकार्यकोजड़त्वकेनि-
यमसे विज्ञानसे भिन्नवेद्यत्वकहाकूटस्थको ग्राहककीअनपेक्षा-

से अनवस्थानहींयहीहमारातुमाराबड़ाभेदहै ॥

वैधर्म्याच्चनस्वप्नादिवत् २९

जैसे स्वप्नकेज्ञानअर्थशून्यहैं तैसे जागरितस्तम्भादिकेज्ञान-वाह्यअर्थशून्यहो ज्ञानकीसाम्यसेजोऐसाकहताहै उसेकहोकि स्वप्नज्ञानकेतुल्यजागरितज्ञानहोनेकेयोग्यनहींहै किससे वैध-र्म्यात् स्वप्नके अर्थवाधितजागरितके अर्थअवाधितइसवैधर्म्यसे जैसे स्वप्नमेंहाथीपरचढ़ाजागेमेंकहिताकि झूठाहीहाथीपरचढ़ाथा नहींथी मुझकोहाथीकीचढ़ाईकरणकेदोषोंमेहुआ मनग्लानउसीसेभ्रांतिचढ़ाईकाहुईथी करोमायादिवादोंमेंभीऐसीवाधकल्पनाजगतकेस्तम्भादिकिसीदशामेंवाधितनहींहैंकिचस्वप्नादेखनादेखेसुनेआदिअर्थोंकीस्मृतिहै वोजगतमेंस्तम्भादिकादेखना-ज्ञानहै स्मृतिज्ञानकाभेदप्रत्यक्षहै जोअर्थअसम्बद्धवोअवर्तमान-हो सोस्मृतिकाविषयहो इससेस्मृतिकभीरनिरालम्बनभीहो संप्रयुक्त वर्तमानअर्थकाग्राहीज्ञान है यहकभीनिरालम्बननहीं है अवतोतुमकोजाग्रत्स्वप्नकाभेदअनुभूतहुआतोनहींकहिसक्तेकि जाग्रत्केस्तम्भादिज्ञानज्ञानकीसाम्यसेस्वप्नज्ञानकेतुल्यहैं बुद्धि-मान्कोअपनाअनुभवछोड़नायुक्तनहींहै यदिस्तंभादिकाअनुभवनिरालम्बहो तदाहृष्टांतकेहठसेक्याहै प्रत्यक्षहोसेकहसक्तेहो आगकीउष्णताहृष्टांतहीसेनहींकहीजातीहै यदिजोजिसकास्वतःधर्मनहींहै तदाक्याहृष्टांतोंसेहै वाधितसहस्रहृष्टांतोंसेसाध्य-नहोगा जैसे अग्निउष्णअनुभूयमानहै फिरक्यापानीकेसाधर्म्यसेशीतहोगी तिससेनिरालम्बनअनुमानमेंअप्रमाणजन्यउपाधि,है मध्यमवाकजीवैधर्म्यसेबुद्धकानिरासहै तोउसीसेवेदांतीभीनिरस्तहै मायादिवादी ॥

नभावोनुपलब्धेः ३०

उत्पत्तिः सत्तावा ॥

बिनाअर्थकेज्ञानविचित्रहै वासनाकीवैचित्र्यसेयहमतक-
हो वासनाकाजन्मसम्भवनहीं तुम्हारेपक्षमें वाह्यार्थकीअप्रा
प्तिसेअर्थप्राप्तिहेतुप्रत्ययर्थनानावासनाहैं अप्राप्तअर्थमेंकिसहेतुसे
विचित्रवासनाहो अनादिसंसारमेवाह्यार्थके विनापूर्व२वास-
नाकेवलसेउत्तर२विज्ञानवैचित्र्यहै वीजांकुरके तुल्य यह नहीं
क्युं अनादिअन्धपरम्परासेअप्रतिष्ठाअनवस्थाव्यवहारलोपिनी-
हो फिरअदृष्टमेकार्यकारणकीकल्पनायुक्तहैयहांलोअर्थकेविना
वासनाकेजन्मकोआदिमेकल्पनेसेअनादिकल्पनानिर्मूलहै दू-
ससेदृष्टविज्ञानवैचित्र्यकीसिद्धिनहींहै किन्तु वासनाहेतुकज्ञान
है नअर्थहेतुकदूसअन्वयव्यतिरेकसे विनाअर्थज्ञानकेवासनान
हींहै किन्तु विनावासनाकेअर्थप्राप्तहै विनाअर्थकेवासनाकाज
न्मनहींअर्थकाहेनाहीअन्वयव्यतिरेककोस्थापनकर्त्ताहैकिन्तुवा
सनासंस्कारविशेषहै संस्कारआश्रयकेविनानहींकल्पनाहैं जैसे
लोकमेवेगादि तुमकोप्रमाणसेवासनाकाआश्रयनहींहै क्युंआ
श्रयकीअनुपलब्धसेविज्ञानसंस्कारोंकाजन्मनहींहै ॥

क्षणिकत्वाच्च ३१

जोआलयविज्ञानवासनाकाआश्रयकल्पाथा अर्थात्सदाव
स्तुकाज्ञान जैसेघट२है सोभीसङ्गजन्मेदाहिनेवायेंशींगकेतुल्यहै
दूससेउसमेआश्रयाश्रयीकाअयोगहै याआगेपीछेमेंआधेयकेक्षण
असत्क्षणकेआधारकाअयोगहै जोयोगहै तोक्षणिककानाशहै
दूससेक्षणिकअस्थिरआलयविज्ञानप्रवृत्तिविज्ञानअर्थात्नीलादि
केतुल्यवासनाकाआधारनहींहै क्षणिकमानेसेयहदिसविकारवा

कूटस्थस्थिरआत्मा नहीं तदा सन्तान वस्तु न होने से देशकालादि की अपेक्षा से जो वासनों का निक्षेप वा स्मृति वा प्रत्यभिज्ञा प्रतिसन्धाना दि सब व्यवहार सम्भव नहीं है यदि स्थिर आत्मा माना तो आलय विज्ञान गया बाह्यार्थवाद वो विज्ञानवाद खण्डन किया शून्यवाद खण्डन के अर्थ पृथक् सूत्र नहीं किया उक्त सूत्रों से होता है रीति ज्ञान-वा अर्थ का अभाव नहीं प्रमाणों से उपलब्ध है जाग्रत् स्वप्नज्ञान वो अर्थ से शून्य है अवस्था होने से सुषुप्ति के तुल्य इससे पढ़ा कि वैधर्म्यात्स्वप्नआदि जिसके वह स्वप्नादि है अर्थात् सुषुप्ति फिर सुषुप्ति के तुल्य जाग्रत् स्वप्न अर्थशून्य नहीं है जाग्रत् में अर्थप्राप्ति वैधर्म्य है स्वप्न में अप्राप्ति वैधर्म्य है फिर सुषुप्ति में भी आत्मज्ञान है तिससे सुषुप्ति अर्थशून्य न है तो शून्य साधक अनुमान भी नहीं है किन्तु निर्मूल निषेध अयोग्य है तिससे कुछ मूल कहो तुह्मारे मत में सत् नहीं क्युं मानसे नुपलब्ध है इससे सूत्र पढ़ा (न भाव) यो भासता है सो असत् नहीं इस उत्सर्ग से प्रपञ्च शून्य नहीं है बाध के अभाव से यह आशय भी नहीं कि सत् वा असत् विचार के योग्य नहीं है तो असत् है मिथ्यात्व के सम्भव से (क्षणिकाः) अर्थशून्य के विरुद्ध क्षणिक शिष्यों को उपदेश करता सुगत प्रलापी है शून्यता स्वभावा हि स्वभूते पञ्चस्कन्धाः कथं हि शून्यता स्वभावादूर्ध्वा हि स्वभूते वोधिसत्वेन महासत्वेन प्रज्ञापारमितायां चरता रूपं शून्य मिति प्रत्यवेक्षितं एवं विज्ञान वेदना संज्ञा-संस्काराः शून्य मिति प्रत्यवेक्षितव्य मित्यादि सौगताम्नाययोस्तीति

सर्वथानुपपत्तेश्च ३२

अब कहां लोक हुं जैसा रवैनाशिक मत सिद्धि के लिये परीक्षा जाता है तैसा रवारु के कूआ लो गिरा जाता है इस तन्त्र का व्यहार अयुक्त है कि सब बाह्यार्थवाद विज्ञानवाद शून्यवाद स्वलक्षणवादा-

दिमिथ्थे। विरुद्ध उपदिष्टता सुगत अपने को असम्बद्धप्रलापी दिखाता है प्रजा में सुगत का द्वेष था इससे उनके मोहार्थ विरुद्ध मार्ग दिखाये यह संस्कार का कहिना वैदिक विरुद्ध मार्गों को उठाता है प्रपञ्चापलाप में सुगत वेदान्ति दोनों समान हैं चणिकविज्ञान सुगतमत है नित्यविज्ञान वेदान्तीमत है यह विशेष है मुक्तकच्छों का मत खण्डन किया तिससे मुक्ताम्बरों का बुद्धि में उत्तर आया इससे कहा कि ॥

—— * ——

अर्हताधिकरण ॥ ६ ॥

नैकस्मिन्नसंभवात् ३३

जीव १ अजीव अर्थात् भोक्ता भोग्य संक्षेप से दो पदार्थ हैं २ विषयों में इन्द्रियों की प्रवृत्ति आस्रव है ३ प्रवृत्ति का निवारक सम्बर यम नियमादि हैं ४ पापों का नाशक निर्जर तप है बन्ध कर्म है मोक्ष कर्मफांसी के नाश से अलोकाकाश में प्रविशिष्ट का नित्य २ ऊपर को जाना है जैसे जल पर तुम्बी का उतराना है संक्षेप से दो जीव वो अजीव हैं औरों को यथायोग उक्त दो में घुसा दिया है फिर इन दो का यह प्रपञ्च है कि पंचास्तिकाय नाम जीवास्तिकाय १ अस्तिकाय शब्द पदार्थवाची जिनसंकेत से है जीव ही अस्तिकाय है यह समास है १ पुद्गलास्तिकाय पूर्ण गलित होने से परमाणुसंघ काय है २ धर्मास्तिकाय ३ सम्यक् प्रवृत्ति से अनुमेय धर्म है ३ अधर्मास्तिकाय ४ ऊपर को जाने वाले जीव का जो देह में स्थिति का हेतु है सो अधर्म है ४ आकाशास्तिकाय ५ आवरणाभाव आकाश है अर्थात् जिसमें चले उड़े अद्धा अर्थात् काल जे छः द्रव्य हैं उनके तत्वों में इनके भेद बहुत हैं जीवास्तिकाय तीन तरह पर है कोई जीव नित्यसिद्ध है जैसे अर्हन् मुख्य १ कुछ अब मुक्त वो कुछ बद्ध हैं पुद्गलास्तिकाय छः हैं पृथिवी जल तेज वायु जे

चारभूत स्थावरजङ्गमजीदो प्रवृत्तिलिङ्गधर्म स्थितिलिङ्गअधर्मजो
दोकहिचुकेआकाशास्तिकाय दोतरहपरहै लोकाकाश संसारी
कहाहै अलोकाकाशमुक्तोंकाघरहै बन्धनामकर्मआठहैं चार-
घातीचारअघातीहैं तत्वज्ञानसेमुक्तिनहींयहज्ञानज्ञानावरणी
यकर्महै१ आर्हततत्वकेश्रवणसेमुक्तिनहींयहदर्शनावरणीयकर्म
है बहुततीर्थंकरोंसेदिखायेमुक्तिकेपन्थोमेंनिश्चयनहीं किससेमु
क्तिहोयहमोहनीयकर्महै३ मुक्तिकेपन्थमेप्रवृत्तिकाविघ्नकरनेवा
लाआंतर्यकर्महै जोअर्हत्केनाशतेहैं तिससेघातिकर्महैं मुझको
तत्वजाननयोग्यहै यहअभिमानवेदनीयकर्महै यहनाममैंहूं य
हअभिमाननामिककर्महै मैंभगवान्अर्हन्दंशिककेशिष्यवंशमेघु
साहूं यहअभिमानगोत्रिककर्महै देहकीस्थितिकेअर्थजोकर्महै
सोआयुष्कहै अथवाशुक्ररक्तमिलाआयुष्कहै इसकातत्वज्ञानके
अनुकूलदेहकेपरिणामशक्तिगोत्रिकउसीशक्तकाद्रवअवस्थाकलि
लावस्थाबुद्बुदावस्थाआरम्भकक्रियाकाविशेषनामिकहैसक्रियवीज
कापेरकोआगवोवायुसेथोराकढाहोनावेदनीयहैजोतत्वकेवेदन
कीअनुकूलतासेतत्ववेदकशुक्रपुद्गलार्थतासेअघातीहैं जोआठ-
कर्मजन्मादिकेअर्थहैं इससेवन्धहैआस्रवआदिकेद्वारायहआर्हती
प्रक्रियाहै सववस्तुमेंसप्तभङ्गीन्यायकोलगातेहैं सातभङ्गोकाएक
वस्तुमेंइकट्ठाहोनासप्तभङ्गीहै जैसे घटादिकासवआत्मासेसत्ए-
करूपमेप्राप्यात्मासेमोघटादिहै इससेघटकोप्राप्तिकेअर्थयत्नहो
इससेघटत्वादिरूपसेकथञ्चित्है प्राप्तत्वादिरूपसेकथञ्चित्नहींहै
इनदोअस्तित्वनास्तित्वविरुद्धधर्मोंसेवस्तुमात्र अनेकरूप माना है
स्यादस्ति यहप्रथमभङ्गहै स्यात्यहअव्ययहै अस्धातुकेसमानरू
पहै इसका अर्थकथञ्चित्है फिरतोस्यादस्तिइसका अर्थकथञ्चिद-
स्तियहहै ऐसेओरोंमेजानोजववस्तुहै यहकहिनेकीइच्छाहै तव

स्यादस्तिय हप्रथमभङ्गकहाजाताहै जबवस्तुनहींहै यहकहनेकी
इच्छाहै तबस्यान्नास्ति इसदूसरेभङ्गसेकहाजाताहै फिरक्रमसे
जहांवस्तुकाहोनाजानाकहनेकीइच्छाहै तहांस्यादस्तिचनास्ति
च इसतीसरेभङ्गसेकहाजाताहै फिरएकहीवारजहांवस्तुकाहो-
नाजानाकहनेकीइच्छाहै तहांअस्तिनास्तिजेदोशब्दएकवारक-
हिनेकोअशक्यहोनेसे स्यादवक्तव्य इसचौथेभङ्गसे कहा जाता है
फिरजहांपहिलावौचौथाभङ्गकहनेकी इच्छा हो तहांस्यादस्ति-
चावक्तव्यश्च इसपञ्चमभंगसेकहाजाताहै दूसरेवौचौथेभंगसेज-
हांकहनेकीइच्छाहै तहांस्यान्नास्तिचावक्तव्यश्च इसछठेभंगसेक
हाजाताहै फिरजहांतीसरेचौथेभंगसेकहनेकीइच्छाहै तहांस्या
दस्तिनास्तिचावक्तव्यश्चइससातमेभंगसेकहाजाताहैयहविभागहै
एकवोअनेकइनदोधर्मोंकोले स्यादेक स्यादनेक स्यादेकवोअने
क स्यादवक्तव्य स्यादेकअवक्तव्य स्यादनेकअवक्तव्यस्यादेकअने-
कअवक्तव्य७ तैसे स्यान्नित्य स्यादनित्यस्यात्सत् स्यादसत् ऐसेओ
रकल्पोऐसे अनेकांतवस्तुमेंप्राप्तित्यागादिव्यवहारोंकासम्भवहै ए
कांतवस्तुमेमतसबठौरसबकालमेंहैं तोउक्तव्यवहार का बाध हो
तिससेसबअनेकांतहैं तोएकरूपब्रह्मवादकाबाधहै यहमतकहो
जोहैसोसर्वत्रसर्वदाहै जैसे ब्रह्मात्मा यदिकहोकिसोहै तोउसी
कोप्राप्तिकेअर्थयत्ननकरोसोभीनहींअप्राप्तिकीभ्रांतिसेयत्न का स-
म्भवहैफिरजोनहींसोनहींहैजैसेशशशृङ्गादिप्रपञ्चतोहैवोनअवस्तु
विलक्षणहै इससेएकांतवादयुक्तहै फिरअनेकांतवादमेंक्या जि-
सरूपसेवस्तुकासत्वहै तिसीरूपसेअसत्वहै उतरूपांतरसे जोदू-
सरेमेरूपांतरवस्तुका असत्हैतोवस्तुसत्एकरूपहीहैयहनहींकिदू
रपरग्रामहै ताउसकीप्राप्तिनहींहैतिससेसोअसत्है प्राप्यकेनहो
नेसेप्राप्तिकायत्नअयुक्तहै इससेप्रपञ्चएकरूपमानो अनेकांत सि-

ङांतछाड़ो क्युं नैकस्मिन् एकधर्मिमेएकबारबिरुद्धसत्असदादि
धर्मोंकाप्रवेशसम्भवनहींहै जैसे शीततप्तकाविमतमनेकात्मकंव
स्तुत्वान्नारसिंहवत् इदानींघटोस्तीत्यनुभवबाधात् जीवादिसा
तका संख्यावोजीवादिरूपनियतवोअनियतहैं जोकहोकिनियत
अनियतहैं तोयहानिश्चितरूपज्ञानसंशयज्ञानकेतुल्यप्रमाणनहो
अनेकांतनिरङ्कुशसर्वत्रहै तोअनेकांतनिश्चयप्रमाणमेघुसकेउस
कोभीअनेकांतकरेगा क्युं निश्चयभीवस्तुहीहोनेसे ऐसेहीनिश्च
ताकोवोनिश्चयप्रमाणादिफलकोपक्षमेस्यादस्तिवा पक्षमे स्यान्ना
स्तिइसकहनेसेकैसेप्रामाणिकतीर्थंकरप्रमाणप्रमेयप्रमितिप्रमात
काउपदेशकरनेकोशक्तहोवानिष्कंपप्रवृत्तिहो उतकैसेशिष्यजन
अनिश्चितअनेकांतीकेकहेअर्थमेघुसेंगेसवजनऐकांतिकप्रामाणि
कवस्तुकेअनुष्ठानसेअनाकुलघुसतेहैंनअनैकांतिकमे इसीसेजिस
शास्त्रकाअर्थअनिश्चितहै उस केरचनेसेरचककावचन मत्तोन्म
त्तवचनकेतुल्यपकड़नेयोगनहो तैसे अस्तिकायादिकोपक्षीपांच
संख्याहै यानहींइसविकल्पमेंअस्तिपक्षमेंहै नास्तिपक्षसेन्यून
वाअधिकहो फिरउक्तपदार्थोंकोअवक्तव्यताकासम्भवनहीं जोअ
वक्तव्यहोतोकहो क्युंहोकहितेहोवोअवक्तव्यकहितेहो यहबिरुद्ध
है जेजैसे कहेहैं तैसे निश्चितहैंयानहीं तैसे पदार्थोंकाप्रमाण
सम्यग्दर्शनहै यानहींऐसेहासम्यग्दर्शनसेभिन्नअसम्यग् दर्शनहै
यानहींऐसाकहिताअर्हन्झूठेपक्षमेंघुसाहै सच्चपक्षमेनहींघुसा
है स्वर्गमुक्तिभीपक्षमेंहोपक्षमेनहो तैसे पक्षमेनित्यतापक्षमेअनि
त्यताअनिश्चयमेप्रवृत्तिनहीं फिरअनादिसिद्धअर्हन्मुनिअसङ्गअनु
ष्ठानसेमुक्तहै अननुष्ठानसेअन्यवद्धहैं आर्हततन्त्रसेनिश्चिततीन
तरहकेस्वभाववालेजीवोंकानियमभीनहो ऐसेहीजीवादिएकध
र्मीमेंसत्असत्दोविरुद्धधर्मोंकेअसम्भवसेसत्एकधर्महै तोउसमेंअ

सत्धर्मकासम्भवनहीं असत्एकधर्ममें सत् का असम्भव है तिससे आर्हतमतअसङ्गतहै एकअनेकनित्यअनित्यव्यतिरिक्तअव्यतिरिक्तादिसिद्धान्तखण्डितहैं सत्असत्काएकमेंखण्डनसेजोदिगम्बरकल्पतेहैं कि पुद्गलनामअणुसेपृथिव्यादिसंघातकासंभवहै सो अणुवादखण्डनसेखण्डितहै इससेपृथक्सूत्रनरचा ॥

सातभांतिकेपृच्छकहैं इससेसातभागहैं पहिलेचार सद्वादी१ असद्वादी२सदसद्वादी३ अनिर्वचनीयवादी४ औरतीनअविर्वचनीयमतकेसहितहैंजैसेसदनिर्वचनीयवादी५ असदनिर्वचनीयवादी६ सदसदनिर्वचनीयवादी७ फिरइनपृच्छकोंकोक्रमसे वक्ता सातउत्तरदेताहै जैसे सद्वादीनेजैनसेपूछाकितुमारेमतमेंमुक्तिहै उसनेपृच्छककोउत्तरदियाकिकथंचित्है औरअसद्वादीआवकसेकहाकिकथञ्चित्नहींहै ऐसेहीअणुसेमहत्पर्यन्तसबवस्तुस्वद्रव्यक्षेत्रकालभावादिसेहै औरपरद्रव्यादिसेनहींहै जैसेदेवादिस्वद्रव्यादिसेहैं औरपशुनरद्रव्यादिसेनहींहै ॥

एवंचात्माकात्स्न्र्यं ३४

आर्हतदेहमितजीव मानते हैं उनके मत मे अकार्त्स्न्य दोष हैजोदेहबराबरआत्माकापरिमाणहोतो अकृत्स्नअसर्वगतपरिछिन्नआत्माहोनेसेघटादिकेतुल्यअनित्यहो फिरदेहोंकापरिमाणध्रुवनहीं कभीनरजीवनरदेहकेबराबरहोके फिरकिसीकर्मके फलसेहाथीकादेहपायातोहाथीदेहका एकदेश सजीवदूसरानिर्जीवहो फिरमाखीकीदेहपायीतोकछुजीवउसकीदेहसेबोकुछबाहिरलंगूरकीसीपूंछकढिताफिरेगा फिरबालदेहकाजीवयुवबृद्धदेहमे कहींहोगासबदेहसजीवनहोगीयहमतकहो जैसेदीपकेअवयवोंकाघड़ेमेंसंकोचघरमेंविकाशहै तैसेजीवोंके अनन्तअवय

वोंकाअल्पदेहमेंसंकोचबड़ीमेंविकाशहै फिर जीवोंकेअनन्तअव
यवसमानदेशकेप्रतिघातहैं वानहींसोकहो प्रतिघातमें अनन्त
अवयवपरिच्छिन्नदेशमेंनघुसेंगे फिरअप्रतिघातमेंएकावयवदेशसि
द्धहै सबअवयवमोटेनहींतोजीवभीअणुहो किन्तु देहमात्रसेंघिरे
जीवावयवोंकोआनन्त्यनहीं कल्पसक्तेहोक्युं अवयवनित्यनहींअ
ल्पहोनेसेदीपांशकेतुल्यजीवावयव नित्य हैं यहमत देहमानसे
खण्डनकिया अबजीवकेकुछकूटस्थवोकुछआगमापायीहैं ॥

नचपर्यायादप्यविरोधोविकारादिभ्यः ३५

वृहत्वोतनुकायकी प्राप्तिमें जीवके अवयवआगमापायिसे
मानेहैं विकारआदि दोषों से जीव के अवयव बड़ी देह में बढ़ते
वोछोटीमेंघटतेहैं यहअविरोधनहींकहिसक्तेहो सदाअवयवोंके
आनेसेपूर्णवोजानेसेहीनजीवहो तो विकारीअवश्यहै फिरविका
रीचर्मकेतुल्य अनित्यहोतिससे बन्धमोक्षका सिद्धान्तभी वाधहो
जैसेकर्माष्टकसेलिपटाजीवसंसारसागरमें डूबाबन्धनके नाशसे
तुंबाकेतुल्यऊर्ध्वगामीमुक्तहै किन्तुजीवकेकुछअवयवआयेवोकुछ
गयेतोआगमवोअपगमधर्मोंसेदेहकेतुल्यअनात्मा।अवयवहैं फि
रकौनसेकूटस्थवोकौनसे आने जानेवालेहैं इसकाज्ञानदुर्घटहै
तोआत्मज्ञानकेअभावसेमुक्तिनहींहै फिरस्थिरअवयवआत्मान-
हीपृथक्करसक्तेहो जैसेदीपकेअवयवोंकाआकारतेजहै तैसेआ
त्माकेअवयवोंकेआकारकेहेतुकेअभावसे आनाजानायुक्तनहींहै
किन्तुकहोजीवावयवकहांसे आते हैं कहांकोजातेहैं फिरकहां
घुसिजातेहैं नभूतोंसेआतेनभूतोंमेंघुसतेहैं जीवअभौतिकहोने-
सेसबजीवकासाधारणवाप्रतिजीवकाअसाधारणजीवोंकेअवयव
काआधारनहींबतासक्तेहोप्रमाणकेअभावसेअवयवोंकेआनेजा

सेअवयवोंकापरिमाणनियतनहींहै तिससे आत्माभीनिश्चितस्व रूपनहींहै अवयवोंसेजुड़ाअवयवी जीवअनित्यहो अवयवसमूह आत्माअसत्हो जोआत्मासबअवयवोंमेघुसाहै तो कुछअवयवके अपायमेंभीप्रदेहअचेतन हो जो गोत्व के तुल्य प्रत्येक अवयव मे आत्मासमाप्तहै तोएकहीदेहमेंनानाआत्माहोइससेआत्मानदेह केबराबरवोनसावयवहै अथवादेहमान आत्माकोघटनेवढ़नेसे देहांतरकेज्ञानमें असर्वगतसे अनित्यकहाफिरपर्यायद्वारा परि माणकेअनिश्चयमें स्रोत:सन्ताननित्यता न्यायसेआत्मानित्यहो जैसेरक्तपटोंकाविज्ञानअनवस्थितहै तोभी विज्ञानसन्ताननित्य है तैसेविसिर्चोंकोपर्यायअर्थात्सन्तानसे आत्मनित्यताकाअवि रोधहै (नच) किससेविकारादिसेजोअवस्तुसन्तानकोआत्माकहो तोशून्यनैरात्म्यवादहोगा जोसन्तानको वस्तुकहोवासन्तानीको भिन्नकहोतोकूटस्थात्मवादहोगा जो सन्तानीअभिन्नकहो तोज न्मादिविकारनाशमुक्तिहानिइनदोषोंसेसन्तानपक्षअशुभहै यह सूत्रार्थहै ॥

अंत्यावस्थितेश्चोभयनित्यत्वादविशेषः ३६

जैसीछोटीवड़ीदेहकोजीवपकड़ताहैउसीदेहकेबराबरहोताहै इसनियमकाखण्डनसुनोजैसेअन्त्यअर्थात्मोक्षावस्थाकेजीवका परिमाणजैनकोनित्यहीइष्टहै तैसे जीवकेआद्यमध्यपरिमाणनि त्यहैं परिमाणकेनाशमेंआत्माकाभीनाशहोनेसे अन्त्यपरिमाण भीनित्यनहोगा परिमाणतीनकोसमताकाफलएकदेहकी परि णामताहोनआनेजानेसेदेहांतरकीप्राप्तिअन्त्यदेह के समान पूर्व देहहो विषमदेहकीप्राप्तिमें आत्मादेहसमानहै तोतीनपरिमा णोंकासमानअनुमानसे विरोधहो अथवाजीवकाअन्त्यपरिमाण

ध्रुवहै तोपूर्वकेआदिमध्यभीध्रुवहैं फिर ध्रुवपरिमाणजीवहोफिर साम्यसेतीनोकालमेंअणुवोमहत्जीवमानोनदेहबराबर तिससे भ्रांतप्रमोदार्थआर्हतमतहै मध्यस्थवाक्यअनेकांतक्षांतसर्वज्ञजि-नकोइष्टहै तोजननीभगिनीस्नुषादिमेंकभीदारादिकावर्तावहो कभीजनन्यादिकहो मायादिअनिर्वक्तव्यतोअवैदिकपाशुपता-दिमतोंमेंभीहैं इससेकहीं२दोनोंसमानहैं ॥

———*———

(तटस्थेश्वराधिकरण ७ ॥)

पत्युरसामंजस्यात् ३७

लुंचितकेशोंकामतखण्डजटिलमतखण्डताहै केवलईश-कारणअधिष्ठाताहै इसकाखण्डनहै नसामान्यसे ईश्वरकाकैसे जाना प्रकृतिवोअधिष्ठाताइनदोस्वभाववालाईश व्यासनेमाना है तिससेकेवलनिमित्तेश्वरकानिषेधहै फिरजोयहांईश्वरकार णवादमात्रहीकानिषेधकरोतोआगेपीछेकेविरोधसेभूठाहोसूत्र कार अद्वैतब्रह्मजगकोप्रकृतिकहाथा यहसुनिशैवादिबोलउठे किकर्ताहीईश्वरहैनप्रकृतिनिमित्तकारणअधिष्ठाता केवलइस पक्षकाखण्डनहै यहकल्पनावेदवाह्यअनेकविधहै सेश्वरसांख्य माहेश्वरचारहैं शैव१ पाशुपत२ कारुणिकसिद्धांती३ कापिल४ उ क्तसबमहेश्वरकेकहेआगमपथमेंचलतेहैं तिससेमाहेश्वरहैं प्र-धानपुरुषोंकाअधिष्ठाताकेवलनिमित्तकारणईश्वरहै फिरप्रधा नवोपुरुषवोईश्वरजेतीनमिथोविलक्षणहैं यहसांख्यवोयोगीमा नतेहैं माहेश्वरमतमेंकार्य१ कारण२ योग३ विधि४ दुःखान्त५ जेपांचपदार्थपशुपतिईश्वरनेपशुकीफांसीछुटानेकेअर्थकहेहैं प

शुपतिईश्वरनिमित्तकारणहै यहसिखातेहैं चेलोंको कार्य मह
दादि कारण प्रधान ईश्वर योगसमाधि विधितीनकालमेंन-
हाना दुखान्तमोक्ष पशु जीव पाश बन्ध बन्धकानाशमुक्ति पा-
शुपतके आगमकोप्रमाणसेपशुपतिनिमित्तकहा अब आनुमानि
केश्वरमतसुनो विमतप्रपञ्चसकर्तृकहैकार्यसेघटकेतुल्यइससेवै
शेषिकादिअपनी२बुद्धिकेअनुकूल ईश्वरकोकर्त्तानिमित्तकारण
साधतेहैं जैसे कर्मफलसपरिकराभिज्ञदातासेहै कालांतरभा-
विफलसेसेवाकेफलतुल्ययह गौतमदिगम्बरसाधतेहैं ज्ञानैश्व-
र्योत्कर्षकहींविश्रांतहै सातिशयसेपरिमाणकेतुल्ययहसांख्यसौ
गतपातञ्जलसाधतेहैं इससेउत्तरहै परन्तु: ईश्वरकोप्रधानवापु-
रुषोंकाअधिष्ठातासेजगकाकारणत्वयुक्तनहींकिससेअसामञ्जस्य
सेवुहयहकिहीनमध्यश्रेष्ठरूपसेप्राणिभेदोंकारचनेमेंईश्वरकोरा
गद्वेषादिदोषोंसे मेरेवोतुम्हारेवोउनकेतुल्यअनीश्वरताहो आ
गमादि से निर्दोष ईश्वर सिद्धि नहीं है अपने२ आगम से ईश्व-
र का निर्णय नहीं है निर्मूलता से आगम प्रमाण नहीं है सर्वज्ञ
मूल से मान नहीं है सर्वज्ञहो मे मान नहीं है सर्वज्ञमे आगमभी
माननहीं जबआगममानकेनिश्चयसेमूलनिश्चयहै फिरमूलनि
श्चयसेआगमनिश्चयहै यहअन्योन्याश्रयदोषहै पुरुषवचनस्वत:-
माननहींमिथोविरोधसेतत्वकानिश्चयनहीं अनुमानसेभीईश्व-
रसर्वज्ञकर्त्ताहोहै यहनिर्णयनहीं अनुमानतोदेखेकेअनुसारहै
तोदेखेसेविरुद्धार्थकोनसाधसकेगा लोकमे जैसे रागद्वेषादिवा
लेकर्त्तादेखतेहैं तैसे जगकर्त्तारागद्वेषादिवालासिद्धहो यदिलो
कमेंविचित्रघरादिकेअनेककर्त्तादेखनेसेजगकर्त्ता मेलाघवसेए-
कत्वनित्यज्ञाननिर्दोषकल्पोतोद्रव्यकाउपादानभीकल्पोकर्त्ता-
हीकोउपादानमानेमेलाघवहै फिरस्वतन्त्रप्रधानपरमाणुआदि

कोउपादानकल्पनामेगौरवहै वोअदृष्टहै यदिकर्त्ताकोद्रव्योपा-
दानत्वकीअसिद्धिहै तोएकत्वनित्यत्वसर्वज्ञत्वादिभीन सिद्ध हो
मैनेतोअपौरुषेयश्रुतिकेपेटसेजन्मलौकिककर्त्ता से विपरीतअहै
तब्रह्मकर्त्तावोउपादानसर्वज्ञादिदिखाया श्रुतिकेबाधसेरागादि
उसमेंनहींकहसक्तेहैं यहीआनुमानिकेश्वरसेवैषम्यहै यदिकर्त्ता
उपादाननहींदेखतेहैं तिससेकर्त्ताकोउपादानत्वनहींकल्पतेहैं
तर्हिंनिर्दोषत्वादिभीनहींदेखतेहो सोभीमतकल्पो जोविषम-
कारीहै सोदोषवान्है इसव्याप्तिकेदेखनेसेजगकाकर्त्तादोषीहो
फिरकर्त्ताकेसाधकअनुमानकावाधनहींहै कार्यलिङ्गकर्त्तामात्र
कासाधकहै फिरनिर्दोषादिकेसाधनमेउदासीनहै यदिविषम
सर्गप्राणिकर्माधीनहै तिससेईशमेवैषम्यादिदोषनहींहै जड़क-
र्मकोप्रेरकताकायोगनहींहै ईशप्रेरितकर्मईशकाप्रेरकयहभीमत
कहो कर्मप्रवर्त्यईशप्रवर्तयिताजोमानोतो इतरेतराश्रय दोषहै
भूतोंकेकर्मसेप्रेरितईशवर्तमानकर्मवाकर्मफलकेअर्थप्रेरताहै य
हीअनादिप्रेर्यप्रेरकभावहै सोनहींवर्त्तमानकालकेतुल्यभूतका
लमेंभीइतरेतराश्रयदोषसमवोअन्धपरम्पराहै भूतकर्मजड़हैति
ससेईशकाप्रेरकनहींकर्मभीईशसेप्रेरितईशकोप्रेरताहैसोनहींइ
तरेतरहैजैसेभूतकर्मोंनेप्रेराईशफिरईशप्रेराकर्मईशकोवर्तमान
कर्मफलदेनेकेअर्थप्रेरताहैयहमतकहोमानहोनामूलक्षयवहाअन
वस्थासेइससेकर्मकेअनधीनईशविषमस्रष्टाहैयहअसामंजस्यदुर्वा
रहैफलदानमेईशकर्मनिमित्तमात्रहै नप्रेरकइससेउक्तदोषनहीं
सोनविषमकर्मकरवानेसेईशदोषीहै श्रुतिमूलपूर्वकर्माधीनमेरे
कल्पनमेवैषम्यहै किञ्च प्रवर्तनालक्षणदोषहैं यहन्यायमतहैको
ईअदोषप्रयुक्तस्वार्थवापरार्थमेप्रवर्तमानदेखते नहींस्वार्थमेप्रयुक्त
सवजनपरार्थमेप्रवर्तताहै ईश्वरस्वार्थमेरागादिमान्है प्रवर्तक-

तासेसम्मतवत् ईशपुरुषविशेषहै यहयोगसिद्धांतअसामञ्जस्यहै क्युं प्रवर्तकवोउदासीनईश्वरवोपुरुषकहाहै इसविरुद्धतासे ॥

पशुपाशविमोक्षार्थमथपाशुपतम्मतं व्याख्यास्यामीत्युपक्रम्यम हादेवेननिर्मितं १ पञ्चाध्यायात्मकन्तद्विक्रमादद्वैतशास्त्रगम् । कार्याध्याय:प्रथमतोद्वितीय:कारणाभिध: २ योगाध्यायस्तृतीयोत्रविध्यध्यायस्तुर्थक: दु:खान्ताख्य:पञ्चम:स्यात्कार्योजीव:स-वैपशु: ३ पशूनांवन्धहर्त्तायः:कारणंसमहेश्वर: । जीवानामीश्वरेचित्तधारणंयोगउच्यते ४ त्रिस्नानंचत्रिपुण्ड्रञ्चविधिभस्मादिधारणं अध्यायार्था:क्रमादेवंदु:खांतोमोक्षउच्यते ५ सर्वंशिवपरस्यात्रज्ञेयंलिङ्गादिधारणं इत्यादि ॥

जीवकीफांसीछुटानेकेअर्थपाशुपतमतमहादेवनेरचाथापाचअध्यायमें उसमेंअद्वैतकावर्णनबहुतहै पहिलाकार्याध्याय दूसरा कारण अध्याय है२ तीसरा योगाध्याय३ चौथा विध्यध्याय४ दु:खान्तपंचमाध्यायहै५ कार्यजीवपशुजेपर्यायशब्दहैं जीवोंकावन्धनछुटानेवालामहेश्वरहै कारणमहेशादिशब्दपर्यायहैं जीवमहेश्वरमेंजोचित्तधरतेहैं सोयोगहैतीनकालमेंनहाना त्रिपुण्ड्रमाथेपरतिलकरचनाभस्मादिसेदु:खांतमुक्तिहै सर्वशिवकेलिङ्गदेहमेंधरतेहैं यहरहीपाशुपतोंकाधर्महै संन्यासीतोशिखामुड़ातेभस्मभालमेंमलते कानगलेमेंरुद्राक्षपहिरते यज्ञोपवीतउतारतेकमंडलुलेतेकषायवस्त्रपहिरते शिव२रटतेमठोंमेंवसतेहैं दण्डकोनारायणादिनामसेसेवतेतप्तलिङ्गसेबाहेंजरातेहैं यामुखमेंलिङ्गधरतेहैंइसमतकोप्रामाण्यकेसाधकबहुतउपनिषद नयेरचेगयेहैं अथर्वादिवेदोंमेंप्रगटहैं इससेउपनिषदों को नहीं लिखताहूं अववैदिकऔरपाशुपतकेसन्यासियोंकेलिङ्गमिलादियेहैं पद्धतिकारोंनेइससेभेदस्पष्टनहींहैमूढ़को ॥

सम्बन्धानुपपत्तेश्च ३८

राजादिवत् ईश्वरप्रधानवोपुरुष कासम्बन्धकेविनाप्रेरक होगाफिरसंयोगकाअसम्भवहैप्रधानवोपुरुषवोईशसर्वंगतवोनिरवयवहोनेसेसमवायभीनहींआश्रयाश्रयिकेअनिरूपणसे कार्यबलसेप्रेरणायोगत्व नामकोई अन्यसम्बन्धभीनहींकल्पसक्तेहो क्योंईशसेप्रेरितप्रधानउसकाकार्यजगसिद्धहोतोसम्बन्धकीकल्पनाहोसोउनकाकार्यकारणभावअसिद्धहैमायाब्रह्मकाअनिर्वाच्यतादात्म्यसम्बन्धब्रह्मवादमेंयुक्तहैदेवात्मशक्तिमितिश्रुतेःकिञ्चब्रह्मवादीवेदकेबलसेकारणादिस्वरूपबताताहै तिससेउसकोलोकमेदृष्टसवमृत्कुलालसम्बन्धअवश्यअनुसर्तव्यनहींहैं क्युं वेदअपूर्वार्थकोकहताहै आनुमानिकतोदृष्टान्तबलसे कारणादिस्वरूपदिखाताहै तिससेउसकोलोकदृष्टसवमाननाचाहिये यह विशेष है यदिपरकोभीसर्वज्ञकेकहेतन्त्रोसेतन्त्रबलतुल्यहै तर्हिइतरेतराश्रयदोषसेअनुमानसेसर्वज्ञसिद्धनहींहै दृष्टान्तकेअभावसे स्वस्वामिभावसम्बन्धनहींहै स्वशब्दसेयदि कार्यलोतदा कार्य नहींथा फिरवुहसम्बन्धकहांयदिकार्यकेपीछेसम्बन्धकहो तदाकार्यअसम्बन्धहुआहै जिसकेमननहींउसकोज्ञानकासम्भवनहींज्ञानमनसेजन्यहै इसव्याप्तिकेविरोधसेनित्यज्ञानकीकल्पनाकाअनवकाशहै परमाणुयोंकोभीनिरवयवेश्वरसेसंयोगादिके अभावसे प्रेर्यत्वकाअयोगहै जोईश्वरप्रेरकहै तोसदोषहै ऐसेअन्यवेदवाह्यईश्वरकल्पनामेयथासम्भवअसामञ्जस्यकोजोड़ो तिससेअयुक्त सांख्ययोगवादियोंकोईश्वरकल्पनाहै ॥

अधिष्ठानानुपपत्तेश्च ३९

तार्किककल्पाईश्वरकुम्भकारइवमृदादिको अधिष्ठानकर

केप्रवर्तेगा सोयुक्तनहींहै अप्रत्यक्षरूपादिहीनप्रधानवोपरमाणु चेतनकेअधिष्ठेयसम्भवनहींहैं मृदादिवैलक्षण्यसे इससेईश्वरप्रधानादिकाप्रेरकनहींहै ॥

करणवच्चेन्नभोगादिभ्यः ४०

करणानिसन्त्यस्मिन्नितिकरणवत्कलेवरम् ॥

जैसे करणग्राम नेत्रादिअप्रत्यक्षवोरूपादिहीनोंकापुरुषअधिष्ठाताहै तैसेईश्वरभीप्रधानादिकाअधिष्ठाताहोगा सोभीयुक्तनहीं पुरुषकरणग्रामकाअधिष्ठाताहै भोगादिकेदेखनेसे ईश्वरकोभोगादिनहीं देखतेहैं प्रधानादि से अतीन्द्रियत्वरूपअप्रत्यक्षत्वहै यहअभिप्रायहै फिरकरणग्रामसाम्यसेसंसारीकेबराबरईशकोभीभोगादिहो फिरजीवमेंकरणकेकरेभोगादिदेखतेहैं ईश्वरमेप्रधानादिकेकरेभोगादिनहींदेखतेहैं यहअक्षरार्थहै जोप्रधानादिप्रेर्यहैं तोप्रेरककेभोगहेतुभीहोंगेअतीन्द्रियप्रेर्यकोभोगहेतुकानियमहै लोकमेसाधिष्ठानसदेहराजादेश-काईशदेखतेहैंनिरधिष्ठाननहींदेखतेहैंइसीदृष्टांतकेबशसेअदृष्ट-ईशकोकल्पनेकीइच्छाजोकर्तेहो तोईशकाभीकुछदेहइन्द्रियोंकास्थानकहोसोनहींकहसक्तेहो क्युं देहसृष्टिकेपीछेहुईहैसृष्टि-केपूर्वदेहयुक्तनहींहै ॥

सृष्टिकेपूर्वनित्यदेहकाअसम्भवहै क्यों देहभौतिकके नियमसेनिरधिष्ठानईश्वरप्रवर्तकनहींहोताहै ऐसाहीलोकमेंदेखतेहैं (करणवत्) जीवहीकोदेहभौतिकहै ईश्वरकोदेहस्वेच्छासेबनीसदारहतीहैयहमतकहोइच्छामयदेहकीकल्पनाझूठीहैप्रमाणकेअभावसेभौतिकदेहकेनियमकेसाथबिरोधसे ॥

अन्तवत्वमसर्वज्ञतावा ४१

सर्ववादिसंमतईश्वरकीकल्पनामेंआक्षेपहै ईश्वरसर्वज्ञसब
नेमानाहै औरअनन्तपुरुषवोपरमाणुमिथोभिन्नमानेहैं इनमेंसे
सर्वज्ञईशप्रधानपुरुषऔर परमाणुऔरईशअपनी इयत्ताकोजा
नताहैवानहीं दोनोपक्षोंमेंदोषहै कैसे जो इयत्ताजानताहै तो
प्रधानपुरुषईश्वरअणुआदिसबअन्तवालेअवश्यहैं परिच्छिन्नतासे
घटकेतुल्यअनित्यहैं जोलोकमेंवस्तुघटादिइयत्तासे परिच्छिन्नहै
सोअन्तवत्देखाहै तैसे प्रधानपुरुषईश जेतीनोइयत्तापरिच्छिन्न
तासेअन्तवत्हो जोसंख्यावापरिमाणप्रधानपुरुषईश्वरतीनोंका
परिच्छिन्नहै तोस्वरूपपरिमाणभीतीनोंका ईश्वरसेअपरिच्छिन्नहो
प्रधानादि निश्चितपरिमाणहैं वस्तुसेभिन्नतासेघटकेतुल्य फिर
प्रधानपुरुषईशजेतीनजानेपरभीईश्वरने जीवोंकोभीगिन्तीकर
लीयानकरलीतोसर्वज्ञनहींगिनेजीवोंमेंसे जेसंसारसेमुक्तहैं उ-
नकासंसारअन्तवान्फिरउनकासंसारित्वअन्तवत्है ऐसेहीक्रम
रसेमुक्तोंमेंसंसारवासंसारीदोनोंकोअन्तवत्वहो कुछजीवोंकासं
घवोउनकेबन्धकानाशहैतोमाषराशिके तुल्यसर्वको मुक्तिसेअब
जगशून्यहोनित्यकेशेषनरहनेसे ईशभीशेषनहींचेतनभीभिन्नता
सेअन्तवत्है घटवत् प्रधानसविकारपुरुषार्थअधिष्ठेयईशकासं
सारीसेअभिमतहैफिरप्रधाननहींतोईशकिसकाअधिष्ठाताहोवा
किसविषयमेंसर्वज्ञतावोईशता।होप्रधानपुरुषईशकोइसअन्तवत्ता
सेसादिमत्ताहोफिरआद्यंतवत्तासेशून्यवादहोअथवाप्रधानपुरुष
अणुईशकीनइयत्ताहैननिश्चयहै इससेशून्यनहोगायहमतकहोप्र
धानादिसंख्यापरिमाणवालेहैं द्रव्यतासेमाषादिवत् इसअनुमा
नसेउनकीइयत्ताहै फिरउनकीसंख्यावोपरिमाणकेअज्ञानसेईश
कोअसर्वज्ञताहोइयत्तासेअन्तवत्ताहोअथवाईश्वरअपनीइयत्तासं
ख्यापरिमाणादिकोजानतायानहींपहिलेमेंसान्तहै दूसरेमें अस

वंन्नहै नहीं इयत्ताईशकास्वरूपमानहै गुणऔरद्रव्यकीहानिसे इयत्तासंख्यायापरिमाणादिहैंतिससेअयुक्तहैईश्वरकारणवाद ॥

———*———

पांचरात्राधिकरण ८

उत्पत्त्यसंभवात् ४२

पञ्चपदार्थवादमाहेश्वरमतखंडनचतुर्व्यूहवादका खण्डनकरताहै पूर्वकेमतमेंईशअप्रकृति अधिष्ठाताकेवलनिमित्तकारणथा चतुर्व्यूहवादमेंप्रकृतिअधिष्ठाताउभयात्मककारणईशहै इसका खण्डनसुनो अधिष्ठातावोप्रकृतिईशहै इनअंशोंकाखण्डननहीं परन्तुजोवेदविरुद्धहै उसस्मार्तमतकाखण्डनहै भगवान्एकवासुदेवनिरञ्जनज्ञानरूपपरमार्थतत्वहै सोहिअपनीचारमूर्तिसेविभक्तरहिताहै वासुदेवव्यूह१ संकर्षणव्यूह२ प्रद्युम्नव्यूह३ अनिरुद्धव्यूह४ व्यूहअर्थात्मूर्ति वासुदेवपरमात्मासंकर्षणजीव प्रद्युम्नमन अनिरुद्धअहंकारहै संकर्षणादितीनकी पराप्रकृतिवासुदेवहै संकर्षणादितीनउसकेकार्यहैं उक्तव्यूहवाले सबकीप्रकृति ईश्वरकोवचनमनदेहकेसमाधानसे देवताकेघरमेंजानापूजाकी सामग्रीलेकेपूजाकरनाअष्टाक्षरादिमन्त्रजपनायहीस्वाध्यायहै न वेदादिकापढ़नाध्यानहीयोगहै ऐसे सौवर्ष१०० पूजेतोक्षीणअभगकेअन्तहीकोप्राप्तहैफिर योसौनारायण:परोव्यक्तात्मसिद्ध: परमात्मासर्वात्मासआत्मनाआत्मानमनेकधा व्यूह्यव्यवस्थित: इसका खण्डन नहीं है सएकधाभवतित्रिधाभवति इस श्रुतिमेंभीपरमात्माकाहिअनेकरूपहोनाकहाहै जोभगवान्काज्ञान ध्याननित्यसुचित्तसेकरनेको कहा उसकाभीखण्डननहींश्रुतिमें ईश्वरध्यानकहाहै समाहित:श्रद्धावित्तोभूत्वेति तंयथायथोपास

तद्गुत्यादि फिरजोकहाकिवासुदेवसेसंकर्षण संकर्षणसेप्रद्युम्न प्रद्युम्नसेअनिरुद्धजन्माहै यहपांचरात्रागममतश्रुतिसेविरुद्धअप्रमाणहै अजआत्मेतिश्रुतिसेवासुदेवप्रभुसे संकर्षणनामजीवके जन्मकाअसंभवहै अनित्यतादिदोषोंसेउनसे अनित्यजीवकोभगवत्प्राप्तिमुक्तिभीनहोकारणमेंकार्यकीप्राप्तिकार्यकानाशहैतिससेझूठीहै जीवकेजन्मकीकल्पनापांचरात्रोंकीजीवकाजन्म बारन कार-जीवसेमनकाजन्मवारणकरताहै ॥

नकर्त्तुःकरणं ४३

लोकमेकर्त्ताचैत्रादिसेकरणकुठारादिजन्मेंनहींदेखतेहैं फिर भागवतकर्त्ताजीव सङ्कर्षणनामसेकरणमनप्रद्युम्ननामजन्माकहते हैंफिरमनसेअनिरुद्धनामअहंकारजन्माकहतेहैं हमतोयहबात बिनादेखेनमानेंगे नइसबातकीबतानेवाली श्रुति मिलती है सिद्धकरणोंसेकार्यकर्त्ताकर्त्ताप्रसिद्धहै लोकमेलेखकलेखनीकोबनाकेतिससेवर्णोंकोलिखतादेखाहै यहसचहै लेखककेहाथआदिकरणांतरविद्यमानहोनेसेलेखनीकाकर्तृत्वयुक्तहै जीवकोकरणांतरकेअभावसेमनकोकर्तृतायुक्तनहींहै जोकरणकेबिनाहीकर्तृताहै तोमनव्यर्थहै ॥

विज्ञानादिभावेवातदप्रतिषेधः ४४

सङ्कर्षणादिजीवादिरूपइष्टनहींकिन्तुईश्वरहैं क्युं ज्ञानऐश्वर्यशक्तिबलवीर्यतेजइनईश्वरकेधर्मोंसेयुक्तइष्टहैं पांचरात्रोक्तिः वासुदेवाएवैतेसर्वेनिर्दोषानिरधिष्ठानानिरवद्याश्चेतिईश्वरहोनेसेजन्मकाअभावगुणहैनदोषहै चारईश्वरोंमेंविज्ञानशक्त्यादिकेहोनेसेभी(तदप्र)उत्पत्तिकेअसम्भवकाअप्रतिषेधप्राप्तहै इसीसेजन्मकाअसम्भवदोषहै रीतिस्वतन्त्रभिन्नवासुदेवादि चारईश्वरतु

ल्यधर्मवालेहैं औरएककेविकारअभिन्ननहींहैं फिरअनेकईश्वरों कीकल्पनाव्यर्थहै एकहीईश्वरसेईश्वरके कार्यकी सिद्धिहोनेसे फिरतुमारासिद्धान्तगया जोमानाथाकि भगवानेवैको वासुदेवः परमार्थतत्वमिति अथवातुमारीयह अभिप्रायहोकि एकहीभग वान्केजेचारव्यूहतुल्यधर्मीहैं तोभीजन्मकाअसम्भवदोषबनाही रहा वासुदेवसेसंकर्षणका संकर्षणसेप्रद्युम्नकाप्रद्युम्नसेअनिरुद्ध काजन्मसंभवनहींहै अतिशयकेअभावसे कार्यकारणका कछुअ तिशयहोनाहीचाहिये जैसेमट्टीघड़ेकाजो अतिशयनहींतोकार्य कारणक्युंकल्पतेहोपञ्चरात्रके सिद्धांतियोंने वासुदेवादिमेंसेएक २मेंवास्तवमेंज्ञान ऐश्वर्यादि के तारतम्यका कुछभेदनहींमानाहै परन्तुनिर्विशेषसबव्यूहवासुदेवहीमानेहैं फिर जेचारभगवतके व्यूहनियमसेचारसंख्यामेंनहींरहिसक्तेहैं ब्रह्मादिसेस्तम्बलोसब जगभगवतकाहीव्यूहहैफिरमूर्तिवोयज्ञवलिदानकोक्याआवश्य कजहहै ॥

विप्रतिषेधाच्च ४५

पञ्चरात्रमेविरुद्धभाषणहै एकहीको गुण और गुणी माने से ज्ञानैश्वर्यशक्तिबलवीर्यतेजांसिगुणाआत्मान एवैतेभगवन्तोवा सुदेवादृत्यादिदर्शनसेतन्त्रकेएकवर्णकापाठकचारवेदकेपाठकसे श्रेष्ठहै चतुर्षुवेदेषुपरंश्रेयोअलब्ध्वाशांडिल्यइदंशास्त्रमधिगतवा नित्यादिवेदकोनिन्दादेखनेसेवेदविरुद्धहै तिससेजीवजन्मादियु क्तनहींहैं ॥

इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृते ब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये द्वितीया ध्यायस्यद्वितीयःपादःपूर्णः ॥

———*———

तीसराभूतपाद ३

वियदधिकरण १

नवियदश्रुतेः १

नव्योमानाम्नायात् ॥

जैसेविप्रतिषेधसेदूसरेपादमेंपरपक्षोंकी उपेक्षाकी तैसेहीस्व पक्षभीसृष्टिआदिके विप्रतिषेधसे उपेक्षणीयहै इससेसृष्टिश्रुत्यर्थ कीनिर्मलताकेअर्थतीसरेपादकाआरंभहै तैत्तिरीयकव्योमवायु काजन्मकहतेहैं औरनछन्दोग औरवाजीजीवऔरप्राणोंकाज- न्मकहतेहैं और आथर्वणिकप्राणकाजन्मकहतेहैं अन्यनहींकह तेहैंकहींपहिलेव्योमकाजन्मकहाकहींपहिलेतेजकायहक्रमविरो धहै कहींकुछक्रमहीनहींकहाकहींसातप्राणऔरकहींआठप्राण कहेहैं यहसंख्याविरोधहैमध्यस्थप्रश्नव्योमकाजन्महैवानहींएकदे शीकाउत्तर व्योमनहींजन्मताहै सृष्टिप्रकरणमेंउसकाजन्मनसुन्ने से छांदोग्यमेंपांचमहाभूतोंकेबीचतेजजलपृथिवीइनतीनकाजन्- न्मसुनाहै फिरइसकोतोअतीन्द्रियार्थकेजाननेमेंवेदहीप्रमाणहै व्योमकाजन्मबतानेवालीश्रुतिमुख्यार्थपरनहींहैयहगूढ़ाभिसंधि है और व्योमकाजन्मविधायकश्रुतिनहींहै तिससेव्योमअजहै ॥ सर्वएतआत्मानोव्युच्चरंतीति एतस्माज्जायतेप्राणः सइमाल्लो कानसृजतेत्यक्रमः सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयमिति सऐक्षद्वाच्यंब्रह्मप्रकृत्यतदैक्षततत्तेजोसृजतेति ॥

अस्तितु २

तुशब्दव्योमकीअनुत्पत्तिवारणार्थहै छांदोग्यमेंव्योमकाजन्म नहींपरतैत्तिरीयमेंहै जैसे सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्मेति प्रकृत्यतस्मा

द्वाएतस्मादात्मनः आकाशःसंभूतइति तिससेदोश्रुतिविप्रतिषि
द्धहैं इनकोएकवाक्यतायुक्तहै परअवगमनहीहोसक्ताहै क्युं ए
कस्रष्टाकादोस्रष्टव्यकेसाथसंबन्धअयोग्यहै जैसेतत्तेजोऽसृजततदा
काशमसृजतेति लोकमें एककर्त्ताकादोकर्तव्यकेसाथसंबन्धदेख
तेहैं जैसेमैंचदालिरांधिकेभातरांधताहै तैसेवहव्योमकोरचिके
तेजकोरचताथा उक्तक्रमयोग्यनहींहैक्युंकिदोनोंकोप्राथम्यकेभङ्ग
से एकवचनासेदोदलके तुल्यभीवस्तुदोकाप्राथम्यसंभवनहींहैति
ससेएकअपादानकाऔरसंभवनकाव्योमतेजकेसाथयुगपत्संब-
न्धअयोग्यहै किञ्चछान्दोग्यमें तेजकाउपादानसत्आत्मासुनाहै
औरतैत्तिरीयमें तेजकाउपादानवायुपढ़ाहै जैसे वायोरग्निरि-
तिपृथगाम्नानात् तिससेएकवाक्यताकासंभवनहींहैव्योमाजवा
दीस्वमतसेप्रामाण्यकहताहै ॥

गौण्यसंभवात् ३

व्योमकाजन्मनहींहै क्युं जन्मश्रुतिमेंनसुननेसेऔरजोव्योम
काजन्मवादिनीश्रुतिहैसोगौणार्थपरहै क्युंअसंभवात्श्रीमत्कण
भुग्मतानुसारियोंकेजीसेपरव्योमकाजन्मसंभवनहींकरासक्तेहैं
वेसमवायीअसमवायीनिमित्त इनतीनकारणोंसेसबकाजन्मसा
नतेहैंफिरकारणसामग्रीकेअसंभवसेव्योमकाजन्मवारणकरतेहैं
द्रव्यकेएकजातीयबहुतद्रव्यसमवायिकारणहैं फिरएक जातीय
बहुतद्रव्यव्योमकाआरंभकनहींहैव्योमनोत्पद्यतेसामग्रीशून्यत्वा
दात्मवत् प्रागभावशून्यत्वाच्चात्मवद्व्योमनजन्यते फिरउसकेअस
मवायिकारणादिहैं दोनेसेउनकेसंयोगमेंव्योमजन्मेगा संयोगद्र
व्यकाहैजोसमवायिवोअसमवायिनहींतोउनकोअनुग्रहसेप्रवृत्त-
निमित्तकारणकाभीव्योमजन्ममेंसंभवनहींहैफिरअविद्यावोब्रह्म

व्योमजन्मकेकारणनहीं हैं विजातीयतासेश्रौरश्रसंयुक्तासेश्रार म्भकनहीं तेजश्रादिजन्मकेप्रमथश्रौरउत्तरकालमेंविशेषकासंभव है किजन्मसे पूर्व प्रकाश तमोध्वंसदाहपाकादि कार्य न था पीछे सेहुश्रा है फिरव्योमकापूर्वापरकालमेंविशेषसंभवकरानेकोशक्य नहीं है क्याव्योमजन्मकेपूर्वश्रनवकाशवोश्रसुषिरवोश्रछिद्रथायह निश्चयकरनेकोशक्यहैजोस्थूलाश्रयहै वहश्रवकाशजोसूक्ष्माश्रयहै वहछिद्रहैजोश्रखाश्रयहैवहसुषिरहैपृथिव्यादिकेवैधर्म्यसेविभुत्वा दिसेश्रस्पर्शद्रव्यत्वादिसेव्योमश्रजसिद्ध है उक्ततर्ककेबलसेश्रुतिगो णीहैजैसेव्योमकोकरोव्योमजातायहवचनगौणहैश्रौरजैसेघटव्यो मकरकव्योमसद्मव्योमयहएकही व्योमकी भेदोक्तिगौणीहैश्रौरवे दमेभीवनकेपशुश्रोंकाश्रालम्भव्योमोंमेंविधानहै जैसे श्रारण्या- नाकाशेष्वालभेरन्निति भेदोक्तिगौणी ऐसेहीव्योमजन्मवादिनी श्रुतिभीगौणीदेखो व्योमकेश्रागेक्त्वादिविभक्तिभीसाधुत्वसूचि काहैं नभेदार्थिकाहैं ॥

शब्दाच्च ४

श्रुतिभीव्योमकोश्रजकहतीहै यदाह वायुश्चांतरिक्षंचैतदमृ तमिति श्रर्थ श्रमृतकाजन्मयुक्तनहींहै श्रौरव्योमके साथब्रह्मको सर्वगतत्वश्रौरनित्यत्वधर्मोंसे उपमिमानवेदव्योमके भीवेदोधर्म सूचनकराताहै जैसे श्राकाशवत्सर्वगतश्चनित्यइति व्योमउपमा नब्रह्मउपमेय वेद उपमिमानहै किञ्च सयथाऽनंतोयमाकाशएव मनन्तश्रात्मावेदितव्यइति श्राकाशशरीरं ब्रह्मश्राकाशश्रात्मेति च जन्यव्योमवोब्रह्मकाविशेषसंभवनहींहै जैसे उत्पलकानीलसे तिससेनित्यव्योमसेहीसाधारणब्रह्मजानाहै ॥

स्याच्चैकस्यब्रह्मशब्दवत् ५

सङ्काकाउत्तरसूत्र ॥

फिरकैसेएकहीसम्भूतशब्द तेजआदिमेंगयातोमुख्यऔरव्योममेंगयातोगौणहै इसकाउत्तरसंस्कृतमाश्रित्यस्याच्चैकस्यापिसंभूतशब्दस्यविषयविशेषवशाद्गौणोमुख्यश्चप्रयोगोब्रह्मशब्दवत् यथैकस्यापिब्रह्मशब्दस्यतपसाब्रह्मविजिज्ञासस्वतपोब्रह्मेत्यस्मिन्नधिकारेऽन्नादिषुगौणःप्रयोगःआनन्देचमुख्यःयथाचतपसिब्रह्म विज्ञानसाधनेब्रह्मशब्दोभक्त्याप्रयुज्यतेऽञ्जसातुविज्ञेयेब्रह्मणितद्वदिति तस्माद्वाएतस्मादाकाशःसंभूत इसप्रकरणमें अन्नंब्रह्म आनन्दोब्रह्मेति फिरजोव्योमअजन्यहै तोएकअद्वितीयब्रह्मकीप्रतिज्ञा कैसेसमर्थहोगी दूसरेव्योमसेब्रह्मसद्वितीयप्राप्तहै फिरकैसेएकब्रह्मकेजानेसेसबजानाजावेगा उत्तर जैसे कोईकुलालकेघरमेंएकदिनमृत्दण्ड चक्रादिदेखिदूसरेदिननानाविधफैलेपात्रोंकोदेखकेकहैकिमृत्होएकउसदिनथी वुहउसीनिश्चयसेकहैगाकिमृत्काउसदिनकोईघटादिकार्यनथा औरनकिदण्डचक्रादिनथेतैसे अद्वैतश्रुतिब्रह्मसेअन्यअधिष्ठाताकावारणकर्त्तीहै जैसे पात्रोंकीप्रकृतिमृत्औरकुलालअधिष्ठातादेखतेहैं तैसेजगकीप्रकृतिऔरअधिष्ठाताब्रह्मसेअन्यनहींहै लक्षणकेभेदसेनानात्वहै सर्ग-जन्मसेपूर्वब्रह्मव्योमकालक्षणभिन्ननहींथाक्षीरनीरकेतुल्यदोनोंसंसृष्टथे व्यापित्वऔरअमूर्त्तत्वादिधर्मोंकीसमतासेफिरसर्गमेंजगजन्मानेकेअर्थब्रह्मयततहै औरव्योमस्थितिसेठहिरताहै तिससेव्योमब्रह्मकेभेदकानिश्चयहै ब्रह्मव्योमकेअभेदोपचारबोधिकाश्रुतिहैं आकाशशरीरंब्रह्मेतिफिरब्रह्मव्योमकेअभेदोपचारसेब्रह्मकेविज्ञानसेसर्वविज्ञानकीसिद्धिहै किञ्चसबकार्यव्योमसेभिन्नदेश-कालमेंनहींहोतेहैं औरब्रह्मसेदेशकालव्योमअव्यतिरिक्तहै इससेब्रह्मवोब्रह्मकार्यवोउनदोनोंके विज्ञानकेसाथहीव्योमजाना-

जाताहै जैसे चौरमेंनीरचौरकेग्रहणसेनीरगृहीतहै यहनहीं किचौरकेग्रहणसेनीरघटमेंरहिजावे तैसे ब्रह्मऔरब्रह्मकेकार्य सेअव्यतिरिक्तदेशकालसेब्रह्मकेग्रहणसेव्योमभीगृहीतहै तोश्रुतिसेव्योमजन्मकासुननाभाक्तहै एकदेशीसिद्धान्तीनेअजन्यव्योममानसबश्रुतिविरोधवारणकिया मुख्यसिद्धांतीदूषताहै ॥

प्रतिज्ञाऽहानिरव्यतिरेकाच्छब्देभ्यः ६

येनाश्रुतंश्रुतंभवतीतिसामहै आत्मनिखल्वरेदृष्टेश्रुतेमतेविज्ञातइदंसर्वंविदितमिति यजुःहै नकाचनमहद्धिर्धाविद्यास्तीति अथर्वहै आत्मभिन्नंज्ञेयंनास्तीत्यर्थःउक्तसबवेदोंकीप्रतिज्ञाकीसिद्धितोहोजोब्रह्मसेसबवस्तुकाअव्यतिरेकहोसोअव्यतिरेक तो होजोसबवस्तुब्रह्म सेजन्यहो संक्षतमधिकृत्य वेदप्रतिज्ञायाएवमहानिरनुपरोधःस्यात्यद्यव्यतिरेकःकृत्स्नस्यवस्तुजातस्यविज्ञेयात्ब्रह्मणःस्यात्व्यतिरेकेहिसतिएकविज्ञानेनसर्वंविज्ञायतइतीयंप्रतिज्ञाहीयेतसचाव्यतिरेकएवमुपपद्यतेयदि कृत्स्नंवस्तुजातमेकस्माद्ब्रह्मणउत्पद्येत शब्देभ्यश्चप्रकृतिविकाराव्यतिरेकन्यायेनैवप्रतिज्ञासिद्धिरवगम्यते भाव अजन्यव्योमका जीववत्कल्पितभेदसेभीप्रतिज्ञासिद्धिनहीं अज्ञानसे सबजड़द्रव्यकार्यहो तोअव्यतिरेकहोजोव्योमअकार्यहोतोप्रधान [नित्यद्रव्याणिस्वतन्त्राणिभिन्नान्यनाश्रितानीतिन्यायविदः] वत्स्वतन्त्रहो तिससे अव्यतिरेकनहो जिसकेसुननेसेअसुनासुनाहोताहै यहप्रतिज्ञाकार्यकारणकेअभेदवर्णनमेंमृदादिकेदृष्टान्तोंसेसमर्थकीहै औरइसकेसाधनार्थआगेके शब्दहैं जैसे सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतदैक्षततत्तेजोसृजत भाव श्रुतियांकार्यजातकोब्रह्मसेदिखाकेफिरअव्यतिरेकदिखातीहैं जैसे ऐतदात्म्यमिदंसर्वं यहांसे प्रपा

ठककोसमाप्तिको फिरयद्व्योमब्रह्मकाकार्यनहोतोब्रह्मजानेसे व्योमनजानाहो तिससेप्रतिज्ञाहानिहो फिरप्रतिज्ञाकीहानिसे वेदकोअप्रामाण्यकरनेयोग्यनहींहै सोदेखोकिवेदमेंनानाशब्द-नानादृष्टांतोंसेउक्तप्रतिज्ञाकोस्थापतेहैं जैसे यजुर्वेदमेंदुंदुभ्यादि दृष्टान्तोंसेअथर्वणमेंऊर्णुनाभ्यादिदृष्टान्तोंसे फिरयजुर्मेंउसकेसाधक इदंसर्वंयदयमात्माजेशब्दहैं आथर्वणमेंब्रह्मैवेदममृतंपुरस्तादित्यादिजेशब्दहैं तिससेअग्न्यादिवत्व्योमभीजन्यहैवस्तुमें-विकल्प के असंभव से व्योम तेज का प्राथम्य शाखा के भेद सेव्य-वस्थित नहीं है द्विदलांकुरवत्समुच्चय से जन्म का प्राथम्य होनेकानहींहै वायोरग्निरिति इस क्रम के बाध से शाखाभेद से प्रथमतेजयाव्योमजन्मायहव्यवस्थाभीअयोग्यहै तिससेएकवाक्यताभीनहींहैइसकोसिद्धान्तीदूषताहै तैत्तिरीयमेंतेजकाजन्मतीसरासुनाहै जैसे तस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसंभूतः आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरिति वलवतीतैत्तिरीय श्रुतिहै प्रकृतिपञ्चमीविभक्तिसेछांदोग्य श्रुतिदुर्बलहै तेजका प्राथम्यनहींहै तेजकाजन्मभाजसुनाहै वहतोसराहै यह एकवाक्यताहै इससेअप्रमाणछांदोग्य श्रुतिनहीं जैसेतदाकाशंवायुंचसृष्ट्वातत्तेजोसृजतेतितेजकाजन्मकहतीछांदोग्यकीश्रुतिव्योमकाजन्मकहती तैत्तिरीयश्रुतिकोनहींबारशक्तीहै एकवाक्यदोव्यापारनहींकरशक्ताहै कि तेजकाजन्मविधानकरे औरव्योमकेजन्मकोवारणकरे क्रमसेएकहीस्रष्टाअनेकस्रष्टव्यसृजो इसकल्पनासेएकवाक्यकेसंभवमेंविरुद्धार्थश्रुतिहातव्यनहींहै हमकोएकबारसुनास्रष्टाकासम्बन्धदोस्रष्टव्यकेसाथइष्टनहींहै अन्य श्रुतिसेअन्यस्रष्टव्यकाग्रहणकरतेहैं यथा सर्वंखल्विदंब्रह्मतज्जलानितियहां सववस्तुब्रह्मसेजन्यश्रुतहै वहप्रदेशांतरमें विधामकरातेजआदिके जन्मका क्रमकोवारता

नहींहै तैसेतेजभीब्रह्मसेजन्यश्रुतहै वहश्रुत्यन्तरमेंविधानकरा
व्योमादिकेजन्मक्रमकेवारणमेंयोग्य नहींहै तज्जलानिति शांत
उपासीतेति उक्तवाक्यशमकेलियेहैं नसृष्टिकेलियेतिससेप्रसिद्ध
क्रमका अनुरोधयोग्य नहींहै और तत्तेजोसृजत इससृष्टिवाक्य
सेक्रमगृहीतव्यहै मैंनहींकहताहूं कितेजकीप्राथम्यकेअनुरोध
सेश्रुतिमें प्रसिद्धव्योमहातव्यहै क्रमपदार्थकाधर्महै किञ्च तत्ते
जोसृजत इसमेंक्रमका वाचककोईशब्दनहींहैआर्थिकक्रमजाना
है फिरसोक्रम वायोरग्नि इसश्रुतिकेक्रमने वारणकियाहै व्यो
मवोतेजकेप्रथमजन्ममेंविकल्पऔरसमुच्चय असंभववोअस्वीकार
सेवारितहै तिससेउनमेंविप्रतिषेधनहीं किन्तुसौहार्दहै छांदोग्य
मेंप्रतिज्ञाकेवलसेअपठितव्योमका जन्मउपसंख्यातव्यहै तोहैअ
इफिरतैत्तिरीयमेंपठितकाक्युंनसंग्रहकरोजोकहाथाकिव्योमकि
सीदेशकालसेपृथक्नहींहै ब्रह्मवोब्रह्मके कार्योंके साथविदितहै
तिससेप्रतिज्ञाकीघातिनहींहै औरएकमेवाद्वितीयं इसकोकोप
भीनहींहै औरनीरवत्व्योमब्रह्मकेअव्यतिरेकसे सोऽसत्है और
नीरन्यायसेएककेविज्ञानसेसवकाविज्ञानप्राप्तव्यनहींहै मृदादि
केदृष्टान्तोंसेप्रकृतिविकारन्यायसिद्धसवकाविज्ञानप्राप्तव्यहै औ
रनीरन्यायसेकल्पमानजो सवविज्ञान सोसमीचीन विज्ञानहो
औरकेज्ञानसेग्रहणकियानीरकासमीचीनज्ञाननहींहै वेदकोपु
रुषोंकेतुल्यमायालीक विप्रलिप्सा प्रमादकरणापाटववचनोंसे
अर्थकाअवधारणउपपन्ननहीं है एकमेवाद्वितीयं यह सर्वहै तके
निषेधपराऔरनीरन्यायसेअर्थकरणमें पीडितहो दोनोंकोगौण
मानेसेअद्भुतवत्उपन्यासहो जैसे श्वेतकेतोयन्नुसोम्येदंमहामना
अनूचानमानीस्तब्धोस्युततमादेशमप्राक्ष्योयेनाश्रुतंश्रुतंभवतीति
तिससेब्रह्मकेकार्यकीअपेक्षासेसववस्तुकेविज्ञानका उपन्यास है

फिरजोकहाथाकिअसंभवसेव्योमजन्मश्रुतिगौणीहै उत्तरउसका है ॥

यावद्विकारंतुविभागोलोकवत् ७

तुशब्दअसम्भवकीशङ्काव्यावृत्त्यर्थहै व्योमजन्यनहींहैसामग्री शून्यतासेइसकणभुगादिकेअनुमानकासत्प्रतिपक्षहै किव्योमवि भक्तहै विभक्ततासेघटादिवत् फिरजोविभक्तहै सोविकारहै य हीअन्वयव्याप्तिहै जोअविकारहै सोविभक्तनहीहै जैसेआत्मावि भक्ततासेदिक्कालमनपरमाण्वादिकार्यहैं ननुव्योमादिसेआ- त्माभीविभक्तहैफिरआत्माभीघटादिवत्कार्यहोनहिआत्मनआ काश:संभूत: इसश्रुतिसेयहसमाधिवेदशरणोंकोहै नकिअनुमा नशरणोंकोयदिआत्माविकारहो विभक्ततासेयावस्तुतासेघटवत् तोआत्मासेपरअन्यनहींसुननेसेसबव्योमादिकार्य निरात्मक हो आत्माकोकार्यत्वहोनेमें फिरशून्यवादहोफिरआत्माकिसीकार णकाकार्यनहींहै स्वयंसिद्धतासेऔरआत्माप्रमाणकी अपेक्षाआ त्मसिद्धिमेंनहींचाहताहै आत्माके प्रत्यक्षादिप्रमाण असिद्धप्रमेय कीसिद्धिकेअर्थगृहीतहैं कोई प्रमाणकेविनाव्योमादिस्वयंसिद्धन हींलभताहै तिससेप्रमाणव्यर्थनहींहैं निश्चितसत्ताका ज्ञानप्रमे यसत्ताकानिश्चायकहै घरमेंघटदेखावानहीं यहज्ञान संशयसेदे खाइमव्यतिरेककेनिश्चयमेंअर्थस्वरूपके अनिश्चयसेज्ञानसत्तानि श्चयस्वत:नहींहै कार्यकोस्वप्रकाशताकायोगनहींहै नअन्यज्ञान सेअनवस्थासेइससेसाक्षीज्ञानसत्ताकानिश्चायकहैयदिसाक्षीको ज्ञानाधीनसत्तानिश्चयहै तोअन्योन्याश्रयहै इससे सर्वसाधकत्व सेआत्मास्वत:सिद्धहै जडपराधीनप्रकाशसेबाधयोग्यहैस्वप्रकाश सर्वबाधसाक्षिरूपकानिराकर्त्तान्तरनहीं आपआपके निराकर्तृत्व

काअयोगहै अतिनिपुणभीस्वाभावदेखनेको शक्यनहींहैजैसेअप
नासिरकटाआपनहींदेखताहै फिरआत्माप्रमाणादिसेपूर्वहीसि
द्धहैप्रमाणादिकेआश्रयसेभगाऐसेकावारणकैसेसंभवहैआगन्तुक
वस्तुकावारणहै नस्वरूपकाजोहिनिराकर्ताहै सोहीउसकास्वरू
पहै नहींदेखीकिअग्निकीउष्णताअग्निकोनिराकरणकर्तीसत्ता
वास्फूर्तिरात्माहै पुरुषःस्वयंज्योतिस्तस्यभासासर्वमिदं विभाती
तिअकहामैनेस्वतःस्फूर्तिसेआत्माबाध्यनहींकहताहूंस्वतःसत्ता
कर्तासेभीबाध्यनहींजैसेमैंअवर्तमानवस्तुजानताहूं औरभूतवो
भूततरवस्तुजानताथावोअनागतअनागततरवस्तुजानूंगा इससे
ज्ञानज्ञेयकीसत्ताका व्यभिचारमे भीज्ञाताके सदाएकरूपसेस
त्ताकाव्यभिचारनहींहै देहकेभस्मादिसे आत्मका उच्छेदनहीहै
वर्तमानस्वभावसेअन्यथास्वभाववामिथ्यात्व संभवनहींकरासत्ते
होमैहूंइससत्स्वभावका बाधकनहींहै अप्रत्याख्येयस्वभावसेआ
त्माअकार्यऔरव्योमकार्यहै जोतुमने कहाथाकि समानजातीय
नानाद्रव्यव्योमारम्भकनहींहैं सोभीझूठहै प्रथमतोयहनियमही
नहींकिसमानजातीयहीआरम्भकहै नविजातीय तन्तुवोतन्तुसं
योगसमानजातीयनहींहै द्रव्यत्ववो गुणत्वके स्वीकारसे औरतु
रीवेमादिनिमित्तकारणोमेंभीसमानजातीयतानहींहै होसमवा
यिकारणमेंउक्त नियमनकारणान्तरमे यहभी अनैकान्तिकहैसूत्र
लोमादिनानाजातियोंसेएकरस्सीबनीदेखतेहैं तैसेसूत्रवोऊर्णा
दि से विचित्र कम्बल तनुते देखते हैं किञ्च सत्व द्रव्यत्वादि की
अपेक्षासेसाजत्यकल्पोतोनियमव्यर्थहो सबकोसबकेसाथसाजत्य
तासेयहभीनियमनहींकिअमेकहीआरभताहै नएकअणुवामन-
मेंआद्यकर्मकेआरम्भकेस्वीकारसेपरमाणुवोमनएकहीएकआद्य
कर्मकोआरभताहै नअन्यद्रव्यसेमिलकेयहीतुम्हारास्वीकारहै

यदिकहोकिद्रव्यकेआरम्भमेंअनेकारम्भकत्वकानियमहैसोभीन
हींपरिणामकेस्वीकारसे होयहनियमतुम्हारायदिसंयोगसहा
यद्रव्यद्रव्यांतरकाआरम्भकहोद्रव्यहीअवस्थाविशेषकोपहुंचाका
र्यनामसेपुकाराजाताहै फिरद्रव्यहीकहींअनेकाकारपरिणमता
है जैसे मृत्‌वीजघटादि अङ्कुरादि भाव से कहीं एकही जैसे
क्षीरादिदध्यादिरूपसेअनेकहीकारणकार्यकोजनतेहैं यहईश्व-
रशासननहींहै द्रव्यगुणोंकासङ्केतपुरुषोंसेहैतिससेवुहश्रुत्यर्थनि-
र्णयमेंहेतुनहींहै यहभावार्थहै श्रुतिप्रमाणसेएकहीब्रह्मव्योमादि
महाभूतोंकेजन्मक्रमसेजगकारणनिश्चितहै औरजोतुमनेकहा-
थाकिव्योमजन्ममेंपूर्वापरकालका विशेष असम्भव है सोअसत्‌है
जिसशब्दाश्रयत्वविशेषद्वारापृथिव्यादिसेव्यतिरिच्यमानव्योमस्व
रूपवत्‌अवनिश्चितहैवुहशब्दादिमान्‌विशेषप्रलयमेंनहींथा शब्दा
दिमत्‌व्योमप्रलयमेंनथा नासीद्रजोनोव्योमेत्यादियदिकहोकिव्यो
मनहोतोकाठिन्यहो तुमअच्छासिखाहैनैयायिककेवचे व्योम-
काअभाववोव्योमकेधर्मकाठिन्यनहींहै किन्तुमूर्तद्रव्यविशेषया
मूर्तद्रव्यकासंयोगविशेषकाठिन्यहै फिरवुहप्रलयमेंनहींहैयहभा
वार्थहै जैसे ब्रह्मस्थूलादिपृथिव्यादिस्वभावसे स्वभाववत्‌नहीं है
अस्थूलमनणित्यादिसे तैसे व्योमस्वभावसेभीस्वभाववत्‌नहींहै
अनाकाशमितिश्रुतेः तिससेजन्मकेपूर्वअनाकाशथाआकाशशरी
रंब्रह्मेति विभुतासेव्योमसमब्रह्महै यहश्रुत्यर्थहै औरजोतुमनेक
हाथाकिपृथिव्यादिकोवैधर्म्यसेव्योमअजहैसोभीअसत्‌है श्रुतिके
विरोधमेंजन्मासम्भवानुमानअनुमानाभासहै व्योमअनित्यहै अ
नित्यगुणोंकेआश्रयसेघटादिवत्‌ निर्गुणआत्मामेंअनैकांतिकता
नहीं गुणकेअभावसे व्योमजन्यवादीकोविभुत्वादिअसिद्धहैं ति
ससेस्वरूपासिद्धहै सर्वमूर्तद्रव्यसंयोगवापरिणामविशेषवा स्वरू-

पोपचयरूपवाविभुत्वनिर्गुणमेंनहींहै ज्यायानाकाशादितिश्रुतेः व्योममेंअमृतत्वश्रुतिअमृतादिवौकसइतिवत्गौणीदेखो जन्मल यवर्णनसेआकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः यहभीप्रसिद्धमहत्वव्योमसेउ पमानकियाहै निरतिशयमहत्वकेअर्थवोनव्योमकौसाम्यकेअर्थ जैसे इषुकेतुल्यसूर्यदौड़ताहै यहक्षिप्रगमनसेकहाहै नइषुतुल्य गमनकेअर्थकहाहै तद्वत् सयथाऽनन्तोयमाकाशएवमनन्तआ- त्मेति व्योमकार्यहै तिससेअनित्यहै यहश्रुतिआपेक्षिकआनन्त्य केद्वारामुख्यानन्त्यकावोधकरातीहै यहभावार्थहै ज्यायानाका- शादिति यहब्रह्मसेव्योमकोऊनपरिमाणकहतीहै नतस्यप्रति- मास्तियस्यनाममहद्यशःहिरण्यगर्भइत्येषमामाहिंसीदित्येषयस्मा न्नजातइत्येषःउक्तश्रुतिब्रह्मकोअनुपमानतादिखातीहै व्योमउप मानमात्रसेनित्यनहींयहभावहैमूर्तिपूजाझूठीहैयासुखार्थअग्नि होत्रादिझूठेहैंईश्वरकीमूर्तिनहोनेसेअतोन्यदार्तमितियहभीब्र- ह्मसेव्योमादिकोअनित्यतासेअसत्वकहतीहैजोतुमनेकहाथाकि जैसे तपमेंब्रह्मशब्दगौणहै तैसे व्योमजन्मश्रुतिगौणीहै सोभी- व्योमजन्मश्रुतिवाअनुमानसेपरिहृतहै वलवतीतित्तिरीयश्रुति केसाथदुर्वलछन्दोग्यश्रुतिकीएकवाक्यताहै समानार्थकनानाश्रु तियोंकीएकवाक्यतामेंकुछश्रमनहींहै परविरुद्धनानार्थश्रुतियों कीएकवाक्यताकेअर्थबुद्धिमान्काश्रमयुक्तहै तोसवश्रुतिकासम न्वयब्रह्ममेंहै तिससेव्योमब्रह्मकाकार्यसिद्धहै ॥

———*———

(मातरिश्वाधिकरण ॥ २ ॥)

एतेनमातरिश्वाव्याख्यातः ८

संस्कृतेनसङ्कलनं एतेनव्योमव्याख्यानेनमातरिश्वापिव्यो-

माश्रयोवायुर्व्याख्यात: वायुनहींजन्मताहै छन्दोगोंकेसृष्टिप्रक
रणमेंनढ़नेसेऔरतैत्तिरीयकोनेवायुकाजन्मपढ़ाहैआकाशाद्वायु
रितिफिरश्रुतियोंकेविप्रतिषेधमेंवायुजन्मश्रुतिगौणीहै असम्भव
से फिरअसम्भवयहकि सैषानस्तमितादेवतायद्वायुरितिअस्तम-
यकेप्रतिषेधसेऔरअमृतत्वादिकेसुन्नेसे प्रतिज्ञासिद्धिसेजोविभ
क्तहै सोजन्यहै तिससेवायुजन्य है यह सिद्धांत है अग्न्यादिकेतु
ल्यवायुकाअस्तमयनहींहै यहीअमृत्वादिहै ननुवायुव्योमकातु
ल्यजन्मकेप्रकरणमेंसुन्नावाअसुन्नाहै तोएकहीअधिकरणयुक्तथा
फिरक्युंविशेषकेविनाअतिदेशकियाहै सुनोयहतोसचहै तोभीम
न्दबुद्धियोंकोशब्दमात्रकीशङ्कानिवृत्त्यर्थयहअतिदेशकियाहैकिञ्च
सम्बर्गविद्यादिमेंउपास्यतासेवायुकामहाभागत्वसुनाहै औरअ
स्तमयप्रतिषेधादिसेकिसीकोनित्यत्वकीशङ्काथी उसकेवारणार्थ
भिन्नाधिकरणहै कर्मठमतमेभीवायुकाऐश्वर्यस्तावकसुनाहै वा
यव्यंश्वेतमालभेतभूतिकाम:जोधनचाहैसोवायुकायज्ञकरेइसको
लोगोंमेंफैलानेकेअर्थस्तुतिकहीहै जैसे वायुर्वैक्षेपिष्ठादेवतास्वे
नभागधेयेनैनंभूतिंगमयतीति अर्थ वायुएकबहुतशीघ्रचलनेवा
ला देवताहै जोउसकोपूजेगावहउसेशीघ्रधनदेगा सैषायहजा
न्माभावमेलिङ्गहै वायुंदिशांवत्सं वेदवायुकोदिशोंकावछराजानो
यहरूपकालङ्कारहै वायुरन्तरिक्षं चैतदमृतमिति यहअभ्यास
मेंलिङ्गहै वायुरेवव्यष्टि:समष्टिश्चेति सर्वात्मामेंलिङ्ग संवर्गविद्या
में वायुर्ह्येवैतान्सर्वानग्न्यादीन्संहरतीतिअर्थात्संहृ कोशब्दमा
त्रहीऐश्वर्यकासुन्नालिङ्गहैनार्थइनसेवायुअनाद्यनन्तजानीजाती
हैतिससेवायुजन्मश्रुतिगौणीहै इससेश्रुतिमेंविरोधनहींहै सि
द्धांती प्रतिज्ञाश्रुतिसे वायुजन्मकेसाधकवाक्योंसेविभक्तत्वादि
लिङ्गोंसेवायुकाजन्ममुख्यहीहै फिरआकाशंवायुंचसृष्ट्वातेजोसृज

त इनदोश्रुतिकीएकवाक्यतासेब्रह्ममेंसमन्वयहै उपास्य वायुके स्तावकलिङ्गश्रापेक्षिकहैं यहमुख्यसिद्धांतहै ॥

—— * ——

ब्रह्मजन्मासंभवाधिकरण ३

असंभवस्तुसतोनुपपत्तेः ९

अनाद्यनन्तंमहतःपरंध्रुवंनचास्यकश्चिज्जनितेति यहब्रह्मको अनाद्यनन्तकहतीहै त्वञ्जातोभवति विश्वतोमुखइति यह ब्रह्म काजन्मकहतीहै फिरकिसीकीमतिहैकि असंभाव्यमानजन्मवा युव्योमउनकाजन्मसुनकेब्रह्मकाभीजन्मकिसीसेहो फिरब्रह्मकि सीकारणतासेजन्यहैव्योमवत् इसअनुमानकेसहायसे अजन्मश्रु तिवलीयसीहै बीजांकुरवत् अनादिसेअनवस्थाभीनहींहै दीपसे दीपवत्ब्रह्मसेब्रह्मजन्मनेमें जन्मश्रुतिअनादिश्रुतिसेमिलअनाद्य नन्तब्रह्मकीअसिद्धिबोधिकाहै यहकिसीकीशङ्कादूरकरनेकेअर्थं सूत्रहुआथा ब्रह्मजन्यनहींहै कारणशून्यसेनरशृङ्गवत् व्यतिरेक मेघटवत् जोकोईअनादिनहोतोअकारणवादहो ब्रह्मकेजन्मका कारणलिङ्गकेबाधसेजन्मश्रुतिकाअर्थकार्यके साथअभेदहै इससे ब्रह्म अनाद्यनन्तसिद्धसिद्धांतकाफलहै नखलुब्रह्मणःसदात्मकस्य कुतश्चिदन्यतःसंभवउत्पत्तिराशङ्कितव्याकस्मात्अनुपपत्तेःसन्मा त्रंहिब्रह्मनतस्यसन्मात्रादेवोत्पत्तिः सम्भवत्यसत्यतिशयेप्रकृतिवि कारभावानुपपत्तेर्नापि सद्विशेषात् दृष्टविपर्ययात् सामान्याद्धि विशेषाउत्पद्यमानादृश्यन्ते मृदादेर्घटादयो नतु विशेषेभ्यःसामा न्यंनाप्यसतोनिरात्मकत्वात्कथमसतःसज्जायेतेतिचाक्षेपश्रवणा त्उक्ततीनकारणनहींहैंब्रह्मजन्ममेंश्रुतिभीब्रह्मके जन्मकीवार तीहै जैसेसकारणं करणाधिपाधिपोनचास्य कश्चिज्जनितानचा

धिपइति दीपदीपकेजलानेमेंनिमित्तहै तिससेदृष्टांतनहींहै वा युव्योमकाजन्मविभक्तसेहै औरब्रह्मकाजन्मअविभक्तसेनहींहै यहीवैषम्यहै विकारसेविकारकाजन्म देखब्रह्म काभीविकारहोना योग्यनहींहै मूलप्रकृतिकेनमानसेअनवस्थाहै फिर कारणनमानेसेयदृच्छावादहो अनादिकारणमानेसेब्रह्म वादहोप्रधानाणुआदिकेनिराससे फिरजोतुममूलप्रकृतिमानोगे वहीहमाराब्रह्म है तिससेअविरोधहै ॥

———*———

(तेजोधिकरण ॥ ४ ॥)

तेजोतस्तथाह्याह १०

छांदोग्यमेसत्तेजकामूल तैत्तिरीयमे वायुमूलसुनाहै तत्तेजोसृजत वायोरग्निरिति तेजके जन्ममेंश्रुतिविप्रतिपन्नहैं एकदेशिमतमेंब्रह्मयोनिकतेजहै सदेव इस उपक्रमसे तत्तेजोसृजत इसउपदेशसेऔरसबकेज्ञानकी प्रतिज्ञाकासंभवतोहो जोसबब्रह्मसेजन्य हो तज्जलानितियहसमतासेसबकाजन्मब्रह्मसेदिखातोहै एतस्माज्जायतेप्राणइति यह उपक्रमकरश्रुत्यन्तरमेंसबब्रह्मजन्यअविशेषसेकहाहैऔरतैत्तिरीयमेंकहाकिजोकछुजन्यहैसोसबब्रह्मनेदेखकेरचाहै जैसे सतपस्तप्त्वाइदंसर्वमसृजतइति तिससेवायुकेपीछेअग्निरचीइसक्रमसेकहाहै वायोरग्निरिति इसक्रमकीव्यवस्थापरकहिताहूं कितेजवायुसेजन्मताहै कैसे जानातैत्तिरीयश्रुतिकेकहिनेसे वायोरग्निरिति जो समीपसेतेजकोब्रह्मजन्यकहोऔरवायुकोजनककहोतो वायोरग्निः यह बाधितार्थहोहमनेतैत्तिरीयश्रुतिकोनहींकहाहैतस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसंभूतः इसमेप्रथमसबकाअपादानपञ्चमीविभक्तिसेआत्मा

कहाहै ननुपञ्चमीश्रुतिसे वायुतेजकाजन्मनिश्चितहै सोनहींक
ल्पितकोउपादानकेअसंभवसेफिरअधिष्ठानकेअसंभवमेंभीमृदा
दिवत्परिणामिताकासंभवहै छांदोग्यमेंब्रह्मसे सृष्टिमात्रसुनीहै
उपादाननहींसुनाहै एकोहंवहुस्याम् अर्थ: कार्यकेसाथअभेदकेदे
खनेमेंलिङ्गहै तिससेभीब्रह्म उपादाननहीहै लिङ्गसे श्रुतिवली
यसीहै जहांश्रुतिसे विरोधनहींवहांलिङ्गपहुंचताहै वायुब्रह्मसे
अन्य नहींहै तोवायुजतेजभी ब्रह्मप्रकृतिकहै यह सिद्धांताशयहै
जैसेपृथिवीसेओषधितैसे वायुसेअग्नियहअपादानहै औरवायुसे
आगेअग्निकासंभवहै यहउपपदार्थकायोगकल्पितहै औरवायु
से अग्निकासम्भवहै यह कारकार्थयोगक्लृप्तहै कल्प्यात्क्लृप्तमेंक्लृप्त
वलिष्ठहै तिससे तेजकाजनकवायुहै ननुछांदोग्यश्रुतितेजकोब्र
ह्मयोनिकहतीहै तत्तेजोसृजतेति फिर यदिव्योमवायुकोरचवा
युरूपब्रह्म तेजकोरचताहै यहकल्पोतोभीतेजब्रह्मजहैइसमेंकुछ
विरोधनहींहै जैसे तस्यैशृतंतस्यैदधितस्यै आमिक्षेत्यादिश्रुति
से गौकाक्षीरसाक्षात्कार्यहैऔरदध्यादिपारंपर्यजहैं ब्रह्म विकार
रूपसे स्थितश्रुतिदिखातीहै तदात्मानंस्वयमकुरुतेति यद्यपि बु
ध्यादिअन्त:करणादिसेजन्यप्रत्यक्षदेखतेहैंतथापिसबभावसाक्षा
त्वाप्रणाडीसेईश्वरकावंश्यहै तज्जलानिति यहअक्रमवादिनी
श्रुतिसर्वथासार्थाहै साक्षात्वाप्रणाडीसेसबब्रह्मजहोनेसेऔरक्र
मसृष्टिवादिनीको अन्यथासार्थकतानहींहै औरप्रतिज्ञाभीब्रह्मके
वंश्यमात्रकोचाहतीहै नकिब्रह्मसेअव्यवहितजन्यत्वको यहअवि
रोधहैअक्रमश्रुतियोंकोबलीयसीक्रमश्रुतिकेअनुसारएकवाक्यता
से व्योमवायुकेद्वारासेतेजकाकारणब्रह्ममेंसमन्वयसिद्धहै ॥

———*———

(अबधिकरण ॥ ५ ॥)

आपः ११

अतस्तथाह्याहेत्यनुवर्ततेआपोतस्तेजसो जायन्तेकस्मात् (तथाह्याह तदपोऽसृजततेति अग्नेरापइतिच सतिवचनेनास्तिसंशय: तेजसस्तुसृष्टिंव्याख्यायपृथिव्या व्याख्याय्यन्नपोंतरीयामीत्यापइतिसूचयांबभूव । भाषा अतिदेश सूच है अथर्वकाजोमुण्डकग्रन्थहै उसकेमन्त्रमें सुना कि जल ब्रह्मज है जैसे एतस्माज्जायतेप्राणोमन:सर्वेन्द्रियाणिचखंवायुर्ज्योतिराप:पृथिवीविश्वस्यधारिणीति फिरतैत्तिरीयमेंअग्निसेजलकाजन्मसुनाहैजैसे अग्नेरापइति प्रत्यक्षमेंअग्निजलकादाहकहै तोकैसेअग्निसेजलजन्माहोगा जैसे सर्पिणीवचोंकोजनतीवोखातीहै चिवृत्कृतअर्थात्स्थूलमेंविरोधहै औरसूक्ष्ममेंबिरोधनहींहै केवलश्रुतिकेअविरोधार्थसूत्रनहींहै किन्तुपञ्चभूतोंकेजन्मक्रमकेनिर्णयार्थहै तिससेतेजोरूपब्रह्ममेंश्रुतिसमन्वयहै ॥

——*——

(पृथिव्यधिकरण ॥ ६ ॥)

पृथिव्यधिकाररूपशब्दांतरेभ्यः १२

ताआपऐक्षन्तवह्व्य:स्यामप्रजायेमहीति ताअन्नमसृजन्तेति जलअन्नकोरचताहै इससुन्नेसेसंशयहुआकिअन्नशब्दसेव्रीहियवादिवाखाद्यरोटीआदिवापृथिवीकहतेहैं लोकप्रसिद्धिसेव्रीहियवादिरोटीआदिग्रहीतव्यहैं वाक्यशेषभीउक्तार्थकोकहिताहै जैसा तस्माद्यत्रक्वचवर्षतितदेवभूयिष्ठमन्नंभवतीति अर्थ वर्षनेसेव्रीहि

यवादिवस्तुतहोतेहैंनपृथिवी ऐसोप्राप्तिसेकहिताहूं किपृथिवीहि जलसेअन्यविवक्षितहै क्युं अधिकारदोरूपवोशब्दांतरसे अधिकार तेजसर्गकाऔरजलसर्गकाहै जैसे तत्तेजोऽसृजततदपोऽसृजतइतिफिरक्रमसेप्राप्तमहाभूतपृथ्वीकासर्गछाड़अकस्मात्व्रीह्यादिकाग्रहन्याय्यनहींहै औररूपभीवाक्यशेषमेंपृथिवीकासर्गदिखाताहै जैसे यत्कृष्णन्तदन्नस्येति अन्नादिमांसादिखाद्यकृष्णहैं यहनियमनहींहै ननुपृथिवीहिकृष्णहै यहभीनियमनहींऔरखतृश्वेतवोअङ्गारवत्रोहितहैमवत्पीतादिक्षेत्रोंकेदेखनेसेयहदोषनहींहै बहुततोपृथिवीकृष्णाहीहैनतैसीश्वेतरक्तहै छाया भीचन्द्रमेउसकीकालीहोपड़तीहैतिससेयहकृष्णाभासाहै जलसेपीछेपृथिवीकाख्यानश्रुतिमेंसिद्धहै जैसे अद्भ्य:पृथिवीति तिससेअन्नहीपृथिवीहै किञ्च तद्यदपांशर आसीत्तत्समहन्यतसापृथिव्यभवदितिच अर्थ सृष्टिकालमेंजोमाडके तुल्यघनीभावथा सोहीकठिनसंघातहुआथा वहीजलोंका कठिनपरिणामपृथिवीहुईथी और पृथिवीसेव्रीह्यादिकासर्गश्रुति दिखातीहै जैसे पृथिव्याओषधयओषधीभ्योऽन्नमितिचदूसरीतिसेपृथिवीकेबोधकप्रकरणहोनेमेंव्रीह्यादिकाबोधदूरगया वाक्यशेषभीअन्नकोवृष्टिजन्यकथनद्वारापृथिवीकोजलत्वसूचनकराताहैपृथिवीअन्नहैपृथिवीत्वसेअन्नवत् यहअनुमानभीहैऔर तित्तिरीयश्रुतिकेअनुसारसे छांदोग्यश्रुतिकाअर्थमाननेसेभूतोंकेसर्गबोधकश्रुतियोंका समन्वयब्रह्ममेंअविरुद्धसिद्धहै तिससेअन्नशब्दकाअर्थपृथिवीहै ॥

—— * ——

(तदभिध्यानाधिकरण ॥ ७ ॥)

तदभिध्यानादेवतुतल्लिङ्गात्स: १३

क्याव्योमादिभूतआपहीअपनेविकारोंकोसृजतेहैं आहोस्वि त् ईश्वरहीतिस२रूपसेतिष्ठमानअभिध्यानसे तिस२विकारको सृजताहै इससंदेहमेंपहिलेप्राप्तहै कि वेआपहीसृजतेहैं किससे नानाआकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्ने रापअद्भ्यः पृथिवीति इससे उनकोस्वातन्त्र्यसुन्नेसे ननुस्वतन्त्रअचेतनोंकोप्रवृत्तिकानिषेधक राथा तोवेस्वतन्त्रतासे उपादानवोकर्तानहींहोसक्तेहैं उक्तदोषन हींहै तत्तेजऐक्षत ताआपऐक्षन्तेति इनमेंभूताभिमानीदेवता केद्वाराभूतोंकोभीचैतनसुन्नेसेजैसेमनुष्यादिशब्दोंसेतिस२देहके अभिमानीजीवकहातेहैं तोवेअपने२कार्यकेजन्मानेमेंनिरपेक्षहैं एवंतदात्मानंस्वयमकुरुत इसमें ब्रह्मभीनिरपेक्षसबकाकर्तासुना है फिरभूतकर्तृश्रुतिवोईश्वरकर्तृश्रुतिपरस्परविरुद्धहैंजैसेव्योमा दिरूपब्रह्मसबकाउपादानहै तैसेव्योमादिअभिमानीदेवताजीव रूपब्रह्मकोकर्तृत्वहै इसपरम्परासेईशकर्तृश्रुतिसेविरोधनहींहै स्वयंयहविशेषणईश्वरांतरकेनिरासार्थहै न जीवभावकीअपेक्षा केनिरासार्थयहएकदेशिसिद्धान्तहै उत्तरइसकासुनो ईश्वरतिस २रूपमेंस्थिततिस२विकारकोअभिध्याहीसेसृजताहै कुतः तल्लि ङ्गात् व्योमादिशब्दोंसे देवताकोलक्षणानहींहै मुख्यार्थमेंवाधक केअभावसे तिससे जड़भूतकर्तानहींहैंतोईश्वरानपेक्षकर्ताकैसे होंगे यद्यपिदेवताकर्ताहोसक्ते हैंतथापिवेईश्वराधीनसुनेहैं तो जोचेतनस्वतन्त्रनहींतोजड़कोक्याचर्चाहै तिस२जड़ात्मासेस्थि तब्रह्मउपादानहै औरजीवकेबिनाईशसबकाकर्ताहै नकिजीव द्वाराईश्वरसबकाकर्ताहै ईशकासर्वनियंतृत्वलिङ्गसे औरप्रकर णसेभीईशसाक्षात् सबकाकर्ताहै तथाहिवेदः यःपृथिव्यांतिष्ठन् पृथिव्याअन्तरोयंपृथिवीनवेदयस्यपृथिवीशरीरंयःपृथिवीमन्तरोय मयतीति यहईश्वरद्वाराभूतोंकीप्रवृत्तिदिखाताहै औरभीईश्वर

कोसर्वात्मतादिखाता है सोकामयतबहुस्यांप्रजायेयेतिप्रस्तुत्यस
च्चत्यच्चाभवत् तदात्मानंस्वयमकुरुतेति और जो जलतेजकाईक्षण
सुनाहै सोईश्वरकेअन्तर्यामिभावकेसम्बन्धसेहै और सम्बन्धिईक्ष
णहोसेउनकोचेतनतावोस्वतन्त्रतानहींहै तत्तेजऐक्षत इससेसु
नाईक्षितापरहोहै क्युं दर्शनप्रकरणमे अन्य ईक्षिताकेनिषेधसे
जैसेनान्योतोस्ति द्रष्टेति तदैक्षतबहुस्यांप्रजायेय इससेसत्ईक्षि
ताहीप्रकृत है तिससेईश्वरपदार्थनाशकेडरसेईश्वरसेअन्यस्वत
न्त्रनहींहै तोईश्वरकर्तृत्वश्रुतिकाभूतकर्तृत्वश्रुतिसेविरोधनहींहै
यहनिष्कृष्टहै सूत्रयोजनाकीरीति स ईश्वरस्तत्तदात्म नास्थितो
पिसाक्षादेवसर्वंकर्तांतस्यांतर्यामित्वलिङ्गाज्जीवत्व द्वाराकर्तृत्वं
नामजीवस्यैतत्कर्तृत्वमित्यन्तर्यामिणः कर्तृत्वासिद्धेर न्तर्यामित्व
योगात्तदभिध्यानादीश्वरेक्षणादेवभूतेषुश्रुतेक्षणोपपत्तेश्चेति ॥

(विपर्य्ययाधिकरण ॥ ८ ॥)

विपर्ययेणतुक्रमोतउपपद्यतेच १४

भूतोंकेजन्मक्रमकोचिन्ताकोअवअप्ययक्रमचिन्ततेहैं संस्था
तेनसङ्कलनं विपयर्येणतुप्रलयक्रमोऽतउत्पत्तिक्रमाद्भवितुमर्हति
तथाहिलोकेदृश्यतेयेनक्रमेणसोपानमारूढस्ततोऽवविपरीतेनक्रमे
णावरोहतीति मृदजाःघटहिमादयोऽप्ययकालेमृदब्भावमपियं
तीति अतश्चोपपद्यतएतत्यत्पृथिव्यद्भ्योजातासतीस्थितिकाल
व्यतिक्रांतावपोपीयादपस्तेजसोजाताःसत्यस्तेजोपीयुः क्याअ
नियतक्रमसेअप्यय उत जन्मक्रमसेउतजन्मक्रमसेविपरीतक्रम
हैजन्मस्थितिलयजैतोनेभीभूतोंकेब्रह्माधीनसुनेहैं जैसे यतोवा
इमानीतिइनश्रुतियोंसेअप्ययकानियमनहींहै अविशेषसेयहप्रा

महै अथवा जन्मक्रमसुन्नेसे अप्ययभीक्रमकोचाहताहै तिससेजन्म
क्रमही इसप्राप्तिसेकहिताहूं किजन्मक्रमसेविपर्ययद्वाराअप्यय
क्रमहोनेकोयोग्यहै तैसाहीलोकमेंदेखतू जिससेतूनिराकांक्षहो
जावे जिसक्रमसेसीढ़ीपरचढ़ताहै तिससेउलटेक्रमसेउतरताहै
औरभीदेखतूकिमट्टीसेजन्मेघटशरवादिअप्ययकालमेंमट्टीहीहो
तेहैं औरपानीसेजन्मेंहिमकरकापानीहीहोतेहैं इससेयहभीयु
क्तहैकिपृथिवीजलसेजन्मीस्थितिकालकेव्यतिक्रममेजलहीहोऔ
रतेजसेजन्माजलजलहीमेअप्ययहो ऐसेक्रमसेसूक्ष्मवासूक्ष्मतरअ
नन्तर२अप्ययहो सबकार्यकापरमकारणसूक्ष्मब्रह्ममें अप्यय जा-
नो अपनेकारणकोउल्लंघ्यकेकारणोंकेकारणमेंकार्यों का अप्यय-
न्याय्यनहींहै घटनाशमेंमट्टीकीउपलब्धिसेऔरजन्मक्रमजन्महो
मेंसुननेसे अप्ययमेंहोनेकोयोग्यनहींहै जन्मक्रमअयोग्यतासेअप्य
यमेंनहींजासक्ताहै कार्य की स्थिति मेंकारणकाअप्यययुक्तनहींहै
कारणकेअप्ययमेंकार्यकीस्थितिनहींहोसक्तीहै औरकार्यकेअप्यय
मेंकारणकीस्थितियुक्तहै ऐसाहीमृदादिमेंदेखिसे भावार्थः जन्मक्र
मतुल्य लयक्रम भी बुद्धिमें पड़ा तिससे उसका विचार करा
जन्मक्रमके विपरीतक्रमके निर्णयसे सिद्धांत में भूतों का प्रति
लोमसे लयध्यानपूर्वक प्रत्यक्ब्रह्म में मन का समाधान फल
है और पूर्वपक्ष में कारणनाश से कार्यनाश है तो सबकेलय
का आधार ब्रह्म भी असिद्ध है तिससे उक्त समाधिको असि-
द्धिहै किसीके मतमें महाभूतोंका नाश नहीं तो क्रमचिन्ताभी
नहींहै किसीकेमतमेजन्मसुननेसेउनकानाशभीउचितहैऔरकि
सीमतमेब्रह्मवत्वेभीअजन्माहैंतिससेक्रमचिन्ताहैलोकमेंदेखतू
कारणकेहोतेपरकार्यनाशहोताहै औतजन्मक्रमनाशमेंग्रहीतन
हींकिन्तुलौकिकश्रुतिकाअर्थलोकमेंदेखीवस्तुकेबोधकेआधीनहै

तोऔतसेलौकिकअन्तरङ्गवोयोग्यता।सेग्राह्यहै कारणहीकार्यरू-
पसथापितक्रियाथा तदनन्यत्वन्यायसे स्वरूपनाशसेकार्यकीच्चण
भरभीस्थितियुक्तनहींहैकार्यकेनाशमेकारणकाठहिरना।हैजैसेघ
टनाशसेमाटीऔरकारणकेनाशसेकार्यनहींठहिरता जैसे मा-
टीकेनाशसेघट तिससेजन्मक्रमअयोग्यहै लयमेंलौकिककेअनु-
रोधसेफिरचाहनानहींहै सारप्रणाडीसेसबलयकाआधारब्रह्महै
नसाक्षात् घटफूटेपरमट्टीमेंमिलनेसे ॥

——*——

(सृष्टिक्रमभङ्गाधिकरण ॥ ६ ॥)

अन्तराविज्ञानमनसीक्रमेणतल्लिङ्गा·दितिचेन्नाविशेषात् १५

भूतोंकाजन्मनाशअनुलोमप्रतिलोमक्रमसेकहाथा वोजन्मआ
त्मादिलयआत्मान्तभीकहाथा सुनोकरणाभाववादिन्इन्द्रियम
नबुद्धि इनका होनाश्रुतिमेंप्रसिद्धहै जैसे वुद्धिन्तुसारथिंविद्धिम
नःप्रग्रहमेवचइनलिङ्गोंसेइनकाभीकिसीकेबीचमेंजन्मनाशक्रम
ग्राह्यहैसबवस्तुब्रह्मजकेस्वाकारसे औरभीआथर्वणमेंभूतवाआ
त्माकेबीचजन्मप्रकरणमेंकरणोंकोपढ़ाहै जैसेएतस्माज्जायतेप्रा
णोमनःसर्वेन्द्रियाणिच खम्वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीविश्वस्यधारि
णीतिइसमेसेन्द्रियबुद्धिवोमनपठितहै तोकरणक्रमसेपूर्वक्रमका
भङ्गहैयहशङ्काशूनकाअंशार्थहैकरणभूतोंकेअनन्तरहैं भौतिकता
सेयहमतकहोभौतिकमेमानाभावसेतोआत्मासेपूर्वव्योमजन्मा-
पीछेवायुइसक्रमका।आत्मासेकरणजन्मफिरभूतजन्मेंइस क्रम से
तीत्तरीवोअथर्वणकेविरोधसेब्रह्ममेसमन्वयनहींहै यहपूर्वपक्ष
काफलहै सिद्धांत आत्मनआकाश इसतित्तिरिश्रुतिमेंकार्यका
रणद्वाराअर्थसेक्रमकाभानहै उसकाआथर्वणसेबाधनहींहै अर्थ

क्रमकाविरोधिक्रमविशेषनसुननेसे औरअथर्वकापाठमात्रअर्थक्र
मकाशेषहै उसकेशेषीकाबाधकनहींअयोग्यतासेइससेअर्थक्रम-
केअविरोधसेपाठजानों जैसे भूतोंकेपीछेकरणजन्मेहैं किन्तुय-
दिकरणभूतजहैं तदाभूतजन्मनाशसेवोउनकाजन्मनाशहै औ-
रजन्मनाशकाक्रमान्तरसृग्यनहींहै करणों का भूतज में लिङ्ग है
जैसे अन्नमयंहिसोम्यमनःआपोमयःप्राणःतेजोमयीवागिति अ-
र्थप्राणविकारीनहींयहमतकहो करणविभक्तासेकार्यहै फिर
कारणकीचाहनासेअन्नमयकहाहै.जअन्नकेखानेसेवाग्प्राणमन
कीवृद्धिहै तेजोवैघृतंइसश्रुतिसेघीतेजहै इनकेअभावसेउनका
नाशहै यहलोकवेदसिद्धहै तोविवादकाअवसरनहींहै अथवा-
प्राणइन्द्रियमनभूतजहैं स्थूलभूतोंके आधीनवृद्धिमत्तासेदेहवत्
आथर्वणमेंभूतोंकावोकरणोंकापृथक्जन्मकहनाविप्रभिन्न न्या-
यसेहै अथवाकरणअभौतिकहैं तोभीभूतजन्मक्रमकरणोंसेनहीं
मिलता है प्रथम करण जन्मे पीछे भूत वा प्रथम भूत जनमें
पीछेकरण आथर्वणमे भूतवोकरणों का पाठ क्रममात्रहै नज-
न्मक्रमहैतैसेही अन्यत्रभीभूतक्रमसेकरणक्रमपृथग्होपढ़ाहैप्रजा
पतिर्वाइदमग्र आसीत्सआत्मानमैक्षतसमनोऽसृजततन्मनएवा-
सीत्तदात्मानमैक्षततद्वाचमसृजतेत्यादि तिमसेभूतजन्मक्रमका
भङ्गनहींहै स्थूलजन्मसेप्राक्प्रजापतिः सूत्रात्माथा सूक्ष्मभूतरू
पप्रजापतिसर्गप्रथमहैफिरमनआदिसर्गभूतसर्गमेंघुसाहै इसक्रम
काभान है ऐसेभूतवोकरणजन्मश्रुतिके अविरोधसेब्रह्मसेसमन्व
यसिद्धिसिद्धान्तकाफलहै ॥

जीवजन्मादिभङ्गाधिकरण ॥ १० ॥

चराचरव्यपाश्रयस्तुस्यात्तद्व्यपदेशो भाक्तस्तद्भावभावित्वात् १६

तत् कारणकेनिर्णयार्थभूतश्रुतिविरोधदूरकरअवजीवश्रुतिविरो
धपादपूर्तिलोत्वं अर्थात् जीवकीशुध्यर्थंजीवश्रुतिविरोधदूरकरते
हैंजीवकाभीजन्मनाशजन्माचैचमराचैच ऐसे लोगोंकेकहिनेसे
वाऔरजातकर्मादिसंस्कारोंके विधानसेहोऐसाकिभीकाभ्रमउ-
सकोहमछुटातेहैंजीवकाजन्मनाशनहींहैशास्त्रफलसम्बन्धकोसि
द्धिसे जोजीवदेहकेनाशसे नष्टहै देहांतरमेंप्राप्तइष्टकीप्राप्तिवाअ
निष्टकेवारणार्थविधिवोप्रतिषेधव्यर्थहोश्रुतिसेसुनतेभीहैं किजीव
सेत्यागीदेहमरतीहैजैसेजीवापेतं वावकिलेदंम्रियतेनजीवोम्रिय
तइतिननुतुमनेलौकिकजननमरणकी कथाजीवकीदिखायीथी
सच्चहैदिखायीथीपरगौणीहै फिरकहोकिकिसकेआश्रयवहमुख्य
हैकहिताहूंस्थावरजङ्गमजन्मतेमरतेहैंइससेउनकेजननमरणमेंज
ननमरणशब्दमुख्यहैंउनदेहोंमे स्थितजोजीवात्माउसमेगौणहैदे
हकेप्रादुर्भाववोतिरोभावमेजननमरणशब्दकहेजातेहैं नउनकेअ
भावमेदेहसेऔरठौरजीवजावेतामृतकिसीनेनदेखाहै श्रुतिभी
देहकेसंयोगनिमित्तजननशब्दवोदेहकेवियोगनिमित्तसेमरणश
ब्दकोदिखातीहै जैसेसवाअयं पुरुषोजायमानःशरीरमभिसंपद्य
मानःसउत्क्रामन्म्रियमाण इति चजातेष्टिश्राद्धादिविधानभीज
न्मोपाधिसेहैंनकिजीवकेसाक्षातनिकसेजीवसेजन्माजीवकाज
न्मपरसेव्योमादिइवहैवानहींयह अगिलेसूत्रमेंकहेंगेऔरजीवकी
देहाश्रयस्थूलजन्ममरणनहींहैयहइससूत्रसेकहाथामारजीवोन-
जायतेम्रियते इस जीवाजत्ववादिनीकाजातेष्ट्यादिसे विरोध है
पूर्वपक्षमेजीववोब्रह्मकोऐक्यअसिद्धहै सिद्धान्तमेंऐक्यसिद्धहै तो
जीवानाद्यनन्तत्वश्रुतिकाविरोधनहींहैयहांभीसमुझोकिजीवेशा
दिसबव्यवहारसृष्टिकेपीछेविचाराहै ॥

———*———

कृतनाशाकृतागमभङ्गाधिकरण ॥ ११ ॥

नात्माश्रुतेर्नित्यत्वाच्चताभ्यः १७

कर्मफलसम्बन्धिशुकसादिइंद्रियपिंजराकाअध्यक्षआत्माजी
वनामहैं सोक्याव्योमादिवत् ब्रह्मसे जन्मताहै आहोस्वित्ब्रह्म-
वत्नहींजन्मताहै यहश्रुतियोंकीविप्रतिपत्तिहै किसीमें अग्नि-
विस्फुलिङ्गादिकेदृष्टांतोंसेजीवात्माकापरब्रह्मसेजन्मपढ़ाहैऔ
रकिसीमेंअविकृतब्रह्मकाकार्यमेप्रवेशसे जीवभावका ज्ञानज-
तायाहै जन्मनहींपढ़ाहै इससंशयसेप्रथमप्राप्तहुआ किजीवज
न्मताहै किससे एककेबोधसेसबबोधितहैं यहप्रतिज्ञा।तोसच्चीहो
जोसबवस्तुजातब्रह्मजहो जीवको तत्वान्तरमानेमेंइसकीहानि-
हो जीवकोपरकेलक्षणभेदसेअविकृतपरात्मा।जीवनहींकहिसक्ते
हो अपहतपाप्मत्वादिधर्मोंपरहै औरपाप्मत्वादिधर्मोंजीवहै
औरविभागसेजीवविकारहै जैसेव्योमादिविभक्तहैंतेतेसबविका
रहैं जीवकोव्योमादिका जन्मज्ञातहै जीवभीपुण्यअपुण्यकर्मोंहै
सुखदुःखयुक्प्रतिदेहमेविभक्तहै तिसकाभीप्रपञ्चजन्मकेसमयमे
जन्महोनेकोयोग्यहै अपिचयथाग्नेःक्षुद्राविस्फुलिङ्गाव्युच्चरंत्येव
मेवास्मादात्मनःसर्वेप्राणाइतिइससेप्राणादिभोग्यजातकासर्गको
सृजकेभोक्ताआत्माओंकापृथक्सर्गकहाहै जैसेसर्वएतआत्मानो
व्युच्चरंतीतिऔरजीवोंकाजन्मनाशकहाहैजैसे यथासुदीप्तात्पाव
कादिस्फुलिङ्गाः सहस्रशःप्रभवन्तेसरूपास्तथाऽक्षराद्विविधाःसो
म्यभावाःप्रजायन्तेतत्रचैवापियन्तीति अर्थ भावाअर्थात्जीवचैत
न्ययोगसेजीवपरसरूपहैं आत्मनआकाशःसंभूतः इसमेअश्रुत-
जीवजन्मअन्यत्रश्रुतको वारणनहीं करसक्ताहै अधिककोअविरु
द्धअर्थश्रुत्यन्तरसेभीसर्वत्रउपसंहर्तव्यहै विकारप्रपञ्चरूप से स्वा-
त्माकोकरताथा ऐसेहीविकारजीवरूपसे प्रवेशहै यहप्रवेशश्रुत्य-
र्थहै जीवकल्पकेबीचनहींजन्मताहै यह अजत्वादिश्रुत्यर्थहै त-

त्वमसीतिकाअर्थमठघटकेतुल्यअभेदहै तिससेमतहोदेहकेजन्म
नाशसेजीवकाजन्मनाशदेहान्तरभोग्यस्वर्गादिहेतुविधिकेअस-
म्भवसेकल्पकेआद्यन्तमेंव्योमवजीवकेवैक्युंनहोउनकेसम्भवसेजी-
वजन्यहै सिद्धांत जीवनहींजन्मताहै किससे बहुतठौरमेंजन्म
प्रकरणमेंजीवकेजन्मकाश्रवणनहींहै ननुकहींनसुनाअन्यअसुने
कावारणनहींकरताहै यहतुमनेकहाथा सच्चकहातोथा फिरज-
न्महीजीवकासम्भवनहींहै यहकहिताहूं किससेनित्यअजअवि-
कारीब्रह्मकोजीवरूपसेअवस्थानऔरब्रह्मरूपसेहै ऐसेकाजन्मयु-
क्तनहींहै श्रुतिगणसुनो नजीवोम्रियतेसवाएषमहानजआत्मा
ऽजरोऽमृतोऽभयोब्रह्मअजोनित्यःशाश्वतोयंपुराणः अनेनजीवे-
नात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणिसएष इह प्रविष्टआनखा-
ग्रेभ्यःतत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि अयमात्माब्रह्मसर्वानुभूरिति जेनि-
त्यतावादिनीजीवकेजन्मकोवारतीहैं ननुतुमनेविभक्ततासेवि-
कारऔरविकारसेजन्मकहाथासच्चहै सुनो,जीव का विभागस्व-
तःनहींहै बुध्यादिउपाधिकेनिमित्तसेहैजैसेव्योमकाघटादिकेसं-
बन्धनिमित्तसेएकोदेवःसर्वभूतेषुगूढ़ःसर्वव्यापीसर्वभूतान्तरात्मा
औरवेदहै सवाअयमात्माब्रह्मविज्ञानमयोमनोमयः प्राणमयश्च-
क्षुर्मयःश्रोत्रमयइतियहअविकृतसत्एकब्रह्मकोअनेकबुध्यादिमय-
त्वादिदिखाताहै जीवस्वरूपकेअज्ञानसेबोवुध्यादिकेआधीनसेभे-
दकर्तृत्वादिकीगौणतासेप्राचुर्यार्थमयट्हैनविकारार्थजैसे स्त्रीम-
योजाल्मइसकाहिनेसेस्त्रीवशप्रतीतहैनस्त्रीकोविकार उपाधिके
जन्म नाश से जीवके वैसुनतेहैं प्रज्ञानघनएवैतेभ्योभूतेभ्यःसमु-
त्थायतान्येवानुविनश्यतिनप्रेत्यसंज्ञास्तीति अर्थदेहाकारपरिण-
तभूतोंसेजन्मिकेतिनहीमेंलीनहो पीछेसे नष्टहोता है औपाधि-
कमृत्युकेआगेसंज्ञानहींरहता है उपाधिनाशसेविशेषज्ञानकाअ-

भावहीसंज्ञाकाअभावहै औरआत्मरूपविज्ञानकाअभावनहींहै विज्ञानघनसेमरेपीछेसंज्ञानहींरहतीहै इसकहिनेसे मुझकोमो हभ्रांतिकीतुमनेकहातुमारेकहे कोमें नहींसमुझीहूं अपनेवचन काअर्थतुमकहोयहमैत्रेयीकोप्रश्नथीमैंमोहकरवाक्यनहींकहिता हूं जीवपरिणामीवोविनाशीनहींअविनाशीहै फिरकैसे कहाकि मरेपीछेसंज्ञानहींरहतीहैसुनोविषयोंसे असङ्गरहिनेसे संज्ञाका अभावकहाथाजीवब्रह्मकालक्षणभेदउपाधिनिमित्तसेहै अतऊ र्ध्वंविमोक्षायैवब्रूहीतिच। इसने विज्ञानमयहीकोसबसंसारधर्मों केनिराससेपरमात्मभावकहा।हैबिम्बप्रतिबिम्बके तुल्यविरुद्धधर्म भेदअध्याससेहैजीवविकारहैमुक्तिके योग्यनहींतिससे तत्त्वमसि अखण्ड।र्थपरहैजन्मादिकाअध्याससे अनुवादकर्ताहै फलबलसे जीवनित्यत्वादिनीवलीयसीहै इस अविरोधसेआत्माकाजन्म नाशनहींहै ॥

सुषुप्तिमाक्षिमिध्यधिकरण १२

ज्ञोतएव १८

आत्मास्वप्रकाशवोअनित्यज्ञानवान्कहिती श्रुतियोंका विरोधनिरासार्थहै जैसेआत्मैवास्यज्योतिःपश्यंश्चक्षुःशृण्वन्श्रोत्रं इसलोककाचक्षुर्द्रष्टावोश्रोत्रश्रोताहै अर्थ क्या जीवकणभुजमत केनाईआगन्तुकचेतनवोस्वतो अचेतन आहोस्वित्सांख्यमतकेना ईनित्यचेतनस्वरूपहै ऐसेवादियोंकेविवादसे संशयहै आत्माका आत्ममनः संयोगजआगन्तुकचैतन्यहै वह्निघटसंयोगजरोहिता दिगुणवत्नित्यचैतन्य मे सुप्तमूर्छितअपस्मारितकोभीचैतन्यहो इनकोपूछेसेकहितेहैं किहमकोकुछचेतनथाफिरस्वस्थचेतदेखते हैंइसकादाचित्कचैतन्यसे आगन्तुकचैतन्यआत्मा।है अनुमान साधनाधीनज्ञानहोनेसेनहींस्वप्रकाशजीवहै व्यतिरेकदृष्टांतमेंई

श्वरवत् इसनिश्चयकाबाधसुनो त्व: नित्यचैतन्यजीवहै अतए
जिससेजन्मतानहींहै अविकृतपरब्रह्महीउपाधिकेसङ्गसेजीव
पमेस्थितहै और ब्रह्मकाचैतन्यस्वरूपपढ़ाहै श्रुतिमें विज्ञान
नन्दंब्रह्म सत्यंज्ञानमनन्तं ब्रह्म अनन्तरोऽवाह्य:कृत्स्न:प्रज्ञान
नएवेति फिरब्रह्महीजीवहै तिससेजीवभीनित्यचैतन्यस्वरूप
अग्नग्रोष्णाज्ज्योतिर्वत् केवलब्रह्मजीवकेअभेदसेस्वप्रकाशमतस
क्योंकिन्तुयोयम्विज्ञानमयइसप्रकरणमें श्रुतिभीहैं असुप्त:सुप्तान
भिचाकशीतिअत्रायंपुरुष:स्वयंज्योतिर्भवतीति नहि विज्ञातु
ज्ञातेर्विपरिलोपोविद्यतइति अर्थअसुप्त:स्वयंभासमानआत्मा
सुप्तान् नष्टव्यापारवागादिइन्द्रियोंकोदेखअभिचाकशीति स्व
केअर्थकोदेखताहैयहांस्वप्नमेंबुद्धिकेसाचिकाविनाशनहींहैअथ
वेदेदञ्जिघ्राणीतिसआत्मेतिच सवइन्द्रियोंसेजन्यगन्धादिज्ञान
केअनुसन्धानसिध्यर्थआत्माज्ञानरूपहै यदिकहोकिनित्यचैतन्य
रूपमेघ्राणादिव्यर्थहैं सोनहीं गन्धार्थअन्त:करणकीवृत्तिइष्टहै
सोकहाश्रुति ने गन्धायघ्राणमित्यादिसुप्तादिदशामेंआत्माकेहो
नेपरभीचैतन्यकेअभावसे आत्माचिद्रूपनहींहै इसकानिरासश्रु
तिनेहीकहाहै सुषुप्तिकेप्रकरणमें यद्वैतन्नपश्यतिपश्यन्वैतन्नपश्य
ति नहिद्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपोविद्यतेअविनाशित्वात् नतुतद्द्विती
यमस्तिततोन्यद्विभक्तंयत्पश्येदित्यादि सुषुप्तिमेंअचैतयमानताबि
षयोंकेअभावसेहै नचैतन्यकेअभावसे जैसे व्योमाश्रयप्रकाशका
प्रकाश्यकेअभावसेअनभिव्यक्तिहै नस्वरूपाभावसे तद्वदिदं आ-
त्मानज्ञानंद्रव्यत्त्वात् यहतर्कश्रुतिविरोधमेंआभासहै शृखवन्श्रो
त्रमित्यादि इनअनित्यज्ञानवादिनोंकाअर्थवृत्तिविषयज्ञानपर-
है सार निरवयवात्मा अनित्यगुणीनहींमनसेसंयोगायोगसे न-
स्वसमवेतज्ञानवेद्यहै समवायकेअभावसेऔरकर्मकर्त्ताकेविरोध

सेकिञ्चआत्माहीज्ञानहै ज्ञानकोएकदेशिमानकेलाघवसे औरवृत्ति-
मनकेपरिणामसेजड़है इससेहमकोज्ञानदोकागौरवनहींहै वै-
शेषिकादिकीतर्कश्रुतिविरोधसेआभासहै नाकितर्कसे तिससे
हमनिश्चयकरतेहैं किनित्यचैतन्यस्वरूपहीआत्माहै ॥

जीवविभुत्वाधिकरण १३

उत्क्रांतिगत्यागतीनां १९

उत्क्रांतिगत्यागतिश्रवणानितुजीवस्यपरिच्छेदंप्रापयन्ति क्या
स्वप्रकाशसेकुछुवहिष्ठपरिमाणभीतर बाहिरजीवकाहै वानहींय
हचिन्ताहै क्याअणुउतमध्यम आहोस्वित्महत्है ननु तुमने क
हाथाकिजीवब्रह्मनित्यचेतनअनन्तहै फिर कैसेजीवकेपरिमाण
कीचिन्ताकाअवतारहै सत्यहीहै फिरकहताहूं सोसुनो देह
सेनिकलनाबोजानाआनासुननाजीवकोपरिच्छिन्नजनाताहै नके-
वलइनहीसेपरिच्छिन्नहै किन्तुअणुभीश्रुतिमेंपढ़ाहै जैसे एषोऽणु
रात्मेति इससबकोअनाकुलताकोसिद्ध्यर्थइसअधिकरणकाप्रार
म्भहै पूर्व उत्क्रान्तिगतिआगतिइनकेसुननेसे जीवअणुहै सयदा-
स्माच्छरीरादुत्क्रामतिसहैवैतैःसर्वैरुत्क्रामतीति येवैकेचास्मात्लो-
कात्प्रयन्तिचन्द्रमसमेववतेसर्वेगच्छन्तीतितस्माल्लोकात्पुनरेत्यस्मैलो-
कायकर्मणइति इनसेजीवपरिच्छिन्नहीप्राप्तहै विभुकाचलनन-
हींकरसक्तेहैं फिरदेहसमआत्माआर्हतपरीक्षामेंनिरासकरा-
था मुमूर्षुजीवबुध्यादिसंयुक्तचन्द्रलोकसेइसलोककी लौटि आ-
ताहै कर्मकरनेकोप्रेहि २पूर्वेभिःपथिभिरित्यादिमन्त्रोंसेभीजीवप
रिच्छिन्नहीहै तिससेजीवअणुप्राप्तहै ॥

स्वात्मनाचोत्तरयोः २०

उत्क्रांतिरुत्तरयोर्गत्यागत्योःस्वात्मना कर्त्रासम्बन्धादणुत्वमिति
सूत्रयोजना ॥

उत्क्रान्तिमचलनकोभीयासस्वाम्यनिवृत्तिकेतुल्य देहस्वाम्य-
निवृत्तिहै कर्मक्षयसेऔरनदेहसेनिर्गमयहकिसी की कल्पनाहै
अचलकोगत्यागतिकासम्भवनहींहै गमनकर्त्ताकेआश्रितलोकमें
प्रसिद्धहै कर्त्तामें संयोगविभागरूपअतिशयकेहेतुसे अमध्यमप-
रिमाणसन्तेजीवअणुहै गतिमत्तासेपरमाणुवत् स्वाम्यनिवृत्ति-
मात्रवुहनहींकिन्तुदेहसेअपसृप्तिप्रतीतहै जोदेहसेनिर्गतहै उस
कोगत्यागतिभीनहो देहकेजिनप्रदेशोंसेनिकलताहै तेहीअव-
धिसुने है जैसे चक्षुषोवामूर्ध्नोवान्येभ्योवाशरीरदेशेभ्य इति अ-
र्थ सुखादिसेयहजीवजाताहै सएतास्तेजोमात्राःसमभ्याददानो
हृदयमेवान्ववक्रामति शुक्रमादायपुनरेतिस्थानमिति अर्थ जी
वस्वापादिमेइन्द्रियोंकोलेकेहृदय मे जाता है फिरशुक्रप्रकाशइ-
न्द्रियवर्गकोलेकेजागरितस्थानमेंआताहै इसनेआंतरदेहमेंदेही
केवेकहेहैं तिससेजीवअणुहै ॥

नाणुरतच्छ्रुतेरितिचेन्नेतराधिकारात् २१

संक्षलेनसङ्कलनं अथापिस्यान्नाणुरयमात्मा कस्मात् अतच्छ्रु-
तेःअणुत्वविपरीतपरिमाणत्वश्रवणादित्यर्थः सत्यंज्ञानमनन्तंब्र-
ह्मेत्येवंजातीयकाहिश्रुतिरात्मनोऽणुत्वंविप्रतिषिध्येतेतिचेन्नैषदो
षःकस्मात्इतराधिकारात् ब्रह्मप्रकरणात् भाषा जीवअणुनहीं-
महान्सुननेसे जैसे सवाएषमहानजआत्मा योयम्विज्ञानमयः-
प्राणेषु आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः इति महत्त्वश्रुतिब्रह्मप्रकरण-
मेहै क्युं वेदान्त में प्रधान ब्रह्महो प्रकृतहोने से और विरजः
परआकाशादिति इसविधानसेतहांरविशेषाधिकारब्रह्महीका-
है ननुयोयम्विज्ञानमयःप्राणेषुइसमें जीवहीमहान्कहिनेसेवि-
ज्ञानमयश्रुतिमेब्रह्मप्रकरणकाबाधकिया सोनहींअणुजीवकाब्र
ह्मसेभेदाभेदमानअभेददृष्टिसेमहान्कहाहै जैसे बामदेवकोस-

बरूपकहाहै ऐसाहीदेखा तिससेप्राज्ञकेअर्थमहान्परिमाणका अणुजीवसेविरोधनहींहै ॥

स्वशब्दोन्मानाभ्यांच २२

इतश्चाणुरात्मा यतःसाक्षादेवास्याणुत्ववाचीशब्दःश्रूयते तथोन्मानमपिजीवस्याणिमानङ्गमयति ॥

प्राणसम्बन्धसेसाक्षात्जीवअणुसुनते हैं एषोणुरात्माचेतसा वेदितव्योयस्मिन्प्राणःपञ्चधासंविवेशेति और अत्यन्तअल्पमानसेभीअणुहै बालाग्रशतभागस्यशतधाकल्पितस्यचभागोजीवः सविज्ञेयःसचानंत्यायकल्पतइति आराग्रमात्रोह्यवरोपिदृष्टइति ननुअणुजीवदेहकेएकप्रदेशमेंपड़ाहोनेसेसबदेहमेंउपलब्धिविरुद्धहो देखतेहैंगङ्गानहानेवालेकेसबअङ्गोंमेंशैत्योपलब्धि निदाघमेंचलनेवालेकेसबदेहमेतापोपलब्धि इसकाउत्तरपढ़ताहै सूत्रकार ॥

अविरोधश्चन्दनवत् २३

जैसे देहमेंएकठौरलगाचन्दनबिन्दुसबदेहकोठण्ढ देता है तैसेजीवएकठौररहाहुआसबदेहमेंज्ञानकरेगा सबदेहव्यापित्वचाकाआत्मासेसम्बन्धहै तिससेछूनेसेज्ञानकरणकीमहिमासेजीवभीव्यापिकार्यकर्त्ताहै सम्बन्धत्वगवयविमेंहै औरअवयवीएकहै तिससेआत्मसंयोगसबत्वचामेंहै ॥

अवस्थितिवैशेष्यादितिचेन्नाभ्युपगमाद्धृदिहि २४

जोचन्दनबिन्दुवत्अविरोधकहाथा सोअयुक्तहै दृष्टांतऔरदार्ष्टान्तिककीअतुल्यतासे देहकेएकठौरमेंजोजीवसिद्धहो तोचन्दनदृष्टान्तहो यहप्रत्यक्षदेखतेहैं किवुहदेहमेंएकठौरलगास-

सकोसुखदेताहै फिरजीवकासबमेंउपलब्धिमात्र है औरनएक-
ठौरठहिरना वुहअनु*मेयहै फिरउसकासम्भवनहींहै व्यभिचा-

* आत्माल्पःव्यापिकार्यकारित्वाच्चन्दनबिन्दुवत् ॥

रसे क्या जीवकोसबदेहकीचेटनात्वचाकेतुल्य सबदेहमें व्यापि-
सेहै या क्या विभुसेव्योमकेतुल्य है अथोस्वित् चन्दनबिन्दुकेतु-
ल्यएकदेशस्थअणुसेहै यह संशयहै परिहारकहिताहूं यह दोष
नहीं किससे वेदान्तमेंदेहकेएकदेशहृदयमेंजीवपढ़ाहै हृदिह्ये-
षआत्मा सवाएषआत्माहृदिकतमआत्मेतियोयम्विज्ञानमयःप्रा
णेषुहृद्यन्तर्ज्योतिःपुरुषःइति तिससेदृष्टांतदार्ष्टान्तिककोअवैष-
म्यसेयुक्तहै अविरोधचन्दनवत् ॥

गुणाद्वालोकवत् २५

जैसे दीपादि एकठौर धरे सब घरकोप्रकाशतेहैं तैसेहीअ
णुजीवकाचैतन्यगुणसबदेहमेंकामकर्ताहै यहमतांतरहै होक-
दाचित्सबदेहमेंसुखसावयवचन्दनकेसूक्ष्मअवयवोंकेफैलनेसेफि
रअणुजीवकेतोअवयवहीनहीं तो कैसेसबदेहमेंफैलेंगे इसशङ्का
सेकहाथा किगुणाद्वालोकवत् ज्ञानञ्चगुणिव्यतिरिक्तदेशव्यापि
गुणत्वाद्रूपवत् फिरकैसेगुणगुणीकोछाड़औरठौरठहिरेगा पट-
काशुक्लगुणपटकोछाड़घटमेंनहींदेखतेहैं यदिकहोतुमकिदीपप्र
भावत्हो सोभीनहीं प्रभाभीद्रव्यहै निबिडावयवतेजदीपहै औ
रविरलावयवतेजप्रभाहै इससेउत्तरपढ़ताहै ॥

व्यतिरेकोगन्धवत् २६

जैसे गन्धगुणअपनेआश्रयगन्धद्रव्यकोछोड़केबर्तताहै कुसु-
मादिकीअप्राप्तिमेंकुसुमगन्धकी उपलब्धिसे तैसे अणुभीजीवके
चैतन्यगुणकाजोवसेविश्लेषहोगा गन्धगुणकाआश्रयसेविश्लेषदे-
खनेसे रूपवत्आश्रयमें चैतन्यगुणकाविश्लेषनहींहै यहहेतुअनै

क्रान्तिकहै यदिकहोकिगन्धभीसूक्ष्मद्रव्यपरचढ़केदौड़ताहै सो भीनहींजिसमूलद्रव्यसे विश्लेषहै तिसकेक्षयप्रसङ्गसे औरअक्षीयमानहोद्रव्यपूर्वावस्थासे प्राप्तहै अन्यथाप्रथमकीगुरुत्वादिसेहीनहो होयहांगन्धकेआश्रयविश्लिष्टअवयवअल्पवोअवयवांतरकाप्रवेशतिससे उनकाविश्लेषवोप्रवेशहैभीसोभीनहींज्ञातहै तिससे गुरुत्वकाक्षय नहीं है विमतमविश्लिष्टावयवंपूर्वावस्थातोगुरुत्वाद्यपचयहीनत्वात्सम्मतवदितिभावः यदि कहो कि सूक्ष्म गन्धपरमाणुसबठौरफैलेनाकमेंआके गन्धबुद्धिजनतेहैं सोनहींपरमाणुकोअतीन्द्रियतासेओत्रसरेणुगन्धकहो तोस्फुटनहो औरस्फुटगन्धनागकेसरादिमेंहैलोकमेंयहप्रतीतिनहीं कि मैनेगन्धवत्द्रव्यसूंघाहै फिरगन्धहीसूंघाहै यही लोकोंमेंप्रतीतहै इससेपुष्पादिस्थगन्धकाहीगुणिसेव्यतिरेककहो यदि कहोकि गन्धोनगुणिविश्लिष्टःगुणत्वाद्रूपवत्सोनहींगन्धप्रत्यक्षहै तिससेअनुमानकोप्रवृत्तिनहींतिससेजैसालोकमें दृष्टहैसोतैसाहीअनुमातव्यहै निरूपकोंसेअन्यथानहीयहनियमकरनेकोंशक्यनहीं किरसगुणजीभसेज्ञातहै तोरूपादिभीगुणजीभहीसेज्ञातहों ॥

तथाचदर्शयति २७

हृदयायतनत्वमणुपरिमाणत्वञ्चात्मनोभिधायतस्यैव आलोमभ्य आनखाग्रेभ्यइतिचैतन्येनगुणेनसमस्तशरीरव्यापित्वन्दर्शयति आत्माचैतन्यसेसबदेहमेंव्याप्तहै सूत्रश्रुतिदोनोंकाअर्थहै

पृथगुपदेशात् २८

प्रज्ञयाशरीरंसमारुह्येतिचात्मप्रज्ञयोःकर्तृकरणभावेनपृथगुपदेशाच्चैतन्यगुणेनैवास्यशरीरव्यापितागम्यते तदेषांप्राणानांविज्ञानेनविज्ञानमादायेतिचकर्त्तुः शरीरात्पृथग्विज्ञानस्योपदेशः श्रुत्यन्तरार्थं सूत्रपृथगहै अर्थ विज्ञानं इन्द्रियोंकी ज्ञानश-

त्ति विज्ञानेन चैतन्यगुणसेग्रहणकरसोताहै इत्यर्थ ॥

तद्गुणसारत्वात्तु तद्व्यपदेशः प्राज्ञवत् २९

एतमेवाभिप्रायमुपोद्दलयति तस्मादणुरात्मेति अणुत्वश्रुतिजीवपरवोविभुत्वश्रुतिईश्वरपरइसएकदेशिमतनिरासार्थसिद्धांतसूत्रहै तद्गुण तुपूर्वपक्षकेनिरासार्थहै ॥

आत्मा अणुनहीं जन्मनसुननेसे वोब्रह्महीजीवरूपमेप्रविष्टसुननेसे औरतादात्म्यकेकहनेसेब्रह्महीजीवकहाथा ब्रह्माभिन्नत्वाद्विभुर्जीवः ब्रह्मवत् फिरयदिब्रह्महीजीवहै तो जितनाब्रह्महैउतनाजीवहोनेकोयोग्यहै फिरब्रह्मविभुपढ़ाहै तिससे जीवभीविभुहै सवाएषमहानजआत्मा योयंविज्ञानमयःप्राणेष्विति अणुत्वश्रुतिऔपाधिकअणुत्वपरहैप्रधानविभुत्वकेविरोधसे भाव शैत्यकी असिद्धिसे अध्यस्ताणुत्वपर वा कथञ्चिदर्थवाद है औरअणुजीवकोसबदेहमेंवेदनासिद्धिनहींहै यदिकहोकित्वचाकेसम्बन्धसेहोसोभीनहीं कांटालगेमेभीसबदेहमेवेदनाहोत्वचाकांटाकासंयोगसबत्वचामेवर्तताहै औरत्वचासबदेहमेंव्याप्तहैऔरकण्टकतुन्नपादतलेमेहीवेदनालभताहै जो कहाथाकिगुणकाभीगुणीसेविश्लेष है गन्धवत् गन्धोनाश्रयाद्विश्लिष्टःगुणत्वाद्रूपवत्गुणकागुणिदेशहै गुणिकेअनाश्रितगुणकागुणत्वहीहीनहो गन्धभीगुणत्वसेसाश्रयहीसञ्चारीहै अन्यथागुणहानिहो सोकहाहैपायननेउपलभ्याप्सुचेद्गन्धंकेचिद्ब्रूयुरनैपुणाः पृथिव्यामेवतंविद्यादपोवायुंचसंश्रितं यदिजीवकाचैतन्यसबदेहमेंव्याप्तहोतोजीवअणुनहोजीवकास्वरूपचैतन्यही है जैसे अग्निकाऔष्ण्यज्योतिः फिरइसमेगुणगुणिकाविभागविद्यमाननहींहै बड़ाअनुद्भूतस्पर्शउद्भूतगन्धत्रसरेणुकेसहच्युतहै अवयवांतरप्रवेशसे सहसा मूलद्रव्यकाभीक्षयनहींहै भावहैदेहमितसमानखण्डितहै फिरपरिशेषसेजीववि

भुहै फिरकैसे अणुकहा तद्गुण बुद्धिकेगुणइच्छाद्वेषसुखदुःखादि-
सेआत्मासंसारीहै केवलनहींहै फिर बुद्धिउपाधिकेधर्माध्यास-
सेकर्त्ताभोक्ताआदिलक्षणवान्संसारीहै औरनित्यमुक्तसन् अक
र्त्ताअभोक्ताआत्माहै फिर जीवका परिमाणबुद्धिकेपरिमाणसे
कहाहै फिरबुद्धिके उत्क्रांत्यादिसे जीवकी उत्क्रांत्यादिकहैनस्व
तः वालाग्र इति इस वेदमेजीवकोअणुकहिफिरउसकोहीअन
न्तकहाहै बुद्ध्युक्तऐसाहो कि औपचारिक अणुत्ववोपारमार्थि
कआनन्त्यजीवकोहो एकमेअणुत्वानन्त्यमुख्यनहींकल्पसक्तेहो
औरआनंत्यऔपचारिकभीनहीं कहि सक्तेहो सोयमितिवत्प्र
खण्डाभेदार्थत्वादानंत्य सत्यमणुत्वमध्यस्तंसववेदमें जीवकोब्रह्म
होकहनेसे और बुद्धिकेगुणोंकेनिमित्तसे आत्मामे अध्यस्तगुणहैं
फिर उन अध्यस्तआत्मगुणोंसेही आराग्रपरिमाणजीवदेखाऔर
स्वतःअनन्तहै ॥

नचक्षुषागृह्यतेनापिवाचानान्यैर्देवैस्तपसाकर्मणावाज्ञानप्र-
सादेनविशुद्धसत्त्वस्ततस्तुतंपश्यतेनिष्कलंध्यायमानः यहकहिफि
रकहाकि एषोणुरात्मेति इसमेभीजीवअणुइष्टनहींहै पूर्वपरा-
मर्शहोनेत्रादिसेअग्राह्यवोज्ञानकेप्रसादसेग्राह्य कहने से परहो-
जानो जैसेजीवअध्यस्तहैसेअणुत्वभी अध्यस्तहै तिससेजीवमुख्य
अणुनहींसिद्धहै फिर अणुक्ति दोप्रकारसे है दुर्ज्ञानकोअभिप्रा-
यसेवाउपाधिकोअभिप्रायसे औरभेदोपदेशोंमेंभीउपाधिभूतबु-
द्धिसेहीजीवशरीरपरचढ़केजाताहै प्रज्ञयाशरीरमारुह्येति बुद्धि
प्रज्ञायहभेदशिलापुत्रककेशरीरकीनाईहैनिर्गुणसेगुणगुणिकाभे
दनहींहैहृदयबुद्धिकाघरहैऔरबुद्धिजीवकाघरहैफिरबुध्युपाधिसे
हृदयायतनहै औरउत्क्रांत्यादिभी बुध्युपाधिसेवेददिखाताहै क
स्मिन्न्वहमुत्क्रान्तउत्क्रांतो भविष्यामिकस्मिन्वाप्रतिष्ठितेप्रतिष्ठा
स्यामीतिसप्राणमसृजतेतिफिरजोउत्क्रान्तिहीनहींतोगतिवोआ

गतिकहांदेहसेविनानिकले उनका सम्भवहीनहोऐसेबुद्ध्याद्युपा
धिसेजीवकोअणुत्वादिकहाप्राज्ञवत् जैसेसगुणउपासनोंमेंप्राज्ञ
परात्माकोउपाधिगुणोंसेअणीयस्त्वादि कहाहै तैसे औरोंमेंजा
नो अणीयान्व्रीहेर्वायवाद्वामनोमयःप्राणशरीरः सर्वगन्धःसर्वर-
सःसत्यकामःसत्यसङ्कल्पइति यहतुम्हाराकहातोहोयदिबुद्धिगु
णोंसेआत्मासंसारीकल्पाहोफिरबुद्धिवोआत्माकेसंयोगकावियो
गअवश्यहोगा फिरबुद्धिकेवियोगमेंविभक्तआत्मालक्ष्यनहोनेसे-
असत्वासंसारीहो इसशङ्काकाउत्तरपढ़ताहैसूत्रकार ॥

यावदात्मभावित्वाच्चनदोषस्तद्दर्शनात् ३०

पीछेकादोषनहींहै किससे यावत् जौलौ संसारीहै तौलौ
जीवकोसम्यग्दर्शनसेसंसारित्वनहींछूटेगा तौलौबुध्यादिका
संयोगजीवसेनछूटेगा तोहीलोजीवकाजीवत्ववो संसारित्वहै
जौलोउसकोबुध्युपाधिकासम्बन्धहै औरपरमार्थसेबुद्धिकीउपा-
धिकेसम्बन्धसेकल्पितस्वरूपसेभिन्नजीवप्रसिद्धनहींहै नित्यमुक्त
स्वरूपसर्वज्ञईश्वरसेअन्यदूसराचेतनधातु वेदकेअर्थविचारनेमें-
नहींलभताहै कहांवुहछिपाहै तुमकर्मोपासनमेंभटकेहो इससे
नहींलखोउसको कैसे जानाकियावदात्मभावीबुद्धिसंयोगहै त
द्दर्शनादित्याह वेद दिखाताहै योयंविज्ञानमयःप्राणेषुहृद्यन्त-
र्ज्योतिःपुरुषःससमानःसन्नुभौलोकावनुसंचरतिध्यायतीवलेला
यतीवेत्यादि इसमेंविज्ञानमयशब्दसेबुद्धिमयकहाहैऔर विज्ञा
नमयोमनोमयःप्राणमयश्चक्षुर्मयःश्रोत्रमयइति इसमेंविज्ञानमय
कोमनआदिकेसङ्गपढ़नेसेबुद्धिमयबुद्धिकेगुणोंसेदृष्टहै जैसेलोक
मेंस्त्रीमयकहनेसेस्त्रीसेरागादिप्रधानकहा है तद्वत् ससमानलो
कांतरकेजानमें बुद्धिकाअवियोगदिखाताहै किसकेसमान सं
न्निधानसेबुद्धिकरकेजाताजानागयाहै वुहीदिखायाहै ध्याय-

तीव इनसे स्वतोनध्यातानचलताहै ध्यायतीबुद्धिमें ध्यातासा-वोचलतीमेचलतासाहै औरसुनोमिथ्याज्ञानसेआत्माकाबुध्यादिमेंसम्बन्धहै औरमिथ्याज्ञानकीसम्यग्ज्ञानसेअन्यच निवृत्ति नहीं इस्से जोलोब्रह्मात्मताकाबोध नहींहै तोलो बुध्युपाधिसम्बन्धकाशमभीनहींहै औरइसअर्थको ऋग्वेदकामन्त्रदिखाताहै वेदाहमेतंपुरुषम्महान्तमादित्यवर्ण* तमसःप१रस्तात् तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपन्थाविद्यतेऽयनायेति ॥

पुंस्त्वादिवत्त्वस्यसतोऽभिव्यक्तियोगात् ३१

सुषुप्तिमेंबुद्धिहै तोब्रह्मसम्पत्तिनहो औरप्रलयमेबुद्धिहोने सेप्रलयनहो फिरइनमेआत्माकेसाथबुद्धि सम्बन्ध अयुक्त है वेदः सतासोम्यतदासम्पन्नोभवतिस्वमपीतोभवतीति और सबविकारकाप्रलयमानाहै तोकैसे जौलोआत्मातोलोबुद्धिसम्बन्धहै इस काउत्तर पुं॰ जैसेलोकमेबीजादिस्थूलसूक्ष्मरूपसेविद्यमानहो-बाल्यादिमेंअप्राप्तवोअविद्यमानवत्रहितेहैं यौवनमे प्रकटहोते हैं जोअविद्यमानजन्मतेहों तो षण्ढादिमेभीजन्मोसूत्रमेआदि-शब्दसेदाढ़ीचुचीसींगआदिकाग्रहणहै ऐसेहीबुद्धिसम्बन्धशक्त्या-त्मासेविद्यमानहो सुषुप्तिप्रलयमें फिरजागरनवोसर्गमेप्रकटहो-ताहै यहीव्यवस्थायुक्तहै किसीका जन्मआकस्मिकसम्भवनहीं-अतिप्रसङ्गसेवेददिखाताहै सुषुप्तिमे अविद्यारूपबीजकेसद्भावसे करायेउत्थानकोसतिसम्पद्यनविदुः अविद्यारूपबीजकासद्भावकहासतिसम्पद्यामह इति तइहव्याघ्रोवासिंहोवेतिइस्से उनकोअभिव्यक्तिकहीहैतिस्से सिद्धहैयावदात्मभावीबुध्युपाधिसम्बन्धः ॥

नित्योपलब्ध्यानुपलब्धिप्रसङ्गोऽन्यतरनियमोवान्यथा ३२

* स्वप्रकाशं ॥ ३३ १ अज्ञानास्पृष्टं इत्यर्थः ॥

बुद्धिकेहोनेमेंमानकहासूत्रकारने बुद्धिद्रव्यआत्माकाउपाधिभूतअन्तःकरणमनबुद्धिविज्ञानचित्तमनसाह्येव पश्यतिबुद्धिश्च नविचेष्टति विज्ञानंयज्ञन्तनुतेचेतसावेदितव्यः चित्तञ्चचेतयितव्यमिति इन अन्तःकरणको अवश्यमानो आशयप्रत्यक्षवोश्रुतिमेंविवदमानकेअर्थव्यासङ्गका असिद्धिसे अन्तःकरणसिद्धहै मनकेविनापांचइन्द्रियोंकोपांचअर्थकेसम्बन्धमेंयुगपत्पांचज्ञानहो मनसेभिन्नसामग्रीकेनहोनेसेयदि सामग्रीकेहोनेमें ज्ञानका अभावहैतोसदाहीज्ञाननहो इससे जोकभीज्ञानहोता कभी नहींइसकानियामकमनहै इतिभाव ननु वाराग्निकेसंयोगमेंकभीदाहहोताहै जैसे तैसेकभीज्ञानहोफिरमनकाक्याकामहैसामग्रीसेनित्यज्ञानवोआत्माकावा इन्द्रियोंका कारणको शक्तिकाप्रतिबन्धअङ्गीकारकरोजैसेमणिसेअग्निशक्तिप्रतिबद्धहै फिर आत्मशक्तिकाप्रतिबन्धनहीहै अविकारसे इन्द्रियकोपूर्वापरक्षणमेंशक्तिथीफिरकैसेदूरहोप्रतिबन्धकके अभावसेदृष्टछाड़अदृष्टकल्पनअयुक्तहै अतिप्रसङ्गसेऔरव्यासङ्गकाप्रतिबन्धकनहींहै मनके अभावमेउसकाभीअसम्भवहै जैसे रसादि कायुगपत्ज्ञानकीप्राप्तिमेंरसबुभुत्साह्रूपव्यासङ्गरूपज्ञानका प्रतिबन्धक कहो बुद्धगुणसेगुणाश्रयहै रूपवत् फिरआत्मानिर्गुणहै कोईगुणकेअयोगसेमनहीगुणीमानो इसव्यासङ्गको असिद्धिसे मनकोसिद्धिहै अनिच्छुकोभीदुर्गन्धकेज्ञानसे बुभुत्साज्ञानकी नियामिका नहींहै यहमतकहो बहुत विषय के सन्निधानमें कहीं उसकोनियामकमानाहै औरजिसमतमेंइच्छादिआत्माकेधर्महैं तिसमेंमनदुर्लभहै इच्छादिधर्मीआत्मासेव्यासङ्गसिद्धहै अन्यत्रमनाअभूवन्नादर्शमन्यत्रमनाअभूवन्नाश्रौषमिति मनसाह्येवपश्यतिमनसाशृणोतीति इसमें व्यासङ्गमनमेंहै कामादिभीमनकीवृत्तिहैं कामःसङ्कल्पो-

विचिकित्साश्रद्धाश्रद्धाधृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वं मन एवेति तस्माद्युक्तमेतत्सङ्कुचेति बहुधापढ़ाहै जैसेसे संशयादिवृत्तिकमनहै जीवकर्तृत्वाधिकरण ॥ १४ ॥

कर्त्ताशास्त्रार्थवत्वात् ३३

संस्कृतेनसङ्कलनं कर्त्ताचायञ्जीवः स्यात्कस्माच्छास्त्रार्थवत्त्वात् एवञ्च यजेतजुहुयाद्दद्यादित्येवंविधस्विधिशास्त्रमर्थवद्भवतिअन्यथातदनर्थकंस्यात् तद्धिकर्तुःसतःकर्तव्यविशेषमुपदिशति नचासतिकर्तृत्वे तदुपपद्येततथेदमपि शास्त्रमर्थवद्भवत्येषहिद्रष्टास्प्रष्टाश्रोतामन्ताबोद्धाकर्त्ताविज्ञानात्मापुरुषइति ॥

भाषा असङ्गवोविध्यादिवेदोंकेविरोधसेसंशयमेबुद्धिकोकर्त्ता मानेसेहीविध्यादिशास्त्रकीसिद्धिसे अकर्त्ताआत्मा इससांख्यपक्षकेनिरासार्थआत्मामेंकर्त्तृत्वका अध्यासहैअथवापूर्वपक्षमेंसम्बन्धकेअभावसेशास्त्रव्यर्थहै सिद्धांतमेकर्त्तृत्वादिसम्बन्धके होने से-शास्त्रार्थवत्है यहभेदहै मुजेयहकर्त्तव्यहै इसबोधमें जोसमर्थचेतनहै वुहीकर्त्ताहै नजड़बुद्धिऔरभोक्ताआत्माकोहीकर्त्ताकहो शास्त्रफलंप्रयोक्तरीतिन्यायसे ॥

विहारोपदेशात् ३४

संस्कृतेनसङ्कलनं इतश्चजीवस्यकर्तृत्वंयज्जीवप्रक्रियायांसंध्ये*स्थानेविहारमुपदिशतिसईयतेमृतोयत्रकाममितिस्वेशरीरे यथाकामम्परिवर्तततइतिच इससे भी आत्माकर्त्ताहै किस्वप्नमें अमृतआत्मायथेष्टचलताहै यद्यपिस्वप्नमेयथेष्टबर्तनाहोसक्ताहै न किजागरणसें जैसे एकपांवसे चलना ॥

उपादानात् ३५

*स्वप्ने

तदेषांप्राणानांविज्ञानेनविज्ञानमादायेति प्राणानृगृहीत्वे तिच अर्थ प्राणोंकेबीचबुद्धिसे विज्ञानसमर्थइन्द्रियोंको लेकेसोताहै औरप्राणोंकोग्रहणकरवर्तताहै इस्से आत्मा सोपादान कर्त्ताहैकुविन्दसाजोकर्त्तानहींतोउपादानभीसिद्धनहीं भाव ॥

व्यपदेशाच्चक्रियायांनचेन्निर्देशविपर्ययः ३६

यदिविनाशब्दजीवकानिर्देशनहींतदाप्रथमानिर्देशसे विपर्यय होवुहयहकिकरणद्योतिकातृतीयाकानिर्देशहोइसमेंतनुतेइस कर्तृवाचीआख्यातसे विज्ञानशब्दकी समानाधिकरण के निर्देश से लौकिकीवैदिकीप्रक्रियासेआत्माकर्त्तासूचनकराहै यहसूत्रार्थहै ननुविज्ञानशब्दबुद्धिवाचकहै तो कैसे जीवकोकर्त्ताकहैगा- मैनहींकहिताहूं किजीवहीकहाहै नकि बुद्धियहकहिताहूं कियदिजीवकानिर्देशनहोतातोतीसरीविभक्ति होती जैसे अन्यत्रहै विज्ञानंयज्ञन्तनुतेकर्माणितनुतेपिचेतितदेषांप्राणानांविज्ञानेन विज्ञानमादायेति यहांविज्ञानंयज्ञंतनुत इति कर्तृसामानाधिकरण्यकेकहिनेसे बुद्धिव्यतिरिक्तआत्माकोकर्तृत्वसूचनसे दोषहै यदिबुद्धिसे भिन्नजीवकर्त्ताहो तदास्वतन्त्रकर्त्ताअपनेकोनियमसे हीप्रियहितसम्पादनकरे।फिरविपरीतभी सम्पादनकर्त्तालभताहै स्वतन्त्रकेअनियमसे प्रवृत्तियुक्तनहीं सुनोइसकाउत्तरपढ़ासूत्रकारने ॥

उपलब्धिवदनियमः ३७

जैसे आत्माउपलब्धिकेप्रतिस्वतन्त्रहोअनियमसे इष्टअनिष्ट लभताहैऐसे अनियमसेहीइष्टअनिष्टको संग्रहकरेगा यदि कहो किउपलब्धिमेंअस्वतन्त्रहै उपलब्धिके हेतूपादानोंकेग्रहणसे सो

नहींउपलब्धिकेहेतुनेत्रादिकोंबिषयकेसाथसम्बन्धकरनाहीप्रयोजनहै औरउपलब्धिमेंआत्माअन्यकीअपेक्षानहींकर्त्ताहै चैतन्ययोगसेऔरभीअर्थक्रियामेंआत्माअत्यन्तस्वतंत्रनहींहै देशकालादिनिमित्तविशेषसहायकीअपेक्षासेकर्त्ताकीकर्त्तृत्वदूरनहींहोतीहै ईश्वरभीशक्तिकेबशरचनामेंहै तन्तुवायभीतन्तुतुरीवेमादिसापेक्षकर्त्ताहै औरसहकारीकीवैचित्र्यसे दृष्टकी भांतिसे अनिष्टअर्थके करनेमेंअनियमसेप्रवृत्तिवोस्वातन्त्र्यआत्माकोविरुद्धनहींहै ॥

शक्तिविपर्ययात् ३८

इससे भीबुद्धिसे भिन्नजीवकर्त्ताहै यदिबुद्धिहीकर्त्रीहोतो शक्तिविपर्ययहो बुद्धिकोकरणशक्तिजायेऔरकर्तृशक्ति आये औरबुद्धिकीकर्तृशक्तिमेंबुद्धिहीकोअहंप्रत्ययकाविषयमानों फिर सर्वत्र प्रवृत्तिअहङ्करणपूर्वादेखनेसे मैंआयामैंगयामैंनेखायामैंनेपिया औरकर्तृशक्तिमतीबुद्धिकोसर्वार्थकारिकरणअन्यकल्पो फिर अत्यन्तशक्तकर्त्ताभीकरणकोहीग्रहणकरिकर्ममेंबर्तमानदेखतेहैंतिससेनाममात्रमेंबिबादहोनवस्तुभेदकुछहै करणसे भिन्नकर्त्तामानेसेजोअहन्धीगम्यहैसोहीकर्त्तावोजीवहै फिरजोउसकोअपेक्षितकरणहै सोहीमनहै इससे जीवकर्त्तासिद्धहै ॥

समाध्यभावाच्च ३९

आत्मावाअरेद्रष्टव्यःश्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यःसोन्वेष्टव्यःसविजिज्ञासितव्यःओमित्येवन्ध्यायथआत्मानमित्येवंलक्षणःसोप्यसत्यात्मनःकर्तृत्वेनोपपद्येत भाषा मुक्तिफल के भोक्ता होकेमुक्तिकेयत्नसमाधिमेंकर्तृत्वयुक्तहै फिर आत्माकोकर्त्तानमानेसेअभोक्ताबुद्धिकोभीकर्तृत्वके अयोगसेसमाध्यभावकाप्रसङ्ग है

आरोपितकर्तृत्वाधिकरण ॥ १५ ॥

यथाचतत्त्वोभयथा ४०

बढ़ई ॥

सांख्यादिमतनिरासकरजीवकर्त्तासाधाफिरउसकोबाधके-
अभावसेकर्तृत्वसत्ययहमीमांसकपक्षप्राप्तहै और असङ्गात्मबो-
धकवेदसेबाधनहींअहङ्कर्त्ताइस अनुभवके सहायसेकर्तृवेदवली
है तिससेअसङ्गवेदस्तावकहै इसमें चिन्ताहै किआत्माकोस्वाभा
विककर्तृत्वकासम्भवहै यानहींहै अनिर्मोक्षप्रसङ्गसे जैसे अग्नि
कोउष्णतासे जोकर्तृत्वसे नहींछुटाउसकोमुक्तिकीसिद्धि नहीं है
कर्तृत्वदुःखरूपसे यदि मुक्तिमेंस्थिरकर्तृशक्तिसेकार्यशक्यकेअभा
वसे पुरुषार्थसिद्धहोगा जैसे दाहशक्तियुक्तअग्निकाठआदिकेवि
योगसे दाहकार्यनहींकर्तीहै तद्वत् संशयनिमित्तोंकोभीशक्तिसे
शक्यकेसार्थसनिमित्तकार्यकाशक्तिसे शक्यकेसाथसम्बन्धसेनिमि
त्तोंकोभीपरम्परासेशक्तिसम्बन्धत्वकहाथा सोमानोसम्बन्धसे वो
सम्बन्धिसे ननु जैसे नरकर्मसे देवताहोताहै तैसे मोक्षकेसाध
नज्ञानादिसेमोक्षसिद्धिहोगीयदिज्ञानसे अकर्तृरूपमोक्षहोतो क
र्तृत्वआविद्यकहो कर्मादिसाधनाधीनमोक्षअनित्यहै तिससे आ-
त्मास्वाभाविककर्त्तानहींअनिर्मोक्षसे और भी नित्यशुद्धबुद्धमुक्ता-
त्मबोधसे मोक्षसिद्धिकहीहै ऐसाआत्मास्वाभाविककर्तृत्वमेनमा
नसकोगेआत्मासत्य मिथ्या उदासीनकर्तृत्वका अवगाहीहैतिससे
उसकोउपाधिधर्मोंकेअध्याससे कर्तृत्वऔपाधिकहै ध्यायतीवले
लायतीवेति आत्मेन्द्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणइति जीउ
पाधियुक्तआत्माकोभोक्तादिखातीहैं बिवेकिकेमतमे परसेअन्य
जीवकर्त्ताभोक्ताप्रसिद्धनहींनान्योतोस्तिद्रष्टाइसवेदसे तर्हिपर-
हीकर्त्ताभोक्ताहो यदिपरमे अन्यचेतनजीवबुध्यादिसङ्घातसे भि
न्नकर्त्तानहो मैशुद्धचिद्धातुकोबन्धनहींकहिताहूं किंतुअविद्यासे

बुध्यादिमें प्रतिबिम्बितजीवकोबन्धमोक्षकहिताहूं लोकमेंकल्पि तभेदभीबिम्बप्रतिबिम्बोंमेंधर्मोंकाव्यवस्थापकदेखाहै वेद यत्र- हिद्वैतमिवभवतितदितरइतरंपश्यतीति इमवेदने अविद्यामेंक- र्तृत्वभोक्तृत्वदिखाकेंविद्यामेंउनकावारणकराहै जैसे यत्रत्वस्य सर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकंपश्येदिति जैसे व्योममेंउड़तश्येनका- श्रमहै उपाधिसम्पर्कजतैसे प्राज्ञात्माकेसाथसोनेपरआत्माको सोतेजगतेमें श्रमसुनाकेफिरसुषुप्तिमेंउसकाअभाव सुनाया है त द्वाअस्यैतदाप्तकाममात्मकाममकामंरूपंशोकांतरं इहां मे ले एषास्यपरमागतिरेषास्यपरमासंपदेषोस्यपरमोलोकएषोस्यपर- मआनन्द यहांलो अर्थ आत्महीकामदृष्टहै आनन्दरूपसेइस- आत्मकामहै रूपंस्वरूप अपनेसेपृथग्इच्छानहींतिस्से अकामहै आत्मकामवोअकामसे आप्तकामहै शोकान्तरंदुःखनहींकसत्ता है इसीसोतेआत्माकोपरमपुरुषार्थकहिताहै वेद एषागतिःप्रा प्य संपत् ऐश्वर्य लोक भोग्य सुखचैतन्यसे औरनहींहै उक्तार्थ मेसूत्रकीयोजनाहै किअग्निकीउष्णताकेतुल्यस्वाभाविकआत्- माकर्त्तामतमानो जैसे लोकमेंवसूलादिकरणहाथमेंलियेबढ़ई दुःखीहै सोहीघरमेंवसूलादिधरकेस्वस्थनिर्व्यापारसुखीहै तैसे अविद्यासे प्राप्तहैतसम्बन्ध जिसकोसोआत्मास्वप्नेमे जगत मे क- र्त्तादुःखीहै सोश्रमदूरकरणार्थअपनेरूपपरब्रह्ममेंघुसफिरकार्य- करणसामग्रीछाड़अकर्त्तासुखीहै फिरजैसासुषुप्तमेंतैसामुक्ति- मेहै अविद्याध्वान्तकोविद्यादीपसे दूरकरआत्माहीकेवलसुखी है बढ़ईकेदृष्टांतकासारसुनोबढ़ईगढ़नेमेंबसूलादि की अपेक्षा- हीसे कर्त्ताहै वोटहसे अकर्त्ताहै ऐसेहीआत्मासबकामोंमेंमन- आदिकीअपेक्षाहीसे कर्त्ताहै स्वात्मासे कर्त्तानहींहै औरबढ़ई केतुल्यआत्माकेहाथआदिनहींहै फिरजिनसे मनआदिकोधरे

उठावे जैसे बढ़ईबसूलादिको और जोतुमनेकहाथाकिविधिको
सार्थतामें आत्मास्वाभाविककर्त्ताहै सोनहीं विधितोप्राप्तकर्तृ-
त्वकोलेकर्तव्यकोउपदेशकरताहै आत्माकोकर्तृत्वनहीं विधान
करताहैहमतोकहिचुकेकीआत्मासत्यकर्त्तानहींहैब्रह्मात्मत्वके
उपदेशसे तिससे आविद्यककर्तृत्वलेकेविधिप्रवर्तहोगीकर्त्ताविज्ञा
नात्मापुरुषइतियहशास्त्रलोकसिद्धका अनुवादक आविद्यककर्तृ
त्वका अनुवादकरेगा विहारवो उपादानभी अनुवादसे खण्डित
है ननुसन्ध्यस्थानेप्रसुप्तेषुकरणेषुस्वेशरीरेयथाकामम्परिवर्त्तत इ
तियहविहारकेवलात्माकोकर्त्ताकहताहै तदेषांप्राणानांविज्ञा
नेनविज्ञानमादायेति इसउपादानमेंभीकर्मकरणदोविभक्तियां
केवलात्माकोकर्त्ताकहतीहैं यहांपरमेरोभीसुनो सन्ध्येस्थानमें-
आत्माकेकरणोंका अत्यन्तविरामनहींहै सन्ध्यस्थानमेंभीधीसस्व
प्नसुन्नेसे जैसे सधीस्वप्नोभूत्वेमंलोकमतिक्रामतीति कामादय
स्वमनसोवृत्तयइतिश्रुतिः वृत्तिस्वप्नमेंदेखतेहैं तिससे समनहींस्व
प्नमेंविहरेहैस्वप्नकाविहारभीमिथ्याहैफिरउसमेंकर्त्तृत्वभीमिथ्या
है औरश्रुतिइवकारसे युक्तस्वप्नकेव्यापारकोवर्णतीहै ॥

उतेवस्त्रीभिःसहमोदमानोजक्ष*दुतेवापिभयानिपश्यन्निति
लौकिकभीकहतेहैं किस्वप्नमेंगिरपरचढ़केनाईवनकोदेखतेथेकि
नाईउपादानमेंभीकरणोंकेबीचकर्मवोकरणदोविभक्तीहैं उपाधि
संयुक्तकर्त्ताहैं केवलमेंउसका असम्भवकहिचुकेलोकमेंबहुधा कह
नाहै योधालड़तेहैं वोराजायोधोंकरलड़ताहै औरभीउपादान
मेंकरणकेव्यापारकीनिवृत्तिमात्रविवक्षितहै औरन अबुद्धिपूर्वकी
स्वातन्त्र्यास्वापमेंकरणके व्यापारकीनिवृत्ति देखनेसे विज्ञानंयज्ञ
न्तनुतइति यहबुद्धिकोकर्त्ताकहिताहै विज्ञानशब्दकोबुद्धिमेंप्रसि

* भुञ्जानइव ॥

द्धिसे वोममसे आगेपढ़नेसे और विज्ञानमयआत्माकेश्रद्धादिश्च इकहनेसे जैसे तस्यश्रद्धैवशिरइति औरश्रद्धादिबुद्धिकेधर्मोंकी प्रसिद्धिसे विज्ञानंदेवा:सर्वेब्रह्मज्येष्ठमुपासतइति ज्येष्ठ प्रथमज कीबुद्धिमे प्रसिद्धिसे सएषवाचश्चित्तस्योत्तरोत्तरक्रमोयद्यज्ञइति इसमेंयज्ञबुद्धिसाध्यकहाहैइन्द्रियोंसे उपास्यमानज्येष्ठब्रह्मविज्ञानबुद्धिहै महद्यक्षंप्रथमजं इसमेंहिरण्यगर्भब्रह्मात्मकबुद्धिकोज्येष्ठत्वकहिनेसे यक्ष: पूज्यं चित्तं नध्यात्वावाचामन्त्रोक्तायज्ञो-जायतेचित्तवोवाणीकापूर्वोत्तरभावहीयज्ञहै करणकोकर्त्तामाने सेबुद्धिकीशक्तिकाविपर्ययनहींहैजैसेचावरपचतेहैं कण्डेजलतेहैं कुठियाभरतीहैइनमेसबकारकोंको अपनेरकाममेंकर्तृत्वकेस्वीकारसे जैसे काठअपनेव्यापारमेकर्त्ताभीपाककीअपेक्षासेकरण है तैसेबुध्यादिकोनिश्चयादिमेकर्तृत्ववोउपलब्धिकीअपेक्षासे करणत्वहै उपलब्धिआत्माकीहै उससेआत्माकर्त्तानहींहै नित्य-उपलब्धिस्वरूपसे अहङ्कारसे भीउपलब्धाकर्त्तानहीं अहङ्कारउप-लभ्यमानहैजड़बुद्धिकोकरणमानेमेकरणांतरहमेनचाहियेअध्याससे लिखो जैसे स्फटिकमेरक्तिमाकुसुमादिउपाधि से है तैसे-आत्मामेबुध्याद्युपाधिसे कर्तृत्वहै ॥

ईश्वरप्रवर्त्तकत्वाधिकरण ॥ १६ ॥

परात्तु तच्छ्रुतेः ४१

जीवकारकईश्वरकारयिताहैफिरकर्ताईश्वरकेसापेक्षवानिरपेक्षहै यहविचारहै कर्ममीमांसकमतसे पूर्वपक्षहैअनपेक्ष्यैवेति इनकाविध्यादिश्रुतिसे विरोधहै ईश्वरकी अपेक्षा जीवकर्तृत्वमे नहींकर्त्ताहै किसी प्रयोजनकेअभावसे रागद्वेषादि दोषयुक्तजीवहीबुध्यादिकारकसामग्रीसे सम्पन्नकर्ताहोनेकोसक्तहैफिरईश्वर-

उसकोक्याकरावेगा यहभीलोकमेंप्रसिद्धनहींहैकि जैसे खेतीके काममेंवर्षादिअपेक्षितहैंतैसेईश्वरअपेक्षणीयहैजीवके धर्माधर्म से जगकाविषमरचनादोषनहीं अबईश्वरकेआधीनजीवकोकर्तृत्वसिद्धिमेंधर्माधर्मसिद्धिफिरधर्माधर्मसापेक्षकारयितृत्वसिद्धिहै फिरईश्वरकोकरानेकीसिद्धिमेंजीवकोकर्तृत्वसिद्धि इसचक्रिका-दोषसे ईश्वरकोअपेक्षानहींहै तिससे जीवस्वतः कर्ताहै धर्मीको दुःखवोअधर्मीकोसुखमिलेअनपेक्षकोप्रवर्तकमानेमेंकारुणिकमें सबएकरूपसुखीहो फिरजगवैचित्र्यवोविधिनहोफिरउनकोसार्थकताकेअर्थजीवस्वतःकर्ताहै कारयितृश्रुतिस्वाविकाहै इसशङ्काकीनिवृत्ति अविद्यातिमिरांधजीवको चेतकरानेवाले ईश्वर कोअनुज्ञासे कर्ताभोक्तासिद्धहै औरउसकीअनुग्रहकाहेतुविज्ञानसे मोक्षसिद्धिहोनेकोयोग्यहै इस श्रुति से एषह्येवसाधुकर्मकारयतितंयमेभ्योलोकेभ्यउन्निनीषते एषउएवासाधुकर्मकारयतियमधोनिनीषतइति यआत्मनितिष्ठन्आत्मानमन्तरोयमयतीति अर्थ सबप्रवृतिमेंईश्वरहेतुकर्ताहैकुतःतच्छ्रुतेःईश्वरस्यैवहेतुकर्तृत्वश्रुतेः ॥

कृतप्रयत्नापेक्षस्तु विहितप्रतिषिद्धावैयर्थ्यादिभ्यः ४२

कारयिताईश्वरकोवैषम्यनैर्घृण्यहोऔरकर्ताजीवकोअकृतप्राप्तिहो इनकीनिवृत्यर्थतुशब्दहै ईश्वरजीवकेकरेधर्माधर्मकीवैषम्यसेउनकेफलोंकोविषमविभागकर्ताहै जलके तुल्य निमित्तमात्रसे जैसे असाधारणनानाबीजजन्यवृक्षादिकासाधारणनिमित्तजलहैपानीनहोतोरमफूलफलपलाशादिमेंवैषम्यविभागन होऔरजोनानाबीजनहोतोभीवैषम्यनहो ऐसे हीजीवयत्नकर्ता-

हैतोईश्वरउसके अनुसारउनकोशुभाशुभविधान कर्ता है यद्यपिजीवकोकर्तृत्वपराधीनहै तथापिजीवकर्ताहीहै करनेवालेकोईश्वरकरवाताहै जैसे पाठकके आधीनशिष्यकोअध्ययनकर्तृत्वमुख्यदेखतेहैं भाव: औरभीअबपूर्वकेप्रयत्नकोअपेक्षाकरकरवाताहै औरपूर्वतरप्रयत्नकोअपेक्षाकरपूर्व करवाता था इसरीतिसेसंसारअनादिहै खर्गका सोयजेतमाहिंखात्स्वर्वाभूतानीति जोईश्वरकृतप्रयत्नापेक्षहै तोउक्तविधिनिषेधकोवैयर्थ्यनहींहैजो सापेक्षईश्वरनहींहै तोवेदोअनर्थ कहो विधिनिषेधमेंईश्वरहीलगाताहै उनकोवुहीकर्ताहै जीव तोअत्यन्तपराधीनहै तैसेहीशुभकर्ताकोअनर्थवोअशुभकोअर्थसंसृजो तिस्से वेदभी प्रमाणनहो फिरजोईश्वरकोअत्यन्तअनपेक्षाहैतोलौकिकभीपुरुषकारअर्थात् प्रयत्नकोवैयर्थ्यहै तैसे देशकालनिमित्तअकृतप्राप्तिआदिदोषसूत्रमेंआदिपदसेदिखाताहै ॥

जीवांशाधिकरण ॥ १७ ॥

अंशोनानाव्यपदेशादन्यथाचापिदाशकितवादित्वमधीयतएके ४३

जीवईश्वरकाअंशऐसाहै जैसा महाव्योमकाघड़ाघरसेअंशहैनमहापटलोहादिकाअंशहाथसेरआदिहै जीवउपकार्यईश्वरउपकारककहाथा फिरलोकमेंसम्बन्धसे देखा जैसे स्वामीवोभृत्यकावोअग्नि ओविस्फुलिङ्गका फिरक्याजीवईश्वरकास्वामीवोभृत्यवत्सम्बंध है आहोस्वित्अग्निविस्फुलिङ्गवत्सम्बन्धहै इससंशयमेंअनियमहै अथवाईशिताईशितव्यभावसम्बन्धहै जैसे स्वामिभृत्यकायहीप्राप्तहै पूर्वसिद्धांतहै किजीवईश्वरकाअंशहोनेकोयो

ग्य है जैसे अग्निके विस्फुलिङ्ग निरवयवका मुख्य अंशसम्भवनहीं है इससे अंशसदृश है फिर निरवयवसे ईश्वरही क्युंनहो नानाव्यप देशात्सोन्वेष्टव्यःसविजिज्ञासितव्यएतमेव विदित्वामुनिर्भवतिय आत्मनितिष्ठन्नात्मानमन्तरोयमयतीति इसमें जोभेद दिखाया सोभेदकेबिनायुक्तनहीं है भेदहोनें स्वामिभृत्यपनयुक्त है नचअंशा-शिभावसेंओरकेवलनानाव्यपदेशसेअंशका बोधनहीं है तोक्या है अनानात्वकाबोधकव्यपदेश है जैसे आथर्वणिकब्रह्मसूक्तमेंब्रह्म कोदाशकितवादिकहते हैंब्रह्मदाशाब्रह्मैवेमेकीतवाइति दाशाः धीमर दासाः गुलाम कितवः जुआरी औ नीचब्रह्मही हैं इस-दृष्टांतसेसवजीवब्रह्म हैं ऐसेहीअन्यईश्वरकीप्रक्रियामेंजानोभेदा भेदसेअंशबोध है जीवोब्रह्मैवचेतनत्वात्ब्रह्मवत् ॥

मंत्रवर्णाच्च ४४

मन्त्रप्रामाण्यं साधयन्नाहमहामुनिः ॥

तावानस्यमहिमाततोज्यायांश्चपूरुषः पादोस्यसर्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतंदिवीति इसमेंभूतशब्दसेस्थावरजङ्गमजीवकहा है जीवसेभूतशब्दकाप्रयोगदेखनेसे अहिंसन्सर्वभूतान्यन्यत्रतीर्थे भ्यइति अंशपादभागजेएकार्थबाची हैं अस्य सहस्रशीर्षपुरुषका तावान् प्रपञ्च महिमा विभूति तिससे प्रपञ्चसे पुरुषज्यायान् महत्तर भूतानिजीवाः तीर्थानिविधिविहितकर्माणि तेभ्योन्यत्र सर्वप्राणिहिंसामकुर्वन्ब्रह्मलोकमाप्नोतीत्यर्थः जैसे इसमेंभूतप-दप्राणिमेंप्रयुक्त है तैसे मन्त्रमेंभी है भावः ॥

अपिचस्मरन्ति ४५

ईश्वरगीतामें ममैवांशो इत्यादि तिससे ईशांशजीव है य-

हांईश्वरईशिताअंशीवोजीवईशितव्यअंशहै शास्त्रसेनिरतिशयोपाधिसम्पन्नईश्वरहीनोपाधिसम्पन्नजीवों शासनकर्ताहै तिससे कछुविरुद्धनहींहै कोईकहितेहैं कियहकेवलभावनोपदेशहैन किवस्तुगतिहै ॥

प्रकाशादिवन्नैवम्परः ४६

जैसा जीवदुःखत्वादिगुणोहै ऐसापरः परमात्मा नहीं है किसकीनाई जीवकेगुणोंकाअभावईश्वरमेंहै इससे पढ़ाकिप्रकाशादिवत् जैसे सौरादिप्रकाशअङ्गुल्यादिदेशमें होसूधाटेढ़ादिखाताहै आदिशब्दसे घटादिप्रदेश व्योमहीधूमादिमान्है और नकिप्रकाशदेशयाव्योमदेशऋज्वादिमान्याधूमादिमान्है तैसे हीजीवकेदुःखादि गुणईश्वरमें नहींहै अन्तःकरणावच्छिन्नोजीवः प्रतिबिम्बोवा ॥

जैसे चैत्रकेकरपादादिअङ्गोंकेदुःखसे चैत्रअङ्गीदुःखीहै तैसे ईश्वरांशजीवोंकेदुःखोंमे अंशीईश्वरदुःखीहो ईश्वरकोजोप्राप्तहैसोमहत्तरदुःखप्राप्तहोक्युंईशसमष्टिहोनेसे ईश्वरःस्वांशदुःखैर्दुःखीअंशित्वान्चैत्रवत् ज्ञानसेईश्वरभयेपरसबदुःखों की प्राप्तिसेसंसारश्रेष्ठहै क्युं संसारमेंअपनेहीदुःखमात्र का अनुभव है इससेसम्यग्दर्शनअनर्थकहो इसशङ्काकाउत्तरसूत्रसुनो जैसे जीवदुःखभोक्ताहै तैसे ईश्वरनहींभोक्ताहै यहप्रतिज्ञाहै जीवअविद्याकेवशसेदेहहीहुआ देहकेदुःखोंसेदुःखीजानताहै देहाभिमानसेफिरईश्वरकोनदेहादिमेआत्मभाव है न दुःखकाअभिमान है जीवकेतुल्यऔरजीवकोभीअविद्याकृतनामरूपदेह इन्द्रियादिउपाधिकेअज्ञानसेभ्रमनिमित्तहीदुःखकाअभिमानहै पारमार्थिकनहींहै जैसे अपनीदेहकेदाहच्छेदपीड़ादि सेदुःखकोदुःखके

अभिमानकेभ्रमसेउसेअनुभवताहै किपुत्रमित्रादिकादुःखउनसे
अभिमानभ्रांतिसेअनुभवताहै कहोतोकैसाअभिमानकाभ्रमगा
तेहोसुनो जैसे मैहोपुत्रहूं वोमैहोमित्रहूंऐसेहोपुत्रमित्रादिमेप्री
तिकेवशसेघुसादुःखसहताहै तोअवनिश्चयहुआ किमिथ्याभिमा
नकाभ्रमहोदुःखकानिमित्तहैअन्वयदृष्टांतदुःखमे कहा अवदुःख
केअभावमेंव्यतिरेकदृष्टांत देखाजहांबहुतपुत्रमित्रादिवन्तबैठेहैं
वोउनकेसम्बन्धके अभिमानीऔरहैं वोअन्यअभिमानशून्यहैंफि
रउनकेबीचमेकिसीनेकहा किपुत्रमरामित्रमरायहसुनिजिनको
पुत्रमित्रादिमत्ताकाअभिमानथा उसकोहोउनके मरणनिमित्त
दुःखहै नअभिमानसेछुटेपुरुषको इससेदेखाकिलौकिकपुरुषको
भीसम्यग्दर्शनसार्थहै फिरक्याकहियेविषयशून्यआत्मासेअन्यव-
स्तुकोनदेखनेवालेकोवुहनित्यचैतन्यमात्र स्वरूपद्रष्टाहै तिससेस
म्यग्दर्शनव्यर्थनहींहै प्रकाशादिवत् जैसे चांद्रसौरप्रकाशव्योम-
मेफैलास्थितअङ्गुल्यादिउपाधिके सम्बन्धसेउनमेऋजुवक्रादिहो
नेसेऋजुवक्रकेतुल्यदिखातेहैं नसच्चे ऋजुवक्रहैं औरजैसे व्योम
घटकेलेचलनेमेचलतासाजानपड़ताहै नपरमार्थ से व्योम चल
ताहै औरजैसे थारी मेपानीकेकांपनेसेपानीमेपड़ासूर्यप्रतिबि
म्बकांपताहै परसूर्यनहीं कांपताहै तैसे अविद्यासेप्रापितबुध्या
दिमेंउपहितजीवनामअंशमेंदुःखहै नअंशीश्वर मे कह चुके हम
किजीवकोदुःखप्राप्तिअविद्यानिमित्तहै औरवेदांतजीवभावछुटा
केजीवकोब्रह्मभावकहतेहैं तत्वमसीति तिससे जीवके दुःखसेई
श्वरदुःखीनहींहै जोईश्वरमेभीदुःखहै तो जीवकोईश्वरकहनेसे
कछुलाभनहोतिससे जीवदुःखसेईशदुःखीनहींहै

स्मरन्तिच ४७

स्मृत्यप्रामाण्यवादिनन्निरस्यन्नाह्नर्षिः ॥

तयोरन्यः पिप्पलंस्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीतीतिएकस्तथास र्वभूतांतरात्मानलिप्यतेलोकदुःखेनवाह्यइतिचइसमे कहिता है कियदिएकहीसबभूतोंकाआत्माहै तदालौकिकबैदिकविधिनि षेधकैसेहो सैभेदकोन्हृशृङ्गवदसत्नहींकहताहूं किन्तुमृषायदि- कहोईश्वरकेअंशजीवकेभेदसेवेदोजीवमे हैं नदोमेमिश्रहैं फिर- क्यायहांशङ्काहै कहिताहूं किजीवअंशनहींपरन्तुअभेदवादिनी श्रुतिजीवकोअनंश कहिती है तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशतइत्यादि ननुतुमनेभेदाभेदसेअंशकहाथा अंशतोहोजोभेदाभेददोनोंइष्ट- हों यहांतोअभेदहीइष्टहै ब्रह्मात्माकीप्रतिपत्तिमेंपुरुषार्थकीसि द्धिसे औरलोकस्वभावसेप्राप्तभेदकाअनुवादहैनिरवयवब्रह्म का- मुख्यांशजीवसम्भवनहींहै यहमतभूलो तिससेपरहीएकसबभूतों काअन्तरात्माजीवरूपसेस्थितहै इस शङ्कामेकहोविधिनिषेधको सिद्धि उसकोकहिताहूं आम्नायसमुच्चयार्थश्चः दशइन्द्रियांपांच प्राणमनबुद्धिलिङ्गदेह इससेयुक्तदुःखीहैनकिईश ॥

अनुज्ञापरिहारौदेहसंबंधाज्ज्योतिरा दिवत् ४८

ऋतौभार्यामुपेयात् अर्थ ऋतुसेबिषमदिनकोरातिमेरति- करो यहबिधिहै परपत्नींनोपगच्छेत् परनारीसे कभी भोग नक रोयहनिषेधहै तथाग्नीषोमीयंपशुंसंज्ञपयेदितिमाहिंस्यात्सर्वांभू तानीति लोकमेभीहैं किमित्रको सेवो शत्रुकोत्यागो जोदोएका त्माकोदेहकेसम्बन्धसेहों कौनहै देहसम्बन्ध देहादिसङ्घातज्ञा- नमैंहीहूं यहआत्माकेबिपरीतबोधदेखाहै सो वहप्राणियोंकोहै

जैसा मैंजाताहूं मैंआताहूं इत्यादि फिरइसबोधकासम्यग्दर्शनसेअन्यकोईभीनाशकनहींहै सम्यग्दर्शनकेप्राक्सबजन्तुमेंयहभ्रमफैलाहै ऐसेएकात्मामानेमेंभीअनुज्ञापरिहारबनिसक्तेहैंदेहादिउपाधिकाजोअविद्यानिमित्तहै उसकेसम्बन्धविशेषसेतौहैं सम्यग्दर्शीकोविधिनिषेधव्यर्थहै ओम् हां नियोगके विषयहैतकेअभावसेआत्मासाध्यनहींहै तोउसमेंनियोगअसङ्गतहै तिससे ब्रह्मवित्नियोज्यनहींहै हेयवोग्राह्यमेंनियोज्यजोड़ाछुटायाजाताहै ब्रह्मवित्तोआत्मासेभिन्नहेयवोग्राह्यवस्तुकोनहींदेखताहै फिरकैसेनियोज्यहो औरआत्माआत्माकानियोज्यनहो जिसको देहसेभिन्नआत्माकाज्ञानहै सोहीपरलोककेफलार्थकर्ममें अधिकारी है तो ब्रह्मवित् भी नियोज्यहै देहसे भिन्नआत्माकेज्ञान सेसो नहीं कर्मठ को देहाभेद का भ्रम है भ्रम उपाधिसेहै सचहै अयेवच्चे तोभी जैसे व्योमदेहसेभिन्नहै तैसे मैंदेहसेभिन्नहूं ऐसेजोभ्रांतनहींदेखताहै सोहीनियोज्यहै देहसेभिन्नकिसीआत्मदर्शीकोनियोगनहींदेखाहै फिरक्याकहाचाहिये उसको जोएकहीआत्मादेखताहै नियोगकेअभावमेंसम्यग्दर्शीजोचाहै सोकरैसोनहीं सर्वत्रअभिमानहीप्रवर्तकहै फिरसम्यग्दर्शीको अभिमानहीनहींहै विषयमेंप्रवर्तकरागकेअभावसेप्रवृत्तिनहींहै सार तथाचब्रह्मविन्नियोज्यःविवेकित्वात्कर्माधिकारिवत् ब्रह्मविन्ननियोज्योऽभ्रांतत्वात्सुषुप्तवत् संहृतदर्शनशून्यभेदभ्रांतशून्य सुषुप्तदेहसेभिन्नदर्शीहै अज्ञकोभीभ्रांतिकेअभावकाल में नियोज्यत्वनहींदेखातोआत्मवित्कोक्याकहो जिसनेविषयकोविरसजानछोड़ाहै फिरकैसेउसेसमेटेगा ज्योति ॥

जैसे एकहीअग्निहै तोभी क्रव्यादको नहींलेतेहैं अन्यको लेतेहैं और जैसे एकहीसूर्यकाप्रकाशअमेध्यठौरमेंत्याज्यहै न-

मेध्यठौरमेफैलातेसेएकमाटीकीवस्तुवज्रवैदूर्यादिलेतेहैंशुचिता वोप्रयोजनसेनकिनरखरादिके हाड़ तैसे एक पानीमाटीकेमूत्र पुरीषादिगीकेपवित्रमानकेलेतेहैं नशूकरकुत्तादिकेअपवित्रता से तैसे एकहीकेउपाधिभेदसेविधिनिषेधयुक्तजानों ॥ कायस स्पर्शादिवविधिनिषेधौभौमादिवत् ॥

असन्ततेश्चाव्यतिकरः ४९

असङ्कर ॥

स्यातांतावन्नामानुज्ञापरिहारावेकस्याप्यात्मनोदेहविशेषयोगात् यस्त्वयं कर्मफलसम्बन्धःसचैकात्म्याभ्युपगमेव्यतिकीर्येतस्वाम्येकत्वादितिचेन्नैतदेवं असन्ततेःनहिकर्तुर्भोक्तुश्चात्मनःसन्ततःसर्वैःशरीरैःसम्बन्धोस्तिउपाधितंचोहिजीवइत्युक्तंउपाध्यसन्तानाच्चनास्तिजीवसन्तानः ततश्चकर्मव्यतिकरःफलव्यतिकरोवानभविष्यतीति अर्थ यद्यपि स्थूलदेह के सम्बन्ध से ग्रहण त्यागहैं तथापिऔरकेकरेकर्मकाफलऔरहीभोग करे यहकर्म फलोंकेभेदकासङ्करहोकिदेहसहितकोस्वर्गादिकेभोग के अयोगसेअदेहएकहीआत्माकेभोक्तासे तिससे स्वर्गीनर्कीइसव्यवस्था कीसिध्यर्थआत्माकास्वरूपभेदकहोयहशङ्कार्थ है उक्तसांकर्य तो होजोअनुपहितहीआत्माभोक्ताहो सोतोनहींहै मोक्षमेंभीबुध्युपहितकोकर्तृत्वसाधनसेतवतोबुद्धिकापरदेहमें असम्बन्ध सेबुद्धि उपहितजीवकापरदेहमेंसम्बन्धनहींहै फिरबुद्धिभेदकरकेभोक्ता केभेदसेफलकर्मादिकासाङ्कर्यनहीं है यह समाधार्थहै ॥

आभासएवच ५०

जीवसाक्षात्परात्माहै औरनपरात्मासेभिन्नहै किन्तुपरात्माकाआभासअर्थात्विद्या वोअविद्याकाकार्यबुध्यादिमेंप्रतिवि

स्वजीवहै औरनअंशहै औरनपरिछिन्नहै इससेजैसे एकजलसू
र्यकेकांपनेसेजलसूर्यांतर नहीं कांपता है तैसे एकजीवमें
जिसकर्मफलकासम्बन्धहै सोजीवांतरकोनहींहै इसरीतिसेक
र्मवाकर्मफलकासङ्करनहींहै औरआभासकुविद्याकाकराहै औ
रआभासकेआश्रयसंसारकोभी अविद्याके कार्यकीसिद्धिहै इस
सेअविद्याकेनिराससेपारमार्थिकब्रह्मात्मभावका उपदेशउपपन्न
है भास्करनेकहाकिप्रतिबिम्बउपाधिसंसृष्टतासे कल्पित नहीं
किन्तुस्वरूपसेहै तोतोकल्पितप्रतिबिम्बकोमुक्तिमें स्थितिके अ-
योगसेजीवत्वनहींहै इससिद्धांतकेअज्ञानसेहै यदि दर्पणमेंमुह-
सिपीमेंचांदीकेतुल्यकल्पितहो तदायहचांदीनहींहै इसस्वरूप
बाधकेतुल्ययहमुहनहींहै यहबाधहोइससेदर्पणमें मुख नहीं है
संसर्गमात्रकेबाधसेमेराहीयहमुहहै इस अबाधकमुहकेअभेद-
केअनुभवसेसंसृष्टताहीसे कल्पित है रूपंरूपम्प्रतिरूपोबभूवेति
इसऋग्वेदकेमन्त्रमे प्रतिबिम्बभावका प्रवेशकहा है इससेस्वरूप
कीकल्पनानहींहै औरसांख्यवोकणादकेमतमे बहुत आत्मा हैं
इससेउनकोव्यतिकरहैकैसे बहुतविभु चैतन्यमात्रस्वरूपनिर्गुण
निरतिशयआत्माहैं उनकेअर्थसाधारणप्रधानहै औरउनकोभो
गवोमुक्तिकीसिद्धिप्रधानकेनिमित्तसेहै इससांख्यमतमेंसबआ-
त्मोंकाचैतन्यस्वरूपसेवोसमीपादिअर्थात्औदासिन्य केअभेदसे-
एककेसुखदुःखमेसबकोसुखदुःखप्राप्तहै उक्तसङ्करताहोतोजोप्र
धानकीप्रवृत्तिपुरुषकीकैवल्यार्थनहोती सोनहीं सबपुरुषोंकाप्र
कृतिसेसमीपादिमेविशेषनहींहै तोभीप्रकृतिहीहरएकपुरुषकी
नियमसेभोगमुक्तिकेअर्थप्रवर्ततीहै फिरजिसकोउद्देशकरप्रधान
कीप्रवृत्तिसेभोगमुक्तिकानियमहै जोअनियतप्रवृत्तिप्रधानकीमा
नोगेतोउसनेअपनीमहिमाजतानेकेअर्थप्रवृत्तिकीफिरपुरुषकी

मुक्तिनहुई विघातहुआ यहसारनहींकिदृष्टसिद्धिसेव्यवस्थाजतासकोकिसीयुक्तिसेव्यवस्थाकहो फिरयुक्तिकेबिनादृष्टपुरुषकैवल्यमतहो फिरव्यवस्थाकेहेतुकेअभावसेव्यतिकरप्राप्तहै भावप्रधानकोजड़तासेज्ञाननहींकिकिसेछुटाऊं किसकोनहीं अनागतऔरअचेतनजोपुरुषार्थहैसोकहोकैसेनियामकहै सानवोयुक्तिबिनाकहनेसेव्यवस्थावधूधवहीनलखेसे ॥

वहुतविभुघटकुड्यादिकेसमानद्रव्यमात्रस्वरूपआपअचेतनआत्माहैं उनकीसामग्रीअणुमनआदिअचेतनहैं इनमेआत्ममनकेसंयोगसेबुद्धिसुखदुःखेच्छाद्वेषप्रयत्नधर्माधर्मभावनाजेनौ आत्माकेविशेषगुणजन्मतेहैं वेअव्यतिकरसेहरएकआत्मामेसमवायसम्बन्धसेरहितेहैंसोसंसारहै उननौकाअत्यन्तअनुत्पादमोक्षहै इसकाणादमतमे यदा एकात्मासेमनसंयुक्तहै तदाआत्मांतरसेभीनांतरीयकसंयोगहो संनिधानादिकेअविशेषसे तिससेमनकेसंयोगकेअविशेषसेवोसुखादिफलके अविशेषसेएकात्माकेसुखादिमेंसर्वात्माकोभीसमानसुखादिकाप्रसङ्गहै इसढबभोगादिकासांकर्यहै ॥

अदृष्टानियमात् ५१

अपूर्वसाधारण्यान्नव्यवस्था ॥

बहुतव्योमवत्सर्वत्रफैलेआत्मोंमेहरएकदेहमेंबाहिरभीतरसेमिलेमनवचनदेहसेधर्माधर्मलक्षणअदृष्टजन्मताहै सांख्यमतमेंजड़प्रधानमेवर्तताहै औरप्रधानसाधारणहै तिससे हर एककोदुःखकेभोगकाकोईनियामकसिद्धनहीं है और काणादों कोभीमनकेसंयोगकेतुल्यआत्ममनका संयोगसाधारणसेसिद्धअदृष्ट है तोइसीआत्माकायहअदृष्टहै इसनियममेकोईहेतुनहीहै तिससेअदृष्टनिमित्तनियमनहींहै ॥

अभिसन्ध्यादिष्वपिचैवम् ५२

मैनेइसफलकोलियावोमैनेइसफलकोछाड़ा ऐसे यतताहूं ऐसे कर्त्ताहूं इसरीतिका अभिसन्ध्यादिहरएकात्मामेंपृथक् २ प्रवर्तमानहीं अदृष्टवोआत्माके स्वस्वामिभावके नियामकहोंगेसोभी नहींकहिताहै अभिप्रायज्ञानहै आदिपदसेइच्छादिलेतेहैं क्रियमान ॥

अभिसन्ध्यादिभीसाधारणआत्ममनकेसंयोगसेसबआत्मोंकी सन्निधिमेंनियमकेहेतुनहींहैं तोअव्यवस्थादोषज्युंकात्युंबनाहै ॥

प्रदेशादितिचेन्नान्तर्भावात् ५३

यदिकहोकिविभुआत्माकाभीदेहमेघुसामनकासंयोगउसीदेहमेहोगानपरदेहमें इससे अभिसंध्यादिवोअदृष्टवो सुखादिकी व्यवस्थाप्रदेशसेहोगी सोभीनहींयुक्तहै किससेसबआत्माकासबदेहमेअन्तर्भावसेवोविभुत्वकेअविशेषसे सबआत्माओंकोसन्निधिमेकिसीकाप्रदेशकल्पनेकोशक्यनहींहै कल्पनाकानियामकनहोनेसेभलानिष्प्रदेशआत्माका कल्प्यमानप्रदेश काल्पनिक होनेसेपारमार्थिकअभिसन्ध्यादिकोंका नियमनकरनेकोसक्त नहीं है देहभीसबआत्माकीसन्निधिमेजन्माजिसआत्माकादेहहैउसी आत्माकोउसीदेहसेभोगहोनऔर को यह नियमनहींकर सक्ती हो जिसआत्माकेप्रदेशमें अदृष्टजन्माहै वुह क्याचलवास्थिरहैनाद्यः अचलअंशोकेअंशकाचलनवो विभागअसम्भवसेवोअणुवादप्रसङ्गसेदूसरेमेंस्थिरप्रदेशमें औरकोभोग देखनेसे अदृष्टहै इसीएकदेहसेभीदोआत्माकोभोगकाप्रसङ्ग हो और सावयवात्म वादकाप्रसङ्गहो यहांजन्माअदृष्टजहांकहींभोगकाहेतुहोने से स्वर्गादिभोगसिद्धिसोभीनहींभोगदेहसेदूरस्थादृष्टमेमानके न होने से

किसीनेकहाकिमनएकवोत्रात्मोंकेभेदसेसंयोगकीव्यक्तिकेभेदक
रकिसीसंयोगकीव्यक्तिसेकिसीत्रात्मामेत्रदृष्टादिहैं तिससेसङ्क-
रनहींसोभीनहींहै संयोगव्यक्तिमे वैजात्यनहोनेसे सवव्यक्तिको
एकदेशांत को सब आत्मामे अदृष्टका हेतु हो फिर सबत्रात्मा
कोएकदेहमेभोक्तृत्वदुर्वारहै चैत्रजिसप्रदेशमेसुखादिकाअनुभव-
कर्त्ताथा तिससेनिकलउसीदेहमेवामैत्रदेहमेउसीप्रदेशमेप्राप्तहै
तोउसकोभीऔरकेसमानसुखादिकाअनुभवदेखतेहैं सोनहोय
दिचैत्रमैत्रकासमानप्रदेशमेंअदृष्टनहो औरप्रदेशवादीके मत मे
स्वर्गादिकाभोगनहो प्रदेश यहांदेहमेअदृष्टजन्मताहै औरस्वर्गा
दिकाभोगप्रदेशांतरवर्तीहोनेसे मैयहांहोहूं इस अल्पानुभव से
वोमानाभावसेआत्माविभुनहींहै और बहुतआत्माओंको दृष्टांत-
केअभावसेपहिलेतुमकहोकौनबहुतसमान प्रदेशहैंयदि रूपादि
कहैंतदावेभीनहींहैजैसेरूपरसादि एकघटमेस्थितहैंयहदृष्टांतह
मकोइष्टनहींहैरूपतेजकोआधार सजलमात्र गन्ध पृथिवीमात्रहै
जोजिसकागुणहैसोअपनेधर्मीअंशकेसाथअभेदसेतेज आदिधर्मी
सेभिन्नघटनहींहै लक्षणके अभेदसेभी बहुत आत्मानहींहैं जैसे
मैत्रात्माचैत्रात्मासे भिन्ननहींआत्मतासे चैत्रात्मवत् इसमेवैशे
षिककोशङ्काहै कि नित्यद्रव्यकोपृथक्करनेवालेविशेषपदार्थहैं
वेऔरोंकोपृथक्करतेहैं नऔरकीअपनेपृथग्करने मेअपेक्षाकर-
तेहैं इसहेतुसेवेअन्त्यकहातेहैं इस विशेषरूपलक्षणकेभेद से आ-
त्मभेदहै सोभीनहीं आत्माका अनात्मासेभेदज्ञानार्थविशेषक-
ल्पनायुक्तनहीं आत्मत्वसेहीअनात्मभेदकी सिद्धिहै आत्माओं-
कामिथोभेदज्ञानार्थभीविशेषकोमानना उचितनहींहैअन्योन्या
त्मभेदकीअसिद्धिसे और आत्मभेदकेज्ञानमेआत्माओंसेंविशेषभे
दकीसिद्धिहै औरविशेषभेदसिद्धिमेंआत्मभेदका ज्ञानहै इसअ-

न्योन्याश्रयदोषसेविशेषभेदकल्पनासेत्रात्मभेदकल्पनायुक्तनहीं है व्योमादिक्कालादिदृष्टांतवहुतविभुमें दियेहैंवेभोसम्मतनहीं व्योमदिकार्यन्नविभु लाघवसे एकही विभुहै इससेनविभुभेदहै जैसे एकव्योममेंभेरीवीणादिकेभेदसेतारमन्दादिशब्दोंकीव्यवस्थाहै ऐसेहीएकआत्मामेबुध्युपाधिकेभेदसेसुखादिव्यवस्था की सिद्धिसेआत्मभेदकल्पनामुधाहै ऐसेभूतभोक्तृश्रुतिकाविरोधनिरासकरअद्वयमेसमन्वयकियाहै तिससेआत्मैकात्वपक्षमे सब दोषोंकाअभावसिद्धहै ॥

इतिश्रीयुक्ताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येद्वितीयाध्यायस्यतृतीयःपादःपूर्णः ॥

लिङ्गश्रुत्यविरोधपाद ४

इन्द्रियजन्माधिकरण ॥ १ ॥

तथाप्राणाः १

तीसरेपादसेव्योमादिमेश्रुतिविरोधकावारणकरअवचौथेसे प्राणमेविरोधवारतेहैं तेजव्योमादिकेजन्माधिकारमेप्राणों काजन्मनहींपढ़ाहै प्राणावावऋषयः इससेउनकासद्भावसुनाहै कहींजन्मसुनाहै जैसे अग्निसेछोटे२विस्फुलिङ्गभरतेहैं तैसे आत्मासेप्राणजन्मतेहैं ॥

इसश्रुतिविरोधसेऔर अन्यतरनिर्धारणके हेतुनहोनेसेनिश्चयनहींहै अथवा जन्मकेपूर्वसद्भावसुन्नेसे प्राणजन्मश्रुतिगौणीहै इसशङ्काकाउत्तरसूत्रहै सदृशमेतथाशब्दकहाजाता है जैसेयथासिंहहै तथावलदेवहै जैसे अदृष्टसवआत्माके समीप जन्मा-अनियतहै तैसे प्राणहैं सोभीदेहकेअनियमसेपुनरुक्तहै सिद्धां-

तबिरोधसेजीवकेसाथभीप्राणोंकोउपमानहींहै इससेतथापदस स्बद्दनहींहै यहांप्राणजन्मवाक्यजातउदाहरणहैं जैसे एतस्मा-दात्मनः सर्वेप्राणाः सर्वेलोकाः सर्वेदेवाः सर्वाणिभूतानिव्युच्चरन्ती-त्यादि जैसे लोकादिसबपरसेजन्मेहैं तैसे प्राणभीजन्मेहैं यही श्रुतिवोसूत्रकाअर्थहै जैसेपूर्वमीमांसासेयज्ञमेवारुणीदृष्टिहै औरसोमबमनमेदोषहै तिससे व्यवहितउपमानमानाहै तैसेहीतीसरेपादकाकहायहांलेनातथाशब्दसे कहाहै कहीं प्राणकाजन्म नहींसुना।सोअयुक्तहै कहींसुन्नेसे नहीं फिर सुन्नेसेव्योमादिवत् प्राणभीजन्यहै ॥

गौण्यसम्भवात् २

प्राणजन्मश्रुतिगौणीसंभवनहींहै क्युं प्रतिज्ञानहानसे कस्मिन्नुभगवोविज्ञातेसर्वमिदमित्यादि इसकाउपसंहारहैकि ब्रह्मैवेदं विश्वं वरिष्ठमित्यादिमेभीऐसीप्रतिज्ञाकी योजना करलोकोईप्रतिज्ञाकोछोड़केव्योमाधिकरणके अनुकूलइससूत्रकीव्याख्या करतेहैं प्राणावावऋषयइति ऋषयोवावतदग्रेसदासीदिति इस सेप्राणअजसुनाहै ॥

तत्प्राक्छ्रुतेश्च ३

जायतेयहएकपदउत्तरश्रुतव्योमादिमेमुख्यऔरप्राक्श्रुतप्राणोंमेगौणनहींकहिसक्तेहैं वैरूप्यसेजैसेसप्राणमसृजतप्राणाच्छ्रद्धामिति यहां प्राणश्रुतसृजतिशब्दअन्यजन्यश्रद्धादिमेअनुसञ्जितहैं जैसेसर्वाणिभूतानिव्युच्चरन्तीत्यादि इसमेंअन्तिमपढ़ाव्युच्चरन्तिशब्दपूर्वपढ़ेप्राणादिसेसम्बद्धहै ॥

तत्पूर्वकत्वाद्वाचः ४

यद्यपितेजसृष्टिकेअधिकारमेप्राणजन्मनहींसुनाहै तेजोवन्न

इनतीनकाजन्मसुनेसेतथापि जेतीन ब्रह्मप्रकृतिहोनेसेवाक्प्रा
णमनब्रह्मप्रकृतिकसिद्धहैं औरठौरमें भी तेजजलअन्नपूर्वकवाक्
प्राणमनपढ़ेहैं अन्नमयंहिसोम्यमन:आपोमय: प्राणस्तेजोमयीवा
गितिजोजेमुख्यअन्नादिमयहैं तोब्रह्मप्रभवहैं अथभाक्तहैं तोभी
ब्रह्मकीकरीनामरूपव्याक्रियासे सुनेसे ब्रह्मकर्तृत्वके प्रपञ्चार्थअ
न्नादिमय त्वमनआदिकोकहाहै तिससेप्राणभीब्रह्मकाविकार्यहै

इन्द्रियसंख्याधिकरण २

सप्तगतेर्विशेषितत्वाच्च ५

पूर्वपक्षसूत्रहै

टूरकियाप्राणोंकेजन्ममेंश्रुतिविरोधअबसंख्यामेंविरोधटूरकरते
हैं कहींसातहैं जैसेसप्तप्राणाभवन्तीति कहींआठग्रहरूपसेकहे
हैं जैसे अष्टौग्रहाअष्टावतिग्रहाइति कहींनौ सप्तवैशीर्षण्या:प्रा
णाद्वाववांचाविति क्वचिद्दशनववैपुरुषेप्राणानाभिर्दशमीति क्व
चिदेकादशदशेमेपुरुषेप्राणाआत्मैकादशइति क्वचिद्द्वादशसर्वेषां
स्पर्शानांत्वगेकायनं क्वचित्त्रयोदशचक्षुश्चद्रष्टव्यं ऐसे श्रुतिलड़
तीहैं मिथ:प्राणसंख्यामेंफिरसातहीप्राणहैं यहप्राप्तहै कैसे गते:
श्रुतिसे सातनिश्चितहैं ननुगुहाशयानिहितासप्तसप्तेति इसमेंदो
वारसातसातकानामवीप्साहै वहसातसेअधिककोदिखातीहै
सोदोषनहींहै हरएकपुरुषमेंसातसातप्राणहैं नकि सातसातअ
न्यअन्यप्राणहैं विरोधसे लोकसंख्याकाअनुरोधहै औरवृत्तिभेद
सेसातसेअधिकसंख्याकासुनाहै यह निश्चयएकमतसेहै दूसरेम
तसेहीनअधिकजहांसंख्याप्राप्तहोवहांअधिकलेवेहीनउसमेंअन्त
र्गतहोसक्तीहै नकिहीनमेंअधिक इसयुक्तिसे ग्यारहप्राणहैं आ
त्मैकादश इसमेंआत्मशब्दसे अन्त:करणलेतेहैं करणकेअधिका
रसे यद्यपिबारहतेरहभीकहेहैं तथापिग्यारहकेकार्यहैं नकिअ

धिककौजिससे अधिककरण कल्पोगे शब्दस्पर्शरूपरसगन्ध जेपांच विषयबुद्धिकेभेदहैं इनकेअर्थपांचबुद्धीन्द्रियांहैं औरबचनआदा नविहरणउत्सर्गआनन्दजेपांचकर्मभेदहैं इनकेअर्थपांचकर्मेन्द्रि यांहैं सर्वार्थविषयऔरत्रैकालिकवर्तिमन एकअनेकवृत्तिहै ऐसे होवृत्तिभेदसेकहींभिन्नवत्कहाहै जैसेमनबुद्धिअहंकारचित्तादि जोसातमानताउसकेहाथचारहोलगेस्थानभेदसेदोकान१दोनेत्र२ दोनाक३एकवाग्४औरनकि वृत्तिभेदसातहैं हाथादिवृत्तिअत्य न्तविजातीयहोनेसे तैसेनौदशभीदेहकेछिद्रोंकोअभिप्रायसेकहे हैं नकिप्राणतत्वाभिप्रायसे नाभिकोई प्राणप्रसिद्धनहींहै मुख्य प्राणकाविशेषएकायनहै कहींउपासनार्थगनेहैं कहींप्रदर्शनार्थ हैं फिरइसबिचित्रबिगानमेंकार्यपरहै यहबिवेक्तव्यहै कार्यवश सेग्यारहकाआम्नानप्रमाणहै श्रुति हस्तौवैग्रहाइत्यादि ॥

हस्तादयस्तुस्थितेतोनैवं ६

सिद्धान्तसूत्रहै तुशब्दसातसेव्यतिरेककोकहताहै ॥ दोसूत्रों कीअपरयोजनाहै किसातकोगतिसुन्नेसेसातहैं श्रुति तमुत्क्राम न्तंप्राणोनूत्क्रामतिप्राणमनूत्क्रामन्तं सर्वेप्राणाअनूत्क्रामन्तीतिइ समेत्वगन्तनेत्रादिसातविशेषहैं जैसे कहेकिसबगायेंलाओ तो-जोप्रकृतहैं सोहीसबपदसेलीजावेंगी अन्यथाप्रलापहो ननुबि-ज्ञानअठमानिकरासुनाहै फिरसातहीकैसेनिकरेहैं यहदोषन-हींहै मनबिज्ञानकातत्वाभेदसेवृत्तिभेदसेभीसातसिद्धहैं इससे-कहाकिहाथादिअपरहैंहस्तौवैग्रहाइत्यादिमे अर्थ होत्रणजिससे बंधताहै इससेग्रह अर्थात्बंधनहैं आथर्वणमें हस्तौचादातव्यमि त्यादिऔरचक्षुश्चद्रष्टव्यमित्यादि इनकातुल्यवत्पाठहै औरग्या रहकेनिकरनेमें श्रुति दशेमेपुरुषेप्राणाआत्मैकादशस्तेयदास्मा च्छरीरान्मर्त्यादुत्क्रामंत्यथरोदयन्तीति अबसर्वशब्दकासङ्कोचन-

होंहै उससेअशेषकाग्रहहै प्रदर्शनार्थं सातका निकरनाकहाहै फिरशब्दसेऔरकार्यसे ग्यारह सिद्ध हैं ऋग्पञ्चिकामेसौ १००इन्द्रियांहैं शतायुर्वैपुरुषः शतइन्द्रियःशतवीर्यइति ॥

विशेषितत्वाच्च ७

अवप्राणोंकेस्वभावान्तरकाअभ्युच्चयहै अणुसूक्ष्महैंनकिपरमाणुकेतुल्यहैं सवदेहमेंव्यापककार्यकीअसिद्धिसे जोस्थूलहोतेतोमरणकालमेदेहसेनिकरतेपरबिलसे सांपकेतुल्यउपलभतेसियमाणकेढिगबैठेको परिच्छिन्नहैंनविभुहैं गत्यादिसे यदिसर्वगतकालाभदेहप्रदेशमेकहो सोभीनहींहै वृत्तिमात्रकोकारणकोसिद्धिसे जोउपलब्धिसाधनहै सोवृत्तिहै जोअन्यहै सोहीहमकोकारणहै फिरतोनाममात्रमे झगड़ाहै इससे कारणव्यापकमानना निरर्थकहै तिससेसूक्ष्मपरिच्छिन्नप्राणहैं यह मेरानिश्चयहै ॥

इन्द्रियपरिमाणाधिकरण ३

अणवश्च ८

मुख्यप्राणब्रह्मविकारहैइतरप्राणवत् यहअतिदेश है इससे सवप्राणब्रह्मविकारहैं श्रुतिएतस्माज्जायतेप्राणइत्यादिफिरकिस लियेअतिदेशहै अधिकशङ्कानिरासार्थ नासदासीदिति इसब्रह्मसूक्तमेंमन्त्रवर्णहै नमृत्युरासीदमृतन्नतर्हिनरात्र्याअन्हआसीत्प्रकेतः आनीदवातंस्वधयातदेकंतस्माद्धान्यन्नपरःकिञ्चनासेति अर्थ आनीत्इसपदसेप्राणकर्मोपादानसेजन्मके पूर्वविद्यमानसीप्राणसूचनाहै इससेप्राणअजहै यहकिसीकीमतिहै इसकोअतिदेशसेदूरकर्त्ताहैं आनीत्पदजन्मसे पूर्वप्राणसद्भावसूचक नहीं है अवात इस विशेषण से अप्राणो इसश्रुतिसेमूलप्रकृतिप्राणादिशून्यदिखाईहै तिससेकारणसद्भावसूचक आनीत्पद है ॥

प्राणजन्माधिकरण ॥ ४ ॥

श्रेष्ठश्च ९

प्राणोवावज्येष्ठश्चश्रेष्ठश्च इसमेंज्येष्ठप्राणशुक्रदानकालसेलेकेगर्भं तकहैअन्यथायोनिमेंनिषिक्तपूयहो औरश्रोत्रादिकानकेछिद्रादि स्थानकेविभागसेलब्धवृत्तिहैं।जैसे ज्येष्ठनहींहैं ज्येष्ठगुणाधिक्यसे हैश्रुति नवैशक्ष्यामस्त्वदृतेजीवितुमिति अर्थ प्राण हीनहमनहीं जीसक्तेहैं ॥

प्राणतत्वान्तराधिकरण ५

नवायुक्रियेपृथगुपदेशात् १०

अबजिज्ञासाहै

किमुख्यप्राणकाक्यास्वरूपहै श्रुति यःप्राणःसवायुःसएषवा युःपञ्चधाभवतिप्राणोपानोव्यानउदानःसमानइति या सांख्यम तसेसमस्तकरणवृत्तिप्राणहैं जैसे सामान्यकरणवृत्तिप्राणाद्यावा यवःपंचेत्यादिसोनहींनवायुप्राणहै नकरणव्यापारहैकैसेवायुप्रा- णसेभिन्नहै प्राणएवब्रह्मणश्चतुर्थःपादःसवायुनाज्योतिषाभातिच तपतिचेति इसमेवायुसेवायुकाभेदनहींहै तैसे करणवृत्तिकाभे दनहींहैवृत्तिवृत्तिमत्के अभेदसेकरणवृत्तिकरणसेभिन्ननहीं हैए तस्माज्जायतेप्राणइसमेकरणसेप्राणऔरवायुकाभेद पढ़ा है सब करणोंकीवृत्तिएकसम्भवनहींहै जैसे एकपिञ्जरमेबहुतपक्षीहर एकअपनी२वृत्तियुक्तहैं तोभी मिलकेएकपिञ्जरकोचलातेहैं तै- से एकदेहमेग्यारहप्राणहरएकनियतवृत्तिहोनेपरभी मिलके ए- कप्राणनामीवृत्तिलभतेहैं यहअच्छानकहातुमने पिञ्जराचला- नेमेहरएकवीचकीवृत्तिसे पिञ्जरचालनरूपसे युक्तपक्षीपिञ्जरको चलातेहैंऐसाहीदेखनेसेयहांश्रवणादिवृत्तियुक्तप्राणमिलकेप्राण ननहींकर्त्तेहैं यहयुक्तहैप्रमाणकेअभावसेश्रवणादिसे प्राणअ- त्यन्तबिजातीयसे तिससेवायुऔरक्रियासेप्राणभिन्नहैं यःप्राणः

सवायुरिति इसकाअर्थहैकिवायुअध्यात्मापन्नऔरपञ्चव्यूहऔर विशेषात्मासेअवतिष्ठमानहै सोहीप्राणकहानकितत्वांतरऔर-नकिवायुमात्र इससेदोनोंभेदाभेदश्रुतिविरुद्धनहींहैं यहरहो॥

चक्षुरादिवत्तु तत्सहशिष्ट्यादिभ्यः ११

प्राणभीदेहमेंजीववत्स्वतन्त्रहै श्रेष्ठसेऔरवागादिसबउससे गौणहैं प्राणकीविभूतिकोबहुतश्रुतियां सुनातीहैं जैसे सुप्तेषु-वागादिषु प्राण एकोहिजागर्ति प्राणएकोमृत्युनाअनाप्तः प्राणः सम्वर्गोवागादीन्संवृङ्क्तेप्राणइतरान्प्राणान्रक्षतिमातेवपुत्रानि ति इससेस्वातंत्र्यवारणार्थसूत्रहै चक्षुरादीतिजैसे नेत्रादिराज-प्रकृतिके तुल्यजीवकोकर्तृत्वभोक्तृत्वकेअर्थउपकरणहैं नकिस्वत न्त्रहैं तैसेमुख्यभीप्राणराजमन्त्रिकेतुल्यजीवकेसर्वार्थककरनेसे-उपकरणहै नकिस्वतन्त्रहै कैसे तत्सहशिष्ट्यादिभ्यः प्राणसम्वा-दादिमेनेत्रादिकेसाथउसकाशासनहै सहशासनसमानधर्मोंका युक्तहै बृहद्रथन्तरादिवत् सूत्रकारआदिशब्दसेसंहतऔरअचेत नादिहेतुओंकोप्राणकीस्वातंत्र्यनिराकरनमेदिखाताहै॥

अकरणत्वाच्चनदोषस्तथाहिदर्शयति १२

रहोकहा सो यदिनेत्रादिवत्प्राणजीवार्थकरणमानोगेतदा रूपादिवत्प्राणकाविषयभीहो रूपालोचनादिग्यारहकार्यसेग्या रहप्राणगनेथे नकिबारहऔर अबअन्यकार्यप्राप्तहै उसकेलिये-बारहमाप्राणप्रतिज्ञातहैइसशङ्काकाउत्तरपढ़ताहै अकरणत्वात् प्राणअकरणहै इससे विषयांतरकीप्राप्तिनहींहै नेत्रादिवत् वि-षयकेपरिछेदसेप्राणकरणनहींहै औरनकिप्राणकोकार्यअभावहै कैसे तथाहि श्रुति प्राणांतरमेंसम्भववैशेषिक कार्य प्राणकादि-खातीहै प्राणसम्वादमें अथहप्राणाअहंश्रेयसिव्यूदिरे इस आ-रम्भसे यस्मिन्वउत्क्रांतइदंशरीरंपापिष्ठतरमिवदृश्येतसवःश्रेष्ठइ

ति अर्थ प्रत्येकवागादिकेनिकरने सेवागादिकीवृत्तिमात्रअर्थात् मूकादि रहा जैसा पहिले जीताथा तैसाही जीता रहा और प्राणकीउत्क्रिक्रमिषामेंवागादि शिथिलऔरदेहपातश्रुतिदिखाती है इससेप्राणकेबशदेहइन्द्रियकाठहरनाहै फिरदेहादिसेबरिष्ठप्राणनेकहाकितुमअशोकमतकरोमैंअपनेको पांच बिधकरदेहकोयामकेधारणकरेहूं श्रुति मामोहमापद्यथाहमेवैतत्पञ्चधात्मानं प्रविभज्यै तद्बाणमवष्टभ्यविधारयामीति प्राणेन रचन्नवरं कुलायमिति सुप्तनेत्रादिमेंदेहरचकप्राणहै जिसकिसीअङ्गसे प्राणनि करता है सोसूखताहैजोखातापीताहै तिससेइतरप्राणोंकीरचाहै इस्से प्राणाधीनदेहेन्द्रियोंकी पुष्टि है प्राणाधीनजीवकाजीना मरणाहै श्रुति कस्मिन्न्वहमुत्क्रान्तउत्क्रान्तोभविष्यामिकस्मिन्वाप्रतिष्ठितेप्रतिष्ठास्यामीतिसप्राणमसृजतेति ॥

पञ्चवृत्तिर्मनोवद्व्यपदिश्यते १२

इससेभीमुख्यप्राणकावैशेषिककार्यहै जिससेउसकी पांच वृत्ति श्रुतिमे कही हैं श्रुति प्राणोपानोव्यानउदान:समानइति सोयहभेदकार्यकीअपेक्षासेहै इनकी उच्छासनिश्वासप्राणअपानकाकर्महै इनदोकी सन्धिमेंवर्तमानवीर्यवत्कर्महेतुव्यान है उदानऊर्ध्ववृत्तिउत्क्रान्त्यादिकाहेतुहै सबअङ्गोंमेजोअन्नरस कोपहुंचाताहै सोसमानहैमनोवत् जैसेमनकीपांच वृत्तिहैं तैसे प्राणकीहैं मनकीश्रोत्रादिबश शब्दादि पांच हैं नकिकाम:सङ्कल्प: आदिवेदमेपढीवृत्तियांग्राह्यहैं पांचसेअधिकहोनेसे याउनकापांचमेअन्तर्भावहै ननुयहांभीश्रोत्रादिकीअपेक्षाबिनाहीभूतभावीआदिमनकीअन्यवृत्तिहैं इससेसंख्याअधिकरही इससे नोपरमतनिषिद्धनहींहै सोसम्मतहै इसन्यायसेयोगशास्त्र मे प्रसिद्धमनकीपांचवृत्तिलेतेहैं योग सूत्र प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रा-

स्मृतयः इति इसका अर्थ मैंने योगसूत्रभाष्यमें लिखा है भावार्थ अथवा बहुतवृत्तिमात्रसे प्राणका निदर्शनमन है प्राणजीवका उपकरणपञ्चवृत्तिमात्रसे है मनोवत् यह सूत्रयोजना है इस प्रकरणमें वृत्तिशब्दका अर्थ अवस्था है इससे प्राणवायुके भेदाभेदश्रुतियोंका अविरोध सिद्ध है ॥

प्राणेन्द्रियसमताधिकरण ॥ ६ ॥

अणुश्च १४

अणुसूक्ष्मपरिच्छिन्न है उत्क्रांत्यादिसे ननुविभुभी प्राणपढ़ा है समःप्लुषिणा समोमशकेन समो नागेन समएभिस्त्रि१भिर्लोकैः समोने*नसर्वेणेति अर्थ आधिदैविक समष्टिव्यष्टि रूपजो है रण्य-गर्भप्राणात्माथा सो विभु कहा है न कि आध्यात्मिकप्राणविभु कहा है और समःप्लुषिणेत्यादि समानवचनसे प्रतिप्राणिवर्तिप्राणपरिच्छिन्न ही कहा है तिससे दोष नहीं है ॥

देवतापरतन्त्रेन्द्रियाधिकरण ॥ ७ ॥

ज्योतिराद्यधिष्ठानंतुतदामननात् १५

क्या प्राण अपनी महिमासे कार्य कर्ते हैं या देवाधिष्ठित स्वमहिमासे कार्य कर्ते हैं और देवाधिष्ठानसे देवभी भोक्ता हो और शारीर भोक्ता न हो इससे प्राण स्वशक्तिसे कार्य करते हैं सो नहीं ज्योतिरातु शब्द पूर्वपक्षका वारक है अग्न्यादिके अभिमानी देवोंसे अधिष्ठित वागादिकरणजात स्वकार्यमें प्रवर्तते हैं तदामननात् ऐसा ही पढ़नेसे अग्निर्वाग्भूत्वामुखंप्राविशदित्यादि अग्निका वाक् होना और मुहमें घुसना देवात्माको अधिष्ठाता मानके कहा है देवसम्बन्धका इ अग्निका वाणी मुहमें विशेषसम्बन्ध नहीं दिखते हैं अन्यथा मुहजरो ऐसे-अन्यश्रुतियोंमें जोड़लो जैसे शकटादि वर्द्धादिसे अधिष्ठित प्रवर्त-

१ विराट्देह ॥ * सूत्रात्मा ॥

मानदेखिहैं शकटादिवईयुक्तप्रवृत्तश्रौरचौरादिदध्यादिमेंश्रनधिष्ठितप्रवृत्तदेखनेसेदोनोंयुक्तहैं तोभीश्रागमसेदेवाधिष्ठित करण वर्तमानको देवकोभोगवारताहै प्राण ॥

प्राणवताश्रब्दात् १६

है प्राणाधिष्ठातादेवताभीशारीरकार्यकरणसङ्घातका स्वामीउससेप्राणोंकासम्बन्धश्रुतिसेश्रुतहै श्रथयत्रैतदाकाशमनुविषणंचक्षुः सचाक्षुषःपुरुषोदर्शनायचक्षुरथयोवेदेदञ्जिघ्राणीति स श्रात्मागन्धायघ्राणमित्यादिश्रपिचकरणोंकेश्रधिष्ठातादेवश्रनेक होनेसेएकदेहमेंवेभोक्तानहींकल्प्यसक्तेहोतिससेदेहमेंएकशारीरभोक्ताहै प्रतिसन्धानादिकेसम्भवसे ॥

तस्यचनित्यत्वात् १७

शारीरशरीरमेंभोक्तासेनित्यहै पुण्यपापकेलगनेसेदुःखसुखभोगसेनकिदेवनित्यहैं देहमेंदेवसारथिवत्हैं जैसे दीपादिक रणकेउपकारीकरणपक्षमेंघुसेहैं तैसे करणकेउपकारीहैं नकिभोक्ताहैं जीवरथप्रभुवत्भोक्ताहैऐसेजीवकरकेदेवश्रन्यथासिद्धनहीहैं श्रुतिपुण्यमेवामुङ्गच्छतिनहवैदेवान्पापङ्गच्छतीति यह श्रुतिदेवोंकोदेहमेंश्रधिष्ठानसेभोगकेश्रनुमानकी वाधिकाहै तिससेशारीरभोक्ताहै श्रौरदेवकरणपक्षकेहैं नकिभोक्तृपक्षके ॥

प्राणविलक्षणेन्द्रियाधिकरण ॥ ८ ॥

तइन्द्रियाणितद्व्यपदेशादन्यत्रश्रेष्ठात् १८

मुख्यएकश्रन्यग्यारहइसमेंयहसन्देहहै किक्यामुख्यकाश्रन्य वृत्तिभेदहैं यावस्त्वन्तरहैं यहप्रथमहैमुख्यकेश्रन्यवृत्तिभेदहैं कैसे श्रुतिसे हन्तास्यैवसर्वेरूपमसामेतितएतस्यैवसर्वेरूपमभवन्निति श्रर्थ वागादिनेसङ्कल्पकियाकिहमसबमुख्यप्राणस्वरूपहोवें फिर

वैसेही होगयेयह अभेदश्रुतिकाअर्थहै एकप्राणशब्दसेऐक्यनिश्चित है अन्यथाअनेकार्थप्राणशब्द अन्याय्यहोऔरएकठौरमुख्य अन्यठौरलाक्षणिकहोतिससे जैसेएकप्राणकोप्राणादिपांच वृत्तिहैं ऐसेही वागादिग्यारहवृत्तिहैंसोनहीं वागादिप्राणसेतत्वान्तरहैं कैसे व्यपदेशभेदात् एतस्माज्जायतेप्राणोमन:सर्वेन्द्रियाणिचेत्या-दि इसमेप्राणऔरइन्द्रियांपृथक्‌२पढ़ीहैं प्राणवत्मनकाभीइन्द्रियोंसेभेदहोयहसचहैतोभीस्मृतिकेअनुसारमनइन्द्रियहै नकिप्राणतत्वभेदपक्षमेव्यपदेशभेदउपपद्यमानहै औरतत्वैक्य मे एकही प्राणइन्द्रियव्यपदेशकोलभेयानलभेयहनिषिद्धहै तिससेतत्वांतरअन्यमुख्यसेहैं ॥

भेदश्रुतेश्च १९

वागादिसेप्राणभिन्नसुनाहै तेहवाचमूचुरिति यहां सेलेकि-उपन्यस्योपसंहृत्य यहवागादिप्रकरणहै अथ हेममासन्यंप्राणमूचुरिति तथामनोवाचंप्राणन्तान्यात्मनेकुरुतेत्यादिभेदश्रुति हैंयह असुरपदभूठकावाचकहैवाचादिभूठसेपापिष्ठहोतेहैं फिरअथ-शब्दसेमुख्यप्राणभेदकहाहै इसप्रकरणभेदसे अन्यतत्वांतरहैं मुख्यसे मुख्यसेअन्यबिलक्षणहैं सुप्तवागादिमें मुख्य एक जगता है सोएकमृत्युसेअनाप्तहै अन्यआप्तहैं मुख्यस्थितिउत्क्रांति से देह-धारणपतनकाहेतुहै नकिइन्द्रियोंकोइतरथा हीन इन्द्रिय मरी बिषयोंकोइन्द्रियांदेखतीहैं नकिप्राणकोतिससेवागादितत्वान्तरहैं अभेदश्रुतिमेभीपूर्वापरकेदेखनेसेभेदप्रतीतहै असरूपमृत्यु, सेवागादिग्रसितहैं नकिमध्यमप्राण अयम्वैन:श्रेष्ठ: इससे मुख्य है तिससेअविरोधायवागादिमेंपरिस्पन्दकालाभप्राणाधीनऔरप्राणरूपहोनाउनकामानोनकिप्राणकेसाथवागादि को तादात्म्यहै इससेप्राणशब्दइन्द्रियोंमेलाक्षणिकहै इसमेश्रुति तएत-

श्चैवसर्वंरूपमभवंस्तस्मादेतएतेनाख्यायन्तेप्राणाइति तिससे इ-
न्द्रियांतत्वांतरहैं प्राणसे ॥

वैलक्षण्याच्च २०

सोनेमेसबइन्द्रियांअपनेरकारणकेसङ्गसोतीहैं और प्राण-
जागताहै इसविलक्षणतासे प्राणऔरइन्द्रियोंकाभेदहै प्राणाग्न-
यएवैतस्मिन्जाग्रतीति और प्रात्यक्षिककार्यप्राण और इन्द्रि-
योंकाविलक्षणहै जैसा कि इन्द्रियांअपनेरविषयकोदेखतीअने
ताहैं औरप्राणइन्द्रियऔरदेहदोनोंकानेताहैचनेवाग्नेचादिमे
भीकर्मेन्द्रियऔरज्ञानेन्द्रियकेभेदकासमुच्चयकिया है इसवहवै
लक्षण्यसेप्राणसे इन्द्रियांतत्वांतरहैं ॥

जगत्कर्तृत्वाधिकरण ॥ ६ ॥

संज्ञामूर्त्तिक्लृप्तिस्तुत्रिवृत्कुर्वतउपदे-
शात् २१

सत्प्रकरणमेतेजजलपृथिवीकोसृष्टिकहिकेफिरकहा कि सो
यंदेवतैक्षतहंताहमिमास्तिस्रोदेवताअनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्य
नामरूपेव्याकरवाणीति तासांत्रिवृतन्त्रिवृतमेकैकांकरवाणीति
इसमेंक्याजीवहै नामरूपकाव्याकर्त्ताथापरमेश्वर है फिर जीव-
नामरूपकाव्याकर्त्ताहै कैसे अनेनजीवेनात्मनेति इस विशेषण-
से जैसे लोकमेंचारमेंमैपरसेनामेघुसिके उसको संख्यादिजानू
गा ऐसेकहिनेमेचारकेदेखिभेदकोहेतुकर्त्ताहोनेसेराजा अपने मे
आरोपकर्त्ताहै मैनेदेखाहै ऐसेजीवकृतनामरूपकोहेतुकर्त्तासे-
देवताआत्मामेआरोपताहै व्याकरवाणीति इसउत्तमपुरुषयोग
से क्रिच्च डित्थडवित्थादिनामोमेंऔर घटशरावादिरूपोंमेंजीव-
हीकर्त्तादेखाहै तिससेनामरूपव्याकर्त्ताजीवहीहै इसका उत्तर

हैकि संज्ञामूर्तिक्लृप्तिः तुपरमचवारक है नामरूपव्याक्रियाचि-
वृत्कुर्वत परमेश्वरकोदिखाती है तिव्रत्करणमेवुहनिरपवादक-
र्ताहैसंज्ञाक्लृप्तिअग्निसूर्यचन्द्रादिकुशकाशयवादिपशुनरमृगा
इनमेप्रत्याकृतिप्रतिव्यक्तिअनेकधाहै सोउसीपरमेश्वरकोकृतिहै
जिसनेतेजजल पृथिवी रची है कैसे उपदेशात् व्याकरवाणीति
इसउत्तमपुरुषकेकहिनेसेनामरूपकाकर्त्ताब्रह्म उपदिष्ट है और
जीवेन इसकासम्बन्ध अनुप्रविश्य इसपदकेसाथहै नकिव्याक
वाणीति इसपदसेहै आनन्तर्यसे व्याकरवाणीति इससम्बन्धमे
देवताविषयउत्तमपुरुषप्रयोग औपचारिककल्पोऔरगिरनदी-
समुद्रसूर्यादिनानादेशोंमेनामरूपकरनेको अनीश्वरजीव समर्थ
नहींहै अग्नियहरूपकाव्याकरणहैफिरविषयकेभानसेअग्नियह-
नामधराहै ऐसेहीसूर्यादिमेजानो ॥

मांसादिभौमंयथाशब्दमितरयोश्च २२

पुरुषसेउपभुक्तत्रिवृत्कृतभूमिसेमांसादियथाशब्दहोतेहैं श्रु
ति अन्नमशितंत्रेधाविधीयतेतस्ययःस्थविष्ठोधातुस्तत्पुरीषम्भवति
योमध्यमस्तन्मांसंयोऽणिष्ठस्तन्मनः इतित्रिवृत्करीभूमियवादिअन्न
रूपखातेहैं यहअभिप्रायहै उसकास्थूलांशपुरीषहै और अध्या-
त्ममांसकोबढ़ाताहै औरअतिअणुमनको औरजलतेजकायथा
शब्दकार्यजानो मूतलोहूप्राणजलकाकार्यहैं हाड़मज्जावाणी-
तेजकाकार्यहै ॥

वैशेष्यात्तुतद्वादस्तद्वादः २३

जोसवभूतभौतिकत्रिवृत्कृतअविशेषश्रुतिसेहैं तो यहविशेषकहि
ना कैसेहै यहतेजयहजलयहपृथिवीहै इससेपढ़ाकि वैशेष्यात्तु
तुसेउक्तशङ्कावारणकोहै वैशेष्यभूयस्त्वहै यद्यपित्रिवृत्करणहै त

थापिकहींकिसीभूतधातुकाभूयस्त्वलभताहै जैसे अग्नितेजोभूयान्है जलजलभूयःहै पृथिवीअन्नभूयसीहै प्रयोजन व्यवहारप्रसिध्यर्थत्रिवृत्करणहै औरव्यवहारत्रिवृत्कृतरूपोंसाऐक्यकी प्राप्तिमेलोकोंकोभेदसेतीनभूतविषयकनप्रसिद्धहो तिससेत्रिवृत्करणसेभीआधिक्यसेतेजजलपृथिवी यह विशेषकहिनाभूतभौतिकविषयसेउपपद्यमानहै तद्वाद्स्तद्वादइति यह पदाभ्यासअध्यायपूर्तिसूचकहै इति ॥

इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येद्वितीयाध्यायस्यचतुर्थःपादःपूर्णः २ ॥

तीसरासाधनाध्यायः ॥

वैराग्यपाद ॥ १ ॥

परलोकगमनाधिकरण ॥ १ ॥

तदन्तरप्रतिपत्तौरंहतिसंपरिष्वक्तः-प्रश्ननिरूपणाभ्यां १

दूसरेअध्यायसेवेदवेद्यब्रह्मकेदर्शनमेंश्रुतिस्मृतिन्यायका बिरोधदूरकराथा औरपरपक्षोंकीअनपेक्षाकहीथी औरजीवसेभिन्नतत्वजीवकेउपकरणब्रह्मजन्यकहेथे अबउपकरणोंसे उपहितजीवकोसंसारगतिकाप्रकारऔर जीवकेअवस्थांतरऔरब्रह्मसतत्वऔरविद्याभेदाभेदऔरगुणोपसंहारअनुपसंहारऔरसम्यग्दर्शनसेपुमर्थसिद्धिऔरसम्यग्दर्शनकेउपायोंकीविधिभेदऔर मुक्तिफलकाअनियमजोइसमेंचिन्ताकियेजातेहैं प्रसङ्गसेऔरभीजानो प्रथमपादमेंपञ्चाग्निविद्यासेसंसारकीगतिकेभेददिखातेहैं वैरा-

ग्यार्थं तस्माज्ज,गुप्सेतेति अर्थ अन्तिमेसुनाकिसंसारदशादेख-
घिनकरे बुरेकर्मोंसेजीवमुख्य प्राण सचिवसेंद्रियसमनस्कविद्या-
कर्मपूर्वप्रज्ञापरिग्रहपहिलो देह छाड़ देहांतरको पकड़ताहै य
हनिश्चितहै अथैनमेतेप्राणाअभिसमायन्तीति यहांसेअन्यन्नवतरं
कल्याणतरंरूपंकुरुतइति यहांतक अर्थ मरणकालमेप्राणहृदय
मेंजीवकेसाथएकहोतेहैं रूपंदेहआगेकीदेहकेपरिणामीभूत सू-
क्ष्महैं जीवक्यादेहकेसूक्ष्मबीजोंसेअलपटायालपटाजाताहै यह
संशोतिहै अलपिटाजाताहै कैसे करणोपादानवत्भूतोंका उ-
पादाननसुन्नेसे श्रुति सएतास्तेजोमात्राःसमभ्याददानइतिपश्य
तिजिघ्रतीति इस बाक्यसेकेवलभूतमात्राकाउपादाननहींहैकि
न्तुनेत्रादिका भीहै भूतमात्रासर्वत्रसुलभहोनेसेजहांदेहबनेगी-
वहांवेहैं फिरउनकानयननिष्प्रयोजनहै तिमसेबिनालपटाजा
ताहै इससेकहाकितदन्तरइति देहांतरकीप्राप्तिमेजीवदेहबीज
सूक्ष्मोंसे लपटा जाता है कैसे प्रश्न इससे पानीमे घुसा जीव-
जाताहै जैसे तृणजलायुकाअन्यतिनुकाकोपकड़केफिरपहिले-
पकड़ेकोछाड़तीहै तैसे जीव अन्यदेहको पकड़पूर्वदेहको छा
ड़ताहै यहश्रुतिकलहहै तद्यथातृणजलायुकेति इसमेंदोघींभा
वमात्रजलूकासेउपमितहै इससे कलह नहीं है कहिचुकेश्रोती
कल्पना अबपुरुषकल्पनासुनो सांख्यमानतेहैं किव्यापककरण
औरआत्मादोनोदेहांतरकोप्राप्तिमेंकर्मवशसे जहांजन्मतावहांवृ
त्तिलभताहैसुगतकल्पनाहै किनिर्विकल्पकज्ञानसन्तानरूपआ
त्माकादेहांतरमेशब्दादिसविकल्पकज्ञाननामवृत्तिका लाभहैज
हां२जन्मेगावहां२नई२इन्द्रियांहोंगी कणादकल्पना भोगस्था
नमेमनोमात्रजाताहै इन्द्रियांनईजन्मती हैं दिगम्बर कल्पना-
जीवदेहसेकूददेहांतरमे पहुंचताहै शुकसाहचर्यसे वृचान्तरको श्रु-

तिभक्तिसे जो अनादरणीय हैं प्रश्नश्रुति वेत्थयथापञ्चम्यामाहुतावापः पुरुषवचसोभवन्तीति उत्तरश्रुति द्युपर्जन्यपृथिवीपुरुषयोषित्सु पञ्चस्वग्निषु श्रद्धासोमवृष्ट्यन्नरेतोरूपापञ्चाहुतीरिति ॥

तुशब्दनोदितशङ्कावारक है ननु केवलपानी भेजातासुना फिरभूतसामान्यमेजाना कैसे कहाउसका उत्तर ॥

त्र्यात्मकत्वात्तुभूयस्त्वात् २

त्रिवृत्कृतजलके आरम्भसे तेजपृथिवी भी आरम्भक हैं देह मे तीनो के कार्य की उपलब्धिसे और दूसरे भी त्र्यात्मक देह है कि बात पित्तश्लेष्मसे केवलजलसे देह नहीं बनसक्ता है तिससे प्रश्नप्रति वाक्यमे जलशब्द बहुलको अभिप्रायसे है नकि केवलजलाभिप्रायसे सबदेहों में रसलोहितादिद्रव बहुत देखते हैं ॥

देहमे धरती बहुत देखते हैं सो नहीं तेजधरतीसे जल बहुत है देखा मैंने तुमने कि देहबीज शुक्ररक्तमे द्रव बहुत है और अग्निहोत्रादिकर्म और सोमाज्यपय आदि द्रवद्रव्य हैं और कर्मसमवायि जल है जैसे जबलोक डान होगा गर्भतबलो जल बहुत रहेगा इससे केवल जल कहा है तिससे जल बहुत प्रसिद्ध है और बहुतसे सब सूक्ष्मभूत देहबीजों का ग्रहण जलशब्दसे है यह निरवद्य है ॥

प्राणगतेश्च ३

जो प्राणका जानासुना है सो निराश्रय सम्भव नहीं है तिससे प्राणाधार सूक्ष्मभूत सजल प्राणके सङ्ग जाते हैं नहीं निराश्रय प्राणजाते ठहिरते हैं कहीं जीवतके न देखनेसे श्रुति तमुत्क्रामन्तम्प्राणोनूत्क्रामतीति सएतास्तेजोमात्रा इत्यादि श्रुतिका समुच्चय चसे है ॥

अग्न्यादिगतिश्रुतेरितिचेन्नभाक्तत्वात् ४

रहो प्राणमरणकालमेजीवकेसाथनहींजातेकिन्तुअग्न्यादि
को यत्रास्यपुरुषस्यमृतस्याग्निम्वागप्येति वातम्प्राण इत्यादि
इतिचेन्न अर्थ यहमतकहो कैसे भाक्तत्वात् वागादिकीअग्न्या
दिमेगतिबोधिकाश्रुतिगौणीहै क्योंकिलोमऔषधिकोऔरके-
शवनस्पतिकोजावे सोअसम्भवहै नहींलोमकेशकूदकेऔषधिव
नस्पतिकोपहुंचिसक्तेहैं श्रुति औषधीर्लोमानिवनस्पतीन्केशा
इत्यादि औरनजीवकाजानाप्राणोपाधिकेनिरासमेकहिसक्तेहो
औरनप्राणकेबिनादेहांतरमेभोगयुक्तहै औरबागादिकेअधिष्ठा
ताअग्न्यादिदेववागादिकेउपकारीहैं मरणकालमेंउपकारनि-
वृत्तिमात्रकीअपेक्षासेकहाकिवागादिअग्न्यादिमे जाते हैं यह-
उपचारहै जैसे भृत्यघरमेबैठरहा तोप्रभुकेऊपरसेउसका उप-
कारमात्रहीदूरहुआहै ॥

प्रथमेऽश्रवणादितिचेन्नताएवह्युपपत्तेः ५

औरकैसेजलपञ्चमहोममेमनुष्य निर्धार सक्ते होनहींप्रथमा
ग्निमेंजलश्रुतहै द्यु आदिपांचअग्निपांचहोमोंकाआधारअधीत
हैं उनके पहिले यह लोक अग्निकहा फिर उसी अग्निमे देव
श्रद्धाको होमते हैं तो श्रद्धा हौम्य है नकि जलहौम्य सुना है
यदि पर्जन्यादि अगिले चारमें हौम्य कल्पो तो कल्पिलो हो
तव्यमेहोमादिजलभूरिहैं और प्रथमाग्निमेश्रुतश्रद्धाकाछाड़अश्रुत-
जलकल्पनसाहसहै प्रसिद्धिमेश्रद्धाज्ञानभेदहै तिस्से पञ्चमहोम
मेजलकानरहोनाअनहोनाहै इतिचेन्न यहदोषनहींहै ताःआ-
पःवहांभीप्रथमाग्निमेश्रद्धाशब्दसेजल इष्ट है कैसे उपपत्तेः आ-
दिमध्यअन्त्यमेएकार्थसे एकबाक्यहै इतरथाजोपञ्चमहोममेजल
कापुरुषहोनेकाढबपूछाथा औरउत्तरमेप्रथमहोमकेठौरअजल-
हौम्यश्रद्धाकहोतोअन्यप्रश्नवोअन्यउत्तरसे एकबाक्यनहींहोगाश्र

द्धाकार्यसोमदृष्ट्यादिजललक्षितहै कारणसाकार्य होता है और मुख्यश्रद्धाकाहोमसम्भवनहींहै श्रद्धानामज्ञानमनवाजीवकाधर्म हैधर्मिसेनिकारहोमार्थनहींलेसक्तेहोजैसे पश्वादिसे होमार्थहृदयादिग्यारहदेहभागलेतेहोइससे जलश्रद्धाशब्दहैवैदिकप्रयोगदेखनेसे श्रद्धाशब्दजलमेयुक्तहै श्रद्धावाआपइतितनुश्रद्धासरूपजल हैदेहबीजइससे श्रद्धाजलहै जैसेसिंहपराक्रमसे नरसिंहशब्दहैश्रद्धापूर्वककर्मकेसम्बन्धसेजलमेश्रद्धाशब्दयुक्तहै पुरुषमेमन्त्रशब्दसाश्रद्धाहेतुसेश्रद्धाशब्दजलमेहै आपोहास्मैश्रद्धां सन्नमन्तेपुण्यायकर्मणेइत्यादि अर्थ यजमानकेनहानेकोश्रद्धाजलकाजनताहै॥

अश्रुतत्वादितिचेन्नेष्टादिकारिणांप्रतीतेः ६

अथपञ्चमहोममेंजलनराकारहो नकिजलमेघुसाजीव जाताहै अश्रुतत्वात् जलसाजीवकाकहिनेवालाशब्दनहीं है इस्से घुसनाजानाअयुक्तहै इतिचेत् यदियहदोषकहोसोनहींहै कैसे इष्टादिकारिणांप्रतीतेः अथयइमे ग्रामइष्टापूर्त्तेदत्तमित्युपासतेते-धूममभिसम्भवन्तीतिइसउपक्रममेइष्टादिकारीकोपितृयानपथसे चन्द्रलोकप्राप्तिकहीहै आकाशाच्चन्द्रमसमेष सोमोराजेति जे-होइसमेजानेहैं तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौदेवाःश्रद्धांजुह्वतितस्याआहु-तेःसोमोराजासम्भवतीति इसश्रुतिसाम्यसे उनकोअग्निहोत्रादिकेसाधनदधिदूधादिहैं द्रवभूरिसे प्रत्यक्षजलहै सोआहवनीयमेंहुतसूक्ष्मअपूर्वरूपहोमइष्टादिकारीकोपहुंचताहै उनअग्नि-होत्रियोंकीदेहनैधनविधिसे अन्त्यअग्निमेऋत्विजहोमते हैं मन्त्र असौस्वर्गायलोकायस्वाहेति अर्थ यहयजमानस्वर्गकोजावे ति-ससेइष्टादिकारीजीवोंकोपरलोकमेजलअपनेमेघुसा के फलार्थ लेजातेहैं यहश्रद्धांजुह्वतीति इसने कहाहै औरअग्निहोत्रप्रकार

गमेजमकनेयान्नबल्व्यसेछहप्रश्नकेउत्तररूपवाक्यसेभी परलोक मेफलार्थजलकीलोकांतरमेंप्राप्तिदिखाईहै सांझ सबेरेके अग्निहोत्रमें तेवाएते इत्यादि छहप्रश्न त्वमुत्क्रांतिन्नगतिन्नप्रतिष्ठांनतृप्तिन्नपुनरावृतिंनलोकम्प्रत्युत्था।यिनंवेत्थेति तिससेजीव होममयजलमेंघुसास्वकर्मफलभोगार्थजाताहै यहश्लिष्टहै रंहति गच्छति सम्परिष्वक्तः सम्मिश्रः ॥

भाक्तत्वानात्मवित्वात्तथाहिदर्शयति ७

कैसेस्वकर्मफलभोगार्थरंहणकीप्रतिज्ञाहै धूमप्रतीकपथ से चन्द्रलोकमेंपहुंचाअन्न सुनाहै एषसोमोराजातद्देवानामन्नंतन्देवाभक्षयन्तीति जैसे देवोंसे खायासोमघटताबढ़ता है तैसे ही जीवचन्द्रमेहै श्रुति यथासोमंराजानमाप्यायस्वापक्षीयस्वेत्यादि अर्थ जैसे यज्ञमेंचमसस्थसोमकों भरभरपीतेहैंऋत्विज बारबार खालीकरकरतैसे हीअन्नरूप इष्टादिकारीकोदेवखातेहैं आप्यायस्व यहक्रियावृत्तिमेलोटहै ॥ और नकि वृकादिसादेवभक्षित कोभोगसम्भवहै इसकाउत्तरपढ़ताहै किभाक्तम्वा चोदितशङ्कावारकवाशब्दहै ॥

स्वर्गकामोयजेत यहअधिकारश्रुतिअनर्थिकानहोवे इसलिये जीवगौणअन्नहै नकि मुख्यजोइष्टादिकारीकोचांद्रमेभोगनमिलातोकिसलियेअधिकारीबहुश्रमधनव्ययसाध्यइष्टादिको करेगा भोगसाधनसाम्यसे अन्नशब्दअनन्नमेदेखाहै जैसे प्रजाराजाकाअन्नहै औरप्रजाकाअन्नपशु हैं जैसे गृहीइष्टस्त्रीपुत्रमित्रभृत्यादिगौणोंसे बिहरताहै तैसे देवइष्टादिकारीसे बिहरतेहैं यहीदेवभक्ष्यइष्टादिकारीइष्ट है नकिषड्विधभक्ष्यवत् चबनाऔर लीलनाहै जैसे चनादूधआदिकानहवैदेवाअश्नन्तिनपिबन्त्येतदेवामृतंदृष्ट्वातृप्यन्तीति अर्थ देवकुछखातेपीतेनहीं हैं इस्से उन

कापशुगुड़ादिदेनाव्यर्थहै जैसे राजाउपजीविपरिजनोंकाभो-
क्ताहै तैसे देवगुणभावसे प्राप्तइष्टादिकारीकेभोक्ता हैं अनात्म
वेदीदेवकाभोग्यहै अन्नसेपशुवत् श्रुति अथयोअन्यांदेवतामुपा
स्तेयोमावन्योहमस्मीति नसवेदयथापशुरेवंसदेवानामिति भा
वार्थ जैसे यहां इष्टादिसे तृप्तदेवोंपरपशुवत्‌हितहै परलोकमे-
भीइष्टादिसे उपजीवीदेवनेदिये फलकोभोक्तापशुवत्‌देवोंकाहि
तहैअनात्मवित्वादित्यादिइसकाअन्यार्थसुनो केवलअग्निहोत्रा
दिकर्मकर्त्तायाइष्टापूर्तआदिकर्त्तानकिज्ञानकर्मसमुच्चयकर्त्ताउ
पचारसे पञ्चाग्निविद्याआत्मविद्याहै प्रकरणसे औरपञ्चाग्निज्ञा
नहोनसे इष्टादिकारीकोगुणवादसे अन्नकहाहै पञ्चाग्नि ज्ञान
कीप्रशंसार्थ एकश्रुतिचन्द्रमेभोगदिखातीहै ससोमलोकेविभू-
तिमनुभूयपुनरावर्त्तत इति किञ्च अथयेशतम्पितृणांजितलोका
नामानन्दाःसएकःकर्मदेवानामानंदोयेकर्मणादेवत्वमभिसम्प-
द्यन्तइति अर्थ इष्टादिकारीदेवोंके साथबसकेऔरउनकासाभो
गकर्तेहैं इससे अन्नहोनायहवाक्यभाक्तहोनेसे इष्टादिकारीजी
वचांद्रमेजाताहै यहीप्रतीतहै तिससे जीकहाथाकि रंहतिसम्प
रिष्वक्तसोयुक्तउक्तयाहो ऐसीगतिदेखकौननअग्निहोत्रेष्टादिसे
हाथधोयबैठेगाहोचुकीगति अबआगतिसुनो ॥

इहलोकागमनाधिकरण ॥ २ ॥

कृतात्ययेनुशयवान्‌दृष्टस्मृतिभ्यांयथेत मनेवञ्च ८

चन्द्रसेभोगकरलौटेजीवोंकीदशासुनो दृष्ट श्रुति
तस्मिन्यावत्सम्पातमुषित्वाथैतमेवाध्वानंपुनर्निवर्तन्ते यथेतमि
ति यहांसे तद्यइहरमणीयचरणाअभ्याशोह यत्तेरमणीयांयोनि
मापद्येरन् ब्राह्मणयोनिम्वाक्षत्रिययोनिम्वावैश्ययोनिम्बा ॥७॥

यदूहकपूयचरणाअभ्याशोह यत्तेकपूयांयोनिमापद्येरन् श्वयोनि
स्वासूकरयोनिम्वाचण्डालयोनिम्वा अभ्याशोहयत्यहअव्ययशी
घ्रयाअवश्यअर्थमेहै रमणीयचरणा अच्छे चालचलनवाले कपूय
चरणा बुरेचालचलनवाले स्मृति श्वसूकरखरोष्ट्राणांगोजाविमृ
गपक्षिणां चण्डापुल्कसानाञ्चब्रह्महायोनिमृच्छतीति ॥ क्या
सबकर्मोंका भोक्ता निरनुशयलौटाया सानुशयनिरनुशयलौटा
कैसे यावत्सम्पातंइसविशेषणसे यहांसम्पातशब्दकर्माशयवाची
है यहांसे परलोकमेपतताहै फलभोगार्थ इससे सम्पातहै या-
वत्सम्पातमुषित्वेति जोयहांकर्मकराहै उससबकाभोग वहीं हो
ताहै यहभीनहींकहसक्तेहो किजीवहांभोक्तव्य थे वे वहां भोगे
क्युंकिक्रत्स्नयहांकेकरेकर्मवहांहो उनकाफललेफिरयहांकर्मार्थ
आताहै कर्मकेअभावमेंश्रुतिकहोअबयुक्ति सुनो मरणसे अभि-
व्यक्तसबकर्मपरलोकभोगकेअवश्यहोनेसे कर्मका अभाव है सा-
धारणनिमित्तमेनैमित्तिकअसाधारणहोनेयोग्यनहीं है अविशि
ष्टदीपकोसन्निधिमेघटव्यक्तहै नकिपटयहयुक्तनहींहै ॥

तिससे निरनुशयजीवअवरोहताहै सोनहीं क्युंसुनो कृता
त्ययेनुशयवानिति जिसकर्मकदम्बसेचन्द्रमेआरूढ़थे फलभोगा
र्थ वुहजबभोगलियातबउनकाजोजलमयदेहथा भोगार्थचन्द्रमे
बनाथा सोभोगहर्षशोकाग्निकेसम्पर्कसे पिघल गया जैसे सूर्य
किरणकेसम्पर्कसेहिमकरकादि जैसे धनञ्जयार्चिसम्बन्धसेघृत
लाक्षादिकाठिन्यइससेआगेकृतात्ययेइष्टादिकर्मकाफल भोग से
क्षयमेसानुशयहीजीव यहांको लौटता है किसहेतुसे दृष्टस्मृति-
भ्यां श्रुति तद्य इत्यादि चरणशब्द से अनुशय सूचित है जोस
बप्राणीमेउच्चावचरूपभोगजन्मसेहैसोकर्मजन्यहैस्वर्गभोगवत् अ
न्यथाआकस्मिकहोअसम्भवहोसोनहीं किन्तुअनुशयसद्भावसूच-
नाहै जोअनुशयबहुतबारगायासोक्याहै कोई कहितेहैं किभु-

क्तफलस्वर्गार्थकर्मकाशेषअनुशयहै जैसे स्नेहकापात्रस्नेहनिका-
लनेसेभीस्नेहसे रिक्तनहींहोताहै पात्रानुसारकुछस्नेहशेषरहि-
ताहै तैसे अनुशयहै अन्यजलाग्निसे शीततापकाशेषदृष्टान्तहैं
सोनहीं स्वर्गकामोयजेत इसविधिसे स्वर्गार्थकर्मचोदितहैं उस-
काशेषमर्त्यालयमेभोगहेतुन्याय्यनहींहै यहदोष नहीं यह प्रति-
ज्ञानहींहै किकर्मकाफलसबस्वर्गहीमेभुक्तहै ननु निःशेषकर्मफ-
लभोगार्थचांद्रकोचढ़ाथा बाढ़ तथापियोरेकर्मशेषसेस्वर्गमेंनहीं
स्थानलभताहै जैसे कोईसेवकसबसेवाकेउपकरणोंसे युक्त राज
गृहमेपहुंचा फिरचिरप्रवाससे चीणबहुतउपकरणऔरछत्रशेष
राजगृहमेंनहीठहिरसक्ताहै ऐसेहीअनुशयमात्रसेचांद्रमेनहींठ
हिरसक्ताहै यहबातयुक्तसीनहींहै स्वर्गार्थशेषकीअनुवृत्तिउपप-
द्यमाननहींहै कार्यविरोधसे यहभीअयुक्तहै किस्वर्गार्थकर्म स्व-
र्गस्थायीकोसबस्वर्गफलजनताहै औरस्वर्गच्युतकोफललेशजन-
ताहै शब्दप्रमाणकऐसानहींकल्पासक्ताहै औरस्नेहपात्रमेस्नेह
लेपकीअनुवृत्तिदृष्टसेयुक्तहै औरसेवककेउपकरण की लेशानुवृ-
त्तिदृष्टसेयुक्तहै औरस्वर्गफलकर्मकीलेशानुवृत्तिदृष्टनहींहै नक-
ल्पासक्तेहो स्वर्गफलशासनकेविरोधसे औरयहांयहअवश्य ऐसे
जानोकिनहींइष्टादिस्वर्गफलकर्मकापात्रानुसारीस्नेहवत्एकदे
शअनुवर्तमानअनुशयहै यदि जिससुकृतइष्टादिसेस्वर्गलभाथा-
उसीकाएकदेशअनुशयमानोतद्रारम*णीयहीएकअनुशय हो न
किक?पूयही औरयहांसुखदुःखदोनोंसबप्राणियोंकोदेखतेहैं सो
विरुद्धहो और अनुशयविभाजिकाश्रुति विरुद्ध हो तद्यइहरम-
णीयेत्यादि दूसरेमतमेंअनुशयहै कि आमुष्मिकफलार्थकर्ममात्र
वहींभुक्तहै औरऐहिकफलार्थकर्मान्तरमात्रशेषअनुशयहै इसअ

* भला ॥ ? बुरा ॥

नुशयसेभराउतरताहै निरनुशयकाअवरोहयुक्तनहींहै अनुश-यकेसद्भावसे जोकुछपरलोकार्थकरासोवहींभोगचुकाहै औरय-हविभागभीसम्भवनहींहै किअविशेषसेमरणअनारब्धफलसबक-र्मकाअभिव्यञ्जकहै किसीकर्मसेपरत्रफलऔरकिसीसेइसमेफल आरभताहै औरदुर्बलकीवृत्तिकाअनुद्भवऔरप्रवलकीवृत्तिकाउ द्भवशाब्दय।जन्मदेखनेसेअनुमेयहैविरुद्धफलकअनेककर्मसेयुगप त्फलकाआरम्भअसम्भवहैनियतफलकेविरोधसेमरणमेऔरकिसी कामरणमेउच्छेदकिसीकोअभिव्यक्तिनहीं कहिसक्तेहोऐकांतिक फलकेविरोधसे प्रायश्चित्तादिके विना कर्मकाउच्छेद सम्भव न-हींहै सबकर्मोंकाएक देवादिजन्ममेभोगद्वाराचयसेजन्मान्तरन हो औरज्ञानाभावसेमुक्तिनहो यहअत्रदेवादिको कष्ट दशा हो औरदृष्टफलकारीर्यादिकामरणअभिव्यञ्जकसम्भव नहीं है इससे मरणअभिव्यञ्जकहै यहकल्पनाअव्यापिकाहै दीपदृष्टांतभीकर्म केवलाबलसेउठादिया दीपस्थूलकाव्यञ्जकऔरसूक्ष्मका अनभि व्यञ्जकहै इस्से मरणमेसबकर्मकीअभिव्यक्तिअसिद्धहै तिससे सब कर्मकीअभिव्यक्तिकास्वीकारअश्लिष्टहै शेषकर्महोनेमेअनिर्मोक्ष हो यहअयोग्यभ्रमहै सम्यग्दर्शनसेसबकर्मका क्षयश्रुतहै तिस सेयहध्रुवहै किअनुशयवन्तअवरोहतेहैं ॥

चरणादितिचेन्नोपलक्षणार्थेतिकार्ष्णाजिनिः ९

चरणात्शीलात् तद्यइहरमणीयचरणाइति इसमेकेवलच रणसेहीजन्महैऔरनकिअनुशयसेयदियहकहोसोनहींहै जिससे चरणश्रुतिअनुशयकेउपलक्षणार्थहै यहकार्ष्णाजिनिआचार्यका मतहैकर्मशेषऔरआचरणदोनोंसेमिलकेजन्महोताहै यहभावा र्थहै तद्यइहरमणीयचरणा यहश्रुति अनुशय सद्भाव कहिती थी

सोहीचरणसे योनिकोदिखातीहै और अनुशयसे अन्यचरणनहींहै औरन अन्य अनुशयहै चरणचारित्रआचारशीलजे शब्द एकार्थवाचीहैं औरभुक्तफलकर्मसे अनुशयभिन्नकर्मइष्टहै यथाकारीयथाचारीतथाभवतीतिकर्म और चरणकाभेददिखातीहैश्रुति यान्यनवद्यानिकर्माणितानिसे वितव्यानिनोइतराणियान्यस्माकंसुचरितानितानि त्वयोपास्यानीतिच इनसे जानाकिचरणसे योन्यापत्तिहैइससे अनुशयसिद्धिनहींहै यदियहदोषकहोतोनहीं है जिससे अनुशयकेउपलक्षणार्थहीचरणश्रुतिहै यह कार्ष्णाजिनिकामतहै ॥

आनर्थक्यमितिचेन्नतदपेक्षत्वात् १०

तदपेक्षत्वात् तिसचरणशब्दकाश्रौतशीलार्थछाड़औरलाक्षणिकार्थ अनुशयकेस्वीकारमेशीलप्रयोजनशून्यहोगायहयदिकहोसोनहींहै शीलकोकर्मकी अपेक्षा से आचारहीनन्नपुनन्तिवेदाः इसस्मृतिनेसुकृतदुष्कृतआचारकीचाहनाउपासनार्थदिखाईहै उत्तरहो फिरकिससेचरणशब्दसेश्रौतशीलकोछाड़लाक्षणिकअनुशयलेतेहैं ननुविहितप्रतिषिद्धश्रौतशीलसाधुअसाधुरूपसेशुभाशुभयोन्यापत्तिरूपफलहोगा अवश्यहीशीलकाकुछफलमानो अन्यथाशीलव्यर्थहो यदियहदोषकहोसोनहींहै कैसे तदपेक्षत्वादिति इष्टादिकर्ममात्रचरणापेक्षहैं सदाचारहीनकर्म से अधिकारीनहींहै पुमर्थमेभीआचारव्यर्थनहींहै फलकोआरभमाणकर्ममात्रइष्टादिमेकर्मापेक्षआचारहै कर्ममे कुछअतिशयजनताहै कर्मसर्वार्थकारीलोकवेदमेप्रकटहै तिससेकर्महीशीलोपलक्षितअनुशयरूपयोन्यापत्तिमेहेतुहै यहकार्ष्णाजिनिमतहै कर्मकेसम्भवमेशीलसेयोन्यापत्तियुक्तनहींहै जोपावोंसेभागसक्ता है सोजानुसेचलनेयोग्यनहींहै ॥

सुकृतदुष्कृतेएवेतितुवादरिः ११

वादरिचरणशब्दकाअर्थसुकृतदुष्कृतहीमानता हैतुलक्षणा वारणार्थहै और केवलवचोभङ्गीहै नकिअर्थभेदहै जैसे कहोतु-मकोगोवलीवर्दंलाओतोगोकहिनेसेवलीवर्दकाज्ञानहोचुकाथा फिरवलीवर्द क्युंकहावादरिचरणशब्दसेसुकृतदुष्कृतलेताहै चरणअनुष्ठानकर्मजेअनर्थान्तरपदहैं कर्ममात्रमेचरति प्रयुज्यमान-देखाहै अविशेषसेजैसा किजोइष्टादिकर्त्ताहै उसको लौकिककहितेहैं कियहमहात्माधर्मचारी है आचारभीधर्मविशेषहीहैऔरभेदोक्तिकर्मचरणकीब्रह्मसूरन्यायसे है तिससेरमणीयचरण अच्छेकार्यकर्त्ताकपूयचरण बुरेकार्यकर्त्ताहैंयहनिर्णयहै ॥

स्वर्गगत्ययोग्याधिकरण ॥ ३ ॥

अनिष्टादिकारिणामपिचश्रुतं १२

जेकूपबाटिकादिसेभिन्नकार्योंमेधनउठाकेमरतेहैं तेअनिष्टादिकारीचन्द्रलोककोजातेहैं यहश्रुतिसेश्रुतहै येकेचास्माल्लोकात्प्रयन्तिचन्द्रमसमेवतेसर्वेगच्छन्तीति औरपञ्चमहोमकोसिध्यर्थस्वर्गमेजातेहैं चयौक्तिकप्रदर्शनार्थहैउक्तसूत्रपूर्वपक्षमेहै कहि चुकेकिइष्टादिकारीचन्द्रमेजातेहैं औरअनिष्टादिकारीक्याचन्द्रकोजातेयानहींजातेहैं यहचिन्ताहै इष्टादिकारी हीचन्द्रकोजाते-सोनहींकिस्से जिस्से अनिष्टादिकारीभीचन्द्रकोजातेसुने हैं कौ-षीतकिश्रुतिसे येवैकेचास्माल्लोकात्प्रयन्तिचन्द्रमसमेवतेसर्वेगच्छन्तीति फिरजन्मोंकादेहारम्भभी चन्द्रप्राप्तिके विना नहींकल्पासक्तेहो पञ्चमहोमकीसंख्याकेनियमसे तिस्से सबचन्द्रमेसीदतेहैं इष्टादिकारीऔरअनिष्टादिकारीकीसमानगतियुक्तनहींहै यदियहकहोसोनहींहै अनिष्टादिकारीकोचन्द्रमेभोगकेअभावसे ॥

संयमनेत्वनुभूयेतरेषामारोहावरोहौतद्गतिदर्शनात् १३

तुअनिष्टादिकारियोंकाचन्द्रगतिकावारकहै सब चन्द्रको-नहींजातेहैं किसढबसेजिससेभोगार्थहीचन्द्रारोहणहै नकिनिष्प्रयोजनऔरनहींचन्द्रसे प्रत्यवरोहणार्थहै जैसे कोई पेड़परपुष्पफलादिकेलियेचढ़ताहै नकिनिष्प्रयोजनवोनकिगिरनेकोऔ-रभोगभीअनिष्टादिकारियोंकाचन्द्रमेनहींकहाहै तिससेइष्टादिकारीचन्द्रारोहीहैं नकि इतर तैसे संयमनेयमायतनमेअवगाहनकरअपनेबुरेकर्मानुरूपयामीयातनाका अनुभवकरफिरयहां प्रत्यवरोहतेहैं ऐसेउनके आरोहावरोह हैं कैसे तद्गतिदर्शनात् यमवाक्यसरूपश्रुतिअनिष्टादिकारी मरेकायमाधीनदिखातीहै नसांपराय:प्रतिभातिवालं प्रमाद्यंतस्वित्तमोहेनमूढं अयंलोको नास्तिपरइतिमानीपुन:पुनर्वशमापद्यन्तेमइति वैवस्वतंसङ्गमनञ्जनानामित्यादि ऐसेयमवशहोनेमेबहुत लिङ्ग हैं

स्मरन्तिच १४

व्यासादियमपुरमेयमाधीनकपूयकर्मकाविपाकस्मरण कर्ते हैं नाचिकेतकथादिमे ॥

अपिचसप्त १५

नरकसातहैं नाम रौरव१ महारौरव२ तामिस्र३ अन्धतामिस्र४ वह्नि५ वैतरणी६ कुम्भीपाक७ जोकहीं पुराणादिमेंअधिकश्रुतहैं उनकाभीइनहीमेंअन्तरभावहैं अनिष्टादिकारी इनमेपड़तेहैं नकिचन्द्रकोपहुंचतेहैं यहअभिप्रायहै ॥

तत्रापिचतद्व्यापारादविरोध: १६

तत्रापि महारौरवादिमेंभीयमकाआज्ञारूपव्यापारचित्रगु

प्तादिपरहोनेसेयमकेही आधीननरकहैं इससे यमका चित्रगुप्ता-
दिसेकुछभीविरोधनहीं है शङ्कामेंमतिमन्दसूचनार्थचहै ॥

विद्याकर्मणोरितितुप्रकृतत्वात् १७

पञ्चाग्निविद्यासेप्रश्नकेउत्तरमेसुनाकिविद्या औरकर्मजेदो-
मार्गहैं प्रकृतहोनेसे विद्यादेवयान औरकर्मपितृयाण है तद्य
त्थमिदुः इसविद्यासेप्रतिपत्तव्यदेवयानहैइष्टापूर्तेदत्त यहकर्महै
इससेप्रतिपत्तव्यपितृयाणपथकहाहै इनदोकी प्रक्रियामेश्रुतहै
कि अथैतयोःपथोर्नकतरेणचनेति अर्थ जेनरदोमार्गोंमेंसेकिसी
केसाधनयुक्तनहींहैं तेजन्ममरणकीआवृत्तिरूपतीसरेमार्गस्थभू-
तहोतेहैं जिसविद्याकेसाधनसेदेवयानमे अधिकृतहैं नकि कर्म
सेपितृयाणमेउनकी क्षुद्रजन्तुरूपअसकृदावर्तीतीसरामार्ग है ति
ससे अनिष्टादिकारीचन्द्रकोनहींपहुंचतेहैं यहभीनहींहै किचन्द्र
मेहोकेफिरक्षुद्रजन्तु होंगे आरोहअनर्थकहोनेसे किञ्च जो सब-
मरकेचन्द्रमेगये तोचन्द्रलोकपूर्णहो इसप्रश्नकेविरुद्धउत्तरहो वु
हीउत्तरदेनेथा कि जिससे चन्द्रलोक पूर्ण नहोवे अवरोहमान
से असम्पूर्णसिद्धहै सोभीनहींहै नसुन्नेसे सचहै तुम्हारा कहि-
ना कि अवरोहसेसम्पूर्णनहोगा परन्तुश्रुतितीसरेस्थानकेकहि-
नेसे असम्पूर्णदिखातीहै एतत्तृतीयंस्थानंतेनासौलोकोनसम्पू-
र्यतइति इस अनारोहसी असम्पूर्ण चन्द्रलोकहै यहयुक्त है जो-
अवरोहकाइष्टादिकारीमेविशेषनहींहै तोतीसरास्थानकहिना
व्यर्थहै तुशब्दकौषीतकिसेप्राप्तसबकेगमनकीशङ्काकेउच्छेदार्थहै
शाखांतरीयमेअधिकतापिचसर्वशब्दसाधुहै येवैकेचाधिकृताअ-
स्माल्लोकात्प्रयन्तिचन्द्रमसमेवतेसर्वेगच्छन्तीति प्रश्नवेत्थयथासौलो
कोनसम्पूर्यतइति उत्तर अथैतयोःपथोर्नकतरेणचनतानीमानि
क्षुद्राण्यसकृदावर्त्तीनिभूतानिभवन्ति जायस्वम्रियस्वेत्येतत्तृती

यस्थानंतेनासौलोकोनसम्पूर्येतइति ॥

नतृतीयेतथोपलब्धेः १८

देहार्थसबचंद्रकोजातेहैं होमसंख्याकेनियमसे उसकाउत्त रहै नतृतीये तीसरेस्थानमेंदेहलाभार्थहोमकीपांचसंख्याकानि यमनहींआदर्तव्यहै कैसे तथोपलब्धेः होमसंख्याके नियम बि-नाहीवर्णितरीतिसेतीसरेस्थानमेंजन्मप्राप्तहै जायस्वम्रियस्वेति यहतीसरास्थानहै स्थानशब्दमार्गलक्षकहै होमसंख्यानियमन-रदेहमेंहै नकिकीटपतङ्गादिकीदेहमें पुरुषशब्दनरजातिवाचक से किञ्च पञ्चमहोममेंजलनराकारकहाहै नकिपञ्चमहोममेंन राकारकानिषेधहै बाक्यमेंदोअर्थकेदोषसे जिनकोआरोहावरो हकासम्भवहै उनकीपञ्चमहोममेंदेहउद्भवहोगी अन्यकी बिना-हीहोमसंख्याकेभूतांतरसेमिलाजलहीदेहकाआरम्भकहै ॥

स्मर्यतेपिचलोके १९

पुराणे ॥

आहुतिकानियममनुष्योंमेंभीनहींहै द्रोणसीतादिकाजन्म योनिकेबिनाहीपुराणादिमेंपढ़नेसे जैसे इनमेंसंख्याकाअनाद रहै तैसे अन्यत्रभीहोगा बलाका बिनायोनिमेंबीजपड़े गर्भधर तीहै यहलोकरूढ़िहै

दर्शनाच्च २०

स्वेदजऔरउद्भिज्जकाजन्म मैथुनिकेबिनाहीदेखाहै इससे होमकाअनादरहै चनेआहुतिकेनियमकाभङ्ग समुच्चय किया है चारबिधियोनिमेंस्मृति अण्डजानिचजारुजानिचस्वेदजानिचो द्भिज्जानिचेति ॥ ननुभूतोंकेतीन बीज हैं आंडजज्जीवजमुद्भिज्ज मिति इसस्मृतिनेत्रिविधभूतग्रामकहाहै फिर तुमनेचतुर्विधक्युं

कहाथा इसकाउत्तरहै कि ॥

तृतीयशब्दावरोधःसंशोकजस्य २१

अांडजजीवजमुद्भिज्जमिति इसमेतीसरेउद्भिज्जशब्दसेस्वेदजकासंग्रहकियाहै स्वेदजउद्भिज्जभूमिजलकेउद्भेदसेजन्मतुल्यहै औरस्थावरकेउद्भेदसेविलक्षणजङ्गमउद्भेदहै तोभी इसमेस्वेदज-उद्भिज्जमेभेदवादहै इससेअविरोधहै ॥

धूमादिभावापत्यधिकरण ॥ ४ ॥

साभाव्यापत्तिरुपपत्तेः २२

अथैतमेवाध्वानंपुनर्निवर्तन्तेयथैतमाकाशमाकाशाद्वायुंवायुर्भूत्वाधूमोभवतिधूमोभूत्वाभ्रम्भवत्यभ्रम्भूत्वा मेघो भवतिमेघोभूत्वाप्रवर्षतीति समानोभावःसाभाव्यंव्योमादिभिःसाम्यमितिसोचोर्थः इष्टादिकर्त्ताचंद्रमेपहुंचिजोलोसम्पात तौलोवहां बसकेफिरसानुशयवहांसेउतरतेहैं यह कहिचुके अबअवरोहकेप्रकारकीपरीक्षाहै इसअवरोहस्रुतिमेसंशयहैकिक्याआकाशादिस्वरूपहीअवरोहन्तकहेहैं याआकाशादिसमानफिरआकाशादिस्वरूपउतरतेकहेहैं कैसे स्रुतिने व्योमादिस्वरूपउतरतेकहेहैं व्योमादिसमानउतरनेमे लक्षणाहो औरस्रुतिलक्षणाकेबीचस्रुतिलेनाउचितहै नकि लक्षणा मानना इससे वायुर्भूत्वाधूमोभवतीति इसकेअक्षर वायु आदिस्वरूपकी सिद्धिमेंआंजस्यसेसमर्थहोतेहैंतिससेव्योमादिरूपजन्मतेहैं यहपूर्वपक्षहैव्योमादिसमानकहेहैंचंद्रबिम्बमेजोजलमयदेहभोगार्थबनाया उसके भोगकेक्षयमेलीनसूक्ष्म व्योमसमानहोताहै तिससेवायुबशमेपड़ताहैतिससेधूमादिसेसम्पर्कहोताहै

सोयहकहाकियथैतमाकाशमाकाशाद्वायुमित्यादि सोकैसे

उपपत्तेः जैसे मैंनेकहाकिव्योमसमानउतरताहै और व्योमस्व-रूपउतरनेमें अन्यका अन्यहोनामुख्यअनहोनाहै यहीउपपद्यमा नहै औरव्योमादिस्वरूपउतरनेमेंवायुआदिक्रममें अवरोहयुक्तान हींहै विभुव्योमसेनित्यसम्बन्धहै तिससेव्योमादिसदृशनउतरेगा व्योम और अनुशयीका अन्य सम्बन्धनहींबनताहैश्रुतिकेअसम्भवमें लक्षणान्याय्यहै इससेव्योमादितुल्यतापत्तिहीयहांव्योमादिभा वउपचर्यमरणहै ॥

व्रीह्यादिभावापत्त्यधिकरण ॥ ५ ॥

नातिचिरेणविशेषात् २३

व्योमादिकोप्राप्तिमेंपहिलेव्रीह्यादिप्राप्तिसेविशयहै क्या दीर्घदीर्घकाल पहिलेकेसदृशठहिरकेफिरउत्तरकेसदृशहोते हैंया अल्प२ काल यहांनियमनहींहै नियामकशास्त्रकेअभावसे इससेकहा- कि नातिचिरेण अल्प अल्पकालव्योमादिभावमेंठहिरवर्षधारा केसाथभूमिमेंगिरताहै यहकैसेजाना विशेषदर्शनात् व्रीह्यादि होनेकेपीछेविशेषहै अतोवैखलुदुर्निष्प्रपतरमिति अर्थ एकतका रछांदसप्रक्रियामें लुप्तमानो तिससेदुर्निष्प्रपततरशब्दहै दुर्निष्क्रमलरदुःखतरव्रीह्यादिमें सेनिःसरणहै यहांदुःखनिष्प्रपतनको दिखाकेपहिलेमें सुखनिष्प्रपतनको दिखातीहै प्रपतनका सुखदुःखयोरेबहुतकालकरकेहै उसकालमें देहकीअसिद्धिसेभोगकाअसम्भवहै तिससेव्रीह्यादिभावहोनेसेबड़े कालकरके अवरोहहै ॥

संश्लेषमात्राधिकरण ॥ ६ ॥

अन्याधिष्ठितेपूर्ववदभिलापात् २४

अवरोहमें वर्षानन्तरपढ़ाहै कि तेइहव्रीहियवाओषधिवनस्पतयस्तिलमाषाइतिजायन्तेइति इसमें संशयहै किइसकाल

में स्थावरजातिमें जन्मेंस्थावरसुखदुःखभागीअनुशयी होंगे या-
ज्ञेचव्यांतरसेअधिष्ठितस्थावरदेहोंमें संश्लेषमात्रकोपहुंचेहैं पूर्व-
पक्ष स्थावरमें घुसेअनुशयोस्थावरसुखादिभागीहैं यहकैसेजा-
ना जनधातुकेमुख्यार्थकीसिद्धिसेश्रुतिस्मृति में स्थावर भोगस्था
नप्रसिद्धहै पशुहिंसासोमादिउच्छिष्टभक्षणसुरा ग्रह आदि केयो
गसेइष्टादिकर्म जातसेअनिष्टफलसिद्धहै इससेमुख्यअनुशयियों
काव्रीह्यादिजन्मश्वादिजन्मवत् जैसे श्वादियोनि में अनुशयि-
योंकाजन्ममुख्यहै श्वादिजन्मऔरश्वादिसुखदुःखयुक्तभी हैं ऐ-
सेहीव्रीह्यादिमेंजन्मव्रीह्यादिसुखदुःखयुक्तहै यह उचितनहींहै
कैसेसुनोअन्यजीवसेअधिष्ठितव्रीह्यादिमें अनुशयिका संसर्गमा-
त्रकहाहै नकिव्रीह्यादिकेसुखदुःखभागी है पूर्ववत् जैसे वाय्वा
दिभावअनुशयीकोवाय्वादिसेसंश्लेषमात्रथा ऐसेहीव्रीह्यादिभाव
स्थावरसेसंश्लेषमात्रहै यहकैसेजाना अभिलापात् जैसे वर्षाके
अन्तव्योमादिमेंकर्म व्यापारनहींपरामृष्टहै ऐसेहीव्रीह्यादिजन्म
मेंहै तिससेअनुशयीसुखदुःखभागीनहींहै जहांसुखदुःखभागी
अभिप्रेतहै तहांकर्म व्यापारपरामृष्टहै जैसेरमणीयकपूयचरणा
दिमें अपिचअनुशयिकाव्रीह्यादिमें मुख्यजन्मसेव्रीह्यादिलुने कू
टेरांधेखायेपरउनकाअभिमानीअनुशयीप्रवासीहो जोजीवजि-
सदेहकाअभिमन्ताहै सोउसदेहकेपीड़नसेप्रवसताहै यहप्रसिद्ध
है जहांव्रीह्यादिभावकहाथा वहांअनुशयीकोरेतःसिग्भाव न-
हींअभिलाप्यहै इससेसंसर्गमात्रअनुशयीकोअन्याधिष्ठितव्रीह्या
दिमेंहै इससेव्रीह्यादिमेंजनिधातुमुख्यार्थपरनहींहै भोगस्थान-
स्थावरहोनाहै हमनहींभोगस्थानस्थावरकीनिन्दाकरतेहैं होअ
पुण्यसामर्थ्यसेजेअन्यजन्तुस्थावरहुएहैं उनकेभोग स्थान स्थावर
परचंद्रसेउतरेअनुशयीस्थावरभावकोनहींभोगतेहैंयहीकहिताहूं

अशुद्धमितिचेन्नशब्दात् २५

जोकहाथाकिपशुहिंसादिकेयोगसेआध्वरिक कर्म अशुद्ध है उसकाअनिष्टफलहै इस्से अनुशयीकाव्रीह्यादिमेजन्ममुख्यहो उसमेगौणकल्पनाअनर्थकहैउसकानिरासहैयहधर्महैयहअधर्म है इसविज्ञानमेशास्त्रनिदानहै वेदोनो अतिक्रांत इन्द्रिय हैं और जिसदेशमेजिसकालमेजिसनिमित्तमेजोधर्मअनुष्ठेयहै सोहीदेश कालनिमित्तांतरमेअधर्महै इससेजानाकिशास्त्रकेबिनाधर्माधर्मविषयकविज्ञानकिसीकोनहींहै सोशास्त्रवेदहै न कि उससेअन्यनरकल्पितग्रन्थकदम्बहैं और शास्त्रहीसेहिंसाद्यादिरूपज्योतिष्टोमधर्म अवधारितहै सोअशुद्धकैसेकहिसक्तेहो भूतोंका वध अधर्मवेदकहिता है जैसे माहिंस्यात्सर्वाभूतानीति वाढ़ यह उत्सर्गहै अग्नीषोमीयम्पशुमालभेतयहअपवादहैव्यवस्थाकाम्यमेरागसेकारणांशमेप्रवृत्तिहै अङ्गमेविधिसेनिषिद्धश्येनादिमेप्रवलरागसेप्रवृत्तिहो क्रत्वङ्गहिंसादिमेविधिसेप्रवृत्तिकहो यदिविधि उत्सर्गप्राप्तअनर्थहेतुकोनबाधेतोप्रवर्तकनहो प्रवर्तकमे विधिअनर्थार्थहो इससेनिरवकाशविधिसावकाशउत्सर्गको अविहित हिंसादिमेबैठावैगाअहिंसाशास्त्ररागप्राप्तहिंसापरहै वैधहिंसामेउसकीप्रवृत्तिनहींहै फिरअशुद्धशङ्काकाअवसरनहींहै तिससेवैदिककर्मशुद्धहै शिष्टानुष्ठानसेऔरअनिन्द्यसे इससेस्थावरदुःखरूपफलनहींहै श्वादिजन्मवत् व्रीह्यादिजन्महोनेकोयोग्यनहीं है जन्मकपूयचरणोंकेअधिकारमेकहाहै यहांकोई वैशेषिक अधिकारनहींहै इससेजोअनुशयीचंद्रसे गिरेउनकाव्रीह्यादिमेसंश्लेषमात्रहै उपचारसेव्रीह्यादिभावकहाहै ॥

रेतःसिग्योगोथ २६

इससेभीव्रीह्यादिमेसंश्लेषमात्रहै जिसकारणसेव्रीह्यादिभावकेपीछेअनुशयीकोरेत:सिग्भावपढ़ाहै श्रुति योयोह्यन्नमत्तियोरेत:सिञ्चतितद्भूयएवभवतीति व्रीह्यादिमेमुख्यबीजदान सम्भवनहींहै चिरजातऔरयुवारेत:सिक्होताहै नकि अन्न स्थायीकोरेत:सिक्योगसम्भवहै किसप्रकारसेअनुपचरितसा है अद्यमानवस्तुसेअनुगतअनुशयीप्रतिपद्यमाननहीं है अवश्य रेत:सिग्योयहीरेत:सिग्भाव मानो उपक्रमवत् व्रीह्यादिभावभीव्रीह्यादियोगहीहै इससेअविरोधहै ॥

योनेश्शरीरम् २७

रेत:सिग्भावकेआगेयोनिमेसिञ्चेबीजसे योनि के अधिदेह अनुशयियोंकोअनुशयफलभोगार्थजन्मताहै श्रुति तद्यइहरमणीयचरणाइत्यादि तिस्से जानाकिव्रीह्यादिभावकेकालमे अवरोहहोनेपरव्रीह्यादिदेहसुखदु:खादिअन्वितनहींहै सूत्रार्थहैकि देहयोनिकोसुनीहै इससेव्रीह्यादिदेहअनुशयियोंकीनहींहै तिससेव्रीह्यादिमे संश्लेषमात्रअनुशयियोंका जन्मसिद्धहै वैराग्यस्वरूपहैकिवैदिककर्मठकोआनाजानारूपसंसारदुर्वारहै इसअनुसन्धानसेकर्मसेविरक्तहोईश्वरध्यानमेलगे यद्यपियहांकिसीआश्रमकेचिन्होंकाउपदेशनहींहै तथापि गृहाश्रमश्रेष्ठसे लेते हैं उद्यमकरेऔरईश्वरध्यावेनकिनटसासुआंगधरधरमुक्तिपन्थमागे

इतिश्रीयुक्ताराचंद्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येतृतीयाध्यायस्यप्रथम:पाद:पूर्ण: ॥

तत्त्वम्पदार्थविवेकपाद ॥ २ ॥

सन्ध्यसृष्ट्याधिकरण ॥ १ ॥

संध्ये सृष्टिराहहि १

अतिक्रांतपादमेंपञ्चाग्निविद्याकोउदाहरणकरजीवकोसंसारगतिकेभेदप्रपञ्चकियेथे अबउसीकेअवस्थाभेदप्रपंच्यमान हैं श्रुति सयत्रप्रस्वपिति इसउपक्रमसे नतत्ररथानरथयोगानपन्थानोभवन्त्यथरथान्रथयोगान्पथःसृजतइत्यादिइसमें संशयहैकिप्रबोधसीस्वप्नमेंभीपारमार्थिकीसृष्टिहैयामायामयीहै फिरसन्ध्यमे तथ्यरूपसृष्टिप्राप्तहै सन्ध्यस्वप्नस्थानहै वेदमेंदेखने से सन्ध्यंतृतीयंस्वप्नस्थानमिति देवनरदोलोक याजाग्रतसुषुप्तिइन दो सन्धिमेंहै सोसन्ध्यहैइससन्ध्यमेंजोसृष्टिहै सोतथ्याहैहै कैसे जिसमानश्रुतिनेकहाहै सोहिकर्त्ताहै इसउपसंहारसे भीतथ्यसृष्टिहै ॥

निर्मातारंचैकेपुत्रादयश्च २

एकशाखीनेसन्ध्यमेंकामोंकानिर्माताआत्मापढ़ाहै यएषसुप्तेषुजागर्तिकामङ्कामम्पुरुषोनिर्मिमाणइति कामपुत्रादिहैं ननुकामशब्दसे इच्छाविशेष कहो नशतायुषःपुत्रपौत्रान्वृणीष्वेति इसप्रकरणकेअन्तिमे कामानांत्वाकामभाजङ्करोमीति यहांप्रकृतपुत्रादिमेंकामशब्दपढ़ाहै प्रकरणऔरवाक्यशेषसे प्राज्ञनिर्माताप्रतीत है प्रकरण अन्यत्रधर्मादन्यत्राधर्मादित्यादि वाक्यशेष तदेवशुक्रन्तद्ब्रह्मेत्यादि अर्थ जोनिर्व्यापारकरणोंमेंजगताहै सोहीशुक्रस्वयंज्योतिहै जैसे जागरितसृष्टिप्राज्ञकर्तृकहोनेसे तथ्यरूपहै तैसे स्वप्नसृष्टि तथ्य है व्योमवत् श्रुति अथोखल्वाहुर्जागरितदेशएवास्यैषइति यानिह्येवजाग्रत्पश्यतितानिसुप्तइति श्रुति सोतेजगतकेअर्थोंकोसमानदिखाती है तिससे स्वप्नार्थसत्यहैं इसकोसिद्धान्तपढ़ाकि माया इति ॥

मायामात्रंतुकार्त्स्न्येनानभिव्यक्तस्वरूप त्वात् ३

तुशब्दपक्षकावारकहै जोतुमनेकहाथाकिसन्ध्यकीसृष्टित-
थ्यहै सोनहींहै मायाहीसन्ध्यमेंसृष्टिहै नकिसत्यार्थकीगन्धभीहै
किस्से कार्त्स्न्येनानभिव्यक्तस्वरूपत्वात् नहींवस्तुधर्मसेस्वप्न अभि
व्यक्तहै कार्त्स्न्यक्यायहांदृष्टहै देशकालनिमित्तसम्पत्तिअवाधद
नकास्वप्नमेंसम्भवनहींकरासक्तेहो नहींसंवृत्तदेहदेशमेंरथादिअ
वकाशलभतेहैं अनुमान देहसे बाहिरनिकरस्वप्नकोदेखेगा दे-
शांतरितद्रव्यके ग्रहण से श्रुति वहिःकुलायादमृतश्चरित्वायई
यतेऽमृतोयत्रकाममिति अर्थ देहसे बाहिरसाआत्माचरके यथे
कविरहताहै गतिस्थितिप्रत्यय भेदअनिष्क्रांतजन्तुमेंनहींघटते-
हैंमैयहनहींकहताहूंनहींसुप्तजन्तुकी क्षणमात्रसेयोजनशतादि
रदेशोंमेजानेआनेकीसामर्थ्यसम्भवकरासक्तेहो कहीं आनेसेर-
हितस्वप्नसुनातोहै कुरुष्वहमथशयानोनिद्रयाभिप्लुतः स्वप्नेपां-
चालानभिगतश्चास्मिन्प्रतिवुद्धश्चेति जोकुरुमेंसोयासोपांचाल-
मेंनहींजगताहै जिसदेहसेदेशांतरकोभोगतामानताहै उसकेपा
सकेशयनदेशमेंहीदेखतेहैं देशांतरवस्तुजैसी देखता है वहतैसी
नहींहै यदिदौड़तादेखेजाग्रद्वत्उद्भूतअर्थको जाने श्रुति अ-
न्तरेवदेहेस्वप्नमिति यहांसे स्वेशरीरेयथाकामम्परिवर्ततइति।
यहांतक स्वदेहमेंस्वप्नकाबर्त्तावदिखातीहै श्रुतियुक्तिबिरोधसे
कुलायश्रुतिगौणीहै जोदेहमेंरहितादेहसे प्रयोजन नहींकर्ता
है सोदेहसे बाहिरसाहै स्थितिगतिप्रत्ययभेदजेभ्रमसे हैं स्वप्नमें
कालकाबिसम्वादहैजैसे रातिमेंकेतुमाल्यवर्षमेंसोताबासर भार
तवर्षोंमेमानताहै औरमुहूर्तमात्रकेस्वप्नमेंवर्षपूगोंको बहताहै

स्वप्नमेनिमित्तभीनवुध्यर्थनकर्मार्थउचितहैं दृढशक्तिकरणरथादि
ग्रहणार्थनहींहै स्वप्नमे जागरितमेनिमेषमात्रसेरथादिवनानेमे-
कहांसेसामर्थ्यऔरकाठआगया प्रबोधमेस्वप्नदृष्टरथादिबाधित-
है तोस्वप्नमेभीउनकाबाधसुगमहै आदिअन्तमेव्यभिचारदेखने
से वाभीस्वप्नमेरथदेखाफिरक्षणमेमनुष्यसम्पन्नहुआ जब मनुष्य-
निर्धारितहै फिरक्षणमेंवृक्षहुआ स्पष्टरथादिकाअभाववेदसुना-
ताहै नतत्ररथाइत्यादि तिससेस्वप्नदर्शनमायामात्रहै मात्र पद
सेप्रमाताऔरव्यवहारकानिरासकियाहै ॥

सूचकश्च हि श्रुतेराचक्षते च तद्विदः ४

मायामात्रसेस्वप्नमेसत्यार्थकीगन्धभीनहींहै मैयहनहींकहि
ताहूं स्वप्नमेअर्थहैकिन्तुस्वप्नभावीसाधुअसाधुकासूचकहै मन्त्रदे-
वऔषधिद्रव्यविशेषकेनिमित्तसे कुकस्वप्नसार्थहैं इनमेभी सूच्य
मानवस्तुसत्यहोसूचकस्त्रीदर्शनादिव्यर्थहैंबाध्यमानसे जैसे हल
कोगवादि ओवहताहै हलगवादिकेजीवनकानिमित्तहै नकिप्र-
त्यक्षहलगवादिजीवनहै नकि जैसे कुलालघटका साक्षात्कर्त्ता
है तैसे स्वप्नकर्त्ताहै मोदनासादिदेखनेसेरथादिकाभाननिमि-
त्तहै नकिप्रत्यक्षरथादिकोरचताहै शुक्तिरूप्यसत्यहर्षकाहेतुहै प
रसत्यनहींहै अपिचजगतेमेविषयेंद्रियसंयोगसेऔरसूर्यादि ज्यो-
तिकेसङ्करसेआत्मास्वयंज्योतिःदुर्विवेचनहै उसकेविवेकार्थ स्वप्न
कहाथा यदिरथादिसृष्टिवाक्यश्रुतिनेनिर्णय किया तोस्वयंज्यो-
तिःनहींनिर्णीतहो तिससेरथादिकेअभाववाक्यश्रुतिसेरथादिसृ
ष्टिवाक्यमात्रहैं औरनिर्माणश्रवणभीभाक्तहै जोप्राज्ञ निर्माता
कहासोअसत् स्वयंविहत्यस्वयंनिर्मायेत्यादि अर्थ आपजगत्देह
कोचेष्टाशून्यकरऔरवासनादेहबनाताहै इसनेजीवकाव्यापा-
रकहाहै तिससेजीवकामोंकानिर्माताहैसमस्वप्नमेप्राज्ञव्यापार

वारणनहींकर्तेहैं क्युंकिसर्वेश्वरहै तिससेसबअवस्थाकाअधिष्ठाताहै सांख्यसर्गपारमार्थिकनहींहै ब्योमादिसर्गवत् इससेसन्ध्यसर्गवैशेषिकमायामात्रकहाहै ॥

पराभिध्यानात्तु तिरोहितन्ततोह्यस्य बन्धविपर्ययौ ५

परकाअंशजीवहै जैसे अग्निकेविस्फुलिङ्गहैं इससे जैसे अग्निविस्फुलिङ्गदोनोंदहनप्रकाशनशक्तियुक्तहैं तैसे जीवेश्वरमेंभीज्ञानैश्वर्यशक्तिहै तिससेजीवकीऐश्वर्याधीनसांकल्पिकरथादिसर्गस्वप्नमेंहोगा सोमतकहो हैभीजीवेशकाअंशांशिभाव तोभीप्रत्यक्षजीवकाईशसेविपरीतधर्महै फिरक्याजीवकाईश्वरसमानधर्मनहींहै नहींहैसोनहींहैकिन्तुहै विद्यमानभीधर्मढकाहै तत्तिरोहितं अविद्यादिव्यवधानसेफिरजन्तुईश्वरध्यानीयतमानविधूतध्वान्तकीदृक्शक्तितिमिरतिरस्कृतासीऔषधिवीर्यसेईश्वरप्रसादसेकिसीसिद्धकोआविर्भावहोतीहै नकिस्वभावसेसब नन्तुओंकोनकिकिसीआश्रमकेवाह्यचिन्होंसेकैसे ततोहि ईश्वरहेतुसे अस्य जीवकोबन्धमोक्षहै ईश्वरज्ञानबिनाबन्धऔर ईश्वरज्ञानसेमोक्षहै ज्ञानोपाय सत्यमृदुभाषणसर्वदेशियोंसेप्रेमऔरचोरोहिंसापरस्त्रीत्यागशिल्पादिविद्यासेबनादिहैं तुउपायांतरकावारकहैहिहेतुमेंहैज्ञात्वादेवंसर्वपाशापहानिरित्यादिश्रुति

देहयोगाद्वासोपि ६

फिरकिस्सेजीवईशांशहुआऔरतिरस्कृतज्ञानैश्वर्यहै होनाचाहियेज्ञानैश्वर्यजैसेविस्फुलिङ्गमेंदहनप्रकाशनहैं कहिताहूं यहसत्यहै देहयोगात् जीवकेज्ञानैश्वर्यकाढकनादेह इन्द्रियमनबुद्धिविषयवेदनादिकेयोगसेहै सोपितिरोभावहै उपमा यहां जैसे

अग्निदहनप्रकाशमयुक्तभीअरणिमेवेढकेहैं औरजैसेभस्मसेढकी अग्निमेवेनहींहैं तैसे नामरूपदेहादिकेयोगसेवे नहीं जीव मे हैं वाशब्दजीवईशकेभेदकावारकहै अनुमान जीवईश्वरसेअन्य है तिरस्कृतज्ञानैश्वर्यसेयाभिन्नज्ञानैश्वर्यसे फिरदेहादियोगकी कल्पनाव्यर्थहै जीवईश्वरसेअन्यनहींहै बहुतश्रुतियोंमेऐक्यकहिनेसे तत्त्वमसिआत्मेत्यादि ऐक्यसेस्वप्नमेरथादिसर्गजीवकेसङ्कल्पसेहै साङ्कल्पिकसर्गहैतोक्युंअनिष्टस्वप्नमेदेखताहै कोई अनिष्टनहींसङ्कल्पताहै जगत्कोशासनास्वप्नमेनहींहै स्वप्नमेस्वशिरकटादेखनेसे तिससेस्वप्नमायाभात्रहै ॥

सुषुप्त्यधिकरण ॥ २ ॥

तदभावोनाड़ीषुतच्छ्रुतेरात्मनिच ७

तस्यस्वप्नस्याभावस्तदभावःसुषुप्तिः ॥

कोस्वप्नपरीक्षाअबसुषुप्तिपरीक्षाकर्त्ताहै सुषुप्तमेश्रुति तद्यत्रैतत्सुप्तःसमस्तःसम्प्रसन्नःस्वप्नंनविजानात्यासुतदानाडीषुसृप्तोभवतीति अन्यमेनाड़ीसेनिकरासुनाहै नाभिःप्रत्यवसृप्यपुरीततिशेतेइति अन्यत्रनाड़ीकाअनुक्रमहै तासुतदाभवतियदासुप्तःस्वप्नंनकञ्चनपश्यत्यथास्मिन्प्राणएवैकधाभवतीति अन्यत्र यएषोन्तर्हृदयआकाशस्तस्मिन्शेतेइति अन्यत्र सतासोम्यतदासम्पन्नोभवतिस्वमपीतोभवतीति प्राज्ञेनात्मनासम्परिष्वक्तोनवाह्यंकिञ्चनवेदनान्तरमिति इसमे संशय है किनाड़ीआदिमिथोनिरपेक्षभिन्नसुषुप्तिस्थानहै यामिथोपेक्षएकसुषुप्तिस्थानहै भिन्न हैं एकार्थसेव्रीहियववत् नाड़ीआदिसबसुषुप्तिकेअर्थहैं सर्वत्रविशेषज्ञानाभावसुषुप्तहै नकिविशेषहै तिससेएकार्थनाड़ीआदि हैं विकल्पसेकभीकिसीस्थानमेस्वापार्थजाता है सोनहीं तदभावः स्वप्नकाअभावसुषुप्तहै नाड़ियोंमेऔरआत्मामेसमुच्चयसे नाड़ी

आदिखापार्थजातीहैं नकिविकल्पसे कैसे तच्छ्रुतेः सब नाड़ियोंका सुषुप्तिस्थानसुनाहै सोसमुच्चयमेंघटताहै नकिविकल्पसे पञ्चमीवाधसे एकविभक्तिसेएकार्थ औरविकल्पनहींहोसक्ताहै नानार्थ औरसमुच्चयमें भीएकविभक्तिहै जैसे घरमेंसोता खाटमेंसोताहै तैसेयहांभीनाड़ीसेपुरीतत्मेंब्रह्ममेंसमुच्चययुक्तहै जोगङ्गासेसागरजातासोगङ्गामेंहै जैसेतैसेहीनाड़ीसेब्रह्ममेंगयानाड़ीमेंगयाहै पुरीतत्हृदयवेष्टनहै उसकेभीतरहृदयाकाशमेंसोता पुरीतत्मेंसोताकहाहै प्राकारसेघिरेपुरमेंवर्तमानप्राकारमेंरहिताकहाताहै श्रुतियोंमेंतीनिसुप्तिस्थान हैं नाड़ी१ पुरीतत्२ ब्रह्म३ पहिलेदोद्वारेहैं ब्रह्महीएकसुप्तिस्थानहै नाड़ी यापुरीतत्जीवकीउपाधिकाआधारहै वहांकरणहैं उपाधिबिनास्वतःजीवकाकोईआधारसम्भवनहींहै नाड़ीपुरीतत्केज्ञानसेफलनहींहै औरब्रह्मसुप्तिस्थानसेप्रयोजनहै किजीवकोब्रह्मावधारणाऔरस्वप्नजागरितकेव्यवहारसे बिमुक्तावधारण है तिससेआत्माहीसुप्तिस्थानहै ॥

अतःप्रबोधोऽस्मात् ८

जिससेआत्मासुषुप्तिस्थानहै उसीकारणसे अस्मात् अर्थात्आत्मासेजगनाहै यहकर्म अगादिति इसकेउत्तरमेंजैसेअग्निसेविस्फुलिङ्गझरतेहैंतैसेआत्मासेसबप्राणझरतेहैंसतआगम्यनविदुःसतआगच्छामहइतिइनमेंसुप्तिस्थानविकल्पितहैजैसे कभीनाड़ीसेकभीपुरीतत्सेकभीआत्मासेप्रबोधशासनक्रियाथा फिरतीनोंकासमुच्चयहै नकिविकल्पहै तिससेआत्माहिसुप्तिस्थानहै ॥

सुषुप्त्युत्क्रान्त्याधिकरण ॥ ३ ॥

सएवतुकर्मानुस्मृतिशब्दविधिभ्यः ९

जोसत्सम्पत्तिसेप्रबुध्यमानहैसोक्याजोसत्सम्पन्नथा सोहीन

गायासोहीयाअन्नहै यहचिन्ताहै अनियमहै कैसे जबजलराशि
मेजलबिंदुकोंकदियासोजलराशिगतबहै फिर उठानेमेसोहीजल
बिंदुहै यहदु:सम्पादहै जैसे सुप्तपरकेमाथऐक्यापन्न सम्प्रसन्न है
नहींसोहीफिरउठनेकेयोग्यहै तिससेसोहीईश्वरयाअन्ययाजी-
वजगताहै इससेकहाकि सएवतु सुप्तस्वस्थजीवफिरउठता है
नकिअन्य किससे कर्मानुस्मृतिशब्दविधिभ्य: इनहेतुयों कोवि-
भागकरदिखाऊंगा कर्म जोजिसकामकोकुछकरसोया सोही-
जगिकेउसकोकर्त्ताहैनकिअन्यहै यहनियमवैदिकज्योतिष्टोमादि
मेहै नकिलौकिककृष्यादिमे अनु जोसोयाथासोहीहूं यहप्रत्यभि
ज्ञाअन्यकेउठेमेनबनेगी स्मृति जोमैनेह्योदिनमेदेखाथा सोअ-
बदेखताहूं यहस्मृतिअन्यकेउठेमेनहींबनतीहै अन्यकोअन्यके-
अनुभवकाविरोधहोनेसे शब्द पुन:प्रतिन्यायंप्रतियोन्याद्रवति
बुद्धांतायै अर्थ अयनं गमनं आय: योनि जिस२इन्द्रियकाजो-
जोस्थाननियतहै तहां२जाताहै जागरणार्थ ऐसेअनेकशब्दस्वा
पप्रबोधप्रकरणमेपढ़े हैं वेअन्यसोयाऔर अन्यजगा इससे सार्थ
नहोंगे कर्मविद्याविधिइनसेज्ञातहै किजोसोया सोही जगा है
अन्यथावेव्यर्थहो अन्योत्थानपक्षमेसुप्तमात्रमुक्तहैयह विपत्ति हो
फिरयहतोकहोकिजिसकर्मयाविद्याकाकालांतरमेफलहै उनके
करनेसेक्याहुआ अपिचअन्योत्थानपक्षमेयदिदेहांतरमे व्यवहा-
रीजीवउठातोउसदेहकाव्यवहारलोपहो जिससेउठआया है अ
न्यदेहमेसोताअन्यमेउठाकल्पनाव्यर्थहै जोजिसदेहमे सोया सो
उसीमेउठताहै अन्यमे सोयाअन्यमे उठा इस कल्पना मे कौन-
लाभहै मुक्तउठाहै तोमुक्तिअन्तवतीहो निवृत्ताविद्यपुरुषका-
फिरउठनाअयुक्तहै औरजोईश्वरकाउठनाकहाथा सो भी नहीं
है सदाअज्ञानशून्यसे तिससे जोसोयासोहीउठा नकि अन्य ज-
लसेजलबिन्दुनहींउठासक्तेहैं विवेकहेतुकेअभावसे यहां बिबेक

हेतुविद्यमानहै कर्मऔरअविद्या यहवैषम्यहै इमसरीसेदुर्वि-
बेचोंकाविबेचनप्राणिविशेषमेंदेखाहै जैसे फूलोंसे मधुकाबि-
बेचनमक्षिकामें जबलोएकोपाधिगतबन्धानुवृत्तिहै तबलोएक
जीवहै औरउपाध्यन्तरगतबंधानुवृत्तिमें अनेकजीव हैं उपाधि
वृद्धिहै स्थूलसूक्ष्मरूपसे एकउपाधिस्वापप्रबोधमें दूसरे सोही-
जीवजगताहै यहयुक्तहै ॥

मूर्छावस्थाधिकरण ॥ ४ ॥

मुग्धेऽर्द्धसम्पत्तिःपरिशेषात् १०

लौकिकमुग्धमूर्छितकोकहितेहैं देहस्थजीवकीजागरितस्व
प्नसुषुप्तिजेतीनदशाप्रकटहैं चौथीदेहसे उत्क्रान्तिहै पचईकोईजी
वकीअवस्थाश्रुतिमेंप्रकटनहींहै तिससे चारमें कोईमूर्छा अवस्था
है मुग्धजागरितावस्थयोगनहीं है इन्द्रियोंसे विषयोंकी नदे-
खनेसे जैसे जगताभीइषुकारइषुलग्नमनसे इषुसे अन्य विषय-
कोनहींदेखताहै ऐसे मुग्धभीयष्टिघातजनितदुःखानुभवसेव्य
ग्रमनजगताभीअन्यकोनहींदेखताहै नकिअचेतयमानसे इषु-
से मनहटाइषुकारकहिताहै किइतनेकाललोइषुकोउपलभमा
नथा मुग्धजबलब्धसंज्ञहोताहै तबकहिताकिइतनेकालअन्धत
ममेपड़ाथा मुजिको कुछचेतनथा जगतविषयसक्तचेतकीदेहउ
ठीबैठीलेटीरहितीहै मुग्धकीदेहधरतीमें गिरतीहै तिससे नज
गतानस्वप्नदेखताहै निःसंज्ञसे नकिमरा प्राणऔरऊष्माकेहो
नेसे मुग्धजन्तुमें मरायानहींमरा इससंशयसेऊष्माहै यानहीं
है इससे हृदयकूतेहैंसंशयाननिश्चयार्थकिप्राणहै यानहींहैनाकके
आगेहाथतूलरखतेहैं यदिप्राणऊष्मानहींजानेतिससेमराऐसाअ
ध्यवसायकरदहनार्थवनकोलेजातेहैं जोप्राणऊष्मालभेतोनहींम
रा ऐसाअध्यवसायकरसंज्ञालाभार्थभेषजकर्तेहैं फिरउठनेसेन-

हींदिष्टङ्गतथाअर्थात्मरण नकियमराष्ट्रसे लौटा है तोहोसुषुप्त-
निःसंज्ञसे अमृतसे सुषुप्तिमूर्छाएकनहींहैं वैलक्षण्यसे मुग्धक-
भीवहुतदेरसांसनहींलेताहैदेहकांपतीहै मुहभयानकनेत्रफटेहो
तेहैं सुषुप्तप्रसन्नमुहवारबारसांसलेता नेत्रमिचेहोतेहैंनदेहकांप
तीहै पाणिपेषणमात्रसे सुप्तकोउठालेतेहैंनकिमुग्धकोमुद्गरघात
से भीउठासक्तेहैं मोहस्वापकालक्षणभेदहोचुकानिमित्तभेदसुनो
मूसरऔषधिआदिसे मोहहोताहै श्रमादिसे स्वापहोताहैलोकमे
भीप्रसिद्धिनहींहै किमुग्धसुप्तहै फिरपरिशेषसे अर्द्धसम्पत्ति मु-
ग्धताहै निःसंज्ञसे मृतधर्मसम्पन्नहै मृतधर्मवैलक्षण्यसे अस-
म्पन्नहै सूत्रमे जीवकोब्रह्मसे आधीसम्पत्तिकहीहै सोनहींहैकि
न्तुसबसम्पत्तिहै सतासोम्यतदासम्पन्नोभवतीति सुखदुःख ज्ञा
नसुप्तमे नहींहै जैसे तैसे मुग्धमे भीवेनहींहैं तिस्से उपाधिके
उपशयसे मुग्धमे भीसुषुप्तवत् कृत्स्नसम्पत्तिहै नकि अर्द्ध सम्प-
त्ति सोनहींसुनो हमनहींकहितेहैं किमुग्धमे जीव को ब्रह्म से
आधीसम्पत्तिहै किन्तु सुप्तकेआधेनिःसंज्ञासे सम्पन्न मुग्ध है
औरमरणकेआधेकम्पादिसे मुग्धसम्पन्नहै इसकानामअर्द्धसम्प
त्तिकहिताहूं मूर्छामृत्युकाद्वाराहै यदाकर्मसावशेषहै तदामन
वाणीफिरलौटतेहैंयदानिरवशेषकर्महै तदाप्राणऔरऊष्मानहीं
रहितेहैंतिस्से ब्रह्मवेदीइसकोअर्द्धसम्पत्तिमानतेहैंजोकहाकिचा
रसे पंचमीदशानहींहै सोदोषनहींहै यहकादाचित्की अवस्था
है इस्से प्रसिद्धनहींहै लोकऔरआयुर्वेदमेमूर्छाप्रसिद्ध है उसी
कानामअर्द्धसम्पत्तिमानाहै नकिपंचमीगिनीहै आयुर्वेदमेमूर्छा
संन्यासअभिन्यासादिअन्यदशाभीप्रकटहैं ॥

नीरूपब्रह्माधिकरण ॥ ५

नस्थानतोपिपरस्योभयलिङ्गंसर्वत्रहि ११

जीवजिसब्रह्मकेसाथसुषुप्तादिमेंउपाधिकेउपशमसेघुसताभि लताएकहोताहै अवतिसब्रह्मकास्वरूपश्रौतनिर्धारणकराताहूं उभयलिङ्गश्रुतिब्रह्मविषयहैं सर्वकर्मासर्वकाम:सर्वगन्ध:सर्वरस: इत्यादिजेसविशेषब्रह्मबोधकहैं अस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घमित्यादि निर्विशेषब्रह्मबोधकहैं क्याइनमें उभयरूपब्रह्मजानना चाहियेयाएकरूपदोमेंसे एकरूपमें क्या सविशेष या निर्विशेष लेवें दोलिङ्गश्रुतिसेदोनोंलिङ्गब्रह्महै अन्यथाएक बुरा मानेंगो सुनो स्वत:ब्रह्मउभयलिङ्गनहींहै एकही वस्तुस्वत:रूपीऔरअरूपी विरोधसेनहींनिश्चयकरासक्तेहो स्थानत: पृथिव्याद्युपाधियोगसेन सोभीयुक्तनहींहै नहींउपाधियोगसे अन्यवस्तुकाअन्यस्वभावसम्भवहै नहीं स्फटिकरक्तादिकेयोगसे रक्तहोताहै भ्रमसात्रसेरक्तिमाकाअभिनिवेशहै उपाधिअविद्यासे प्रत्युपस्थापित है इससेअन्यतरलिङ्गमानेंमें सबविशेषशून्यब्रह्मनिर्विकल्पजानोन कि सविशेष स्वरूप अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययमित्यादि ॥

नभेदादितिचेन्नप्रत्येकमतद्वचनात् १२

एकचिन्हब्रह्महै नकिस्थानसेयास्वत:दो चिन्ह है सो नहीं क्युंकिप्रतिविद्यामें ब्रह्मकेभिन्न२आकारकहेहैं चतुष्पात्ब्रह्म षोडशकलंब्रह्म वामनीत्यादि त्रैलोक्यशरीरवैश्वानरशब्दोदित ब्रह्महै तिससेसविशेषब्रह्ममानो दोचिन्हविरुद्धनहींहैं आकारभेदउपाधिसेहै अन्यथाभेदवेदनिर्विषयहो इतिचेत् यदि यह कहोमैनहींकहिताहूं न किससेप्रत्येकमतद्वचनात् प्रत्युपाधि भेद कोऔरब्रह्मसे अभेदकोवेदसुनाताहै यश्चायमस्यांपृथिव्यांतेजोमयइत्यादि सयोयमात्मेत्यादि इससेयहकहिसक्तेहैं कि भिन्नाकारयोगब्रह्मकावैदिकनहींहै ॥

अपिचैवमेके १३

भेदकोनिन्दासहितअभेदकोएकशाखीपढ़तेहैं मनसैवेदमा प्तव्यंनेहनानास्तिकिञ्चन मृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्य तीति अन्य भोक्ताभोग्यंप्रेरितारञ्चमत्वासर्वंप्रोक्तन्त्रिविधंब्रह्म- मेतदिति अर्थ जीवअन्नईश्वरत्रिविधब्रह्ममैनेकहासोतूजान ले मे मम ॥

अरूपवदेवहितत्प्रधानत्वात् १४

कहोजीसाकारनिराकारबोधिनीसेनिराकारपकड़ान कि- साकारसो कैसे उत्तर अरूपीहै नकिरूपादिमत् कैसे तत्प्रधा- नत्वात् दिव्योह्यमूर्तःपुरुषइत्यादि वेदनिराकारब्रह्ममेप्रधान है नकिसाकारमेसाकारवेदनहींनिराकारमेप्रधानहैकिन्तुउपासन विधिमेप्रधानहैबिरोधमेतत्परअतत्परसेबलिष्ठहै जिससेदोनोमे अनाकारब्रह्मनिश्चितहै नकिसाकार आकारभीविश्वसेअन्यन- हींदिखासक्तेहो ॥

प्रकाशवच्चावैयर्थ्यात् १५

जैसे सौरादिप्रकाशसबव्योममेफैलाअंगुरीआदिउपाधि के सम्बन्धसेसुधाटेढ़ाआदिरूपमेदिखाता है सूर्यादि तैसेहीदिखा तेहैं ऐसेब्रह्मभीपृथिव्याद्युपाधिसम्बन्धसे भी पृथिव्याकारसाभा सताहैसोउपासनार्थआकारोपदेशबिरुद्धनहींहै इससे सब वेद प्र माण हैजोउपाधिसेहै सोवस्तुधर्मनहींहै ॥

आहचतन्मात्रम् १६

आहचश्रुतिश्चैतन्यमात्रंब्रह्मणोरूपं सयथासैंधवघनोनन्तरो ऽवाह्यःकृत्स्नोरसघनएवैवम्वाअरेयमात्मानन्तरोऽवाह्यः कृत्स्नः प्रज्ञानघनएवेति नआत्माकाभीतरबाहिरचैतन्यसे अन्य रूप है निरन्तररूपचैतन्यहै जैसे सेंधोकेढेलेमेनिरन्तरनोनरसहै नकि

मधुरादि तैसा आत्माहै ॥

दर्शयतिचाथोअपिचस्मर्यते १७

परख्पकाप्रतिषेधकरकेश्रुतिनेनिर्विशेषब्रह्मदिखाया है य थातआदेशोनेतिनेतीत्यादि वाष्कलिनेवाध्वसेब्रह्मपूछावुह चुप रहा दूसरे जानाकिचुपचापबैठिरहिनाहीब्रह्म है सहोवाचाधी- हिभो इतितूष्णींबभूवतं हद्वितीयेवातृतीयेवावचनउवाचब्रूम:ख लुत्वन्तुनविजानासिउपशांतोयमात्मेति उपशांतपदसे वैदिक- लौकिकक्रूरकर्मसेब्रह्मनहींजानाजाताहै क्युंकिवुहशांत है ऐसे अर्थकोस्मृतिगीतादिमेंहै नसत्तन्नासदुच्यतइति ॥

अतएवचोपमासूर्यकादिवत् १८

जिस्से आत्मावाङ्मनसातीतहै अतएव तिस्से इसकी औपा धिकीअपारमार्थिकीसविशेषताजानकेसूर्यकादिवत् यह उपमा मोक्षशास्त्रमेदीहै सूर्यकअर्थात्सूर्यकाआभास सूचक यथाह्ययं- ज्योतिरात्माविवस्वानपोभिन्नावहुधैकानुगच्छन् उपाधिना क्रि यतेभेदरूपोदेव:क्षेत्रेष्वेवमजोयमात्मेत्यादि ॥

अम्बुवदग्रहणात्तुनतथात्वम् १९

अपनेमतकीहानदेखबोलाकिजलसूर्यकादितुल्ययहांयु- क्तनहींहै अम्बुवदग्रहणात् मूर्त्तसूर्जादिसेपृथक्दूरदेशमेमूर्तजल काग्रहणयुक्तहै जलमेसूर्यादिकाप्रतिबिम्बयुक्तहै औरनआत्मामू र्तहै नआत्मासेपृथक्दूरदेशऔरउपाधियांहैं आत्मासर्वगतहो- नेसेऔरसबसेअनन्यहोनेसे तिस्से दृष्टांतयुक्तनहींहै ॥

वृद्धिह्रासभाक्त्वमन्तर्भावादुभयसामंज स्यादेवं २०

जितनाअंशइष्टहै उतनेमेंसम्भवहै नहींदृष्टांतऔरदार्ष्टान्तिककाकहीं दृष्टांशकोछाड़सबअंशमेंसारूप्यकौनदिखासक्ताहै सबसारूप्यमेंदोनोंकानाशहो यहदृष्टांतश्रुतहै नकिस्वधीकल्पित-है शास्त्रमेंतद्दृष्टांतकेप्रयोजनमात्रकाउपन्यासहै जोसारूप्य यहांइष्टहै सोकहिताहै वृद्धिह्रासभाक्त्वं जलगतसूर्यप्रतिबिम्बजलवृद्धिमेंबढ़ताजलह्रासमेंघटताजलचलनेमेंचलता जल भेद मेभिन्नजलधर्मकाअनुसारीहै नकिपरमार्थसेसूर्यतैसातैसाहै ऐसेअविकारी आत्मा देहाद्युपाधिसेउपाधिधर्मवृद्धिह्रासादिकोसेवतासाहै इसढबदृष्टांतदार्ष्टान्तिकदोनोंसमञ्जसहोनेसेबिरोधनहींहै जोयोरेजलमेंअतिदूरव्योमकाप्रतिबिम्बदिखाताहै तोसबसत्यहै नहींतोनहींहै आत्माप्रतिबिम्बशून्यःनीरूपद्रव्यत्वात् वायुवत् ॥

दर्शनाच्च २१

श्रुतिब्रह्मकादेहादिमेंभीतरप्रवेशदिखातीहै तैतिरीयकश्रुतिसेईश्वरपक्षीलिङ्गदेहीहोकेदेहोंमेंघुसाथा औरसोघुसाभीपूर्णहै पुरश्चक्रे द्विपदःपुरश्चक्रे चतुष्पदः पुरस्सपक्षीभूत्वापुरःपुरुषआविशदिति तिससेनिर्विकल्पैकलिङ्गब्रह्महै नकिउभयलिङ्ग नकिविपरीतलिङ्गहै कोई इसअधिकरणमेंदोअधिकरणकरते हैं रीतिनिःप्रपञ्चब्रह्मक्याएकाकारयाप्रपञ्चवत्अनेकाकारहैइससंशयसेप्रकाशवच्च इससेदूसराधिकरणहै इसमें नसद्रूपहै किन्तुप्रकाशवच्चिद्रूपहै कैसे अवैय्यर्थ्यसे सत्यंज्ञानंसदेवेति जेदोश्रुतिदोरूपब्रह्ममेंअर्थवतीहैं इसकासिद्धान्तहैकिआहचतन्मात्रं अर्थ सन्मात्रब्रह्महै ज्ञानकासत्तासेभेदनहींहै यहदूसराधिकरण है एकाधिकरणवादीकहिताहै कि सद्रूपयाबोधरूपयाउभयरूपब्रह्मइष्टहै जिसलियेअधिकरणपृथक् करते हो सोनिरर्थहै जिससे मैं

कहिताहूं जोअनेकरूपब्रह्मनिरस्तहै तोएतावड़ाश्रमक्युंकरते हो नस्थानतोपीति इसीअधिकरणसे निरस्तहैप्रकाशवच्चयहपृथक्अधिकरणव्यर्थहे सद्रूपहैनकिबोधरूपहै यहनहीं कहिसक्तेहो विज्ञानघन इसकेव्यर्थहोनेसे ॥

कैसे निरस्तचैतन्यब्रह्मचेतनजीवकाआत्माकहाहै और नकिबोधरूपहै नसद्रूपहै यहकहिसक्तेहो अस्तीत्येवोपलब्धव्यः इसकेव्यर्थहोनेसे औरकैसेनिस्सत्ताकतुच्छबोधमानोगे नउभयरूपब्रह्मकहिसक्तेहो पूर्वस्वीकारकेविरोधसे जैसे सत्ताभिन्नबोधसे औरबोधभिन्नसत्तासेउपेतब्रह्मजाननेवालेकोपूर्वाधिकरणमे प्रतिषिद्धसप्रपञ्चआपहुंचा उभयरूपश्रुतिबलसेदोषनहींहै सो नहींहै एकअनेकस्वभावनहीं होसक्ता है मेरुसर्षपवत् यदि कहो किसत्ताहीबोधऔरबोधहीसत्ताहै इनकामिथो भेद नहीं है तो भीक्यासद्रूपब्रह्महै याबोधरूपयाउभयरूपहै यहविकल्पनिराश्रयहै औरभीसाकारनिराकारबोधनमें श्रुतिझगड़तीहैंफिरनिराकारस्वीकारमेसाकारोंकीगतिअवश्यकहो इसलियेप्रकाश वच्चेत्यादिसूत्रसार्थकहैं अद्वैतमतमेआकारश्रुतिकल्पिताकारपरहैं विश्वचयबाटीकहिताहै किआकारवादिनीश्रुतिविश्वचयद्वाराअनाकारप्रतिपत्यर्थहीहै नउनकाभिन्नार्थहै प्रतिपत्तिज्ञानयाउपासनहै मनोमयइत्यादिआकारश्रुतिहै जेइतराकारविलयपरहै मनोमयमनोतिरिक्तोपाधिशून्ययहअर्थहै ऐसेही प्राणशरीरपदसेप्राणातिरिक्तउपाधिकेनिषेधसेमनभीनहींहै ऐसेसबशब्दअनाकारब्रह्मपरहैं यहमतअच्छानहींहै कैसे यथायुक्ताह्यस्यहरयः शतादशेत्ययंवैहरयोयंवैदशचसहस्राणिबहूनिचानन्तानिचेत्यादि जेब्रह्मविद्याकेअधिकारमेपढ़े हैं तेविलयार्थहैं तदेतद्ब्रह्मापूर्वमित्यादि उपसंहारसेऔरजेउपासनविधानकेअधि-

कारमेपढ़ेहैंजैसेमनोमयःप्राणशरीरोभारूपइत्यादि इनकाबिल
यन्याय्यनहींहै सक्रतुङ्कुर्वीतेत्यादि इस उपासनबिधिसे मनोम
यादिकासम्बन्धहै श्रुतिनेजेगुणउपासनार्थकहेहैं फिरकैसेलच
णासेबिलयार्थकहसक्तेहो मनोमयादिकाफलकहींपापचयकहीं
ऐश्वर्यलाभकहींक्रममुक्तिहैइससे उपासनवाक्यऔरब्रह्मवाक्यपृथ
क्पृथक्युक्तहैंनकिएकवाक्यता उनकीएकवाक्यताएकनियोगसे
प्रयाजदर्शादिवाक्यवत्हैयदिकहोसोनहीं कहोकिसविषयक नि
नियोगयहांइष्टहै नियुज्यमाननरकरो इसअपनेव्यापारमे लग-
ताहै ननुहोगानियोगविषयद्वैतविलयनहींहै ब्रह्मबोधद्वैतप्रपञ्च
केबिनाबिलापितसे इस्से ब्रह्मबोधविरोधीद्वैतप्रपञ्च बिलाप्य है
जैसे स्वर्गकामकोयागअनुष्ठेयहैऐसेअपवर्गकामकोप्रपञ्चप्रबिल-
यहै जैसे अंधेरेमे धरेघटादिकेदर्शनबिरोधीअंधेरेकोदूरकरतेहैं
ऐसाहीब्रह्मबोधबिरोधीप्रपञ्चदूरकर्तव्यहै ब्रह्मबोधार्थीसे ब्रह्म-
स्वभावप्रपञ्चहै नकिप्रपञ्चस्वभावब्रह्महै तिससेनामरूपप्रपञ्चके
प्रबिलापनसेब्रह्मबोधहै पूंछताहूं किप्रपञ्चबिलापनकाक्या अर्थ
है क्याऐसाप्रपञ्चकाबिलयकर्तव्यहै जैसे अग्नितापसेघी काप-
गिलना याऐसाकि जैसे एकचन्द्रमेतिमिरसेअनेकचन्द्र प्रपञ्च-
है तैसे अविद्याकृतब्रह्ममे नाम रूप प्रपञ्चविद्यासे बिलापयित
व्यहै देहादिरूपआध्यात्मिक और वाह्यधरादिरूपविद्यमान प्र-
पञ्चबिलापयितव्यकहोयदि सोपुरुषमात्रसेबिलापनकोशक्यन-
हींहै फिरउसकेबिलयकाउपदेशअशक्यबिषयहो यदिकिसी मु-
क्तसेधरादिबिलयकियाहोतातो अबधरादिशून्यविश्व होता यदि
अविद्याध्यस्तप्रपञ्चएकब्रह्ममे विद्यासेविलाप्यकहो तोब्रह्महीअ
विद्याध्यस्तप्रपञ्चकेनिराससेनिवेदनकियाहैएकमेवाद्वितीयंब्रह्मे
त्यादिसेनिवेदितब्रह्ममेस्वयंविद्याजन्मतीहै सोअविद्याकोबाधेहै

तिससेअविद्याध्वस्तसवप्रपञ्चस्वप्नप्रपञ्चवत्‌विलय होताहै अनिवे
दितब्रह्ममेब्रह्मज्ञानकोकरऔरप्रपञ्चविलयकरऐसेसौवारकहिने
सेभीनब्रह्मज्ञाननप्रपञ्चविलयहोगाजीव नियोज्यप्रपञ्चदशामेंज्ञा
ताहै सोप्रपञ्चसाहीहै याब्रह्मसाहै प्रथममेंनिःप्रपञ्चब्रह्मकहिने
सेघरादितुल्यजीवभीबिलापितहै फिरप्रपञ्चविलयमेंनियोगवि
सकेलियेकहोगे किसकोनियोगनिष्ठासेमुक्तिकहोगे दूसरेमेंब्रह्म
हीअनियोज्यस्वभावजीवकास्वरूपहै औरजीवअविद्याकृत है ऐ
सेब्रह्ममेंनियोज्यकेअभावसेनियोगकाअभावहै औरपरविद्याधि
कारमेंपढ़े द्रव्यादिविधिशब्दतत्वकेसन्मुखकरतेहैं नकितत्ववो
धकोविधिकेबोधकहैंलोकमेंभीयहदेखयहसुनऐसेकहिनेसेप्रणि
धानमात्रकरयहीकहाहै नकिसाचात्‌ज्ञानकोकर ज्ञेयकेसन्मु-
खकोभीकभीज्ञानहोताकभीनहींहोताहै तिससे ज्ञानार्थीको-
ज्ञानकाविषयदिखानाचाहियेजतानेवालेसेविषयदिखानेसेआ
पहीज्ञान जैसी विषय जैसा प्रमाणहै तैसा जन्मताहै नहींप्र-
माणांतरसेअन्यथासिद्धार्थमेंनियुक्तको अन्यथाज्ञानजन्मताहै य
दिनियुक्तहूं मैंअन्यथाज्ञानकरोसोज्ञाननहींहै तोक्या है मान-
सोक्रियाहै जोआपही अन्यथाजन्माज्ञानहोतोभ्रमहो ज्ञान प्र-
माणजन्यजैसोविषयहै वैसाहोगा नकिनियोगसौसेकरासकेहो
नकिनिषेधसौसेवारसकेहो जैसे नीलकोयेलेकोसौशिल्पीभीश्वे
तनहींकरसकेहैं इससेनियोगवेदान्तवाक्योंमेंनहींहै जोकहोकि
आम्नायनियोगार्थहीहै इससेजीवकोअनियोज्यब्रह्मत्वअप्रमाण-
कहै शास्त्रही अनियोज्य ब्रह्मात्मत्व को कहिता है ब्रह्मबोधा
र्थंपुरुषको नियुक्तकर्त्ता है तिस्से एक ब्रह्मशास्त्रको दोअर्थता-
औरविरुद्धार्थपरताहो नियोगपरमेंश्रुतहानअश्रुतकल्पना कर्म
फलवत्‌मोक्षकाअदृष्टफलऔरअनित्यादिदोषनहींवारसकेहोति

ससेअवगतिनिष्ठब्रह्मवाक्यहै नकिनियोगनिष्ठहै इससेएक नि-
योगकेज्ञानसेएकवाक्यताकहोथी ब्रह्मवाक्यमेनियोगमाने पर-
भीएकब्रह्मनि:प्रपञ्चसप्रपञ्चउपदेशोंमेअसिद्धहै शब्दान्तरप्रमाण
सेनियोगभेदमेसर्वंत्रएकनियोगशक्यनहींहै जैसे यजतिजुहोति
मेभेदहै तैसेहीवेदोपासीतयहशब्दभेदहै वेद जान उपासीत उ
पास्तिकर औरप्रयाजदर्शादिमेस्वर्गफलार्थीअङ्गमुख्यसेएकवाक्य
ताहै सगुणनिर्गुणचोदनामेएकाधिकारअंशनहींहै नहीं भा रू-
पादिगुणप्रपञ्चविलयकेउपकारीहैं नकिप्रपञ्चविलयभारूपादि-
काउपकारीहै मिथोविरोधिसेनहींसबप्रपञ्चकाविलापनऔर प्र
पञ्चकेएकदेशका अपेक्षणएकधर्मिमेघुसानेकोयुक्तहै तिससेमेरा
कराविभागसाकारनिराकारउपदेशोंकायुक्ततर है ॥

निषेधावधिब्रह्माधिकरण ॥ ६ ॥

प्रकृतैतावत्त्वंहिप्रतिषेधतिततोब्रवीति चभूय: २२

द्वेवावब्रह्मणोरूपेमूर्तंचैवामूर्तंचेति इसउपक्रमसेपांच म-
हाभूतोंकी दोराशिविभक्तकी हैं धराजलतेजमूर्तहैं व्योम वायु
अमूर्तहैं अमूर्तकासारकरणात्माहिरण्यगर्भहै उसीके पुरुषशब्द
सेमहारजनपांडुाविकइन्द्रगोपादिरूपदिखाकेफिरपढ़ा कि अ-
थातआदेशोनेतिनेतिनह्येतस्मादितिनेत्यन्यत्परमस्तीति हमा-
रीयहजिज्ञासाहै किइसनिषेधकाविषयक्याहै इसमेइदन्तत् ऐ
साविशेषितकुछप्रतिषेध्यलब्धनहींहै इतिपदकिसीप्रतिषेध्य को
कहिताहै नेतिनेति इस्मेनञ्इति परहै इतिपदपासकाबोधक
ऐसा लोक मे देखा है इतिपाठकने कहा था प्रकरणसामर्थ्य
से सप्रपञ्चरूपद्वयब्रह्मके पासहैं और सोही ब्रह्म है जिसके जे

दोरूपहैं इसी मे हमको संशय जन्माहै क्या यह निषेधदोरूप का है या रूपवत्ब्रह्मका है इन दोका निषेध है या एकका है यदाएकका है तदाक्या ब्रह्मकानिषेध कर्त्ता है दोरूपपरिशेषकरताहै यादोरूपकानिषेधकरताहै ब्रह्मकोपरिशेषरखताहै हमयहशङ्काकरतेहैं किप्रकृतकोसमतासेदोनोकानिषेधहै और दोनिषेदहैं दोनञ्कहिनेसे एकनेब्रह्मकासप्रपञ्चरूपनिषेधकियाहै दूसरेनेरूपवत्ब्रह्मनिषेधकियाहै यहीमतिहै अथवासर्वनिषेधयुक्तनहीं इससेरूपवत्ब्रह्महीनिषिद्ध है क्योंकि वाङ्मनसातीतहै इससेअसम्भाव्यमानसद्भावहै इसे निषेधार्हहै नकिरूपीप्रपञ्चनिषेधार्हहै प्रत्यक्षादिगोचरसे दोनकाअभ्यासदृढ़ार्थहै सोनहींहै उभयनिषेधयुक्तनहींहै शून्यवादप्रसङ्गसे कुछपरमार्थपकड़केअपरमार्थकोनिषिद्धकरतेहैं जैसे रस्सीआदिसेसांपआदिनिषेधभावमेसार्थहै औरदोनोकेनिषेधमेकौन अन्यभावशेषरहैगा जोअन्यशेषनहींहै तोउनमेइतरनिषेधकाआरम्भनहींहै सत्वकेबिनानिषेधशक्यनहींहै जोशक्यहै तोसोहीप्रपञ्चपरमार्थहोतिससेनिषेधकीअसिद्धिहै नकिब्रह्मकानिषेधयुक्तहै ब्रह्मतेब्रवाणीत्यादिकहिनेसेवाङ्मनसातीतअभावसेनहींकहाहै सत्यंज्ञानमित्यादि इनमेवड़ प्रबन्धसेब्रह्मकहाफिरउसीकाअभावनहीं कहैगा नहींबुद्धिमान्कालाकरफिर धोता है वाङ्मनसातीत अविषयांत:पातिब्रह्महै तिस्से ब्रह्मकारूपप्रपञ्चकानिषेधहै शेष ब्रह्म है यहीमानो सोहीकहाहै प्रकृतैतावत्वं इयत्तापरिच्छिन्नमूर्त्तामूर्तरूपब्रह्मकोशब्दनिषेधताहै अमूर्तरसचक्षुर्ग्राह्यनहींहै ब्रह्म के दोरूपकहे अवरूपीकेस्वरूपजिज्ञासामेंयहवाक्यहै अथातआदेशो नेतिनेतीति कल्पितरूपकेनिषेधसेब्रह्मकास्वरूपकहा है प्रधानसेब्रह्मकानिषेधनहींहै राजाकाभृत्य नहींहैइससेराजाका निषे-

धहोनेसेलोकप्रसिद्धरूपहययब्रह्ममेकल्पितकापरामर्शहै नकि निर्दिष्टकानिषेधहै शुद्धब्रह्मबोधार्थ मूर्तामूर्तकेनिषेधार्थदोनञ् हैं नकिरूपरूपिक्रियापूर्वनञ्भूतराशिकोउत्तरनञ्वासनाराशि को निषेधताहै यानदोवीप्सामेहैं किजोकुछउत्प्रेक्षाकरतेहोसोनहीं हैगणोनिषेधसे यहब्रह्मनहीं अन्यब्रह्म यहजिज्ञासाहोवीप्सामे जिज्ञासानहींहै सबविषयकेनिषेधसे तिससेकल्पितप्रपञ्चकाब्रह्ममेनिषेधऔरब्रह्मशेषहै यह निर्णय है ततोब्रवीतिचभूयः प्रतिषेधसेआगेकहाकि अन्यत्परमस्तीति अभावकेअन्तमे क्या अन्यपरहै यहकहोयहांऐसीअक्षरयोजनाहै कि जोब्रह्मनेतिनेतिसेनिर्देशकियाथा फिरउसनिर्देशकोकहिताहै कि नेतिनेति इसकाक्या अर्थहै नहींब्रह्मसेभिन्नहै इससेनेतिनेतिकहाहै नकि स्वयंनहींहै अन्यत्परं निषिद्धब्रह्महै याऐसीवर्णयोजनाहै कि नहींइससेनेति नहिप्रपञ्चनिषेधरूपनिर्देशसेअन्यनिर्देशब्रह्मका है तवतोततोब्रवीतिचभूयः इससूत्रांशकोनामपरमानो अथनामधेयंसत्यस्यसत्यमितिप्राणावैसत्यंतेषामेषसत्यमिति यहकहिताहै यहतववनेजबनिषेधब्रह्मसेहटे औरअभावावसानअर्थात्अन्तिमे अभावरहा तोकौनसत्यवासत्यकहोगे तिससेऐसाहै किनिषेधब्रह्मावसानहैनकिअभावावसानऔरकोईकहितेहैं किश्रुतिउपलक्षणहै सूक्ष्मपांचभूतअमूर्तहैं औरपञ्चीकृतस्थूलमूर्तहैं तिससेअमूर्तरसकहिनेकरकेकरणपांचभौतिकसिद्धहैं औरसत्यदात्मकप्रपञ्चकहेपीछेकहेआरोपकेनिषेधार्थसेनेतिनेतिनिषेधकरकेउपदेशकियाहै ॥

तदव्यक्तमाहहि २३

यदिनिषिद्धप्रपञ्चसेअन्यपरब्रह्महै तदासोक्युंनहीं गृह्यमान है नेत्रादिसेसुनो तदव्यक्तं अनिन्द्रियग्राह्यहै सर्वदृश्यकासाक्षी

होनेसे आहहिस्मृतिने ऐसाहीकहा है नचक्षुषागृह्यतेनापिवाचानान्यैर्देवै स्तपसाकर्मणावासएषनेतिनेत्यात्माअगृह्योनहिगृह्यतेइत्यादि ॥

अपिसंराधनेप्रत्यक्षानुमानाभ्यां २४

सबप्रपञ्चसेछुटा आत्मा अप्रकटकोसंराधनकालमेयोगीदेखतेहैं संराधन भक्ति ध्यान प्रणिधान अनुष्ठानादिहै कैसे जाना किसंराधनकालमेदेखतेहैं प्रत्यक्षानुमानाभ्यां श्रुति पराञ्चिखानिव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ् पश्यतिनांतरात्मन् कश्चिद्धीरःप्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्नित्यादि अर्थ स्वयम्भू ईश्वर खानि इन्द्रियां परांचि अनात्मग्राहक कृत्वेतिशेषः व्यतृणत् नाशितवान् यहीइनकानाशहै जोअसत्अर्थका ग्रहण है तिससेउनकोतैसासृजा जिससेसबलोगवहिराअर्थहीदेखताहै न किअपनेआत्माको कश्चित् कोई धीरः धीमान् आवृत्तचक्षुः रुद्धेन्द्रियवर्गः शुद्ध चित्तमेप्रत्यगात्माको अमृतत्वं मोक्ष इच्छन् चाहताहुआदेखताहै मोक्षार्थी स्मृति यंविनिद्राजितश्वासाःसन्तुष्टाःसंयतेन्द्रियाः ज्योतिःपश्यन्तियुंजानास्तस्मैयोगात्मनेनमः ॥

प्रकाशादिवच्चावैशेष्यम्प्रकाशश्चकर्मण्यभ्यासात् २५

संराध्यसंराधकरीतिपरचलनेमेवच्चेपरजीवकाभेदकहांछुटा यहमतकहोकहिताहूं प्र० जैसेप्रकाशव्योमसूर्यादिअंगुलीपात्रजलादिकर्मउपाधिमेभिन्नसेभासतेहैं नकि स्वाभाविकअविशेषरूपकोछाड़तेहैं ऐसाहीध्यानादिउपाधिमेआत्मभेद है स्वतः अवैशेष्यंएकरसहैतैसाही तत्वमसीति इसअभ्याससेजीव प्राज्ञकाअभेदवारवार कहाहै ॥

अतोनन्तेनतथाहिलिङ्गम् २६

अत: जिमसे अभेदस्वाभाविकहै औरभेदअविद्याकृतहै ति ससेविद्यासेअविद्याकोछुटाकेजीव अनन्तेन परप्राज्ञके साथ ऐक्यपाताहै तथाहिलिङ्गं तैसाहिश्रुतिनेकहाहै सयोहवैतत्परमंब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ब्रह्मैसन्ब्रह्माप्येतीत्यादि ॥

उभयव्यपदेशात्त्वहिकुण्डलवत् २७

संराध्यसंराधकभावमेभेदाभेदमतकान्यासस्वमतशुध्यर्थ है कहींजीवप्राज्ञकाभेदकहाहै ततस्तुतंपश्यतेनिष्कलन्ध्यायमान इति ध्याताधेयकाभेदहै द्रष्टा द्रष्टव्यका परात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यमिति गन्तागन्तव्यका य:सर्वाणिभूतान्यन्तरोयमयतीति नियन्तानियन्तव्यका कहींउनकाअभेद कहा है तत्वमसि एषआत्मासर्वान्तरइत्यादि ऐसेउभयउपदेशमेयदिअभेदएकांतसेमानो तोभेदोपदेशनिरालम्बनहो फिरइसउभयउपदेशसे अहि कुण्डलवत् तत्वहोनाहैहै जैसे सांपयहउपदेशअभेदमेहै औरकुण्डलीभुग्नोप्रांशुलम्बविवत्तास्यादिकाभेदमेउपदेशहै ऐसाहीजीव प्राज्ञकीदशाहै ॥

प्रकाशाश्रयवद्वातेजस्त्वात् २८

जैसे सौरप्रकाश औरप्रकाशकाआश्रयसूर्य अत्यन्तदोनोभिन्ननहीहैं तेजस्त्वात् दोनोतेजसमानहैं औरभेदतोलोकसिद्ध है ऐंसाहीजीवप्राज्ञमेहै ॥

पूर्ववद्वा २९

जैसे पूर्वमेप्रकाशादिवच्चेति इस्मे कहाया तैसाहीरहो अविद्यासे बन्धविद्यासे मोक्षहै यदिपरमार्थसे बद्धकोईआत्मा अहिकुण्डलरीतिसे परात्माकासंस्थानहै औरप्रकाशाश्रयरीतिमे

एकदेशमानोगीतवतो पारमार्थिकबन्धछाड़नेको अशक्यहै इससे मोक्षशास्त्रव्यर्थहो नकिभेदाभेददोनोंश्रुतिनेतुल्यवत्कहे हैं अभेदकोदिखातीहै पूर्वप्रसिद्धभेदका अनुवादकर्त्तीहै अर्थान्तरकीविवक्षासे तिससे प्रकाशादिवच्चेतियहअद्वैतसिद्धान्त हैवाभेद भेदवारकहै ॥

प्रतिषेधाच्च ३०

परात्मासे अन्यचेतनकानिषेधशास्त्रकर्त्ताहै नान्यतोस्तिद्रष्टेत्यादि तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरमनन्तरमबाह्यमित्यादि इससेब्रह्मसे अन्यप्रपञ्चकानिषेधसुनायाहै तिससे ब्रह्ममात्रशेषसिद्धान्तजानपड़ताहै ॥

उभयब्रह्माधिकरण ॥ ७ ॥

परमतःसेतून्मानसम्बन्धभेदव्यपदेशेभ्यः ३१

जोप्रपञ्चशून्यब्रह्मनिर्धाराया उससे परअन्यतत्वहै यानहीं यहसंशयश्रुतिविवादसे है कोईवाक्यब्रह्मसे परअन्यतत्वको कहितेहैं उसकेव्याप्त्यर्थयहउपक्रम है परं अन्यतत्व अतः ब्रह्मसे होनेकोयोग्यहै सूत्रमेकहेचारहेतुओं सेसे तु अथयआत्मासेतुर्विधृतिरिति इससे आत्मशब्दसे जोब्रह्मकहाया सोहीसेतुकहाहै लोकमेमट्टीकाठादिसे जलसन्तानभेदार्थजलमेबनाई वस्तुसेतुहै जोश्रुतिने सेतु शब्द आत्मा मे कहा है सोलौकिकसेतुसा आत्मासेतुसे अन्यवस्तुकाहोनाकहिताहै औरसेतुन्तीर्त्वा इसतरतिशब्दसे जैसे लौकिकसेतुसेउतरजांगलअसेतुमे पहुंचाहै ऐसे आत्मसेतुकोउतरअनात्मअसेतुमें पहुंचा यहोप्राप्तहै उन्मान तदेतद्ब्रह्मचतुष्पादष्टाशफंषोडशकलमिति

अर्थ चारदिशाचारकलाहैं औरप्रकाशवान्पादहै पृथिवीअन्तरिक्षद्युसमुद्रयहअनन्तवान्पादहै २ अग्निसूर्यचन्द्रविद्युतयहज्योतिष्मान्पादहै ३ चक्षुःश्रोत्रमनवाणीयहआयतनवान्पाद ४ ऐसाचतुष्पाद्ब्रह्महै पादोंकेआधेआठशफाखुरसेफटेहैं जिसकेसोअष्टाशफब्रह्महै चारपादसे चार२कलाहैं इससे षोडशकल है जैसे सोरह मासे तुला सोना सोरह मासे कहाताहै तैसेहीसहयब्रह्महै सोरहमेंमितहोनेसेतुलीवस्तुपरिछिन्नवाटसेअन्यहै तैसे ब्रह्मकेउन्मानकहिनेसेअन्यवस्तुहोनीचाहिये सम्बन्ध शारीरआत्माप्राज्ञेनात्मनासम्परिष्वक्तइतिदेखाहैसम्बन्धमितोंकामितकेसाथ जैसे नरोंकानगरसे सुषुप्तिमेजीवोंकाब्रह्मसे सम्बन्धकहाहै इससेब्रह्मसेपरअन्यवस्तुअमितजानपड़तीहै भेदईश्वरकासूर्यआधारकहाहै अथयएषोन्तरादित्येहिरण्मयःपुरुषोदृश्यतइति फिरभेदसेनेचआधारईश्वरकाकहाहै अथयएषोन्तरक्षिणिपुरुषोदृश्यतेइति नेत्रस्थईशकासूर्यस्थईशसेरूपादिसमानकहेहैंतस्यैतस्य तदेवरूपंयदमुष्यरूपंयावमुष्यगेष्णौतौगेष्णौयन्नामतन्नामेति नेत्रऔरसूर्यइनमेंकेदोनोंईश्वरसावधिककहेहैंयेचामुष्मात्परांचोलोकास्तेषांचेष्टेदेवकामानांचेत्यकस्ययेचैतस्मादर्वाञ्चोलोकास्तेषांचेष्टेमनुष्यकामानांचेत्यकस्य जैसे यहमथुराकाराज्यहै औरयहकुरुकाराज्यहै ॥

सामान्यात्तु ३२

उक्तहेतुओंसेब्रह्मसेअन्यप्राप्तहैइसकानिरोधकरताहैकि उक्तप्राप्तिकारोधकहैब्रह्मसेअन्यकुछवस्तुहोनहारनहींहै मानकेअभावसेब्रह्मसेअन्यकीअस्तिमेंप्रमाणनहींदेखतेहैं सबवस्तुजातजनिमत्काब्रह्मसेजन्मादिनिर्धारितहैकार्यकाकारणसेअनन्यत्वहैजोसेत्वादिव्यपदेशब्रह्मसेभिन्नतत्वकासूचककहाथासोनहीं सेतुक

हिनेसेब्रह्मसेबाह्यवस्तुकासद्भावनहींकहसत्ताहैआत्मासेतुकहाथा जोब्रह्मयाप्रपञ्चसेअन्यकल्पोसो हठहैअप्रसिद्धकल्पनासेआत्मासे तुइसमेकहा किजैसासेतुधारकपारकहै तैसाही आत्माजगऔर जगसीमोंकाधारकपारकहै सेतुमासेतुकहाहैतरतिप्राप्तार्थमेंहै नकिअतिक्रममेअसंभवसेजैसेगणिततीर्णकहिनेसेप्राप्तगणितजा नाजाताहै नकिउल्लंघितगणितहै तैसेसेतुंतीर्त्वेतिइसमेंप्राप्तसे तुहैआत्मा ॥

वुध्यर्थःपादवत् ३३

उन्मानभीब्रह्मसेअन्यवस्तुकीअस्तिपरनहींहै फिरकिसलियेहैवु ध्यर्थः उपासनार्थहै चारपांवआठखुरसोरहकला ऐसीफैलीबुद्धि ब्रह्ममेकैसेठहिरेगीइसलिये विकारद्वाराब्रह्मकाउन्मानकहाहैस वनरअविकारअनन्तमेबुद्धिनहींठहिरासक्तीहैं नरोंकीबुद्धिमन्दम ध्यश्रेष्ठहोनेसे पादवत् अध्यात्ममनके वाणीप्राण नेत्रकर्णपादहैं औरअधिदैवव्योमकेअग्निवायुसूर्यदिशापादमानेहैं ध्यानार्थतैसे ब्रह्मकेहैं अथवाजैसेमासेसोनेकाव्यवहारार्थपादविभागहै नकि सबमासेसेसवंट्रासवंचसर्वजनव्यवहारकरसक्तेहैंजिनेवेचनेकेपरि माणकेअनियमसेतैसाईशमेजानो ॥

स्थानविशेषात्प्रकाशादिवत् ३४

स्थानमिवस्थानंतस्यविशेषोबुध्याद्युपाधिशून्यत्वंसुषुप्ताव स्थायांनतुपरिमितत्वेनसत्संपत्तिरतोनसंबन्धकृतदूषणमस्तीति सुषुप्तिरूपब्रह्मस्थानमेसत्संपत्तिरूपसम्बन्धकहाहै जैसे स्त्रीकोले केसोयाहै इसअभेदपक्षमेभीसम्बन्धसेदोषनहींहै औरभेदपक्षमे सूर्यमण्डलस्थानमेनेत्रकेनाईविशेषहै तिसमे स्वाभाविकभेदनहीं है प्रकाशादिवत् यहउपमाकाउपादानहै जैसे एकसूर्यकाप्रका शजैसीरउपाधिकेसाथयोगसेभेदभागीकहाताहै औरउपाधियों

गसेसम्बन्धकाकथनहोताहै आदिशब्दसेजैसेसूचीपाशादिमेंउपाधिकीअपेक्षासेहीसूचीपासजेदोसम्बन्धऔरभेदहैं तैसेहीसम्बन्धऔरभेददोनोऔपाधिकईश्वरमेंहैं ॥

इससूत्रसेसम्बन्धऔरभेदइनदोंशब्दों कानिरासाभिधानहै जोसम्बन्धऔरभेदसेपरब्रह्मसेअन्यतत्त्वहै सोझूठहै जिस्से एकमेस्थानविशेषकीअपेक्षासेसम्बन्धऔरभेदयुक्तहैं ॥

उपपत्तेश्च ३५

भेदस्पषात्वादियुक्तेश्च

स्वमपीतोभवतीतिइससेस्वरूपसम्बन्धयुक्तहैनकिअन्यसम्बन्धस्वरूपसम्बन्धअनपायीहोनेसेनकिनगरनरयुक्तिसे सम्बन्धघटताहै औपाधिकस्वरूपकेक्षिपनेसेस्वरूप सम्बन्ध है बहुतश्रुतियोंमे एकईश्वरकहाहै इससेभेदऔपाधिकहै व्योमवत् योयंवहिर्धापुरुषादाकाशोयोयमन्तःपुरुषइत्यादि ॥

तथान्यप्रतिषेधात् ३६

सेत्वादिपरपक्षहेतुकोदूरकरस्वपक्षमेंहेतुकहिताहै अन्यकेनिषेधसेजानाकिब्रह्मसेपरअन्यवस्तुनहींहै सएवाधस्तादित्यादि इनसेजानाकिआत्मासेअन्यअन्तरआत्मानहींहै ॥

अनेनसर्वगतत्वमायामशब्दादिभ्यः ३७

अनेन परिछिन्नसेत्वादिकेनिराससेऔरअन्यप्रपञ्चमात्र केप्रतिषेधसे सर्वगतत्वं तीनपरिच्छेदोंसेरहितब्रह्महै यह अर्थ तर्कमात्रसेनहींहै किन्तुश्रौतहै आयामशब्दव्याप्तिवाचकहै शब्दयावान्वाआकाशस्तावानेषोन्तर्हृदयआकाशइति आदिशब्दसेनित्यशब्दअर्थकास्वीकारहै ॥

ईश्वरफलदातृत्वाधिकरण ॥ ८ ॥

फलमतउपपत्तेः ३८

व्यावहारिकीईशिताईशितव्यअवस्थामेंब्रह्मकाएकअन्य स्वभावकहाहै जोकिइष्टअनिष्टमिश्रकर्मफलत्रिविधिजन्तुयोंको प्रसिद्ध हैं इसका दाता ईश्वर है या कर्म है फलमतईश्वराद्भवितुमर्हतिकुतउपपत्तेः ईश्वरसर्वाध्यक्षसृष्टिस्थितिलयादिविचित्र-काविधाताहै औरदेशकालविशेषोंकाज्ञाता है इससे कर्मियों-कोकर्मानुरूपफलदेताहै सेवाफलवत् क्षणिककर्म से कालांतरभाविफलअयुक्तहै भावसेभावयुक्तनहींहै विनश्यत्कर्मस्वकालमेस्वानुरूपफलकोअर्जनकरनष्टहोताहै सोहीफलकालान्तरमें क-र्ताभोगताहै सोअच्छानहीं है भोक्ताकेसम्बन्धसेपहिलेफलअसिद्धहै जिसकालमेंआत्मासुखादिभोगताहै उसीकोलोकमेंफलकहितेहैं सुखादिआत्मासेअसम्बद्धफललौकिकनहीं जानतेहैं म-तहोकर्मकेपीछेफलकाजन्मकर्मकेकार्यअपूर्वसेफलजन्मेगा सो-भीनहीं अपूर्वअचेतनकाठडीमसमचेतनसेअप्रवर्तितकीप्रवृत्तिअयुक्तहै अपूर्वहै इसमेंप्रमाणनहींहै चिरभावीफलअपूर्वकेविनाक्षणिककर्मसेनहींहोगा इससेअपूर्वमानाहै इसअर्थापत्ति प्रमाणसेअपूर्वहै सोनहींहै ईश्वरफलदातासिद्धहै इससेअर्थापत्तिक्षीणहै कर्त्ता जोस्वतन्त्रसुखदु.खदेताहैतोविषमहैजोकर्मानुसारदेताहै तोकर्माधीनहै कारयिता जोकर्मकाहेतुहै तोभीवुही स्व-तन्त्रकर्मकरवानेवालाठहिरा फिरउसीकाफलदाताठहिरा इ-ससेस्वतन्त्रपक्षकादोषनहींगया जो जीवस्वतन्त्रकर्मकर्त्ताउनकाफलवुहदेताहै तोभीपरकर्माधीनसेपराधीनहै फलदेनेमें अनादिकर्मोंकाफलदेताहै जैसा ढकीआगकोउघारकेकामसेमनुष्यलाताहै तैसाहीईश्वरअनादिकर्मफलकादाताहै हांठीकहै तोभीपकड़ागया मिमियातेबकरेकासागना क्युंकि स्वाधीन परा-

धीनदोषनछुटनेसे इससेदोनोपचऐसेहैं जैसे छेरीकेगलेकीदो नोचुचीहैं दूधमूतसेरहित ॥

श्रुतत्वाच्च ३९

हमकेवलयुक्तिसेफलहेतुईश्वरकोनहींकल्पतेहैं किन्तु सुन्नेसेईश्वरकोफलहेतुमानते हैं सवाएषमहानजआत्मान्नादोवसुदानइत्यादि ॥

धर्मंजैमिनिरतएव ४०

जैमिनिधर्मकोफलदातामानताहै अतएव श्रुतिसेयुक्ति से स्वर्गकामोयजेतेत्यादि इससेयागहोस्वर्गकाजनकसुनाहै अन्यथाबिनाअनुष्ठाताकायागहो औरअनुष्ठाताबिनाउपदेशव्यर्थहो अन्वच्चणविनाशीकर्मसे फलयुक्तनहींहै यहपचछोड़ा है अपूर्वकोबिनाजन्माकेबिनाशीकर्मकालांतरमेफलदेनेकोशक्तनहीं है इससेकर्मयाकर्मकीसूक्ष्मउत्तरअवस्थाफलकीपूर्वावस्थाअपूर्वत कतेहैं इससेफलसिद्धहैनकिईश्वरफलदाताहैएकरसकारणसेव हुरसकार्यासिद्धिसेवैषम्यनैघृंण्यसेअनुष्ठानव्यर्थहोनेसेधर्म फलदाताहै जैसे हाथकासंस्कारवेष्टनहायकर्मसे है तैसे कर्मापूर्वसेफलहै फिरईश्वरकाकुछकामनहीं ॥

पूर्वंतुवादरायणोहेतुव्यपदेशात् ४१

पूर्वोक्तईश्वरकोफलहेतुबादरायणमानताहै केवल कर्मसेयाकेवलअपूर्वसेफलहै इसपचकावारकतुशब्दहै कर्मापेक्षासेयाअपूर्वापेक्षासेजैसाहै तैसा रहो परन्तुफलसापेक्षईश्वरसेहै यहसिद्धान्तहै कैसे हेतुव्यपदेशात् धर्माधर्मकाकारयिताईश्वरहेतुकहाहै औरफलकादाताईश्वरहेतुहै ध्यानोपासनादिसेतुष्टहोके राजवत्सेवानुसारपापपुञ्जकोचयकर्त्ताऔर अपनाधामादिदेता

है इस्से कर्मकेमिषसेआपहीफलदाताहै इस अधिकरणकाता-
त्पर्यहै किअग्निहोत्रादिहयमेधांतकर्मोंकोछोड़ईश्वरहीध्येय है
आज्ञाकेछोड़नेसेदण्डकेडरसेयथेष्टाचरणकी निवृत्ति समुझलो
श्रुति एषह्येवसाधुकर्मकारयतितंयमेभ्यो लोकेभ्यउन्निनीषतेए
षउएवासाधुकर्मकारयतितंयमधोनिनीषतइति यहीश्रुतिधर्मा-
धर्मकेफलोंकादाताऔरउनकाकारयिताईश्वरकोहीकहतीहै
इस्से युक्तिकोइष्टनहींहैकिधर्माधर्मव्यर्थहैं औरइष्टसम्पत्तिचन्दन
कण्टकादिसेसुखदुःखहोतेहैं ऐसेचारअधिकरणसेतत्पदार्थवि-
चारहै प्रथमसेब्रह्मनीरूपदूसरेमेंनिषेधकाविषयब्रह्मनहींतीसरे
मेंअद्वितीयब्रह्म चौथेमेंकर्मफलदाताव्यवहारदशामेंहै शाखाग्र
चन्द्रन्यायसेब्रह्मकाबोधकरायाहै जोकुछचिन्हकहेसो सब ब्रह्म-
मेंउपलक्षणहैं जैसे कोईकिसीसेकहेकिवुहघरमेराहै जिसपर-
कौवाबैठाहै तोवहकौवाउड़जानेसेघरकीपहिचानकाउपलक्ष-
णथा नकिस्वरूपलक्षणयाविशेषणथा तैसेहीसबब्रह्मकेचिन्हउप
लक्षणसमुझरहो इसपादमेंतत्त्वन्दोपदार्थविवेकसेसिद्धहुयेहैं॥
इतिश्रीयुक्ताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येतृतीया
ध्यायस्यद्वितीयःपादःपूर्णः ॥

गुणोपसंहारतीसरापाद ३

सर्ववेदान्तप्रत्ययाधिकरण ॥ १ ॥

सर्ववेदान्तप्रत्ययञ्चोदनाद्यविशेषात् १

सर्वैर्वेदांतैःप्रतीयन्तइतिसर्ववेदांतप्रत्ययंतेनविहितंइत्यर्थः ॥

कहिचुकेज्ञेयईश्वरकातत्व अवप्रतिवेदांतमेंविज्ञानभेद है
यानहींहै यहविचारताहूं ननुविज्ञानैकरसनिर्द्धारितमें कैसेवि

ज्ञानभेदाभेदचिन्ताउठीहैनहींवहुवहुरूपकर्मसाब्रह्मभीप्रतिपि
पादयिषितकहिसक्तेहोएकरूपसे नकिएकरूपमेअनेकरूपविज्ञा
नसम्भवहै नहींअन्यथाअर्थअन्यथाज्ञानअभ्रांतहै फिरजोएक मे
वहुतविज्ञानवेदान्तमेइष्टहै तोएकअभ्रांतहोअन्यभ्रांत हो इस-
से अविश्वास हो वेदांत मे तिस्से प्रतिवेदांत मे ब्रह्मविज्ञान
भेदशक्यशङ्काहैनहीं है चोदनाद्यविशेषात् अचोदनारूपब्रह्म
विज्ञानकाअभेदनहींहै चोदनादिके अभेदसे ज्ञानका अभेदहै
यह किसीका मतहै फिर नवेद्यभेद न धर्म भेद नचोदनाभेद
तो कैसे भेदाभेदचिन्ताका अवसर है सुनो सगुणब्रह्मविषय
और प्राणादिविषयके विज्ञानभेदाभेदचिन्ता है कर्मवत्उपा
सना दृष्टफलार्थ अदृष्टफलार्थ क्रममुक्तिफलार्थ हैं इससे इनसे
चिन्ताहै क्याप्रतिवेदांतमेविज्ञानभेदहै यानहींहै नामरूपधर्म
विशेषपुनरुक्तिनिन्दा अ*शक्ति ?समाप्तिवचनप्रायश्चितान्यार्थद
र्शनाच्छाखांतरेकर्मभेदःस्यादिति यहजैमिनिसूचनामादिसे भे
दकहिताहैअथैषज्योतिरित्यादिमेनामभेदहैवेदांतांतरमेअन्य२

* सवशाखाकर्मकरनेजाननेकोशक्यनहींहै ॥

? किसीशाखाककिसीकीर्ममेपूर्तिहै नकिएकरूपहै ॥

नामहैं जैसे तैत्तिरीयकं वाजसनेयक२ कौथुमक शाट्यायन-
कआदि औररूपभेदसेकर्मभेदहै जैसे तप्तदूधमेदधिडाले सेदो
भागहोतेहैं गाढ़ाआमिक्षाविश्वेदेवार्थहै द्रववाजीवाजिदेवार्थ
है पञ्चाग्निविद्यामेवाजीछहअग्निकहतेछन्दोगपांचकहितेहैं प्रा
णसम्वादादिमेरेतकोछाड़वागादिछांदोग्यमेऔर रेतःसहितवा
जियोंनेप्राणविद्याभेदपढ़ाहैकारीरिकेपढ़नेमेतैत्तिरीयकधरती
मेभोजनधरकेखातेहैंनकिअन्यकोईअग्निकेपढ़नेमेउपाध्यायार्थ
पानीभरतेहैं नकिअन्य अश्वमेधकेपढ़नेमेघोड़ेकोघासकीलख

वानाकिसीकाधर्महै नकिसबकायहांभीआथर्वणिकोंकाधर्मशि
रोव्रतहै मूड़परअङ्गारभरकेपात्रधरनाशिरोव्रतहै तिससेप्रतिवे
दांतमेविज्ञानभेदहै सोनहीं सर्ववेदांतप्रत्ययं विज्ञान तिसरवे-
दांतमेसोहीसोहीहोनेयोग्यहै कैसे चोदनाद्यविशेषात् आदिश
ब्दसेशाखांतराधिकरणकेसिद्धांतसूत्रकेकहेअभेदहैतुलेना सूत्र
एकंवासंयोगरूपचोदनाख्याविशेषादिति जैसे एकधातुके अर्थ-
होममेयत्नैक्यवत्उपास्तियत्नैक्यहै ऐसेहीज्येष्ठश्रेष्ठवेदनमेवाजि-
छन्दोगोंकीचोदना प्रयोजनसंयोगसमानहै ज्येष्ठश्चश्रेष्ठश्चस्वानां
भवतीति जैसे द्रव्यदेवयागकारूपहैं ऐसाहीविज्ञेयरूपविज्ञान-
काहै समाख्यायौगिकशब्दप्राणविद्याहै तिससेसर्ववेदांत प्रत्यय
विज्ञानहै ऐसेपञ्चाग्निविद्यावैश्वानरविद्याशांडिल्यविद्यादिमे
जोड़लो भेदकेहेत्वाभासनामादिप्रथमकांडमेनिरासकियेहैंना
नाम्नातंस्यादचोदनाभिधानत्वादित्यादिसे ॥

भेदान्नेतिचेन्नैकस्यामपि २

वाजसनेयीछहऔरछन्दोग्यपांचअग्नियुढ़तेहैं जिसमेजोगु
णहै याजिसमेगुणनहींहै वेदोएकविद्यानहींहोसक्ती हैं पञ्च सं-
ख्याविरोधसेगुणोपसंहारशक्यनहींहै प्राणसम्बादमेश्रेष्ठसेअन्य
चारप्राणवाक्नेत्रकानमनछन्दोगगातेहैं वाजीपचमापढ़तेहैं रे
तोवैप्रजापतिरित्यादि कहीं कुछसंख्याडालीकहींकुछनिकारीइ
सभेदसे वेद्यभेदहैदूसरे विद्याभेदहैद्रव्यदेवताभेदादिवत् यागका
भेदहै यह दोषनहींहै जिससेएकविद्यामेगुणभेदयुक्तहै जोछठी
अग्निकालेनायुक्तनहींहैं तोभीद्युआदिपांचअग्निदोनोठौर प्रत्य
भिज्ञायमान्होनेसेविद्याभेदयोग्यनहींहै नहींषोडशीकेग्रहणग्र
ग्रहणसेअतिरात्रभिन्नहैपञ्चाग्निमेनित्यानुवादहै जोउपासनार्थ
वादहै सगुणछन्दोगलेसक्तेहैंपञ्चसंख्यासांपादिकाग्निकेअभिप्रा

यसे हैसोनित्यानुवादहैनकिबिधिसमवायिनीइससे दोषनहींहै
ऐसे प्राणसम्बादमेअधिकगुणरेतकालेनावाजिसे बिरुद्धनहींहैछ
न्दोगोंकोथोराडारनेनिकारनेसे वेद्यभेद और विद्या।भेदशङ्कान
हींहैकिसो वेद्यांशकेआवापोहापमेबड़ी वेद्यराशिकेअभेदबोधसे
तिसो एकविद्याहै ॥

स्वाध्यायस्यतथात्वेनहिसमाचारेधि-
कारात्सववच्चतन्नियमः ३

शिरोव्रतभेदसे विद्याभेदनहींहै शिरोव्रतादिआथर्वणिकों को
पढ़नेकेधर्महैंनविद्याकेकैसेयहजानातथात्वेनहिजिससेपाठकेध
र्मोंसेसमाचारेआथर्वणिकवेदव्रतोपदेशग्रन्थमेशिरोव्रतभीवेद व्रत
मेव्याख्यातकहितेहैं नैतदचीर्णव्रतोधीतइति अधिकृतवाचीएत-
च्छब्दसे औरअध्ययनशब्दसेमुण्डकादिअथर्वउपनिषत् पढ़नेका-
धर्महै ननुएतामित्यादि इनसे ब्रह्मविद्याकासंयोगसुननेसे सर्व
त्रब्रह्मविद्याएकहै तिससे शिरोव्रतधर्मकासङ्कर हो सोनहीं एत
च्छब्दप्रकृतब्रह्मविद्यासे ग्रन्थविशेषापेक्ष है तिससे ग्रन्थविशेषसं
योगीशिरोव्रतधर्महै सववच्चतन्नियमः तिसशिरोव्रतका मुण्डक
केपढ़नेमेनियमहै सव होम जैसे सातसौर्यादिसौओदनतकवे
दांतरोंमेपढ़े त्रेताग्निकेअसम्बन्धसे औरआथर्वणोदितएकअग्नि
केसम्बन्धसे आथर्वणोंकानियतहैं तैसे स्वाध्यायकेसम्बन्धसे आ-
थर्वणोंकोशिरोव्रतकानियमहै तिससे विद्यैक्यहै एकोग्निरेक-
र्षिसंज्ञयाप्रसिद्धः ॥

दर्शयतिच ४

सर्ववेदायत्पदमामनन्तीत्यादि तथैतंह्येववहृचामहत्युक्थे-
मीमांसतएतमग्नावध्वर्यवएतम्महाव्रते छन्दोगाइति चवेदसबवे

दान्तोंमेएकविद्यादिखाताहै एकवेद्यकेउपदेशसे तिससे उक्था दिविद्याएकहै ब्रह्मविद्यावत् कौथुमकाठकादिशाखाद्योंकाना ममेदवैदिकनहींहै किन्तुऋषियोंनेथोरे२वेदमेअभ्यासकरअपने अपनेनामसेशाखाप्रसिद्धकीहैं ॥

गुणोपसंहाराधिकरण ॥ २ ॥

उपसंहारोर्थाभेदाद्विधिशेषवत्समानेच ५

जोस्वशाखाकेगुणोंसे दृष्टिसिद्धिहोजावेतोपरशाखाकेगुणों कालेनानिष्फलहै सोनहींकर्मबहुतसेफलबहुतहोताहै इसयु क्तिसे जैसे स्वशाखाकेगुणउपकारीहैं तैसे परशाखाके भी गु- णोपकारीहैं तिससे गुणोपसंहारकर्त्तव्यहै ॥

अन्यत्रकहेसववित्रानोकाऔरविज्ञानगुणों का अन्यत्र स- मानेअर्थात्समानविज्ञानमे उपसंहार: भवति लेनाचाहिये कै से अर्थाभेदात् जोगुणोकाएकत्रअर्थविशिष्टविज्ञानोपकारहैसो हीअन्यत्रऔरउभयत्रहै वुहएकविज्ञानहै तिससेलेना विधिशे- षवत् जैसे विधिशेषअग्निहोत्रादिधर्मोंकाएकअग्निहोत्रादिक- र्मसर्वत्रार्थाभेदसेलियाहै ऐसेयहांभी यदि विज्ञानभेदहो तदा- विज्ञानांतरसेवद्धगुणोंका प्रकृतिविकृतिभावकेनहोनेसेलेनान- हो औरविज्ञानैक्यमेगुणोंकालेनायुक्तहै इसीप्रयोजनसेसूत्रका प्रपञ्चसर्वाभेदादिति यहांसेलेकेहोगा ॥

उपसंहारवाधाधिकरण ॥ ३ ॥

अन्यथात्वंशब्दादितिचेन्नाविशेषात् ६

वाजसनेयकमे तेहदेवाइत्यादि देवासुरयुद्धकेप्रक्रममे देव- सात्विकवृत्तिऔरअसुर राजसतामसवृत्तिप्राण मिथो कहिते थे किउद्गीथउद्गात्रकर्मसेरजतमरूपअसुरोंकोजीतदेवहुयेहैं ऐसेअ सुरप्राणकोनिन्दाकरमुख्यस्थकाग्रहण किया है अथहेममासन्य-

मित्यादि ऐसीगाथाछांदोग्यमेहै तद्धदेवाउद्गीथमित्यादि मुखस्थ
कीग्रहणमेअथहयएवायंमुख्यःप्राणइत्यादि इनदोनोंमे प्राण प्रशं-
सासेप्राणविद्याविधिअध्यवसितहै इसमेसंशयहैकिक्याविद्याभेद
हैयाविद्यैक्यहैपूर्वन्यायसेविद्यैक्यहैनकिसोयुक्तहै प्रक्रमभेदसेत्वं-
नउद्गायेति अर्थ वाजसनेयीउद्गीथकर्त्ताप्राणकोकहितेहैं उद्गीथ
त्वेनतमुद्गीथमित्यादि अर्थ छन्दोगउद्गीथांगओंकोप्राणदृष्टिसेउ
पासतेहैं सोकर्महै फिरकैसेकर्मकर्त्ताकेभेदसेविद्यैक्य होगी न-
सोमतकहो अविशेषात् इसविशेषसेविद्यैक्यनिवृत्तिनहीं है अ-
विशेषबहुतसे जैसे देवासुरयुद्ध असुरात्यय उद्गीथकथा वागा-
दिस्तवउनकोनिन्दासेमुख्यप्राणकाग्रहणप्राणवीर्यसेअसुरक्षयअ
श्मलोष्टनिदर्शनसेऐसेबहुतअर्थउभयत्रअविशिष्टज्ञातहैं जैसे वा
जसनेयिकमेप्राणउद्गीथकर्त्ताहै तैसे छांदोग्यमे भी लक्षणासेउ
द्गीथकर्त्ताहै तिससे विद्यैक्यहै ॥

नवाप्रकरणभेदात्परोवरीयस्त्वादिवत् ७

जोतुमनेविद्यैक्यकहाथा सोन्याय्यनहीं है कैसे प्रकरणात्
प्रक्रमकेभेदसे जैसे ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीतेति इसमेउ-
द्गीथांगओंउपास्यकहाहै औररसतमादिगुणकहेहैं यदिउद्गीथश
ब्दसेसकलभक्तिइष्टहै उसकाकर्त्ताउद्गाताहै तवतोक्रमकारोध
औरलक्षणाकाप्रसङ्गहो उपक्रमकेअनुरोधसेएकवाक्यमेउप संहा
रहो तिस्से उद्गीथांग ओंमेप्राणदृष्टिकहीहै वाजसनेयकमेउद्गी
थशब्दसेसकलभक्तिइष्टहै इसकाकर्त्ताउद्गाताहै प्राणसे कहा इ
ससेप्रस्थानांतरहै जैसे उद्गीथभावउपासनार्थहै तैसे उद्गातृभा
वहै इससेप्राणउद्गाताहै अभ्यु*दयवाक्यमेपशुकामवाक्यमेत्रेधा

* चन्द्राभ्युदय ॥

तन्दुलविभागसमानकहातोभीउपक्रमभेदसेअभ्युदयवाक्यमे दे-

वताकोअपनयदृष्टहै औरपशुकामवाक्यमेंयागविधिदृष्ट है तै यहांउपक्रमभेदसेविद्याभेदहै परोवरीयस्त्वादिवत् सएषपरोव-रीयानुद्गीथइत्यादि परोवरीयस्त्वगुणयुक्त उद्गीथोपासन भिन्न है नेत्रसूर्यगतहिरण्यश्मश्रुआदिगुणयुक्तउद्गीथोपासनासे एकशा-खाकागुणदूसरीमेंलेनागुणोपसंहारनहींहै जैसे एकशाखामेंगु णोपसंहारहै तैसे शाखान्तरस्थगुणकाउपसंहारहै उपासनामें

संज्ञातश्चेत्तदुक्तमस्तितुतदपि ८

उद्गीथविद्यायहएकसंज्ञाउभयत्रहै इस्से एकविद्यान्याय्य है सोनहींहै उपास्यभेदसे विद्याभेदश्रुत्यक्षरानुगतहै औरसंज्ञैक्य-श्रुत्यक्षरोंसेंवाह्यहै इससे दुर्बलहै लौकिकव्यवहारीउद्गीथमात्र-कोउपचारताहै अस्तितुपरोवरीयस्त्वादिउपासनोंकेभेदमेंउद्गी-थविद्यायहसंज्ञैक्यहै जिनका भेदप्रकटहै जैसे अग्निहोत्रदर्शा-दिऔरकाठकएकग्रन्थमेंपढ़े उनकीकाठकसंज्ञैक्यदेखते हैं तैसे उद्गीथमेंहोगीजहांकोईभेदहेतुनहींहै तहांसंज्ञैक्यसेविद्यैक्य हो जैसे सम्वर्गविद्यापञ्चाग्निविद्यासबशाखोंमेंएकहैसंज्ञैक्यसे ॥

तुमकोयदियहचोद्यहै किनामकेभेदसे विद्याकाभीअभेद है जैसा किप्राणविद्यायहसंज्ञाहै तदुक्तं सोहमनेनिराकृतकि याथा नवाप्रकरणभेदात् इससूत्रमें तदपि संज्ञाकीऐक्यभी प्र-सिद्धभेदोंमेंहैजैसेपरोवरीयस्त्वादिउद्गीथमेंऔर अग्निहोत्रदर्शपू र्णमासादिकाठकहैंअस्तितुअस्त्येव वेद्यभेदकेअनिवारणसेउद्गी थविद्याभिन्नहीहै ॥

उद्गीथाधिकरण ॥ ४ ॥

व्याप्तेश्चसमञ्जसं ९

ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीतेति अक्षरऔरउद्गीथकीसा-मानाधिकरण्यमेंअध्यासअपवादऐक्यविशेषणजेचारपक्ष हैं इन

मेंसे कौनसायुक्त है यहविचार है दोवस्तुकीबुद्धिमेंअनिवर्तितए-
कबुद्धिमेंअन्यबुद्धिअध्यस्यमान है जिसमें इतरबुद्धि अध्यस्यमान
अनुवर्तमान है उससेसोबुद्धिअध्यस्तेतरबुद्धिमेंयहअध्यास है जैसे
नाममेंब्रह्मबुद्धिअध्यस्यमानामेंअनुवर्तमान है नामबुद्धिनकिब्र-
ह्मबुद्धिसे निवर्तमान है जैसे प्रतिमादिमें विष्णूादिकीबुद्धिका
अध्यास है ऐसे ही अक्षरमें उद्गीथबुद्धियाउद्गीथमें अक्षरबुद्धि अ-
ध्यस्यमान है किसीवस्तुमेंपहिलेघुसीझूठीबुद्धि है उससे पीछे से
निश्चितसच्चीबुद्धिकाजन्मपहिलीबुद्धिकानिवर्तक है जैसे देहादि
मेंआत्मबुद्धि जैसे दिग्भ्रमदिग्यथार्थबुद्धिसे छुटता है ऐसे यहां
अक्षरबुद्धिसे उद्गीथबुद्धिऔरउद्गीथबुद्धिसे अक्षरबुद्धिनिवर्त्यमान-
है उद्गीथऔर अक्षरकावास्तवाभेदऐक्य है जैसे राजाभूपति स
र्ववेदमेंव्यापीओं अक्षरकीप्राप्तिऔद्गात्र विशेषक समर्पण है जैसे
जोनील है सोउत्पल है उसकोला ऐसायहां है किजोउद्गीथ हैसो
ओं है उसकीउपास्तिकर ऐसे चारकीप्राप्तिमें कहाकि व्याप्तेः च
शब्दतुशब्दाभिधिको है तीनपक्षकोनिवृत्यर्थ है सावद्यहोनेसे नि
रवद्यविशेषणपक्षलेते हैं अध्यासमेंजोबुद्धिइतरत्रआरोपित है सो
लक्षणा है उसकाफलकल्पत है सोनहींश्रुत है आपयिताहवैका
मानामिति यहमतकहोयहफलआप्त्यादिदृष्टिका है नकिउद्गीथ
केअध्यासकाफल है अपवादमेंभीफलनहीं है मिथ्याज्ञाननिवृ-
त्तिफलनहीं है पुमर्थायोगसे नकभीओंसे ओंबुद्धिनउद्गीथसे उ
द्गीथबुद्धिहटेगी नयहवाक्यवस्तुपर है किन्तुउपासनापर है नकि
ऐक्यपक्षयुक्त है निःप्रयोजनशब्ददोहोनेसे दृष्टार्थकोएकहीदेस-
का है नहीं तआध्वर्यवमेंअक्षरओंवाच्यमेंउद्गीथप्रसिद्ध है न कि-
सामकोसवदूसरीभक्तिउद्गीथमें ओंप्रसिद्ध है जिससे अनतिरिक्ता
र्थ हो फिरविशेषणपक्षवचा है व्याप्तेः सर्ववेद साधारण से सर्व

व्यापीअचरमतहोदूसे उद्गीथअचरकाविशेषणयाहै कैसे नामोंकै
थावयवकोंग्रहीतहै उद्गीथकाअङ्गलच्चणाहै हैलच्चणातोभीदूरपा
सकाभेदहै अध्यासमेअर्थान्तरबुद्धिअर्थान्तरमेंडालते हैं यह दूर
लच्चणाहै विशेषणपच्चमे अङ्गवाक्यसेअङ्गीसमर्पितहै इसमे लच्च
णाहै विशेषणपच्चमे अङ्गवाक्यसेअङ्गीसमर्पितहै इससेलच्चणा
पासहै पुंजमेप्रवृत्तशब्दएकदेशमेदेखेहैं जैसे पटग्रामादिमेंइस
व्याप्तहैतुसेओंइसअचरकाउद्गीथविशेषणसमञ्जसनिरवद्यहै ॥

वसिष्टत्वाद्युपसंहाराधिकरण ॥ ५ ॥

सर्वाभेदादन्यत्रेमे १०

वाजिछन्दोगप्राणसम्वादमेश्रेष्ठत्रगुणयुक्तप्राणउपास्य कहिते
हैं औरवागादिवसिष्टत्वादियुक्तकहतेहैं कौषीतकि आदि प्राण
सम्वादमेप्राणकोश्रेष्ठकहितेहैं नकि वसिष्टत्वादिगुणअहंश्रेयसद्‌
त्यादि इसमेसंशयहैकिइमेवसिष्टत्वादि गुणकहींकहैअन्यत्रला-
वेंगे यानहीं नलावेंगे कैसे यथोयएवम्विद्वानित्यादि इसमे एवं-
शब्दनेवेद्यवस्तुनिवेदनकीहै सोपासकीनकिशाखांतरकोसी न-
हींकहींकहै वसिष्टादिअन्यत्रपहुंचेंगेकैसेसर्वाभेदात्सर्वत्रएकप्रा
णविज्ञानप्रत्यभिज्ञातहै प्राणसम्वादादिसारूप्यसेविज्ञानकेअभे
दमेकैसेजेगुणकहींकहैकहींनपहुंचेंगे यद्यपि कौषीतकिकेएवंश
ब्दसेवागिगुणजातनहींकहेहैंअसन्निधिसे तथापिउसविज्ञानमे
वाजसनेयिकेएवंशब्दसे गुणजातकहाहै इससे नपरशाखाकाभ
भिन्नविज्ञानसे वह्नगुणजातखण्डाखाके गुणसे विशेषनहींहै नश्रु
तहानिअश्रुतकल्पनाहै एकशाखामेंश्रुतगुणसर्वत्रश्रुतहैं गुणीके
भेदकेअभावसे नकिमैत्रखदेशमेंशौर्यादिसे प्रसिद्धदेशांतरगत उ
सदेशियोंनेशौर्यादियुक्तनहींजानातोक्यावुहशौर्यादिसे हीन न-
हींहै जैसे देशांतरमेंप्रकटहोतेरमैत्रगुणप्रकटहोतेहैंऐसे अभियो

गसे शाखान्तरमेंउपास्यगुणशाखांतरमें उपासासे जावेंगेतिस्से एकप्रधानमेंसम्बद्धधर्मऔरएकत्रकहे सर्वत्रउपसंहर्तव्यहैं विरोधीमेंभीनिःश्रेयसऔरअभ्युदयकाहेतुजोधर्म होवे तोउसको अव श्यस्वीकारकरेऔरवर्तेयहअधिकरणकाखुलासाहै ॥

आनन्दाद्युपसंहाराधिकरण ॥ ६ ॥

आनन्दादयःप्रधानस्य ११

ब्रह्मस्वरूपप्रतिपादनपरवाक्योंमेंविज्ञानघनादिब्रह्मकेधर्मसुनतेहैंउनमेंसंशयहै किआनन्दादिब्रह्मधर्मजितेजहांसुनेतेतहांजाने यासबसर्वत्र फिर जैसे श्रुतिनेविभागकिया तैसाहीधर्मबोधप्राप्त है इस्से कहा कि आनन्दादयः प्रधानस्य अर्थब्रह्मकेधर्मसबसर्वत्रजाननयोग्यहैं किस्से सर्वत्रएकमुख्यविशेष्यअभिन्नब्रह्महै तिस्से सार्वत्रिकब्रह्मधर्महैं पूर्वाधिकरणोदितमैत्रकेशौर्यादिनिदर्शनसे ॥

प्रियशिरस्त्वाद्यप्राप्तिरुपचयापचयौहिभेदे १२

तैत्तिरीयकमेंप्रियादिधर्मपढ़ेहैं उसकासर्वत्रसङ्करहो इसकाउत्तरहै किप्रियशिरस्त्वाद्य उनकी यहांप्राप्तिनहींहै जिसकारणसे प्रियमोदप्रमोदआनन्दजेमिथोपेक्षासे औरभोक्तृन्तरकीअपेक्षासे उपचितअपचितरूपशब्दहैं औरभेदमें उपचयापचयहोतेहैं ब्रह्मनिर्भेदहै नप्रियादिब्रह्मधर्महैं कोशधर्म हैं ब्रह्मचिन्तावतारोपायमात्रसेकल्पितहैं नकिद्रष्टव्यहैंइस्से उनकीअन्यत्राप्राप्तिहै व्यासनेकृत्वाचिन्तामात्रजोधर्मकहेहैं औरसो न्यायअन्यउपासनोंमेंहैं संयत्वामत्वादिसत्यकामादिमेंहै जैसे दोनारीएकनृपकोउपासनाकरतीहैं एकछत्रसेदूसरीचामरसे इ-

समेउपास्यएकहै तोभीउपासनभेदसे धर्मव्यवस्थाहै ऐसे यहां भीहै किसगुणमेंउपचयापचयहोसक्तेहैं नकिनिर्गुणमें इससे नकहींपढ़े सत्यकामादिसर्वत्रप्राप्तहोसक्तेहैं ॥

इतरेत्वर्थसामान्यात् १३

तुशब्दउपसंहार्थसंग्रहार्थहै इतरे आनन्दादिएकशाखासे दूसरीशाखामेंलानेयोग्यहैं यहकैसे हैं अर्थसामान्यात् प्रतिपाद्यब्रह्मएकरूपहोनेसे यातिस२ प्रकारकभ्रमसंशयादिकोंनिवृत्ति रूपअर्थएकहोनेसे भावार्थ आनन्दोब्रह्मसत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मेति इस्से आनन्दकेसत्यादितैतिरीयकब्रह्मविद्यामेंपढ़े हैं औरप्रज्ञानंब्रह्मेति इसऐतिरेयकथित परब्रह्मविद्यामें नलेना चाहियें जैसे वामनीआदिगुणउपकोसलविद्यामेंपढ़े हैं औरसत्य कामादिहरविद्यामेंपढ़े हैं इनमें जैसे मिथोगुणोंकालेनादेनानहीं है ऐसाहीआनन्दादिमें भीजानो सोनहींविषमदृष्टांतहोनेसे वामनीआदिध्येयहैं तिससे जैसे पढ़े तैसे रहो आनन्दादिप्रतिपत्तिफलार्थहैं तिस्से व्यवस्थापकविधिकेअभावमें प्रतिपत्तिफल सर्वत्रसमानहैं तिस्से आनन्दादिसर्वत्रउपसंहर्तव्यहैं ॥

सर्वान्तरपुरुषाधिकरण ॥ ७ ॥

आध्यानायप्रयोजनाभावात् १४

कठवल्लीमें पढ़ाहै किइन्द्रियेभ्य: यहांसे सापरागति: यहां तक इसमेंसंशयहै किजेसेअर्थादिपर२प्रतिपाद्यहैं इनसबका पर२प्रतिपादनहै जिससेसुनाहै किइन्द्रियोंसे अर्थादि आगे२ कोपरहैं ननुबहुतअर्थपरकहिनेमेंवाक्यभेदनहींहै बहुतवाक्योंसे तिससेइनमेंप्रत्येकपरप्रतिपाद्यहै सोनहींहै पुरुषइनसेपरप्रतिपाद्यहै नकिसब कैसे प्रयोजनाभावात् इतरपरप्रतिपन्न में कुछप्रयोजननहींदेखतेसुनतेहैं औरपुरुषइन्द्रियव्रातसे कुटेमेंमो

क्षसिद्धिप्रयोजन है निचाय्यतंमृत्युमुखात्प्रमुच्यतइत्यादि काष्ठा-शब्दसेऔर परप्रतिषेधसे पुरुषका आदरदिखायाहै पूर्वापरप्रवाहपुरुषप्रतिपत्यर्थकहाहै आध्यानायआध्यानपूर्वकसम्यग्दर्शनार्थहै नकिआध्यानस्वप्रधानहै ॥

आत्मशब्दाच्च १५

गुढ़ोत्मानप्रकाशतइत्यादि इसमेंप्रकृतपुरुषआत्माकहाहै इससे इतरइन्द्रियादिअनात्माहैं तद्विज्ञानायैवचयच्छेद्वाङ्मनसी-प्राज्ञइससे पुरुषमें अतिशयहै नकिअन्यमें औरविष्णुकेपरमपदकोचाहमेंइन्द्रियादिकेंअनुक्रमसेपरमपदप्राप्त्यर्थयहश्रमहै सोऽध्वन:पारमित्यादि ॥

आत्माधिकरण ॥ ८ ॥

आत्मगृहीतिरितरवदुत्तरात् १६

ऐतरेयकमेंसुना है किआत्मावाइदमेकएवाग्रआसीन्नान्य-त्किंचनमिषत्सईक्षतलोकान्नुसृजाइति सइमान्लोकानसृजतांभोमरीचीर्मरमापइत्यादि अर्थ मिषत्चलत् अम्भ: स्वर्ग: मरीचयो अन्तरिक्षं मर: मर्त्यलोक: आप: पाताल: इसमेंसंशयहै किक्याआत्मापरहै यासूत्रात्माहै फिरपरनहींहै वाक्यान्वयदेखनेसे ननुपरमेंवाक्यान्वयहै जन्मकेपूर्वआत्मैक्यकेअवधारणसेऔर ईक्षणपूर्वसृष्टिबाक्यसे यहनहींकहिताहूं कैसे लोकसृष्टिवाक्य-सेजोपरसृष्टाहैतोआदिमेंमहाभूतसृष्टिकहिनीथी कहींसोनलोकसृष्टिआदिमेंकहीहै लोकमहाभूतोंकीरचनाहैं अम्भआदिलोकहैं अदोंभ:परेणदिवमित्यादि लोकसृष्टिपराधिष्ठितासन्य ई-श्वरनेकरीहै यहश्रुतिस्मृतिसेलब्ध है आत्मैवेदमग्रआसीत्पुरुष-विधइत्यादि सवैशरीरीप्रथमइत्यादि अथातोरेतस:सृष्टि:प्रजा-पतेरेतोदेवाइत्यादि ऐतरेयि इसप्रकरणमेंप्रजापतिकीविचित्र-

सृष्टिकहितेहैं आत्मशब्दउसमे है आत्मैवेदमग्रआसीतपुरुषवि-
धः इसमेऐक्यावधारणभीजन्मकेपूर्वअपनीविकारकीअपेक्षासेहै
प्रजापतिचेतनहै तिससेईक्षणायुक्तहै अपिच ताभ्योगामानयत्
ताभ्योश्वमानयत्ताभ्यःपुरुषमानयत्ताअब्रुवन् प्रजागोश्वसेतृप्त
नहुई तोमनुष्यकोपायकेतृप्तहुईहैंइसव्यवहारसेप्रजापतिसृष्टाहै
तिस्से विशेषवान्कोईयहांआत्माहैसोनहीं परहीआत्मा गृहीत
है इतरवत् जैसेअन्यसृष्टिबाक्यमे आत्माशब्दसे परगृहीतहै त
स्माद्वाएतस्मादात्मन इत्यादि जहां विशेषणांतरहोतहांविशेषव
त्आत्माकाग्रहण हो यहां परानुगुणविशेषणआगेहै उत्तरात्स
ईक्षतइत्यादि तिस्से परन्याय्यहै ॥

दूसरावर्णन

अन्वयादितिचेत्स्यादवधारणात् १७

वाक्यान्वयसेपरात्माकाग्रहणनहींकहाथा सोनिरसनीयहै
अन्नस्यादवधारणादितिहोयुक्तपरकाग्रहणकैसे अवधारणात् ज
न्मकेपूर्वआत्मैक्यनिश्चितहोनेसे यहनिर्दोषहै लोकसृष्टिवाक्यश्रु
त्यन्तरमेप्रसिद्धमहाभूतसृष्टिकेपीछेयोज्यहै औरजोगोखानादि है
सोभीविवक्षितार्थकेअनुसारलेनाचाहिये सब कथा विवक्षित है
सोनहींकहसक्तेहो कथासच्चीमानेमेपुमर्थसिद्धिनहींहै तिस्से आ
त्मगृहीतिनिर्बाधहै अन्ययोजना आत्मगृहीतिरितरवदुत्तरात्
वाजसनेयकमेहै किकतमआत्मेत्यादि इससेअमृतनिर्धारितहै
छान्दोग्यमेंसआत्मातत्वमसीति इससे तादात्म्यकहाहैइसमेसं
शयहैकिदोनोवाक्यतुल्यार्थहैंयाअतुल्यार्थहैंअतुल्यपाठसे पाठ
कीवैषम्यमेअर्थकीसाम्यनहींहै अर्थपाठतन्त्रहै वाजोमेआत्मश-
ब्दकेउपक्रमसेआत्मतत्वागृहीतहै छान्दोग्यमेउपक्रमकेविपर्यय
सेउपदेशविपर्ययहै उपक्रमाधीनउपसंहार मे तादात्म्य चाहिये

सोनहींहै यहमत कहो आत्मगृहीत सदेवेति इसमें छन्दोगो
कोयोग्यहै इतरवत् जैसे कतमआत्मेति इसमेवाजियोंकी आ-
त्मगृहीतिहै तैसे छन्दोगोंकोहै कैसे उत्तरात् तादात्म्योपदेश
से उपक्रमकाकहिनायुक्तनहींहै नपाठ विषम से अर्थ विषम-
होताहै लोटालायालालोटायहांअर्थसाम्यमेंपाठविषमहैतिससे
ऐसेवाक्यमेंउक्तिभेदसेभीप्रतिपाद्यार्थाभेदहै यहसिद्धहै ॥

प्राणविद्याधिकरण ॥ ९ ॥

कार्याख्यानादपूर्वं १८

छन्दोगवाजसनेयिसेप्रकटहै किप्राणनेवागादिसेपूछाकि
मेराअन्नक्याहै उन्नेउत्तरदिया किकुत्ताकृमिकीटादि तक का-
खायापिया तुम्हाराअन्नहै औरपियावस्त्रके ठिकाने हैं फिर-
छन्दोगभेदपढ़ते हैं तस्माद्वाएतद्विशिष्यन्तइत्यादि तद्विद्वांसः इ-
ससेवाजसनेयिअन्नअनग्नमानतेहैं इनमेंखानेकेआगेपीछे जल-
पानविधानहै सोआचमनअनग्नताचिन्तनप्राणकाप्रतीतहै सो
क्यादोनोविहितहैं याआचमनयाअनग्नताचिन्तनयहविचार है
दोनोविध्यर्हहैंअपूर्वसे या आचमनकाविधान है स्पष्टविधिवि
भक्तिसे तस्मादेवम्विद्विशिष्यन्नाचामेदशित्वाचाचामेदिति इसी
विधिकास्तावकअनग्नताकीर्तन है सोनहीं आचमन विधेयन-
हींहै कैसे कार्याख्यानात् आचमनस्मृतिसे शुध्यर्थप्राप्तथा उसी
काश्रुतिनेअन्वाख्यानकराहै नयहश्रुतिउसस्मृतिकामूलहै विष
यभेदसे सामान्यविषयकस्मृतिशुध्यर्थपुरुषमात्रमें सम्बद्ध आच-
मनकीप्रापिकाहै श्रुतिप्राणविद्याकेप्रकरणमें पढ़ीप्राणविषयक
आचमनविधानकर्तीहै फिरकैसे मानसकेहो भिन्नविषयकश्रु-
तिस्मृतिकामूलमूलिभावअशितवतोंकोउभयत्रआचमनकाअनु
वादकरप्राणकाअनग्नताकरणसङ्कल्पवाक्यसे आचमनीय जल-

में प्राणविद्यासम्बन्धित्वसे अपूर्वकहा है शुध्यर्थ और परिधानार्थ जलको वस्त्रकल्पनक्रियांतरप्राणका है यह अनवद्य है यदिः श्वाश्वभ्यः यहांसे तत्तेन्नं यहांतक जोश्रुत्यादिसवप्राणकाअन्नकहा है सोसवखाद्यनहींकहिसक्तेहो अशब्दसे और अशक्य से सवप्राणकाअन्न है ऐसीअन्नदृष्टिकही है इसीकेसङ्गसे जलका आचमन नहींकहा है किन्तु जलमेपरिधानदृष्टिकही है यहीयुक्त है नाकि अर्द्धवैशससम्भव है आचमनविधिस्थितनहीं है इसमेकाण्वकाअपठनलिङ्ग है एतमेवतदन्नमनग्नङ्कुर्वन्तोमन्यन्तइति माध्यन्दिनों केपाठमेआचमनकेअनुवादसे एवम्वित् शब्दसेप्रकृतप्राणवस्त्रविहित है किसीमतमे पाठवलसेमाध्यन्दिनमे आचमन विधि और काण्वमे ध्यानविधि है सोमाधुनहीं है आपोवासः यहसर्वत्र एकरूपहोनेसे तिस्मे वस्त्रविज्ञान विधान है न कि आचमन यह युक्त है यहश्रुतिवर्णाश्रमकेप्रकरणमेनपढ़नेसेभिन्नविषयक है फिर इसस्मृतिकामूलअन्यश्रुतिअनुमेय है तिस्मे अनग्नबुद्धिही प्राणोपासककेलियेविधेय है स्मृतिप्राप्ताचमनसे ॥

शांडिल्यविद्याधिकरण ॥ १० ॥

समानएवञ्चाभेदात् १९

समाने एकहीवाजसनेयिशाखामे काण्वकेअग्निरहस्यब्राह्मणमे शांडिल्यनामांकितविद्याविज्ञात है उसकेबीच पढ़ा है जैसा सआत्मानमुपासीतमनोमयंप्राणशरीरमित्यादि और उसी शाखाकेबृहदारण्यमे फिरपढ़ा है जैसे मनोमयंपुरुषोभाःसत्य इत्यादि इसमे संशय है कि क्याअग्निरहस्यबृहदारण्यकी एकविद्या है औरगुणोपसंहार है यादोविद्या हैं और गुणानुपसंहार है विद्याभेदऔरगुणाव्यवस्थाप्राप्त है कैसे पुनरुक्तिसे एकशाखामे अध्येतावेदिताकेभेदाभावसे अशक्यपरिहारमेपुनरुक्तिसे

दूरदेशस्थएकविद्याहै एकपाठविद्याविधानार्थहै अन्यगुणविधानार्थहै यहविभागसम्भवनहींहै न्यूनाधिकगुणअन्यत्रपढ़े होतेनकिसमानऔरपढ़े तोदोनोंमेंसमान हैं मनोमयादि तिसमें अन्योन्यगुणोपसंहारनहींहै सोमतकहो जैसे भिन्नशाखामें विद्यैक्यऔरगुणोपसंहारहै ऐसे एकशाखामें योग्यहै उपास्यकेअभेदसे अभिन्नमनोमयादिगुणीब्रह्मदोनोंमें है विद्या का उपास्यरूपहै रूपाभेदमें विद्याभेदशक्यनहींहै नकिविद्याके अभेदमें गुणव्यवस्थाहै अर्थविभागसेपुनरुक्तिनहींहै एकपाठ विद्याविधानार्थहै अन्यगुणविधानार्थहै इससेसबयुक्तहै समानगुणपढ़नेसे दूरदेशमें शांडिल्यविद्याकोप्रत्यभिज्ञाकरउसमेंईशानादिकहेहैं अन्यथाकैसे उसमें गुणविधिहै याअप्राप्तांशकाउपदेशऔरप्राप्तांशकाअनुवादसे प्रत्यभिज्ञाकीउपेक्षानहींकहिसक्तेहो तिससे समानशाखामें विद्यैक्यऔरगुणोपसंहारयुक्तहै ॥

नामव्यवस्थाधिकरण ॥ ११ ॥

सम्बन्धादेवमन्यत्रापि २०

बृहदारन्यकमें सूर्यमण्डलमें औरदहिनेनेत्रमें जो पुरुष है उस सत्यब्रह्मका अधिदैवत अध्यात्मस्थानकह फिरव्याहृतिशरीरसम्पादनकरदोउपनिषत्रहस्यदेवताकेनामकहेहैं तस्योपनिषदहरित्यधिदैवतन्तस्योपनिषदहमित्यध्यात्मं इसमें संशयहै कि क्यादोनोउपनिषत् अविभागसेदोनोंठौरमें अनुसन्धानार्ह हैं या विभागसे एकअधिदैवएकाध्यात्महै जैसे अविभागसेपढ़ीशांडिल्यविद्यामेंगुणलिनाकहाथा ऐसाअन्यत्रभीयोग्यहै एकविद्या के सम्बन्धसे सत्यविद्याएकहै अधिदैवअध्यात्मपढ़ीहै उपक्रमकेअभेदसेऔरव्यतिषक्तपाठसे जोव्यापकेसङ्गवर्त्तावकहाहै सोग्रामवनगतमेंतुल्यहै तिससेदोनोंउपनिषदोंकोदोनोंठौरप्राप्तिहै ॥

नवाविशेषात् २१

इसप्राप्तिकानिरासहै नवा दोनोंकोदोनोठौरप्राप्तिनहीं है कैसे विशेषात् उपासनस्थानभेदसे सूर्यमेआधिदैविकऔरनेत्रमेआ-ध्यात्मिकपुरुषकेनामकहेहैं तस्येति यहसर्वनामपासवाचीहैति ससेस्थानभेदसेउपनिषद्भेदकहाहैइससे दोनोकोदोनोठौरप्राप्ति नहींहै एकब्रह्मकी स्थानद्वयअवस्थाभेदसेउपनिषद्भेदकहाहै उ सीअवस्थाकासोउपनिषद्हैबापकास्वरूपएकहीहै तोभीजोवैठे परवर्त्तावहैसोखड़े परनहींहै ग्राममे वनमे बापएकहीहै इससे स्वरूपानुवद्धधर्मकाग्रामवनमेविशेषनहींहै दोनों ठौरतुल्यहैं इ स दृष्टांतहैतिसे दोनोउपनिषदोंकीव्यवस्थाहै ॥

दर्शयतिच २२

श्रुतिआदित्यपुरुषकारूपआदिअक्षिपुरुषमेदिखातीहै श्रु-ति तस्यैतस्यतदेवरूपंयदमुष्यरूपमिति इसअतिदेशमेस्थलभेद-सेधर्मभेदहैचनेराजादिकास्थलभेदसेधर्मभेदप्रसिद्धकहाहै तिस सेदोनोउपनिषद्व्यवस्थितहैं ॥

संभृत्यधिकरण ॥ ११ ॥

संभृतिद्युव्याप्त्यपिचातः २३

ब्रह्मज्येष्ठावीर्यासंभृतानिइत्यादि राणायनियोंकेखिलमेवीर्य संभृतिद्युनिवेशआदिब्रह्मकीविभूतिपढ़ीहैं विधिनिषेधशून्यवा क्यमेउनकेउपनिषद्मेशांडिल्यविद्यादिब्रह्मविद्यापढ़ी हैं उनब्र ह्मविद्याओंमेवेब्रह्मविभूतिउपसंहर्तव्यहैं यानहींहैं इस विचार णामे ब्रह्मसम्बन्धमे उपसंहारकीप्राप्तिमेपढ़ताहै कि संभृतिद्यु, व्याप्तिआदिविभूतिशांडिल्यविद्या मे उपसंहर्तव्य नहीं है अतः स्थानविशेषयोगसे शांडिल्यविद्यामे ब्रह्मकाहृदयस्थानकहा है

एषमआत्माऽन्तर्हृदय इति उपकोसलविद्यामेंनेत्रस्थान कहा है इनमें आध्यात्मिकस्थानप्रकट है और संभृतिद्यु व्याप्तिआदिआधिदैविकविभूतिहैं फिरउनकोइनमेंकैसेप्राप्ति है ज्यायान्दिवइत्यादि इनसेआधिदैविकविभूतिश्रुतहै षोडशकलादि ब्रह्म विद्यास्थानविशेषहीनहै सचहै तोभीभेदहै संभृतिआदिकेअनुपसंहारकाहेतुहै संभृतिआदिशांडिल्यविद्याकेगुणमिथो भिन्नरूपहैं जिससे देशांतरवर्तीविद्यामेंपहुंचनयोग्यनहींहैं ब्रह्म सम्बन्धविद्याभेदमें युक्तहै एकब्रह्मविभूतिभेदोंसेबहुधाउपास्यहै तिससे वीर्यसंभृतिआदिकाशांडिल्यविद्यादिमें उपसंहारनहींहै ॥

पुरुषविद्याभेदाधिकरण ॥ १३ ॥

पुरुषविद्यायामिवचेतरेषामनाम्नानात् २४

तांडिपैंगिदोनोंकेरहस्यब्राह्मणमें पुरुषविद्याहै पुरुषोवावयज्ञइत्यादि२४वर्षायु:प्रात:सवन४४वर्षायु:मध्यन्दिनसवन ४८वर्षायुतीसरासवनहै ऐसीसवयज्ञकल्पनाहै तैत्तिरीयकपुरुषयज्ञकल्पतेहैं कितस्यैवम्विदुषोयज्ञस्यात्मायजमान:श्रद्धापत्नीयहांसेमन्यु:पशु:मनोब्रह्मेति यहांतक इसमें संशयहै किजोपुरुषयज्ञकेधर्मअन्यत्रकहेथे वेतैत्तिरीयकपुरुषयज्ञमेंलेनायानहींलेनायज्ञ काभेदनहींहै इससेलेना पाया है सोनहीं नलेना कैसे पुरुषविद्यायामिवेति जैसे तांड़िपैंगिशाखियोंकेपुरुषविद्यामें पढ़ा है ऐसातैत्तिरीयकोंकेनहींपढ़ाहै उनकेयज्ञसम्पदाभिन्न है जैसेपत्नीयजमानवेदवेदिबर्हियूपाज्यपशुआदिहैं सवनभी तांडिपैंगिसेअन्यहै जोसायम्प्रातर्मध्यन्दिनहै सोसवनतीनहैं जोमरणावभृथआदिसाम्यअर्थात्खराष्ट्रवत्है सोअल्पीयहै भूरिभेद से-

छिपीहै इस्से दोनोएकहैं यहप्रत्यभिज्ञानहींहोसक्तीहै तैत्तिरी यकमें पुरुषयज्ञ नहीं सुनाहै किन्तु विदुषोयज्ञस्येति विदुषः औरयज्ञस्य जैदोषष्ठीसमानाधिकरणनहींहैं विद्वान् जो यज्ञ है एककोयज्ञयजमानकेविरोधसेआत्मवेदोकोजोयज्ञप्रसिद्धहै उसकोवैयधिकरण्ययुक्तहै हैपुरुषकोमुख्ययज्ञसम्बन्धजोउचितहीनकिभाक्त तस्यैवमिति यहश्रुतिसिद्धवत् अनुवादिनी है पुरुषकोयज्ञआत्मादिकोयजमानादिमाननेसेवाक्यभेदहोगा फिर आभिमानिकयज्ञकेसंन्याससेआत्मविद्यापहिलेकहीहै पीछे तस्यैवमिति यहवेदपूर्वशेषहै नकिस्वतन्त्रहै तांडिपैंगिके११६षोडशाधिकशतवर्षजीवनफलहै तिस्से शाखांतरमें पढ़ेपुरुषविद्याके धर्म आशीर्मंचादिकोप्राप्तितैत्तिरीयकमें नहींहै ॥

वेधाद्यधिकरण ॥ १४ ॥

वेधाद्यर्थभेदात् २५

आथर्वणिकोंकेउपनिषद्केआदिमें मन्त्र समाम्नाय है सर्वम्प्रविध्यहृदयम्प्रविध्यधमनीःप्रवृज्यशिरोभिवृज्यत्रिधाविपृक्तइत्यादि ताण्डियोंके देवसविलःप्रसुवयज्ञमित्यादि शाट्यायनियोंके श्वेताश्वोहरितनीलोसीत्यादि कठोंके औरतैत्तिरीयकोंकेशन्नोमित्रःशंवरुणइत्यादि वाजसनेयिकेउपनिषदारम्भमें प्रवर्ग्य ब्राह्मणमें पढ़ाहै किदेवाहवैशत्रंनिषेदुरित्यादि कौषीतकियोंके अग्निष्टोमब्राह्मणमें है कि ब्रह्मवाअग्निष्टोमोब्रह्मैवतदह ब्रह्मणैवतेब्रह्मोपयन्तितेस्तत्वमाप्नुवन्तियएतदहरुपयन्तीति इनमें मीमांसाहै किजैसबप्रविध्यादिमन्त्रऔरप्रवर्ग्यादिकर्मविद्यामेलेनायानहींलेना लेनाजानपड़ताहै विद्यासुख्यउपनिषदों के पास सेपाठसेयद्यपिइनकाविधानविद्यार्थलब्धनहींहै तद्यपिअनुमित हैपासकेपाठसे मंत्रोंकीसामर्थ्यविद्यामें युक्तिसेहै जैसाकिदया

हृदिस्थानउपासनार्थप्रायकहेहैं इससेहृदयवेधनादिमन्त्रउपास नाङ्गहैं उपासनामेमन्त्रविनियोगदेखाहै भूःप्रपद्येऽमूनामुनेत्या दिअर्थपुत्रकोदीर्घायुष्यार्थछांदोग्यमे त्रिलोकीकोशकोउपासना मेपिताकीप्रार्थनामन्त्रहै पुत्रकेसाथमैंइसलोकमेपहुंचाहूंमेरा- पुत्रसेबियोगनहो तैसे प्रवर्ग्यकर्मअन्यत्रलगेहैं तोभीविद्यामेयो गहै जैसे वाजपेयमेवृहस्पतिसवकायोगहै यहशङ्करकादृष्टांत अ योग्यहै भट्टगुरुतन्त्रदोसे इस्को सर्वसम्मतदृष्टांतहै किखादिरव त् अर्थ खैरकायूपक्रतुमेहै औरवीर्यादिफलार्थभी है सो नहीं उक्तमन्त्रोंकाविद्यामेकामनहींहै कैसे वेधाद्यर्थभेदात् हृदयके दनकाटनादिजेअर्थहैं उनकाऔपनिषदीविद्याकेसाथ सामर्थ्य- नहींहै हृदयप्रवेधादिअर्थआभिचारिकहैं उनकाअभिचारकर्म मेसम्बन्धयुक्तहै और देवेतिइसमन्त्रकायज्ञप्रसवलिङ्गसेयज्ञ क- र्ममेसम्बन्धहै किसीकालिङ्गसेकिसीकावाक्यसेकिसीकाप्रमाणा न्तरसेअर्थान्तरमे विनियुक्तरहस्यमे पढ़ोंकासन्निधिमात्रसेविद्या शेषकीसिद्धिनहींहै दुर्बलहै सन्निधिश्रुत्यादिसे यह पूर्व मीमांसा मेकहाहै श्रुतिलिङ्गवाक्यप्रकरणस्थानसमाख्यानांसमवायेपार- दौर्बल्यमर्थविप्रकर्षादिति प्रवर्ग्यादिकीविद्याकेसाथ ऐकार्थ्य न- हींहै वाजपेयमेवृहस्पतिसवकावाक्यसेविनियोगहै वाजपेयेने- ष्ट्वावृहस्पतिसवेनयजेतेतिबलवत्प्रमाणसे विनियुक्तप्रवर्ग्यादिफि रदुर्बलमानअन्यत्रनहींजोड़सक्ताहै तिस्से ऐसेमंत्रऔरकर्मसन्नि धिपाठमात्रसेविद्याकेशेषशङ्काहनहींहैं उपनिषदोंकेपासवेधा- दिकापाठअरण्यानुबचनादिधर्मसामान्यसेहै यहसन्तोषरीतिहै

उपायनोपसंहाराधिकरण ॥ १५ ॥

हानौतूपायनशब्दशेषत्वात्कुशाछंदः स्तुत्युपगानवत्तदुक्तम् २६

अश्वइवरोमाणीति यहतांडीपढ़तेहैं तथाविद्वान्पुण्यपापेविधूयेतियहआथर्वणिकपढ़तेहैं तस्यपुत्रादायमुपयन्तीति यहशाट्यायनपढ़तेहैं तत्सुकृतदुष्कृतेविधुनतेइतियहकौषीतकि पढ़तेहैं इनमें कहींसुकृतदुष्कृतकोहानसुनोहै कहींवेबांटसे प्रियअप्रियकोमिलतेहैं कहींदोनोकोहानऔरउपायनहै जहांहानोपायनदोनोसुनेहैं तहांकुछनहींकहिनाहै जहांउपायन सुनाहै नकिहानतहांअर्थसेहानकासन्निपातहै अन्यअपने सुकृतदुष्कृतअवश्यभोक्ताहै उनकोहानिकाजहांहानसुनीनकिउपायनवहांभीउपायनकासन्निपातहै यानहींहै इसविचिकित्सामेंन सुननेसेसन्निपातनहींहै शाखांतरश्रवणका विद्यान्तर विषयसे औरअपनेकरेसुकृतदुष्कृतकोहानऔरपरायेकरेसुकृत दुष्कृतकाउपायनइनदोकाअवश्यहोनेमेंकैसेहानसेउपायनका अपेक्षाहो तिस्सेहानमें असन्निपातहै उपायनकाइसप्राप्तिमें पढ़ा है किहानौत्विति केवलहानमेंउपायनकासन्निपातयोग्य है कौषीतकिरहस्यमें हानशब्दकाशेषउपायनशब्दज्ञातहै हान उपायअनुष्ठेयनहींकहेहैं वेविद्यास्तावकहैं ऐसीमहाभागाविद्या है किजिसकीशक्तिसेविद्वान्केसुकृतदुष्कृतछुटकेमित्रशत्रुकोपहुंचतेहैं हानकेपीछेहोनाउपायनकाकहींसुनना अन्यत्रहानसुननेमें उपायनकीअनुवृत्तिमानतेहैं स्तुतिलाभार्थ अर्थवादका अर्थवादसेसम्बन्धप्रसिद्धहै एकविंशोवाइतोसावादित्यइति इससेजब तकदूसरा अर्थवादनहींमिलेगा तबतक एकविंश सूर्य नहीं समुझेजावेंगे द्वादशमासाःपञ्चर्तवस्त्रय इमेलोकाअसावादित्यएकविंशइति हेमन्तशिशिरएकमानेसेपांचहैं बहृचब्राह्मणमेयज्ञकोपुरुषमानाहै उसमेंत्रिष्टुभछन्दकोइन्द्रियमानाहै यजुर्ब्राह्मणसे इससेतथात्रिष्टुभौभवतःसे न्द्रियत्वायेत्यादिवादोमेइन्द्रियम्वैत्रिष्टु

प्रकृत्यादि अर्थवाद अपेक्षित हैं अमूर्त पुण्यपाप अन्यके अन्यमें नहीं जासक्ते हैं इससे उपायनवाद स्तावक है बचन भी फलपहुंचानेवाला नहीं है जैसा पुत्रके करे श्राद्धसे पिताको फल है तैसा यहां नहीं है जिसके फलार्थ जो कर्म क्रियाथा उसको उस कर्मका फल होता है इससे पिताको तृप्त्यर्थ कर्मसे व्यधिकरण फलयुक्त है विद्वान्‌को कर्मकालमें अनुद्दिष्ट व्यधिकरण फलका योग नहीं है विद्वान्‌के मरनेमें कर्मके अभावसे जबतक जीतारहा तबतक विद्वत्सेवकया द्वेषीको फल हो इसमें बहुतमत घुसो विद्वत्सेवा द्वेषसे विद्वद्वर्ती पापपुण्यके तुल्य अन्य पुण्यपापसे वक शत्रुमें जन्मते हैं जातका फलसे स्वीकार उपायन है यह परिहार सुलभ है इससे अनाग्रह है हान में उपायनकी अनुवृत्ति सूचक है तिससे गुणोपसंहारकी विवक्षामें उपायनार्थकी हानमें अनुवृत्ति कही तिससे स्तवका उपसंहार दर्शनार्थ सूत्र है उपमोपादान है कि कुशाछन्दस्तुत्युपगानवत् एकशाखाका विशेष दूसरीमें स्वीकार्य है इसमें दृष्टांत देखो जैसे भाल्लवियोंके कुश वानस्पत्य हैं शाट्यायनियोंके औदुम्बर कुश हैं जैसे कहीं देव असुर छन्दोंके पूर्वापरके अविशेषमें देवछन्द पूर्व है यह पैंगीके कहने से जाना है जैसे षोडशिस्तोत्र का वपढ़े इस छन्दोगोंको विशेष इच्छामें सूर्योदय आर्च श्रुतिसे निश्चित है जैसे ऋत्विज् गावें इस समानका विशेष भाल्लविक हिते हैं कि अध्वर्यु न गावे जैसे कुशादिमें श्रुत्यन्तरसे विशेषका अन्वय है तैसे हानमें उपायनका अन्वय है यह अर्थ है श्रुतिमें अन्य श्रुतिका विशेष लेना न कि विकल्प मानना उचित है इसमें मीमांसासम्मत है अपितु वाक्यशेषत्वादितरपर्युदासः स्यात्प्रतिषेधे-विकल्पः स्यादिति जैसे ज्योतिष्टोममें दीक्षितो न जुहोतीति और यावज्जीवमग्निहोत्रञ्जुहुयादिति द्वादशलक्षणी पूर्व मीमांसा से मिश्र ने पर्युदासाधिकरणका सिद्धांत सूत्र पढ़ा है अपितु वाक्यशेषः

स्यादन्याय्यत्वाद्विकल्पस्यविधीनामेकदेशः स्यादिति श्रुति एष
वैसप्तदशप्रजापतिर्यज्ञमन्वायत इति ननु याजेषुयजामहङ्करो-
तीति इसविधिनिषेधकेप्रवेशसेविकल्पप्राप्तहोनेमे जैमिनिनेक-
हाकि अपित्वित्यादितुविकल्पवारकहै अन्याय्यसेविकल्पमेंआ
ठदोषहोनेसे इससेविधिकाएकदेशहो वहयहकिअनुयाजवर्जि
तमेयजामहयहकर्तव्य है इसकानामपर्युदासहै फिरइसपर्युदा
समेनानुयाजेषुयजामहङ्करोतीति यहवाक्यशेषभीअनुकूल होवे
फिरजैसे इसमें विकल्पजैमिनिनेनहींमानाहै तैसेहीउपायनमें
भीव्यासविकल्पकोनहींमानताहै इतिसौत्रोर्थः ॥

वर्णकांतर अथवाविधूननश्रुतिमेंसूत्रसेयहचिन्तयितव्यहैकि
क्याविधूननवाक्यनेपापपुण्यकीहानिकहीहै याअर्थान्तरकहाहै
फिरविधूननहाननहींकहाहै धूञ्कम्पने इसस्मृतिसेधूञ्का-
अर्थकांपनाहै दोधूयन्तेध्वजाग्राणीति यहांवायुसेहिलतेध्वजामें
धूननदेखाहै तिससेचालनविधूननकहाहै औरपुण्यपापकाचा
लनकुछकालफलनदेनाहै यहप्राप्तनिराश्यहै यहविधूननशब्द-
हानमेहै उपायनशब्दशेषसेपरायेपापपुण्यकेकीर्तनसेहान विधू
ननहै कहीं विधूननकेपाससुनाउपायनकुशाछन्दस्तुत्युपगानवत्
विधूननश्रुतिसेसर्वत्रअपेक्षमानमार्वत्रिकनिर्णयकाकारणहै ध्व
जावत्उनकाचालनमुख्यनहीं है अद्रव्यसे अश्वइवेतिइसब्राह्मण
वाक्यसेऔरधातुओंकेअनेकार्थसेघोड़ेकेसे जीर्णरोमोंकासापाप
पुण्यकात्यागहै सर्वत्रविधूननशब्दलाक्षणिकहैं नकिमुख्यार्थकहैं
विधूननहानऔरहानमेंउपायनोपसंहारसिद्धहै ॥

सांपरायाधिकरण ॥ १६ ॥

सांपरायेतर्तव्याभावात्तथाह्यन्ये २७

पर्यंकविद्यामेकौषीतकिपढ़तेहैंकि देवयानमार्गसेपर्यंकस्थ

ब्रह्मप्रस्थितका अर्द्धमार्गमेंव्यध्वमेंपुण्यपापकात्यागहै मृतदेवमार्गसे अग्निलोकमेंजाताहै सोविरजानदीकोमनसेतरताहै औरपुण्य पाप को छोड़ताहै तच्चागतिविरजांनदींतांमनसैवात्येतीत्यादि सोक्या अर्द्धमार्गसेवेछुटतेहैं यादेहसेनिकलनेसेयह विचारणाहै जैसा श्रुतिनेकहावैसाप्रमाणहै इसप्रसङ्गसेपढ़ाकि सांपरायइति गमनमें देहसेअपसर्पणमरणयहअर्थहै विद्याशक्तिसे उनकोहानप्रतिज्ञातहै मरणसे कैसे तर्तव्याभावादिति विद्यासेब्रह्मप्रेप्सुमरेकोवीचमें उनसेकुछप्राप्तव्यनहींहै मृतकेकुछ कालकर्मकेसत्वमेंफलकेअभावसेदेवमार्गमें प्रवेशनहोनेमें आदिमें चययुक्तहै फिरवेकुछचयनहींचीणक्युंकल्पतेहो मध्यमार्गमें विद्यानहींहोतीहै इससेजबविद्याफलाभिमुखहै तबहीउनकाचय है विद्यासेमरणकेपहिलेउनकाचयथा सोनदीउतरेपीछेपढ़ाहै ऐसेअन्यशाखीतांडीशाट्यायनीमरेसेप्राग्उनकोहानपढ़तेहैं अश्वइवेत्यादि तस्यपुत्राइत्यादि विरजाब्रह्मलोककेपासहै जीवउसकेपारपुण्यपापसेछुटताहै एक मत हैं ॥

छन्दतस्तूभयाविरोधात् २८

यदिमृतककेअर्द्ध मार्गमें उनकाचयमानोतदामृतदेहमें यमनियमादिउनकेचयकाहेतुपुरुषप्रयत्नकादेहादिकेअभावसे इच्छासेअनुष्ठाननहींहोगा अनुष्ठानासिद्धिसेउनकाचय असिद्ध है साधकदशामेंइच्छासेशमादिसेवायुक्तहै उससेउनकोहानयुक्तहै मेरेमतमेंतांडिशाट्यायनिश्रुतिसम्मतहैं औरशमादिकानिमित्त नैमित्तिकभावयुक्तहै विद्याकाफलकर्महानहै औरहानमें उपायनोपसंहारविद्यास्तावकसिद्धहै ॥

ज्ञान्युपासकमार्गाधिकरण ॥ १७ ॥

गतेरर्थवत्वमुभयथान्यथाहिविरोधः २९

सगुणमेमार्गमुनाहै नकिनिर्गुणमेइसमेसंशयहै किज्ञानमे अविशेषसेदेवयानकासन्निपातहै याविभागसेकहींहै कहीं नहीं है सन्निपात जैसे ज्ञानमेअविशेषसेउपायनकीअनुवृत्ति कहीहै ऐसाहीदेवयानकीअनुवृत्तिहोसोनहीं गतेः देवयानमार्गकाअर्थवत्वमुभयथा विभागसेयोग्यहै कहींअर्थवतीगतिहै कहींनहीं है नकिअविशेषसेअर्थवतीहै अन्यथाहिविरोधः अविशेषसेगति माने से विरोध हो पुण्यपापे विधूयनिरञ्जनः परमंसाम्यमुपैतीति इसश्रुतिसेदेशान्तरप्रापणीगतिश्रुतिविरुद्ध है भला कैसे-निरञ्जनगन्तादेशांतरसेजासक्ताहै औरगन्तव्यपरमब्रह्मदेशांतर कीप्राप्तिकेआधीननहींहै निरञ्जनदेशादिसेव्यवहितनहींहै फिरनिर्गुणमे गतिव्यर्थहै ॥

उपपन्नस्तल्लक्षणार्थोपलब्धेर्लोकवत् ३०

उपपन्नः गतिकहींसार्थकहींनिरर्थयहयुक्तहै तल्लक्षणार्थोपलब्धेः गतिकाअर्थसगुणपर्यंकविद्यादिमेउपलब्धहै सगुणवेदीपर्यंङ्कपरलेटेगापर्यङ्कस्थब्रह्मकेसाथबातचीतकरेगाइतरादि दिव्य गन्धसूंघेगा अन्यजोचाहेगा सोसबपावेगा जेदूरदेशमेप्राप्तहैं इससेइसमेगतिसार्थहै सम्यग्दर्शीकीगतिसेकुछप्राप्तव्यनहींहैआत्मैकात्म्यदर्शीआत्मकामयहांहीजरेक्लेशबीजसाआरब्धभोगकर्माशयकेक्षपणकेबिनाकुछअपेक्षितनहींहै रखताहै इससेयहांगतिव्यर्थहै लोकवत् जैसे लोकमेगाउंमेजानेकेअर्थ देशांतरप्रापणमार्गअपेक्षितहै नकिनैरोग्यप्राप्तिमेऐसाहीनिर्गुणमेहै सागतिःलक्षणङ्कारणंयस्यार्थस्यसतल्लक्षणार्थःइतिसमासः ॥

पञ्चाग्निविद्याधिकरण ॥ १८ ॥

अनियमःसर्वासामविरोधःशब्दानुमानाभ्यां ३१

सगुणेश्वरविद्यामेगतिसार्थऔरनिर्गुणेश्वरविद्यामेगतिव्य-
र्थयहकहाथा सगुणमेभीकिसीरमेगतिसुनीहै जैसे पर्यंकविद्या
उपकोसलविद्यापञ्चाग्निविद्यादहरविद्या नकिअन्यविद्यामे जै
से मधुविद्याशांडिल्यविद्याषोडशकलविद्या।वैश्वानरविद्या इ-
समेसंशयहै किजिनमेगतिसुनीहै उनमेनियमसेरहेगी याअनि
यमसेसबविद्याकेसाथसम्बद्धहोगी प्रकरणनियामकहै तिससेज
हांसुनीगतिहै तहांरहो यदिविद्यान्तरमेविनासुनीगतिजावे त
दाश्रुत्यादिअप्रमाणहो सबअर्थहोनेसेअर्चिरादिकाएकगतिउ
पकोसलविद्यापञ्चाग्निविद्यामेतुल्यवत्पढ़ीहै होसबार्थमे पुनर्वा
क्यव्यर्थहो तिससेनियम है इससेकहाकिअनियमइति सर्वासा-
सबब्रह्मलोकप्राप्तिफलकसगुणविद्याकाअविशेषसेदेवयान गति
है अविरोध:प्रकरणबिरोधनहींहैशब्दानुमानाभ्यांपञ्चाग्नि वेदी
औरअरण्यमेश्रद्धातपोवेदीकोसममार्गकहा हैश्रद्धातपविद्यातो
नमुख्यहैं अथयएतौपन्थानौनविदुस्तेकी टापतङ्गायदिदन्दशू-
कंइति विद्याकर्ममार्गसेभ्रष्टोंकोकष्टअधोगतिहोतीहै मार्गदो-
भ्रष्टोंकादेवयानपितृयाणमेअन्तर्भावहै अनुचिन्तनार्थदोवारपा
ठदेवयानकाउपकोसलपञ्चाग्निविद्यामेहै तिससेअनियमहै स्मृ
ति शुक्लकृष्णेगतीइत्यादि प्रतीककोछाड़अन्यसवउपासनोंमेअ
र्चिरादिकीप्राप्तिहै ॥

अधिकारिपुमधिकरण ॥ १९ ॥

यावदधिकारमवस्थितिराधिकारिका णां ३२

ज्ञानीकोमरेपीछेअन्यदेहहोतीयानहींहोतीहै यहचिन्तना
है विद्यासाधनसंपत्तिमेकैवल्यनिवृत्तिहै यानहींहै यहचिन्ता-
युक्तनहींहै जैसे पाकसाधनसंपत्तिमेरोटीहोगी यहचिन्ताहै न

किभुंजानत्वप्रहै यानहींहै यहचिन्ताहै फिरकिसीब्रह्मवेदीका-
इतिहासपुराणसेदेहांतरमेंजन्मसुननेसेचिन्ताहै जैसे अपांतर
तमानामवेदकाप्रवर्तकपुराणर्षि विष्णुकी आज्ञासे कलिद्वापर
कीसन्धिमेंकृष्णाद्वैपायनहुआथा श्रुतिमन्त्रअर्थवादोंमेवसिष्टादि
कामित्रावरुणसेजन्मसुनाहै इनमेसेकोईमरके फिर जन्मते हैं
और कोई योगबलसे स्थितदेहकी अनेकदेहें करलेते हैं वेस
बवेदार्थवेदी होते हैं देहसे देहांतर जन्म देखने से ब्रह्मविद्या
पक्षमे मुक्तिहेतु है पक्षमे नहींहै इसकाउत्तरहै किउनकीस्थि
तिअधिकाराधीन है जैसे सूर्य की सहस्रयुग तक है फिर कै
वल्यहै तस्यतावदेवचिरमित्यादि अर्थ आरब्धभोगके क्षयमेंकैव
ल्यहै ऐसेअपांतरतमादिमेजानो जैसे एकघरसे दूसरे घर मे
जाताहै तैसे देहसे देहांतरमे जाताहै स्मृति रहिती है देहे-
न्द्रियप्रकृत्यादिसबवशरहितेहैं इनकानामजातिस्मरनहीहै जे
स्मृतिमे प्रसिद्धहैं जैसे सुलभाजनकदेहमे घुसउसके बादकरफि
रअपनीदेहमेनहींघुसीथी यहस्मार्तगाथाहै जबअविद्यादि क्ले-
शबीजजरेतबकेसे जनसक्तेहैं यहभी नहींहै किबीजएकदग्धज
न्मताहै अैसे तैसे कुछकर्माशयदग्धकुछअदग्ध हैं प्रवृत्तफलार्थ
कर्माशयफलकोदेकेथमेगा जैसे मुक्ततीरवेगक्षय से थमता है
ज्ञानसे सबकीमुक्तिश्रुतिसे है योयोदेवानामित्यादि कुछहिर-
ण्यगर्भकेसाथमुक्तहोतेहैं तबतकउसकेयहांरहितेहैं कर्मफल स्व
र्गादिअनुभवमे नहींआतेहैं उनमे शङ्काहै किहोयानहो ज्ञानफ
लअनुभवमे आसक्ताहै तत्वमसीत्यादि तत्वमसीतिइसकाअर्थ
तत्वंस्रतोभविष्यसीति यहनहींहै अहम्मनुरभवमिति इससे वा
मदेवकोज्ञानकालमे सर्वात्मफलदिखायाहै तिससे ज्ञानीकोऐ
कांतिककैवल्यसिद्धहै औरनिर्गुणमे मार्गकाउपसंहार नहीं है

निषेधोपसंहाराधिकरण ॥ २० ॥

अक्षरधियांत्ववरोधः सामान्यतद्भावा-भ्यामौपसदवत्तदुक्तम् ३३

अस्थूलमनण्वह्रस्वमित्यादि जोब्रह्मबोधार्थगार्गिब्राह्मणमें निषेधश्रुतहैं और कठवल्लीमें भीहैं अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययमित्यादि अथपरायया तदक्षरमधिगम्यते यह अथर्वाहै ऐसे अन्य उदाहरणभीहैं औपसदवत् जैसे नाम्नदग्नाअहीनमेपुरोडाशिनीउपसत्में पुरोडाशकाटन के मन्त्रों को पढ़ाहै अग्ने वेर्होत्रं वेरध्वरमिति इनसे उद्गातृवेदोत्पन्न इनका अध्वर्यु से सम्बन्ध है पुरोडाशका काटना अध्वर्युका कामहोने से और अङ्गमुख्य के आधीनहोनेसे यह जैसे प्राग्कांडमेंतुमजैमिनिकोहै तैसेहीउत्तरकांडमेमुझिव्यासको अक्षराधीनसे जहांकहींपढ़े विशेषोंका सर्वत्रहीअक्षरसेसम्बन्धहै जैमिनीयसूत्र गुणमुख्यव्यतिक्रमेतदर्थत्वान्मुख्येनवेदसंयोग इति शाबरमुदाहरण वारवन्तीत्यादि सामोंकायजुर्वेदमेविनियोगसुनाहै उच्चैःसाम्नेत्यादि यहउत्पत्तिविधि गुणहै उपांशुयजुषेति यहविनियोगविधिमुख्यहै इनदोकेव्यतिक्रमअर्थाद्विरोधमें तदर्थत्वात् विनियोगविधिकेअर्थउत्पत्तिविधि होनेसेमुख्ययजुकेउपांशुस्वरसे वेदस्थ वारन्तीत्यादि सामकासंयोगअर्थात्सम्बन्धहै तु तत् पहिलाशावर दृष्टांत छिपा नहीं है मीमांसाभाष्यशबरनामपण्डितनेबनायाहै तिस्से वहशावर कहिलाताहै वेदमेबहुतठौरविशेषकेनिराससेअक्षरसुनाया है कहींकुछअतिरिक्तविशेषनिषिद्धहैंक्यानिषिद्धबुद्धियों को सर्वत्र सबकोप्राप्तिहै याव्यवस्थाहै इससंशयमेंश्रुतिसेवांटमेव्यवस्था है इससेकहाकिअक्षरधियांअक्षरमेविशेषनिषेधबुद्धिसबसबठौरअव-

रोइव्यहै सामान्यतद्भावाभ्यां विशेषनिराससर्वंचसमान है और ब्रह्मअभिन्नप्रत्यभिज्ञातहै आनन्दादयः इसमेंविधि रूप विशेषणोंकीचिन्ताकीथी दूसरे निषेधरूपोंकीहै यहभेदहै यहचिन्ताभेदप्रपञ्चार्थहै ॥

द्वयदामननाधिकरण ॥ २१ ॥

द्वयदामननात् ३४

द्वासुपर्णाइति इसकोअध्यात्मविद्याकेअधिकारमेंआथर्वणिकऔरश्वेताश्वतरपढ़तेहैं ऋतंपिबन्ताइति इस मन्त्रको कठ पढ़तेहैं क्याइनमेंविद्यैक्यहै याबहुविद्यहै यहसंशयहै बहुविद्या है कैसेविशेषदेखनेसे द्वासुपर्णामेंएकभोक्ताएकअभोक्तादेखतेहैं ऋतम्पिबन्तामेंदोनोभोक्तादेखतेहैं फिरभिद्यमानवेद्यरूपविद्याकाभेदकहै सोनहींसुनो विद्यैक्यहै कैसे जिससेइनदोमन्त्रोंमें द्वयत्तापरिच्छिन्नदोसंख्यायुक्तवेद्यरूपअभिन्नपढ़ाहै पाताबुद्धिजीव लेनापिबन्तमे सुपर्णमेंजीवईश्वरलेनाइसशङ्कामेंजीवकेअनुवादसेअसंसारिब्रह्ममेंमन्त्रदोकातात्पर्यहैतिससेअधिकधर्मकाउपसंहारहै यहसूत्रप्रपञ्चार्थहीहै ॥

उषस्तकहोलविद्याधिकरण ॥ २२ ॥

अन्तराभूतग्रामवत्स्वात्मनः ३५

एकयाबहुविद्याहै यहसंशयहै अभ्याससामर्थ्यसेबहुविद्या है अन्यथाअन्यूनानतिरिक्तार्थदोवारपाठव्यर्थहो जैसे अभ्याससेकर्मभेदहै ऐसे अभ्याससेविद्याभेदहै सोमतकहो अन्तरासबकेबीचस्वआत्मादोनोंमेंसमानपूछाऔरकहाहै दोआत्माएकदेहमेंसर्वान्तरनहींहोसक्तेहैं एकभीसर्वान्तरनहींहोसक्ता है भूतग्रामवत् जैसेपञ्चभूतपुञ्जमेंपृथिवीकेबीचजलऔरजलकेबीचतेज इनमेंएककोअपेक्षासेएकअन्तरहै नकिमुख्यसर्वान्तरहै तैसाहीउन

प्रश्नोंमेहै अथवाभूतग्रामवत् इसनेश्रुत्यन्तर दिखाया है यथाए-कोदेवःसर्वभूतेषुगूढ़इत्यादि इसमेजैसेसर्वमेएकआत्मा कहा है तैसेउनदोमेएकसर्वान्तरआत्माकहाहै तिससेविद्यैक्यसेविद्यैक्य है यत्साचादपरोचाद्ब्रह्मय आत्मासर्वान्तरस्तन्मेव्याचचस्वे तिइति यहबृहदारण्यकेवीचउषस्तऔरकहोड़काप्रश्नहै याज्ञवल्क्यसेअपरोचादितिविभक्तिपञ्चमीप्रथमाकेठौरहै व्यत्ययसे अपरो-चंब्रह्महै फिरदोनोन्यूनानतिरिक्तहोनेसेपुनरुक्तिवारणार्थविद्याभेदहै ॥

अन्यथाभेदानुपपत्तिरितिचेन्नोपदेशांन्तरवत् ३६

पाठभेदकीअनुपपत्तिहै विद्याभेदनमानेमेसो दोष नहीं है उपदेशांतरवत् जैसे तांडिकेउपनिषद्केछठेप्रपाठकमेसआत्मा तत्वमसिश्वेतकेतोइसमेनौवारकहिनेसे जैसे विद्याभेद नहीं है ऐसेहीयःसेतुरीजानानामचरंब्रह्मइसमेभेदनहींहोगा पूर्वमे आत्माकाहोनाकहाउषस्तमेउत्तरमेआत्माअशनादिसंसारधर्मशून्य कहाहै इससेएकार्थसिद्धिहै तिससेविद्यैक्यहै ॥

व्यतिहाराधिकरण ॥ २३ ॥

व्यतिहारोविशिंषन्तिहीतरवत् ३७

ऐतरेयसूर्यपुरुषकेप्रकरणमेपढ़तेहैं तद्योहंसोसौयोसौसोहमिति तैसे जावालापढ़तेहैं त्वम्वाअहमस्मिभगवोदेवतेअहवैत्वमसी-ति इसमेसंशयहै कि व्यतिहारसेदोरूपमतिकरेयाएकरूप आ-त्माकोईश्वरसेऐक्यकहकेअन्यकुछचिन्तयितव्यनहींकहाहै जैसं सारीकोईश्वरमानेमेउत्कर्षहो ईश्वरकोसंसारीमाने मे निकर्ष-होगा तिसमे ऐक्यदृढ़ार्थव्यतिहारहै सोनहींयहव्यतिहारध्याना

र्थपढ़ाहै कैसे इतरवत् जैसे सर्वात्मत्वादिगुणध्यानार्थकहेहैं त
द्वत्है विशिंषन्ति समाम्नातादोनोंकेपढ़नेसेतूमैंमैंतू अन्योन्यवि-
शेषणकरतेहैं सोदोरूपमतिमेंसार्थहै मैंऐक्यदृढ़कोनहींबारताहूं
व्यतिहारसेदोरूपमतिकर्तव्यहै वाक्यप्रामाण्यसेनकिएकरूपम-
ति फिरफलसेऐक्यदृढ़है तिस्से व्यतिहारध्येयहै, औरअहंग्रहोपा
स्तिमेंउपसंहर्तव्यहै ॥

सत्यविद्याधिकरण ॥ २४ ॥

सैवहिसत्यादयः ३८

बृहदारण्यमेंसुनतेहैं सयोहवैतन्महद्यक्षंप्रथमजंवेदसत्यंब्रह्मे
तिजयतीमान्लोकानिति यक्षं पूज्य है प्रथमजंहिरण्यगर्भरूप
सप्रथमजन्माइसवाक्य ने सत्य विद्याकह फिर कहाकिजोसत्यहै
सो आदित्य है तत्यत्सत्यमसौसआदित्योयएषएतस्मिन्मण्डले
पुरुषइति तत् तत्र और यश्चायन्दक्षिणेऽक्षन्पुरुषइत्यादि इन
दोसेदोसत्यविद्यायाएक है यह संशयहै यहकैसे फलभेदसेयत्र
वाक्यमेंलोकजयफलकहाहै और सूर्यादिवाक्यमेंपापक्षयफलक
हाहैश्रुति सहन्तिपाप्मानमिति तिससेविद्याभेदहै जोविद्याक
हीसोएकही हैतत्सत्यमितिहिजिस्से प्रकृतसत्यके अनुवादसेसूर्यरू
पवर्णनकियाहै असौसआदित्यइति और पापक्षयअङ्गोपासनाके
फलसेअर्थवादहै तिससेफलभेद नहीं हैअङ्गेषुफलश्रुतिरर्थवादइ
सजैमिनिवाक्यसे यापापक्षयलोकजयकामउपासकअधिकारीहै
तिससेएकहीसत्यविद्याहै केचित्कहितेहैं कि छांदोग्यवाजसने
यकअच्यादित्यपुरुषविषयक वाक्योंमेंविद्याएकहै इस्से सत्यादि
गुणवाजसनेयिसेछन्दोगलेवें सो साधुनहींहै छांदोग्यमेंआदिम
ध्यअन्तिमेंकर्मसम्बन्धसेकर्मसम्बधिनीविद्या है नकि वाजसनेय
कमेंकर्मसम्बन्धिविद्याहैछांदोग्यइयमेवर्गग्निःसामेत्यादिति ससे

गुणाव्यवस्थायुक्तहै ॥ सच्चत्यच्चेतिसत्यंवेदउपासेद्दत्यर्थ: सत्यविद्यानामतीनवर्णसत्यहैं इनमे प्रथमउत्तमदोवर्णसत्यहैं मध्यमवर्णअन्नृतहै दोनोसत्य सेसंपुटितसत्यसा है यह नामाक्षरोपासनासत्यविद्याङ्गकहीहै

हार्ददहरविद्यैक्याधिकरण ॥ २५ ॥

कामादीतरत्रतत्रचायतनादिभ्य: ३९

छांदोगसत्यकामादिपढ़तेहैं औरवाजसनेयीवशित्वादिपढ़तेहैं इनमेविद्याएकऔरमिथोगुणयोगहै यानहीहै इससंशय मे विद्यैक्यहै इससेकहाकि कामादीति सत्यकामादिजैसे सत्यभामाभामायहांशब्दकाएक अङ्गलियाहैतैसे कामादिकहाहै जोछान्दोग्यमेहृद्व्योमकेसत्यकामादिगुणलब्धहैंइतरत्रवाजसनेयकमे सवाएषमहानजइसमेसम्बद्धहैं जोवाजसनेयकमेवशित्वादिलब्धहैं तेभीतत्र छांदोग्यमे एषआत्मा इसमे सम्बद्ध हैं कैसे आयतनादिभ्य: दोनोमेहृदयायतनसमानहै औरवेद्यईश्वरसमानहैउसकीसेतुलोकसीमादिप्रयोजनादिवहुसामान्यदेखतेहैं छांदोग्यमेहृद्व्योमकागुणयोगऔर वाजसनेयकमेव्योमाश्रयब्रह्मगुणयोगविशेषहैसोनहींव्योमसेब्रह्मकहाहै सगुणविद्याछान्दोग्यमेहै अथयइहात्मानं इसमेआत्मवत् सत्यकामादिभीवेद्यसुननेसे वाजसनेयकमेनिर्गुणकहाहै अतऊर्ध्वंविमोक्षायेत्यादि यह विशेषहै वशित्वादिस्तवार्थगुणहैं वाजसनेयकमेनेतिनेतिनिर्गुणोपसंहारहै गुणीब्रह्मएकहै इससे विभूतिदर्शनार्थगुणोपसंहारसूचितहै नकिउपासनार्थयहद्रष्टव्यहै ॥

प्राणाग्निहोत्राधिकरण ॥ २६ ॥

आदरादलोप: ४०

छांदोग्यकीवैश्वानरविद्यामेसुना किजोप्रथमभक्तमिले सो-
होमीयहै प्राणायस्वाहेत्यादि पांचप्राणाहुतिकहिकेफिर अग्नि-
होत्रंजुहोतीति इससेज्ञानीकोअग्निहोत्रकहाथा जैसा भूखाब
च्चामाकोसेवताहै ऐसे सबभूतअग्निहोत्रकोसेवतेहैं इसमेविचा
रहै किभोजनकेलोपमेप्राणाग्निहोत्रकालोपहैयानहीहैगलेपड़ा
भोजनकेअसंयोगसेप्राणाग्निहोत्रकालोप सोनहीं कैसे आद
रात्वैश्वानरविद्यामेजावालश्रुतिहैकिअतिथिसेपहिलेखालेपूर्वो
तिथिभ्योऽश्नीयात्इससेप्राणाग्निहोत्रकाआदरहैप्रकृतअग्निहोत्र
मेदुग्धादिद्रव्यहैं इसअग्निहोत्रमेभी कौंडपायिनामयनवत् भ
क्तद्रव्यएकगुणकाविधानहै गुणलोपेनमुख्यस्येति इससेभोजना-
भावमेजलादिअविरुद्धद्रव्यसेप्राणाग्निहोत्रअनुष्ठेयहै इसकाउत्त
रपढ़ताहै ॥

उपस्थितेऽतस्तद्वचनात् ४१

तद्यद्भक्तंप्रथममागच्छेत्तद्धोमीयति इसनेभोजनहोनेमेभक्त से
प्राणाहुतिकाविधानकियाहै औरभोजनकेअलोपमेभी उपस्थि
त प्रत्यागतभक्तद्रव्यहै अतः उसी भक्तद्रव्यसे प्राणाग्निहोत्रकी
सिद्धिहैजोकिसोढवसेभक्तमिलेगासोअग्निहोत्रद्रव्यश्रुतिसेश्रुतहै
तद्यद्भक्तमिति औरआदरभोजनपत्तमेप्रथमभोजनविधानार्थं हो
गा तिससेभोजनलोपमेंप्राणाहुतिलुप्तहै उपस्थिते भोजनमे अ
तः उसीभोजनसेप्राणाग्निहोत्रनिर्वर्त्तयितव्यहै कैसे तद्वचनात्
तद्यद्भक्तंप्रथममित्यादि कुण्डपायिनामयनमेएकमहीनाअग्निहो
त्रकाविधानहै तिससेउसमेनित्यअग्निहोत्रकेधर्मपहुंचतेहैं प्रा-
णाग्निहोत्रशब्दअर्थवादहै तिससेअग्निहोत्रधर्मोंकोनहींलेसक्ता
है यहहोमसुहमेहै तिससेअग्न्युद्धरणादिनहींहैं नकालदोकी
प्राप्तिहै सायंप्रातर्होमवत् उरआदिमे वेदीआदिमानलियेहैं मु

ख्याग्निहोत्रमें वेदीनहींहै वेदीस्थंडिलमात्रहै आदरवचन भो-
जनपक्षमें प्रथमार्थहै बचनकोवड़ाभारनहींहै तिससेभोजनलो
पमेंप्राणाग्निहोत्रकालोपहै ॥

कर्माङ्गावबद्धोपासनाधिकरण ॥ २७ ॥

तन्निर्द्धारणानियमस्तद्दृष्टेःपृथग्ह्यप्र-
तिबन्धःफलं ४२

कर्माङ्गाश्रयउद्गीथादिनित्यहैं जैसे कर्ममेंपर्णमयीत्वादि हैं
याअनित्यहैं जैसा गोदोहनादियहविचारहै अङ्गान्तरवत्नित्य
हैं उद्गीथादिजैसे जिसकीपर्णमयीजुहूहै सोदुर्यशनहींसुनता-
है इसअप्रकरणपढ़ेकाजुहूद्वाराक्रतुमें प्रवेशसे प्रकरणपठितवत्
नित्यहै तैसा उद्गीथादिमें जानोसोनहीं तन्निर्द्धारणानियमः क
र्मगुणयथार्थनिर्द्धारणरसतमादि नित्यवत्कर्ममें नियम नहींहै
कैसे तद्दृष्टेः ऐसोंकाश्रुतिअनियमदिखातीहै तेनोभौकुरुतो
यश्चैतदेवंवेदयश्चनवेदेति इसनेमूर्खकोकर्मकीआज्ञा दी है ऐसे
कर्माश्रयविज्ञानकाकर्मसेपृथक्फललब्धहै कर्मफलकीसिध्यप्र-
तिबन्धः अर्थकर्मफलसमृद्धिअतिशय जैसे ज्ञानीअज्ञानीबणिक
शवरमणिवेचनमेंफलातिशयलभताहैतैसाहीकर्ममेंहैविद्याहीन
काकामबीर्यवत्औरसविद्यकाकामबीर्यवत्तरहोताहैयहअनित्य
विद्यामेंयुक्तहै नकिनित्यमेंलोकादिफलार्थसामादिमेंउपासना-
काफलनियतहै ऊपरनीचेकेलोकलाभ नफलअर्थवाद है गुण-
वादकीआपत्तिसे फलोपदेशमेंमुख्यवादसिद्धहै प्रयाजादिमेंफ-
लअर्थवादहै क्रतुकेप्रकृतहोनेसे अक्रियपर्णमयीकाफलसम्बन्ध-
आश्रयकेबिनायुक्तनहींहै गोदोहनादिकीफलमेंविधिहै प्रकृतज
लप्रणयरूपआश्रयकेलाभसेअङ्गयाप्रधानमेंफलार्थविधियुक्तहै जै
से वैल्वमन्नाद्यकामस्यखादिरंवीर्यकामस्येति पर्णमयीका आश्र-

यप्रकृतनहींहै वाक्यसेजुहूकेकाठकोआश्रयमानफलमेंविधिवि वचकोवाक्यभेदहो यागादिवत् क्रियारूपउपासनाफलसहित- विहितहैजैसेअङ्गावेदनमानाभावसेजैसेक्रतुकेआश्रयगोदोहादि फलयोगसेअनित्य हैं ऐसेउद्गीथादिउपासनाहैंकल्पसूत्रकारोंने ऐसीउपासनाक्रतुमेनहींमानीहैंअनङ्गहोनेसेतिससे अङ्गोपासि केअभावमेंकर्माधिकारसिद्धहै ॥

प्रदानाधिकरण ॥ २८

प्रदानवदेवचतदुक्तम् ४३

वाजसनेयमें वाग्दध्रइति इससेवागादिमेंअध्यात्मप्राणश्रेष्ठहै अग्न्यादिमेंअधिदैववायुश्रेष्ठहै औरछान्दोग्यकीसम्बर्गवि- द्यामेंवायुर्वावसम्बर्गइससेअधिदैववायुसम्बर्गअग्न्यादिमेंहैऔर प्राणोवावसम्बर्गइससेवागादिमेंअध्यात्मप्राणश्रेष्ठहैफिरप्राणवा युकेभेदाभेदसेसंशयहै किक्यावायुप्राणपृथक्लेवें याअपृथक् अ पृथक्तत्वमेंपृथक्चिन्तनन्याय्यनहींहै अध्यात्मअधिदैवकेतत्वा- भेदकोकहतीहै तथातएतेसर्वएवसमाःसर्वेअनन्ताइत्यादि इस- सेप्राणविभूतिकहीहै जिससेसूर्योदयहै उसकोकहोइसप्रश्नमेंसू त्रात्मावायुकहाहै फिरवायुस्थानमेंप्राणकहाहै इससे उनको ऐक्यहै ऐसेवहुततत्वाभेदहैं कहींजोवायुसोप्राणहै यहांस्पष्टवा युप्राणकोएककराहै वाजीब्राह्मणं यश्चोदेतिसूर्यइत्यादि प्रा- णापानएकव्रतकरे छान्दोग्यमें चतुरोदेवएकइत्यादिसेवन्हि सू- र्यजलचन्द्रयावाग्नेत्रकर्णमनइनको एकप्रजापतिजीर्णवान्उप संहृतवान्एकसंवर्गजताताहै नहींकहिताहै एकसंवर्ग एकोंको दूसराऔरोंको तिससेअपृथक्ज्ञानहै सोनहीं वायुप्राण पृथक् हैं ध्यानार्थयासङ्कल्पार्थअध्यात्मआधिदैविकविभागकहाहै सो विनापृथक्मेंव्यर्थहो जैसे प्राणोंमें मध्यमप्राण स्थिरव्रत है तैसे

देवोंमें वायुम्नोचहै सैषानस्तमितादेवतायद्वायुरितिश्रुतेः हैइ ससेउपमानोपमे यकिया तेपांचअन्यपांचअन्यऐसेदशहैं तिससेपृथक्प्राप्तहै कैसे प्रदानवत् यथेंद्रायराज्ञेपुरोडाशमेकादशकपालमिन्द्रायाधिराजायेन्द्रायस्वराज्ञ इति इस त्रिपुरोडाशिनीइष्टिमें सवदेवोंकोहविकालेनाहै अछम्बट्कारं वैषट्कार देवभागहै यादेवोंकोयुगपत्अवदानहै एकार्थ अवदानमे यागव्यर्थहो इन्द्रादिकेअभेदसेसाथप्रदानकीशङ्कामे राजादि गुणभेदसे देवभेदहै उससे प्रदानभेदहै ऐसे तत्वाभेदमेध्येयांशभेदसेध्यानभेदहै तदुक्तं सङ्कर्षेनानादेवतापृथक्त्वानादितिसङ्कर्ष देवकाण्डहै देवनानाहैं राजादिगुणभेदसे यह सूत्रार्थ है द्रव्य देवभेदसेयागभेदहो यहांविद्याभेदनहींहै अध्यात्म अधिदैवमेविद्यैक्यप्रतीतमेभीअध्यात्म अधिदैवभेद से प्रवृत्ति भेद होगा जैसे अग्निहोत्रकासायंप्रातःकालभेदसेभेदहै तिस अभिप्राय से प्रदानवत्कहाथा ॥

लिङ्गभूयस्त्वाधिकरण ॥ २९ ॥

लिङ्गभूयस्त्वात्तद्धिबलीयस्तदपि ४४

बाजसनेयक अग्निरहस्यमेमनकेअधिकारसेपढ़ाहै षट्त्रिंशत्सहस्राण्यपश्यदात्मनोग्नीनर्कान्मनोमयान्मनश्चितइति अर्थ पुरुषकीसौवर्षमितआयुहै औरसौवर्षके ३६००० हजारदिनहोतेहैं उनएकर दिनमेंजोमनोवृत्तिहै उसकोएकर अग्निकेध्यानसे ध्येयअग्निभी ३६००० हजारसम्पन्नहैं और वेप्रत्यगात्म रूप से ध्येयहैं अतएवार्चनीयामनसाचीयन्तेसंपाद्यंतइति एवंवाक्चितःप्राणचितःचक्षुश्चितइति वेअग्निमनश्चिदादिमनसेसम्पादितक्रत्वर्थअर्थात्यागकाअङ्गहैं याअग्निचयनप्रकरणमेपढ़नेसेकर्मशेषहैं औरनकिस्वतन्त्रविद्यारूपहैं स्वतन्त्रअर्थात्पुरुषार्थ विद्यात्म

कहैं यहसंशयहै औरनकर्ममेंप्रविष्टहैं कैसे तद्यत्किञ्चेति लिङ्गभूयस्त्वात् आधिक्यसे लिङ्गहोतोभीअग्निचयनप्रकरणसेवे उनकाक्रियामेअनुप्रवेशहै इससेपढ़ाकि तद्विवलीयः हि जिस्सेलिङ्गप्रकरणसे बलीहै वहभीपूर्वकांडमेंकहाहै श्रुतिलिङ्गवाक्यप्रकरणस्थानसमाख्यानांसमवायेपारदौर्वल्यमर्थविप्रकर्षादिति अर्थ एकदोतीनचारपांचछहकेविलम्बसे आगे२दुर्वलहै और पूर्वप्रबलहै यहपूर्ववादीकाआक्षेपहै पूर्वाधिकरणमें तान्है तानेवं विदेसर्वदासर्वाणिभूतानिविचिन्वन्तीत्यादि ॥

पूर्वविकल्पःप्रकरणात्स्यात्क्रियामानसवत् ४५

मनश्चिदादिक्रियाहीहो किसढब पूर्वक्रियामयअग्निमेंविकल्पः सङ्कल्पविशेषकहाहै सोभीकैसे क्रियामयाग्निकेप्रकरणसेविरूपकाऔरविरूपकेप्रकरणसे क्रियारूपकहादेखाहै इससेकहाकिमानसवत्जैसेदशरात्रकेदशमेंदिनके अविवाक्यनामदिनमेंभी ग्रहणआसादनहवनहरणउपह्वानभक्षणआदिसोमके मानसही पढ़ेहैं पृथिव्याःपात्रेसमुद्रस्यसोमस्यप्रजापतयेदेवतायैगृह्यमाणस्येति औरमानसभीग्रहकल्पक्रियाकेप्रकरणसे क्रियाशेषहै जैसे ऐसेहीअग्निकल्पहै इत्यर्थं ॥

अतिदेशाच्च ४६

षट्त्रिंशत्सहस्राण्यग्नयोर्कास्तेषामेकैकएवतावान्यावानसौपूर्वइति अर्थ ३६००० हजारअग्निऔरसूर्यहैं इनमेंसेएक जितनापूर्वथा उतनाअबहै इससाम्यकानामअतिदेशहै तिस्से भीमनश्चिदादिक्रियांगहैं अन्यथा दोमें अनुस्यूतधर्मके अभावसे अतिदेशकाअयोगहोगाइतिभावार्थइतिपूर्वपक्ष अथ सिद्धांती ॥

विद्यैवतुनिर्द्धारणात् ४७

तुअग्नियोंकोक्रियारूपकावारकहै तोक्याहैं विद्यात्मकस्व-
तन्त्रमनश्चिदादिनकि क्रियांग हैं कैसे तहैतेविद्याचितएवेतिद्र
समेएवकाअर्थनिर्द्धारणसे श्रुतिलिङ्गवाक्योंसेप्रकरणवाध्यहै यह
तीनसूत्रोंकाअर्थहै ॥

दर्शनाच्च ४८

लिङ्गानामितिशेषः ॥

चसेसहकारीकोअनपेक्षाकहीहै लिङ्गलिङ्गभूयस्त्वसूत्रमे कहि
चुके पुनर्थबोधकवाक्यदेखनेसेभीविद्यास्वतन्त्र है विद्ययाहैवै-
तेएवम्विदश्चिताभवन्तीति ॥

श्रुत्यादिवलीयस्त्वाच्चनवाधः ४९

मनश्चिदादिस्वतन्त्रहैं प्रकरणलिङ्गकावाधकनहोनेसे कैसे
श्रुत्यादेर्वलीयस्त्वात् प्रकरणसेवलीहैं श्रुतिलिङ्गवाक्ययह श्रुति-
लिङ्गसूत्रमेकहीथी स्वतन्त्रपक्षसाधकमेश्रुति तहैतेइति लिङ्ग स
र्वदासर्वाणिभूतानिचिन्वन्त्यपिस्वपतेइति वाक्य विद्ययाहैवेति
विद्याचितएवेतियहसावधारणश्रुतिमनश्चिदादिकोक्रियामेघुसा
नेसेपीड़ापावेगी अवाह्यसाधनकीआश्रयसेअवधारणहोगा सो
नहीअवाह्यसाधनउनकारूपहोने से मानसग्रहवत्क्रियांगशङ्का
वारकएवकारहै सोतेजगतेमेसवभूतउनकाचयन करते हैं यह-
सातत्यउनकेस्वातंत्र्यमेसमर्थहै जैसे सम्पादिकवाक्प्राणमय अ-
ग्निहोत्रमेप्राणकोवाणीमेऔरवाणीकोप्राणमेहोमेयहकहिके फि
रकहाकिजेअनन्तअमृतहोमसोतेजगतेपरसततहोते हैं तैसे म-
नश्चिदादिहैं क्रियांगमानेमेक्रियाप्रयोगथोराकालहै फिरइनको
सातत्यकहांरहा अर्थवादवहांमानाहै जहांविस्पष्टविधायक लि

ङ्गादिलब्धहैं तहांकहिनामात्रअर्थवादहै यहांविस्पष्टअन्यविधि नहींलब्धहै कहिनेसेहीइनकाविज्ञानऔर विधान कल्पनीयहै तिससेमनश्चिदादिस्वतन्त्रहैं औरकिसीनेकहाहै किजेभूतजोकुछमनसेसङ्कल्पकरतेहैं उनकीयहसोआकृतिहै औरएवंविद यह वाक्यपुरुषसेउनकासम्बन्धकहिताहै फिरक्रतुसेसम्बन्धक्युंसहि-सकेगा तिससेस्वतन्त्रपक्षज्यायान्जानपड़ताहै ॥

अनुबन्धादिभ्यःप्रज्ञांतरपृथक्त्ववद्दृष्ट-श्चतदुक्तम् ५०

प्रकरणकेभङ्गसेमनश्चिदादिस्वतन्त्रहैं जिससेमनश्चिदादिमे क्रियांगोंकोमनःप्रभृतिव्यापारोंमेबांधाहै तेमनसैवाधीयन्तइत्यादिमेजोकुछयज्ञमेकर्मकरतेयाययज्ञीयकर्महै सो सवमनोमयमनश्चिदादिमेमानसकहाहै इससे सम्पत्फलार्थ अनुवन्धहै क्रियांग नहींआदानहैकिन्तुषट्त्रिंशत्सहस्रमनोवृत्तिकाआदानहै उनमे अग्न्यादिकल्पेहैं पुरुषयज्ञादिवत् संख्यापुरुषकेआयुकेदिनोकी थी सोवृत्तियोंमेमानलीहै आदिशव्दसेअतिदेशादिलिये हैं क्रियाकाअनादरदर्शनार्थक्रियामयअग्निकामाहात्म्यज्ञानमयअग्निमेकराहै जिस आहवनीयादिव्यापारसे पूर्वक्रियामे उपकारहै तिससेउत्तरमेउपकारशक्यनहींहै इससेविकल्पनहींहै सांपादिकभीअग्निअग्निहै अनुवन्धअतिदेशश्रुतिलिङ्गवाक्यकारणसे मनश्चिदादिस्वतन्त्रहैं कैसे प्रज्ञांतरपृथक्त्ववत् जैसे शांडिल्य विद्यादिअपने२अनुबन्धसेअनुवध्यमानकर्मोंसेपृथक्और प्रज्ञान्तरसे भीस्वतन्त्रहैं ऐसे जेहैं देखाय। किराजसूयप्रकरणमेपढ़ी अवेष्टिकाप्रकरणसे भेद कैसे तीनवर्णोंकेअनुवन्धसे औरराजयज्ञसे राजसूयमेसम्बन्धहैं तदुक्तं पूर्वकांडमे क्रत्वर्थायामितिचेन्नवर्णत्रयसंयोगादितिराजास्वाराज्यकामोराजसूयेनयजेतइससेरा

नाकीरानसूयभिन्नविधानकहाहैभेदकवाकहै यदिब्राह्मणोयजे तवार्हस्पत्यमित्यादि ॥

नसामान्यादप्युपलब्धेर्मृत्युवन्नहिलोकापत्तिः ५१

मानसग्रहसामान्यसेमनश्चिदादिक्रियांगनहींकल्प्यसक्तेहो श्रुत्यादिहेतुसेकेवलपुमर्थअर्थात्उपासनार्थकीउपलब्धिसे कुछ-किसीकीकिसीकेसाथसामान्यनहींहैसोनहीं है कुछ सामान्य से जैसे वैषम्यनहींछुटताहै मृत्युवत् यथासवाएषएवमृत्युर्यएषएतस्मिन्मण्डलेपुरुषइति अग्निर्वैमृत्युरिति इनसेसूर्याग्निमे समान-मृत्युशब्दहै तोभीअत्यन्तसाम्यनहीं है यथावासौवैलोकोगिग्नगौतमतस्यादित्यएवसमिदिति इसमेसमिदादिसामान्यसेलोकअग्नि नहींसोसक्ताहै कोटिवाक्यसे तैसे वेक्रियांगनहीं हैं ऐसे वाक्य-अर्थवादहैं लोकदृष्टांतअत्यन्तभेदमेहै ॥

परेणचशब्दस्यताद्विध्यम्भूयस्त्वात्त्वनुबन्धः ५२

अयम्वावलोकएषोग्निश्चितइसअगिलेवाक्यमेताद्विध्यं केव-लविद्याविधिहै शब्दप्रयोजनलक्ष्यमानहै नकिशुद्धकर्माङ्ग विधि विद्ययातदारोहन्तियत्रकामाःपरागताः नतत्रदक्षिणायन्ति न-विद्वांसस्तपस्विनः इसश्लोकसेकेवलकर्मनिन्दाविद्याप्रशंसासेवि-द्यास्वतन्त्र कही है तथापुरस्तादपियदेतन्मण्डलन्तपतीतिमेवि-द्यामुख्यलक्ष्यमानहै सोमृतोभवतिमृत्युर्ह्यस्यात्माभवतीतिमे वि द्याफलसे उपसंहारसे कर्ममुख्यनहींहै इससामान्यसे मनश्चिदादिमेकर्ममुख्यनहींहै भूयस्त्वात्त्वनुबन्धः विद्यामे वहुतअग्न्यंग संपादनीयहैं इसहेतुसे अग्निकेसाथवेअनुबध्यमानहैं कर्माङ्गके

विधानसे तिससे मनश्चिदादिकेवलसिद्यात्मसिद्ध हैं ॥

देहभिन्नात्माधिकरण ॥ ३० ॥

एकआत्मनःशरीरेभावात् ५३

श्रुति एतेभ्योभूतेभ्यःसमुत्थायतान्येवानुविनश्यतिनप्रेत्यसंज्ञास्तीति वन्धमोक्षाधिकारार्थदेहसे भिन्नआत्मासमर्थ्यमानहै नहींदेहभिन्नआत्माकेविनापरलोकफलार्थचोदनायुक्तहैं औरकिसकोब्रह्मकाउपदेशकरोगेयज्ञायुधीययजमानः स्वर्गलोकमेतीति मन्त्र प्रेहिप्रेहिपूर्वेभिःपथिभिरित्यादि मीमांसाकेप्रथमपादमेदेहभिन्नआत्माकहाथा सोशवरस्वामीनेकहाथा नकिजैमिनिनेउपवर्षनेपूर्वमीमांसासूत्रकोव्याख्यामेकहाथा किआत्मास्तित्वशारीरकमेकहेंगे यहकहचुपपरहै शारीरकसूत्रव्याख्याउपवर्षकी अच्छीहै आत्माहै यानहींहै इसविप्रतिपत्तिसे संशयहै एके लोकायतिकदेहसे भिन्नआत्मानहींमानतेहैं देहमात्रकोआत्मादेखतेहैं सबमिलेभूतोंमेचैतन्यनहींहै जैसे तप्तोदकुम्भकोज्ञानकेअभावसे और व्यस्तमे नहीं है तोभीदेहाकारभूतोंमें है परिणामसे किण्वशक्तिसमविज्ञानहै चैतन्यविशिष्टजोकाय है सोपुरुष है नस्वर्गापवर्गकोसमर्थहै देहहीचेतनऔर आत्मासंघातज है हेतुशरीरेभावादितिजो जिसकेहोनेमेहोनहोनेमे नहोसोउसका धर्मनिश्चितहै जैसे अग्निधर्मऔष्ण्यप्रकाशहैं तैसे देहमेचेतनभावहै औरप्राणचेष्टाचैतन्यस्मृत्यादि जो आत्मधर्मआत्मवादीको-दृष्टहैंतेभीदेहकेभीतरलभ्यमानहैं वाहिरअलभ्यमानहैंअसिद्धदेहभिन्नधर्मीमेदेहधर्महोनेकोयोग्यहैंतिससे अभेदहैदेहसेआत्मा का

व्यतिरेकस्तद्भावाभावित्वान्नतूपलब्धिवत् ५४

आत्माकादेहसेव्यतिरेकहै कैसे तद्भावभावित्वात् यदि-देहभावमेभावसे आत्मधर्मौंकोदेहधर्ममानो तिससेदेहभावमेअ भावसे अदेहकेधर्मउनकोक्युंनहींमानतेहो देहधर्मवैलक्षण्य से नेदेहधर्मरूपादिहैं तेजवतकदेहहै तवतकहैं प्राणचेष्टादिमरे परदेहहोनेमेभीनहींहोतेहैं रूपादिदेहधर्मपरदेखतेहैं नकि आत्मधर्मचैतन्यस्मृत्यादिदेहकेहोनेमेजीवत्दशामेउनकाभावनिश्चयकोशक्यहै नकिअसत्देहमेअभावकभीपतितदेहमे देहांतर संचारसे आत्मधर्मअनुवर्तहो संशयमात्रसे परपक्षकानिषेधहै चैतन्यकैसोहै जिसकाजन्मभूतोंसे मानाहै ऐसे परपर्यनुयोज्यहै लोकायतिकभूतचारसे व्यतिरिक्ततत्वनहींमानताहै जोभूतभौतिकोंकाअनुभवहै सोचैतन्ययदिकहोतोसोविषयसे भूतोंकाचैतन्यधर्मनहींहै भावार्थ देहात्मकभूतोंकोचैतन्य के प्रति विषय से कर्तृकर्मविरोधकरविषयकर्त्तानहींहोसक्ताहै इससे भूतकर्तृकचैतन्यनहींहै ज्ञानकोभूतधर्ममानेमेरूपादिवत्जड़होवेगा नहींहै किअग्निदाहकहै परआपकोजरातीहै नहींनटआपसिखाहुआअपनेकांधेपरचड़ताहै नहींसत्भूतभौतिकधर्मचैतन्य भूतभौतिकोंकोविषयकर्त्ताहैनहींरूपादिस्वरूपयापररूपकोविषय करतेहैंऔरचैतन्यसेवाह्याध्यात्मिकभूतभौतिकविषयकियेजाते हैं इससे जैसे भूतभौतिकविषयकउपलब्धिकाभाव मानते हो ऐसे इसकाभूतोंसे व्यतिरेकमानो उपलब्धिकास्वरूपहीआत्मा नहींहै इससेव्यतिरिक्तहै देहसे उपलब्धिनित्यहै एकरूपसे यहमैनेदेखाथाइसअवस्थान्तरकेयोगमे उपलब्धाकीप्रत्यभिज्ञा से स्मृत्यादिकोसिद्धिसे और दीपादिउपकरणहोनेमेउपलब्धिहै न-होनेमेनहींहै इससे उपलब्धिदीपधर्मनहींहै ऐसे होदेहकेहो-नेमेउपलब्धिहै नहोनेमे नहींहै तिससे उपलब्धि देहधर्मोहैन-हींहै उपकरणमात्रसे दीपादिवत् देहकाउपयोगसिद्धहै और-

नकिअत्यन्तदेहकीउपलब्धिमेउपयोगदेखतेहैं स्वप्नमेनिश्चेष्ट देह मेनानाविधकीउपलब्धिदेखनेसे तिससे अनवद्यहै देहसेव्यतिरिक्तआत्माकाहोना ॥

उक्थ्योपासनाधिकरण ॥ ३१ ॥

अङ्गावबद्धास्तुनशाखासुहिप्रतिवेदं ५५

कहिचुकेप्रासङ्गिकीकथाअवतीप्रकृतकथाकाअनुवर्त्तावहैउद्गीथावयवोंकारमेप्राणदृष्टिकरे औरलोकोमेपांचविधसाम उपास्यहै धराग्निअन्तरिक्षसूर्यद्युइनपांचकोक्रमसे हिंकारप्रस्तावउद्गीथप्रतिहारनिधनइनपांचसाममेदृष्टिकरे इनकानामलोकसामहैजेउद्गीथादिकर्माङ्गावबद्धप्रत्ययहैंप्रतिवेदमेशाखाभेदसेपढ़ेहैं तेतिसतिसशाखाकेउद्गीथादिमेहोयासबशाखामेंहोयहसंशयहै प्रतिशाखामे स्वरादिभेदसे उद्गीथादिकाभेदपकड़संशयहै स्वशाखोद्गीथमे उपासनाविधानहोकैसेसन्निधिसे उद्गीथमुपासीतइससामान्यविधानकीविशेषाकांक्षामेपासस्वशाखाकेविशेषसेआकांक्षादिकीनिवृत्तिहै इसकोछाड़शाखांतरविशेषपकड़नेमेहेतुनहींहै तिससे प्रतिशाखामेव्यवस्थाप्राप्तिसे कहिता है अङ्गावबद्धास्त्विति तुपक्षवारकहै नस्वशाखासुहिप्रतिवेदं जोप्रतिवेदकोस्वशाखामेनहींठहिरसकेहैं अपितुसबशाखोंमे घुसेंगे कैसे उद्गीथादिसमानसुननेसे जोउद्गीथमुपासीतयहसामान्यश्रुतिस्व शाखामेरही तोसन्निधिसेविशेषमे पहुंचाई पीड़ितहो सोन्याय्य नहीं है सन्निधिसेश्रुतिबलीहै तिससेस्वरादिभेदमे उद्गीथादिकेसमानमे सबशाखोंकेउद्गीथादिमे ऐसे प्रत्ययहोवें भाव सामान्यकाव्यत्ययपेक्षासेस्वशाखाकीव्यक्तिग्रहहै सामान्यश्रुतिसेसन्निहितव्यक्तिग्रहनामसंकोचकरो जहांव्यक्तिमात्रग्रहनहीं है जैसे शुक्लगोकोलाइसमेगोसुननेकेपासशुक्लव्यक्तिमे उसवाक्यकासङ्कोच है

मंत्रादिवद्वाऽविरोधः ५६

एकशाखाकीबातकेदूसरीशाखामें सम्बन्धसे विरोधप्रतीतया उसकोसमानकेसम्बन्धकहाथा अबएकशाखाकीबातकादूसरीमें विरोधनहींहै अथवाविरोधकीशङ्कामतकरो किकैसे अन्य शाखाकेउद्गीथादिमें अन्यशाखामें विहितप्रत्ययहोवें मन्त्रादिवत्-अविरोधकीउपपत्तिसे जैसे यजुर्वेदीको कुक्कुटोसीति यहमन्त्रहै और कुटरुरसीति यहमन्त्रनहींहै तौभीचाउर पीसन के अर्थचक्कीकेलेनेमें उक्तदोनोमन्त्रोंकेविकल्पसे विनियोगमेंकुटरुरसीति यहमन्त्रप्राप्तहै मैत्रायणीयोंकेशाखामें समिदादिप्रयाजनहींपढ़ेहैं उनकोभीपञ्चत्वरूपगुणकाविधानहै जैसे ऋतवो वैप्रयाजाःइत्यादितुल्यकर्मस्थलमें होतव्यहैंशाखांतरमेंपढ़ेसमिदादिगुणियोंकेसाथसम्बध्यमानहैं गुण जैसे यजुर्वेदियोंको अग्नीषोमीयपशुसुनाहै नकिअजजातिविशेषतोभीप्रैषमन्त्रलिङ्गसे जातिविशेषकासंग्रहहै छागस्यवपायामेदमोनुब्रूहीतिमन्त्रोंका औरउदाहरण सामवेदकेमन्त्रोंकायजुर्वेदमें संग्रह है अग्नेर्वेहीं त्रम्वेरध्वरमित्यादि औरवह्वृचपठितसूक्तकाआध्वर्यवमेंसजनीयं शस्यं इससे परिग्रहदेखा है योजातएवप्रथमोमनस्वानिति अर्थ जोजन्मावालप्रथमगुणोंसेश्रेष्ठहै मनस्वान्विवेकवान्सो इन्द्र है हेजनासोजनहैंसजनासइन्द्रइस्से उपलक्षितसूक्तसजनीयहै उसका यजुर्वेदमेंजोअध्वर्युकर्तृकप्रयोगहै उसमेंकहिनादेखाहै तिससेजैसे आश्रयकर्माङ्गोकासर्वत्रघुसावहैऐसेआश्रितप्रत्ययोंकाभी घुसाव हैइससेअविरोधहै ॥

समस्तोपासनाधिकरण ॥ ३२ ॥

भूम्नःक्रतुवज्ज्यायस्त्वन्तथाहिदर्श यति ५७

वैश्वानरकीव्यस्तअर्थात्प्रत्येकद्युलोकादिकीउपासना और समस्तअर्थात्द्युलोकादिकेअङ्गीकीउपासनाहै अश्वपतिराजाने औपमन्यवसे पूछाकिव्यस्तोपासनकहो उसनेदिवकहाएषवै सुतेजाआत्मा वैश्वानरोयन्त्वमात्मानमुपास्से इत्यादि समस्तोपासनभीतस्यहवाएतस्यात्मनोवैश्वानरस्यमूर्द्धैवसुतेजाइत्यादिसे कहाहै इसमेसंशयहै किक्यायहांव्यस्तसमस्तदोनो का उपासन है यासमस्तकाहै प्रत्यङ्गमेप्राप्तहै सुतेजआदिमेउपास्सेइसक्रियापदकेसुन्नेसेऔरसुतादिफलभेदसुन्नेसे तवसुतंप्रसुतमासुतंकुलेदृश्यतइत्यादि अर्थ सुतखण्डितसोमद्रव्यहै उसीकीअवस्था प्रसुतादिहैं सोमयागतेरेकुलमेदेखतेहैं व्यस्तोपासनप्राप्तहै इससेकहाकि भूम्नः बहुतबस्तुरूपसमस्तवैश्वानररूपका उपासन ज्यायस्त्वम् इसवाक्यमेमुख्यविवक्षितयोग्यहै नकिप्रत्येकअङ्गकाउपासन क्रतुवत् जैसे दर्शपूर्णमासादिमेसमस्तसांगप्रधानकाप्रयोग एकविवक्षितहै नकिप्रयाजादिव्यस्तोकाप्रयोगऔरनकिएक देशांगयुक्तप्रधानकाप्रयोगविवक्षितहैतैसेसमस्तोपासनहैकैसेभूमाज्यायान्हैवैश्वानरविद्याकेविषयमे पूर्वापरएकवाक्यहोनेसे वह यहकिप्राचीनशालादिउद्दालकांतछहऋषिइससेअपनेको अनिपुणजानअश्वपतिकैकेयराजाकेपासगयेथे एकएककाउपास्यद्युआदिमेएकएककोसुनाके मूर्द्धात्वेषआत्मनइतिहोवाचेत्यादिसे उनको मूर्द्धादिविधानकरफिरमूर्द्धातेव्यपतिष्यत्यन्मांनागमिष्यत् इसनेव्यस्तोपासनकीनिन्दाकरीहै फिरव्यस्तोपासनछांड़ समस्तोपासनलेकेभूमाश्रयफलदिखायाहैससर्वेषुलोकेषुसर्वेषुभूतेषुसर्वेष्वात्मस्वन्नमत्तीति अन्नभोजनफलहै जोतेजआदिमेपृथक्फल सुनाहै सोअङ्गफलहैतोभीप्रधानाधीनहै उपास्से यह प्रत्यङ्ग मे क्रियापदसुननासमस्तोपासनानुवादार्थहै नकिव्यस्तोपासनके विधानार्थहै तिससे समस्तोपासनकापक्षश्रेयान्है कोईयहक-

हितेहैं किज्यायस्त्वशब्दसे सूत्रकारकोसमस्तोपासनपक्षश्रेयान् दृष्टहै उसीसे व्यस्तोपासनपक्षभीउसकोश्रेष्ठअनुमतहै सोअयुक्तहै वाक्यभेदकीकल्पनासे मूर्द्धावाक्यमें निन्दाकेविरोधसे सूत्रमें ज्यायस्त्वशब्दप्रमाणवानकी आशयसेहै शांकरीयवाक्यभेदादिदोषनहींहैं अवांतरप्रकरणभेदसे जोव्यस्तकाफलथोरा तो बहुनिंद्यहै समस्तोपासनकेफलभूरिसे जिनदिनोंमें मूर्ति पूजा नहींथी उनदिनोंमेंऋषिविराट्रूपईश्वरकीऐसीउपासनाकरते थेजैसा किद्यु १ सूर्य २ वायु ३ व्योम ४ जल ५ पृथिवी ६ सिर आंखसांसटुंडीलिङ्गपांवजेक्रमसे उसके अङ्ग उपासनार्थ हैं ऐसे ध्यानकरे किईश्वरकासिरद्युलोकहै ऐसेऔरोंमें जानलो ॥

विद्यानानात्वाधिकरण ॥ ३३ ॥

नानाशब्दादिभेदात् ५८

पिछिलेअधिकरणमेंफलभेदमेंसमस्तोपासनज्यायःकहाथा इससेबुद्धिहै किअन्यभिन्नउपासनसमासकरउपासेजावेंगे अपिच वेद्यकेअभेदमें विद्याभेदनहींजानसक्तेहैं विद्याकावेद्यरूपहै जैसा यागकारूपद्रव्यदेवताहै श्रुतिनानामेंवेद्यएकईश्वरज्ञाताहै मनोमयःप्राणशरीरःकंब्रह्मखंब्रह्म सत्यकामइत्यादि तैसेएकप्राण प्राणोवावसम्वर्गःप्राणोवावज्येष्ठश्चेत्यादि इनमेंवेद्यैक्यसेविद्यैक्य है इस पक्षमें गुणान्तरपरहोनेसे नानाश्रुतिव्यर्थनहीं हैं तिससे स्वयापरकीशाखामेंपढ़ाएकवेद्यकेआश्रयगुणमात्रउपसंहर्तव्य है विद्याकोंकात्स्न्यार्थ इसकाउत्तर नानेतिवेद्याभेदमेंविद्या भिन्न योग्यहै कैसेशब्दादिभेदात् जैसेवेदोपासीतसक्रतुङ्कुर्वीतेत्यादिशब्दभेदकहिचुकेपहिले श ब्दान्तरेकर्मभेदइससूत्रसेआदिशब्दसेजैसासम्भवहोवैसागुणादिभेदहेतुयोजनीयहैंननुभिन्नार्थवाचीयाग दानहोमशब्दहैं इनमेंविध्यर्थभावनाकाभेदयुक्तहै धात्वर्थभेदसे

औरउपासनमें वेदोपासीतेत्यादि शब्दकाअर्थउपासनाकायागादिवत्स्वतःभेदकेअभावसेसिद्धगुणब्रह्मएकसविषयसेभीभेदनहीं है फिरकैसेउपासनाभेदहै वेदोपासीत इसमेंशब्दभेदहै न कि यागादिवत्अर्थभेदहैइनसबकामनोवृत्त्यर्थकेअभेदसेऔर अर्थान्तरकेअसम्भवसेसोकैसेशब्दभेदसेविद्याभेदहैयहदोषनहीं है मनोवृत्तिकेअर्थोंकेअभेदमेंभी अनुबन्धकेभेदसेवेद्यभेदमेंविद्याभेद सिद्धहै जैसे छत्रादिगुणभेदसेराजोपासनभेदहै जैसे आमिक्षावाजिनगुणोंकेभेदसेयागभेदहैतैसेप्रतिविद्यामेंफलादिभेदसे यादहरशांडिल्यादिनामभेदसेभेदयुक्तहैजैसेएकचैत्रमल्लादिगुणोंसेमल्लादिनामोंसेकहाताहै एककेहीईश्वरोपासनार्थप्रतिप्रकरणमें भिन्न२गुणसिखायेहैं औरएकप्राणकेतहां२उपास्यकेअभेदमेंअन्यादृग्गुणअन्यत्रउपासितव्यहै अन्यादृग्गुणअन्यत्रऐसेअनुबन्धभेदसेवेद्यभेदमेंविद्याभेदजानतेहैं एकविद्याविधिहै अन्यगुणविधिहैं श्रुतिनानासेनहींकहिसक्तेहो एकपक्षमेंहेतुकेअभावसे वेद्यैक्यकेनिमित्तमेंविद्यैक्यसर्वत्रनिरङ्कुशजानेमेंभी समस्तगुणोपसंहारअशक्यहै दहरकाध्यानीसबलोकोंमेंकामचारी होता है वैश्वानरध्यातासर्वत्रअन्नभक्षकहोताहै यह अधिकरण पादकीआदिमेंसङ्गतथा परयहांप्रासङ्गिकहै तिससेअच्छा कहा किनानाशब्दादिभेदादिति ॥

अहंग्रहोपासनाधिकरण ॥ ३४ ॥

विकल्पोऽविशिष्टफलत्वात् ५९

विद्याकास्वरूपभेदकहाथा अबअनुष्ठानरीतिकहिताहै विद्याकेतीनभेदहैं अहंग्रह तटस्थ अङ्गाश्रितश्क्याअहंग्रहमेंइच्छासेसमुच्चयहै याविकल्पहै अथवानियमसेविकल्पहै समुच्चयनियममेंहेतुनहींहै विद्याभेदकीस्थितिसे ननु भिन्नअग्निहोत्रदर्श-

पूर्णमासादिकासमुच्चयनियतदेखाहै उक्तसमुच्चयमेहेतु नित्यता श्रुतिहै विद्याकेसमुच्चयमेनित्यताश्रुतिनहींहै इससेसमुच्चय का नियमनहींहै नकि विकल्पमे नियम है विद्यान्तर मे अधिकृत काविद्यान्तरमेअनिषेधसे अन्तिमेठहिराकौइच्छानुसारकरे जिनकाईश्वरप्राप्तिफलउच्यमानहै उनकाविकल्पन्याय्यहै मनोमयःप्राणशरीरःकंब्रह्मखंब्रह्मसत्यकामादि नहींहै यहदोष समानफलस्वर्गादिकेसाधनकर्मोंमेयाथा काम्यकेदेखनेसे तिससेजैसीइच्छाहो वैसाकरेसोनहींहै विकल्पःअहंग्रहादिका विकल्पयोग्यहै नकिसमुच्चयक्युंएकफलसेवुहउपास्यकासाक्षात्करण है फिरजोएकोपासनानेउपास्यईश्वरादिकेसाक्षात्कारमेदूसरी व्यर्थहै औरसुनोसाक्षात्कारकासमुच्चयपक्षमे असम्भवहै चित्तविक्षेपहेतुसे यस्यस्याद्द्धानविचिकित्सास्तीतिदेवोभूत्वादेवानप्येतीति जिसकोईश्वरहूं मैऐसासाक्षात्कारहो मैईश्वरहूं यानहीं हूं ऐसासंशयभीनहो उसीकोईश्वरकीप्राप्तिहै यह पूर्व श्रुत्यर्थ है जोतिमे आपकोदेवजानबूझदेवहोकेमरेपीछेदेवोंकोपाताहै यह दूसरीश्रुत्यर्थहै अहंग्रहादिकेअनुष्ठानकीरीति जैसविशिष्टफलार्थविद्याहैं उनमेसेअन्यतमकोलेकेउसीविद्यासेवेद्यमेघुसेमिलेएकहोजावेऐसाजबतककरेतवतकउपास्यविषय का साक्षात्करणसेसाक्षात्कारफलप्राप्तहोवे ॥

काम्यसमुच्चयाधिकरण ॥ ३५ ॥

काम्यास्तुयथाकामंसमुच्चीयेरन्नवापूर्वहेत्वभावात् ६०

सयएतमेवस्वायुंदिशांवत्सवेदनपुत्ररोदंरोदितिसयोनामब्रह्मेत्युपास्तेयावन्नाम्नोगतन्तत्रास्यकामचारोभवतीति अर्थ जो

वायुकोबछराऔरदिशोंकोगायेंउपासताहै सोपुत्रशोककोनहीं लभताहै सदापुत्रजीतारहिताहै तटस्थोपासनविषयहैं क्रियावत् अदृष्टआत्मासेअपनेफलकोसाधकइनकाम्यविद्योंमेसाक्षात्कारणकीअपेक्षानहींहै फिरइनकायथाकामसमुच्चयहै यासमुच्चयनहींहै पूर्वहेत्वभावात् अविशिष्टफलत्वादिति इस विकल्प हेतुकेअभावसे ॥

प्रतीकोपासनाधिकरण ॥ ३६ ॥

अङ्गेषुयथाश्रयभावः ६१

लौकिकऔरकर्माङ्गकेभेदसेप्रतीकदोठबहैं लौकिकप्रतीककानिर्णयपूर्वहोचुकाहै अवयथाकाम्यकर्माङ्गोमेविचार है जैसे क्रतुकेसेवनमेक्रत्वाश्रितअङ्गोंकासमुच्चितअनुष्ठानकानियमहैतैसे अङ्गानुष्ठानमेअङ्गाश्रितउपासनोंकेअनुष्ठानकानियम है यह सूत्रार्थहै कर्माङ्गउद्गीथादिमेजेआश्रितप्रत्ययतीनवेदोंमे विहित हैं क्याउनकासमुच्चयहै यायथाकामहैं इससंशयमे यथाश्रयभावः कहाहै जैसे इनकेआश्रयस्तोत्रादिमिलकेहोतेहैं ऐसे प्रत्यय भीआश्रयतन्त्रसेप्रत्ययोंकामिलकेअनुष्ठानहै यदिप्रयोगबिधिअङ्गानुष्ठानकरावे औरनकिउपासनोंकातदाअङ्गाश्रितउपासनाव्यर्थहैं यहभावहै ॥

यहपूर्वपक्षसूत्रहै ॥

शिष्टेश्च ६२

जैसे आश्रयस्तोत्रादितीनवेदोंमेंशिष्टशंसितविहितहैं ऐसेही आश्रितप्रत्ययहैं उपदेशकृतकुछविशेषनहीं है अङ्गोंकाऔरअङ्गाश्रितप्रत्ययोंकागोदोहनके अनुष्ठानकानियमनहीं है चमसकी पलटेमे विधानसे गोदोहनकेनियममे चमसबिधिव्यर्थहो उपा-

सनोंकाकिसी अङ्गकेपलटेमेंविधाननहींहै इस्से समुच्चयनियम-
विरुद्धनहींहै यहभावार्थहै ॥

समाहारात् ६३

होतृषदनाद्धैवापिदुरुद्गीतमनुसमाहरतीति ॥

जोप्रणव ऋग्वेदियोंकाहै सोसामवेदियोंकाउद्गीथहै इसी छांदोग्यमेंप्रणवउद्गीथकेऐक्यकीध्यानविधिहै उसकाफलयथादहोतृषदनादित्यादिहै होताकाशंसनहोतृषदनशब्दसेलक्ष्यमानहै स्वरादिप्रमाद से उद्गाताबुरे उक्थको अच्छेहोतृष*दनसे निर्दोषकर्त्ताहै शंस्यमानप्रणवसेअपनेउद्गीथकोऐक्यकेध्यानबलसे सामवेदकेउद्गीथध्यानकाऋग्वेदोक्तप्रणवसेसम्बन्धदेखाहै सो होअङ्गोंकासबवेदांतमेंविहितोपास्तिकेसमुच्चयमेंलिङ्गहै प्रणवरूपवस्तुकाऔरउपासनोंकावेदांतोक्तमाहात्म्यसेवेदांतरोक्तअङ्गकेसम्बन्धसमानतासे सर्ववेदोदितप्रत्ययोंकेउपसंहारकासूचकलिङ्गदर्शनहै ॥

* स्थल ॥

गुणसाधारण्यश्रुतेश्च ६४

विद्यागुण और विद्याश्रयओं को साधारण तीनवेदमें सुनाहै ओंसेत्रयीविद्यायाचिवेदोक्तकर्मवर्त्ततेहैं ओमित्याश्रावयत्योमितिशंसत्योमित्युद्गायतीतिच इस्से ध्येय ओंकेसाधारण्य से ध्येयाश्रितध्यानोंकेसमुच्चय से अनुष्ठानरूपलिङ्गदर्शनहै अन्वयकहाअबव्यतिरेककहितेहैं अथवागुणसाधारण्यश्रुतेश्चेतियदि कर्मगुणउद्गीथादिसबसबप्रयोगमें साधारणनहींहोवेतिसमें उद्गीथादिकेआश्रयप्रत्ययोंकासहभावनहींहो उद्गीथादिसर्वाङ्गयाहिप्रयोगवाक्यसे सर्वप्रयोगसाधारणसुनेहैं फिरआश्रयसहभावसे प्रत्ययसहभावहै समाधिसूत्रहै ॥

नवातत्सहभावाश्रुतेः ६५

जैसे आश्रयभावआश्रितउपासनोंकाहोनायोग्यनहींहै वैसे तत्सहभावाश्रुतेः जैसे त्रिवेदीमेंपढ़े स्तोत्रादिअङ्गोंकासहभावसुनाहै अहस्वाग्रहोत्वाचमसस्वोन्नोयस्तोचमुपाकरोतिस्तुतमनुशंसतिप्रस्तोतःसामानिगायहोतुरेह्यिजेत्यादि ऐसी उपासनोंमें सहभावश्रुतिनहींहै प्रयोगवाक्यउपासनोंकेसहभाव प्राप्त होसोनहीं उपासनापुमर्थ है प्रयोगवाक्यक्रत्वर्थउद्गीथादिकेसहभावप्रापकहो विमतउपासनाक्रतुमें समुच्चयकरअनुष्ठेय नहीं है भिन्नफलसे गोदोहनवत् जैसे एकगायको दोबच्चेचोंटेहैं तैसे उद्गीथादिक्रत्वर्थाश्रय हैं हैंभीतोभीगोदोहनादिवत्पुमर्थहैं अङ्गऔरअङ्गावलम्बनउपासनोंका यहउपदेशाश्रयविशेषहै क्रिएकक्रत्वर्थहैंएकपुमर्थहैंयहशिष्टःसूत्रका निरास है समाहाराद्गुणसाधारण्यश्रुतेश्चजेदोलिङ्गमानांतरसे प्राप्तकेद्योतकहैं नकिसाधकहैं श्रुतियुक्तिके अभावसे सहभावकेअकरणहैं आश्रयाधीनउपासनआश्रयकेअभावमें मतहो औरनकिआश्रयसहभावसे सहभावनियमयोग्यहै सहभावनियमनसुन्नेसे तिससे जैसीइच्छा होवे तैसीउपासना अनुष्ठानकरे ॥

दर्शनाच्च ६६

प्रत्ययोंकाअसहभावश्रुतिदिखातीहै एवंविद्धवैब्रह्मायज्ञंयजमानंसर्वांश्चर्त्विजोभिरक्षतीति ऋग्वेदादिविहितांगलोपसेव्याहृतिहोमप्रायश्चित्तादिज्ञानवान्ब्रह्माहै सबप्रत्ययके उपसंहारमें सबसर्ववित् इसरीतिसे नज्ञानीब्रह्माकोइतरोंकापालनकीर्तनहो तिससे यथाकामउपासनोंकासमुच्चयऔरविकल्पहै ॥

इतिआयुक्ताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येतृतीया-

ध्यायस्य तृतीयःपादःपूर्णः ॥

ज्ञानान्तरङ्गबहिरङ्गसाधनपाद ४

आत्मज्ञानस्वातंत्र्याधिकर ॥ १ ॥

पुरुषार्थोतःशब्दादितिबादरायणः १

अबऔपनिषद्आत्मज्ञानक्या अधिकारीकेद्वारासेकर्ममेघुसताहै यास्वतन्त्रपुमर्थकासाधनहैऐसामीमांस्यमानअपनेअभिप्रायसेहिउपक्रमताहै पुरुषार्थोतइति अतःवेदांतविहितआत्मविज्ञानस्वतन्त्रसेपुमर्थसिद्धिबादरायणमानताहै यह कैसे जाना है शब्दादिति वेदने कहाहै सयोहवैतत्परमंब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतीत्यादि श्रुतिवृन्दकेवलविद्याकोपुमर्थहेतुसुनातेहैं ॥

शेषत्वात्पुरुषार्थवादोयथान्येष्विति-जैमिनिः २

उक्तअसहमानकर्मठबोलउठा जैसे आत्माकर्त्ताहै कर्मशेषसेतैसेआत्मज्ञानभीव्रीहिप्रोक्षणादिवत्विषयद्वारासे कर्म सम्बन्धिहै इसके ज्ञातप्रयोजनआत्मज्ञानमेजोफलश्रुतिहै सोअर्थवाद है यहजैमिनिमतहै सूत्रमेअर्थवादपदद्वोहराकरलोफिरज्ञानसे जोपुमर्थवादहै सोअर्थवादहै यहभावहै यथान्येषु द्रव्य संस्कार कर्मसु द्रव्यमे यस्यपर्णमयीजुहूर्भवतीत्यादि संस्कारमे यदङ्क्ते चक्षुरेवभ्रातृव्यस्यवृङ्क्ते अर्थ पर्णमयीद्रव्य यजमानकाअञ्जन संस्कारहै कर्ममेयत्प्रयाजानुयाजाइज्यंतेवर्मवाएतद्यज्ञस्यक्रियतेवर्मयजमानस्यभ्रातृव्याभिभूत्याइत्यादि वर्म कवच प्रयाजादिकर्महै इत्यादिमेफलकासुननाअर्थवादहै तैसाहीज्ञानमेफलश्रुति अर्थवादहै अङ्गिकेफलसेअङ्गफलनिश्चितहै सिद्धान्ति शङ्का कैसे

अनारभ्याधीतआत्मज्ञानकोप्रकरणादिहेतुकेविनाक्रतु मे घुसा-
सक्तेहो ज्ञानकर्माङ्गवादी कर्त्ताकेद्वारावाक्यसेआत्मज्ञानकाक्र-
तुमेसम्बन्धहै सोनहींवाक्यसेबिनियोगकी असिद्धि से अनारभ्या-
धीतोंकाअव्यभिचारिकिसीद्वारसेवाक्यनिमित्तक्रतुसम्बन्धकल्पा
मानहै कर्त्ताव्यभिचारिद्वारसेलौकिकवैदिककर्म मे साधारण है
तिससेकर्त्ताकेद्वाराआत्मज्ञानकाक्रतुसम्बन्धसिद्ध नहीं है समा-
धिज्ञानकर्माङ्गवादीसेहै किवैदिककर्मोंसेअन्यत्र व्यतिरेक ज्ञान
काअनुपयोगनहींहै देहभिन्नात्मज्ञानलौकिककर्ममेउपयुक्तनहीं
है देहात्मासेभीदृष्टार्थमेप्रवृत्तिकीसिद्धिसे वैदिककर्मोंका[illegible]पी-
छेफलदेहभिन्नात्मज्ञानकेविनाप्रवृत्तिकीसिद्धिनहींयुक्तहै इससे
देहभिन्नआत्मज्ञानउपयुक्तहै ननु अपहतपाप्मादिबिशेषणोंसेअ
संसारीपरऔपनिषदर्शनप्रवृत्यङ्गनहींहोगा सोनहीं जिसकेअ
र्थंजाय।दिप्रियभोग्यहै सोआत्माद्रष्टव्यहै इसभोग्यचिन्हसे सूचि
तभोक्तृभिन्नअकर्तृस्वरूपनहींहै सावकहैंअपहतपाप्मादिविशेष
ण लटकसेवार२असंसारीकासंसारीबनातेहैं याउलटाकरतेहैं

आचारदर्शनाच्च ३

जनकोहवैदेहोबहुदक्षिणेनयज्ञेनेजेयच्यमाणोवैभगवन्तो-
हमस्मीत्यादि ईजे जनकयज्ञकरचुकाथा फिरवेऋत्विज्केकैय-
राजाकेपासगयेउसनेकहाकिमैयज्ञकरूंगा आपयहांठहिरये ऐ
साब्रह्मवेदीकाकर्ममेसम्बन्धदेखाहै यद्यपियहवाक्यविद्या विधि
परहै तथापियज्ञमेऐसाहै कि जैसे सज्जनकेपासगवैयाजावेबु-
हकुकगीतसुनधनदेदेवेउद्दालकादिअपनेबेटोंकोसिखातेथे इस
सेगार्हस्थ्यकासम्बन्धविदितहै अल्पायासज्ञानसेपुमर्थंकीसिद्धि
सेवह्वायासवित्तव्ययकर्ममेक्युंवेफसते जोघरमेसहितमिलेतोवन
गिरिमेकिसलियेजावे ॥

तच्छ्रुतेः ४

यदेवविद्ययाकरोतिश्रद्धयोपनिषदातदेववीर्यवत्तरम्भवतीति अर्थ लोकमेजोकामविचारसेप्रीतिसेसामग्रीसेकिया जाता है सोअतिपूर्णहोताहै शेषअधूरेरहितेहैं इससेकेवलविद्यापुमर्थनहींहै किन्तुकर्मसहितहै जोसवनङ्गेवोमुण्डेभिखारीफिरे तोखानेपहिरनेकोकहांसेमिले ॥

समन्वारम्भणात् ५

तम्विद्याकर्मणीसमन्वारभेतेइति अर्थ परलोककेजानेवारेकेसाथवेजातेहैं फलकेआरम्भमेविद्याऔरकर्मकासाहित्यदेखनेसेविद्यास्वतन्त्रफलार्थनहींहै नहींनिपुणशिल्पवेदीविद्यासेघटकाकामदेसक्ताहै यहश्रौतऔरसौत्रार्थहै ॥

तद्वतोपिविधानात् ६

आचार्यकुलेवेदमधीत्ययथाविधानंगुरोः कर्मातिशेषेणाभिसमावृत्यकुटुम्वेशुचौदेशेस्वाध्यायमधीयानइत्यादि ऐसीश्रुतियांसमस्तवेदार्थज्ञानीकोकर्मकाअधिकारदिखातीहैं तिस्से भीज्ञानस्वतन्त्रफलकाहेतुनहींहै यद्यपिअधीत्यपदसुन्नेसेपाठमात्रप्राप्तहै नकिअर्थज्ञान तथापिजैसाधानोंकाकूटनाभूसीछुटानेकेअन्ततकहै ऐसाअध्ययनभीअर्थज्ञानकेअन्ततकहै क्युंकिपाठकादृष्टअर्थज्ञानफलकेसम्भवहोनेमेपाठकाअदृष्टार्थमाननायोग्य नहीं है यहपूर्वतन्त्रमेस्थितहैऔरब्रह्मभीवेदार्थहैइनहेतुओसेब्रह्मज्ञानीकोभीकर्मकाविधानहै ॥

नियमाच्च ७

कुर्वन्नेवेहकर्माणिजिजीविषेच्छतंसमाः एवन्त्वयिनान्यथेतोस्तिनकर्मलिप्यतेनरेइति यजुर्मन्त्रार्थ इह देहसे कर्मकर्त्ताहुआ

सौवर्षजीवनकीइच्छाकरजोतूअपनेशुभकर्मसेजीवेगा तोतुजिन रमे कर्मअर्थात्पापनलगेगा इतः कर्मसे अन्यथा अन्यकुछजी-वनार्थयत्नकर्मकेविनाश्रेयनहींहै तथाएतद्वैजरामर्यंसत्रंयदग्नि-होत्रञ्जरयावाह्यस्मान्मुच्यन्तेमृत्युनावेतिऐसेनियमोंसे विद्याकर्मशेषहैहोचुकाकर्मठोंका।सिद्धांतअवसुनोज्ञानियोंकाआकूत ॥

अधिकोपदेशात्तुवादरायणस्यैवन्तद्द-र्शनात् ८

तुशब्दजैमिनीयमतव्यावर्तकहै जोकहाथाकि शेषत्वात्पुरु-षार्थवादःसोअयुक्तहै कैसे अधिकोपदेशात् यदिसंसारी शारीर शरीरमात्रसेभिन्नवेदान्तमें उपदिष्टहोतदाउक्तरीतिसेफल श्रुति-अर्थवादहो अधिकः शारीरसेईश्वरकर्तृत्वादिधर्मशून्यअपहत-पाप्मादिविशेषणयुक्त योगीवेद्यवेदांतमें उपदिश्यमान है ऐसे ज्ञानकर्ममेप्रवर्तकनहींकिन्तुउलटाकर्मोच्छेदक है तिससे पुरुषार्थोतः शब्दादिति इससेजोमतवादरायणकाथा सोतैसाठहिराहै उसकोशेषत्वादिहेत्वाभासोंसेनहींहटासक्तेहो तत् तमधिकं देहीसेईशकोश्रुतिदिखाती हैं यःसर्वज्ञःससर्ववित्महद्भयम्वज्ञमुद्यतमित्यादि जोप्रियादिसूचनसेसंसारीकेवेदनार्थअनुकर्षणथा जैसा किआत्मनस्तुकामायसर्वम्प्रियम्भवतीत्यादि सोभी अस्यमहतोभूतस्येत्यादि योऽशनायापिपासेशोकम्मोहंजरांमृत्यु-मत्येति ऐसेवाक्यशेषोंसेअधिककी उपदिदिक्षामेअत्यन्तभेदकीअभिप्रायसेजीवकाअनुकर्षणनहींहै इससे अविरोधहै ज्ञान कर्माङ्गहै अफलहोनेमेकर्मशेषाश्रयत्वसेयहहेतुअसिद्धहै क्युंकिपारमेश्वरस्वरूपशारीरकापारमार्थिकऔरऔपाधिकशारीरहै नान्यदतोस्तिद्रष्टा इनसेवेदान्तमेंयहीवार९है ॥

तुल्यन्तुदर्शनं ९

आचारसेकर्माङ्गज्ञानकहाथा उसकाउत्तरहै कि तुल्यं अ कर्मशेषमेविद्याकाआचारदर्शनतुल्यहै एतद्धस्मवैतद्विद्वांसआहु ऋषयःकावषेयाःकिमर्थावयमध्येष्यामहेकिमर्थावयंयक्ष्यामहेए- तद्धस्मवैतत्पूर्वेविद्वांसोअग्निहोत्रञ्जुहवांचक्रिरेइति यहयज्ञादि सेविरागसेईश्वरमेरागादिदिखातीहै आत्मवेदीब्राह्मणपुत्रवित्त लोकतीनइच्छाकोछाड़भीखमेरुचिसेमुक्तिमानतेहैं यहएकश्रुति काअर्थहै अथभिक्षाचर्यमित्यादि याज्ञवल्क्यादिब्रह्मवेदियोंने- कर्मत्यागहीसंन्यासकहाहै नकिलिङ्गोंकाधरनायाज्ञवल्क्यप्रव- व्राजेति औरयक्ष्यमाणोवैभगवन्तइत्यादि वैश्वानरविद्याविषय मेलिङ्गदर्शनहै इस्से सोपाधिकब्रह्मविद्यामेकर्मज्ञानकासाहित्य सम्भवहै ब्रह्मवेदीकोलोकसंग्रहार्थभीकर्ममे प्रवृत्ति अनुचित है ब्रह्मविद्यामेकर्मअङ्गनहींहै प्रकरणादिकेअभावसे ॥

असार्वत्रिकी १०

यदेवविद्ययाकरोतीति यहश्रुतिकाविषयसबविद्यानहीं हैं किन्तुप्रकृतउद्गीथविद्याहीविषयहै इससेसबविद्याकर्माङ्गनहींहैं

विभागःशतवत् ११

तस्विद्याकर्मणी। इसकाउत्तरहै कि विभागः यहांवांटऐसा है किविद्याअन्यपुरुषकेपीछेजावे औरकर्म अन्यपुरुषकेपीछेजा वेहै कैसे शतवत् जैसे सौदोकोदेनेकाहनेमेपचासरएकएकको देतेहैं समन्वारम्भवाक्यमुमुक्षुपरनहींहै संसारी परहै नुकाम- यमानइति औरअकामयमानमुमुक्षुसेपृथक्उपक्रमितहै संसा- रीमेविद्याविहितयानिषिद्धग्रहीतहै विशेषकेअभावसे विहितो द्गीथादिविद्या।निषिद्धहै नग्ननारीध्यानादिरूपवत् कर्मभीयथा-

प्राप्तिके अनुवादादिसे विहित निषिद्ध है ऐसे अविभागमें भी समन्वारम्भवाक्य समर्थ है ॥

अध्ययनमात्रवतः १२

आचार्यकुलाद्वेदमधीत्यइत्यादि अध्ययनमात्रवालेको कर्मविधि निश्चित है ननु वेदार्थज्ञानशून्यसे कर्ममें अधिकार नहीं नहीं मैं अध्ययनजन्य कर्मके बोधन अधिकारके हेतुका आकार कहूं किन्तु हिंसात्वसे औपनिषद् आत्मज्ञान प्रयोजनवत् जो ज्ञान पड़ता है सो नहीं कर्माधिकार हेतु होसक्ता है यह बतलाता हूं जैसे एकक्रतुका ज्ञान क्रत्वन्तरमें अपेक्षित नहीं है तैसा ही कर्ममात्रमें भी वेदान्तार्थज्ञान अपेक्षित नहीं है ॥

नाविशेषात् १३

कुर्वन्नेवेह इस नियममें विद्वान्का विशेष नहीं है विद्वान् अविद्वान्को अविशेषसे नियम विधान है ॥

स्तुतयेऽनुमतिर्वा १४

कुर्वन्नेवमें अपर विशेष कहता है कि प्रकरणकी सामर्थ्यसे विद्वान् ही कुर्वन्‌से सम्बद्ध है सो भी विद्यास्तवार्थ कर्मानुज्ञान द्रष्टव्य है नियम अज्ञको है ज्ञको ज्ञानके स्तवार्थ है कुर्वन् इसका व्यासमतसे अर्थ है कि एवं कर्मकर्त्तानरमें नेतो ब्रह्मभावसे अन्यथास्तिकर्मसे संसार नहीं होगा यतः कर्म न लिप्यते कर्म अपूर्वरूप लेपार्थ नहीं है

कामकारेण चैके १५

मुख्याः ॥

कोई प्रत्यक्ष क्रिया विद्याका फल उसीको था मके फलांतरसाधन प्रजादिमें प्रयोजनका अभाव सुनाता है कामकारेणेति वाजसनेयिनी है एतद्धस्मवैतत्पूर्वे विद्वांसः प्रजां न कामयन्ते किम्प्रजया करिष्याः

मोयेषांनोयमात्माऽयंलोकइति अर्थ एतत्ब्रह्म येषां नो हम-
को अयं अपरोक्षआत्मा अयमेवलोक: पुमर्थहै ते हमप्रजादि-
सेक्याकरेंगेऐसाशोचकर्मकोछोड़तेहैं मैकहिचुकाप्रियवार२कि
विद्याकाफलप्रत्यक्षशब्दसेअनुभवमेंचढ़ाहै नकिक्रियाफलवत्का
लांतरभावीहै विनासुनेकभीविद्याहोतीहीनहींहै इसमें भीनवि
द्याकर्मकाशेषहै औरनकिविद्याविषयमेंफलश्रुतिअयथार्थठहि-
रासक्तीहो ॥

उपमर्दंच १६

अविद्याकृतक्रियाकारकफलरूपसबप्रपञ्चकाविद्यासामर्थ्यसेस्व
रूपकाउपमर्दचित्तसेनिवृत्तिपढ़तेहैंयत्र त्वस्यसर्वमात्मैवाभूत्तत्के
नकम्पश्येदित्यादि वेदांतसेकहोआत्मज्ञानसेकर्माधिकारमेंजो
सिद्धिकोप्रत्याशासनहै उसकोकर्मकेअधिकारकाउच्छेदहै तिस
सेविद्यास्वतन्त्रहै ॥

ऊर्ध्वरेतस्सु चशब्देहि १७

शब्देवेदमेंऊर्द्धरेत:आश्रमोंमेंविद्यासुनतेहैंनकिउनमें कर्मा-
ग्निहोत्रादिएतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छन्त:प्रव्रजन्तीत्यादि अनेक
र्मियोंकोविद्याकाअधिकारनहीं कहाहै अथवा शब्देहि जिससे
वेदमें तीनआश्रमपठित हैं त्रयोधर्मस्कन्धाइति कर्मप्रधानआ-
श्रमतीनहैं ब्रह्मचर्यगृहाश्रमवानस्था३ चौथाब्रह्मसंस्थहै यमाश्र
ममिच्छेत्तमावसेदिति अर्थ जिसमें रुचिहोउसमेंवसेनकिबचनसुन-
हठसेसन्यासमेंघुसेरुचिकेअनुमारश्रुतिस्मृतिमेंभेदहै तिसमें वि-
द्याकर्मकानसमुच्चयहैनकिविकल्पहै किन्तुज्ञानहीमोक्षकासाध
नहैरतिपुत्रधर्मार्थसेत्रिविधविवाहहैनित्यनैमित्तिककाम्यभेद से
त्रिविधहैअध्ययनमात्रमेंहोब्रह्मचर्याश्रमपूराहै शेषायुर्विवाहार्थ-

है यदहरेवविरज्येततदहरेवप्रव्रजेद्ब्रह्मचर्याद्वागृहाद्वावनाद्वेति-इसनेवैराग्यमात्रसेप्रव्रज्याकोविधानकरगृहाश्रमकीनित्यताका वाधकियाहै तस्मादेकोवह्वीर्विन्देतेति श्रुति: तस्मादेकस्यवह्वीो जायाभवन्तिनैकस्यैवहव:सहपतयइति ऊर्ध्वरेतसोज्ञानमात्रंना नुष्ठेयमितिस्वांतंजैमिनिमुने: ॥

परामर्शं जैमिनिरचोदनाचापवदतिहि १८

त्रयोधर्मस्कंधा: जेशब्दऔर्ध्वरेतसादिकेसाधननहीं हैं जिससेइनमेपरामर्शहोआश्रमांतरकाजैमिनिमानताहै नकिविधि कैसे इनमेलिङ्गादिमेसेकोईचोदनाशब्दनहोनेसे जेशब्दअर्थान्तरपरउपलब्धहैं त्रयोधर्मस्कन्धाइसमेक्रमसेहै कियज्ञोध्ययनंदानमिति प्रथमस्तपएवद्वितीयो ब्रह्मचर्याचार्यकुलवासीतृतीयोत्यन्तमात्मानमाचार्यकुलेवसादयन्सर्वेएतेपुण्यलोकाभवन्तीति अर्थ आश्रमोंकाअनात्यन्तिकफलपरामर्शपूर्वककहिकेफिरआत्यन्तिकफलद्वाराब्रह्मसंस्थकेस्तवार्थब्रह्मसंस्थोमृतत्वमेतीतिकहाहै ठीकहैकीपरामर्शमेभीआश्रमप्राप्तहैं तोभी उनकीप्रसिद्धिस्मृति आचारनेकरीहै और नकि प्रत्यक्षश्रुतिनेप्रत्यक्षश्रुतिविरोधसेवे सेव्यनहीं हैं

याअनधिकृतअन्धादिकेलियेहैं गृहीदोबिधहैं साग्निकऔरनिरग्निकभेदसेननुगार्हस्थ्याभी और्ध्वरेतसोंकेसाथपरामृष्ट है जैसे यज्ञोध्ययनंदानमितिप्रथम: ठीकहै तोभीतोगृहस्थोकोअग्निहोत्रादिकेविधानसेश्रुतिसिद्धगार्हस्थ्य है तिससे स्तवार्थपरामर्शहै नकिचोदनार्थंचापवदतिहि प्रत्यक्षश्रुतिगृहस्थसेअन्यका निषेध करती है वीरहावाएषदेवानांयोग्निमुद्वासयते आचार्यायप्रियं धनमाहृत्यप्रजातंतुंमाव्यवच्छेत्सीर्नां पुत्रस्य लोकोस्तितत्सर्वेपश-

वोविदुरित्यादि औरश्रुति येचेमेरण्ये श्रद्धातपइत्युपासते तपः-
श्रद्धे येह्युपवसंत्यरण्ये इनने देवयानका उपदेश किया है नकिगृ-
हस्थान्य आश्रमका उपदेश किया है तपएवद्वितीयइत्यादि में आश्र-
मांतरका कहिना संदिग्ध है स्कंधशब्द आश्रममें अरूढ होनेसे और
एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छन्तःप्रव्रजन्तीति आत्मलोकवडाजान
पुत्रादिप्रेमछाड़ अशक्यपारिव्राज्यकरते हैं सोयहवर्तमान क्रियो
पदेशसेस्तुति है स्कन्धश्रुतिपुरोवाद है नकि अनुवाद है वेदमें आ-
श्रमभेद नथा नयीश्रुति औरस्मृतियोंसे उनके अनेकभेदवहिरेचि
न्हसे औरभाविविचारसे हैं कात्यायनस्मृति है किगायत्रीब्राह्मःप्रा
जापत्योबृहन्निति ब्रह्मचारीचतुर्विधः अर्थ गायत्री मात्रपढा १
वेदके अन्तितकपढ़ा २ स्वदारगामी ३ नैष्टिकगुरुघरमें मरा ४
वार्त्ताकःशालीनोयायावरोघोरसंन्यासिकश्चेति कमायखावे १
वैठेवैठेमिलेसोखाय २ छहकर्मसेखावे ३ उञ्छवृत्तिग्रामवासी
घोरसंन्यासी है हिंसाविसुखसे ४ जेचारगृहीकहे वैखानसऔ
दुम्वरोवालखिल्यःफेनपश्च वन्यखावे १ गूलरवेर आदिखाये २
आठमासकोकमाईवर्षामेंचारमासखावेवचेसोदेदे ३ गिरेपत्त
फलखावे ४ जेचारगृही हैं कुटीचकावहूदकाहंसाःपरमहंसाश्च
पुत्रकेघरमेंरहैत्रिदण्डी १ जलादिपासरक्खे तीर्थमेंफिरे २ कच्छा
दिकरेंगाउंमेएकरातिरहें ३ सर्वकर्मत्यागीआत्मरत ४ इसने
लोकका संस्तवकिया है नकिपारिव्राज्यकीविधिकी है ब्रह्मचर्यादे
वप्रव्रजेदित्यादि इनसे जावालादिनेप्रत्यक्षपरिव्रजनविधानकि-
या है ठीकतो है परजेअपेक्षाहैं नहीं हैं जावालाकेनामसेआधुनि
कहैं ॥

दूसरावर्णांक ॥

त्रयोधर्मस्कन्धाइति इससे आश्रमों का अधिकार कर फिर
पढ़ाकि सर्वेएतेपुण्यलोकाभवन्तीति इससे आश्रमसेवियोंको पु

ण्यलोकफलकहिकेपढ़ाकि ब्रह्मसंस्थोमृतत्वमेतीति इससेमोक्ष कासाधनब्रह्मनिष्ठाही कहीहै सोयह ब्रह्मनिष्ठापुण्यलोककामी आश्रमियोंकेलियेहैसोभीनहींहै ब्रह्मनिष्ठासर्वव्यापी सम्भवहैआ- श्रमकेकर्मोंको करके जैसा अवकाशहोवे तैसा ब्रह्ममे निष्ठाक रनेकोसुकरहै औरकहांयहनिषेधहै किलोककामोब्रह्मकोनजा नेऔरकहांवेदमेपढ़ाहै किकषायवस्त्रपहिरने से ब्रह्म वर्षता है तिससेहै सबआश्रमियोंकेअर्थब्रह्मनिष्ठा सबव्यापारछोड़ब्रह्ममे चित्तलगानाब्रह्मनिष्ठाहै कर्मानुष्ठानऔरकर्मत्यागकामिथो वि- रोधसेकर्मठमेब्रह्मनिष्ठाकासम्भवहोनहींहै तिससे श्रौतादि कर्म कात्यागहीब्रह्मनिष्ठाहै ॥

अनुष्ठेयंबादरायणःसाम्यश्रुतेः १९

अनुष्ठेयअर्थात्आश्रमांतरसेव्य है यह बादरायण मानते हैं मैव्यासइसजैमिनिमतकानिरासकर्त्ताहूं कि वेदमेअग्निहोत्रा- दिकेसुन्नेसेवेअवश्यअनुष्ठेयहैं फिरउनकेविरोधसेअनधिकृताधि कृतआश्रमांतरहैं जैसे गार्हस्थ्यसेव्यहै तैसे आश्रमांतरभीअनि च्छुकोसेव्यहै कैसे साम्यश्रुतेः त्रयोधर्मस्कन्धाइत्यादि जैसेश्रुत्यन्त रमेविहितगार्हस्थ्यकाइसमेपरामृष्टहै ऐसे आश्रमांतरभीप्रतिप त्तव्यहै दृष्टांत उपवीतविधिपरवाक्यमेजैसेशास्त्रान्तरसेप्राप्त नि वीतप्राचीनावीतकापरामर्शहै उपवीतम्मनुष्याणांप्राचीनावीत म्पितृणामुपवीतन्देवानामिति अर्थ दैवकर्ममेउपवीतका विधा नहै उपवीतकेस्तवार्थदोकाअनुवादहै मानुषकर्ममेदेहार्धवस्त्र- कावन्धननिवीतहै सोकर्यार्थसे प्राप्तहै पित्र्यकर्ममेप्राचीनावीत- विध्यन्तरसेप्राप्तहै तिससेगृहस्थोऔरआश्रमांतरतुल्यसेव्यहैं तै- से एतमेवप्रव्राजिनोलोकमित्यादि इससेपारिव्राज्यविधेयहै वि धेयवेदानुवाक्यादिकोसाहित्यसे औरभीश्रुतिसाम्यहै कि येचे-

त्यादि विधेयपञ्चाग्निविद्याकेमाथवानप्रस्थकोकहिनेसे वानप्रस्थभीविधेयहै तोनस्कंधप्रतिज्ञातहैं भूरियज्ञादिधर्महैं जैसे यष्टव्य अध्येतव्यदातव्य पृथक्जन्मेहैं इनको आश्रमकेसम्बन्धसे अन्यत्रतीनमें अन्तर्गतनहोंकरसक्तेहो श्रुतिमेंयज्ञादिचिन्होंसेगृही एकधर्मस्कन्ध ब्रह्मचारीदूसराकहाहै तपोमुख्याश्रमसे औरधर्मस्कन्धकौनहै येचहूसआरण्यचिन्हसे तिसपरामर्शमें भी आश्रमांतरअनुष्ठेयहै ॥

संन्यासाधिकरण ॥ २ ॥

विधिर्वाधारणवत् २०

आश्रमान्तरकोविधिहै नकिपरामर्शमात्रहै स्कंधश्रुतिसेनुस्कंधश्रुतिविधायिकामानेमेएकवाक्यकारोधहोगाऔर सो प्रतीतहै पुण्यलोकफलदतोनधर्मस्कन्धहैं औरब्रह्मसंस्थतामोक्षफलदाहैसत्यहैजोकहातुमनेहमतोएकवाक्यकोछाड़विधिमानतेहैं अपूर्वसेऔरविध्यन्तरकेनदेखनेसेविस्पष्टसे आश्रमविधिभेदकल्पनवरहै आश्रमान्तरप्रत्ययसे गुणवादकल्पन।सेएकवाक्यअसिद्धहै धारणवत् यथाधस्तात्समिधन्धारयन्ननुद्रवेदुपरिहिदेवेभ्योधारयतीति अर्थ महापितृयज्ञमे प्रेताग्निहोत्रमेस्रुक्मेधराहविजबआहवनीयकेपासलावेतवहविकेनीचेसमिध कोधरे अनुद्रवेदितिइससेविहितहैनीचेधरनास्तावकसे उपरिहि इसकेसाथएकवाक्यहोनेमेभीदैवहोममेस्रुगदण्डकेऊपरसमिधधरनेमे विधिमानीहै अपूर्वसेयहवाक्यभेदतीसरेअध्यायमे जैमिनिसेकहागयाहै विधिस्तुधारणे अपूर्वत्वादिति तैसेयहांभीआश्रमपरामर्शश्रुतिविधिकल्पीगयीहै इसमे चारआश्रमोंकाविधानहै यह पक्षकहाथा। अबतोपरामर्शसेतीनकाअनुवादऔरएकपारिव्राज्यकाविधानहै किब्रह्मसंस्थतास्तवसामर्थ्यसेअवश्यविधेय है और

सोब्रह्मसंस्थताख्याचारआश्रमोंमें जिस किसीकोयापरिव्राजक कोहै यहत्रिविकल्प्यहै चौथाआश्रमव्यासनेब्रह्मसंस्थशब्दसे चलाया है रीति यदिब्रह्मचार्यन्तआश्रमोंकेपरामर्शमें परिव्राजकभीपरामृष्टहै तदाचारोंकेपरामृष्टकेअविशेषसेअनाश्रमीनहो अनाश्रमीनतिष्ठेतइसनिषेधसे जोकोईचारोंमें ब्रह्मसंस्थहोगाऔरपरामृष्टनहींहै तिससे परिशिष्यमाणपरि ब्राट्ही ब्रह्म संस्थ सिद्ध होगा कोईवैखानसग्राहीतपःशब्दसे परिव्राट् परामृष्ट कहते हैं सोअनुचितहै वानप्रस्थके विशेषणतपशब्दसे परिव्राट् का ग्रहण योग्य नहीं अन्यथानिर्बाहहोतो जैसे ब्रह्मचारीऔरगृहीअपनेर विशेषणोंसे विशेषितहैं तैसे भिक्षुवैखानसभीहोयहयुक्तहै तप कृच्छ्रादिवानप्रस्थकेअसाधारणधर्म है कायक्लेशमुख्यसे कायक्लेशमें तपरूढ़है औरभिक्षुकातपइन्द्रियसंयमादिहैं फिरचारआश्रमप्रसिद्धहुये तोतीनकापरामर्शअन्याय्यहै औरभेदभी कहाहै फलसे त्रयएतेपुण्यलोकभाजएकोमृततत्वभागिति ऐसानहीं कहाजाताहै किचैत्रमैत्रमन्दप्रज्ञहैं औरइनदोमें एक महाप्रज्ञ हैऐसाहोगाकिवेदोंमन्दप्रज्ञहैंऔरजैत्रमहाप्रज्ञहै तिससेपूर्व के तीनआश्रमीपुण्यलोकभागी हैं वचापरिव्राट्सो अमृत भागी है फिरयहतोकहोकिब्रह्मसंस्थशब्दयोगवृत्तिसे सबआश्रमोंमें सम्भवहै फिरकैसे परिव्राजकमें ठहिररहाहै रूढ़िमानेमें आश्रममानसे अमृतकीप्राप्तिसे ज्ञानव्यर्थहो भाव मैं मानलूंब्रह्मसंस्थातीनोंकोपरमेश्वरीबुद्धिमें ऐसाहोताहै किकर्मिरहैतोचित्तउनके कालद्रव्यादिकेजोड़नेसे विच्छिन्नरहनेमेंब्रह्म संस्थाकी सिद्धि नहीं है औरकर्मत्यागमें परिव्राट्हा है इस्से ब्रह्मसंस्थहै तोमुझि संन्यासी काहीइष्टसिद्धिहै सोनहीं ब्रह्मसंस्थवहहै जोसबव्यापारछोड़ब्रह्मनिष्ठहै सोतीनमें सम्भवनहीं है जिसआश्रममें बसेगा उसके विहितकर्मकोनहींकरनेमेंप्रत्यवायसुननेसे और परिव्राजककी

सबकर्मोंकिसंन्याससेप्रत्यवायकासम्भवनहींहै जो अननुष्ठान के-
निमित्तसेहै औरश्रतिधर्मश्रमादिब्रह्म संस्थता का उपोद्दलक अ-
र्थात्सहकारीबढ़ानेवालाहै नकिविरोधी संन्यासाश्रमका कर्म
श्रमादिसेउपबृंहितब्रह्मनिष्टत्वहैइतरोंकेस्वाश्रमकर्मयज्ञादिहैंय
त्नप्रेमपुञ्ज है ब्रह्म निष्ठाकेव्यतिक्रमसे संन्यासीकोप्रत्यवायहैसर्वक
र्मत्यागीकोश्रोमर्थमेनिष्ठाब्रह्मनिष्ठाहै इससे अन्य अनुष्ठेयनहीं है
तीर्थाटनादिइस्मार्थहैं तथाचन्यासइतिब्रह्मा ब्रह्माहिपरःपरोहि
ब्रह्मातानिवाएतान्यवराणितपांसिन्यासएवात्यरेच अर्थन्यासमं
न्यास ब्रह्माहि हिरण्यगर्भ पर प्रसिद्ध इससेब्रह्मत्वकरस्तुत सं-
न्यासहीपर कहि कर्मकीनिन्दाकर्त्ताहै तानि इस्से ज्ञानद्वारा
मोचकहोनेसेन्यासहीअधिकहै ऐसीश्रुतियांब्रह्म संस्थ को कर्म-
काअभावदिखातीहैं अबतोब्रह्मसंस्थशब्द ज्ञान प्रधानाश्रम का
वाचीहोनेसेऐसीविधिबनालेतेहैं किअमृतत्वकामस्तमाश्रमम-
नुतिष्ठेदिति यहपरिणामीविधिहै नकिश्रौतहै आश्रममात्रसेअ
मृतप्राप्तिमें भीज्ञानव्यर्थनहींहै इतरआश्रमोंकेपरामर्शमेभी पा
रिव्राज्यब्रह्मसंस्थरूपलब्धहै उक्तविचारव्यासनेआश्रमांतरकेवि-
धायिनीजाबालश्रुतिकीअनपेक्षाकरकराहै कृत्वाचिन्ता पिछि
लीबातलेकेचिन्ताकृता जैसे यहांस्कन्धश्रुतिलेकेचिन्ताकरी है
यहभावहै आश्रमांतरमेंविधिश्रुतिप्रत्यक्षहै ब्रह्मचर्यं समाप्य गृ-
हीभवेद्गृहीभूत्वावनीभवेत्वनीभूत्वाप्रव्रजेत्यदिवेतरथाब्रह्मचर्या
देवप्रव्रजेतगृहाद्वावनाद्वेति यहश्रुतिअनधिकृतअन्धादिकेलिये
कहीहै सोभीनहींकहिसक्ते हो अविशेषसुन्नेसे अन्ध अनन्ध सा-
मान्यश्रुतिकोअर्थसेनहींघुसासक्तेहोहेतुकेअभावसेयहभावार्थहै
संन्यासकापृथक्विधानहैअनधिकृतोंकोअथपुनरव्रतीव्रतीवास्ना
तकोवास्नातकोवोत्सन्नाग्निरनग्निको वेत्यादि इससेअर्थव्रतीगो

दानादिवेदव्रतवाला गुरुकुलसेछुटेपीछेभ्याज्ञागुरुसेवीस्नातकहै उत्पन्नाग्निविधुरहै अनग्निकजिसनेअग्निकाआधान नहीं कियाहै जैसवसंन्यासीहोवें पूर्णाङ्गकथञ्चित्कर्ममें अनधिकृतोंको संन्यासयुक्तहै भग्नाङ्गअन्धादिकोज्ञानप्रधानसंन्याससे अधिकार नहींहै दृष्टिपूतसञ्चारादिश्रवणादिकेविनाज्ञानकोअसिद्धिसे परिव्रजनकोब्रह्मज्ञानकाअङ्गश्रुतिदिखातीहै अथपरिव्राड्विवर्णवासामुण्डोऽपरिग्रहः शुचिरद्रोही भैक्षाणोब्रह्मभूयायभवतीति ब्रह्मसाक्षात्कारार्थहै चतुर्थी तिससे ऊर्ध्वरेतआश्रम सिद्धहै औरऊर्ध्वरेतोंमेंविद्या स्वतन्त्रसिद्धहै विधानसे शरीरंमेविचर्षणंजिह्वामेमधुमत्तमाकर्णाभ्यांभूरिविश्रुवमिति यद्यपिजैदेहपूर्णप्रार्थनालिङ्गसंन्यासियोंकोशङ्कराचार्यनेनहींलिखेहैं तोभी उनकेटीकाकारोंनेपूर्णाङ्गको संन्यासमें अधिकारार्थलिखेहैं परन्तु ऐसेमन्त्रगृहीकोप्रार्थनार्थहोतेहैं संन्यासीकोअनिच्छुहोनेसे ॥

उद्गीथोपासनाधिकरण ॥ ३ ॥

स्तुतिमात्रमुपादानादितिचेन्नापूर्वत्वात् २१

सएषरसानांरसतमःपरमःपरार्ध्योऽष्टमोयदुद्गीथः इयमेवर्गग्निःसामअयम्वावलोकएषोग्निश्चितस्तदिदमेवोक्थमियमेवपृथिवीत्यादि अर्थ पृथिवी १ जल २ औषधि ३ पुरुष ४ वाक् ५ ऋग् ६ साम ७ इनसातरसोंमेरसतमआठमाउद्गीथांगअोंहै परमः परमात्माकोप्रतीकसे परब्रह्मकाआधेस्थानके योग्यहोनेसेपरार्ध्यहै क्याऐसीश्रुतियांउद्गीथादिको स्तुत्यर्थ हैं या उपासनविध्यर्थहैं इससंशयमेस्तुत्यर्थहैं उद्गीथादिकर्माङ्गोकोउपादानात् लिकेसूत्रसे इयमेवजुहूरादित्य १ कूर्म २ स्वर्गोलोकआहवनी-

य३ इत्यादि जुहूपृथिवी १ चयनयागमेंकुम्भासूर्य २ आहवनीयस्वर्गलोक ३ जैजैसेजुहू आदिकेस्तुत्यर्थहैं तैसे उद्गीथादिकोंस्तुतिरसतमादिगुणोंसेहैं इतिचेन्न इनकास्तुतिमात्रप्रयोजनयुक्तनहींहै अपूर्वत्वात् विध्यर्थमेअपूर्वअर्थकाविधानहै स्तुत्यर्थमेअपूर्वार्थव्यर्थहो विधिनात्वेकवाक्यत्वात्स्तुत्यर्थेनविधीनांस्युरिति इसमेविधायकशब्दकीस्तुतियुक्तहै वाक्यशेषभावमे जुहूश्रुतियांफलवज्ज्यवादिविधिप्रकरणमे स्तावकहोनेसेअर्थवतीहैं औरसतमादिश्रुतिक्रत्वङ्गविधिकेप्रकरणमेनहोनेसेफलवत्अपूर्वउपासनाकीविधायीहैं क्रत्वंतरश्रुतिवत् तिससेविध्यर्थऐसींजातिकीश्रुतिहैं ॥

भावशब्दाच्च २२

विधिशब्दाच्च ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत सामोपासीत अहमुक्थमस्मीतिविद्यादित्यादित्यादि जैस्पष्टविधिशब्दसुनेतैस्तुतिमात्रप्रयोजनमानेमे व्याघातितहो देवोमदिष्टंकुर्यादिति यहांप्रार्थनादिमेलिङादिप्रयोगदेखनेसेफिरउपासीतादिशब्द विधिपरकैसेनिश्चितहोंगे विधिमेन्यायविदोंकीस्मृतिसुनोकुर्यात्क्रियेतकर्तव्यंभवेत्स्यादितिपञ्चमं एतत्स्यात्सर्ववेदेषुनियतम्विधिलक्षणमिति मीमांसकलिङादि अर्थविधिबताते यह धोखा मतखायोकिश्लोकमेपांचपदहीविधिहैं क्योंकिश्लोकपूरणार्थपञ्चमपद है जैसे स्मृत्यर्थावतिपञ्चमइति धातु प्रत्यय कर्त्रादि कारक इनकेभेदमेभीविधिभेदनहींहै यही जतानेके लियेतोनधातुकेउदाहरणदिखायेथेऔर सर्वधातुकेअर्थसेउपरक्तभावनामेपुसाइष्टसाधनरूपविधि एककहितेहैं सूत्रमेभावविधिकही चशब्दफलार्थप्रकरण२मेफलसुनाया है आपयिताहवैकामानांभवति एषह्येवकामागानस्येष्टे कल्पान्तेहास्मै लोकाऊर्ध्वाश्चावत्तास्वेत्यादि ए

ष ऋत्विक्उपासककामागानस्य गानसेफललेनेमें दृष्टे समर्थ हैतिस्से उपासनविधानार्थउद्गीथादिश्रुतिहैं नकिकर्माङ्गहैं ॥

पारिप्लवार्थाधिकरण ॥ ४ ॥

पारिप्लवार्थाइतिचेन्नविशेषितत्वात् २३

अश्वमेधमेंसकुटुम्बराजाकोबैठारउसकेआगेवैदिकआख्यानोंकोअध्वर्युपढ़ताहै इसकानामपारिप्लवाख्यकर्महै जैसे यहकर्मवाक्यसेविहितकर्मांगहै तैसेही औपनिषदआख्यानभीअनुष्ठानकेउपयोगीहैं विद्यास्तुतिसेअनुष्ठानश्रेष्ठहै तिससेसबउपनिषद्पारिप्लवार्थ अर्थात् निष्फल है यहजैमिनिमतहै अथहयाज्ञवल्क्यस्यद्वेभार्येबभूवतुर्जनकोहवैदेहआसांचक्रेऐसेपारिप्लवाख्याननामभेदसेपढ़ेहैं तिस्से औपनिषदाख्यानकर्माङ्गनहींमन्त्रवहोसका हैऔरसन्निधिसेविद्यास्तावकमेंविद्यावाक्योंके साथएकवाक्यतालब्धहोगीतिससे आख्यानविद्यास्तावक हैं प्रतर्दनोहवैदैवोदासिरिन्द्रस्यजानश्रुतिर्हपौत्रायणइत्यादि जैसे ऋग्मेंसुनःशेपादिकेशतमन्त्रहैं मन्त्रउपनिषद्कीकथाओंमें संशय है किवेपारिप्लवकेअर्थहैं यासंनिधानसेविद्याकीप्रतिपत्यर्थहैं जोकथाश्रुतिपारिप्लवार्थहैं कथासामान्यसेऔरकथाप्रयोगपारिप्लवमेंचोदितहोनेसेऔरइससेवेदांतविद्याप्रधाननहो मन्त्रवत् प्रयोगकेशेषसे जैसे देवस्यत्वासवितुरित्यादि इनमन्त्रोंमेंकोईपदप्रयोग समवेतार्थहै औरशेषप्रयोगांतरहैं तसे मबवेदांतकोकथाप्रयोगशेष हैं औरसबवेदांतोंकोएकवाक्यसेकर्मशेषहोनेमेंविद्याप्रधाननहीं इतिचेत् न यदियहकहोसोनहींहै कैसे विशेषितत्वात् पारिप्लवमाचक्षीतेति इसप्रकरणमें प्रथमेहनिमनुर्वैवस्वतोराजेत्यादि कथाविशेषहैं जोकथासामान्यसेसबकाग्रहणहो तोविशेषणव्यर्थहो इसलियेउपक्रमकासंकोचयुक्तहै तिससेपारिप्लवार्थनेकथा

श्रुतिमहीं है ॥

तथाचैकवाक्यतोपबन्धात् २४

चउपलक्षणार्थकावारकहै आख्याननिकटपाठसेविद्या के उपयोगीन्याय्यहैं एकवाक्यतोपबन्धात् प्ररोचनाके योग से और प्रत्तिपत्तिसौकर्यकेयोगसेमैत्रेयीब्राह्मणमेआत्मावाअरेद्रष्टव्यः इसआद्यविद्याकेसाथएकवाक्यतादेखो प्रातर्दनमेभीप्राणोस्मीति इसआद्यविद्याके जानश्रुतिमेभीवायुर्वावसंवर्गइति आद्यविद्या केसआत्मनोवपामुद्खिदित्यादि अर्थ प्रीतिजननार्थप्रजापति होमार्थअपनीचरबीनिकारताथा यहउसविधिकाशेषहै जोआगेलिखताहूं प्राजापत्यमजंतूपरमालभेतेति अर्थ तूपरदाढ़ीवालेछाग कीचरबीप्रजापतिकोप्रियहै ऐसेआख्यानकर्मश्रुतिमेसन्निहितविधिकीस्तुत्यर्थहैं तैसे औपनिषदआख्यानहैं तिससेवेपारिप्लवार्थनहीं है ॥

अग्नीन्धनाद्यनपेक्षाधिकरण ॥ ५ ॥

अतएवचाग्नींधनाद्यनपेक्षा २५

विमतब्रह्मवोध स्वांगकर्मोंकेसापेक्षफलदाताहै अङ्गि होने सेप्रयाजादिसापेक्षदर्शपूर्णमासवत् विमतब्रह्मवोधस्वनिवर्त्य के निवर्तनमेअन्यकीअपेक्षानहींकर्त्ताहै प्रकाशसेदीपवत् औरघट ज्ञानवत् सूत्रार्थहैकि अत:शब्दसेपुरुषार्थोत:शब्दादिति इसकासम्भवसेपरामर्शहै अतएवच विद्यापुमर्थहेतुहोनेसे अग्निइन्धन आदि आश्रम कर्मों की विद्या पुमर्थादि की सिद्धि मे अनपेक्षिका है ॥

सर्वापेक्षाधिकरण ॥ ६ ॥

सर्वापेक्षाचयज्ञादिश्रुतेरश्ववत् २६

अबयहचिन्ताहै किविद्याकोअत्यन्तअनपेक्षाहै आश्रमकेक मौंकीयाकुछअपेक्षाहै अतएवचाग्नीन्धनाद्यनपेक्षा इससेअत्यन्त उनकीअनपेक्षाउसकीहै इससेकहाकिसर्बापेक्षाचेति विद्यास- बआश्रमकर्मोंकीअपेक्षिकाहै नकिअत्यन्तानपेक्षिकाहै आश्रम कर्मकीअपेक्षाऔरअनपेक्षाविरुद्धकथनहै सोनहींकहिताहूं ज- न्मोविद्याफलसिद्धिमेकिसीकीअपेक्षानहींचाहतीजन्ममेचित्तशु द्धियावैराग्यार्थकर्मादिचाहतीहै कैसे यज्ञादिश्रुतेः श्रुतियज्ञादि कोविद्याकासाधनदिखातीहै तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविवि दिषन्तियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनेति विविदिषन्ति इसपञ्चमीं लकारसेइच्छाभाव्यनहींविषयसौंदर्यकेलाभसेऔरवेदनफलमो क्षभाव्यनहींकर्मसेकिन्तुविविदिषाकेयोगसेकर्मविद्याकेजन्मके- साधनहैअश्रुतमोक्षफलनहींकल्पसक्तेहोअन्यथाकाठसे पचाता- हैइसमेभीकाठपाकफलतृप्तिका हेतुहोअथयद्यज्ञइत्याचक्षतेब्रह्म चर्यमेवतदिति इसमेविद्याकेसाधनब्रह्मचर्यकायज्ञादिकेसाथस्तु तिसेयज्ञादिसाधनसूचितहैं सर्वेवेदा*यत्पदमामनन्तितपांसि- सर्वाणिचयद्वदन्ति यदिच्छन्तोब्रह्मचर्यंचरन्तितत्तेपदंसंग्रहेणब्रवी म्योमित्येतदित्यादि * कुछवेदसाक्षात्ब्रह्मकोकहताहै कुछ ज्ञा नार्थकर्मद्वारा कर्मवेदउसवैद्यसाहैकिजोकटुकषायादिसेबर्तता है ज्ञानवेदउसवैद्यसाहै जोमधुरादिसेबर्तताहै फिरकौनसुधी- मधुरछाड़कटु सेवेगा अश्ववदिति योग्यताके बशसे जैसे घो- ड़ारथमेयुक्तहै नकिहलमे ऐसेआश्रमकर्मविद्याकेफलसिद्धिमेन हींचाहतेहैं उसकेजन्ममेचाहतेहैं बहिरङ्गसाधनकहै जैसे शुद्धा र्थमट्टीखरसेयावद्गसे लाईगई मेखरवद्ग शुद्धिमेनियतनहींहै अ न्तरङ्गअर्थात्जैसेशुध्यर्थशुद्धमिट्टीनकिखरवद्ग परलाना ॥

शमदमाद्युपेतःस्यात्तथापितुतद्विधेस्तदङ्गतयातेषामवश्यानुष्ठेयत्वात् २७

कोईमानताहै कियज्ञादिविद्याकेसाधनन्याय्यनहीं हैं वि-
धिकेअभावसे यज्ञेनेति ऐसीश्रुतिअनुवादरूपविद्याकेअभिष्टव-
परहै नकियज्ञादिविधिपरहै ऐसीमहाभागविद्याहै कि जिस-
कोयज्ञादिसेलाभकोइच्छाहै तथापितुशमाद्युपेतःस्यात् विद्या-
र्थीतस्मादेवंविच्छांतोदांतउपरतस्तितिक्षुःसमाहितोभूत्वात्मन्ये-
वात्मानंपश्यतीति जेशमादिसाधनविद्याकेमुख्यहैं तेषां विहि
तोंका अवश्यानुष्ठेयत्वात् अनुष्ठानयोग्यहै इससेशमाद्युपेतोभू-
त्वापश्यतीति यहवर्तमानकहानकिविधि सोनहि तस्मादिति-
प्रकरणमेस्तुतिकेग्रहणसेविधिप्रतीतिसे औरमाध्यन्दिनस्पष्टवि-
धिपढ़तेहैं पश्येदितिच तदङ्गतया साधनांगहै तद्विधेःशमादि-
विधिसेतिससेयज्ञादिकोअनपेक्षाहै औरशमादिकोअपेक्षाहै य
ज्ञादिश्रुतिसेयज्ञादिअपेक्षितपूर्वथे यहएकमतहै ननु कहाथा
कियज्ञादिभिर्विविदिषन्तीति इसमेविधिनहीं सच कहा था तो
भीअपूर्वसेसंयोगविधिकल्पतेहैं यज्ञादिकाविविदिषासेसंयोग-
पूर्वप्राप्तथासोविविदिषानेअनुवादनहींकिया दर्शपूर्णमासके प्र-
करणमेसुनाकि पुषाप्रपिष्टभागोदन्तकोहीत्यादि इन अश्रुतवि-
वाक्योंमेअपूर्वसेविधिकल्पनाकरप्रकृतिसे निकारविकृतिमेपूषा
केभागकासम्बन्धकियाथापौष्णंपेषणमितिइससूत्रसेविचारितहै
पूर्वतन्त्रमे विवेकहैकिएवंवित् इसविद्यासंयोगसेपासविद्यासा-
धनशमादिहीहैंऔरविविदिषासंयोगसेयज्ञादिवाह्यतरदूरतरहैं

सर्वान्नानुमत्यधिकरण ॥ ७ ॥

सर्वान्नानुमतिश्चप्राणात्ययेचतद्दर्श-

नात २८

छन्दोगोंकेप्राणसम्बादसेसुनाहैकिनहवाएवं*विदिकिञ्चनानन्नं
भवतीतिवाजसनेयियोंकेहैकिनहवाअस्यानन्नञ्जग्धं भवतिनान
न्नम्परिगृहीतमितिसर्वप्राणोपासककोअदनीयहै क्यासर्वान्नानु
ज्ञानशमादिवत्विद्यांगविधानयास्तवार्थसंकीर्तनहै इससंशयमें
विधिप्राप्तहैप्रवृत्तिविशेषकेलियेउपदेशहै प्राणविद्या केपाससेप्रा
णविद्याकेअङ्गसेयहनियमनिवृत्तिकहीहै जोऐसाहै तोभक्ष्याभ
क्ष्य के विभागकाव्याघातहोसोदोषनहींसामान्यकाबाधविशेषसे
युक्तहैजैसेप्राणिहिंसानिषेधकापशुवधविधिसेबाधहै यथाचनकां
चनस्त्रियम्परिहरेत्सद्व्रतमित्यादि इस वामदेव्यविद्याविषयकसब
स्त्री के अत्याग वाक्य से सामान्य गम्यागम्य विभागशासनबाधि
तहैवामदेव्यसामोपासकसबस्त्रियोंसे मैथुनकरैअन्यस्वदारासेऐ
सेहीसबअन्नभक्षणवाक्यसेभक्ष्याभक्ष्यविभागशासनबाधितहैसो
नहीं सिद्धांतकोसूत्रसेबाहिरदिखाताहै लोकरक्षार्थ विधाय-
कशब्दकेअलाभसे सर्वान्नानुज्ञानकीविधिनहींहै अनन्नम्भवति
इसवर्तमानकहिनेसेविधिप्रतीतिकेबिनाप्रवृत्तिविशेषकरनेकेलो
भसेविधिमाननेकोशक्यनहींहैऔरसुनोकिश्वादिमर्यादम्प्राणस्या
न्नमितियहकहफिरकहाकिनैवम्बिदःकिञ्चिदनन्नम्भवतीति नहीं
नरदेहसेकुत्ताकामांसअन्नखासक्ताहै यहचिन्ताकरसक्ताहै किस-
बप्राणकाअन्नहै तिससेप्राणान्नज्ञानकेस्तुत्यर्थयह अर्थवाद है न-
किसर्वान्नानुज्ञानकीविधिहै सो देखो सर्वान्नानुमतिश्चप्राणात्य
यइतिप्राणनाशमें याबड़ीविपत्तिमेंसबअन्नअदनीयकीअनुज्ञाहै
तद्दर्शनात् मटचीहतेषुकुरुष्वित्यादि मटचीटीडीइसछन्दोगब्रा
ह्मणमेंकथाहै किचाक्रायणउषस्तिजवटीडीनेकुरुदेशकीखेतीना-
शकरदीतबवुहअकालसेस्त्रीसाथलेइभ्यगाउंमें पहुंचा इभ्य के-

* सब प्राण का अन्न है ऐसे ध्यानीमे ॥

आधेखायेकुल्माषकोमांगकेखायेवचेतेस्त्रीको। दियेउसनेबांधिरा
खे फिरइभ्यसेकहाकिजलपीलवचाक्रायणनेकहा।केतेरेजूठेकुल्
माषइसहेतुसेखायेकिमुझिकोअन्नकीआपत्तिथी और जल तेरा
जूठानहींपीयूंगा क्युंकिवुहतड़ागआदिमेंपीलूंगा फिरप्रातःका-
लमेंवेरक्षितकुल्माषस्त्रीनेचाक्रायणकोदियेउसमेंइभ्यकेऔरअप
नेजूठेओरवासेकुल्माषखायेस्त्रीनेनहींखाये उसने भूख सह ली
फिरराजाकेयज्ञमेंगयेप्रागादिप्रस्तावादिदेवताकोकहि प्रस्तोत्रा
दिकोहराकेराजासेधनलेठहिराथा सोयहजूठाजूठा और वासा-
खानाऔरजलनपीनाइसशिष्टाचारकोदिखातीहैश्रुति की यह-
आशयलक्षितहै किप्राणनाशमेंप्राणधारणार्थअभक्ष्य भी भक्षणी
यहै औरबुद्धिमान्स्वस्थावस्थामेंअभक्ष्यनहींखावे यहजलपानके
निषेधसेजानाहैरोगकेनाशार्थसवअभक्ष्यभक्षणकरेअनशनतीर्था
दिमेंस्वर्गार्थप्राणनछोड़े नपुरायुषःस्वकामीप्रेयादितिश्रुतिनेस्वे
च्छासेमरनमनेकराहै स्वर्गार्थभीतिससेअर्थवादहै नहवाएवंविदो
त्यादि ॥

अबाधाच्च २९

आहारशुद्धौसत्वशुद्धिःसत्वशुद्धौध्रुवास्मृतिरितिऐसेभक्ष्या
भक्ष्यविभागशास्त्रोंकाअबाधहोगा अन्यथाइनकाबाधहोगाचसे
शिष्टाचारकाअबाधसुझायाहै ॥

अपिचस्मर्यते ३०

जीवितात्ययमापन्नोयोऽन्नमत्तियतस्ततो लिप्यतेनसपापेनप-
द्मपत्रमिवांभसेति इस मनुस्मरणसेविद्वान्मूर्खकोसाधारण अन्न
भक्षणविहितहै आपदामेंमादकद्रव्यनखावेधीध्वंसादिसेपरअन
रकमेंजन्मकीटादिमेंहोताहै यहस्मृतिसेप्रकटहै ॥

शब्दश्चातोऽकामकारे ३१

अनन्नकाप्रतिषेधकऔरकामकारकीनिवृत्तिप्रयोजन शब्द-काठकोंकीसंहितामें सुनते हैं तस्माद्ब्राह्मणः सुरांनपिबेदितिसो निषेधयुक्ततरहै नह्वाएवंविदीत्यादिकेअर्थवादहोनेसे तिससेइ सजातिकेसबअर्थवादहैं नकिविधिहैं ॥

सहत्वप्रयोगाधिकरण ॥ ८ ॥

विहितत्वाच्चाश्रमकर्मापि ३२

अबक्याविद्याकीनचाहताऔरआश्रम मात्रमेंनिष्ठ और अ-मुमुक्षुहै उसकोआश्रमकर्मअनुष्ठेयहै यानहीहै यहचिन्ताहै त मेतम्वेदानुवचनेनेत्यादिसेसर्वापेक्षाचेतिसूत्रमेंसोकहाथा आश्र मकर्मविद्याकेसाधनविहितहैं विद्याकाअनिच्छुऔरफलान्तरका मीकोनित्यकर्मअननुष्ठेयहैंयाउसकोभीअनुष्ठेयहैंजेविद्याऔरजि न कीविद्यासाधनत्वनहीं है नित्य।नित्य केसंयोगकेविरोधसेभाव जानेकासेकर्मकरेअनित्यहैं औरयावज्जीवादिविधिसेकरेनित्यहैं यहपायाथाउसकाउत्तरहैकिअमुमुक्षुआश्रममात्रमेंनिष्ठकोनित्य कर्मकर्तव्यहैं यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहोतीत्यादिकेविधानसे बच नकोबड़ाबोझकुछनहींहै ॥

सहकारित्वेनच ३३

कर्मविद्याकासाधननहींहैंउसकाउत्तरहै कि सहकारिविद्या स हकारीकर्महैं विहितहोनेसे तमेतम्वेदानुवचनेनेत्यादिसेनहीं-विद्यासहकारिवाक्यकर्मोंकोप्रयाजादिवत्विद्याके साथफलका-रीमन्तव्यहै अविधिरूपसेविद्याकोऔरविद्याफलअसाध्यहै ब्रह्म रूपसेविधिरूपसाधनहैं जैसे दर्शपूर्णमासादिमेंस्वर्गफलको सि-साधयिषासेसहकारीसाधनांतरकीकांक्षाहै विद्या ऐसी नहीं है अग्न्याधानपेक्षासेकहाथा तिससेकर्मविद्याजन्मानेमे सहका-रीहैं होंगेजोनीलसेनीलउजलाहोगाकर्मकेअभेदमेंसंयोगभेदसे

नित्यानित्यके संयोगका विरोधशङ्का नहीं है नित्य एक संयोग है जो यावज्जीवादिसे कल्पित है सो विद्याफलार्थ नहीं है अनित्यसंयोग दूसरा है जो तमेतम्वेदानुवचनेत्यादिसे कल्पित है सो विद्याफलार्थ है जैसे एक खादिरको नित्यसंयोगसे क्रत्वर्थत्व है और अनित्यसंयोगसे पुमर्थत्व है यह चिन्तासंयोगपृक्त्वसिति इस सूत्रमें है तन्त्रांतरमें दोवाक्यसे विनियुक्तका विनियोगविरुद्ध नहीं है तैसे यहां है कि विविदिषासे श्रवणादि सहकारीके लाभमें विरोध नहीं है

सर्वथापितएवोभयलिङ्गात् ३४

सर्वथापि आश्रमकर्मपक्षमें और विद्यासहकारीपक्षमें तए-व अग्निहोत्रादिधर्म अनुष्ठेय हैं एव अवधारणसे कर्मभेदकी शङ्का वारी है जैसे कुण्डपायिनामयने मासमग्निहोत्रं जुहुतीति इस-होममें नकियहां नित्यअग्निहोत्रसे कर्मान्तरका उद्देश है कर्मभेद है कर्मों को ज्ञानार्थ विधि है यह भाव है कैसे उभयलिङ्गात् श्रुतिलिङ्ग तमेतं वेदानुवचनेनेत्यादिसे सिद्धवत् जन्मरूप यज्ञादिको विविदिषामें विनियोग करचो है न कि जुहुतीत्यादिवत् अपूर्व रूप यज्ञेनेत्यादिका जन्माया है दूसरा स्मृतिलिङ्ग जिसको कर्तव्यताज्ञात है उस कर्मको विद्याजन्मार्थ दिखाता है अनाश्रित:कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यइत्यादि यस्यैत अष्टचत्वारिंशत्संस्काराइत्यादि संस्कारकी प्रसिद्धि वैदिक कर्ममें उक्तसे संस्कृत के विद्याको जन्मको अभिप्रायसे स्मृतिमें है तिससे अभेदका अवधारण अच्छा है ॥

अनभिभवञ्चदर्शयति ३५

एषह्यात्मा ननश्यतियंब्रह्मचर्येणानुविंदतीत्यादि ऐसी श्रुतियां ब्रह्मचर्यादिसाधकको रागादिक्लेशसे आत्माका नाश नहीं दिखाती हैं भाव जे यज्ञादि ज्ञानके हेतु विविदिषावाक्यमें विहित हैं तेही-आश्रमधर्म पूर्वकांडमें विहित हैं फिर इनके दोफलोंसे दोबार अनु-

छानहो सोनहीं जैसे श्राद्धभोजनसेतृप्तिनांतरीयकसिद्ध है तैसे
विद्यार्थअनुष्ठितकर्मोंसेआश्रमधर्मसिद्धहो विद्याहेतुकआश्रमऔ-
रआश्रमधर्मनित्यहोनेसेसहात्मयोगमेंनित्यानित्योंकेसंयोगकावि
रोधभीनहींहै वलीदोवाक्योंसेएककर्मकेआकारहोसेदोठौर मे-
यज्ञादिकाविधानसकृत्होप्रयोगार्थहै तिससेयज्ञादिआश्रमक-
र्महैं औरविद्याकेसहकारीहैं यहनिश्चयया ॥

अन्तराधिकरण ॥ ९ ॥

अन्तराचापितुतद्दृष्टेः ३६

तुनेआश्रमियोंकोहीज्ञानहोताहै इसनियमकावारणकिया
है चसबकोभीज्ञानमेंअधिकारकेसमुच्चयार्थहै औरज्ञान वेदही
सेहोताहै तिससेमनुष्यमात्रकोपठनीयहै विधुरादि द्रव्यादिही
न अन्यतमाश्रममेंप्रतिपत्तिहीनअन्तरालवर्तीचण्डालादिकोवि
द्यामें अधिकारहै यानहींहै इससंशयमें नहींहैउनकोअधिकार
आश्रम कर्म को विद्याहेतुकेनिश्चयसे और आश्रमकर्मकेअसम्भव
से सो नहीं अन्तराचापितु मनुष्य मात्रको विद्यामें अधिकारहै
कैसेतद्दृष्टेः रैक्ववाचक्नवीआदिकेब्रह्मवेदनमेंश्रुतिलभतीहै ॥

अपिचस्मर्यते ३७

ध्यानादिविद्याकेसाधकहैं असेअकृताश्रमधर्मसम्बर्तादिम-
हायोगियोंकाआचारनग्नचर्यादिस्मृतहै इतिहासमें ॥

विशेषानुग्रहश्च ३८

विद्याकासम्भव१८केत्यागसेदग्धकेसेवनसेउनकोहैसंन्यासकेवि
नादृष्टार्थविद्यानिषेधकेअभावमात्रसेअर्थीको अधिकार कर्ती है
श्रवणादिमें तिससेविधुरादिसबकोअधिकारमेंविरोधनहींहै ॥

अतस्त्वितरज्ज्यायोलिङ्गाच्च ३९

तुआश्रमकर्मोंकेअनुष्ठानार्थहै अत: अन्तरालवर्तीहोनेसेइ-
तरत् आश्रमवर्तीहोनाज्याय: श्रेष्ठविद्याकासाधन है कैसे लि-
ङ्गात् अनाश्रमीनतिष्ठेदिति इसस्मृतिलिङ्गसेतनैतिब्रह्मवित्पुण्य
कृत्तैजसश्चेति अश्रुतिसेविहितकासूचकहै भाव जिनकोबुद्धिशु
द्धिहेतुअग्निहोत्रादिवैदिककर्मोंकाअधिकारनहींहै उनको ज्ञा-
नकासम्भवभीनहींहै सोनहींहै सबकोज्ञानकासम्भवहै अहिंसा
इद्वाराबुद्धिशुद्धिसे अनाश्रमीविवाहार्थीरैक्वकीनाईसम्वर्गविद्या
मेंश्रुतिहै ऐसेहीआश्रमशून्यगार्ग्यादिउदाहार्य्यहैं बहुतशुद्धिके
हेतुसे आश्रमन्यर्थं नहीं है जो बाहिरे आश्रमके कल्पित चिन्हो
सेव्यर्थहोतोभीकुछहानिनहीं तिससेसबकोविद्याकासम्भव है ॥

तद्भूताधिकरण ॥ १० ॥

तद्भूतस्यतुनातद्भावोजैमिनेरपिनिय मातद्रूपाभावेभ्य: ४०

जोऊर्ध्वरेतआश्रमस्थापितकियेथे उनमेप्राप्तकोप्रच्युतिहै या
नहींहै यहसंशयहै पूर्वकर्मके अनुष्ठानकीचिकीर्षासेजैसेयतीअ-
ग्निहोत्रादिकोयारागादिवशसेजैसेयतीसेगृहीहोना ऐसाप्रच्युत
होविशेषकेअभावसे सोनहीं तद्भूतस्यतु प्राप्तऊर्ध्वरेत: कोनकि-
सीढबसे अतद्भाव: ऊर्ध्वरेतसेप्रच्युतहो कैसे नियमातद्रूपाभा-
वेभ्य: जैसे अत्यन्तमात्मानमिति यह नैष्ठिक नियमहै अरण्य
मियादिति एकांतरहै याकान्तरमें ततोनपुनरियादिति जैसे
संन्यासीहोकेफिरगृहीनहोधोखाआदिसेहोजावे तोलौटिजावे
आचार्येणाभ्यनुज्ञातस्चतुर्णामेकमाश्रमं आविमोक्षाच्छरीरस्यसो
नुतिष्ठेद्यथाविधीति ऐसेनानानियमप्रच्युतिकेअभावदर्शीहैं जै
से ब्रह्मचर्यंसमाप्यगृहीभवेत् ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेदित्यादिआरोह
मेंवाक्यलब्धहैं नकितैसेअवरोहमेंहैं नकिऐसेशिष्टहैं यहअतद्रू-

पप्रच्युतिमें प्रमाणकाअभावकहाहै न्यायसेजोजिसकेअर्थ विधी यमानहै सोउसकाधर्मकर्महै औरनकिजोजिससेअनुष्ठानकोश क्यहै सोउसकाधर्मकर्महै धर्मकालक्षणवैदिकविधिहै चोदनाल क्षणोर्थोधर्मः नियमशास्त्रकेवलसेरागादिनहींडिगासक्तेहैं जैमि नेरपि यहांअपिपदसेजैमिनिवादरायणदोनोंकीसम्मति प्रतिप- त्तिदृढ़ार्थशासिताहै इनकातात्पर्यहै किअन्यपुत्रादिसमर्थकेआ धीनअपनेगृहभारकोकरदेनकिसमर्थपुत्रादिकोगृहकर्मसे छुटा राखे ॥

भ्रष्टाधिकरण ॥ ११ ॥

नचाधिकारिकमपिपतनानुमानात्तद· योगात् ४१

कर्ममीमांसाकेछठेअध्यायकानामअधिकारलक्षण है उसमे जोकहाहैसोआधिकारिकहैसूत्र अव्रह्मचारीपशुश्वतद्वदाधानस्या प्राप्तकालत्वादिति अवकीर्णीअथयोव्रह्मचारीस्त्रियमुपेयात्सगर्द भंपशुमालभेतेति अर्थ विद्यार्थीमैथुनकरेतोगदहा का होम करे तद्वत् उपनयनहोमवत् जैसे जनेउमेहोमलौकिकआगमेहोता- है तैसेहीगदहेकाभीहोमलौकिकआगमेहोहै कैसे आधानस्यअ ग्न्याधानविवाहितस्त्रीकेसाथहोताहैइससेअग्न्याधानव्रह्मचारी कोप्राप्तहीनहींहै यदिनैष्टिकप्रमादसेमैथुनिकरे तोउसकोप्राय- श्चित्तहै यानहीं जोयहकहाथा पूर्वकांडमे सो नैष्टिक व्रह्मचारी कोनहींहै यहकैसेहै आरूढोनैष्टिकं धर्मयस्तुप्रच्यवतेपुनः प्राय- श्चित्तंनपश्यामियेनसुच्येत्सआत्महेति व्रह्मचर्यकेरक्षार्थयत्नबहुत करोयहजनापनार्थअचिकहिताहै किस्पष्टप्रायश्चित्तमैनहींदेखता हूं इसपतनबोधक स्मृति से तदयोगात् जैसे शिरकटेप्राणीको जिवानेकाकोईयत्ननहींहै तैसेहीनैष्टिककोप्रायश्चित्तकायोग न-

होंहै उपकुर्वाणकोप्रायश्चित्त है पतनायोगमुक्तसे यह पूर्व पक्ष है

उपपूर्वमपित्वेकेभावमशनवत्तदुक्तम् ४२

अपित्वेके एकआचार्यउपपातकमानतेहैं उसकोजोनैष्ठिक गुरुदारादिसेअन्यस्त्रीसेमैथुनिकरेक्योंकिमहापातकोंमेंन गिनने से तिससेउपकुर्वाणसमनैष्ठिककोभीप्रायश्चितहै ब्रह्मचारीऔर अवकीर्णीदोनोसमहोनेसे अशनवत् जैसे ब्रह्मचारीमधुमांसखा वेतोव्रतलोपऔरफिरसंस्कारकरेंऐसायहांहै जो प्रायश्चितनहींक हितेहैं उनकामूलनहींमिलताहै जोप्रायश्चित्तकहिते हैं उनको अविशेषसुननामूल श्रुति है ब्रह्मचार्यवकीर्णीति प्रायश्चित्तन्नप-श्यामिति इसकामूलश्रुतिकल्पाहै प्रायश्चित्तविधायोश्रु,तिक्लृप्त-से कल्पनीयवाधितहैयहभावहैतिससेप्रायश्चित्तयुक्ततरहै तदुक्तं पूर्वकांडकेप्रथमाध्यायमे समाविप्रतिपत्तिःस्याच्छास्त्रस्थावातन्नि मित्तत्वादितिअर्थयवमयचरुर्भवतीतिइसमेयवशब्दसेआर्य दीर्घ शूकअन्नलेतेहैं किसीदेशमेप्रियङ्गुकोयवकहितेहैं म्लेच्छइससेकि सकाचरुकरेइससंशयमेदृष्टप्रयोगकोसाम्यसे समातुल्याविकल्प सेप्रतिपत्तिहोइसपूर्वपक्षकासिद्धांतहैकि वेदमूलप्रतिपत्ति लोध मादिकेज्ञानमेवेदमूलहैवेद यदान्याओषधयोम्लायंत्यथैतेयवामो दमानास्तिष्ठन्तीति जोवहहै किजिसकालमेअन्यऔषधिसबमु-रझाजावें औरजोहरारहैसोहै इसवेदसेदीर्घशूककाआदरहै न किप्रियङ्गुका तिससे स्मार्तप्रायश्चितहै ॥

भाष्टाग्राह्याधिकरण ॥ १२ ॥

वहिस्तूभयथापिस्मृतेराचाराच्च ४३

जोऊर्ध्वरेतसादिअपनेर आश्रमसेच्युतमहापातकीयाउपपातकी उभययापि दोनोसेशिष्टउसकोवहिः अर्थात्उससेविवाहभोजना

दिखाइदे प्रायश्चित्तपरलोकमेंशुद्धिकासाधनहै नकियहां स्मृति आरूढ़पतितमित्यादि अर्थ्थेपतितकेसङ्गविवाहादिसम्बन्ध नहीं करतेहैं यहशिष्टाचारहै ॥

ऋत्विगुपासनाधिकरण ॥ १३ ॥

स्वामिनःफलश्रुतेरित्यात्रेयः ४४

अङ्गाधीनउपासनोंमेंसंशयहै किवेउपासनायजमानकर्महैं याऋत्विज्कर्महैं कैसे फलश्रुतेः वर्षतिहास्मैवर्षयतियएत देवं विद्वान्वृष्टौपञ्चविधंसामोपास्तइत्यादि अर्थ हिङ्कार१ प्रस्ताव२ उद्गीथ३ प्रतिहार४ निधन५ इनपांचढवकेसाममेंवर्षाकेध्याता कोजलवृष्टिकीसमृद्धिफलहोताहै सोफलस्वामिकोन्याय्यहै स्वामीसांगप्रयोगमेंअधिकृतहोनेसऔरऋत्विक्तोअधिकृत स्वामीसेअधिकारपायेहैंसुनतेहैंउपासनाकाफलकर्त्तामेंवर्षत्यस्मैयउपास्तेइत्यादिजोऋत्विज्कोफलदेखासो उसकोनहींवाचनिकहोनेसेआत्मनेवायजमानायवायङ्कामङ्कामयतेतमागायतीतिफलभोक्तासेस्वामीहीकोफलवत्उपासनोंमेंकर्तृत्वहैयहआत्रेयमानताहै

आर्त्विज्यमित्यौडुलोमिस्तस्मैहिपरिक्रियते ४५

यहनहींकिउपासनास्वामीकाकर्महैं वेऋत्विक्कर्म हैं यह औडुलोमिमानताहै किसहेतुसे तस्मै सांगकर्मार्थयजमान नेमोललियेहैं सांगप्रयोगकेबीचमेंउद्गाथादिउपासनाहैं अधिकृताधिकारिसे तिस्से गोदोहनादिनियमवत्ऋत्विजोंसेवेनिर्वर्त्य हैं वैदिकलिङ्गतंहवकोदाल्भ्योविदांचकारसहनैमिशीयानामुद्गातावभूवेति इसनेविज्ञानकाकर्त्ताउद्गाता दिखायाहै अर्थ तं उद्गीथनामअर्थोंकाप्राणदृष्टिसे ध्यानकरांफिरनैमिशीयसत्रियोंकाउ

द्गाताहुआथादालभ्य क्रयणकेद्वारेसेकर्त्ताभोक्ता कासामानाधिकरण्ययुक्तहै जैसेभृत्ययुद्धकरतेहैंउसयुद्धमेकहाजाताहै किराजा लड़ताजीतताहैपरार्थसे ऋत्विजको अन्यत्ववचनसेफलसम्बन्ध कीअनुपपत्तिहै ॥

श्रुतेश्च ४६

यांवैकांचनयज्ञऋत्विज्आशिषमाशासतइति यजमानायैवतामाशासतइतिहोवाचेति तस्मादुहै वम्विदुद्गाताब्रूयात्कन्ते काममागायानीति अर्थं यहऋत्विक्कर्त्ताहै जिसज्ञानका उसकाफलयजमानकोदिखातीहै तिस्से अङ्गोपासनऋत्विज्काकर्म सिद्धहै ॥

———*———

सहकार्यन्तराधिकरण ॥ १४ ॥

सहकार्यन्तरविधिःपक्षेणतृतीयन्तद्वतोविध्यादिवत् ४७

बृहदारण्यकेकहोडब्राह्मणमेसुनतेहैं कितस्माद्ब्राह्मणःपांडित्यन्निर्विद्यबाल्येनतिष्ठासेत्बाल्यञ्चपाण्डित्यञ्चनिर्विद्यायमुनिरमौनंचमौनञ्चनिर्विद्याथब्राह्मणइति अर्थं पांडित्यश्रवणसेनिर्विद्यनिश्चयसेपाके बाल्येनश्रवणजन्यज्ञानकेबलभावमननसेअसम्भावनादिनिरासकरयाबालककेभावनिश्छलचित्तसेरहेऐसेमननश्रवणकेपीछेनिदिध्यासनकारीमुनिहोताहै अमौनंमौनसेअन्यबाल्यपांडित्यदोनोहैं मौनञ्चनिदिध्यासनपाकेदृढ़ज्ञानकीसामग्रीकेपीछेमैंब्रह्महूं ऐसासाक्षात्कारवान्ब्राह्मणहोताहै नान्यथा यहभिक्षादिनीचवृत्तिसेजीवेन किछलादिसेधनलेके इससेसंशय

है किमौनविधेयहै यानहींहै मौनविधेयनहींहै वाल्येनतिष्ठासे द्वितियहांविधिहोचुकनेसे नहीं अथमुनिइसमेंविधायकविभक्ति लभतीहै तिससेअनुवादमौनमेंयुक्तहै कैसे प्राप्तिहै मौनकी मुनिपण्डितपदोंमेंज्ञानार्थकदोनोंहैं पांडित्यन्निर्विद्य इससे मौन प्राप्तहै औरचमौनञ्चमौनञ्चनिर्विद्याथब्राह्मण इसमेंब्राह्मण्य का विधाननहींहै सोपूर्वप्राप्तहोनेसेतस्मादथब्राह्मणइति प्रशंसा-वादहै तथैवाथमुनिरिति यहभीप्रशंसावादयोग्यहै समानकहिनेसे इससेपढ़ाकि सहकार्यन्तरविधि: विद्याकेसहकारीमौनकी वाल्यपांडित्यवत्‌विधिमानोअपूर्वसे शङ्का पांडित्य शब्द से मौन काग्रहणकहाथा यहदोषनहींहै मुनि शब्दज्ञानातिशयार्थकहोनेसे मननसेमुनिहै इसव्युत्पत्तिकेसम्भवसे मुनीनामप्यहंव्यास-इसप्रयोगकेदेखनेसे ननुमुनिपदउत्तमाश्रमकावाचीसुनतेहैंआपस्तम्ववाक्यगार्हस्थ्यमाचार्यकुलम्मौनंवानप्रस्थमिति इसमेंसोनहीं वाल्माकिमुनिपुङ्गवइत्यादिमेंसुननेसेव्यभिचारीहैमुनिपदसे इतराश्रमकेसन्निधानसेऔरपारिशेष्यसेश्रुतिमेंउत्तमाश्रमकाग्रहणहै ज्ञानकीप्राधान्यसेतिससेवाल्यपांडित्यसेतीसरामौन ज्ञानातिशयरूपविधेयहै जोवाल्यमेंविधिकाअन्तकहा था सो नहीं अपूर्वसेमुनिविधेयमानाहै जैसा किमुनिहोवे निर्वेदनीयकेकहिनेसेभीमौनवाल्यपांडित्यवत्‌विधेयाश्रितहै तद्वतो विद्यावान्‌ कर्मत्यागीईश्वरैकचित्तकोयहकैसेजाना विद्याकेअधिकारसे आत्मानम्विदित्वेत्यादिपुत्रवित्तार्थभीईश्वरसेअन्यदेवाराधननकरे परोक्षज्ञानीकोमौनविधानहै ननुविद्यावान्‌मेंअतिशयकीप्राप्तिसेफिरमौनविधानसेक्याफल है इससे पढ़ा कि पक्षेण जिस पक्षमेंभेददर्शनकीप्रावल्यसेविधिकीप्राप्तिनहींहै उसमें मौन की विधिहै विध्यादिवत्‌ जैसे किदर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गकामोयजेत

त्यादिऐसेविध्यादिमे अग्न्यन्वाधानादि अङ्गजातसहकारि विधीयमानहैं ऐसे अविधिप्रधान इसविद्यावाक्यमेमौनकीविधिहै ध्यानादिकाषड्जादि मे लोक से सूक्ष्मार्थ का साक्षात्कारवत् यहां नहींकिंतुनियमविधिहै कोईकहितेहैं किसंन्यासाश्रमकेधर्म अश्वणादिमेविधिनहींहै क्योंकिविधिमे अप्राप्तिमात्र अपेक्षितहै अद्यवादमेभेददर्शनकीप्राबल्यसेविधिहै ॥

कृत्स्नभावात्तुगृहिणोपसंहारः ४८

तुविशेषणार्थहै औरकृत्स्नभावविशेष्यहै जोकैवल्याश्रम मे श्रुतिविद्यमानथीतोकैसेछांदोग्यमेवेदपढ़ेपीछेकुटुम्बमेस्थितगृही ब्रह्मलोककोप्राप्तहोताहै नचपुनरावर्तते इससेगृहीकाउपसंहारहै नकिसंन्यासकाविधानहै इसकाउत्तरपढ़ाकिकृत्स्न बहुश्रमधनादिसाध्ययज्ञादिगृहीकोकरणेकेलियेकहेथे औरयथासम्भवअहिंसाइन्द्रियसंयमादि अन्याश्रमकेकर्मउसकोविद्यमानहैं तिससेगृहमेधीकाउपसंहारहै नकिसंन्यासाभावसे अभिप्रायार्थहै किकर्मोंसेथकाईश्वरकाध्यानधरे ॥

मौनवदितरेषामप्युपदेशात् ४९

जैसेमौनगार्हस्थ्यदोमतश्रौतहैं तैसे वानप्रस्थगुरुकुलवास जेहैं तपएवद्वितीयइत्यादि तिससेचारआश्रमोकेउपदेशके अविशेषसेतुल्यवत्विकल्पऔरसमुच्चयसेप्रतिपत्तिहै इतरेषां दोआश्रमसेबहुबचनवृत्तिभेदया अनुष्ठाताकेभेदकीअपेक्षासेहै ॥

———*———

बाल्याधिकरण ॥ १५ ॥

अनाविष्कुर्वन्नन्वयात् ५०

बालकाबोधक्षणमेंउलटिजाताहै जैसे चन्द्रकोदेखताहोतोबु
ट्कोबजानेसेयाबिल्लीदिखानेसेचन्द्रसेबाहिरभीतरको इन्द्रियां
हटाकेबिल्लीकोदेखताहैऔरकुत्ताकुत्तीकेपीछेदौड़ताहोजोपैंडे
मेसूखाहाड़मिलेतोकुत्तीकाछुड़हाड़परपड़ताहै तस्माद्ब्राह्मणःपां
डित्यंनिर्विद्यबाल्येनतिष्ठासेदिति इसमेबाल्यमनुष्ठेयसुनाहैबा
लकाभावयाकर्मबाल्यहै इसतद्धितमेबालभावबयविशेषका इ-
च्छासेकरनाशक्यनहींहै यथासम्भवविट्मूत्रादिबालचरितादि-
वाह्यशक्याशक्यहैं याअन्तर्गतभावशुद्धिहै याअप्ररूढ़ेन्द्रियदम्भ
दर्पादिशून्यबाल्यहोइससंशयमेंकामचारबाह्भक्षयथेष्टविटमूत्रा
दिप्रसिद्धतरलोकमेंबाल्यहै उसकाग्रहणयुक्तहैगमुपरितादिदो
षसेनहींयुक्तहै कामचारवाह्भक्ष। दिखाखोभार नहींविद्यावा-
न्कोवाक्यसामर्थ्यसेदोषकीनिवृत्तिसेऐसेप्राप्तिबधक्षहै सोन-
हींबाल्यप्रधानज्ञानमेंअभ्यासार्थविधेयहै सबबालचर्यामेंनहीं अ-
ङ्गीकार्यहै ज्ञानाभ्यासमेंअसंभावसे तिससेबालकाआंतर भाव
विशेषचाहिये अप्ररूढ़इन्द्रियादिसोकहाकि अनाविःकुर्वन्निति
ज्ञानअध्ययनादिबड़ेधर्मोंसेअपनेकोनगाता। फिरदम्भदर्पादिसे
छुटारहै ऐसाबालकअपुष्टेन्द्रियोंसेअपनेकोअन्यसेनहींआविःक
रसकाहै तैसा आपकुलबलहीनबुद्धिमान्रहे अन्यथाभीतरीब-
हिरीप्रवृत्तिसमाननिष्कंप अहियाआहारमेंकभीकिसीकोनहींहो
ताहै सोयतीजीकोहो इसोमेंइनस्मृतियोंकाहृदयहै किअव्यव
ज्जडवच्चापिमूकवच्चमहींचरेदित्यादि ॥

———*———

ज्ञानोत्पत्यधिकरण ॥ १६ ॥

ऐहिकमप्यप्रस्तुतप्रतिबन्धेतद्दर्शनात् ५१

क्याविद्याकाफलइसजन्ममेयाजन्मांतरमेहोगा नहीं कोई
श्रवणादिजन्मांतरमेविद्याकेलाभार्थकर्त्ताहै जैसे श्रोषधियाका
रीरीष्टिकाफलइसीजन्ममेहै वैसाविद्याकाहै यज्ञादिश्रवणादि
द्वाराइसीजन्ममेविद्याकोजन्मातेहैं विद्याप्रमाणजन्यहोनेसे ति
ससेविद्याजन्मइसीजन्ममेहै सोनहीं इससेकहाकि ऐहिकमप्य
प्रस्तुतप्रतिबन्धइति जोकुछरोकनहोवेतोइसीजन्ममेविद्या होती
हैउपस्थितविपाकजातिआयु:भोगकर्मान्तरसेविद्यायहांपकतीहै
जोसाधन कोरोकहैतोपरलोकमेपकतीहैकर्मदेशकालनिमित्तसे
फलदेतेहैंयहनियमशक्यनहीहै किजोएककर्मकेविपाकअर्थात्
फलदेनेकोखड़े हैं देशकालनिमित्त वेअन्यकर्मकेभीहैंजिससेवि
रुद्धफलदायीकर्महैंशास्त्र इसीमेबैठाहै किइसकर्मकायहफलहै
नकिदेशकालनिमित्तविशेषकोकहिताहै साधनकेवीर्यविशेषसे
किसीकोप्रसोन्द्रियशक्तिप्रकटहोतीहै औरकोरुकीरहितीहै मु
क्तिकोयहांयावरलोकमेविद्याहोऐसीअविशेषणविद्या मेअभिस
न्धिनहींहोती सोनहीं अभिसन्धिकोनिरङ्कुशहोनेसेनहींश्रवणसे
विद्यावर्षतीहै किन्तुप्रतिबन्धक्षयकोअपेक्षाकरतीहै श्रुतिदुर्बो
धआत्माकोदिखातीहै श्रवणायापिबहुभिर्यौनलभ्य:शृण्वन्तोपि
बहवोयन्नविद्यु:आश्चर्योवक्ताकुशलोस्यलब्धाआश्चर्योज्ञाताकुशला
नुशिष्टइति अर्थ आत्माकायथावत्वक्ताअद्भुतकोईहै औरलब्धा
साक्षात्कारवाअपरोक्षसेअद्भुतहै निपुणसेसिखायाशिष्य ज्ञाता
अद्भुतहै भावशब्दसेसुनिरकहाकरतेहैं तद्दर्शनात् गर्भएवैतच्छ
यानोवामदेवएवमुवाचेतिश्रुतिवामदेवकोमाकेपेटमेज्ञानहुआ
किमैब्रह्महूं इसअर्थकोश्रुतिदिखातीहै तिस्से ऐहिकयाअमुष्मि

कविद्याकाजन्मप्रतिबन्धकेक्षयकोअपेक्षासेहै जैसे चित्रेष्टिकाफ लपशुइसजन्ममेंया जन्मान्तरमेंहै ॥

मुक्तिफलाधिकरण ॥ १७ ॥

एवंमुक्तिफलानियमस्तदवस्थावधृतेस्तदवस्थावधृतेः ५२

जैसे ब्रह्मलोकनाममुक्तिचारविधहै सालोक्य १ सारूप्य २ सामीप्य ३ सार्ष्टि ४ चतुर्मुखकेसमानऐश्वर्यमिलनासार्ष्टिनाममुक्तिहै तैसे मुक्तिभीसातिशयहै फलसे जैसे कर्म भूयस्त्वसे फलभूयस्त्वहै इसहेतुसेस्वर्गबहुतभांतिकाहै मुक्तियहांविषयहै विद्यावत्विशेषनियमहैयानहींहै फलकेउभयथासम्भवसेसंशयहै जैसे मुमुक्षुकोफलमेंऐहिकामुष्मिककफलकृतविशेषनियमदेखाथा तैसे मुक्तिमेंउत्कर्षअपकर्षसेविशेषनियमहो इसशङ्कासे कहाकिएवंमुक्तिफलानियमइति मुक्तिफलमेंविशेषनियमशङ्कितव्यनहींहै कैसे तदवस्थावधृतेः वेदांतमेंमुक्त्यवस्थाएकरूपनिश्चितहै ब्रह्महीमुक्त्यवस्थाहै सोनानाकारनहींहै अस्थूलादिश्रुतियोंसेऔरविद्याकासाधनअपनेवीर्यसेअपनेफलविद्यामेंकुछअतिशयकरोनकिविद्याकेफलमुक्तिमेंविद्यासेअभिव्यक्तब्रह्मानन्दमुख्यफलहै अभिव्यक्तिअविद्याकीनिवृत्तिहै आनन्दस्फूर्तिविद्यासेसाध्यहै औरअविद्याअनिर्वाच्यहै अन्यमतमेंमुक्तिब्रह्मसेअनन्यहै विद्याछोटीबड़ीनहींहै किन्तुबड़ीहै तिससेविद्यामेंचिरअचिरकाभेदहै मुक्तिमेंछुटाईबड़ाईनहींहैविद्याभेदकेअभावसे भी विद्याफलभेदकानियमनहींहै मुक्तिसाधननिर्गुणविद्याकाकर्मी

कासाभेदनहींहै औरमनोमयादिसगुणविद्यामेगुणोंके आवापउ द्वापकेवशसेविद्याभेदभेदहैउससेफलभेदहै कर्मभेदवत् तैसालि ङ्गदेखो तंयथायथोपासतेतदेवभवतीति फिरनिर्गुणमेकुछगुण- हीनहीं तोकौनकरेगा अतिशयकोविद्यामे तदवस्थाधृतेः इस पदकाअभ्यासअध्यायकीपूर्तिकाद्योतकहै तिससेविद्यासम का लही मुक्तिहै ॥

इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये तृतीया-ध्यायस्यचतुर्थपादःपूर्णः ॥

—○*—*

औरपादमेभीआत्मेत्यादि इससूत्रसेलेचारअधिकरणप्रासङ्गिकहैं अन्यअधिकरणसाधनाध्यायकेहीशेषहैं तोभीप्रमाणफलसेफलाध्यायमेंसङ्गतहैं अहं ग्रहोपासनाओंका औरश्रवणादिका अभ्यासअर्थसिद्धहै इस्सेसूत्रकोपढ़ताहै तीसरेमेपरापरविद्याके साधनोंकीचिन्ताजाता इस्सेवहसाधनाध्यायथा, अवचौथेमेफलकीचिन्ताआवेगी इस्से फलाध्यायकहावेगा पूर्वश्रवणादिसाधनकहेसम्प्रति आवृत्यादिफलजोकिअर्थापत्तिसेप्राप्तहै उसकी चिन्ताअधके अश्लेषाधिकरणसेपूर्वचिन्ताहै उस्से आगेजीवन्मुक्तिकीचिन्ताहै दूसरेपादमेउत्क्रान्ति तीसरेमेगन्तव्यअर्चिरादि मार्गकानिर्णय चौथेमेज्ञानवोउपासनाकेफलकानिर्णयहै ॥

—◯—

फलाध्याय ४ जीवन्मुक्ति पाद ॥ १ ॥

आवृत्त्यधिकरण ॥ १ ॥

आवृत्तिरसकृदुपदेशात् १ ।

आत्मावाअरेद्रष्टव्यः सोन्वेष्टव्यः सविजिज्ञासितव्यइत्यादि इनमेसंशयहै किक्यासकृत्प्रत्ययकरे या आवृत्तिकरे प्रत्ययको सकृत्प्रत्ययहै जैसेप्रयाजादिहोतेहैं यज्ञमेंअदृष्टार्थशास्त्रसकृत् करनेसेकृतार्थहै जोअमुलआवृत्तिकोकरोगेतोअशास्त्रार्थकृतहो ननुतुमनेअसकृत्उपदेशोंकाउदाहरणदियाथा श्रोतव्योमन्तव्यो निदिध्यासितव्यइत्यादि जोतेशब्दहैंउनकीआवृत्तिमेंतात्पर्यहैकि सकृत्श्रवण सकृत्मनन सकृत्निदिध्यासनकरे नकिबारवार इनहीमेंलगारहै वेदोपासीतेत्यादि इनसकृत्उपदेशोंमेअनावृत्तिदेखीहै ऐसाप्राप्तहै इसकाउत्तरसुनो प्रत्ययोंकीआवृत्तिकरे कैसे असकृदुपदेशात् श्रोतव्योमन्तव्योनिदिध्यासितव्यइत्यादि

इसजालिकाअसकृत्उपदेश प्रत्ययोंकीआवृत्तिकासूचकहै ननु
कहाकिजेतेशब्द हैंउतनीआवृत्तिकरोनकिअतिरिक्तअधिक सो
नहीं श्रवणादिदर्शनांतआवर्त्यमानदृष्टार्थहैंजैसेतंदुलादिकीसि
द्धितकअवघातादिहैं तैसेश्रवणादिकाबारबारकरना औरभीउ
पासनऔरनिदिध्यासन जोअन्तर्णीताऽवृत्तिगुणजोक्रियाहै उस
काअभिधानहैं देखोलोकमें नृपमुपास्तेइति इसमेंजोतात्पर्यसे
नृपकेअनुवर्त्तीहैसोहीकहाहै औरध्यायतिप्रोषितधवाधवमि-
त्यादि इनवाक्योंमेंजोस्त्रीनिरन्तरपतिकीउत्कण्ठाकतीहैसोही
कहीहै जहांतकदृष्टवनेवहांतकअदृष्टमाननाअनुचितहै आवृ-
त्तिद्वारासाक्षात्कारफलहै जिनका ऐसेश्रवणादिका षड्जादिमेंदे
खनेसेअसकृत्कहिनाआवृत्तिकासूचकहै वेदान्तोंमेंवेदनउपास
नदोनोंकाप्रयोगएकार्थअव्यतिरेकसेदेखतेहैं कहींविदिसेउपक्र
महैऔरउपासिसेउपसंहारहै जैसे यस्तद्वेदयत्सवेदसमयैतदुक्त
इत्यनुमएतांभगवोदेवतांशाधियांदेवतामुपास्सइति अर्थं स
रैक्कनेजोजानासोप्रायहै रैक्कसेअन्यभीजोकोईजानेतोउसकोफ
लमेंसबघुसाहै एतदुक्त इत्यंमेंनेरैक्यश्रेष्ठकहा यहएकहंसनेदूसरे
हंससेकहासोसुनिरैक्ककेपासजाकेजानश्रुतिनेकहाथा किहेभग
वन् एतां जिसदेवताकोरैक्कजानताहैउसको मेंनुशाधि मुजिसे
कहिये इसकाअभिप्रायहैकिईश्वरसेअन्यदेवकोमतमानोउनसे
कुछभीभलानहींहै उनकेअर्थव्यर्थधनपशुवधादिहैं औरईश्वरा
र्थवेदमेंधनपशुआदिसाधनसाध्ययज्ञनहींहै कहींउपासिसेउप-
क्रमऔरविदिसेउपसंहारहै जैसे मनोब्रह्मेत्युपासीत इसमें
भातिचतयातेचकीत्यायशसाब्रह्मवर्चसेनयएवंवेदेति ब्रह्मवर्चस
वेदविद्याबढ़तीहै तिस्सेसकृत्कहिनेमेंआवृत्तिसिद्धिहै औरअ-
सकृत्कहिनाआवृत्तिकासूचकहै चाहेंसगुणहोचाहेंनिर्गुणहोउ

नकेसाक्षात्कारकासाधनजोध्यानहैउसकीआवृत्तिश्रौतीश्रौरअ-
र्थसिद्धहैदृष्टार्थसे श्रौरश्रवणमननकेश्रसकृत्कहिनेसेअर्थसिद्धहै
आवृत्ति ॥

लिंगाच्च २।

लिङ्गभीप्रत्ययों* कीआवृत्तिकाप्रत्यायकहै आदित्यउद्गीथइत्येत
देकपुत्रतादीषिणापोद्यरश्मींस्त्वंपर्यावर्त्तयादिति अर्थएकआदित्य
कोउद्गीथमेंउपासनासेमेरातूएकपुत्रहै यहकौषीतकिनेपुत्रसेक
हाथाइससेतूतैसामतकर किन्तुबहुतरश्मिश्रौरआदित्यकीपृथक्
आवृत्तिकर पर्यावर्त्तयात्पर्यावर्त्तयतात् तत्लोपश्छांदसहै इस
मेंरश्मिबहुतकाध्यानबहुतपुत्रार्थविहितहै सोसिद्धवत्प्रत्ययावृ-
त्तिकोदिखाताहैफलान्तसामान्यसेयाध्यानसामान्यसेसबप्रत्ययों
मेंआवृत्तिसिद्धिहै श्रवणमननध्यानमें आक्षेप कहिताहूंकिहोसा
ध्यफलप्रत्ययोंमें आवृत्तिसगुणमें आवृत्तिकेअतिशयकेसंभवसे।
श्रौरजोपरब्रह्ममेंप्रत्ययहै जैसाकिनित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावआत्मा
कोसमर्पतीहै उसमेंकिसअर्थार्थआवृत्तिहोइससे वृथाहो सकृत्
सुननेसेब्रह्मात्मकोप्रतीतिकीअसिद्धिसेआवृत्तिमानीहै यदियहक
होसोनहींहै आवृत्तिमेंभीब्रह्मात्मप्रतीतिकीअसिद्धिसे जोतत्व
मसीत्यादिवाक्य सकृत्सुनेब्रह्मात्मप्रतीतिकोनहींजन्माओफिर
सोहीआवर्त्यमानउसकोजन्मावेगा यहकाप्रत्याशाहो अबकहो
किनहींकेवलवाक्यकिसीअर्थकेसाक्षात्कारकरनेकोशक्तहै इससे
युक्तिसापेक्षवाक्य अनुभवकरावेगाब्रह्मात्माका तोभीस्ततःअश्र-
तकोयुक्तिकेसहाऐसेशक्तिमेंआवृत्तिव्यर्थहै युक्तिसकृत्प्रवृत्तहीअप
नेअर्थकीअनुभाविकाहोगी होयुक्तिश्रौरवाक्यसे परोक्षज्ञानन

* विज्ञान

किअपरोक्ष जैसेहैमेरेपेटमेंशूल इसवाक्यसेदेहकम्पादिचिन्हों सेशूलकाहोनाहीसामान्यपरजानताहै नकिविशेषकाअनुभव होताहै जैसेबुहीशूलीऔरविशेषानुभवअविद्याकानिवर्त्तकहो उसकेअर्थआवृत्तिहै यदिसोनहींअसकृत्युक्तिवाक्यकेकरनेसेविशेषज्ञानकेजन्मकेअसम्भवसेनहीं जोसकृत्प्रयुक्तशास्त्रयुक्तिदोसे अज्ञातविशेषहै सोसहस्रशास्त्रयुक्तिकेप्रयुज्यमानसेज्ञातनहींहोसक्ताहैतिससेयदिशास्त्रऔरयुक्तिविशेष*यासामान्य*जोचाहेसो कहोउभययथाभीसकृत्प्रवृत्तवेस्वीकारकरेहैं इससेआवृत्तिकाअनुपयोगहैसकृत्कहेशास्त्र औरयुक्तिकिसीको अनुभवनहींकरासक्ते हैं सोनियमशक्यनहींहै प्रतिपत्तृयोंकोविचित्रप्रज्ञसे। औरभी नानांशलौकिकपदार्थ सामान्यविशेषवान्हैं उनमें एकावधानसेएकअंशकाअवधारणहैऔरअपरसेअपरका।है ऐसाहीअभ्यासकाउपयोगजैसाकिवर्णोंकाअभ्यासबड़ेपाठादिमें सामान्यविशेषसेरहित चैतन्यमात्रात्मकनिर्विशेषमेंप्रमाकेजन्मार्थअभ्यास कीअपेक्षायुक्तनहीं है यहांकहिताहूंहोआवृत्तिव्यर्था उसकोजो तत्वमसीतिसेसकृत्कहाब्रह्मात्मकेअनुभवकोसक्ताहो। जोशक्त नहींहैउसकोआवृत्तिउपयुज्यमानहै देखोछान्दोग्यमेंतत्वमसि कहिकेफिरबारबारपूछातोजोजोशङ्काहैतुथा उसकोनिरासकर तत्वमसिहीअसकृत्कहाहै तैसेश्रोतव्यआदिदिखायेहैं ननुजो कहाथाकिसकृत्सुना तत्वमसिवाक्यअपनेअर्थके अनुभवकरानेमेंसक्तनहींहै तिससे आवर्त्यमानभीसक्तनहींहोगा यहदोषनहींहै जोदृष्टहैउसमेंअयुक्तनहींहै सकृत्सुनेवाक्यसेमन्दप्रतीत वाक्यार्थकेआवर्त्तकदेखेहैं औरअभ्यासकेव्युदाससेसम्यक् प्रतिपन्नदेखेहैं जैसेषड्जादिस्वरभेदकेसाक्षात्कारमेंसक्तभीकान अ-

१ प्रात्यक्षिक।   २ पारोक्ष्य।

भ्यासकोचाहताहै तैसेब्रह्मकेसाक्षात्कारमेंसक्तवाक्यअभ्यासको
चाहताहै यहअनुभवहै औरतत्वमसितुमकोतत्कहिताहै तत्
सेप्रकृतसत्ब्रह्मकहाहै अजादिपदोंसे जन्मादिभावकेविकार
निवारेहैं अस्थूलादिपदोंसेद्रव्यमात्रकेधर्म लंबाईचौड़ाईमुटाई
आदि निवारेहैं विज्ञानादिपदोंसेचैतन्यकहाहै यहशून्यसर्व
संसारधर्मऔरअनुभवात्मक औरब्रह्मसंज्ञका तत्पदकाअर्थ वे-
दान्तियोंमेंप्रसिद्धहै तैसात्वंपदार्थभी प्रत्यगात्माश्रोता देहसेले
प्रत्यगात्मासेसंभाव्यमानचैतन्यांतनिश्चितहै जिनकोतत्वंअज्ञा
नसंशयविपर्ययसेबद्धहैं उनकोतत्वमसिअपनेअर्थमेंप्रमाकोनहीं
जन्मासकताहै वाक्यार्थकोपदार्थपूर्वकहोनेसे इसीसेउनकोशास्त्रयु
क्तिकाअभ्यासपदार्थविवेकार्थएष्टव्यहै जोभीप्रतिपत्तव्यआत्मा-
निरंशहै तोभीउसमेंनानांशआरोपितहैं वेजेहैं देहइन्द्रियमनबु
द्धिविषयवेदनादि एकावधानसेएकांशउठादिया फिरअपरअव
धानसेअपरांशऐसीक्रमवतीप्रतिपत्तियुक्तहै आत्मामें यहआत्मा
कीप्रतिपत्तिकापूर्वरूपहै औरजिननिपुणमतियोंकोअज्ञानसंश
यविपर्ययादिपदार्थसेबंधननहींहैं वेतत्वमसिसकृत्कहनेसे वा-
क्यार्थकेअनुभवमेंसक्तहोतेहैं उनकोआवृत्तिव्यर्थइष्टहै सकृत्ज-
न्मीआत्माकीप्रतिपत्तिअविद्याकीनिवर्त्तिकाहै इसमेंकुछभ्रमन
हींमानाहै सत्यहै सोतोयुक्तहो। जोकिसीकोआत्मप्रतिपत्तिहो
आत्माकोदुःखित्वादिकीप्रतिपत्तिबलीहै इससे नहींदुःखित्वादि
केअभावकोकोईपहुंचताहै यदियहकहोसोनहीं जैसेदेहादिका
अभिमानमिथ्याभिमानहै तैसेदुःखित्वादिकाअभिमानमिथ्या
होनेसे प्रत्यक्षसेदेहमेंमिथ्याभिमानदेखतेहैं जैसेदेहकेछेदवोदा
हसेकहिताहै किमैंछिदावोदहाहूं औरबाह्यतरजेपुत्रमित्रादिहैं
सन्तप्यमान उनकोतापमेंमैंतपाहूं यहआरोपदेखाहै तैसादुः

खित्वादिअभिमानहो देहादिवत्चैतन्यसेबाहिर दुःखित्वादि कीप्राप्तिसे जोसुषुप्तादिमेंचैतन्यनहींजानपड़ताहै तोउसकासो केउठेकोसुखदुःखशयनकाअनुभवकौनकर्त्ताहै जोकर्त्तासोचेतनहै तिस्से सबदुःखोंसेछुटाएकचैतन्य अहं यहीआत्माकाअनुभवहै आत्माकेअनुभावककोअन्यकृत्यनहींहै चाहेआवृत्तिहोया नहोपरतत्वमसिसेछुट्टीनहो नहींवरवधार्थसुतोद्दाहहै नियुक्तकहैगाकिमैंइसकाममेंअधिकृतहूं कर्त्ताहूं मुजिसेयहकर्त्तव्यअवश्यहै ऐसाब्रह्मप्रत्ययसेउलटाप्रत्ययहोगा जोवाक्यार्थकाजिज्ञासुहै उसकोवाक्यार्थमेंघुसनेकेलियेआवृत्यादिकाकहनाइष्टहै तिसो परविषयप्रत्ययमें औरप्रत्ययकेउपायोंकेउपदेशमें आवृत्तिसिद्धिहै अनुभवसुखदुःखकाएकहीठौरमेहै फिरआत्मासुखरूप है नकिदुःखरूप यहहठवोउपासनाहै ॥

आत्मेश्वराधिकरण ॥ २ ॥

आत्मेतितूपगछंतिग्राहयंतिच ३ ।

तत्वज्ञानार्थध्यानकीआवृत्तिकेकालमें जो वैदिकविशेषणयुक्तईश्वरहै सोक्याअहंब्रह्मास्मि ऐसाध्येययामत्स्वामीश्वर ऐसा ध्येयहै यहविचारहै प्रत्यगात्मवाचीआत्मशब्दमेंकैसेसंशयहुआ कहिताहूं जीवेश्वरकेअभेदसंभवमेंआत्मशब्दमुख्यहै इतरथागौणहैऐसामानतेहैं नाहमीश्वरः यहीग्राह्यहै अपहत* पाप्मादि गुणीईश्वरविपरीतगुणोंसे औरविपरीतगुणीशारीरअपहतपाप्मादिगुणोंसेनहींलेनकोशक्यहै औरईश्वरकोसंसारीआत्मामानेसेईश्वरकाअभावहो तिस्से ईश्वरबोधकवेदव्यर्थहो औरसंसारीकोईश्वरात्मकमानेसे अधिकारीकेअभावसे वैदिकविधि

* सर्वज्ञेत्यादि

व्यर्थहै। औरप्रत्यक्षादिप्रमाणोंसेबिरोधहै। जीवईशकेभेदमेंभी तादात्म्यदर्शनवेदसेकर्त्तव्यहै जैसेप्रतिमादिमें विष्णुआदिकाद-र्शनहै यदियहकहो।सोऐक्यध्यानइष्टहै नकिऐक्य हमकोयहप्रा-प्तनहीकरासक्तेहो। किसंसारीकोमुख्यआत्माईश्वरहै कहिताहूं किआत्माहीईश्वरप्रतिपत्तव्यहै जाबालईश्वरप्रक्रियामें ईश्वर कोआत्माजानतेहैं त्वंवाअहमस्मिभगवोदेवते अहं वैत्वमसिदे वतेइति अन्यऐसेवाक्यवेदमेंहैं ग्राहयन्तिच आत्माकोईश्वरगा हकवेदान्तहैं एषतेआत्मांतर्याम्यमृतइत्यादि जीवईशकातादा-त्म्यदर्शनप्रतीकदर्शनहोगा। विष्णुप्रतिमान्यायसेन्यायार्थ अमूर्त्त कोमूर्तिमानकनाझूठहै सोअयुक्तहै अभेदश्रुतिगौणनहीहोतीहै लोकमेंअप्रसिद्धअपूर्वार्थकेबिधानसे भेदश्रुतिलोकभेदानुवादि नीहै।जैसेगौणीहै विंबप्रतिविंबकीनांईविरुद्धधर्ममिथ्याहैं जहां प्रतीकदृष्टिइष्टहैतहांसकृत्वाक्यहै जैसे मनोब्रह्म।दित्योब्रह्मेत्या दिफिरजहांइयुंकहा।कितूमैंहूं औरमैंतूहै इसलौटपौटसंप्राती कश्रुतिवैरूप्यसेअभेदकाबोधहै भेददृष्टिकेअपवादसेअपवादका श्रुति अथयोन्यांदेवतामुपास्तेऽन्योसावन्यो।हमस्मीतिनसवेदय-थापशुः सर्वंतंपरादाद्योन्यत्रात्मनः सर्वंवेदेत्यादि अर्थ एकही चेतनआत्मादेवतामान्यहै नकिनानाजड़रूप विरुद्धगुणोंमेंमि-थ्याआत्मभावसम्भवनहीहै यहदोषनहींहै विरुद्धगुणोंमेंमिथ्यात्व सिद्धिसे जोईश्वरकाअभावकहाथासोझूठहै ईश्वरकोसंसारी आत्मानहीकहिताहूं किन्तुसंसारीकोसंसारित्वकोहटाकेईश्व-रात्माकहिनेकोइष्टहै ऐसेअद्वैतईश्वरके अपहतपाप्मादिगुण और जीवकेअल्पज्ञादिगुणमिथ्याहैं यहव्यवस्थाहै अधिकारी काअभावऔरप्रत्यक्षादिमानविरोधनहींहै बोधसेपूर्वसंसारीमा नाहै औरसंसारीविषयकप्रत्यक्षादिव्यवहारहै यत्रत्वस्यसर्वंइसने

बोधमें प्रत्यक्षादिकाअभावदिखायाहै यदिकहोकिप्रत्यक्षादि
कीअभावमें वेदकाभीअभावहै।सोइष्टहै अत्रपितापिताभवती
ति इसउपक्रममेवेदाअवेदाइसवाक्यसेइष्टहै मुक्तिकोवेदकाभी
अभावबोधमें यदिकिसकोअबोधहै यहपूछैतूतोजोतूपूछताहै
उसीकोहैमैंकहताहूं ननुवेदनेईश्वरहीकहा फिरअबोधकहां
सर्वज्ञसेयदिऐसाप्रतिबुद्धहै तूतदाकिसीकोअबोधनहीहै जोकि
सीनेदोषकहाकिअविद्यासेआत्मासहितोयहै इसेअद्वैतासिद्धि
हैसोनही अनिर्वाच्यअज्ञानसे तिस्से आत्माहीईश्वरमें मनको
धीयमानकरे ॥

प्रतीकोपासनाधिकरण ॥ २ ॥

नप्रतीकेनहिसः ४ ।

मनोब्रह्मेत्युपासीतेत्याध्यात्ममथाधिदैवतमाकाशोब्रह्मेति त
थादित्योब्रह्मेत्यादेशःसयोनामब्रह्मेत्युपास्तइत्यादि इनप्रतीको
मेंसंशयहैकिसंशयबीजदोपक्षसर्वत्रहैं जैसेब्रह्ममेंअभेदसेअहंग्र-
हकहाथा ऐसेप्रतीकोंमेंब्रह्मविकारद्वाराजीवाभिन्नब्रह्माभिन्नसे
जीवकेअभेदसेअहंग्रहकार्यहै प्रतीकोंमेंआत्मग्रहकार्यहैयानही
उनमेंआत्मग्रहयुक्तहै कैसेश्रुतिमेंब्रह्मकोआत्मप्रसिद्धिसे औरप्र
तीकब्रह्मकेविकारहैं फिरवेब्रह्महैं इससे आत्मसिद्धहैं तिस्सेप्रती-
कमेंअहंग्रहकरोसोनही प्रतीकमेंआत्माकोमतिनबांधो सः उ-
पासकप्रतीकव्यस्तोंकोआत्मानहीअनुभवताहै जोब्रह्मविकारसे
प्रतीकब्रह्मकहेथेतिस्से आत्माहै सोझूठहै प्रतीकोंकाअभावहो
जानेसे विकाररूपकाउपमर्दनकरनामादिजातको ब्रह्मकेआ-
श्रयकहाहै विकाररूपकेउपमर्दमेनामादिप्रतीकहीनहीतोआ-
त्मग्रहनही विकारऔरब्रह्मस्वरूपसेएकहोनाअनहोनाहै वि-
कारबाधसेऐक्यकहेऔरप्रतीकबाधमेउपासनबिधिनहीहै न-

हींब्रह्मकोआत्माके कहिनेसेब्रह्मदृष्टिके उपदेशमेंआत्मदृष्टि कीकल्पनानहींहै कर्तृत्वादिसवसंसारधर्मोंकेनिराससेब्रह्मको आत्माकहाहै औरकर्तृत्वादिकेअनिराससे उपासनका विधान है जीवऔरप्रतीकमेंरूपभेदसेऔरअहंग्रहमेंविधिकेनसुनने सेअ-हंग्रहनहींहै जैसेरूचकस्वस्तिकादिरूपसे एकऔरमिथोभिन्नहैं तथाजीवऔरप्रतीकब्रह्मरूपसेएकऔरमिथोभेदसमहै यद्यपिधर्मि केभेदसेजीवप्रतीकके अभावकेनिश्चयसेएक वस्तुमानोतदा उपासने।छेदकहिंचुके इनप्रतीकोंमें आत्मदृष्टिनहींकर्त्तव्य अर्थात् ऐक्यधी नहीं है जैसा कि मैं ब्रह्म हूं तैसा मैं मन हूं या आदित्य हूं या ईश्वर हूं यह बुद्धि नहीं हो सक्ती है प्रतीकोपास्तौनात्मेतिधी: कुतोयस्मादुपासकोनात्मतयाप्रतीकं ग्रहीतुंशक्नोतीति ॥

ब्रह्मदृष्ट्यधिकरण ॥ ४ ॥

ब्रह्मदृष्टिरुत्कर्षात् ५ ।

जैसेस्थाणुचोरइतिप्रत्येतीति इसवाक्यमें स्थाणुशब्दमुख्यार्थवाचीहै और चोरशब्ददृष्टिकालक्षकहै तैसेही मनोब्रह्ममें है कहेउदाहरणोंमेंऔरसंशयहै किक्या आदित्यादिदृष्टि ब्रह्ममेंअध्यसनीयहै याब्रह्मदृष्टिआदित्यादिमें कैसेयहसंशयउठा सामानाधिकरण्यमेंकारणकेअनिश्चयसे आदित्यादिशब्दोंसेब्रह्मशब्दकासामानाधिकरण्यलब्धहै जैसेआदित्योब्रह्म प्राणोब्रह्म विद्युद्ब्रह्मेत्यादि इनमेंसमानविभक्तिकहीहै इनमेंआंजससामानाधिकरण्यकल्पनहींहै ब्रह्मऔरआदित्यादिशब्द अर्थान्तरवाचिसे घोड़ागायका सामानाधिकरण्यनहींहै ननुब्रह्मप्रकृतिऔरआ-दित्यादिविकृतिहैं इससम्बन्धसेब्रह्मादित्यादिकासामानाधिक

रण्यहोमृद्घटवत् मैंयहनहींकहिताहूं ऐसेप्रकृतिसामाधिक-
रण्यसेविकारकाप्रविलयहो कहामैंनेथा इससे प्रतीककेअभावका
प्रसङ्ग प्रतीककेअभावमेंवुहपरमात्मवाक्यहो उससे उपासनाधि
कारबाधितहो और परिमितविकारोंका ग्रहणव्यर्थहो सर्वत्र
न्यायएकहो तिससे ब्रह्मकाअग्निवैश्वानरतुल्यादिवत् अन्यअन्य
दृष्टिकेलगानेमेंकिसकिसदृष्टिकोलगावेयहसंशयहै इससेअ-
नियमहै नियामकशास्त्रकेअनहोनेसे यहप्राप्तहै निकृष्टमप्यु-
पास्यंफलवत्त्वादितिन्यायोनियामकोस्ति बांझगायसेदुधारीछे-
रीपालनयेग्यहै इसयुक्तिसेब्रह्ममेंआदित्यादिदृष्टिकरोयहप्राप्त
है ऐसेआदित्यादिदृष्टिसेब्रह्मउपासितहै औरब्रह्मोपासनफलव
त्है यहशास्त्रसेसीमाहै तिससे मतकरोब्रह्मदृष्टिआदित्यादिमें
सोमतकहो आदित्यादिमेंब्रह्मदृष्टिहीहो कैसेउत्कर्षसे उत्कर्षसे
आदित्यादिदृष्टहैं उत्कृष्टदृष्टिसेआदित्यादिमेंअभ्यासहै इसीय
हलौकिकन्यायअनुकूलहैकि उत्कृष्टदृष्टिहिनिकृष्टअभ्यसनीया-
स्तीति अर्थ छोटेकोबड़ादेखे जैसेक्षत्तामेंनृपदृष्टि औरक्षत्ताअ-
नुमन्तव्यहै उलटेमेंपापहो नहिंदासकोदृष्टिमेंगृहीतराजाऔर
निकर्षणीयमानश्रेयार्थहो नतुशास्त्रकी प्रामाण्यसेअशकनीय
यहांपापहो औरनहींलौकिकन्यायसे शास्त्रीयदृष्टिका नियम
युक्तहै यहांकहिताहूं निश्चितशास्त्रार्थमेंतुम्हाराकहाहो औरसं
दिग्धशास्त्रार्थमें संदेहनिर्णयार्थ आश्रीयमानलौकिकन्यायभी
नहींविरुद्धहै इससे शास्त्रकीआशयउत्कृष्टदृष्टिकेअभ्यासमेंहै फिर
निकृष्टदृष्टिकेअभ्याससेपापहोयहश्लिष्यमानहैपहिलेतोआदित्या
दिशब्दोंकामुख्यार्थ लोअविरोधसे फिरउननेअपनीअपनीअर्थ
वृत्तिसरोंकोबुद्धिमें पीछेसेउतराब्रह्मशब्दकाअर्थ उसकाउनकी
अर्थासेमुख्यवृत्तिद्वारासमानाधिकरण्यकाअसम्भवहै तिससे ब्रह्मदृ

ष्टिविधानस्थिरहै इतिशब्दशिरस्कजोशब्दहै सोसमीपकहीक्रियाकालक्षक है यहलोकमेंप्रसिद्धहै जैसेब्रह्म त्यादेशइत्यादिमेंसर्व ब्रह्मशब्द इतिपरपढ़ाहै औरआदित्यादिशब्द इतिशून्यपढ़ेहैं जैसेशुक्तिकांरजतमितिप्रत्येति इसमेंशुक्तिबाधकही शुक्तिका शब्दहै औररजतशब्दरजतप्रतीतिकेलक्षणार्थहै केवलरजतकी प्रतीतिहीहै नकिवहांरजतहै ऐसेहीयहांभीआदित्यादिकोब्रह्म प्रतीतकरोयहजाना है वाक्यशेषभीदूसरीविभक्तिसेआदित्यादि कोउपास्तिक्रियाकाव्याप्यमानदिखाताहै सयएतदेवंविद्वानादित्यंब्रह्मेत्युपास्ते ऐसावाक्यङ्कल्यमेंजानो फल।र्थब्रह्मोपासनआदर्त्तव्यकहाथा सोउत्कृष्टोपास्यन्यायसे आदित्यादिउपास्यहैं जैसेअतिथिआदिकीउपासनाकाफलब्रह्मदेताहै तैसेआदित्यादिकीउपासनकाभीफलब्रह्महीदेगा भोजनदानादिसबकाफल ब्रह्मदेगा नकिलेनेवाला।याअन्यकोईदेवापूर्वादि सर्वाध्यक्षहोनेसे यहांब्रह्मऐसाउपास्यहैकि प्रतीकोंमेंब्रह्मदृष्टिकाठहिराना जैसेप्रतिमादिमेंविष्णुआदिकाआरोपहै ॥

आदित्याधिकरण ॥ ५ ॥

आदित्यादिमतयश्चांगेउपपत्तेः ६ ।

यएवासौतपतितमुद्गीथमुपासीतेत्यादि पृथिवी १ अग्नि २ अन्तरिक्ष ३ आदित्य ४ द्यु ५ इनपांचलोकसामोंमें हिङ्कार १ प्रस्ताव २ उद्गीथ ३ प्रतिहार ४ निधन ५ इनपांचअंशोंसपञ्चांशसामहै जोपांचप्रकारआदिरीतिउपद्रवइति इनदोअधिकविभक्तिसेसप्तांशसामहै यहभेदहै इनअंगावबद्धउपासनोंमेंसंशयहैकि क्याआदित्यादिमेंउद्गीथादिदृष्टियोंकाविधानहै वाउद्गीथादिमें आदित्यादिदृष्टियोंकाविधानहै यहांअनियमहैनियमनिदानकं

नहोनेसेयहप्राप्तहै यहांब्रह्मश्वास।किसीकाउत्कर्षविशेषनिश्चित
नहींहै ब्रह्मआदित्यादिसेउत्कृष्टनिश्चयकोशक्यहै सर्वविघ्नकेनि
दानसेऔरअपहतपाप्मादिसेअविशेषसेआदित्यउद्गीथादिविका
रीहैंतोउनकोकुछविशेषकेनिश्चयमेंकारणनहींहै अथवानियमसे
उद्गीथादिमतिकोआदित्यादिमेंठहिराओ कैसेउद्गीथादिकर्मा-
त्मकसेऔरकर्मसेफलप्राप्तिकीप्रसिद्धिसे उद्गीथादिमतिसे उपा
स्यमानआदित्यादिकर्मरूपहुए फलकाहेतुहोंगे फिरइयमेवर्ग-
ग्निःसाम इसमेतदेतदेतस्यामृच्यध्यूढंसाम इसमेंऋग्शब्दसे पृ-
थिवीऔरसामशब्दसेअग्निकहीहै सोअध्यासपृथिवीअग्निदोनों
मेंऋग्सामदोनोंकीदृष्टिकीचिकीर्षामेंसमर्थहै नकिऋग्सामदो
नोंमेंपृथिवीअग्निदोनोंकीदृष्टिकीचिकीर्षामेंसमर्थहै भाव अन
इसमेअङ्गाध्यासइयमेवसेकहा तदेतत् अग्निनामसामएतास्यां
पृथिवीरूपऋचामें अध्यूढं ऊपरबैठाहै सामवत् ऋचामेपृथिवी
अग्निहै इससाम्यसे पृथिव्येवर्गग्निः सामयहध्यानकहाथा (जैसे
चत्तामेंनृपदृष्टिकरनेसे नृपशब्दऔपचारिकहै नकिनृपमेंचत्त
शब्द और लोकेषुपञ्चविधं इसमेंअधिकरणसप्तमीकाहिनेसेलो
कमे सामकाअध्यासध्यानप्रतीतहै एतद्गायत्रंप्राणेषुप्रोतमिति
इसनेउक्तदिखायाहै प्रथमपढ़े आदित्यादिमेंचरमपढ़ाब्रह्मअ-
ध्यस्तहै कहां आदित्योब्रह्मेत्यादिश: इनमे प्रथमपढ़े पृथिव्या-
दि चरमपढ़े हिङ्कारादि कहां पृथिवीहिङ्कारइत्यादिश्रुतियों
मे इस अनङ्गआदित्यादिमेंअङ्गमतिकाक्षेपफलकहै इसपरकहि
ताहूं आदित्यादिमतिअङ्गउद्गीथादिमेंफलको किस्से उपपत्तेः
अपूर्वसन्निकर्षसे आदित्यादिमतिकेद्वारा संस्क्रियमाणउद्गीथा
दिमेंकर्मकीसमृद्धिउपपद्यमानहै यदेवविद्ययाकरोतीति अर्थ
जोसमुझबूझकामकियाजाताहै सोपूराहोताहै होकर्मसमृद्धि

फलमेंविद्याहेतु स्वतन्त्रफलकपांचसाममेंकैसेहोगा उनमेंभीअ
धिकृतकेअधिकारसे प्रकृतापूर्वकेसन्निकटसेयुक्तहै फलकल्पना
गोदोहनादिनियमवत् कर्मरूपउद्गीथसे आदित्यादिकोउत्कर्ष
कीसिद्धिहैफलरूपसे आदित्यादिप्राप्तिकर्म फलश्रुतिमेंशिष्टहै
और ॐमित्येतदक्षरं इसअक्षरकाउपव्याख्यानं इसे उपास्यउ
द्गीथकेउपक्रममेंआदित्यादिमतिकाविधानहै जोकहाकिउद्गी-
थादिमतिसे उपास्यमानआदित्यादिकर्मबहुतहोके फलकरेंगे
सोअयुक्तहै उपासनाआपकर्महोनेसेफलवतीहै आदित्यादिरूप
सेउद्गीथादिकोकर्मकेअनपायसे तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढंसामयह
लाक्षणिकपृथिवीअग्निमेंऋग्सामकाप्रयोगहै ऐसेअम्यादिशब्द
ईश्वरादिमेंलाक्षणिकहैं लोकप्रसिद्धिवोवेदमेंभीहै औरलक्षणा
यथासम्भव कहींनिकटकहींदूरकेस्वार्थसम्बन्धसेप्रवर्त्ततीहै जैसे
गङ्गामेंघर औरलड़काअग्निहै जोऋग्साममेंपृथिवीअग्निकीदृ
ष्टिकोचिकीर्षाहै तोभीप्रसिद्धार्थऋग्साममेंभेदसेकहिनाहै और
पृथिवीअग्निकेनिकटसे उनमेंऋग्सामकाप्रयोगहै ऋग्सामके
सम्बन्धसेइस लक्षणायुक्तहै छत्रशब्दभीन्टपमें रथहांकनेसेदौड़
गया क्योंकिक्षत्तासारथिहै इयमेवर्गग्निरिति इसनेऋचाकोपृथिवी
यथाक्षरन्यासनिश्चयकियाहै जबपृथिवीकोऋग्मानोगे तबइय
मृगेव यहअक्षरन्यासहोगा और यएवंविद्वान्सामगायतीति
इसनेजैसेअङ्गाश्रयविज्ञानका उपसंहारकिया नकिपृथिव्याश्रय
विज्ञानका तैसेहीलोकेषुपञ्चविध मित्यादिमेंहैं जोभीलोकके
आगेसप्तमीविभक्तिहै तोभीलोकोंकोसाममेंघुसाओध्याओ सा-
मकेआगेद्वितीयाविभक्तिकहिनेसे सामहीउपास्यजानाजाताहै
जोसाममें अध्यस्यमानलोकहैं उनमेंसामहीलोकरूपसेउपासि-
तहै ऐसानमानोगेतोलोकहीसामरूपसेउपासितहो इसे एतद्

गायत्रंप्राणेष्वनुप्रोतमित्यादि इनकाभीनिर्णयहोचुका क्योंकिइ-
नमेंभीद्वितीयाविभक्ति तुल्यहीपढ़नेसे तुम्हारेपक्षमेंलोकेष्विति
इनमेंसातरूपसेलोकउपास्यहैं इससे द्वितीयाऔरसप्तमीकाभङ्ग
है हमारेपक्षमेंलोकरूपसेसामउपास्यहै इससे सप्तमीमात्रकाभ-
ङ्गअच्छाहै अथखल्वमुमादित्यंसप्तविधंसामोपासीतेति इसमेंस-
वसामकाउपासनअच्छाहै पांचवासातढवकासामउपक्रमसेउ-
पास्यहै उसमेंआदित्यादिकाअध्यासध्यानहै पृथिवीहिङ्कारइत्या
दि इनकेपाठव्यत्ययसेभी हिङ्कारादिमें पृथिव्यादिदृष्टियुक्तहै
तिसेवचनक्रमअय आदित्यादिमति अङ्गउद्गीथादिमें क्षेपणीयसि
द्धहै । उक्तचारअधिकरणप्रासङ्गिकहैं ॥

आसीनाधिकरण ॥ ६ ॥

आसीनःसंभवात् ७ ।

कर्मजैसेबैठाठाढ़नानाविधिसेहोसक्ताहै तैसेकर्माङ्गोंमेंसम्ब-
न्धउपासनोंमें कर्माधीनसेआसनादिचिन्तानहींहै औरनकिस
म्यग्दर्शनमेंविज्ञानको आसनादिचिन्ताहै विज्ञानवस्तुतन्त्रहोने
से अन्यउपासनोंमें क्याखड़ाबैठालेटाचलताआदि अनियमसे
वर्त्ते यानियमसेबैठिकेहीकरे उपासनमानसहै इससे अनियम
हैदेहस्थितिका इससे कहिताहैकि आसीनएवोपासीतेति कैसे
सम्भवात् समानप्रत्ययकेप्रवाहकेकरनेकानामउपासनहै सोच-
लतेदौड़तेपरसम्भवनहींहै गत्यादिचित्तकेविक्षेपकहोनेसेखड़े
काभीदेहधारणमेंलगामन सूक्ष्मकेनिरीक्षणमेंक्षमनहींहै लेटे
काभीअकस्मात्हो नींदसेमनदबिजाताहै बैठेकोभीनींदबड़ा
दोषकुटिसक्ताहै आचमनादिसे इससे बैठेकोउपासनसम्भवहै
देहस्थैर्यसेमनःस्थैर्यहोसक्ताहै ॥

ध्यानाच्च ८ ।

ध्यायतिकाअर्थसमानप्रत्ययप्रवाहकरनाहै ध्यायति ठीकाध्य
क्षेष्टा बकोदृष्टि एकविषयसेखिंचेचित्तमे उपचर्यमाणध्यायति
देखतेहैं जैसेध्यायतिबक ध्यायतिप्रोषितबन्धुहै औरआसन
अनायासहै तिस्से आसीनकर्मोपासनहै ॥

अचलत्वंचापेक्ष्य ९ ।

औरध्यायतीवपृथिवी इनपृथिव्यादिमेंअचलकीअपेक्षासेध्या
यतिवादहै सोउपासनआसीनकाकर्महै इससेंलिङ्गहै याऐसे
करेकिअसतीस्त्रीमनजारमेंरखती देहसेधवादिकामकाप्रकाश
करतीहै ॥

स्मरंतिच १० ।

आसनउपासनांगशिष्टस्मरतेहैं यहअर्थकेवललौकिकहीनहीं
किन्तुशास्त्रीभीहै इसीयोगशास्त्रमेंपद्मादि आसनकहेहैं इसीआ
सीनहीउपासनाकरे नकिअन्योंकीनांई कभीबैठिजा वैकभी
खड़ाहोवे कभीसिरझुकाकेमहीपरपड़े जैसेतड़फेतामीरबालू
मेंमीन ॥

एकाग्रताधिकरण ॥ ७ ॥

यत्रैकाग्रतातत्राविशेषात् ११ ।

ब्रह्मयज्ञेनप्राच्यांदिशीति इसनेदिग्नियमकहा प्राचीनप्रवणे
वैश्वदेवेनयजेतेति इसनेदेशनियमकहा अपराह्णे पिण्डपितृय-
ज्ञेनचरन्तीति इसनेकालनियमकहाहै इनतीननियमोंसे जैसे
कर्मकोकरतेहैं तैसेहीउपासनानियमोंसेकर्त्तव्यहै दोनोंसमा-

नवैदिकहोनेसे औरश्रुतिकी मनोनुकूलहीदेशकोकहितीहै य-
स्मिन्देशेसौमन्यंतत्रैवात्मानंयुंज्यादिति औरशास्त्रसेकोईदेशा-
दिनियमितनहींहै समेशुचौ यहयोगार्थदेशविशेषसुनतेहैं यदि
यहकहोतदासत्यहै किसुनतेहो परयहभीनियमतात्पर्यसे वाक्य
शेषनेमनोनुकूलार्थहीकहाहै इष्टसौकर्यार्थंतदिति यहवाक्यशे
षदृष्टार्थहै गङ्गाद्युतवेश्यादिगृहोंमें विक्षेपसेध्यानानुकूलसौमन
स्यनहींहैकिन्तुरागानुकूलहै तीर्थादिभीजनतादिसे ध्यानानुकू
लदेशनहींहैऔरदिग्देशकालद्रव्यकरताइनपांचकानियमज्ञान
कांडमेंयज्ञकांडकेसमानहींहै औरनकिआश्रमादिकानियमहै
सबकोईश्वरकाज्ञानध्यानसर्वदाउचितहै तिस्सेदिगादिकानिय
मनहींहैदिग्देशकालमेसंशयहै किइनकाकुछआदरहैयानहींहै
प्रायवैदिकआरम्भोंमेदिगादिकेआदरसे यहांभीउनकाआदरहै
यहजिसकीमतिहै उसकोकहताहै किदिग्देशकालसेअर्थरूप
आदरहै वहयहकिजिसदिशामे जिसदेशमे जिसकालमेमनके
सौकर्यसेएकाग्रताहै तहांउपासनाकरे प्राचीदिग्पूर्वाह्णप्राची-
नप्रवणादिवत् विशेषवेदकेनकहिनेसे इष्टएकाग्रतासर्वत्रस-
मानहै शंका विशेषभीकोईपढ़तेहैं समेशुचौशर्करावह्निबालु-
काविवर्जितेशब्दजलाश्रयादिभिः । मनोनुकूलेनतुचक्षु:पीड़ने
गुहानिवाताश्रयणेप्रयोजयेदिति इसनेदेशविशेषकहाहैसोसत्य
है ऐसाआदरतोभीइनविशेषोंमे आचार्यनेसुहृत्होकेअनादर
कहाहैकि मनोनुकूलइतिच यहश्रुतिजहांएकाग्रताहै तहांही
उपासनाकरनेकोकहतीहै आगेसमशुचदेशादिका विधानकर
पीछेसेमनोनुकूलहीका विधानठहिरायाहै देशादिकेहठसेचि-
त्तविक्षेपसे समाधिभङ्गहोसोमतहो इस्से देशादिका आदर
नहींहै ॥

आप्रायणाधिकरण ॥ ८ ॥

आप्रायणात्तत्रापिहिदृष्टं १२ ।

विजातीयप्रत्ययानन्तरितसजातीयप्रत्ययप्रवाहउपासनाशब्दका अर्थहैपहिलेअधिकरणमेंठहिराथा किआवृत्तिसबउपासनोंमेंआ दर्त्तव्यहै जेसम्यग्दर्शनार्थउपासनाहैं वेअवघातादिवत्कार्या-न्तहैं इससेउनकाआवृत्तिपरिमाणज्ञातहै नहींसम्यग्दर्शनसेका-र्यकीसिद्धिमेंकुछफलान्तशासनकोशक्यहै अनियोज्यब्रह्ममेंआ-त्माकीप्रतिपत्ति जिससूरिकोउसकोशास्त्रकेअविषयसे जेअहं ग्रहादिअभ्युदयफलार्थहैंउनमेंचिन्ताहै क्याकिसप्रत्ययकोंकेती देरआवृत्तिकरकेफिरछांड़दे याजौलोजीवे तौलोआवृत्तिकरता रहै फिरयहीप्राप्तहै किकुछकालप्रत्ययका अभ्यासकरकेछांड़दे आवृत्तिविशिष्ट उपासनशब्दार्थको सार्थकरणसे सोनहीं आप्रा यणादेवावर्त्तयेत्प्रत्ययं अन्त्यप्रत्ययवशाददृष्टफलप्राप्तेः कर्मज-न्मान्तरभोग्यफलकेआरम्भकहैं और कर्मानुरूपभावनाकेविज्ञा नकोभीमरणकालमेंआक्षेपकहैं (१श्रुति सविज्ञानोभवति स विज्ञानमेवान्ववक्रामतियच्चित्तस्तेनैषप्राणमायातिप्राणस्तेजसा युक्तः सहात्मनायथासंकल्पितंलोकंनयतीत्यादि) अर्थ भावना मयविज्ञानकेफलकेस्फुरणसहितहै विज्ञानसेस्फुरितफलसवि ज्ञानहीदेहसेनिकरताहै यहांजहांकासङ्कल्पकरताहै वहांमन प्राणमेलीनहोताहै तेजः उदान आत्मा जीव । जलूकादृष्टान्त श्रुतिकाभाविफलस्फूर्तिहै । तृणजलूका जैसे अगिलापांव ठहिराकेपिछिलापांवउठातीहै तैसेजीवकेसंकल्पानुसार देह लोकादिसबमिलकेतोभरताहै जेप्रत्ययस्वरूपकीआवृत्तिकोछा-ड़िक्याअन्त्यमरणकालमें भावीभावनाविज्ञानहै जिसकोचाहैं

तिस्सेजोप्रतिपत्तव्यफलभावनारूपप्रत्ययहैं उनमेंमरणकालकाआवृ-
त्तिकरो श्रुति सयावत्क्रतुरस्माल्लोकात्प्रैतीति इसनेधारासावह
तात्पर्यविज्ञानकहाहै यथार्थ स उपासक क्रतुः ध्यान कर्मसे
दृष्टद्वारा अन्यधीकाफलनहींहै अदृष्टद्वारकल्पनाहै सोंतवेला-
यामेतत्त्रयंप्रतिपद्येतेतिश्च यहभीमरणकालमेंकर्त्तव्यशेषकोसु-
नातीहै अक्षितमसि १ अच्युतमसि २ प्राणसंशितमसि ३
जोतीनमन्त्रमरणकालमेंपढ़े। इनआठअधिकरणोंसेसाधनोंका
विचारहै इस्सेसाधनाध्यायमेंइनकालिखनायोग्यथा तोभीफ-
लाध्यायमेंफलकेपाससेलिखेहैं ॥

पापसंश्लेषाधिकरण ॥ ९ ॥

तदधिगमउत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौ तद्व्यपदेशात् १३ ।

पूराहुआतीसरेकाशेष। अबब्रह्मविद्याकेफलकीचिंताकाप्र-
तायनहै ब्रह्मकेअधिगममें ब्रह्मसेविपरीतफलजोदुरितहै सो
क्षीणहोताहै यानहींक्षीणहोताहै यहसंशयहै कर्मफलार्थहैं
बिनाफलदियेक्षयसम्भवनहींहै फलदायिनीशक्तिकर्मकीश्रुतिसे
अधिगतहै जोकर्मफलभोगकेबिनाअपवर्गहोतो श्रुतिकदर्थित
हो फलांतपापहैनकिबीचमेंनाशहै ऐसेप्रायश्चित्तकाउपदेशव्य-
र्थहै यहदोषनहींहै आहिताग्निकाघरजरेतोइष्टिकरे जरनेके
निमित्तसेनकिदोषनाशार्थविधिहै श्रुति अग्नयेक्षामवतेपुरोडा
शमष्टाकपालंनिर्वपेदिति अर्थ पुरोडाश आंटेकाथोड़ेकेगु-
लाबराबर सुअरकेमुहसाबनताहै आठटुकरेमाटीकेतवेकेठौर
धर उनपरउसकोपकालेतेहैं उसकाहोमक्षामवत् अग्निकेअर्थ
होताहै वेदमेंइसीकानामपुरोडाशहै जैसेरहद्राहेष्यादिनैति

त्तिकहैं तैसेसबप्रायश्चित्तनैमित्तिकहैं दोषीप्रायश्चित्तकरैयहऐ-
सेहै जैसेमलिनस्नानकरै यहांदोषनिवृत्तिद्वाराफलपरहै तर-
तिब्रह्महत्यांयोश्वमेधेनयजतइत्यादि जैसेश्रौतप्रायश्चित्तदोषसङ्ग
केविधानसे दोषक्षयपत्रार्थहैं नकिनैमित्तिकहैं ज्ञानदोषक्षया-
र्थनहींविहितहै क्षीयन्तेचास्यकर्माणीत्यादि जैसेज्ञानकेसावका
मात्रहैं ननु ब्रह्मवेदीकेकर्मक्षयनमानेमें कर्मफलकोअवश्यभो-
क्तव्यसेअनिर्मोक्षहो सोनहींकहिताहूं देशवोकालवोनिमित्तसे
कर्मफलवत् ज्ञानफलमोक्षहोगो तिससेब्रह्माधिगममें दुरितनि
वृत्तिनहींहै जोतुमकहासोनहीं जोमैंकहिताहूं सोहै तदधिग-
मे ब्रह्माधिगमेसति उत्तरपूर्वयोरघयोरश्लेषविनाशौस्तः आगे
केपापअसम्बन्ध औरपीछेकेपापकानाश किससे तद्व्यपदेशात्
देखोब्रह्मविद्याकीप्रक्रियामें आगेकेपापकासम्भाव्यमानसम्बन्ध
काअसम्बन्धज्ञानीकोकहितीहै यथापुष्करपलाशआपोनश्लिष्य
न्तएवमेवंविदिपापंकर्मनश्लिष्यतइति तैसेपिछिलेइकट्ठेपापोंका
नाशदिखातीहै तद्यथेषीकातूलमग्नौप्रोतंप्रदूयेतैवंहास्यसर्वेपा
प्मानः प्रदूयन्तइति कहिचुकेसगुणकोदशा अबनिर्गुणदशासुनो
भिद्यतेहृदयग्रन्थिश्छिद्यन्तेसर्वसंशयाः क्षीयन्तेचास्यकर्माणितस्मि
न्दृष्टेपरावरइति जोकहाकि अभुक्तफलकर्मकोक्षयमानेमेंश्रुति
कदर्थितहोसोदोषनहीं नहीमैंकर्मकोफलदायिनीशक्तिकोअव-
ज्ञाकरताहूं हैशक्ति फिरशक्तिविद्यादिकारणोंसेप्रतिबद्धकहि-
ताहूं शक्तिकेसद्भावमात्रसेश्रुतिकाव्यापारहै नकिप्रतिबन्धअप्र-
तिबन्धमें नहिकर्मक्षीयतइत्यादि स्मृति औत्सर्गिकीहै अभोगा
दृतेकर्मक्षीयते यहभोगार्थहै इष्टहैप्रायश्चित्तादिसे कर्मकाक्षय
सर्वपाप्मानन्तरति तरतिब्रह्महत्यांयोश्वमेधेनयजतेयदुवैनमेवं
वेदेत्यादि जोकहाथाकिनैमित्तिकप्रायश्चित्तहोंगे सोझूठहै दो-

षसंयोगसेचोद्यमानप्रायश्चित्त दोषनाशफलकेसम्भवसे फलांतरकीकल्पनाअसिद्धिसे औरजोकहाकिनहींप्रायश्चित्तवत् दोषक्षयार्थविद्याकाविधानहै कहिताहूं यहांपर सगुणविद्यामेंविधानविद्यमानहै उसकेवाक्यशेषमे ऐश्वर्यकालाभ औरपापकानाश विद्यावान्कोकहाहै जिस्से ऐश्वर्यऔरपापनाश दोनोंकीअविवक्षाकाकारणनहींहै इस्सेपापहानिपूर्वक ऐश्वर्यकीप्राप्तिहै सगुणउपासनोंकाफलहै निश्चीयमानहै निर्गुणविद्यामेंयद्यपिविधाननहींहै तथापिअकर्तृत्वादिबोधसेकर्मदाहसिद्धहै अश्लेषदिखाताहै किआगामीकर्ममेंब्रह्मवित् करतानहींहै अतिक्रान्तकर्ममेयद्यपिमिथ्याज्ञानसे करताप्राप्तसाथा तथापिविद्यासामर्थ्यसे मिथ्याज्ञानकीनिवृत्तिसे कर्मकालयहै इस्से पढ़ाकिविनाशङ्कात पूर्वसिद्धकरता भोक्तासेविपरीततीनकालमेंअकर्त्ताभोक्तास्वरूप मैंब्रह्महूं नकिइस्से पूर्वभी कर्त्ताभोक्तामैंथा नकिअब नकिभविष्यत्कालमे ऐसाब्रह्मवेदीजानताहै ऐसामोक्षयुक्तहै अन्यथाअनादिकालसेप्रवृत्तकर्मकेक्षयकेअभावमें मोक्षाभावहो नहींदेशकालनिमित्तकीअपेक्षासे कर्मफलवत्मोक्षहोनेयोग्यहै अनित्यकेप्रसङ्गसे औरज्ञानकाफलपरोक्षनहींहै तिस्सेब्रह्माधिगममे दुरितकाक्षयस्थितहै ॥

पुण्यासंश्लेषाधिकरण ॥ १० ॥

इतरस्याप्येवमश्लेषःपातेतु । १४ ।

पूर्वाधिकरणमें स्वाभाविकबन्धकेहेतु पापकासङ्ग औरनाश ज्ञाननिमित्तकविचारवेदकेकहिनेसे फिरधर्मवैदिकसे वैदिक ज्ञानसे अविरोधशंक्य विरोधनिरासार्थ पूर्वाधिकरणकेन्यायकाअतिदेशकर्ताहै ज्ञानसेपुण्यकाक्षयहैयानहींहै ज्ञानपुण्यनाशकनहींहै वैदिकसेपुण्यवत् इतरस्यापि पुण्यकर्मका एवं पाप

वत् असंश्लेषः असंश्लेष और विनाश ज्ञानी के होते हैं किसे ज्ञान को भी स्वफल में हेतु से ज्ञानफल के प्रतिबन्धि के प्रसङ्ग से श्रुति उसे उहै वैष एतेतरतीत्यादि इनमें दुष्कृतवत् सुकृत का भी नाश कहा है अकर्त्ता ऐसा बोध सुकृत दुष्कृत में तुल्य होने से चीयंते चास्य कर्माणि इसने पुण्य पाप का क्षय अविशेष कहा है सर्वे पाप्मानमित्यादि विशेष श्रुति ने पाप शब्द से पुण्य का भी संग्रह किया है ज्ञानापेक्षा से पुण्य फल निकृष्ट से और है भी श्रुति से प्रयुक्त पुण्य में पाप शब्द नैनं सेतुमहोरात्रे तरतइति इसमें दुष्कृत के साथ सुकृत का अनुक्रम कर सर्वे पाप्मानोतो निवर्त्तन्तइति इसने अविशेष से प्रकृत पुण्य में पाप्म शब्द पढ़ा है पातेतु तु अवधारणार्थ है ऐसा बन्ध हेतु धर्माधर्म का विद्या सामर्थ्य से अश्लेष विनाश की सिद्धि में ज्ञानी की देहपात पीछे अवश्य भाविनी मुक्ति अवधारित है ज्ञानी को भी सञ्चित पापों के भोगे पीछे मुक्ति है अन्यमत में ज्ञान समकाल में पाप नाश से जीवन्मुक्ति है जैसे तीर लगा और मरा तैसे ज्ञान हुआ और मुक्ति हुई सो यहां होनी अनहोनी है बिना मरे इस्से ज्ञानी को जीवन् मुक्ति कही है अन्यथा ज्ञान व्यर्थ होदे रसे ॥

अनारब्धकार्याधिकरण ॥ ११ ॥

अनारब्धकार्येएवतुपूर्वेतदवधेः १५।

पिछिले दो अधिकरणों में ज्ञान निमित्त पाप पुण्य का नाश निश्चित किया था वुह नाश क्या आरब्ध कार्य पाप पुण्य का या अनारब्ध का यों का तुल्य है या विशेष से अनारब्ध का ये जो पाप पुण्य हैं उनका है यह विचार है उभे उहै वैष एतेतरतोत्यादि इनमें अविशेष सुन्ने से अविशेषत्त्वय है इस्से पढ़ा कि अनारब्धकार्येएवतु पहिले जन्मान्तर के इकट्ठे और फल देने को नहीं घड़े जो पाप पुण्य हैं वे इस जन्म में ज्ञान के ज-

न्मसेपहिलेधरेपापपुण्य ज्ञानाधिगमसेक्षयहोतेहैं नकिआरब्ध
कार्यपापपुण्यसामि भुक्तफलोंकाक्षयहै जिनपापपुण्योंसेयहब्र-
ह्मज्ञानीठौरजन्मवनाथा सोकैसे तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमो
क्षेथसंपत्स्यइति अर्थ जोलोप्रारब्धसेमुक्तनहोगा तोलोदेरउसको
मुक्तिमेंहै सम्पत्स्य ब्रह्मसंपद्यतइत्यर्थहै मरेपरक्षेमप्राप्तिसे अन्य
थाज्ञानसेसवकर्मोंकेक्षयमे ठहिरानेकेहेतुकेनरहिनेसे ज्ञानप्रा
प्तिमेहीक्षेमभोगो वहांदेहक्षयकोप्रतीक्षामतकहो सुनेहैंयाज्ञव
ल्क्यादिज्ञानीज्ञानभयेपर देहधरेफिरतेवेदसे ननु वस्तुकेवल
सेअकर्ताआत्मबोधकर्मोंकोक्षयकर्त्ता कैसेकुछकोक्षयकरेवोकुछ
कोछोड़दे नहींवह्निबीजकेसमानसम्पर्कमें किसीबीजकीशक्ति
काक्षयवोकिसीकोनहींक्षय यहअङ्गीकारशक्य सुनोजोकहूंहूं
नहींआरब्धकार्यजोकर्माशयहै उसकेबिनाआश्रयकरे ज्ञानका
जन्मयुक्त जैसेदण्डसेघुमाया कुम्हारकाचाक बीचमेंरोकविन
नहींथमताहै तैसाहीकर्माशयहै हैवेगक्षयकाप्रतिपालन अक-
र्ताआत्मबोधमिथ्याज्ञानकेबाधसे कर्मोंकानाशकहै औरबाधि
तभीमिथ्याज्ञान दो चन्द्रादिकेज्ञानवत्संस्कारकेवशसे कुछका
लअनुवर्त्तताहै अपिच यहांविवादमतकरो किब्रह्मवेदीकुछ
कालजीतायाज्ञानकालहीमेंमरताहै यदिश्रुत्यादिसेआरब्धका
र्यकोस्थिरनमानोगे तदाउपदेष्टाकेनरहिनेसे विद्याकीसम्प्रदा
यकानाशहोगा औरयहभीकहिसक्तेहैं कितौलोउपदेष्टाअवि-
द्वान्है विद्वान्होतातोवेदनकालहीमेंमरजाता कैसेएककेहृ-
दयकीप्रत्ययऔरब्रह्मवेदन औरदेहधारणअपरसे पहुंचिसक्ता।है
श्रुतिस्मृतिमेंस्थिरप्रज्ञकोकहिनेसे मैंनेभीवैसाकहा।है तिसें अ-
नारब्धकार्यजेसुकृतदुष्कृतहैं उनकाविद्यासामर्थ्यसेक्षयहै यह
निर्णयहै ॥

नित्यकर्माश्लेषाधिकरण ॥ १२ ॥

अग्निहोत्रादितुतत्कार्यायैवतद्दर्शनात् १६ ।

पुण्यकेसम्बन्धविनाशमेंअघन्यायकहाथा सोअतिदेशसर्वपुण्यों मेंहै इसशंकाकाउत्तरहैकि अग्निहोत्रादितुशब्दशंकावारक है जोवैदिकनित्यकर्मअग्निहोत्रादिहैं तत्कार्यायैव ज्ञानकाजो कार्यहैसोहीकार्यउनकाहै सोकैसे तद्दर्शनात् तमेतंवेदानुवच नेनेत्यादि श्रुतिकेदेखनेसे विद्योपक्षमेंज्ञानकोकर्मसाक्षात्एक कार्यार्थहैं अक्षयपक्षमेंज्ञानसाक्षात् औरकर्मपरंपरासेमुक्तिहे- तुहै ननुज्ञानकर्मकेकार्यकोरूपभेदसे कार्यैक्यकोअसिद्धिहै सो दोषनहीं जैसेज्वरमरणकार्यवाले दधिविषगुड़मंत्रसयुक्तसे तृ- प्तिपुष्टिकार्यदेखतेहैं तैसेज्ञानसंयुक्तकर्मसेमुक्तिकार्यसिद्धहै ननु मोक्षअनारभ्यहै फिरकैसेकहितेहोकि मोक्षकर्मकार्यहै सो दोषनहीं ? कर्मआरात्उपकारकहैं वेज्ञानकेप्रापकहैं।के कर्म कीप्रनाडीसेमोक्ष हेतुऔपचारिकहैं ज्ञानकेआगेकर्मकेअभा- वसे पूर्वसेकार्यैक्यकाकहिनाहै नहीब्रह्मवेदीको आगेअग्नि होत्रादिकासंभवहै अनियोज्यब्रह्मात्मकी प्रतिपत्तिसे और वेदकेअविषयसे सगुणविद्यामें कर्तृत्वसे निवृत्तिनहीहै इससे आगे अग्निहोत्रादिकासंभवहै सोअग्निहोत्रादि निरभिसं- धिअर्थात्फलेच्छाकेबिनाक्रियाइस्से कार्यान्तरकाअभावहैतिसे उसकी विद्याकेसाथसंगतिकी उपपत्तिहै ॥

अतोन्यापिह्येकेषामुभयोः १७ ।

किसकेलिये अश्लेषविनाशवाक्यहै औरकिसकेलिये आदि- मेंविनियोगवाक्यहै जोप्रारब्धसे अन्यकाम्यपुण्यपापहै सोज्ञा-

नीकाग्रन्मित्रमेघसिजाताहै आपत्त्र्ञानसे नाशहोताहै यह एकशाखीकहितेहैं तस्यपुत्रादायमुपयंतिसुहृद: साधुकृत्यांहि षंत: पापकृत्यामिति इसकाउत्तरपढ़ाकि अतोन्यापिह्येके षामुभयो: अत: अग्निहोत्रादिनित्यकर्मसे अन्यापि औरभी होहै साधुकृत्यजोफलकी अनिच्छासेकर्त्ते हैं उसकायहविनियोग कहाथाएकशाखियोंको सुहृद:साधुकृत्यामुपयंतीति और उसीकाअघवत् अस्लेषबिनाशकहाहै औरपापकृत्यकाभीअस्लेषहैऐसाहो इसजातिकेकाम्यकर्मोंका बिद्याकेअनुपकारसे उभयो: जैमिनिबादरायणदोनोंकीसम्मतिपत्तिहै ॥

विद्योपहितकर्माधिकरण ॥ १३ ॥

यदेवविद्ययेतिहि १८ ।

ज्ञानागयामुक्तिसेकिपूर्वाधिकरणमे मोक्षार्थअग्निहोत्रादि सुमुक्षुकृत कृतपापक्षयसेअन्त:करणशोधकहाकि मोक्षार्थब्रह्माधिगमकेनिमित्तसे ब्रह्मबिद्याकेसाथकार्यंकारीहैं फिरअग्निहोत्रादिअङ्गाश्रयबिद्यासंयुक्तऔरकेवलहैं श्रुति यएवंबिद्वान्यजतियएवंविद्वान्जुहोति यएवंविद्वान्शंसतियएवंविद्वान्गायति तस्मादेवंबिदमेवब्रह्माणंकुर्वीततेनोभौकुरुतोयश्चै तदेवंवेदयश्च नवेदेत्यादि इनसेबिद्यासंयुक्त औरकेवलभीकर्महै इसमेविचारहैकि क्याबिद्यासंयुक्त अग्निहोत्रादि सुमुक्षुकोबिद्याकेहेतुसे बिद्याकेसाथएककार्यकरते नकिकेवलयाविद्यासंयुक्त औरकेवलअविशेषसे कैसेसंशयहै तमेतमात्मानंयज्ञेनविविदिषंतीति इसनेयज्ञादिअविशेषसे आत्मवेदनकेअङ्गसुनायेहैं इससे बिद्यासंयुक्तअग्निहोत्रादिकाविशिष्टबोधहै फिरप्राप्तहैकिअग्निहोत्रादिविद्यासंयुक्तआत्मबिद्याकेशेषहैं नकिबिद्याहीनबिद्याहीनसे

बिद्यायुक्तविशिष्टजाननेसे यदहरेवजुहोतितदहः पुनर्मृत्युमपजयत्येवंविद्वानित्यादिसे बुध्यायुक्तोयथापार्थइत्यादि स्मृतिसे इसो पढ़ाकि यदेवविद्ययेतिहि सचहैकि विद्यासंयुक्तअग्निहोत्रादि विद्याहीनअग्निहोत्रादिसेविशिष्टहैं जैसेविद्याहीननरसे विद्यावान्नर सोभीनहीं अत्यन्तअघहोतेहैं। विद्याहीनअग्निहोत्रादि कैसे तमेतमात्मानंयज्ञेनेति इसो अविशेषअग्निहोत्रादिकोविद्याकाहेतुसुन्नेसे ननु विद्यासंयुक्तअग्निहोत्रादिको विद्याहीनसे विशिष्टकेबोधसेबिद्याहीनअग्निहोत्रादि आत्मविद्याहेतुसेअघहोतेहैं यहयुक्तहैसोनहीं विद्यासहायअग्निहोत्रादिकोविद्यानिमित्तसामर्थ्यातिशयकेयोगसे आत्मज्ञानमेंकोईकारणातिशय* होगानतैसाविद्याहीनकर्मसे यहकल्पनायुक्तहै औरनकि यज्ञेनविविदिषन्तीति इसमेंआत्मज्ञानांगअविशेषसे श्रुतअग्निहोत्रादिकोअनङ्गमानसक्तेहो यहीश्रुतिकहितीहै यदेवविद्ययाकरोतीत्यादि इसनेकर्मकोकेवलवीर्यवत्कहाहै कर्मवीर्यवत्वुहहै जोस्वप्रयोजनसाधकहै तिस्से विद्यासंयुक्तनित्यअग्निहोत्रादिऔरविद्याहीन दोनोंकोमुमुक्षुमोक्षार्थं इसमेंयाजन्मान्तरमेंज्ञानजन्मकेपहिलेकियेजेकर्म वेयथासामर्थ्यब्रह्माधिगमका जोप्रतिबन्धकेहेतुकियेपापकेक्षयकेहेतुसे ब्रह्माधिगमकेहेतुहोके श्रवणमननश्रद्धातात्पर्यादिअन्तरङ्गकारणकोअपेक्षासे ब्रह्मविद्याकेसाथएककार्यहैयहस्थितहै ॥

अधिकारिमुक्त्यधिकरण ॥ १४ ॥

भोगेनात्त्वितरेक्षपयित्वाथसंपद्यते १९ ।

तत्ववित् यहांविषयहै सोक्याप्रारब्धकेनाशकेआगेसंसरता

---

* शीघ्रकारी ।

हैयानहीं जिनकर्मों नेपुण्यपापकार्यनहीं आरम्भाहै उनका। अथ कहाय। विद्यासामर्थ्य से इतरेतु आरब्धकार्येपुण्यपापभोगसे दूरकरब्रह्मसेसम्पन्नहोताहै ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति इनसे ननुसम्यग्दर्शनसेभी जैसेदेहनाशसे पूर्वभेददर्शन दोचन्द्रदर्शनरीति सेअनुवृत्तहै ऐसेपीछेभी अनुवर्त्तनहो मरेपीछेभी तत्वविद्संसारमेंआवेगा संसारयोग्यसे जैसे देहनाशसेपूर्वथा सोनहीं भोगनिमित्तकर्मकेअभावसे अनुवृत्तिकानिमित्त भोगशेषका क्षयहै पुनर्भवमें दोदोचन्द्रदर्शनमें तैसाज्ञानीकोनहींहै ननसञ्चितकर्मान्तर पुनर्भवकानिमित्तहै फलकेसुखकेदाहसे ननु अन्यकर्माशयनयेभोगकोरचेंगे सोनहीं कर्माशयकेबीजअरनेसे अविद्यादिक्लेशकर्म औरकर्मफलकेबीजहैं मिथ्याज्ञानकेवशमें कर्मान्तर देहनाशमेंभोगान्तरकोरचतेहैं सोमिथ्याज्ञानसम्यग्ज्ञानसेजराहै इससे यहसाधुहैकिआरब्धकर्मोंकेक्षयमेंज्ञानीको कैवल्यअवश्यहै अर्थात्मरेपीछेमुक्तिहोतीहै ॥

इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येतुर्थाध्यायस्य प्रथमःपादःपूर्णः ॥

उत्क्रान्ति पाद दूसरा । २ ।

वाङ्मनोधिकरण ॥ १ ॥

वाङ्मनसिदर्शनाच्छब्दाच्च १ ।

अवअपरविद्यामें फलार्थदेवयानपन्थकेअवतारसे प्रथमयथाशास्त्रउत्क्रान्तिकाक्रमकहतेहैं कहेंगेयहकिसूरिमूढ़कोसमान उत्क्रांतिहै हैश्रुतिप्रायणमें अस्यसोम्यपुरुषस्यप्रयतोवाङ्मनसि

सम्पद्यतेमनःप्राणेप्राणस्तेजसितेजःपरस्यांदेवतायामिति क्याव
हांवृत्तिमतीवाणीकीमनमेंसम्पत्तिहै यावाग्वृत्तिकीयहविषयहै
वाग्कीमनमेंसम्पत्तिप्राप्तहै इसमें श्रुतिअनुगृहीतहै अन्यथाल-
क्षणाहो श्रुतिवोलक्षणाकेविषयमेंश्रुतिलेनान्याय्यहै नकिलक्षणा
इसवाणीकामनमेंप्रलयहै सोनहीं वाग्वृत्तिमनमेंसम्पद्यमान
है तुमकैसेवाग्वृत्तिकालक्षकहितेहो आचार्यतोवाक्मनसिऐसा
पढ़ताहै सचहै अबऐसाहीपढ़ाहै आगेपढ़ेंगाकि अविभागोव
चनादिति तिससे यहांवृत्तिकाशममात्रविवक्षितआगे तत्वकेप्र-
लयकीविवक्षामेंसर्वत्रअविभागकीसाम्यसेक्युंपरत्रअविभागवि-
शेषहो वृत्तिकेलेनेकीविवक्षामेंपूर्ववाग्वृत्तिउपसंहृतहै स्थितमन
कीवृत्तिमें यहअर्थहै कैसे दर्शनात् देखतेहैं वाग्वृत्तिकापूर्वउप
संहारविद्यमानमनोवृत्तिमें नकिवृत्तिमतीवाणीका मनमेंउप-
संहारकिसीसेदेखनेकोशक्यहै शंकाश्रुतिकीसामर्थ्यसेवाणीका
मनमेंअप्यययुक्तहै यहकहाथा सोनहीं जिसकाजिससेजन्महै
उसकाउसमेंप्रलयन्याय्यहोनेसे जैसाघड़ेकामाटीमें नहींमनसे
वाग्जन्मीइसमेंकुछप्रमाणहै वृत्तिकाउद्भवऔरअभिभवप्रकृ-
तिमेंदेखतेहैं पार्थिवकाठआदिसे तैजसअग्निकीवृत्तिबढ़तीहै
जलमेंठण्ढीहोतीहै इसपक्षमेंयहकैसेबनेगाकि शब्दवाङ्मनसि
सम्पद्यतइति इसेपढ़ाकि शब्दाच्च शब्दभीइसीपक्षमेंसमर्थहै
वृत्तिऔरवृत्तिमान्केअभेदकेउपचारसे यदिकारणमेंस्वरूपसेली
नहैं तदास्मृतमात्रकीमुक्तिहै किसीमतसे स्वरूपसे लयमेंसंसार
होताहै ॥ वृत्तिलयाधिकरण ॥ २ ॥

अतएवचसर्वाण्यनु २।

तस्मादुपशान्ततेजाः पुनर्भवमिन्द्रियैर्मनसिसम्पद्यमानैरि

ति अर्थ देहठण्ढीहोनेसेमरेपीछेफिरजन्मताहै इसनेअविशेषसे सबइन्द्रियोंकालयमनमेंकहाहै अतएवच वाणीकीनांईनेत्रादिकासवृत्तिकमनकीस्थितिमें वृत्तिलोपदेखनेसेतत्वकाप्रलयनहीं है श्रु तिमेंइन्द्रियशब्दवृत्तिपरहै सर्वाणि वृत्तिद्वारासबइन्द्रियां मनमेंघुसतीहैं अनुवृत्तिकेपीछे सबकरणोंकामनमेंउपसंहार केअविशेषसेवाणीकापृथक्कहिना वाङ्मनसिसम्पद्यते इसउदाहरणकेअनुकूलसेहै ॥

मनोधिकरण ॥ ३ ॥

तन्मनःप्राणउत्तरात् ३ ।

वाङ्मनसिमेंवृत्तिकालयजानाथा अबजोउसकेआगेवाक्यहै कि मनःप्राणइति क्यायहांभीवृत्तिकीसम्पत्तिविवक्षितहै या वृत्तिमत्कीसम्पत्ति इससंशयमें वृत्तिमत्कीसम्पत्तिप्राप्तहै श्रुत्यनुग्रहसे औरउसकीप्रकृतिकीसिद्धिसे अन्नमयंहिसोम्यमनः आपोमयःप्राणइति इसनेमनकीयोनिअन्न औरप्राणकीयोनि जलबतादिया आपश्चान्नमसृजन्तेतिश्रुति इस्से जोमनप्राणमे लीन तोअन्नजलमेंलीनहै अन्नमनऔरजलप्राणहै प्रकृतिविकृतिकेअभेदसे सोनहीं सोमनअगृहीतवाह्येंद्रियवृत्तिसे मनःप्राणेप्रलीयते इसअगिलेवाक्यसे मनकालयप्राणमेंजाना सुषुप्तु औरमुमूर्षुकीपरिस्पन्दरूपजोप्राणवृत्तिस्थिरहै उसमेंमनोवृत्तियोंकाशमदेखतेहैं मनकेस्वरूपकाअप्ययप्राणमेंसम्भवनहीं मन कीप्रकृतिप्राणनहोनेसे अन्यथाहिमयटमेंप्रकृतिविकृतिभावही ननुदिखायाथाकिमनकीप्रकृतिप्राणहै सोसारनहीं इसप्रनाड़ीसेअन्नमेंमनजलमेंअन्नऔरजलमेंप्राणलीनहो नहींइसपक्षमें

प्राणरूपपरिणतजलसेमनकेजन्ममेंकुछप्रमाणहै तिससे मनकेस्वरूपकालयप्राणमेंनहींहै वृत्तिकेलयमेंभीशब्दसमर्थहै वृत्तिवृत्तिमत्केअभेदकेउपचारसे ॥

प्राणलयाधिकरण ॥ ४ ॥

सोऽध्यक्षेत्तदुपगमादिभ्यः ४ ।

जिसकाजिससेजन्मनहीं उसकाउसमेंस्वरूपसेलयनहीं किंतु उसकीवृत्तियोंकालयहैयहध्रुवहै अबप्राणस्तेजसीति इसमेंचिन्ताहैकि प्राणकीवृत्तिकातेजमेंउपसंहारहै यादेहेन्द्रियपञ्जरके अध्यक्षजीवमें श्रौतार्थमेंशङ्कानहींयोग्यहै इससेश्रुतिनेप्राणकीसंपत्तितेजमेंकहीसोसहीहै अग्रु तथाल्पनामान्यनहींहै हांशब्दभक्तोंकीयहीचालहै तोभीशब्दकेअर्थ निश्चयमेंलोकयुक्तियोग्यता होउचितहै सोऽध्यक्षे स प्राण अध्यक्षे अविद्याकर्मप्रज्ञाउपाधिमेंजोविज्ञानात्मास्थितहै जीवप्रधानप्राणवृत्तिहै कैसे तदुपगमादिभ्यः एवमेवेममात्मानमन्तकालेसर्वेप्राणाःअभिसमायन्ति यत्रैतदूर्ध्वोच्छ्वासीभवतीति अर्थ इसनेजीवकेपासमरणकालमें सबप्राणोंकाआनाकहाहै अविशेषसे जैसेथाराकालमेंनृपपास भृत्यआतेहैं समिटके तमुत्क्रामंतप्राणोनूत्क्रामतीति इसनेपंच वृत्तिप्राणकाजीवकेपीछेजानेकहाहै विशेषसे प्राणमनूत्क्रामंतं सर्वेप्राणाअनूत्क्रामंतीति सबइन्द्रियांप्राणकेपीछेचलदेतीहैं सविज्ञानोभवतीति अर्थ सप्राणसबकरणजीवमेंस्थितहोतेहैं जीव भोग्यफलार्थं ननु प्राणकालयतेजमेंसुना फिरकैसेप्राणकोजीव मेंडालायहदोषनहींहै उत्क्रमादिव्यवहारअध्यक्षाधीनसे और अन्यश्रुतिकेकहेविशेषकेआदरसेहैं ।

भूतेषुतच्छ्रुतेः ५ ।

फिरप्राणस्तेजसि इसनेकेवलअव्यवधानसेतेजमेंलयकहा इसे कहाकिभूतेषु स प्राणसंपृक्तअध्यक्षदेह बीजसूक्ष्मभूतोंमेंरहिता है प्राणस्तेजसीतिइसे ननु इसनेप्राणकीतेजमेंस्थितिदिखाई नकिप्राणसंपृक्तअध्यक्षकी सोदोषनहीं सोऽध्यक्षइति इसका अध्यक्षकेबीचमेंउपसंख्यानसे जोस्रुघ्नसेमथुराकोगया मथुरासे पाटलिपुत्रकोगया सोभीस्रुघ्नसेपाटलिपुत्रकोगया कहिसकतेहैं तिस्से प्राणसंपृक्तअध्यक्षकातेजसहचरितभूतोंमेंस्थानहै ॥

नैकस्मिन्दर्शयतोहि ६ ।

तेजसहचरितभूतोंमेंकैसेकहा एकहीतेजसुनतेहैं इसे पढ़ा किं नैकस्मिन् जीवदेहान्तरकोप्रस्थानवेलामेंएकतेजमेंहीनहीघुसारहताहै कार्यदेहअनेकात्मकदेखनेसे दर्शयतः उक्तार्थको प्रश्नप्रतिवाक्यदोनोंदिखातेहैं आपःपुरुषवचसइति देहबनाने कोस्थूलभूतआवश्यकहैं यहरंहत्यधिकरणमेंकहिचुके त्र्यात्मकत्वात्तुभूयस्त्वादिति इसमें श्रुति पृथिवीमयआपोमयो वायुमयआकाशमयस्तेजोमयइत्यादि मनु० अण्व्योमात्राविनाशिन्यो दशार्द्धानांतुयाःस्मृताः ताभिःसार्द्धमिदंसर्वं संभवत्यनुपूर्वशः। इत्यादि अण्व्यः सूक्ष्म मात्रा परिछिन्न मोक्षसेपूर्वअविनाशिनीहैं दशार्द्धानां पांचभूतोंकेसूक्ष्मभागमुक्तिकेपहिलेजीवकोनहीछोड़तेहैं ननुवागादिकेलीनमें औरदेहांतप्रस्थानवेलामेंक्वायं तदापुरुषोभवतीति इसउपक्रममें जीवकाआधारकर्मकोकहितेहैं तौहयदूचतुःकर्महै वतदूचतुरथयत्प्रशशंसतुः कर्महैवतत्प्रशशंसतुरिति तौहयाज्ञवल्क्यावेदोआर्तभागहैं जोजीवकेआ

धारकहैंथे सोकर्म है तौकर्मबोभूत यास्थूलसूक्ष्म हैं सोविरोधन हीं है कर्मसेप्रेराग्रहातिग्रह अर्थात् इन्द्रिय वोविषयरूपबन्धनकी प्रवृत्तिकर्माश्रयकहीथी देहान्तरमें जन्मभूतोपादानसे भूताश्रय कहाथा श्रुतिमेंप्रशंसासेकर्मकोप्राधान्यमात्रकहाथा नकिआ-श्रयान्तरकानिवारणकियाथा तिससे अविरोधहै ।

ज्ञान्यज्ञान्युत्क्रान्त्यधिकरण ॥ ५ ॥

समानाचासृत्युपक्रमादमृतत्वंचानुपोष्य ७ ।

क्याउत्क्रांतिसूरिमूढकोसमानहै याबिशेषवतीहै यहबि-षयहै बिशेषवतीहै पुनर्भवार्थभूतोंकाआश्रयहै नकिसूरिका-सोसंभवहै अमृतको सूरिभोगताहै इससे मूढकीउत्क्रांतिहै ननुबिद्याकेप्रकरणमेपढनेसे सूरिकीउत्क्रांतिहै सोनहीं जैसे स्वापादिसर्वप्राणियोंके साधारणयथाप्राप्तकाअनुकीर्तनहै बि-द्याप्रकरणमेनकिसूरिको बिशेषसेउनकाविधानहै तैसेउत्क्रांति महाजनकीभीअनुकीर्तितहै यत्रैतत्पुरुषः स्वपितिनामअभि-शिषतिनाम पिपासतिनामचेत्यादि जिसपरदेवमेमरेकातेज घुसताहै सोआत्मातत्त्वमसीतिसे कहिनेकोउत्क्रांतिनिषिद्धहै सूरिको नतस्यप्राणाउत्क्रामंतीति ऐसीप्राप्तिमेकहिताहूंकि समाना वाङ्मनसीत्यादिउत्क्रांति सूरिमूढको आसृत्युपक्रमात् समानहोनेकोयोग्यहै अविशेषसुनेसे मूढदेहवीजसूक्ष्मभूतोंमे लपिटाकर्मसे प्रेरादेहलेनेकोसंसारमेआताहै सूरिज्ञानप्रका-शित मोक्षनाड़ीद्वारकेआश्रितजाताहै यहआसृत्युपक्रमसेकहा है उपासकसिरकीनाडीमेघुसिअर्चिरादिमेजाताहै नकिअन्य यहबिशेषहै ननुमोक्षसूरिको मिलेगा सोदेशांतरमेतत्रनहीहै फिरक्युभूतोंकाआश्रयहै यासृत्युपक्रमहै इससे पढाकि अनुपोष्य

उपदाहिकायहरूपहै अदग्धा अविद्यादिक्लेशोंको अत्यन्तविना जरायेअपरविद्याकीसामर्थ्यसे अपेक्षितमुक्तिकीप्रेसाहै इस मुक्त्यर्थस्त्युपक्रमऔर भूताश्रयका संभवहै नहीनिराश्रयप्राण चलतेहैं इसमेंदोषनहीहै ॥

उपासकवृत्तिलयाधिकरण ॥ ६ ॥

तदापीतेःसंसारव्यपदेशात् ८ ।

तेजः परस्यांदेवतायामिति इसप्रकरणसामर्थ्यसे जैसे प्रकृततेजसाध्यक्ष वोसप्राण वोसाक्षग्रामवो भूतांतरसहित मरेकापरदेवमेघुसताहै यहजोकहायासोहै फिरकैसीसपति होयहचिंताहै आत्यन्तिकस्वरूपकालयप्राप्तहै सवजन्यमात्रवस्तु जातकीपरादेवताप्रकृति ठहिरादोथी तिस्से आत्यांतिको अविभागापत्तिहै परादेवतामे सोनहीं तत् तेजआदिभूतसूक्ष्म औरश्रोत्रादिकरणाश्रय आपीतेः आसंसारमोक्षजोसम्यक्ज्ञान निमित्तसे जोलोहैगातोलोठहिरेगा संसारव्यपदेशात् योनिमन्येप्रपद्यंतेशरीरत्वायदेहिनः स्थाणुमन्येनुसयंति यथाकर्मयथा श्रुतमित्यादि अर्त्येष्टिकेमंत्रोंमेंभी संसारहीगायाहै अन्यथा सबकोईमरणवेलामेउपाधिसे छुटाअत्यंतब्रह्ममेघुसो इस्से विधिशास्त्रव्यर्थहो मृतमात्रकीमुक्तिसेऔरविद्याशास्त्रभीव्यर्थहो जोमिथ्याज्ञानकेनिमित्तसेबंधहै सोसम्यक्ज्ञानके विनानहीं खुलनेकेयोग्यहै कर्मविद्यादोनोंके शास्त्रवलसे सबकीप्रकृति परदेवमेसुषुप्तप्रलयवत् बीजमात्रअवशेषलयहै ॥

सूक्ष्मंप्रमाणतश्चतथोपलब्धेः ९ ।

मोक्षवेदिकीसंज्ञा घनरंजरीभावहै अन्यभूतोंकेसहित तेज इसदेहस प्रवासीजीवकाआश्रयहै सोस्वरूपवोप्रमाणसेसूक्ष्महो

नेयोग्यहै देखोकैसेबड़ीबारीकनाड़ियोंसे निकारनावीऋबणादि से तेजकीसौद्मवामब्धहै तनुनाड़ोसेतनुतरहै इस्से उस्से चलने फिरनेकीसिद्धिहै स्वच्छसेकिसीमेटकरातानहीहै इनीगुणोंसेदेह से निकरतेजकोपासवी वैठैयानहीलभतेहैं॥

नोपमर्देनातः १० ।

अत: सौक्ष्म्यसेस्थूलदेहकेनाशमे सूक्ष्मदेहकानाशनहीहै ॥

अस्यैवचोपपत्तेरेषऊष्मा ११ ।

इनचारसूत्रोंकायहतात्पर्यहैकितेजः परस्यांदेवतायामिति इसनेतेजआदिभूतोंकालय परमात्मामे स्वरूपसेकहाहैपरमात्माभूतोंकाउपादानहोनेसे सोनहीतुम्हारीरीतिसे आत्मवेदी के भूतोंकास्वरूपसे लयहैावेवुहनिर्णयमागाहै तिससेउपासक औरकर्मियोंकेजन्मांतरकी सिद्धिकेअर्थत्रिकालयही माननीय है अस्यैवच सूक्ष्मदेहकी एषऊष्मा देहतप्तरहिनाहै इसदेहमे स्पर्शसे जिसउष्माकोजानतेहैं उसीसतेजोमयलिंग देहकोसाधिसतेहैं देखोमृतदशामेंस्थितदेहमे वो विद्यमानरूपादिदेहगुणोंमेऊष्मानहोलभतीहै जीवत् दशामेलभतीहै इस्से सिद्धहै किप्रसिद्धदेहसे भिन्नदेहमेऊष्माआश्रितहै यहअनुमानप्रपंचउन कोकियाहै जिशब्दकोनहीमानतेहैं हमतोश्रुतिनेउष्णालिङ्गसेउ षादेहसिखादीहै उष्णएवैषजीविष्यन्शीतोमरिष्यन्निति ॥

गत्यादिप्रतिषेधाधिकरण॥ ७ ॥

प्रतिषेधादितिचेन्नशारीरात् १२ ।

अमृतत्वस्यानुपोष्य इसविशेषणसेआत्यन्तिकमुक्तिमें गगति

नउत्क्रान्तिहै उसमेंभीकिसीहेतुसे उत्क्रान्तिकीशंकामानमने करताहै अथाकामयमानोयोऽकामोनिष्कामआप्तकामआत्मकामोनतस्यप्राणाउत्क्रामन्तिब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येतीति यहकाणश्रुतिहै अर्थ सकामकोसंसारकहैपीछे मुक्तिकामार्थअथशब्दहै आत्मकाम पूर्णानन्दात्मवेदी आप्तकाम लब्धपरमानन्द इससे निष्काम है प्रकटबासनाशून्यअकामहै याव्यक्तबहिरेकामोंसेरहित ऐसाजोअकामसयमानहै उसका उत्क्रमननहींहै इसपरबिद्याविषयनिषेधसेनहीं परब्रह्मवेदीकेदेहसेप्राणोंकीउत्क्रान्तिहै यदि ऐसाकहोसोनहींहै शारीरात् जिस्मेजीबसेउत्क्रान्तिकानिषेध हैप्राणोका नकिदेहसे कैसेजाना नतस्मात्प्राणाउत्क्रामन्तीति यहमाध्यन्दिनश्रुतिहै पञ्चमीसेसंबन्धसामान्य षष्ठीपञ्चमीसेसम्बन्धविशेषमेंस्थापितकीहै तस्मादिति इसप्रधानपञ्चमीसेअभ्युदयनिःश्रेयससे अधिकृतदेहीसम्बन्धहैनकिदेह नतस्मात् उच्चिक्रमिषु जीवसेप्राणनिकरतेहैं किन्तु जीवकेसाथसम्भथहै निकरना ॥

स्पष्टोह्येकेषां १३।

सप्राणप्रवासीजीवजबब्रह्मलोकमेंपहुंचताहै तबउसकोप्राण छोड़तेहैं इसशङ्काकाफिरसिद्धान्तकहताहै कि स्पष्टोह्येकेषां १३ जोकहाथाकिब्रह्मवेदीकोदेहसेउत्क्रांतिकानिषेधहैसोनहीं देहीअपादानसे जिस्मेउत्क्रान्तिनिषेधदेहापादान एकसमाम्नातोंकेशाखामें स्पष्टलभताहै देखोआर्त्त भागकीप्रश्नमें यत्रायं पुरुषोम्रियतेउदस्मात्प्राणाः क्रामन्त्याहोनेतीति इससे नेतिहोवाचयाज्ञवल्क्यइति इससे अनुत्क्रान्तिपक्षकोलेकेकहाकि नत्तह्ये यमनुक्रान्तेषुप्राणेषुम्रियतेइति इसशङ्कामेंपढ़ाकि अत्रैवसमव-

नीयतइति इसमें प्राणोंके प्रविलयकी प्रतिज्ञाकर फिर उसकी सि-
द्धार्थ पढ़ा कि स उच्छ्वयत्याध्मायत्याध्मातो मृत: शेत इति यहां सपद
स उच्छ्वयनादि उत्क्रान्तिका पढ़े हैं उच्छ्वयनादि देहके हैं नकि दे-
हीके उक्तश्रुतिका और इसका एकार्थ पाठ है न तस्मात्प्राणा उत्क्रा
मन्ति अत्रैव समवनीयन्त इति यहां भी अभेदके उपचारसे देहा-
पादानक उत्क्रमणका निषेध है माध्यन्दिनीय पञ्चमी पाठमें दे-
ही प्रधान है काण्वोंके षष्ठी पाठमें सूरि सम्बन्धिनी उत्क्रान्तिका नि
षेध है फिर प्राप्त उत्क्रान्तिके निषेधार्थ से यह वाक्य है तिससे देहा-
पादान उत्क्रान्ति निषिद्ध है देहसे उत्क्रान्ति प्राप्त है नकि देहीसे
अपिच चक्षुष्टो वा मूर्ध्नो वान्येभ्यो वा शरीरदेशेभ्यस्तमुत्क्रामन्तं प्रा-
णोनूत्क्रामति प्राणमनूत्क्रामन्तं सर्वे प्राणा अनूत्क्रामन्तीत्यादि
इसने मूढ़का सप्रपञ्च उत्क्रमण वो संसारमें गमन कहा है फिर नु-
कामयमान इति यह उपसंहार असूरिकथाका कर फिर अथाका-
मयमान: यह सूरिके अर्थ कहा है जो सूरिकी भी उत्क्रान्ति पहुंचो
तो कहिना सन्दिग्ध हो तिससे असूरिकी गति वो उत्क्रान्ति है और
सूरिको उनका निषेध है दोनों सार्थ हैं ब्रह्मवित्सर्वगत ब्रह्मरूपसे
वा क्षीणकाम कर्मसे उसकी गति उत्क्रान्ति युक्त नहीं है निमित्तके
न होनेसे अत्र ब्रह्म समश्नुत इति ऐसी श्रुति यां गति वो उत्क्रान्तिके
अभावको सूचन करती हैं बहिरी वायु भरनेसे फूलना भी जाढोल
सा बोलना जो धर्म देहके हैं न कि जीवके ॥

स्मर्यत्ते च १४।

महाभारतमें गति और उत्क्रान्ति तत्त्ववेदीके प्राणोंकी नहीं प-
ढ़ी है नोत्क्रामन्ति मुने: प्राणाव्यापी सर्वगतो हि स: इति जैसे तप्त
शिलालोहे पर पड़ा पानी न वहां न और ठौर गया किन्तु उनमें घुसि

गया तैसीप्राणरीतिहै शुकादिसदेहयोगबलसे सर्वत्रफिरतेथे नकिसगुणबलसे अदेहकोसबनहीदेखसक्तेहैं

परेलयाधिकरण ॥ ८ ॥

तानिचपरेतथाह्याह १५।

जैसेसूरिकीगत्यादिनहीहैं तैसेप्राणादिकलाओंकालयकहाया सोपकड़कैसंशयहै किकलाअपनीअपनी प्रकृतिधरादिमे यापरमेलयहोंगीपूर्वपक्षपीछेकहेंगे अबसिद्धान्तकहिताहै तानि ब्रह्मवित्की इन्द्रियवोभूतपरमेलयहोतेहैं सोकैसे तथाह्याह श्रुतिः एवमेवास्यपरिद्रष्टुरिमाः षोड़शकलापुरुषायणाः पुरुषंप्राप्यास्तंगच्छन्तीति अर्थ जैसेनदीसमुद्रमेलीनस्वरूपसेहोती हैं ऐसेसर्वत्रब्रह्मदर्शीकीप्राणश्रद्धादिसोरहकलापुरुषमेंकल्पित स्वेयपुरुषकोपहुंचिलयहोतीहैं ननु सूरिपरअन्यश्रुतिपरसेअन्यमेंकलोंकालयकहितीहै गताःकलाःपञ्चदशप्रतिष्ठाइति मन प्राणकोएकमानेसेकलापन्द्रहहैं प्रतिष्ठायहद्वितीयाकाबहुवचन है अपनेअपनेकीप्रकृतिधरादिहैं यत्रास्यपुरुषस्याग्निंवागप्येति वातंप्राणश्चक्षुरादित्यमित्यादि सोनहीं व्यवहारमें पार्थिवादि कलापृथिव्यादिअपनीअपनीप्रकृतिमेलयहोतीहैं अन्यश्रुतिसूरिकीप्रतिपत्तिकीअपेक्षासेसबकलाजातपरमेलीनहोताहैलोक दृष्टिसेप्रकृतिमेश्रुतिदृष्टिसेपरमेउनकालयहै प्रथमवेप्रकृतिमेल यहोकेफिरप्रकृतिकोलेकेपुरुषमेलीनहोतीहैं कलायहतात्पर्यहै तिसेदोषनहीहै ॥

वागादिलयाधिकरण ॥ ९ ॥

अविभागोवचनात् १६।

ऐक्यंवेदात् लयसूरिकीकलाका मूढ़कीकलाकासा साव-शेषहैयानिरवशेषहै लयसामान्यसेशक्तिशेषरहितीहै इस्सेपढ़ा कि अविभाग: भेदनहींरहिताहै कैसे वचनात् कलालयकाहि फिर कहिताहैकि भिद्यंतेचासांनामरूपेपुरुषइत्येवंप्रोच्यते स एषोऽकलोऽमृतोभवतीति अनुमान विमतकलालयसावशेष है कलालयसेसुषुप्तिवत् विमतकलालयनिरवशेषहै विद्याकृ तत्वसेरस्सोंमेविद्यासेसर्पलयवत् तिस्से अविभागहै कलाक्रम स प्राणमसृजतप्राणात् खंवायुर्ज्योतिराप: पृथिवीमिन्द्रियंमनो न्नमन्नाद्वीर्यंतपोमन्त्रा: कर्मलोकालोकेषुचनामांता: ॥

उपासकगतिविशेषाधिकरण ॥ १० ॥

तदो कोग्रज्वलनंतत्प्रकाशितद्वारोविद्यासामर्थ्यात्तच्छेषगत्यनुस्मृतियोगाच्चहार्दानुगृहीतःशताधिकया १७।

तस्यविज्ञानात्मनोजीवस्य ओक: स्थानंहृदयं तस्य हृदयस्या ग्रस्य ज्वलनं तेजनन्तेनप्रकाशितानि द्वाराणियस्यसोयंतत्प्रका शितद्वार: सर्वोपिहिजन्तुश्चक्षुरादिभ्य: स्थानेभ्यउत्क्रामतिसूरि स्तुहार्देनब्रह्मणानुगृहीत: शताधिकयामूर्द्धन्यनाड्याकुत: विद्या सामर्थ्यादुपास्तिसामर्थ्यात् एवंनियमेकोहेतुस्तत्राह तच्छेषग-त्यनुस्मृतियोगात् तस्याविद्याया:शेषभूता मूर्द्धन्यनाड़ीगतिरुत्त रमार्गइतियावत् तस्यानुस्मृतिरनुस्मरणंतस्ययोगस्तत्प्रमाणकत्वं तस्मादपिइतिसौत्रोनुवाद:होचुकीपरविद्याकीचिन्ताअबअपर विद्याकीचिन्ताहैअबसूत्रयुपक्रमदेखो तदोक: जिसमेउपसंहृतहै वागादिवृन्दऔरजोउत्क्रमिषुविज्ञानात्माहैउस्काओक:स्थान

हृदयहैश्रुतिसे सएतास्तेजोमात्राःसमभ्याददानोहृदयमेवान्वव क्रामतीति समुसृषुं तेजोमात्राइन्द्रियां हृदयकेआगेनाड़ीकेमुह काप्रकाशाख्यतेजहैश्रुतितस्यहैतस्यहृदयस्याग्रंप्रद्योततेतेनप्रद्योते नैषआत्मानिष्क्रामतिचक्षुष्टो वामूर्ध्नोवान्येभ्योवाशरीरदेशेभ्यइ ति क्यागतिसूरिमूढ़कीअनियमसेहै याहैकुछबिशेषनियमसूरि कोइससंशयमेश्रुतिसाम्यसेअनियमहै सोनहीं तत्प्रकाशितद्वा रः सूरिमूढ़ओहृदयकेमुहकेआगेउजेरासमानहै फिरवहउजेरा द्वारकाप्रकाशकाहैजैसागृहद्वारकाप्रकाशकागृहद्वारकादीपहैइस मानमेभीमूर्धस्थानसेसूरिनिकरताअन्यस्थानोंसे मूढ़निकरतेहैं सा कैसे बिद्यासामर्थ्यसे यदिसूरिभीमूढ़वत्जिसकिसीदेहके देशसेनिकरातदाबड़ेलोककोनलभी औरबिद्याव्यर्थहो तच्छेष गत्यनुस्मृतियोगाच्च जोगतिबिद्याशेषऔरमूर्धन्यनाड़ीसम्बन्धहै सोअनुशीलयितव्यहै औरजोबिद्याबिशेषमेंविहितहै गतिउसके अभ्याससेउसीमेप्रतिष्ठितयुक्तहै अनुस्मरणअदृष्टार्थहो उसयोग सेहृदयालयमेसूपासितब्रह्मसेअनुगृहीत ब्रह्मरूपसूरिमूर्धन्यना ड़ीसे शताधिकया जोकिएकसोएकनाड़ीसेनिकर्ताहै इतरइ तरनाड़ियोंसे सोहीहार्दबिद्यामेपढ़ाहै शतञ्चैकाचहृदयस्यना ड्यस्तासांमूर्धानमभिनिःसृतैकातयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेतिविष्व- ङ्न्याउत्क्रमणेभवंतीति अर्थ हार्द ब्रह्म विष्वङ् नानाविधअ न्यनाड़ीअन्यकोहैं सुषुम्नाड़ीहृदयसेनिकरदक्षिनीओरतालुक- ठांतस्तनकेबीच भित्तिद्वाराब्रह्मरंध्रमेप्राप्तहो सूर्यरश्मियों सेएकहोरहिहै सोहीउपासककेजानेकोब्रह्मलोककोराहहै ॥

रश्म्यधिकरण ॥ ११ ॥

रश्म्यनुसारी १८।

हार्दबिद्याहै अथयदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरेदहरंपुण्डरीकंवेश्मेति

इसउपक्रममेंविहितहैहार्दविद्या इसकोप्रक्रियामें अथयाएता हृदयस्यनाड्य इसउपक्रममेनाड़ीरश्मिकासम्बन्धमप्रपञ्चकहिके फिरकहाथा अथयचैतदस्माच्छरीरादुत्क्रामत्यथैतैरेवरश्मिभि-रूर्ध्वमाक्रमतइति फिरकहाकि तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेतीति तिसमेयहशङ्कानाकि जोएकसोएकनाड़ीसेनिकरा सोरश्मिमेहोकेगयाहै सोक्याअविशेषसेदिनयारातिमेंनियमसेरश्मिसेजाताहै यादिनमेंइससंशयमेंअविशेषसुन्नेसे अविशेषसेहीरश्मिसेजाताहै ॥

निशिनेतिचेन्नसंबंधस्ययावद्देहभावित्वाद्दर्शयतिच १९।

हैदिनमेनाड़ीयोरश्मिकासम्बन्ध इससे दिनमेंमरारश्मानुसारीहो रातिमेमरारश्मानुसारीनहो नाड़ीरश्मिकेसम्बन्धविच्छेदसे इससेपढ़ाकि इतिचेन्न यदिसम्बन्धाभावकहो सोनहींहै संबन्धस्य यावद्देहभावित्वात् नाड़ीरश्मिकासंबन्ध शिरारश्मिसम्पर्कजौलोदेहहै तौलोहै दर्शयतिच इसअर्थकोश्रुतिदिखातीहै अमुष्मादादित्यात्प्रतायन्ते ताआसुनाड़ीषुसृप्ताआभ्योनाड़ीभ्यः प्रतायन्ते तेमुष्मिन्नादित्ये सृप्ताइति अर्थ प्रतायन्ते फैलतीहैं सृप्ताः संबद्धहोतीहैं युक्तितुष्टकोयुक्तिहै कि निदाघकोरातिमे रश्मिकोअनुवृत्ति लभतीहै प्रतापादिकार्य देखनेसे हेमन्तादिकोरातिमेस्तोकानुवृत्तिरहितीहै जैसीहेमन्तादिमे वैसीदुर्दिनमेहै अहरेवैतद्रात्रौदधातीति अर्थ सूर्यरातिमेदिनकोधरताहैथोरीरश्मिसे जोरातिमेंमराबिनारश्मिकेसहारेसेऊपरकोगयातोरश्मिकासहाराव्यर्थहो यहविशेषनहींकहाकि जादिनमेमरासो रश्मिकीअपेक्षाकरऊपरजाताहै नकिरातिमे

मराजो सोरश्मिकीअनपेक्षाकर जाताहै अथ सूरिभीराति मेंमरणमात्रदोषसे जोऊपरनहींजाओ तोविद्यापाक्षिकफलदा हो इस्सेविद्यामेंप्रवृत्तिनहो मृत्युकालकेअनियमसे अथजोरा तिमेंमरादिनकीप्रतीक्षाकरो दिनकेनिकरनेमेंभीमरेकोकदा- चित्रश्मिसम्बन्धयोग्यदेहनहो अग्न्यादिसम्पर्कसे सयावत्क्षि- प्येन्मनस्तावदादित्यङ्गच्छतीति यहश्रुति अनुदीचाकोदिखाती है किउपासकजबकभीमराब्रह्मलोकमेंरश्म्यनुसारीजाताहै रा तिदिनकाकुछविशेषनहींहै जैसेधनीरथादिमेचलताहै ॥

अयनाधिकरण ॥ १२ ॥

अतश्चायनेपिहिदक्षिणे २० ।

अतएव सूर्यकीप्रतीक्षाव्यर्थहोनेसे वोअपाक्षिकफलविद्या होनेसेवोअनियतकालमृत्युसेदक्षिणायनमेंमरा सूरिविद्याकेफ लकोपाताहै उत्तरायणमेंमरणश्रेष्टहै भीष्मकीउदीक्षासे आपू र्यमाणपक्षाद्यान् षडुदङेतिमासांस्तानिति इसश्रुतिसेउत्तराय- णमरणार्थवाहिये इसशंकाकोइससूत्रसेकुटताहै मूढार्थप्राशस्त्य कीप्रसिद्धिहै मूढकादैवसेउसमेंमरणप्रशस्तहै इसअभिप्रायभि वदनआचारभीष्मनेपालाथा या बापकेवरसेस्वेच्छामरणदिखा याथा श्रुतिउत्तरायणदेवताकोकहतीहै वोदेवतासदारहता है इस्सेदक्षिणायनमेंभीमरेकोविद्यासे ब्रह्मप्राप्तिअविरुद्धहै यह भावहै ॥

योगिनःप्रतिचस्मर्यतेस्मार्त्तेचैते २१ ।

यत्रकालेत्वनावृत्तिमित्यादिस्मृतिः इसकालप्राधान्यसेउपक्र ममेदिनादिकालविशेषस्मृतिमे अनावृत्त्यर्थनियमितहै फिरके-

सेरातियाद्दक्षिणायनमेमरानहींलौटेगा कहांकहिताहूं दिनादिकालका विनियोग योगीकोहै अनावृत्त्यर्थस्मृतिमे योगसांख्यद्दोस्मार्त्त हैं नकिश्रौतहैं विषयभेदसेवोप्रमाणविशेषसेस्मार्त्तकालकेविनियोगका श्रौतविज्ञानमेघुसावनहींहै ननु अग्निर्ज्योतिरह:शुक्लइत्यादिस्मृति इसस्मृतिमेंश्रौतदेवयान वोपितृयाणप्रत्यभिज्ञातहै कहिताहूं तंकालंवक्ष्यामीति इससेकालकीप्रतिज्ञासे विरोधकीशङ्काकर परिहारकहाथा यदास्मृतिमे अग्न्यादिदेवतात्मातिवाहिकलो तदाकुछविरोधनहींहै कालशब्ददेवतापरहै तोश्रुतिस्मृतिकाएकार्थहै ॥

इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृते ब्रह्मसूत्रभाषाभाष्येतुर्याध्यायस्यद्वितीय:पाद:पूर्ण: ॥ २ ॥

पूर्व पाद मे उत्क्रान्ति का बिचार किया था अब उत्क्रान्त विद्वान् को अर्चिरादि की गति बिचारते हैं ॥

ब्रह्मप्राप्ति पाद तीसरा ॥ ३ ॥

अर्चिराद्यधिकरण ॥ १ ॥

अर्चिरादिनातत्प्रथिते: १ ।

जैसेचौराहेसेचलकेचौराहेमेअवश्यजावेगा वेसबएकठौरजामिलनेसे तैसेअर्चिरादिमार्गसबउपासकोंकोएकहीहै आस्रुति केउपक्रमसेसमानउत्क्रान्तिकहीथी औरस्रुतिश्रुतियोंमेनानाविधसुनतेहैं एकनाड़ीरश्मिसम्बन्धसे अथैतैरेवरश्मिभिरूर्ध्वआक्रमतइति दूसरीअर्चिरादि तेर्चिषमभिसम्भवन्त्यर्चिषोहरिति

तीसरी सएतंदेवयानंपथानमापद्याग्निलोकमागच्छतीति चौ-
थी यदावैपुरुषोस्माल्लोकात्प्रैतिसवायुमागच्छतीति पञ्चमी सूर्य
द्वारेणतेविरजाः*प्रयांतीति इनस्तुतियोंमेंसंशयहै किजोमिथो-
भिन्नरहैं याएकहैनानाविशेषणवती भिन्नप्रकरणसेभिन्नस्तुतिहैं
वोभिन्नोपासनाशेषसे अपिच अथैतैरेवरश्मिभिरिति यहअवधा
रणअर्चिरादिकीअपेक्षामेंरुद्धहो औरएकस्तुतिमे त्वरा वाक्यपी
ड़ितहो सयावत्क्षिप्येन्मनस्तावदादित्यङ्गच्छतीति तिस्मेजप-
न्थ आपुसमे भिन्नरहैं इसपढ़ाकि अर्चिरादिनां सबब्रह्मप्रसु-
अर्चिरादि स्तुतिसे जाताहै कैसे तत्प्रथितेः सब सूरियोंकीअ-
र्चिरादिस्तुतिठहिरीहै देखोपञ्चाग्निविद्याकेप्रकरणमे येचामी-
अर इसनेविद्यान्तरकेसेवकोंकाभी अर्चिरादिस्तुतिसुनाईहैजो
कहासोहो जिसविद्यामेकोईस्तुतिनहीं उसमे अर्चिरादिस्तुति
स्थिरहो जिसमेअन्यस्तुतिसुनी उसमेकिसलियेअर्चिरादिस्तुति
काआश्रयलेतेहो सुनोउक्ततोहोजोजेस्तुतिअत्यन्तभिन्नहों एकस्तु
तिनानाविशेषणवती ब्रह्मलोकमेपहुंचानेवालीकहि किसीवि
शेषणसेउपलक्षितकहिताहूं सर्वत्रएकदेशकीप्रत्यभिज्ञासे इतर
काइतरमे विशेषणविशेष्यभावसिद्धिसे एकस्तुतिकेअन्यादिवि
शेषणहैं जैसेप्रकरणभेदवोविद्यैक्यमे मिथोविशेषणोपसंहारहै
तैसेगतिविशेषोंकाउपसंहारहै विद्याभेदमेएकदेशगतिकीप्रत्य-
भिज्ञासे वोगन्तव्यकेअभेदसे गतिकाअभेदहै एकगन्तव्यदेखो
कितेतेषुब्रह्मलोकेषुपराः परावन्तोवसन्तीति तस्मिन्वसतिशा-
श्वतीःसमाः साचाब्रह्मणोजितिर्याव्युष्टिस्तांजितिञ्जयतितां व्यु
ष्टिं व्यश्नुते तद्यएवैतंब्रह्मलोकंब्रह्मचर्येणानुविदन्तीतिच अर्थ
परावतः दीर्घायुः हिरण्यगर्भके पराः दीर्घ समावर्ष कार्यब्रह्म

* निष्पाप।

की जितिः सर्वंञ्जय व्यष्टिः व्याप्तिकोपातेहैं इनमेंएकफलब्र-
ह्मलोकदिखायाहै एतैरेव यहनिश्चयअर्चिरादिके मानेमेंनहो
यहदोषनहीं एवकाररश्मिप्राप्त्यर्थहोनेसे नहिएकएवशब्दरश्मि
काप्रापक वोअर्चिरादिकानिवर्तकयोग्यहै फिरएवसेरश्मिस-
म्बन्धहीनिश्चितहै यथावत् यहत्वरावाक्य अर्चिरादिसेचिप्रार्थ
है जैसेलोकमेंहैकि निमिषमात्रमेंयहांआताहूं अपिच अथैत-
योः पथोर्नकतरेणचनेति इसनेदोमार्गसेभ्रष्टोंकेअर्थकष्ट तीस-
रास्थानकहाहै पितृयाणसेभिन्नएकदेवयानकहाहै सोअर्चिरा
दिपर्वंपन्थहै अर्चिरादिस्तुतिमेंमार्गकेपर्वबहुतहैं अन्यत्रथोरेहैं
बहुतकेआदरसेथोरेकोप्राप्तिन्याय्यहै ॥

वायुलोकाधिकरण ॥ २ ॥

वायुमन्दादविशेषविशेषाभ्यां २ ।

फिरकिससन्निवेशसेगतियोंका इतरेतरविशेषणविशेष्यभा-
वहै इसकोआचार्य सुहृदशोकेयथताहै सएतन्देवयानंपन्थान
मापद्याग्निलोकमागच्छतिसवायुलोकं सवरुणलोकं सइन्द्रलो-
कं सप्रजापतिलोकं सब्रह्मलोकमिति यह कौषीतकियोंकादेव
यानहै इसमेंअर्चिः वो अग्निलोकदोनोंशब्दएकार्थहैं ज्वलनव-
चनसे नकिइनसेसन्निवेशक्रमढूंढ़नयोग्यहै वायुअर्चिरादिमेंन
हींसुनीहै फिरकहांवैठानाचाहिये वायुको कहिताहूं तेर्चिष
मभिसम्भवन्त्यर्चिषोहरन्ह आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षान्या
न्षडुदङेतिमासान्मासेभ्यः सम्वत्सरंसम्वत्सरादादित्यमि
ति इसमेंसम्वत्सरसेपराक् वोआदित्यसेअर्वाक् वायुकासम्भव
है कैसे अविशेषविशेषाभ्यां देखो सवायुलोकं इसनेअविशेषसे
वायुकोकहाहै वोश्रुत्यन्तरमेंविशेषकहाहै यदावैपुरुषोस्माल्लो

कात्मैतिसवायुमागच्छतितस्मैसतत्रविजिहीतेयथारथचक्रस्यखं-
तेन सऊर्ध्वआक्रमते सआदित्यमागच्छतीति अर्थ उपासक
देहसेनिकरप्राप्तपुरुषकेअर्थवायुअपनेमेंछिद्रकरताहै वुहपहिये
केछिद्रतुल्यवायुने अपनेमेंदियाछिद्र उसीद्वारेसेनिकर आदि-
त्यमेंजाताहै इत्यर्थ इसनेआदित्यसे पूर्ववायुदिखायाहै इसवि
शेषसे अब्द वोआदित्यकेबीचमें वायुनिवेशयितव्यहै फिरक्युं
नहींअग्निकेपरदेखनेसे अर्चिकेआगेवायुका सन्निवेशकरतेहो
यहविशेषनहींहै ननुसएतंदेवयानंपन्थानमापद्याग्निलोकमाग
च्छति सवायुलोकमिति यहश्रुतिमुमनेकहीथी हांसुनोकहिता
हूं कौषीकिमेपाठमात्रपौर्वापर्यसेहै नकिक्रमवाचीकोईशब्द
है इसमेपदार्थकादर्शनमात्रकियाहै जैसे इसकोरपहुंचताहै
काणुकेयहां वायुदत्तछिद्रसेऊपरपहुंचि आदित्यमेजाताहै इसे
क्रमप्राप्तहै तिस्सेठीककहाकि अविशेषविशेषाभ्यां और मासे
भ्योदेवलोकंदेवलोकादादित्यमिति ऐसावाजसनेयीपढ़ताहै इ
समेंआदित्यकेआनन्तर्यार्थ देवलोकसेवायुमेंउपासकोंकाअभिस
म्भवहो सूत्रकारने वायुमब्दादिति यहछांदोग्यश्रुतिकीअपेक्षा
सेकहाथा छांदोग्यवोवाजसनेयोंके एकठौरदेवलोकनहींविद्य-
मानहै माससेसम्वत्सरहै इसमेश्रुतिदोकेविश्वाससे दोनोंदो-
नोंठौरमेंग्रथितव्यहैं इसविवेकसेकि मासकेसम्बन्धसेवर्षपूर्वहै
पश्चिमदेवलोकहै ॥

तडिदधिकरण ॥ ३ ॥

तडितोधिवरुणःसंबंधात् ३ ।

आदित्याच्चन्द्रमसंचन्द्रमसोविद्युतमिति इसविद्युत्केऊपर
सवरुणलोकमिति इस्सेवरुणसम्बद्धहै हैविद्युत्वोवरुणकासंबंध

यदा हि विशाला विद्युतस्तीव्रस्तनितनिर्घोषा जीमूतोदरेषु प्रनृत्यं-न्त्यथापः प्रपतन्ति विद्योतते स्तनयति वर्षिष्यति वा इति च ब्राह्म-णं जलाधिप वरुण श्रुतिस्मृति में प्रकट है वरुण से ऊपर इन्द्र वा प्र-जापति के स्थान के अभाव से वा पाठ सामर्थ्य से वा आगन्तू नाम न को सन्निवेश इस न्यान्य से वरुणादिका अन्त में निवेश है वैशेषिक स्था-न के न होने से और विद्युत् अन्त्य अर्चिरादि में है ॥

. आतिवाहिकाधिकरण ॥ ४ ॥

आतिवाहिकास्तल्लिङ्गात् ४ ।

अतिवहन्तीत्यातिवाहिकाश्चेतना देवा अर्चिरादयः कुतः तल्लि-ङ्गात् तेषां चेतनानामेको कारणेन लिंगादिति सो ये अर्थो अनुवाद्यते सं-स्कृतेन अर्चिरादि में संशय है कि क्या जे मार्ग चिन्ह हैं या भोगभूमि हैं या अतिनेता हैं गन्तों के मार्ग चिन्ह अर्चिरादि हैं मार्गरूपक होने से जैसे लोक में कोई ग्राम या नगर में प्रतिष्ठासमान सिखाया जाता है कि जा तू अमुक गिरि को फिर वट को फिर नदी को फिर ग्राम को फिर नगर को पहुंचेगा ऐसे यहां भी अर्चिषोऽहरन्ह इत्यादि से कहा है या भोग भूमि हैं लोक शब्द से अग्न्यादिका अनुबंध है अग्निलोकमागच्छती त्यादि लोक शब्द प्राणियों के भोगायतन में भाषित है जैसे मनुष्य लोक पितृलोक देवलोक सो ही ब्राह्मण ने कहा है अहोरात्रेषु ते षु लोकेषु सज्जन्त इत्यादि तिस से नहीं हैं आतिवाहिक अर्चिरादि अचेतन से अर्चिरादि अतिवाहिक नहीं सिद्ध हैं राजा से नियुक्त चेत-न पुरुष दुर्ग वन गिरि पथ में अतिवाह्यों को अतिवाहते हैं निवाहते हैं सो नहीं अर्चिरादि आतिवाहिक होने योग्य हैं कैसे तल्लिंगात् लिंग देखो चन्द्रमसो विद्युतं तत्पुरुषो अमानवः स एतान् ब्रह्म गम

यतीति इसने सिद्धवत् गमयिता दिखाये हैं पुरुषपद अमानवको ने तामें मानें से वाक्यभेद होसो नहीं विशेषणप्राप्त मानवकी निवृत्ति मात्रपर है यदि अर्चिरादि में पुरुष गमयिता प्राप्त है और वह मानव है तिस्से युक्त है पुरुषनिवृत्त्यर्थ पुरुषका विशेषण अमानव इति।

उभयव्यामोहात्तत्सिद्धेः ५।

ननु स्वयंप्रयत्नशून्यश्चेतनांतरेणनेयः इसन्यायके अभावसे लिंगअगमक है सोदोष नहीं उभय जे अर्चिरादि में जाते हैं वे विना देह संपिंडितकरणग्राम से अस्वतंत्र हैं और अचेतन से अर्चिरादि भी अस्वतंत्र हैं इस्से अर्चिरादिके अभिमानी चेतन देव विशेष हैं अतियात्रा में नियुक्त समुझे जाते हैं जैसे लोकमें मत्त मूर्छितादिके संपिण्डितकरणव्यूह परप्रेरणासे वर्त्म में होते हैं अर्चिरहरादिके अस्थिरसे अर्चिरादि मार्गके चिन्ह नहीं हैं नहीं रातिमें मरेका अहःस्वरूपाभिसंभवयुक्त है नकि दिनकी प्रतीक्षा करता है देवताध्रुवसे अस्थिर दोष नहीं है न मार्गचिन्ह न भोग्य है अर्चिरादि शब्द देवतों में अर्चिरादिके अभिमान से युक्त है अर्चिषोहरित्यादि ऐसा कहिना आतिवाहिकमें विरुद्ध नहीं अर्चि हेतुसे अहःसंभव है अन्हा इस हेतुसे ऽऽपूर्यमाणपक्षइत्यादि जैसे लोकप्रसिद्ध आतिवाहिकोंसे ऐसाही उपदेश देखते हैं कि यहांसे जा वलवर्मा के फिर जयके फिर कृष्णके और उपक्रममे तेर्चिरभिसंभवंतीति इस्मे सम्बन्धमात्र कहा नकि संबन्धविशेष कोई और उपसंहारमें सएतान्ब्रह्मगमयतीति इस्से संबंधविशेष कहा जोकि अतिवाह्य आतिवाहिकरूप है सोही उपक्रममें निश्चित है संपिंडितकरणोंसे गंताको मार्गमें भोग संभव नहीं है जैसे वन्धनिगडितका अभुंजान गंतामें लोकशब्द पहुंचानेको शक्य है

वेलोकअन्यलोकवासियोंकेभोगभूमिसेयहयोजनाहैकिजबअग्नि
स्वामिकेलोकमेंपहुंचा तबअग्निसे अतिवाह्यमानहै ऐसेवायु
स्वामिकेलोकमेंजानो ।

वैद्युतेनैवततःतच्छ्रुतेः ६ ।

फिरकैसेआतिवाहिकपथसे वरुणादिसेउनकासंभवहै वि-
द्युत्सेऊपर२वरुणादिचिन्हहैं औरविद्युत्केआगेब्रह्मतकअमान
वपुरुषपहुंचानेवालासुनाया इसकाउत्तरपढ़ाकि वैद्युतेन ततः
विद्युत् केअभिसंभवसेऊपरवोविद्युत्केआगेरहितेअमानवपुरु
षसेवरुणलोकादिमेंचतिवाह्यमानब्रह्मलोकमेंपहुंचतेहैं तान्वै
द्यु*तात्पुरुषोऽमानवः सएत्यब्रह्मलोकान्गमयतीति इसने
अमानवहीपहुंचानेवालाकहाहै वरुणादिअमानवकेअप्रतिबंध
करनेसेयासहायसेअनुष्ठानमेंअनुग्राहकहैं तिस्से साधुकहाकि
अर्चिरादिआतिवाहिकदेवतारूपहैं ।

कार्यब्रह्मप्राप्त्यधिकरण ॥ ५ ॥

कार्यंबादरिरस्यगत्युपपत्तेः ७ ।

होचुकीमार्गगाथा अवगंतव्यचिन्ताहै सएनान्ब्रह्मगमयती
ति इसमें विचिकित्साहै किक्याकार्यअपरब्रह्मकोपहुंचातेया
परअविकृतमुख्यब्रह्मको कैसेसंशयउठा ब्रह्मशब्दसुन्नेसेवोगति
श्रुतिसेकार्यसगुणसबलअपरादिब्रह्मपर्यायहैंकार्यकोअमानवइ
नकोपहुंचाताहै यहबादरिकामतहैं कैसे अस्यगत्युपपत्तेः कार्यं
ब्रह्मगन्तव्यहैसत्ताहैप्रदेशतत्वसे जैसेव्योम नकिपरब्रह्ममेंगन्ता
गन्तव्यगतिकल्पिसक्तेहो सर्वगतसेप्रत्यगात्मासे ॥

* विद्युत्लोकसे ।

विशेषितत्वाच्च ८।

ब्रह्मलोकान्गमयतीति तेतेषुब्रह्मलोकेषुपराःपरावतोवसन्तीति इसश्रुत्यंतरमे विशेषितत्वात् कार्यब्रह्मविषयकगतिजानीहै बहुवचनविशेषणपरमेसमर्थनहोगा कार्यमेअवस्थाभेदकीसिद्धिसे बहुवचनकासम्भवहै औरलोकश्रुतिभीविकारगोचरसन्निवेशसभोगभूमीमे आंजसीगौणीहै औरअन्यच एषब्रह्मैवलोकःसंम्राडित्यादि इनमेअधिकरण वोअधिकर्त्तव्यकाकहिनापरमेआंजसनहींहै तिस्से कार्यविषयकनयनहै ॥

सामीप्यात्तुतद्व्यपदेशः ९।

तुकार्यमेंब्रह्मशब्दकोअनुपपत्तिकावारकहै कैसेकहिसकतेहो कार्यमेब्रह्मशब्दकोसमन्वयमे विश्वनिदानस्थापनसे कहिताहूं सामी ९ परकोसामीप्यसे अपरकापरमेब्रह्मशब्दकहिनाविरुद्ध नहींहै परहीविशुद्धोपाधिके सम्बन्धसे कहींकुछविकारधर्मजैसेमनोमयादिहैं उनसेउपासनार्थं अपरकहाहै यहसीमाहै ॥

कार्यात्ययेतदध्यक्षेणसहातःपरमभिधानात् १०।

ननुकार्यमे प्राप्तिसेसुनीअनावृत्तिनहींघटतीहै नकिपरसेअन्यत्रकहींनित्यताकीसम्भवकरासंक्त दिखातीहै श्रुतिदेवयानसे जानेवालोंकोअनावृत्तिको एतेनप्रतिपद्यमानाइमंमानवमावर्त्तंनावर्त्तंते. अर्थं वेयहांफिरनहीलौटिआतेहैं जोगयेदेवयानपथसे तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेतीति चेत् यहकहिताहूं कार्यात्य १० कार्यब्रह्मलोकप्रलयप्रत्युपस्थानमे ब्रह्मलोकमेंउपासकोंकोसम्यग्दर्शनजन्मताहै तदध्यक्षेण हिरण्यगर्भके सहातः साथअतः शुद्धविष्णुकेपरमपदकोपहुंचतेहैं इत्यं क्रममुक्तिअनावृत्या

ट्टिश्रुतिकैकहिनेसेमाननीयहै नहिं चञ्चसा अनावृत्तिलिङ्गसे परमेपहुंचनाहै क्रममुक्तिसे लिङ्गअन्यथासिद्धहै ॥

स्मृतेश्च ११।

अपनीस्मृतिमेंव्यासने परस्मृतिकी सम्मतिदीहै ब्रह्मणासह तेसर्वेसम्प्राप्तेप्रतिसञ्चरे परस्यांतेकृतात्मानः प्रविशन्तिपरम्पद मित्यादिः अन्तेसमष्टिलिङ्ग देहरूपविकारकेअवसानमें चश्रुति सूचकहै तेब्रह्मलोकइत्यादि श्रुति सूत्र स्मृति इनतीनोंका अर्थहै कि सत्यलोकमें ब्रह्मकेसाथरहितेहैं वहांशमादिसेनिर्गु णब्रह्मबोधकोपायके प्रलयमेंउसकेसाथहीमुक्तहोतेहैं तिसकेका र्यमेंगतिसिद्धान्तहै ॥

परंजैमिनिर्मुख्यत्वात् १२।

फिरकिसपक्षकोलेकेयहसिद्धान्तस्थापनकियाथा सुनो का- र्यस्वादरिरित्यादि इससे सोचवसूत्रोंसेदिखाताहै परंजै १२ जैमिनि सएनान्ब्रह्मगमयतीति इसनेपरहीकोउपासकपहुंच- तेहैं यहमानताहै कैसे मुख्यत्वात् परब्रह्मब्रह्मशब्दकामुख्यथा त्वस्वनअर्थात्अर्थहै चपरब्रह्मगौणहै मुख्यऔगौणकेयोगसे मु- ख्यमेंसम्प्रत्ययहै इसन्यायसे ॥

दर्शनाच्च १३।

तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेतीतिच इसनेपूर्वगतिपौछेअमृतफ- लकहाहै सोपरमेंयुक्तहै नकिकार्यमें कार्यविनाशीहोनेसे अथ यचान्यत्पश्यतितदल्पं तन्मर्त्यमिति इसप्रवचनसेपरविषयग- तिकठवल्लीमेंपढ़ीहै नहीं कठवल्लीमें विद्यान्तरकाक्रमहै अन्यत्र धर्मादित्यादि इससेभीपरहीप्रक्रान्तहोनेसे ॥

नचकार्य्येप्रतिपत्त्यभिसंधिः १४ ।

अपिच प्रजापतेःसभांवेश्मप्रपद्यइति अर्थ उपासकमरणका
लमेप्रजापतिकीसभा वोवेश्ममे कार्यप्राप्तिकासङ्कल्पकरताहै
यहप्रतिपत्ति वोअभिसन्धि कार्यमेनहींहै नामरूपयोर्निर्वहिता
इति इसनेकार्यसेविलक्षणपरप्रकृतदिखायाहै यशोहंभवामिब्रा
ह्मणानांराज्ञांयशोविशांयशइतियहांयशःशब्दआत्मवाचीहै सो
सार्वात्म्यलिङ्गसे परप्राप्त्यर्थसङ्कल्पहै नतस्यप्रतिमाअस्तियस्यना
ममहद्यशइति इसमेपरकायशनामप्रसिद्धिसे वेश्मप्रतिपत्तिहा-
र्दविद्यामेकहीहैगतिसे तदपराजितापूर्ब्रह्मणःप्रभुविमितंहिर
ण्मयमिति अर्थ ततब्रह्मलोकमेंअपराजिताविद्याहीनसेसोजी
तीनहींजातीहै ऐसीपुरीहैहिरण्यगर्भकीप्रभुसेरचीहैसोनेकीसू
रिकोमिलतीहै नहींकुछसाम्यसे ब्रह्मचारीखरकेपलटेमेयोग्यहै
प्रपद्यइसमेपदधातुकेगत्यर्थसे मार्गावसितहै तिससेपरकेविषय
मेगतिहै यहपक्षान्तरहै जेदोपक्षसूचितहैं गत्युपपत्त्यादिभिः
इससे एकवोमुख्यादिभिः दूसरा गत्युपपत्त्यादिमुख्यादिको आ-
भासकरनेमेप्रभुहैं नकिमुख्यादिगत्युपपत्त्यादिको यहआद्यसि-
द्धान्तहै दूसरापूर्वपक्षहै नहींअसम्भवमेमुख्यअर्थकेग्रहणकाकोई
ज्ञापयिताहै ब्रह्मलोकेषु बहुवचनसे सङ्कल्पादेवगन्धादिदिव्य
भोगसुखसे परमेअसम्भवसेमुख्यार्थत्यागहै एतद्वैसत्यकामपरं-
चापरंचब्रह्मेत्यादि इनमेप्रयोगसाम्यसेब्रह्मशब्ददोनोंब्रह्मोंमेंरू-
ढ़होनेसेमुख्यहै परमे अवयवार्थनिरतिशयमहत्वकेलाभसे अपर
मेअमुख्यहै यहलिङ्गियोंकास्वीकारहै नकिवैदिकोंका जैसेका-
ठककी परविद्याकेप्रकरणमे सुषुम्नास्तवार्थ नाड्यन्तरकहेहैं
तैसेपरविद्यामे अपरविद्याकीगतिकाकहिनायुक्तहै विष्वगन्या

उत्क्रमणोभवंतीतिवत् प्रजापतेःसभां इससेप्रकरणकावाधहै यशोहं इसनेउपासनाअपरकीकहीहै इस्सेकार्यमेप्रतिपत्त्यभिस न्धिविरुद्धनहींहै सगुणमेभीसर्वात्मकाकहिना सर्वकर्मासर्वका- मइत्यादिवत्योग्यहै तिस्सेगतिश्रुतिअपरार्थहै कोईकहतेहैंकि पूर्वकेपूर्वपक्षार्थसूत्रहैं वोउत्तरकेसिद्धान्तसूत्रहैं इसव्यवस्थाको पकड़केपरार्थगतिश्रुतिहैं यहस्थापनकरतेहैं सोअयुक्तहै पर गन्तव्यनहोनेसे ब्रह्मैवेदंविश्वमिदंवरिष्ठमित्यादि जोऐसाहैसो गन्तव्यकभीनहींहोसक्ताहै नहींगतहीगन्तागम्यहो लोकमेप्रसि द्धहै किअन्यअन्यत्रगन्ताहै ननुलोकमे गतभीगन्तव्यदेशादि विशिष्टदेखाहै जैसे भूस्थहीभूकोदेशान्तरसेगन्ताजाताहै और अनन्यसेवालकोकालान्तरविशिष्टयौवन वार्धक्यअपनेमेगन्तव्य देखीहै तैसेहीपरभीसर्वशक्तियोगसेगन्तव्यहो सोनहीं परमेस- वविशेषोंकेनिषेधसे निष्कलंनिष्क्रियंशान्तं निरवद्यंनिरञ्जनम् अस्थूलमनरावक्रस्वमदीर्घमलोहितंसवाह्याभ्यन्तरोह्यजः इत्या दिश्रुतिवोस्मृतिवोयुक्तिसे देशकालादिकाविशेषयोगपरमेक- ल्पनकोशक्यहै जिस्सेभूकाप्रदेश वोवयकी अवस्थाकेन्यायसे परगन्तव्यहो भूवोवयप्रदेश वोअवस्थादिकेविशेषयोगसे देश कालविशिष्टगंतव्यहै जगकाजन्म स्थितिलयकेहेतुसे परमेभी नानाशक्तिहैं यदियहकहोसोनहीं विशेषनिरासश्रुतियोंकोअ- नन्यार्थसे जन्मादिश्रुतियोंकोभीसमानअनन्यार्थत्वहै सोनहीं जन्मादिश्रुतियांऐक्यवोधनपरहोनेसे मृदादिकेदृष्टान्तोंसेपरए कसत्यवोविकारसांतकहितीश्रुति जन्मादिपरनहींहैं प्रश्न क्युं हैंजन्मादिश्रुति विशेषनिरासश्रुतिकाशेषहै फिरनकिविशेषनि रासश्रुति जन्मादिश्रुतिकाशेष कहिताहूं विशेषनिरासश्रुति निराकांक्षार्थसे जैसेआत्माएकनित्यादिजानेसे फिरआकांक्षा

नहींरहितीहै पुमर्थपूरेज्ञानकेजन्मसे एतंहवावनतपतिकिमहं
साधुनाकरवंकिमहंपापमकरवमित्यादि इनसे सूरिकीतुष्टिवो
अनुभवऐसादेखनेसे विकारवोअन्तकी अभिसन्धिके निषेध
से मृत्यो: सइत्यादि इस्से नहीं विशेषनिरासश्रुति जन्मादि
श्रुतिकाशेषकहिसक्ते हैं नहींजन्मादिश्रुतिनिराकांक्षार्थकहि-
नेकोसमर्थहै जन्मादिश्रुतिप्रत्यक्षसेअन्यार्थहै देखोकि तत्रैतच्छु
ङ्गमुत्पतितंसोम्यविजानीहिनेदममूलंभविष्यतीति इसउपन्या-
सकेआगेपढ़ाकि तैनशुङ्गेनसन्मूलमन्विच्छेत्यादि इसउपसंहा
रमेसत्हीज्ञेयकहाहै छान्दोग्यमे यतोवाइमानीत्यादि इसतै-
त्तिरीयमे जगज्जन्मादिकेअनुवादसे ब्रह्मज्ञेयकहाहै ऐसेजन्मा
दिश्रुतिकीएकात्मबोधसे नानाशक्तियोगपरमेनहींहै इस्से पर
गन्तव्यनहींहै परमेगतिनिवारितहै नतस्यप्राणाइत्यादिसे गति
कल्पनामेगन्ताजीव वोगन्तव्यब्रह्मकाअवयव वोविकारवोअन्य
कुछहो अत्यन्तताद्रात्म्यमेगतिअसिद्धहो जोऐसातोक्याहो इस्से
कहितहूं यदि एकदेशहै तिस्से एकदेशीनित्यहै फिरन ब्रह्म
मेगतियुक्तहै निरवयवसेपरमेएकदेश एकदेशीकाकल्पनायुक्तन
हींहै विकारपक्षमेंभीविकारसे विकारीनित्यहो नकिघड़ामट्टी
कोछाड़केठहिरताहै याव्यागमेअभावहै विकारवोअवयवपक्ष
मेविकारअवयववालेको स्थिरसेसंसारमेगतिनिश्चितनहींहै या
अन्यजीवहैब्रह्मसे फिरजीवअणु वोव्यापीवोमध्यम परिमाण
होनेकेयोग्यहै व्यापीहैतोगतिअसिद्धहै मध्यमानमेअनित्यहो
अणुसेसबदेहमे वेदनाकीअसिद्धिहो पुरस्तात्विस्तरसेमध्यवोअ
णुमानकानिषेधकिया औरपरस्तात् जोजीवअन्यहै तोतत्त्वम-
सीत्यादिकाबाधहो इसदोषकोसमानजानो विकारवोअवयव
पक्षमे फिरकहिताहैभेदाभेदवादी किविकारवोअवयववोवि-

कारावयवबालेको अनन्यसेअदोषहै यदिकहोसोन मुख्यैक्यकी
असिद्धिसे इनसबपक्षोंमेअनिर्मोक्षहो संसारीआत्माकीनतिवृ-
त्तिसे वोअतिवृत्तिमें स्वरूपनाशहो ब्रह्मात्माकेअस्वीकारसे कर्म
उजल्पतेहैंकि प्रत्यवायकेअजन्मार्थ नित्यनैमित्तिककाअनुष्ठान
है औरकाम्यवोनिषिद्धोंकापरिहारहै स्वर्गनरकीअप्राप्त्यर्थ अव
देहभोग्यकर्मों को भोगसेक्षयकर वर्त्तमानदेहकेपातपीछे देहा
न्तरकेप्रतिसन्धानकाजोकारणथा उसकेअभावसे स्वरूपावस्था
नलक्षणकैवल्यविनाहीब्रह्मात्मके ऐसेवृत्तकोसिद्धहोगी ऐसावृ-
त्तझूठाहै प्रमाणकेअभावसे नहींकिसीवेदनेकहीकिमोक्षार्थी
ऐसावृत्तआचरणकरे तुमनेअपनीबुद्धिसेऐसामोक्षोपायतर्का है
जिस्सेकर्मनिमित्तसंसारहै तिस्से कर्मरूपनिमित्तकेअभावसे सं-
सारनहोगा यहनहींतर्कसकतेहो निमित्तकेअभावकादुर्ज्ञान
होनेसेकर्मबहुत वोजात्यन्तरमेसंचित वोइष्टानिष्टविपाककेदा
ताएकएकजन्तुकेसम्भवहै उनकाफलविरुद्धहै तोयुगपत्भोगका
असम्भवहै कुछअवसरपाकेइसजन्मकेरक्षकहै कुछदेशवोकाल
वोनिमित्तकोदेखरहेवोवैठेहैं इस्से उनकाइसदेहकेभोगसे क्षप-
णकेअसम्भवसे जैसावर्णितवृत्तीका इसदेहकेपातपीछेदेहान्तर
केनिमित्ताभावका निश्चयनहींशक्यहै श्रुतिस्मृतिमेकर्मशेषसे
तद्यइहेत्यादि यहहोकर्मकेक्षेपक नित्यनैमित्तिकहोंगे सोन वि
रोधाभावसे विरोधमेक्षेप्यक्षेपकभावदेखाहै जन्मान्तरकेसञ्चि
तसुकृतोंका नित्यनैमित्तिकोंसेविरोधनहींहै दोनोंमेशुद्धिकेअ
विशेषसे दुरितोंकाक्षपणहो अशुद्धिसे शुद्धिकेविरोधमे इतने
सेदेहान्तरकेनिमित्तकाअभावसिद्धनहींहैसुकृतनिमित्तरहिनेसे
दुरितभीअशेषक्षपणनहींज्ञातहै नचनित्यनैमित्तिककेसेवनसे
पापकाअजन्ममात्रहै नकिफलान्तरकाजन्मइसमेप्रमाणहै पी

कसेफलान्तरबीजनकहोनेसे सोहीस्मरणक्रियाया आपस्तम्बने तद्यथाऽम्रेनिर्मितफलार्थेछाया गन्धइत्यनूत्पद्यतेएवंधर्मञ्चर्यमा णमर्थाअप्यनूत्पद्यन्तइतिनहींसम्यग्दर्शनकेविना पूरापूराकाम्य निषिद्धका वर्जनजननमरणकेबीचमेंकिसीसे प्रतिज्ञाकोभीश- क्यहै सुनिपुणोंमेसूक्ष्मदोषदेखनेसे संशयितव्यहैतुम्हारापक्ष वोनिमित्तकेअभावकादृष्टानहै नहींजीवकोब्रह्मनमानेसे क- र्तृत्वादिस्वभावसेकैवल्यअशक्यहै स्वभावकेअनपायसे अग्न्यौष्ण्य वत् औष्ण्याभावमेंअग्निकाअभावहै हो कर्तृत्त्वादिकार्यअनर्थ है नकिकर्तृत्वादिशक्ति शक्तिकेस्थानमेंकार्यकेपरिहारसे मोक्ष युक्तहै सोनहीं शक्तिकेहोनेमेंकार्यकाजन्मदुर्निवारहै ऐसाहो तोभीकेवलशक्तिकार्यनहींजन्मतीहै अन्यनिमित्तोंकेबिना इस्से एकाकिनीठहिरीभीअपराधवतीनहींहै सोनहीं निमित्तभीश- क्तिरूपसम्बन्धसेनित्यसम्बन्धहै तिस्से कर्तृत्त्वादि स्वभावआत्मा से विनाब्रह्मात्मताविद्याके कभीकैसेभी मोक्षकोआशानहींहै मन्त्रभीज्ञानसे अन्यमोक्षपथकावारकहै नान्यःपन्थाविद्यतेय नायेति तिस्से जीवकेअनन्यमेंसांव्यवहारलोपहो वोप्रत्यक्षादि प्रमाणोंकीअप्रवृत्तिहो यदियहकहोसोनहीं बोधसेपूर्वस्वप्नव्यव- हारवत्सबप्रत्यक्षादियुक्तहै यत्रहिद्वैतमिवभवतीति यहवेदअ- बुद्धकोप्रत्यक्षादिव्यवहारकहिताहै यत्रत्वस्यसर्वमात्मैवाभूदिति यहवेदप्रबुद्धको प्रत्यक्षादिकाअभावकहिताहै ऐसेपरवेदीकोग- तिकहिनहींसक्तेहो गन्तव्यादिविज्ञान*केबाधसे किसकेअर्थग तिश्रुतिहै सगुणविद्यार्थहोगी कहींपञ्चाग्निविद्यामें कहींपर्यंक विद्यामें कहींवैश्वानरविद्यामेंगतिकहीहै प्राणोब्रह्मकंब्रह्मेति अथयदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरेत्यादि यहांजोगतिब्रह्मप्रकरणमेहै सो

* जीव

भीवामनोवोसत्यकामादिगुणोंसेसगुणउपास्यकोसम्भवहै कहीं
परविषयगतिनहींसुनीहै जैसेगतिकानिषेधसुनायाथा नतस्य
प्राणा उत्क्रामन्तीत्यादि ब्रह्मविदाप्नोतिपरमित्यादि इनमे
आप्नोतिकाअर्थगतिहै सोभीदेशान्तरकीप्राप्तिकेअसम्भवसे स्व
रूकीप्रतिपत्तिहै अविद्यासेआरोपेनामरूपकेलयकीअपेक्षासेक
हीहै रोचनार्थयाअनुचिन्तनार्थहै गतिकहिनेसेब्रह्मवेदीकाप्र-
रोचननहीहोताहै स्वसम्वेद्यसेप्ररोचनकीसिद्धिसे नित्यसिद्धनि
श्रेयसकेनिवेदन वोअसाध्यफल वोविज्ञानकीगतिकेअनुचिन्त
नमेअपेक्षायुक्तनहींहै तिस्सेअपरार्थगतिहै किसीनेपरापरका
विवेककेअनवधारणसे अपरमेवर्त्तमानगतिश्रुति परमेजोड़दी
क्यादोहैं परवोअपर वाढ दोहैं एतद्वैसत्यकामपरञ्चापरञ्चब्रह्म
यदोंकारइत्यादि श्रुतिकेदिखानेसे फिरकौनपरवोकौनअपरहै
कहिताहूं जहांअविद्याकृतनामरूपादि विशेषोंके निषेधसे
अस्थूलादिशब्दोंसे जोब्रह्मकहासोपरहै सोहीजहांनामरूपादि
बिशेषोंसे विशिष्टउपासनार्थकहाहै सोअपरहै जैसेमनोमय:
प्राणशरीरोरूपइत्यादि जोअद्वय श्रुतिकारोधकहो सोअविद्या
कृतनामरूपोपाधिसेनिवारितहै अपरकीउपासनाकेपासमेसु-
ना जगकाऐश्वर्यसंसारगोचरफलहै अविद्याकेनछुटनेसे और
सोफलदेशविशेषमेंबद्धहोनेसे उसकीप्राप्तिकेअर्थ गतिविरुद्धन-
हींहै फल सयदिपितृलोककामोभवतीत्यादि जैसेविभुव्योम
कीगतिघटकेलेजानेमेहै तैसेहीविभुआत्माकी बुध्यादिउपाधि
कीगतिसेगतिप्रसिद्धहै हमतोयहीकहेंगे तिस्से कार्यंवादरिरिति
यहीपक्षस्थिरहै परंजैमिनिरिति इसपक्षकाभानमात्रदिखाया
है प्रज्ञाकेप्रकाशार्थ ५ कहिचुकेगन्तव्य ॥

प्रतीकोपासकगत्यधिकरण ॥ ६ ॥

अप्रतीकालंबनान्नयतीतिबादरायणउभयथादोषा-त्तत्क्रतुश्च १५ ।

अवगन्ताका अवधारणाहै यहसंशयहै किसबविकारालम्बनों कोअविशेषसे अमानवपुरुषपहुंचाताहै ब्रह्मलोकमें याकुछको सबसूरियोंकीगतिपरसेअन्यनहो देखो अनियमःसर्वेषां इससे अविशेषसे इनकोविद्यान्तरमेंगतिअवतारितहै इसपेपढ़ाकि अप्रतीकालंबनानिति प्रतीकालम्बनोंकोछोड़अन्यसबविकारा लम्बनोंकोब्रह्मलोकमें अमानवपहुंचाताहै यहवादरायणमान ताहै उभयथाभावमानेसेकुछदोषनहींहै अदोषादितिसूत्रपद च्छेदः अविरोधसे अनियमःसर्वेषां इसमेंसर्वशब्दप्रतीकोपासक सेअन्यपरहै तत्क्रतुश्च यहउभयथाभावकासमर्थकहेतु द्रष्टव्य है जोब्रह्मक्रतुहैसोब्रह्मऐश्वर्यपावेगा तंयथायथोपासतेतदेवभ वतीति इसश्रुतिसे प्रतीकमेंब्रह्मक्रतुनहींहै उपासनाप्रतीकप्र-धानसे ननु अब्रह्मक्रतुकीभीगतिब्रह्ममेंसुनीहै जैसेपञ्चाग्निवि-द्यामें सएनान्ब्रह्मगमयतीति होवहांप्रत्यक्ष* वाक्यसेबाधइष्ट है पञ्चाग्न्यादिकेअभावमें औत्सर्गिकतत्क्रतुन्यायसे ब्रह्मक्रतु-योंकोब्रह्ममेंप्राप्तिहै नकिअन्यको ॥

विशेषंचदर्शयति १६ ।

नामादिप्रतीकउपासनोंमेंपूर्व पूर्वसेफलअधिकआगे २ को उपासनोंमेंदिखातीहै यावन्नाम्नोगतंतत्रास्ययथाकामचारीभव ति वाग्वावनाम्नोभूयसीयावद्वाचोगतंतत्रास्ययथाकामचारीभ-

* अहत्यवाद

वति मनोवाचवाचोभूयइत्यादि यह फलविशेषप्रतीककेतन्त्रसे उपासनोंकाउपपद्यमानहै और ब्रह्म तन्त्रमें ब्रह्मके अविशिष्टसे कैसेफलविशेषहोगा तिस्सेप्रतीकालम्बनोंको अप्रतीकालम्बनों केतुल्यफलनहींहै भाव ब्रह्मध्यायीब्रह्मगन्ताहै नकिअन्यदेवध्या यी ब्रह्मसेअन्यत्त्वतकेअभावसे अन्यदेवध्याननिष्फलहै ॥

इतिश्रीयुक्तारांचन्द्रशर्मणाकृतेब्रह्मसूत्रभाषाभाष्ये चतुर्थाध्या- यस्यतृतीयःपादःपूर्णः ॥ ३ ॥

पूर्व पाद में सगुण विद्या वेदी को अर्चिरादि गति और कार्यब्रह्म में प्राप्ति फल कहा था अब निर्गुणब्रह्म विद्यावेदी को ब्रह्मसम्पत्ति रूप फल कहिता है ॥

ब्रह्मलोक पाद चौथा ॥ ४ ॥

मुक्तिस्वरूपाधिकरण ॥ १ ॥

संपद्याविर्भावःस्वेनशब्दात् १ ।

एषसम्प्रसादोऽस्माच्छरीरात्समुत्थायपरंज्योतिरूपसम्पद्यस्वे नरूपेणाभिनिष्पद्यतइति इसमेंसंशय है किक्यादेवलोकादिभोग स्थानोंमेंसेकोनांईआगन्तुक* किसीविशेषसे अभिनिष्पन्नयाआ त्ममात्रसे स्थानांतरमेंआगन्तुककोनांईनिष्पत्तिहो मोक्षफल- कीप्रसिद्धिसे अभिनिष्पद्यते यहउत्पत्तिकावाचीहै यदिअभिनि ष्पत्तिस्वरूपमात्रहै तदापूर्वावस्थामेंभी स्वरूपकाअनपायविभा

---

* आत्मीय

वितहै तिसोकिसीविशेषसेअभिनिष्पद्यमानहै सोनहीं कहिता हूं केस्वआत्माआविर्भावहै नकिधर्मान्तरसे सोकैसे स्वेनेत्या दि इसमेंस्वशब्दसे अन्यथाजोस्वशब्दविशेषणहै सोअनर्थकहोता ननुहोगा।स्वशब्दआत्मीयवाची सोनहीं आत्मीयअवचनीयसे जिसकिसीरूपसे अभिनिष्पादहै सोहीआत्मीय कोसिद्धिसेस्वेन यहविशेषणव्यर्थहो आत्मवाचीमेंसार्थहै कितिसोकेवलआत्म रूपसेअभिनिष्पद्यमानहै नकिअपरआगन्तुकरूपसे किसीमतमें मोक्षवोस्वर्गमेंअविशेषहै स्वर्गभिन्नमोक्षवादमेंविशेषहै अनुमा मोक्ष आगन्तुक:फलत्वात्स्वर्गवदिति इसन्यायसे ॥

मुक्त:प्रतिज्ञानात् २

पूर्वावस्थावोमोक्षमें स्वरूपकेअनपायकोसाम्यमें इसपदकि मुक्त: जोयहांअभिनिष्पन्नहै सोसबबन्धोंसेछूटाहै शुद्धआत्मासे ठहिराहै जगतेमेंअन्धादि देहधर्मोंस्वप्नमेंकिसीसेहतासा रोता साहै सुषुप्तिमें विशेषकेअज्ञानसेनष्टसाहै इनतीनसेकलुषित जोआत्मा इसोविशेषहै कैसेजानाकिअबमुक्तहै प्रतिज्ञानात् दे खो एतन्त्वेवतेभूयोनुव्याख्यास्यामीति इसनेतीनदशाकेदोषसे नआत्माकेव्याख्यानकीप्रतिज्ञाकर फिर अशरीरंवावसन्तमि- त्यादि कोकहिके स्वेनेत्यादिकाउपसंहारकियाहै औरगाथाके उपक्रममेंयअपहतपाप्माइत्यादिमुक्तात्मविषयकप्रतिज्ञानहैजो मोक्षफलप्रसिद्धहै सोबन्धनिवृत्तिमात्रकीअपेक्षासेहै नकिअपूर्व जननकीअपेक्षासेहै नाकवत् जोअभिनिष्पत्तिउत्पत्तिकावाची है सोभीपूर्वावस्थाकीअपेक्षासेहै जैसेरोगकीनिवृत्तिमें अरोग- अभिनिष्पन्नकहाताहै तैसेमुक्तिकीअभिनिष्पत्तिहै तिसोदोष नहींहै ॥

आत्माप्रकरणात् ३ ।

ज्योतिश्शब्द से यहां परमात्मा ही कहा है सो कैसे य आत्मा अपहतपाप्मा विजरो मृत्युर्विशोक इत्यादि इनमें आत्मा ही का प्रकरण है इससे ज्योति में सम्पत्ति नहीं है किन्तु आत्मरूप से ही आविर्भाव है जातुमनेतीन सूत्रों में जीव का मुक्तिरूप कहा था सो पहिले सिद्ध नहीं था किन्तु स्वर्गसा आगन्तुक है यह कैसे सुनो ध्यान से अभिनिष्पद्यते इस क्रियापद से उत्पन्न सुने से यदि पूर्व सिद्ध मानोगे तदा संसारदशा में भी होने से मुक्तिफल ही न होगी तिस्से स्वर्ग की नांई नई है मुक्ति सो नहीं स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यत इति इसमें स्वशब्द के विशेषसे पूर्व भी मुक्तिरूप था और नाक स्वशब्द स्वकीय को कहता है विशेषण स्वशब्द व्यर्थ होने से मुक्ति में जिस जिस रूप को ग्रहण करता है सो स्वकीय ही है फिर किसकी निवृत्ति के लिये स्वशब्द विशेषण होगा और आत्मवाचक स्वशब्द सदा ही निष्प्रयोजन होगा और अभिनिष्पत्ति का अर्थ उत्पत्ति नहीं कर सकते हैं पूर्व सिद्ध वस्तु की उत्पत्ति के असम्भव से फिर क्या है गुरु जी निष्पत्ति का अर्थ तब भी बोल उठा दयालु गुरु सुनो बन्ध तत्वबोध से ब्रह्म का आविर्भाव निष्पत्ति शब्द का अर्थ है जैसे खेह से ठको आग को उघारना है खेह उठाके इस में पुनरुक्ति की शङ्का भी नहीं है उपसम्पद्य और अभिनिष्पद्यते इन दो पदों के कहने में सम्पत् पद से तत्पदार्थ के विचार की विवक्षा है और अभिनिष्पत्ति का अर्थ वाक्यार्थ बोध है और पूर्व सिद्ध मुक्ति के रूप का फल के साथ विरोध नहीं है ज्ञान से अज्ञान निवृत्ति ज्ञानरूप मुक्ति पूर्व सिद्ध न होने से तिस्से पुरातन वस्तुरूप मुक्ति है न कि नूतन रूप कैसे मुक्त कहा परंज्योतिरुपसम्पद्येति इसने कार्य में सम्पत्ति सुनाई है ज्योतिशब्द भौतिक ज्योति में रूढ़ से नहीं

कोई अनतिवृत्तविकारसे मुक्तयोग्यहै विकारआर्त्तप्रसिद्धहै सो दोषनहीं है जिस्सेयहांज्योतिशब्दसे आत्माहीजताया है प्रकरणात् यआपहतपाप्माइत्यादि परआत्माकेप्रकृतमे अकस्मात् भौतिकमेंज्योतिशब्द नहींगृहणकोशक्य है प्रकृतहानसे वोअप्रकृतकीप्रक्रियाकेप्रसङ्गसे ज्योतिशब्दआत्मामेदेखाहै तद्देवाज्योतिषांज्योतिरिति ॥

मुक्तस्वरूपाधिकरण ॥ २ ॥

अविभागेनदृष्टत्वात् ४ ।

परंज्योतिरुपसम्पद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतेयोचनिष्पन्नः स ब्रह्माभेदेनकुतः तत्वमसीत्यादौतथैवदर्शनात् उपाधियोंसेकुटा जीवब्रह्महोहै जोमुक्तस्वरुपहैसोपरब्रह्मसेभिन्नहीयोग्यहै कर्तृ कर्मकेभेदसे एषसम्प्रसादः परंज्योतिरुपपद्यतेइति इसमेसम्प्रसादजीवउपसम्पत्ताकरताकहाहै और ज्योतिःब्रह्मकोकर्मकहाहै इसेमुक्तजीवकास्वरूपब्रह्मसेभिन्नयोग्यहै सोनहीं ज्योतिरुपसंद्येति यहवाक्यतत्पदकेविचारार्थहै इस्से विचारदशामेभेदरहो उसवाक्यकेआगेजोवाक्यहै सोवाक्यार्थदशापन्नमुक्तस्वरुपकोब्रह्महीकहिताहै वाक्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यतेइति और मुक्ताकाब्रह्मकेसाथभेदनहींहै सउत्तमःपुरुषइति इसवाक्यमेजो सशब्दहैउसनेअभिनिष्पन्नरूप मुक्तस्वरूपकापरामर्षकर मुक्तकी होउत्तमशब्दवाच्य ब्रह्मस्वरूपकहाहै तिस्से मुक्तस्वरुपसेब्रह्मभिन्ननहींहै श्रुतिसयथासैंधवेत्यादि परंज्योतिरुपसम्पद्यस्वेनेत्यादि जोयहांनिष्पन्नहै सोक्यापरसेपृथक्है याअविभागसेरहिता है इसवीचाभे सतत्रपर्येतीति इसअधिकरणकोअधिकर्तव्यकी

कहिनेसेवोज्योतिरूपसम्पद्येति इसमेंकर्त्तावोकर्मकेकहिनेसेभे दसेहीरहितहै नकिपरमेंमिलताहै औरैसवसा ऐसीकिसीको प्रतिहै उसकाव्युत्पादनहै अविभक्तहीपरसेमुक्तरहिताहै कैसे दृष्टत्वात् देखा नतुतत्द्वितीयमस्तिततोन्यद्विभक्तंयत्पश्येदित्या- दि जेअविभागमुक्तवोपरकादिखातेहैं जैसेशुद्धजलशुद्धजलमेंप डाशुद्धहीहै जैसेनदीसमुद्रमेंसमुद्रहोतीहैं भेदोक्तिअभेदमेंगौ- णीहै तिस्से यथादर्शनफलयुक्तहै ॥

सविशेषनिर्विशेषाधिकरण ॥ ३ ॥

ब्राह्मेणजैमिनिरुपन्यासादिभ्यः । ५ ।

ध्रुवहै कि आत्ममात्ररूपसेनिष्पन्न नकिआगन्तुकअपररूपसे अबउसकी विशेषबुभुत्साका अभिधानहै अपहतपाप्माहिसत्य सङ्कल्पान्त वोसर्वज्ञसर्वेशजोस्वरूपहैसोहीनिष्पन्नहैताहै यह जैमिनिमतहै कैसे उपन्यासादिभ्यः य आत्मापहतपाप्मेत्यादि सत्यकामइत्यन्त इसउपन्याससेऐसाआत्माबोधितहै और स- तत्रपर्यैतिजक्षन् क्रीड़न्रममाण इत्यादिनेऐश्वर्यरूपक वेदन कियाहै तस्यसर्वेषुलोकेषुकामचारीभवतीतिच सर्वज्ञःसर्वेश्वर जेभीव्यपदेशयुक्तहोंगे जैसेराजालोकमें ॥

चितितन्मात्रेणतदात्मकत्वादित्यौडुलोमिः ६ ।

चितिरूपंयत्तत्तन्मात्रंनिर्विशेषं ब्रह्मअतश्चैतन्यमात्रेणैवाभि निष्पद्यतेकुतस्तदेवइत्यतआह एवंवाअरेइत्यादिना चैतन्यमा- त्रात्मकत्वात् आत्मनोवस्तुनः सत्यसङ्कल्पत्वादीनामुपाधिधर्म त्वादित्यौडुलोमिराचार्योमन्यते अपहतपाप्मादिधर्म धर्मोसे

अभिन्नकहेहैं तोभीवेशब्दविकल्पजन्य अर्थात्सन्प्रत्ययसेजन्य हैं इससेअत्यन्तअसत्हैं पाप्मादिकोंनिवृत्तिमात्रज्ञातहै आत्माकास्वरूपचैतन्य है तन्मात्रेण चैतन्यमात्ररूपसेनिष्पत्तिहैश्रुति एवंवाअरेयमात्मानन्तरोऽवाह्यः कृत्स्नःप्रज्ञानघनः यद्यपि अनुगृहीतहोगी सत्यकामादि यद्यपिवस्तुरूपहीधर्मकहेहैं जसेसत्यहैंकामइसके सोसत्यकामहै तौभीउपाधिसम्बन्धाधीनसेसत्यादिहैं चैतन्यवत्स्वरूपसम्भवनहींहै ब्रह्मकोनानाकारकेनिषेधसे जक्षणादिसङ्कीर्तनभी दुःखाभावमात्रकोअभिप्रायसेहै सवार्थ आत्मरतिरित्यादिवत् नहींआत्मनिमित्त रतिक्रीड़ामिथुनकोकहिसक्तेहैं रत्यादि दोमेंघटतेहैं तिस्से निरस्ताशेषप्रपञ्च वोप्रसन्न वोअव्यपदेश्य वोबोधात्माअभिनिष्पद्यमान औडुलोमिमानताहै इसमेंधर्मशशशृङ्गवत् अत्यन्तअसत्हैं वोचिन्मात्रआत्माठहिराहै ॥

एवमप्युपन्यासात्पूर्वभावादविरोधंवादरायणः ७

एवमपि पारमार्थिकचैतन्यरूपेणस्वरूपाधिगमेपि पूर्वस्याप्युपन्यासादिभ्योधिगतस्यब्राह्म्यस्यैश्वर्यरूपस्यभावात् व्यवहारापेक्षयाव्याख्यानादप्यविरोधं वादरायणआचार्योमन्यते इसविषयकोखुलासाहै किमुक्तस्वरूपब्रह्मदोश्रुतिसे दोढबसुनाहै यआत्मापहतपाप्माविजरोविमृत्युर्विशोको विजिघत्सोविपासःसत्यकामःसत्यसङ्कल्पइति इसनेसविशेषहीआत्माकहाहै। सयथासैंधवघनोनन्तरोवाह्यः कृत्स्नोरसघनएवैवं वा अरेयमात्मानन्तरोवाह्यः कृत्स्नःप्रज्ञानघनएवेति इसनेनिर्विशेषआत्माकहाहै जैसविशेषऔरनिर्विशेषरूपमुक्तिदशामे ब्रह्मकेयुगपत्

अन्नहीं होसक्ते हैं मिथोविरोधसे इस्से कालकेभेदसेदोनोंब्रह्म
होसकैठारनयोग्यहैं सोनहीं प्रतिपत्तिकेभेदसे मुक्तप्रतिपत्तिसे
ब्रह्मआत्मा निर्विशेषहीहै औरबद्धकीप्रतिपत्तिसे सविशेषब्रह्म
आत्माहै मुक्तस्वरूपब्रह्मसर्वज्ञादिगुणोंसेयुक्त विश्वकाकारणन
हींभासताहै कभीभीमुक्तपुरुषनहींजानतेहैं किहमसर्वज्ञसत्यस
ङ्कल्पादिगुणोंसेभरेहैंक्योंकिसर्वज्ञादिबोधकाहेतुअविद्याकेनाश
से औरबद्धपुरुषहीअविद्यायुक्तहीसविशेषहीब्रह्मसर्वज्ञादिगुणों
सेभराकल्पतेहैं इसप्रतिपत्ताकेभेदसेएकहीब्रह्ममेंव्यवस्थाकीसि
द्धिहोनेसे कालभेदकीकल्पनाव्यर्थहै तिस्सेयुगपत्ही निर्विशेष
मेंसविशेषनिर्विशेषसुलभहैं जैसेएकस्त्रीमाभगिनीवधूकामिनी
भक्त्यहै क्रमसेपुत्रभ्राताससुरपति कुत्ताकोज्ञानकीअपेक्षासेतै-
सेहीमुक्तबद्धज्ञाताकेज्ञानभेदसे सविशेषनिर्विशेषादिब्रह्मकेभे-
दहैं नकिकालकेभेदसे धर्मसच्चेवाअत्यन्तअसच्चे जेदोपक्षअयुक्त
हैं सर्वज्ञादिश्रुतिवोव्यवहारमेंअद्वयश्रुतिकेबाधसे इस्सेतोस
रापक्षश्रेयान्है इस्से एवमपि पारमार्थिकचैतन्यस्वरूपमानेमें
व्यवहारकीअपेक्षासे पूर्वकेउपन्यासादिभ्यः इस्से जोपूर्वअवगत
ब्राह्मैश्वर्यरूपहै उसकेअनिषेधसे अविरोधकोबादरायणमान-
ताहै मुक्तिमेंवस्तुसेचिन्मात्रभी जीवान्तरकीव्यवहारदृष्टिसे क
ल्पितसर्वज्ञादिमान्भातहै ऐसेमुनिमतविप्रतिपन्नहैं मूलावि-
द्याएकनानांशहै इस्सेजीवनानाहैं कहींनानाविद्याहैं इस्से
जीवनानाहैं ॥

सङ्कल्पाधिकरण ॥ ४ ॥

संकल्पादेवतुतच्छ्रुतेः ८।

ब्रह्मलोकमेंपहुंचेसगुणवेदीको सबवस्तुबाह्यसाधनकेबिना-

हीसङ्कल्पमात्रहीसेमिलतीहै श्रुतिसङ्कल्पादेवास्यगन्धमाल्येसमु तिष्ठतइति सयदिपितृकामोभवति सङ्कल्पादेवास्यपितरः समु पतिष्ठन्तीति परविद्याकाफल मुक्तिकहिचुके अब अपरविद्या काफलमुक्तिकहतेहैं हार्दविद्यासेमुनाकि सयदिपितृलोककामोभवति सङ्कल्पादेवास्यपितरःसमुपतिष्ठन्तीत्यादि इसमेंसंशय हैकिक्याकेवलसङ्कल्पही पित्रादिकेमिलनेकाहेतु याकिसीअन्यनिमित्तकेसङ्गसेहेतुहैसुनतेतोसङ्कल्पहीसे परतोभीलोकवत् निमित्तांतरअपेक्षितयोग्यहै जैसेहमआदिकोपूर्वसङ्कल्पसे फिरगमनादिहेतुसे पित्रादिकीसम्पत्तिहोतीहै ऐसेहीमुक्तकोभी हो ऐसादृष्टविपरीतकल्पितनहींहोगा जैसे राजाकासङ्कल्पसङ्कल्पितार्थकीसिद्धिमें सुलभसाधनान्तर सामग्रीकीअपेक्षासेहै तैसे सङ्कल्पादेवयहांहै नकिसङ्कल्पमात्रसे मिलेपित्रादि मनोरथविजृम्भितवत् चञ्चलसे पुष्कलभोगके समर्पणकोसमर्थहो सोनहीं केवलसङ्कल्पहीसेपित्रादिकामेलहै कैसे तच्छ्रुतेः सङ्कल्पादेवेत्यादि ऐसीश्रुतिनिमित्तान्तरकीचाहमेंपीड़ितहोजो निमित्तान्तरसङ्कल्पके अनुधायीहोतोहो प्रयत्नान्तरसे सम्पाद्य निमित्तान्तरइष्टनहींहै सम्पत्तिकेपूर्वबन्ध्यसङ्कल्पहोनेसे लोकवत् यहसामान्यतोदृष्टअनुमान सङ्कल्पश्रुतिसेबाधितहै मुक्तकासङ्कल्पबद्धकेसङ्कल्पसे विलक्षणहै जैसाराजसङ्कल्पप्रजासङ्कल्पसे ॥

अतएवचानन्याधिपतिः ९ ।

पहिलेतीनअधिकरणोंमें विदेहमुक्तिविचारीथी अबब्रह्मरूप मुक्तिकाविचारकरतेहैं अर्चिरादिमार्गसेब्रह्मलोकमेंपहुंचे उपासककोभोग्यवस्तुकीप्राप्तिमें बहिराकारणचाहिये औरनकिस-

ङ्कल्पमात्रहीकारणहै जोसङ्कल्पहीकारणहै तोमनसेहीलड्डका भोजनहै पुष्कलतृप्तिकाअभावहीहै सोनहीं मैंक्याकहूं श्रुति नेहीएवकारसे बहिरीवस्तुकीचाहनाबारणकरदीहै सङ्कल्पसे पित्रादिकालाभकहिके औरसङ्कल्पकाफल मनोमोदकनहींहै उपासनाकेप्रसादसे सङ्कल्पशक्तिनिरंकुशहोतीहै इससेअजित मोदकसाफलकल्पितनहींहैं तिससेभाग्यसृष्टिमेंसङ्कल्पहीकारणहै अतएव अनन्यसङ्कल्पसे सूरिअनन्याधिपतिहै जिसकाअन्य प्रभुनहींहै प्राकृतभीअपनेकोअन्यस्वामिकनहींसङ्कल्पताहै नि र्वाहहोनेमे यहीश्रुतिदिखातीहै अथयइहात्मानमनुविद्यव्रज- न्त्येतांश्च सत्यान्कामांस्तेषां सर्वेषुलोकेषु कामचारोभवतीति अर्थ ईश्वरकेधर्मसूरिमेंप्रकटहोतेहैं इससे उसकेसङ्कल्पकाभङ्ग नहींहै ॥

ऐछिकदेहाधिकरण ॥ ५ ॥

अभावंबादरिराहह्येवं १० ।

बादरिआचार्य ब्रह्मलोकमेंपहुंचेको देहइन्द्रियादिकाअभा वमानताहै कैसे हि जिससे जैसाउसनेकहाथा तैसाहीश्रुति कहतीहै मनसैतान्कामान्पश्यन्रमत यएतेब्रह्मलोकइत्यादि इसमेंभोगमनोमात्रसेहोसाध्यकहाहै तिससे देहादिकाव्यवछेदहै वादिविवादसेसंशयहै किमुक्तिमेदेहादिहैंयानहींहैं पूर्वपक्षसे कालभेदसे बाइच्छासेहैं सिद्धान्तमेनहींहैं सङ्कल्पादेवेत्यादि इससे मनसङ्कल्पकासाधनसिद्धहै देहेन्द्रियांप्राप्तैश्वर्य सूरिकेहैं यानहींहैं यहीसमीक्षाहै महीयमानसूरिको देहेन्द्रियोंकाअ- भावबादरिमानताहै आहह्येव वेदकहताहै मनसैतान्कामा न्पश्यन्रमतेयएतेब्रह्मलोकइति अर्थ यदिमन वोदेहेन्द्रियोंसे

बिहरीतदामनसेतिविशेषणनहो तिस्से मोक्षमेंदेहेन्द्रियोंकाअभावहै ॥

भावंजैमिनिर्विकल्पामननात् । ११ ।

जैमिनिमनीवत् सेन्द्रियदेहकामुक्तिमें मुक्ताभावमानताहै सएकधाभवतित्रिधाभवतीत्यादि अनेकधाभावविकल्पपढ़नेसे नहींदेहभेदकेबिना अनेकबिधताआंजसीहो यद्यपिनिर्गुणभूमविद्यामेंअनेकधाभावका विकल्पपढ़ाहै तथापिसगुणावस्थामें विद्यमानऐश्वर्यकाभूमविद्यास्तवार्थसङ्कीर्तनहै इस्से सगुणविद्यामेंफलभावसेउपतिष्ठमानहै ॥

द्वादशाहवदुभयविधंवादरायणोतः १२ ।

द्वादशाहमृद्धिकामाउपेयुरिति जैसेइसनेद्वादशाहसत्रकहाहै ऋद्धिकामियोंकेअथ द्वादशाहेनप्रजाकामंयाजयेदिति इसने द्वादशाहहीप्रजाकामीकोअहीनकहाहै तैसेहीदोनोंश्रुतिसेजबदेहचाहेंतबसदेहहोता जबदेहनहींचाहैतबअदेहहोताहै इस रीतिसेबादरायणउभयविध अर्थात्सदेहनिर्देहमानताहै बादरायण अतः उभयलिङ्गश्रुतिदेखनेसे उभयविधसाधुमानता है यदादेहकासङ्कल्पकरता तदासदेहहोताहै यदाअदेहकातदाअदेहहोताहै सत्यसङ्कल्पसेवोसङ्कल्पवैचित्र्यसे द्वादशाहवत् जैसेपूर्वमीमांसामें येएवंविद्वांसःसत्रमुपयन्तीति इसउपायिचोदनागस्यश्रुतिसे द्वादशाहसत्रहै वोआसतेतिचोपयन्तीति वा चोदितसत्रलक्षणहै और द्वादशाहेनप्रजाकामं याजयेदिति यजतिचोदनाकेदेखनेसे नियतकरताकेबोधकरकेद्विरात्रादिवत् अहीनहै भाव जैसेएकहीद्वादशाहसत्र वोअहीनदोरूपसे है दोश्रुतिसे तैसेसदेहविदेहमुक्तिमेंमुक्तहै ॥

तन्वभावेसंध्यवदुपपत्ते १३।

देहकेअभावमे जैसेस्वप्नमेमातादिकोउपलब्धिहोतीहै ऐसे-हीमोक्षमेभी मातादिकोउपलब्धिसिद्धहै मनसेकल्पितविषयोंका स्वप्नमेभोगसाक्षिभास्यहै यदासेन्द्रियदेहकाअभावहै तदा जैसे सन्ध्य स्वप्नस्थानमेदेहेन्द्रियविषयकेनहोनेसे उपलब्धिमात्र हीपित्रादिकामहोतेहैं एसेमोक्षमेहोयहीयुक्तहै ॥

भावेजाग्रत्वत् १४।

सेन्द्रियदेहकेहोनेमे जाग्रत्कासाभोगमुक्तिमेभीहोताहै इन पांचसूत्रोंकाव्यख्यर्थहोचुका अबइनकासमख्यर्थभीसुनोकि एक श्रुतिसमानभोगकोदिखाती औरसेन्द्रिय बहिरीदेहकाअभाव भीकहितीहै दूसरीनानासेन्द्रियदेहोंकेभावकोकहितीहै जेदो देहकेभावअभावएकपुरुषमें युगपत्विरुद्धहैं फिरकिसीकोदेह हैऔरकिसीकोनहींहै यहीव्यवस्थाठीकहै सोनहीं एकहीपुरुष कोकिसीकालमेंदेहहै औरकिसीमेंनहींहै यहव्यवस्थाठीकहै यदादेहकीइच्छाकरताहै तदासङ्कल्पमात्रसेहीदेहकोरच उस मेवैठकेजाग्रत्कालमे जैसेप्राणीभोगोंकोभोगताहै तैसेभोगता है औरयदादेहकीइच्छानहींकरताहै तदासङ्कल्पमात्रसेहीदेह कोमिटाके जैसेप्राणीस्वप्नमेभोगोंकोभोगताहै तैसेहीभोगताहै मनहीसे तिस्से एकहीपुरुषकोइच्छासे देहकाहोनानहोनाहै काम औरजोयोगकेसिद्धिपादमे सिद्धियांकहीहैं वेभीसत्यलोककाआ दिव्यापार हिकतोऐन्द्रजालहीहैं फिरसेन्द्रियदेहकेहोनेमे जैसे गकाव्यापार यमान पित्रादिकामहैं तैसे मुक्तिमेमुक्तभीहैं ॥

प्रकृतहोनेसेऔरमुक्त।

ईश्वरान्वेषण विजिज्ञा प्रदीपवेशाधिकरण ॥ ६ ॥

प्रदीपवदावेशस्तथाहिदर्शयति १५।

देहान्तरोंकेस्वीकारमें देहान्तरसेदेहान्तरमेंऐसाघुसजाताहै जैसेकिएकप्रदीप प्रदीपसहस्रोंमेंआविष्टहोजाताहै यहकैसे हि जिस्से सयुक्तिकमैंनेऐसाकहाथा तैसाहीश्रुतिभीदिखातीहै स एकधाभवति सत्रिधाभवति पञ्चधासप्तधानवधाभवतीत्यादि अनेकदेहेन्द्रियादिमें चैतन्यअभिव्यक्त त्रिधादिरूपसे होताहै भावजैमिनिरिति इससेमुक्तसदेहकहाथा फिरत्रिधाभावादि से नानादेहकेसर्गमें क्यावेनिरात्मकदेहहोंगे जैसेदारुयन्त्रहैं यासात्मकहोंगे अस्मदादिदेहकेतुल्यसृजेजावेंगे यहयहांवीचा है इससेआत्मावोमनकेभेदकीअसिद्धिसे एकदेहमेंयोगसेअन्यदे हनिरात्मकहैं इस्से पढ़ाकि प्रदीपवदावेश: जैसेएकप्रदीपना नाप्रदीपहोताहै विकारशक्तियोगसे तैसेएकसन्सूरिऐश्वर्ययो गसे नानाभावहोकेसबदेहोंमेंघुसताहै कैसे तथाहिदर्शयति सएकधाभवति त्रिधाभवति पञ्चधासप्तधानवधेत्यादि नकिदा रुयन्त्रोपमदेहमानसक्तहो वोनकिजीवान्तरका आवेशअसत्कार्य वादसे निरात्मकदेहकीप्रवृत्तिकासम्भवनहींहै जोआत्मावोमन केभेदकीअसिद्धिसे नानादेहयोगोंकाअसम्भवकहाथा सोदोषन हींहै एकमनकेअनुवर्तीसमनस्कअन्यदेह सत्यसङ्कल्पसेसृजेगा उनसृष्टोंमेंउपाधिकेभेदसे आत्माकेभीभेदसे अधिष्ठाताकायोग होगाइसीकानामयोगशास्त्रमेंयोगियोंकीनानादेहयोगप्रक्रिया हैयोगसूत्र निर्माणचित्तान्यस्मितामात्रादित्यादि अर्थ योगीदेहों देहोंमेंअभिमानमात्रसेरचेचित्तहैंउनचित्तोंकानियन्तावैराग्यादि चित्तहै सूरिनदेहन किच्छिन्नमात्रहै किन्तु लिङ्गोंमेंअहीनदोरूपसे

स्वाप्ययसंपत्त्योरन्यतरापेक्षमाविष्कृतं हि

फिरकैसेमुक्तकोनानादेहोंमेंप्रवेशरूप ऐश्वर्यमानतेहो सलिलएकोद्रष्टाद्वैतोभवतीति अर्थ जलवत्स्वच्छहै ऐसीश्रुतियांविशेषविज्ञानकोवारणकरतीहैं॰ इसकाउत्तरपढ़ाकि स्वाप्ययसुषुप्तहै स्वमपीतोभवतितस्मादेनंस्वपीतीत्याचक्षते इसश्रुतिसेसम्पत्तिकैवल्यहै ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येतीतिसे सुषुप्तिवोमुक्ति इनदोमेंसे एकावस्थाकोचाहसे विशेषसंज्ञाभाववाक्यकहींसुषुप्तावस्थाकोचाहसेवोकहींकैवल्यावस्थाकाचाहसेकहाहै कैसेजाना जिस्से वहांहीअधिकारकेवशसेप्रकटकियागयाथा एतेभ्योभूतेभ्यः समुत्थायेत्यादि यत्रत्वसर्वमित्यादि यत्रसुप्तोनकंचनकामंकामयतेन कंचनंस्वप्नंपश्यतीत्यादिश्रुतिसे सगुणविद्याकेविपाकस्थान अवस्थान्तरहै जहांऐश्वर्यवर्णमानहै स्वर्गादिकेतुल्य तिस्से अदोषहै। जगत्व्यापाराधिकरण ॥ ७ ॥

जगत्व्यापारवर्जंप्रकरणादसंनिहितत्वाच्च १७।

योगीभौतिकोंमेंस्वतंत्रहै नकिभूतोंकेरचनेमें कैसेसबभूतोंकीसृष्टिकेवाक्यमेंपरमात्माहीप्रकृतहै औरसृष्टिकालमेंयोगीही नहींथा योगीऔरसगुणवित् एकार्थवाचीहै जैसगुणोपासनासे मनकेसाथईश्वरसायुज्यकोपहुंचेहैं उनकाऐश्वर्यक्यानिरवग्रह है यासावग्रह यहसंशयहै फिरउनकाऐश्वर्यनिरंकुशहोनेयोग्य है आप्नोतिस्वाराज्यंसर्वेस्मैदेवाबलिमावहन्ति तेषांसर्वेषुलोकेषु कामचारोभवतीति इस्सेपढ़ाकि जगद्व्यापारवर्जं जगकेजन्मादिव्यापारोंकोछोड़केमुक्तोंको अन्यअणिमादिऐश्वर्यहोतेहैं और जगकाव्यापार सिद्धईश्वरकोहीहै कैसे ईश्वरसृष्टिप्रकरणमें प्रकृतहोनेसे औरमुक्तोंकेअसंनिहितहोनेसे नित्यशब्दनिबंधनसे ईश्वरान्वेषण विजिज्ञासनपूर्वकजगत्सृष्टिईश्वरसे है नकिजेजो

वड़ईश्वरप्रसादसेलब्धसिद्धिहैं उनसेसृष्टिहै उनकोअणिमादिऐश्व र्यहीसुनाहै इस्से जगकेव्यापारमेंसिद्धसंनिहितनहींथे जेजीवसि द्धहैं वेसबईश्वरहैं फिरसमनस्कहै।तेसेउनमेंएकमतिनहोगी वह यहकिकिसीकीइच्छासृष्टिरचनेकी वोकिसीकी संहारकरनेकी होगी यहविरोधभीकभीहोगा जोकहोकिकिसीकेसंकल्पकेपी छेअन्यकासंकल्पहोगा इस्से अविरोधसमर्थितहै इसेपरमेश्व राकूतकेतंत्रहैं जीवसिद्धसवयहव्यवस्थितहै इस्से एकहीईश्वर है नकिअनेकयहभावहै।

प्रत्यक्षोपदेशादितिचेन्नाधिकारिकमंडलस्थोक्तेः १८।

जोकहाथाकि आप्नोतिस्वाराज्यमित्यादि प्रत्यक्षकेउपदेशसे निरवग्रह ऐश्वर्यसूरिकोन्याय्यहै सोपरिहर्त्तव्यहै कहिताहूंयह। उक्तदोषनहींहै आधिकारिकमण्डलस्थोक्तेः जोआधिकारिक सूर्यमण्डलादि विशेषस्थानोंमें स्थितपरईश्वरहै उसकेआधी नस्वाराज्यकीप्राप्तिकहीहै यत्कारणमनंतरमाप्नोतिमनसस्पति मित्याह जोसबमनोकापतिपूर्वसिद्धईश्वरहै उसकोप्राप्तहै इ सीकेअनुसारआगेकहाकि वाक्पतिश्चक्षुष्पतिः श्रोत्रपतिर्विज्ञा नपतिश्चभवतीति ऐसेही सर्वत्रयथासंभव नित्यसिद्धेश्वराधीन योगिवोसिद्धहुए जीवोंकाऐश्वर्ययोजयितव्यहै भोगमेंस्वाराज्यहै नकिजगकेजन्मादिमेसिद्धजीवकोजोआधिकारिकहैसोहीमण्ड लस्थहै मनसस्पति परमात्मातत्सवितुर्वरेण्यमित्यादिश्रुतिसे।

विकारावर्त्तिचतथाहिस्थितिमाह १९।

विकारावर्तिभीनित्यमुक्तपारमेश्वररूपहैनकेवलविकारमात्र चरसूर्यमण्डलादिमेस्थानहै तथाहि देखो स्थितिमाह ईश्वरकी

दोरूपस्थितिवेदनेकहीहै तावानस्यमहिमाततोज्यायांश्चपूरुषः पादोस्यसर्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिवीत्यादि सगुणालम्बनानि विकाररूपकोनहींपासक्तेहैं अतत्क्रतुसेइस्सेजैसेदोरूपईश्वरमें निर्गुणकोनहींपायकेसगुणमेठहिरतेहैं तैसेसगुणमेभीनिरङ्कुश ऐश्वर्यकोनहींपायकेसांकुशऐश्वर्यमेठहिरतेहैंयहीदेखो ॥

दर्शयतश्चैवंप्रत्यक्षानुमाने २० ।

श्रुतिस्मृतिदोनोंपरज्योतिर्विकाराऽवर्तिदिखातीहैं नतत्रसूर्योभातीत्यादि नतद्भासयतेसूर्यइत्यादि परज्योतिकोविकारसे अवर्तित्वप्रसिद्धहैयहआशयहै २० याध्यानाभावसेसर्गाभाव वो ध्यानाभावविध्यभावसेयोगीउपासककोहै ॥

भोगमात्रसाम्यलिंगाच्च २१ ।

इस्सेभीनिरङ्कुशऐश्वर्यबिकारालम्बनोंकानहींहै जिस्सेअनादिसिद्धईश्वरकेसाथ सादिसिद्धजीवोंका भोगमात्रसमानसुना है तमाहापोवैखलुमौयन्तेलोकोसाविति सयथैतान्देवतांसर्वाणिभूतान्यवंत्येवंहै वंविदंसर्वाणिभूतान्यवन्ति तेनोएतस्यैदेवतायैसायुज्यसलोकतांजयतीत्यादि जेभेदव्यपदेशलिङ्गहैं अर्थ ब्रह्मलोकमेपहुंचेउपासककोदेखहिरण्यगर्भकहिताहै किमैंनेजेतुमकोअमृतरूपजलभोगार्थकियेहैं तुमकोयहलोकअमृतजलरूप होभोगसमानसे सः दृष्टान्तहै यथा तेनो तेन ७० यहपदहै उअपिकेअर्थमेहै सायुज्य समानदेहथाक्रममुक्तिहै ॥

अनावृत्तिःशब्दादनावृत्तिःशब्दात् २२ ।

ननुसातिशयसे ऐश्वर्यअन्तवत्हो इस्सेसादिसिद्धेश्वरोंकी आवृत्तिहो इसकाउत्तरपढ़ाकि अनावृत्तिः नाड़ीरश्मिसम्बद्ध अर्चिरादिपर्वदेवयानपथसे जेवेदोक्तबिशेषणब्रह्मलोकमेगये ते

नहींलौटिआतेहैंमर्त्यलोकमें यस्मिन्नरश्चएयश्चार्णवौब्रह्मलोके
तृतीयस्यामितोदिवियस्मिन्नैरंमदीयंसरोयस्मिन्नश्वत्थः सोमसव
नोयस्मिन्नपराजिता पूर्ब्रह्मणोयस्मिंश्चप्रभुविमितंहिरण्मयंवेश्मे
त्यादि अर्थ यस्मिन् इतः पृथिवीलोकसे तीसरेदिवलोकमेंजो
ब्रह्मलोकहै उसमें नरः ण्यः जोदोअर्णवतुल्यसुधाकेहृदहैं ऐरं
अन्नमय मदीयं मदकर सरः सोमसवनअमृतवर्षी खुलासाब्र-
ह्मलोकमेंसुराकाऐसातालहै किजिसेदेखनेहीसे नसाहोताहै
इसकाप्रपञ्चछान्दोग्यमेंहै। इत्यादिसेनानाविधहैंभुक्तभोगजैसेचन्द्रलो
कादिसेलौटिआतेहैं तैसेउसहिरण्यपुरकोपायकेउपासकनहीं
लौटतेहैं कैसे तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेति तेषांनपुनरावृत्तिरे
तेनप्रतिपद्यमानाइमंमानवमावर्त्तंनावर्त्ततेब्रह्मलोकमभि स-
म्पद्यतेनचपुनरावर्त्तते इत्यादिशब्दोंसे सगुणविद्याकेफलकेच
यसेनिरंकुशेश्वरकीअनुग्रहसेलब्धात्मज्ञानसेमुक्तिहीहै अनावृ-
त्तिउनकोसिद्धहै जिनकेसम्यग्दर्शनसेध्वस्ततमवोनित्यसिद्धनि
र्वाणपरायणहैं सगुणशरणोंकोभीअनावृत्तिसिद्धिहैसम्यग्दर्शन
से नकिकल्पान्तरमेंजन्मसबसूत्रकादोबारपाठशास्त्रकीसमाप्ति
काद्योतकहै उनकाफिरकहांजन्महोताहै ईश्वरकाज्ञाननहीं
होनेसे अपामसोममसृताअभुवनित्यादिमन्त्रजात ऐसेमन्त्रोंसे
सोमकेपीनेवालेआपकोमुक्तमानतेहैं सोमुक्तिस्वर्गरूपचिरस्था-
यिनीहै कर्मजन्यहोनेसे और नकिनिरतिशयानन्दाविर्भावरू
पमुक्तिहै बोधशून्यहोनेसे । इतिश्रीयुक्तताराचन्द्रवर्मणाकृतेब्र-
ह्मसूत्रभाषाभाष्येतुर्याध्यायस्यतुर्यपादःपूर्णः ॥

नागरामांकचन्द्राब्दे ताराचन्द्रेणवर्मणा ।
अकारिब्रह्मसूत्रेषु भाष्यहार्दतमोपहम् ॥ १ ॥